ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥ गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै

को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाइे राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥ साचा साहिबु साचु नाइि भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक इेवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥ थापिआ न जाइि कीता न होइि ॥ आपे आपि निरंजनु सोइि ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइिआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइि ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इिक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इिकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइि करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इिक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इिक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इिकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइि ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइि ॥ चंगा नाउ रखाइि कै जसु कीरति जगि लेइि ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइि न सुझई जि तिसु गुणु कोइि करे ॥७॥ सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥ सुणिऐ ईसरु बरमा इिंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥ नानक भगता

सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥ सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥ सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥ मन्ने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥ मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मन्नै सगल भवण की सुधि ॥ मन्नै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मन्नै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥ मन्नै मारगि ठाक न पाइ ॥ मन्नै पति सिउ परगटु जाइ ॥ मन्नै मगु न चलै पंथु ॥ मन्नै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १४॥ मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥ मन्नै परवारै साधारु ॥ मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥ मन्नै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥ पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु इेकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ इेहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ इेको कवाउ ॥ तिस ते होइे लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा इेक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥ असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि

उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइि तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा इेक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥ असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा इेक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १८॥ असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइि ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि इेहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाइे तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा इेक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥ भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइि ॥ दे साबूणु लईऐ एहु धोइि ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ एहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ तीरथु तपु दइिआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइि ॥ विणु गुण कीते भगति न होइि ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइिए कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव

सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥ पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ एड़क एड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ २२॥ सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥ अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाए जाहि ॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥ बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥

आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ इते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥ सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥ मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु इेको वेसु ॥२८॥ भुगति गिआनु दइिआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइि कार चलावहि

लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु इेको वेसु ॥२९॥ इेका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इिकु संसारी इिकु भंडारी इिकु लाइे दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ एहु वेखै एना नदरि न आवै बहुता इेहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु इेको वेसु ॥३०॥ आसणु लोइि लोइि भंडार ॥ जो किछु पाइिआ सु इेका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु इेको वेसु ॥३१॥ इिक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि इेकु नामु जगदीस ॥ इेतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीअै होइि इिकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईअै कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥ आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइि ॥ नानक उतमु नीचु न कोइि ॥३३॥ राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अन्नत ॥ करमी करमी होइि वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई एथै पाइि ॥ नानक गइिआ जापै जाइि ॥३४॥ धरम खंड का इेहो धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इिंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥ गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अन्नदु ॥

सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥ करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना एहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अन्नदु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥ सलोकु ॥ पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

सो दरु रागु आसा महला १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥

गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइिआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाइे तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइि न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइिआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥ आसा महला १ ॥ सुणि वडा आखै सभु कोइि ॥ केवडु वडा डीठा होइि ॥ कीमति पाइि न कहिआ जाइि ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइि ॥१॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइि न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ आखण वाला किआ वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥४॥२॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइि चलीअहि दूख ॥१॥ सो किउ विसरै मेरी माइि ॥ साचा साहिबु साचै नाइि ॥१॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइि ॥२॥ ना एहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु इेहो होरु नाही कोइि ॥ ना को होआ ना को होइि ॥३॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥

जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥ रागु गूजरी महला ४ ॥ हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आइे ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धन्नु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥ रागु गूजरी महला ५ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाइे ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइि न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी

किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि इेको पुरखु समाणा ॥ इिकि दाते इिकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकतु भइे जिन हरि धिआइिआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइिआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइिआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अन्नता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिमृति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु इेको सदा सदा तूं इेको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥ आसा महला ४ ॥ तूं करता सचिआरु मैडा साँई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइिआ ॥ जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइिआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइिआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइिआ ॥१॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणाइिहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइिआ ॥ सहजे ही हरि नामि

समाइआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ आसा महला १ ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ मन इेकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥ आसा महला ५ ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इहि तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि इेहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥ रागु आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु इेको वेस अनेक ॥१॥ बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु इेको रुति

अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥ रागु धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइि फूलम्त जोती ॥१॥ कैसी आरती होइि ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना इेक तुोही ॥ सहस पद बिमल नन इेक पद गंध बिनु सहस तव गंध इिव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइि ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइि ॥ गुर साखी जोति परगटु होइि ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइि ॥३॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनुो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइि जा ते तेरै नाइि वासा ॥४॥३॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइिआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइिआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ करउ बेन्नती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु संसारु बिकारु संसे महि तरिए ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइि पीआवै इिहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जा कउ आइे सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइिगो फेरा ॥३॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इिहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १

॥ मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥ हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥ सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥ गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥ सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥ हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥ सिरीरागु महला १ ॥ कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥ साचा निरंकारु निज थाइ ॥ सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥ अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥ पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥ नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु

आखा नाउ ॥३॥ नानक कागद् लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥ सिरीरागु महला १ ॥ लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥ लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥ बाबा माइआ रचना धोहु ॥ अंधै नामु विसारिआ ना तिसु इह न एहु ॥ १॥ रहाउ ॥ जीवण मरणा जाइ कै इथै खाजै कालि ॥ जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिए नालि ॥ रोवण वाले जेतड़े सभि बन्नहि पंड परालि ॥२॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥ साचा साहबु इकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥ ३॥ नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥ सिरीरागु महला १ ॥ लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥ पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥ रस कस आपु सलाहणा इ करम मेरे करतार ॥१॥ बाबा बोलीऐ पति होइ ॥ ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥१॥ रहाउ ॥ रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ इते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥२॥ जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ॥ फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥ जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥३॥ तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥ तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥ नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥ ४॥४॥ सिरीरागु महला १ ॥ अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥ मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ॥ सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥१॥ नानक साचे कउ सचु जाणु ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ॥१॥ रहाउ ॥ सचु सरा गुड़ बाहरा

जिसु विचि सचा नाउ ॥ सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाइे थाउ ॥२॥ नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥ ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥ दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥३॥ सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥ तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु ॥ होरि गलाँ सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥४॥५॥ सिरीरागु महलु १ ॥ जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥ भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥ बाबा इेहु लेखा लिखि जाणु ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइि सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥ तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥ इिकि आवहि इिकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ इिकि उपाइे मंगते इिकना वडे दरवार ॥ अगै गइिआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥ भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥ नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥ सिरीरागु महला १ ॥ सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥ खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीइे ॥ छतीह अंमृत भाउ इेकु जा कउ नदरि करेइि ॥१॥ बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥ बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥ जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ घोड़े पाखर सुइिने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ तरकस तीर कमाण साँग तेगबंद गुण धातु ॥ वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥३॥ बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥ जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥ बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥ जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥ सिरीरागु महला १ ॥ कुंगू की काँइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥ बाबा होर मति होर होर ॥ जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥ रहाउ ॥ पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ नाउ सदाइे आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥ जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइि ॥ ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइि ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मन्नीऐ अखंडु सदा सचु सोइि ॥३॥ खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइि ॥ जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइि ॥ नानक नामि विसारिऐ दरि गइिआ किआ होइि ॥४॥८॥ सिरीरागु महला १ ॥ गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥ ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥ मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥ गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥ बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥ गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥ गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥३॥ पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥ पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥ नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥९॥ सिरीरागु महला १ ॥ आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥ साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥ करता सभु को तेरै जोरि ॥ इेकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥ रहाउ ॥ जाइि पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥ सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ पिरु

रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥ केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥ केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥ सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥ सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥ नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥ सिरीरागु महला १ ॥ भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥ दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥ कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥ मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥ भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥ मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥ जिस के जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥ जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥ संजोगी मिलि एकसे विजोगी उठि जाइ ॥ जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥३॥ गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥ जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥ नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥४॥११॥ सिरीरागु महलु १ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥ लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥ सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥१॥ भाई रे संत जना की रेणु ॥ संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ॥१॥ रहाउ ॥ ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥ सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥ गुरमुखि मनु समझाईऐ आतम रामु बीचारि ॥२॥ त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥ किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥ निज घरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥३॥ बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥ नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥४॥१२॥ सिरीरागु महला १ ॥ ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥ कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥ बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥ मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥

दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥ पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥ नउ निधि उपजै नामु इेकु करमि पवै नीसाणु ॥२॥ गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥ अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥ आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइि खुआरु ॥३॥ चंदनु मोलि अणाइिआ कुंगू माँग संधूरु ॥ चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥ जे धन कंति न भावई त सभि अडंबर कूड़ु ॥४॥ सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥ जब लगु सबदि न भेदीअै किउ सोहै गुरदुआरि ॥ नानक धन्नु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइि ॥ भाहि बलम्दी विझवी धूउ न निकसिए काइि ॥ पंचे रुन्ने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइि ॥१॥ मूड़े रामु जपहु गुण सारि ॥ हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ॥ दुबिधा लागे पचि मुइे अंतरि तृसना अगि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ॥२॥ मुई परीति पिआरु गइिआ मुआ वैरु विरोधु ॥ धंधा थका हउ मुई ममता माइिआ क्रोधु ॥ करमि मिलै सचु पाईअै गुरमुखि सदा निरोधु ॥३॥ सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइि ॥ सो नरु जंमै ना मरै ना आवै ना जाइि ॥ नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइि ॥४॥१४॥ सिरीरागु महल १ ॥ तनु जलि बलि माटी भइिआ मनु माइिआ मोहि मनूरु ॥ अउगण फिरि लागू भइे कूरि वजावै तूरु ॥ बिनु सबदै भरमाईअै दुबिधा डोबे पूरु ॥१॥ मन रे सबदि तरहु चितु लाइि ॥ जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ तनु सूचा सो आखीअै जिसु महि साचा नाउ ॥ भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥ सची नदरि निहालीअै बहुड़ि न पावै ताउ ॥ २॥ साचे ते पवना भइिआ पवनै ते जलु होइि ॥ जल ते तृभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइि ॥ निरमलु मैला ना थीअै सबदि रते पति होइि ॥३॥ इिहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥

पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥ नानक अउगण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥४॥१५॥
सिरीरागु महला १ ॥ नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥ इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥ मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥१॥ गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥ जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ॥ आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥२॥ साहि साहि तुझु संमला कदे न विसारेउ ॥ जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अंमृतु पेउ ॥ मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥३॥ जिनि एहु जगतु उपाइआ तृभवणु करि आकारु ॥ गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥ घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ॥४॥ गुरमुखि जिनी जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥ सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ॥ नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभ पासि ॥५॥१६॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥ जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥ बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥१॥ मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥ गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥१॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥ तृसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥ ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥२॥ लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥ बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥ हरि जपि जीअरे छुटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥३॥ तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥ तृभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥ सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥४॥१७॥ सिरीरागु महला १ ॥ मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥ तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥ अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥१॥ जीअरे राम जपत मनु मानु ॥ अंतरि

लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥ मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥ अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥२॥ अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥ सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥ खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरि नाम निवासु ॥३॥ जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥ त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥ विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥४॥ मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥ गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥ नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥५॥१८॥ सिरीरागु महला १ ॥ एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥ सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥ साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥ सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ॥ निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥२॥ कूकर कूड़ु कमाईऐ गुर निंदा पचै पचानु ॥ भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥ मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥३॥ ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥ हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥ नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥४॥१९॥ सिरीरागु महला १ ॥ इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥ किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ॥ गुरि मिलिऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥१॥ मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ॥ जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥१॥ रहाउ ॥ जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥ हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥ गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥२॥ काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥ तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥ गुरमुखि रवहि सोहागणी सो

प्रभु सेज भतारु ॥३॥ चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु पाइ ॥ अंतरि कमलु प्रगासिआ अंमृतु भरिआ अघाइ ॥ नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥४॥२०॥ सिरीरागु महला १ ॥ हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥ मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥ कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥१॥ भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥ सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥ रहाउ ॥ सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥ जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ तिउ तृसना दासनि दासि ॥ जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥ गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥ साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पाँइ ॥ सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥३॥ मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥ सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गंभीरु ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥ सिरीरागु महला १ ॥ भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥ अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥ होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥१॥ मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥ गुर का कहिआ मनि वसै हउमै तृसना मारि ॥१॥ रहाउ ॥ मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥ मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥ आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥२॥ जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥ जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥ इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥ जिन्ना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥ गुर मिलि भउजलु लम्घीऐ दरगह पति परवाणु ॥ नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥४॥२२॥ सिरीरागु महला १ ॥ वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥ भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ हरि जसु वखरु लै चलहु

सहु देखै पतीआइि ॥१॥ रहाउ ॥ जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइि ॥ खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइि ॥ फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइि ॥२॥ खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइि ॥ खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइि ॥ खोटे खोटु कमावणा आइि गइिआ पति खोइि ॥३॥ नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥ राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥ पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ॥१॥ रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥ दिन थोड़ड़े थके भइिआ पुराणा चोला ॥१॥ रहाउ ॥ सजण मेरे रंगुले जाइि सुते जीराणि ॥ हंभी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥ की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइि ॥ लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइि ॥३॥ नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥ गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥ सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥ आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥ आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥१॥ रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥२॥ आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥३॥ प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥ कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥४॥२५॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥ मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइि लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥१॥ काहे गरबसि मूड़े माइिआ ॥ पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइिआ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइि धिआई ॥ जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥२॥ बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥ दस अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥

३॥२६॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े इेव जाणी ॥१॥ मतु जाण सहि गली पाइआ ॥ माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अैब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥ भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥ आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥ खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि इेकु धिआइआ ॥३॥ तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥ नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥४॥२७॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥ आब खाकु जिनि बंधि रहाई धन्नु सिरजणहारो ॥१॥ मरणा मुला मरणा ॥ भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाउ ॥ ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥ जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीअै पाई ॥२॥ सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥ है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥ पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥ नानकु आखै गोर सदेई रहिए पीणा खाणा ॥४॥२८॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ इेकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥ मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ तेरा इेकु नामु तारे संसारु ॥ मै इेहा आस इेहो आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥ पर घरु जोही नीच सनाति ॥ कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥ फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ खरा सिआणा बहुता भारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥ मै कीता न जाता हरामखोरु ॥ हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ इेका सुरति जेते है जीअ ॥ सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥

जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥ लेखा इको आवहु जाहु ॥१॥ काहे जीअ करहि चतुराई ॥ लेवै देवै ढिल न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥ कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥ जे तू साहिब आवहि रोहि ॥ तू एना का तेरे एहि ॥२॥ असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल ॥ तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥ जह करणी तह पूरी मति ॥ करणी बाझहु घटे घटि ॥३॥ प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥ आपु पछाणै बूझै सोइ ॥ गुर परसादि करे बीचारु ॥ सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥ जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥ न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥ रहाउ ॥ तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥ जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥ तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥२॥ जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥ नानकु इेक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥ आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनुो ॥ आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानुो ॥ जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानुो ॥४॥३१॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ कीता कहा करे मनि मानु ॥ देवणहारे कै हथि दानु ॥ भावै देइ न देई सोइ ॥ कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥ आपे सचु भावै तिसु सचु ॥ अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥ जा के रुख बिरख आराउ ॥ जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥ फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥ कची कंध कचा विचि राजु ॥ मति अलूणी फिका सादु ॥ नानक आणे आवै रासि ॥ विणु नावै नाही साबासि ॥ ३॥३२॥ सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥ अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥ जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥१॥ बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥ पोथी पुराण कमाईऐ ॥ भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥ सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥ इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥ करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥ इतु तनि लागै बाणीआ ॥ सुखु होवै सेव

कमाणीआ ॥ सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥ विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हउ सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ ॥ सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥ मन चिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥ नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥१॥ मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ॥ जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥ अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥ हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥ मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥२॥ सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥ हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उर धारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥ सेई सुखीड़े चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥ गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥ जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥ नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥४॥१॥३४॥ सिरीरागु महला ३ ॥ बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥१॥ मन रे गृह ही माहि उदासु ॥ सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥१॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ॥ हरि का नामु धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ॥२॥ जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥३॥ हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ तिना पिछै रिधि सिधि फिरै एना तिलु न तमाइ ॥४॥ जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु

सहजि सुभाइ ॥५॥२॥३५॥ सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥ जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥ गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥ अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥१॥ मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥ रहाउ ॥ सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥ दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥ जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥ मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥४॥ मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥ लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥५॥३॥३६॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ॥ गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥ हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥१॥ मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥ जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥ मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥२॥ जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ कूड़ा रंगु कसुंभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ जिसु अंदरि नाम

प्रगासु है एहु सदा सदा थिरु होइि ॥३॥ इिहु जनमु पदारथु पाइि कै हरि नामु न चेतै लिव लाइि ॥ पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइि ॥ एह वेला हथि न आवई अंति गइिआ पछुताइि ॥ जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइि ॥४॥ देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइि ॥ जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइि ॥ हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइि समाइि ॥ नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइि ॥५॥४॥३७॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी इिक मनि नामु धिआइिआ गुरमती वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ एइि अंमृतु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥१॥ भाई रे गुरमुखि सदा पति होइि ॥ हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइि ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइि ॥ सबदै सादु न आइिए लागे दूजै भाइि ॥ विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइि ॥२॥ तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइि ॥ कुलु उधारहि आपणा धन्नु जणेदी माइि ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइि ॥३॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइिआ विचहु आपु गवाइि ॥ एइि अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइि ॥ नानक आइे से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइि ॥४॥५॥३८॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥ हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥ गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइिआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥ भाई रे इिसु मन कउ समझाइि ॥ इे मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥ पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ सो जनु रलाइिआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥२॥ सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥ मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥ धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥३॥ करमि मिलै ता

पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ॥ नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरि नामि समाइ ॥४॥६॥३९॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सुख सागरु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥ अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥१॥ भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥ गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ॥ गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अंमृत नामि समाइ ॥ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥२॥ मनमुख मैले मलु भरे हउमै तृसना विकारु ॥ बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ धातुर बाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ॥३॥ गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ इेकु नामु करतारु ॥ नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥४॥७॥४०॥ स्रीरागु महला ३ ॥ मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥ सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ॥ हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ॥१॥ मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ॥ सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अन्नदु ॥ अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ॥ वडै भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अन्नदु ॥२॥ सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाइे ॥ अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाइे ॥ नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरि रसु पीआ अघाइे ॥३॥ जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥ मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥ नानक सबदि रते हरि नामि रंगाइे बिनु भै केही लागि ॥४॥८॥४१॥ सिरीरागु महला ३ ॥ घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥ खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥१॥ मेरे

मन तजि निंदा हउमै अहंकारु ॥ हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि इकंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखा के मुख उजले गुर सबदी बीचारि ॥ हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥ घर ही विचि महलु पाइआ गुर सबदी वीचारि ॥२॥ सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥ अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥ सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥३॥ सभना का दाता इकु है आपे बखस करेइ ॥ कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥४॥९॥४२॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥ गुर परसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥ इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥१॥ भाई रे गुरमुखि हरि नामु धिआइ ॥ नामु निधानु सद मनि वसै महली पावै थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥ बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञैं घरि काउ ॥ गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरि नाउ ॥२॥ त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥ लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करै पूकार ॥ बिखिआ अंदरि पचि मुइे ना उरवारु न पारु ॥३॥ माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥ बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥ नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥४॥१०॥४३॥ सिरीरागु महला ३ ॥ त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥ करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥१॥ भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥ साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥ आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥ लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥२॥ बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥ ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥ असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥३॥ जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥ एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥ नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा

होइ ॥४॥११॥४४॥ सिरीरागु महला ३ ॥ अंमृतु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥ आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥ मनमुख अंध न चेतही डूबि मुइे बिनु पाणी ॥१॥ मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु सरीरु माइिआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइिआ जोती जोति मिलाई ॥२॥ सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इिछे सो फलु पाइे ॥ जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाइे ॥ सदा अन्नदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाइे ॥३॥ जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥ नानक नदरी पाईअै गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥४॥१२॥४५॥ सिरीरागु महला ३ ॥ मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ॥ सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥ पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ॥१॥ भाई रे इिक मनि नामु धिआइि ॥ संता संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर धारि ॥ मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥ सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥२॥ पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ अंतरहु दुखु भ्रमु कटीअै सुखु परापति होइ ॥ गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइि ॥३॥ गुर के भाणे विचि अंमृतु है सहजे पावै कोइि ॥ जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइि ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईअै सचि मिलावा होइि ॥४॥१३॥४६॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइि ॥ सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइि ॥ सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइि ॥१॥ भाई रे गुर बिनु भगति न होइि ॥ बिनु गुर भगति न पाईअै जे लोचै सभु कोइि ॥१॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह फेरु पइिआ कामणि दूजै भाइि ॥ बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइि ॥ बिनु सबदै पिरु न पाईअै बिरथा जनमु गवाइि ॥

२॥ हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु संपै नालि ॥ अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥ सतगुरि मिलिऐ धनु पाइिआ हरि नामा रिदै समालि ॥३॥ नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइि ॥ मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइि ॥ नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइि ॥४॥१४॥४७॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥ आपै आपु मिलाइे बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥ हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ॥१॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइिआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाइे ॥ जीअ जंत इे किआ वेचारे किआ को आखि सुणाइे ॥ गुरमुखि आपे देइि वडाई आपे सेव कराइे ॥२॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइिआ तिस दी कीम न पाई ॥ हरि प्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइि सखाई ॥३॥ आपणै मनि चिति कहै कहाइे बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइि प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥४॥१५॥४८॥ सिरीरागु महला ३ ॥ धनु जननी जिनि जाइिआ धन्नु पिता परधानु ॥ सतगुरु सेवि सुखु पाइिआ विचहु गइिआ गुमानु ॥ दरि सेवनि संत जन खड़े पाइिनि गुणी निधानु ॥१॥ मेरे मन गुर मुखि धिआइि हरि सोइि ॥ गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइि ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा घरि आइिआ आपे मिलिआ आइि ॥ गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइि ॥ सचै सचि समाइिआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइि ॥२॥ जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइि ॥ चिरी विछुन्ने मेलिअनु सतगुर पन्नै पाइि ॥ आपे कार कराइिसी अवरु न करणा जाइि ॥३॥ मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ॥ अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ॥ नानक आपि मिलाइिअनु पूरै सबदि अपार ॥४॥१६॥४९॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गोविदु गुणी निधानु है अंतु न पाइिआ जाइि ॥ कथनी

बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥१॥ भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥ बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥ अंमृतु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥ पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥२॥ आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥ देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥ जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥३॥ जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥ पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥ नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरि गुण पावै सोइ ॥४॥१७॥५०॥ सिरीरागु महला ३ ॥ काँइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥ अधिआतम करम जे करे नामु न कब ही पाइ ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥१॥ सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥ गुर परसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥ पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥ सतगुरि मिलिऐ तृकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥२॥ गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥ सबदि मरै ता उधरै पाए मोख दुआरु ॥ गुर परसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥३॥ इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥ दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥ नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥४॥१८॥५१॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किरपा करे गुरु पाईऐ हरि नामो देइ दृड़ाइ ॥ बिनु गुर किनै न पाइए बिरथा जनमु गवाइ ॥ मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥१॥ मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥ हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥ मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥२॥ हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जंमै आवै जाइ ॥ मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥ गुर सेवा नाउ पाईऐ

सचे रहै समाइ ॥३॥ सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥ नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१९॥५२॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी पुरखी सतगुरु न सेविए से दुखीए जुग चारि ॥ घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥ सतगुरू किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥ सचा सबदु न सेविए सभि काज सवारणहारु ॥१॥ मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥ जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥ सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥ मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥ हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥ माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उर धारि ॥ किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥ सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥ आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥ धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥ सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥ सतगुरु पुरखु न मंनिए सबदि न लगो पिआरु ॥ इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ हरि जीउ आपणी कृपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥ नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥५॥२०॥५३॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥ सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥ नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥१॥ मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥ आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥१॥ रहाउ ॥ मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥ भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥ सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥ निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥२॥ जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ सचा सबदु न पछाणिए सुपना गइआ विहाइ ॥ सुंञे घर का पाहुणा

जिउ आइआ तिउ जाइ ॥ मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥३॥ सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥ गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥ सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥४॥२१॥५४॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥ मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥१॥ मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥ साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥ खेती जंमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥ गुर का सबदु अंमृतु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥२॥ आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥ बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥ हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥ तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥३॥ नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥४॥२२॥५५॥ सिरीरागु महला ३ ॥ आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥ दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उर धारि ॥ सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥१॥ मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥ हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥ जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥२॥ विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥ भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥ नदरि करे प्रभु आपणी आपे

लड़े मिलाइि ॥३॥ सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइि ॥ पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइि ॥ सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइि ॥ जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइि ॥४॥२३॥५६॥ स्रीरागु महला ३ ॥ बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइि ॥ गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइि ॥ गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइि ॥१॥ मन रे निज घरि वासा होइि ॥ राम नामु सालाहि तू फिरि आवण जाणु न होइि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइि ॥ सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइि ॥ सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइि ॥२॥ हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥ बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥ बिनु नावै ठउरु न पाइिनी जमपुरि दूख सहाहि ॥३॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥ गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ॥४॥२४॥५७॥ सिरीरागु महला ३ ॥ तिना अनन्दु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइि पिआरु ॥ किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥१॥ मन रे सदा अनन्दु गुण गाइि ॥ सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइि ॥ १॥ रहाउ ॥ सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइि ॥ गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइि ॥ जिहवा रती सबदि सचै अंमृतु पीवै रसि गुण गाइि ॥ गुरमुखि इेहु रंगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइि ॥२॥ संसा इिहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइि ॥ इिकि आपणै भाणै कढि लइिअनु आपे लइिएनु मिलाइि ॥ आपे ही आपि मनि वसिआ माइिआ मोहु चुकाइि ॥ आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइि बुझाइि ॥३॥ सभना का दाता इेकु है भुलिआ लड़े समझाइि ॥ इिकि आपे आपि खुआइिअनु दूजै छडिअनु लाइि ॥ गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइि ॥ अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइि ॥४॥२५॥५८॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुणवंती सचु पाइिआ तृसना तजि विकार ॥ गुर सबदी मनु

रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइिए करि वेखहु मनि वीचारि ॥ मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुर सबदि न करे पिआरु ॥१॥ मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥ निज घरि वसहि अंमृतु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥१॥ रहाउ ॥ अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥ मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥ गुर सबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥२॥ आपे रंगणि रंगिएनु सबदे लइिएनु मिलाइि ॥ सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइि ॥ चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइि ॥ जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइि ॥३॥ मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइि ॥ मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइि ॥ सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइि ॥ सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइि ॥४॥२६॥५९॥ सिरीरागु महला ३ ॥ आपे कारणु करता करे सृसटि देखै आपि उपाइि ॥ सभ इेको इिकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइि ॥ आपे प्रभू दइिआलु है आपे देइि बुझाइि ॥ गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइि ॥१॥ मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइि ॥ मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइि ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइि ॥ गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइि ॥ से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥२॥ गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥ घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥ गुर सबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइि ॥ सा धन नावै बाहरी अवगणवंती रोइि ॥३॥ सचु सलाही सचि लगा सचै नाइि तृपति होइि ॥ गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइि ॥ आपे मेलि मिलाइिदा फिरि वेछोड़ा न होइि ॥ नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइि ॥४॥२७॥६०॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सुणि सुणि काम गहेलीइे किआ चलहि बाह लुडाइि ॥ आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइि ॥ जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइि ॥ तिन ही

जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥१॥ मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुखि कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥ गरबि अटीआ तृसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥२॥ गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥ अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥३॥ से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेइ ॥ खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥ घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥ नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥४॥२८॥६१॥ सिरीरागु महला ३ ॥ इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥ सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥ जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥१॥ मुंधे तू चलु गुर कै भाइ ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥ सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥२॥ पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ मनु तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥ जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥३॥२९॥६२॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥ हरि जीउ बखसे बखसि लइे सूख सदा सरीरै ॥ गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गंभीरै ॥ १॥ मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ धरम राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ दूजै भाइ दुसटु आतमा एहु तेरी सरकार ॥ अधिआतमी हरि

गुण तासु मनि जपहि इेकु मुरारि ॥ तिन की सेवा धरम राइि करै धन्नु सवारणहारु ॥२॥ मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥ आतम रामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥ बिनु सतिगुर मुकति न पाईअै मनमुखि फिरै दिवानु ॥ सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥३॥ सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइि ॥ जिउ बोलाइे तिउ बोलीअै जा आपि बुलाइे सोइि ॥ गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइि ॥ नानक नामु समालि तू जितु सेविअै सुखु होइि ॥४॥३०॥ ६३॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जगि हउमै मैलु दुखु पाइिआ मलु लागी दूजै भाइि ॥ मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइि ॥ बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइि ॥ पड़िअै मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइि ॥१॥ मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइि ॥ मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइि ॥१॥ रहाउ ॥ मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइिआ जाइि ॥ मनमुख मैले मैले मुइे जासनि पति गवाइि ॥ गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइि समाइि ॥ जिउ अंधेरै दीपकु बालीअै तिउ गुर गिआनि अगिआनु तजाइि ॥२॥ हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥ करणै वाला विसरिआ दूजै भाइि पिआरु ॥ माइिआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ॥ गुरमती सुखु पाईअै सचु नामु उर धारि ॥३॥ जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥ इे मन भगती रतिआ सचु बाणी निज थाउ ॥ मनि रते जिहवा रती हरि गुण सचे गाउ ॥ नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥४॥३१॥६४॥ सिरीरागु महला ४ घरु १ ॥ मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइि ॥ जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिअै दुखु जाइि ॥ जाइि पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइि ॥१॥ मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइि ॥ हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता हरि नाम का प्रभु आपि मिलावै सोइि ॥ सतिगुरि हरि प्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइि ॥ हउ गुर सरणाई ढहि पवा करि दइिआ मेले प्रभु सोइि ॥२॥ मनहठि किनै न

पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥ सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥ कूड़ि कपटि किनै न पाइिए जो बीजै खावै सोइ ॥३॥ सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥ प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥ बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥ सिरीरागु महला ४ ॥ नामु मिलै मनु तृपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥ कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ हउ तिसु विटहु चउ खन्नीऐ मै नाम करे परगासु ॥१॥ मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु दृड़ाइ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ धन्नु वडभागी वड भागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥ जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिए से भागहीण वसि काल ॥ एइि फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥ एना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥३॥ सतिगुरु पुरखु अंमृत सरु वडभागी नावहि आइ ॥ उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु दृड़ाइ ॥ जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥ सिरीरागु महला ४ ॥ गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥ गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥ हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥ मेरे गोविंदा गुण गावा तृपति मनि होइ ॥ अंतरि पिआस हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ गुरु नामु दृड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ बिनु सतिगुर हरि नामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥२॥ बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥३॥ सतिगुरु बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥ धन्नु धन्नु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥

सिरीरागु महला ४ ॥ हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥ करि मिन्नति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥ मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥१॥ रहाउ ॥ होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥ निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥ हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥ सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥ बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥ जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥३॥ आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥ सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥४॥४॥६८॥ सिरीरागु महला ४ ॥ रसु अंमृतु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभु आइ ॥ एइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥१॥ भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥ सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ सतिगुर वचनु रतन्नु है जो मन्ने सु हरि रसु खाइ ॥ से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुर भाइ ॥२॥ इहु हरि रसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥ बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ एइ सतिगुर आगै ना निवहि एना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥३॥ हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरि रसु होइ ॥ आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अंमृतु चोइ ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥४॥५॥६९॥ सिरीरागु महला ४ ॥ दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥ आव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ गुड़ु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥ १॥ भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमति

हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ एनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ गुरमुखि दरगह मन्नीअहि हरि आपि लइे गलि लाइ ॥२॥ गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥ हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥ अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥३॥ जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥ तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥३३॥३१॥६॥७०॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥१॥ मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥ गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥ हैवर गैवर बहु रंगे कीइे रथ अथाक ॥ किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥२॥ लैदा बद दुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥ जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥३॥ सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ हरि जन का राखा इेकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ जो हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥ नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥४॥१॥७१॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनि बिलासु बहु रंगु घणा दृसटि भूलि खुसीआ ॥ छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥१॥ भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥ लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ जेते थान थन्नतरा तेते भवि आइआ ॥ धन पाती वड भूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥२॥ हुकमु चलाइे निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥ सभु को वसगति करि लइिअनु बिनु नावै खाकु रलिआ ॥३॥ कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ गिरंबारी वड साहबी

सभु नानक सुपनु थीआ ॥४॥२॥७२॥ सिरीरागु महला ५ ॥ भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ सो प्रभु चिति न आइए छुटैगी बेबाणि ॥ सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥ १॥ प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥ लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥ कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ एतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥ मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥ जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥ जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥ कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥ नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥३॥ ७३॥ सिरीरागु महला ५ ॥ घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥ माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥ उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥१॥ अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥ जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥१॥ रहाउ ॥ हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥ लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥ जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥ २॥ पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥ तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥ कद ही चिति न आइए जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥३॥ साधसंगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥ जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥ नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥४॥ ४॥७४॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥ धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥ आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥१॥ मन मेरे करते नो सालाहि ॥ सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१॥ रहाउ ॥ दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥ कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥ जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥ सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥२॥ सेवा मंगै सेवको

लाईआँ अपुनी सेव ॥ साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ॥ सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥ सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥३॥ इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥ इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥ इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥ सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥४॥५॥७५॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥ जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥१॥ मेरे मन इेकस सिउ चितु लाइि ॥ इेकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइि ॥१॥ रहाउ ॥ लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइि ॥ निमख इेक हरि नामु देइि मेरा मनु तनु सीतलु होइि ॥ जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥ सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥ बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥ थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥ नानक बधा घरु तहाँ जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥ स्रीरागु महला ५ ॥ सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहाँ पातिसाहु ॥ तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥ सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥१॥ मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥ आठ पहर प्रभु धिआइि तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइि घणा दुखु दरदु न मूले होइि ॥ सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइि ॥२॥ साधसंगति होइि निरमला कटीऐ जम की फास ॥ सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥ मिहर करे जिसु मिहरवानु ताँ कारजु आवै रासि ॥३॥ बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ॥ वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥ नानक कउ प्रभ मइिआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥४॥७॥७७॥ स्रीरागु महला ५ ॥ नामु धिआइे सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइि ॥ पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइि ॥ साधसंगति कै घरि वसै इेको

सचा सोइि ॥१॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइि ॥ नामु सहाई सदा संगि आगै लइे छडाइि ॥१॥ रहाउ ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥ माइिआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥ जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥२॥ साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥ उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ तिसहि परापति रतनु होइि जिसु मसतकि होवै भागु ॥३॥ तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥४॥८॥७८॥ सिरीरागु महला ५ ॥ इिकु पछाणू जीअ का इिको रखणहारु ॥ इिकस का मनि आसरा इिको प्राण अधारु ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥१॥ मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥ गुरु पूरा आराधि नित इिकसु की लिव लागु ॥१॥ रहाउ ॥ इिको भाई मितु इिकु इिको मात पिता ॥ इिकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥ सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥२॥ घरि इिको बाहरि इिको थान थन्नतरि आपि ॥ जीअ जंत सभि जिनि कीइे आठ पहर तिसु जापि ॥ इिकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥ पारब्रहमु प्रभु इेकु है दूजा नाही कोइि ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइि ॥ गुरि पूरै पूरा भइिआ जपि नानक सचा सोइि ॥४॥९॥७९॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जिना सतिगुर सिउ चितु लाइिआ से पूरे परधान ॥ जिन कउ आपि दइिआलु होइि तिन उपजै मनि गिआनु ॥ जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइिआ हरि नामु ॥१॥ मन मेरे इेको नामु धिआइि ॥ सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जनम मरण का भउ गइिआ भाउ भगति गोपाल ॥ साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ जनम मरण की मलु कटीऐ गुर दरसनु देखि निहाल ॥२॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइि ॥ सभना दाता इेकु है दूजा नाही कोइि ॥ तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइि ॥३॥ जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥ तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥ जिनी मेरा प्रभु

धिआइआ नानक तिन कुरबान ॥४॥१०॥८०॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरि सुखु वसिआ मनि आइ ॥ अंतरि जोति प्रगासीआ इेकसु सिउ लिव लाइ ॥ मिलि साधू मुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥ गुण गोविंद नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥१॥ मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥ गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मन कीआ इछाँ पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥ अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥ गुर परसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥ कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥२॥ पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होइे काम ॥ करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥ आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥ सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥३॥ भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥ हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥ आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥ पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥४॥११॥८१॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंमृत नामु ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥ मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥ हरि बिनु दूजा को नही इेको नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥ वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥ करि सेवा सुख सागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥२॥ चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥ मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥ निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥३॥ हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥ जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥ नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु ॥४॥१२॥८२॥ सिरीरागु महला ५ ॥ प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥ ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥ दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सत भाइ ॥ अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥१॥ भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥

माइिआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइि ॥१॥ रहाउ ॥ दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥ सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥ बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥ जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥ जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै साँति ॥ इिक मनि इेकु धिआईऐ मन की लाहि भराँति ॥ गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥ सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥३॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥ तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इिह जिंदु ॥ देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥ अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥४॥१३॥८३॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥ सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उर धारि ॥१॥ मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइि ॥ प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइि ॥१॥ रहाउ ॥ रतन पदारथ माणका सुइिना रुपा खाकु ॥ मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥२॥ अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥ तृसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥ भगती नाम विहूणिआ आवहि वंञहि पूर ॥३॥ राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइिआ ॥ बिनु प्रभ कोइि न रखनहारु महा बिकट जम भइिआ ॥ नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइिआ ॥४॥१४॥८४॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥ सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥ हरि नामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥१॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइि ॥ करि संगति नित साध की गुर चरणी चितु लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥ कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥ हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना जागु ॥२॥ करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥ जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा इेहु

सुआउ ॥ अैथै मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥३॥ करे कराइे आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥ मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥ नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥४॥ १५॥८५॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सरणि पइे प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ॥ सतगुर कै उपदेसिअै बिनसे सरब जंजाल ॥ अंदरु लगा राम नामि अंमृत नदरि निहालु ॥१॥ मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥ करे दइिआ प्रभु आपणी इिक निमख न मनहु विसारु ॥ रहाउ ॥ गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ॥ बिनु हरि नाम न सुखु होइि करि डिठे बिसथार ॥ सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ॥२॥ तीरथ वरत लख संजमा पाईअै साधू धूरि ॥ लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥३॥ सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ॥ सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिएनु जहानु ॥ नानक जपीअै सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥४॥ १६॥८६॥ सिरीरागु महला ५ ॥ उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥ संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥ मन मेरे राम नामु जपि जापु ॥ मन इिछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥ रहाउ ॥ जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥ मनु तनु निरमलु होइिआ लागी साचु परीति ॥ चरण भजे पारब्रहम के सभि जप तप तिन ही कीति ॥३॥ रतन जवेहर माणिका अंमृतु हरि का नाउ ॥ सूख सहज आन्नद रस जन नानक हरि गुण गाउ ॥४॥१७॥८७॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सोई सासतु सउणु सोइि जितु जपीअै हरि नाउ ॥ चरण कमल गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ॥ करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥ १॥ मेरे मन हरि भजु सदा इिक रंगि ॥ घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ॥ १॥ रहाउ ॥ सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ॥ जिन चाखिआ से तृपतासिआ उह

रसु जाणै जिंदु ॥ संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥ जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥२॥ अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥ रसना उचरै गुणवती कोइि न पुजै दानु ॥ दृसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥ जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥३॥ मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥ दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥ भूला मारगि पाइिएनु गुण अवगुण न बीचारि ॥ नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥४॥१८॥८८॥ सिरीरागु महला ५ ॥ रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइि ॥ मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइि ॥ मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइि ॥१॥ मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥ बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइि बिनासु ॥१॥ रहाउ ॥ साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइि ॥ मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइि ॥ चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवरु न जाइि ॥२॥ तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥ सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥ सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥३॥ परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥ सदा सदा आराधीऐ इेहा मति विसेख ॥ मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥४॥१९॥८९॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥ तोसा बंधहु जीअ का ऐथै एथै नालि ॥ गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥ करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइि दइआलु ॥१॥ मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइि ॥ दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइि ॥ गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइि ॥ गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइि ॥ गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लइे तराइि ॥२॥ कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करण कारण समरथु ॥ से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥ गुरि अंमृत नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥ गुरु

परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ॥३॥ सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंडु ॥ जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥ गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥ नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥४॥२०॥९०॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मिठा करि कै खाइिआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥ भाई मीत सुरिद कीइे बिखिआ रचिआ बादु ॥ जाँदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥१॥ मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥ जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ कूकरु हरकाइिआ धावै दह दिस जाइि ॥ लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइि ॥ काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइि ॥२॥ माइिआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइि ॥ तृसना पंखी फासिआ निकसु न पाइे माइि ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइि ॥३॥ अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इिहु संसारु ॥ जिस नो रखै सो रहै संमृथु पुरखु अपारु ॥ हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥४॥२१॥९१॥ सिरीरागु महला ५ घरु २ ॥ गोइिलि आइिआ गोइिली किआ तिसु डंफु पसारु ॥ मुहलति पुन्नी चलणा तूं संमलु घर बारु ॥१॥ हरि गुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥२॥ मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥ सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥ लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइिएइि ॥ नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइिएइि ॥४॥२२॥९२॥ सिरीरागु महला ५ ॥ तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥ जा साथी उठी चलिआ ता धन खाकू रालि ॥१॥ मनि बैरागु भइिआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ धन्नु सु तेरा थानु ॥१॥ रहाउ ॥ जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥ जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइि न पुछै तेरी बात ॥२॥ पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥ गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३॥ सभना साहुरै वंञणा

सभि मुकलावणहार ॥ नानक धन्नु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥९३॥
सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ करण कारण इेकु एही जिनि कीआ आकारु ॥ तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥१॥ गुर के चरन मन महि धिआइि ॥ छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिव लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंत्रु हिरदै होइि ॥ कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिए न कोइि ॥२॥ देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥ साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥ से वडभागी नानका जिना मनि इिहु भाउ ॥४॥२४॥९४॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइि उधारु ॥१॥ जपि मन नामु इेकु अपारु ॥ प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥ पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥ सतु संतोखु दइिआ कमावै इेह करणी सार ॥ आपु छोडि सभ होइि रेणा जिसु देइि प्रभु निरंकारु ॥३॥ जो दीसै सो सगल तूंहै पसरिआ पासारु ॥ कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥४॥२५॥९५॥ सिरीरागु महला ५ ॥ दुकृत सुकृत मंधे संसारु सगलाणा ॥ दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥ ठाकुरु सरबे समाणा ॥ किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरखु सुजाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥ तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥२॥ कहन कहावन इिहु कीरति करला ॥ कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥३॥ गति अविगति कछु नदरि न आइिआ ॥ संतन की रेणु नानक दानु पाइिआ ॥४॥२६॥९६॥
सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइिआ ॥ भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइिआ ॥१॥ सुहेला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥१॥ रहाउ ॥ हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥ सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥ पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन

जुगता ॥ बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥३॥ भइे किरपाल ठाकुर रहिए आवण जाणा ॥ गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥४॥२७॥६७॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥ सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइिआलु ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥१॥ मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥ तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अंमृत नामु ॥१॥ रहाउ ॥ जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥ तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥ गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥२॥ आइे से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइि ॥ सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइि ॥ करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइि ॥३॥ सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥ सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥ सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै इेक ॥४॥२८॥६८॥ सिरीरागु महला ५ ॥ गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइि पिआरु ॥ सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइि अधारु ॥ सतिगुर बचन कमावणे सचा इेहु वीचारु ॥ बिनु साधू संगति रतिआ माइिआ मोहु सभु छारु ॥१॥ मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥ साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइि ॥ गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइि ॥ गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइि ॥ गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइि ॥२॥ गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥ गुरु दाता हरि नामु देइि उधरै सभु संसारु ॥ गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥ गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥३॥ जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥ पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥ सतिगुर सरणी आइिआँ बाहुड़ि नही बिनासु ॥ हरि नानक कदे न विसरउ इेहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥४॥२९॥६९॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइि ॥ गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥ आगै दरगहि

मन्नीअहि मिलै निथावे थाउ ॥१॥ भाई रे साची सतिगुर सेव ॥ सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥ अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचे सचा नाउ ॥२॥ सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥ गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥ नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥३॥ गुरु परमेसरु इेकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥ नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥४॥३०॥१००॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥ जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥ आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥ बाबा अलहु अगम अपारु ॥ पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥ जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥ पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥ बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥ पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥ थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥ जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥ वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥ केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥ नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥ महला १ ॥ सभे कंत महेलीआ

सगलीआ करहि सीगारु ॥ गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥ पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥ हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥ तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥ दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥ लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥ प्रिअ की चेरी कांढीऐ लाली मानै नाउ ॥ साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥ सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥ सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥ पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥ नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥ साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥ चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥ दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥५॥ नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥ बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥ निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥ अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥ जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥ सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥ हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥ सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥ सिरीरागु महला १ ॥ आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥ आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥ साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥१॥ हरि जीउ तूं करता करतारु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं हरि नामु मिलै आचारु ॥१॥ रहाउ ॥ आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥ आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥ आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥ साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ॥ निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥ असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥ आपे निरमलु इकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ॥ गुरि राखे से उबरे साचे सिउ

लिव लाइि ॥४॥ हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥ तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु एताकु ॥ नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥ जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥ हउमै तृसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥ जग महि लाहा इेकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥ साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥ साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥ पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥ ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइि ॥ जह देखा तह इेकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइि ॥ जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइि ॥८॥३॥ सिरीरागु महला १ ॥ मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥ अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥ कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥ भाई रे इिउ सिरि जाणहु कालु ॥ जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥ रहाउ ॥ सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥ सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥ हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥ सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥ बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइि न संगी साथि ॥३॥ सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥ जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥ सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइि मिलाइि ॥ साजनि मिलिऐ सुखु पाइिआ जमदूत मुए बिखु खाइि ॥ नावै अंदरि हउ वसाँ नाउ वसै मनि आइि ॥५॥ बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइि ॥ गुरमती परगासु होइि सचि रहै लिव लाइि ॥ तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइि ॥६॥ तूंहै साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥ गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥ हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥ हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥ नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इिना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥ सिरीरागु महला १ ॥ मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा

जूठी होइ ॥ मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥ बिनु अभ सबद न माँजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥ मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥ पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥ रहाउ ॥ पिरु परदेसी जे थीऐ धन वाँढी झूरेइ ॥ जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥ पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥ पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥ तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥ सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥ कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥ ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥ आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥ पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥ पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥ दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥ पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥ अन कउ मती दे चलहि माइिआ का वापारु ॥ कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥ केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥ वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥ बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥ सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥ हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥ सिरीरागु महला १ ॥ जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥ पुन्न दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥१॥ मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥ अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥ मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥ विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥२॥ लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥ वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि ॥३॥ संताँ संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥ मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥ सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥ जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो

पलै पाइि ॥ तृभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइि ॥५॥ सा धन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥ महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥ सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥६॥ भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥ बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥ नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥७॥ पुछहु जाइि पधाऊआ चले चाकर होइि ॥ राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइि ॥ नानक इेको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइि ॥८॥६॥ सिरीरागु महला १ ॥ गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ॥ निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥ सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥१॥ भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइि ॥ निरमलु साचा इेकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ रवि ससि दीप अनूप जोति तृभवणि जोति अपार ॥ हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥२॥ गिआन अंजनु भै भंजना देखु निरंजन भाइि ॥ गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइि ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लइे मिलाइि ॥३॥ कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइि ॥ खोटे ठउर न पाइिनी खरे खजानै पाइि ॥ आस अंदेसा दूरि करि इिउ मलु जाइि समाइि ॥४॥ सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइि ॥ सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइि ॥ सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइि ॥५॥ बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ॥ मुनि जन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥ सचि रते से जिणि गइे हउ सद बलिहारै जासु ॥६॥ चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइि ॥ भगती भाइि विहूणिआ मुहु काला पति खोइि ॥ जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइि ॥७॥ खोजत खोजत पाइिआ डरु करि मिलै मिलाइि ॥ आपु पछाणै घरि वसै हउमै तृसना जाइि ॥ नानक निरमल ऊजले जो राते हरि नाइि ॥८॥७॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥ हरि जपि नामु धिआइि तू जमु डरपै दुख भागु ॥ दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै

सुहागु ॥१॥ भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥ मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥ मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥ गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥३॥ बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥ तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु न चीति ॥ सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥४॥ हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥ सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥ नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥ सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥ सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥ गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥ सिरीरागु महला १ ॥ बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥ ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥ मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥ बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥ गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥ सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥ मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥ हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥ मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥ इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥ खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु

कालु संताइि ॥ साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइि ॥५॥ वापारी वणजारिआ आइे वजहु लिखाइि ॥ कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइि ॥ पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइि ॥६॥ गुरमुखि तोलि तुोलाइिसी सचु तराजी तोलु ॥ आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥ आपि तुलाइे तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥ कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥ काइिआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥६॥ सिरीरागु महला १ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥ मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥ मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥१॥ भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइि ॥ पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइि ॥१॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइि ॥ सफलिए बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइि ॥ लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइि ॥२॥ गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥ साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥ सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥३॥ भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥ ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥ सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥४॥ इिकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइि ॥ जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइि ॥ घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइि ॥५॥ मेरी मेरी करि गइे तनु धनु कलतु न साथि ॥ बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥ साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥ आवै जाइि भवाईऐ पइिऐ किरति कमाइि ॥ पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइि ॥ बिनु हरि नाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइि ॥७॥ तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥ हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥ नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥८॥१०॥ सिरीरागु महला १ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥ लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥ जल महि

जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥१॥ मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि साँति सरीर ॥ बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥२॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चातृक मेह ॥ सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥ करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥३॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥ आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥ आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥४॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥ खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥ मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥५॥ मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥ गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥६॥ सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ गिआन पदारथु पाईऐ तृभवण सोझी होइ ॥ निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥७॥ खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥ घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥८॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥ सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥९॥ मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥ मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥ नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥१०॥११॥ सिरीरागु महला १ ॥ मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥ गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥ गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥१॥ बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥ भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ भूली फिरै दिसंतरी भूली गृहु तजि जाइ ॥ भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥ धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥२॥ विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम

पिआरि ॥ साचि सहजि सोभा घणी हरि गुण नाम अधारि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥३॥ अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥ तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥ गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥४॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥ सा धन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥ घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥५॥ गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥ गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥६॥ करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥ गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥७॥ भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥ गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥ नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥८॥१२॥ सिरीरागु महला १ ॥ तृसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥ धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥ मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥ मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥ जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥ वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥२॥ आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥ नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥ जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥३॥ गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥ असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥ आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥४॥ तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥ गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥५॥ जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥ गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥ बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥६॥ आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ॥ आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥ अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ

॥७॥ सरबे थाई इेकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥ गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु ॥ हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥८॥ आकासी पातालि तूं तृभवणि रहिआ समाइि ॥ आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइि ॥ नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइि ॥६॥१३॥ सिरीरागु महला १ ॥ राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥ सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरि नामु अधारु ॥१॥ मन रे साची खसम रजाइि ॥ जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ तनु बैसंतरि होमीऐ इिक रती तोलि कटाइि ॥ तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइि ॥ हरि नामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइि ॥२॥ अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइि ॥ तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइि ॥ हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइि ॥३॥ कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥ भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥ राम नामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥४॥ मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥ केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोख दुआर ॥ सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥५॥ सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइि ॥ इिकनै भाँडे साजिऐ इिकु चानणु तिहु लोइि ॥ करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइि ॥६॥ साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइि ॥ अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइि ॥ पी अंमृतु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइि ॥७॥ घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइि ॥ विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइि ॥ नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइि ॥८॥१४॥ सिरीरागु महला १ ॥ चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥ करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥ अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥१॥ भाई रे तनु धनु साथि न होइि ॥ राम नामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥ आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥ आपि छडाइे छुटीऐ

आपे बखसणहारु ॥२॥ मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥ गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥३॥ चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥ बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥ मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥४॥ साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥ रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥ पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥ बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥ सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरि गुर दरसु न होइ ॥६॥ जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जब लगि निद्रा होइ ॥ इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥ गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥७॥ अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥ बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥ नानक गुरमुखि हरि रसि मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥८॥१५॥ सिरीरागु महला १ ॥ डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥ ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥ गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥१॥ भाई रे भवजलु बिखमु डराँउ ॥ पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥ जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥२॥ दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥ किस ही नालि न चलिआ खपि खपि मुइे असार ॥३॥ सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥ सभ जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥ पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥४॥ पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥ चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥ खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥५॥ महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥ चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ॥ मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥६॥ हउमै करि करि जाइसी जो आइआ

जग माहि ॥ सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥ गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥७॥ नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥ मै हरि नामु न वीसरै हरि नामु रतनु वेसाहु ॥ मनमुख भउजलि पचि मुइे गुरमुखि तरे अथाहु ॥८॥१६॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥ मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥ दुनीआ कैसि मुकामे ॥ करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥ रहाउ ॥ जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥२॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ दरि कूच कूचा करि गइे अवरे भि चलणहार ॥३॥ सुलतान खान मलूक उमरे गइे करि करि कूचु ॥ घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥ सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइि ॥ नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइि ॥५॥ अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु ॥ सभ दुनी आवण जावणी मुकामु इेकु रहीमु ॥६॥ मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकामु एही इेकु ॥७॥ दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइि ॥ मुकामु एही इेकु है नानका सचु बुगोइि ॥८॥१७॥ महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइि ॥ आपै आपु मिलाइे बूझै ता निरमलु होवै कोइि ॥ हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइि ॥१॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइिआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाइे ॥ जीअ जंत इे किआ वेचारे किआ को आखि सुणाइे ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराइे ॥२॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ

नालि न जाई ॥ सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥ पेईअड़ै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥ हरि सुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥४॥ पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥ जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥५॥ आपे नदरि करे भाउ लाइे गुर सबदी बीचारि ॥ सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै तृसना मारि ॥ हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि ॥६॥ प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥७॥ आपणै मनि चिति कहै कहाइे बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥८॥१॥१८॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥ जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥१॥ मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥२॥ जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥ हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पइे दरि थाइ ॥३॥ गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥ जे सउ अंमृतु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥४॥ से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥ सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥५॥ मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिमृति सासत्र सोधहु जाइ ॥ मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥६॥ हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥७॥ नानक दाता इेकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ गुर परसादी पाईऐ

करमि परापति होइ ॥८॥२॥१९॥ सिरीरागु महला ३ ॥ पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥ हरि रसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥ निज घरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥१॥ मन रे गुर की कार कमाइ ॥ गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरि नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥ जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥ बिनु गुर महलु न जापई ना अंमृत फल पाहि ॥२॥ गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥ साखा तीनि निवारीआ इेक सबदि लिव लाइ ॥ अंमृत फलु हरि इेकु है आपे देइ खवाइ ॥३॥ मनमुख ऊभे सुकि गइे ना फलु तिन्ना छाउ ॥ तिन्ना पासि न बैसीअै एना घरु न गिराउ ॥ कटीअहि तै नित जालीअहि एना सबदु न नाउ ॥४॥ हुकमे करम कमावणे पइअै किरति फिराउ ॥ हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥ हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥५॥ हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥ मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥ अंतरि साँति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥६॥ गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥ सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥ आइे से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥७॥ सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥ जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥ नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥८॥३॥२०॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि नामु धिआईअै मनमुखि बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥ सहजे ही सुखु पाईअै सहजे रहै समाइ ॥१॥ भाई रे दासनि दासा होइ ॥ गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाइे कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सदा पिरु निहचलु पाईअै ना एहु मरै न जाइ ॥ सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥२॥ हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥ गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥३॥ माइआ मोहु चुकाइआ

गुरमती सहजि सुभाइ ॥ बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥ सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥४॥ माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥ तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥५॥ माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥ दुखि सुखि इहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥ बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥६॥ बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥७॥ बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥ भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥ नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥८॥४॥२१॥ सिरीरागु महला ३ ॥ माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाइ ॥ मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाइ ॥ गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आइ ॥१॥ मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥ गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥ घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥२॥ नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥ सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥ दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥ सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥ इको पड़ै इको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥ खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाइ ॥ सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाइ ॥ सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाइ ॥५॥ पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाइ ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाइ ॥ जा नाउ चेतै ता गति पाइ जा सतिगुरु मेलि मिलाइ ॥६॥ सतसंगति महि

नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाइे ॥ मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाइे ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाइे ॥७॥ सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥ प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥८॥५॥२२॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइिआ न जाइि ॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइे ॥ गुर भेटे सहजु पाइिआ आपणी किरपा करे रजाइि ॥१॥ भाई रे गुर बिनु सहजु न होइि ॥ सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइिआ सचु सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ सहजे गाविआ थाइि पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥ सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥ सहजै ही ते सुख साति होइि बिनु सहजै जीवणु बादि ॥२॥ सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइि ॥ सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइि ॥ सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरि रसु खाइि ॥३॥ सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइि ॥ सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइि ॥ से वडभागी जिनी पाइिआ सहजे रहे समाइि ॥४॥ माइिआ विचि सहजु न ऊपजै माइिआ दूजै भाइि ॥ मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइि ॥ जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइि ॥ ५॥ तृहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइि ॥ पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइि ॥ चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइि ॥६॥ निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइि ॥ गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइि ॥ भुलिआ सहजि मिलाइिसी सबदि मिलावा होइि ॥७॥ बिनु सहजै सभु अंधु है माइिआ मोहु गुबारु ॥ सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥ आपे बखसि मिलाइिअनु पूरे गुर करतारि ॥८॥ सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥ सभना जीआ का इिकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥ पूरै सबदि सलाहीऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥९॥ गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥ अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥ नानक तोटि न आवई दीइे

देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥ पूरै सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥१॥ मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥२॥ वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥ आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥३॥ इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥ लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥४॥ भगता मनि आनन्दु है सचै सबदि रंगि राते ॥ अनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥५॥ गुरमुखि अंमृत बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥ इेको सेवनि इेकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥६॥ सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥७॥ आपे करे कराइे आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥८॥७॥२४॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भइे पवितु सरीर ॥ मनि आन्नदु सदा सुखु पाइिआ भेटिआ गहिर गंभीरु ॥ सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥१॥ मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥ सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥१॥ रहाउ ॥ सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥२॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥ सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥३॥ सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइि ॥ सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइि ॥ जिन्नी सचु विसारिआ से दुखीइे चले रोइि ॥४॥ सतिगुरु जिनी न सेविए से कितु आइे संसारि ॥ जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ बिरथा जनमु गवाइिआ मरि

जंमहि वारो वार ॥५॥ इेहु जगु जलता देखि कै भजि पइे सतिगुर सरणा ॥ सतिगुरि सचु दिड़ाइिआ सदा सचि संजमि रहणा ॥ सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥ लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइि पति खोई ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइिआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥ जो सचै लाइे से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥ तिना निज घरि वासा पाइिआ सचै महलि रहंनि ॥ नानक भगत सुखीइे सदा सचै नामि रचंनि ॥८॥१७॥८॥२५॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइि न देइि ॥ लागू होइे दुसमना साक भि भजि खले ॥ सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥१॥ साहिबु निताणिआ का ताणु ॥ आइि न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥ १॥ रहाउ ॥ जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥ दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥ जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ ग्रिसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥ गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइि ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइि ॥३॥ कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ चारे किलविख उनि अघ कीइे होआ असुर संघारु ॥ पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥ ४॥ सासत सिंम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥ तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइि ॥ रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइि ॥५॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥ बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ रंग तमासे बहु बिधी चाइि लगि रहिआ ॥ चिति न आइिओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइिआ ॥६॥ बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥ मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥ लसकर तरकसबंद

बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चिति न आइिए पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत ॥७॥ काइिआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥ मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥ सभ किछु कीतोनु आपणा जीइि न संक धरिआ ॥ चिति न आइिए पारब्रहमु जमकंकर वसि परिआ ॥८॥ किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥ जिउ जिउ एहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥ सतिगुर तुठै पाइिआ नानक सचा नाउ ॥६॥१॥२६॥ सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥ जानउ नही भावै कवन बाता ॥ मन खोजि मारगु ॥१॥ रहाउ ॥ धिआनी धिआनु लावहि ॥ गिआनी गिआनु कमावहि ॥ प्रभु किन ही जाता ॥१॥ भगउती रहत जुगता ॥ जोगी कहत मुकता ॥ तपसी तपहि राता ॥२॥ मोनी मोनिधारी ॥ सनिआसी ब्रहमचारी ॥ उदासी उदासि राता ॥३॥ भगति नवै परकारा ॥ पंडितु वेदु पुकारा ॥ गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥ इिक सबदी बहु रूपि अवधूता ॥ कापड़ी कउते जागूता ॥ इिकि तीरथि नाता ॥५॥ निरहार वरती आपरसा ॥ इिकि लूकि न देवहि दरसा ॥ इिकि मन ही गिआता ॥६॥ घाटि न किन ही कहाइिआ ॥ सभ कहते है पाइिआ ॥ जिसु मेले सो भगता ॥७॥ सगल उकति उपावा ॥ तिआगी सरनि पावा ॥ नानकु गुर चरणि पराता ॥८॥२॥२७॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ जोगी अंदरि जोगीआ ॥ तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥ तेरा अंतु न पाइिआ सुरगि मछि पइिआलि जीउ ॥१॥ हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥१॥ रहाउ ॥ तुधु संसारु उपाइिआ ॥ सिरे सिरि धंधे लाइिआ ॥ वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥२॥ परगटि पाहारै जापदा ॥ सभु नावै नो परतापदा ॥ सतिगुर बाझु न पाइिए सभ मोही माइिआ जालि जीउ ॥३॥ सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥

सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥ सततसंगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै इेको नामु वखाणीऐ ॥ इेको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥ इिहु जगतु भरमि भुलाइिआ ॥ आपहु तुधु खुआइिआ ॥ परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥ दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥ मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइि जीउ ॥७॥ सोहागणी किआ करमु कमाइिआ ॥ पूरबि लिखिआ फलु पाइिआ ॥ नदरि करे कै आपणी आपे लइे मिलाइि जीउ ॥८॥ हुकमु जिना नो मनाइिआ ॥ तिन अंतरि सबदु वसाइिआ ॥ सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥ जिना भाणे का रसु आइिआ ॥ तिन विचहु भरमु चुकाइिआ ॥ नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लइे मिलाइि जीउ ॥१०॥ सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइिआ ॥ जिनि विचहु अहकरणु चुकाइिआ ॥ दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइि जीउ ॥११॥ अंमृतु तेरी बाणीआ ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥ सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥ सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥ सतिगुर बाझु न पाइिए सभ थकी करम कमाइि जीउ ॥१३॥ हउ सतिगुर विटहु घुमाइिआ ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइिआ ॥ नदरि करे जे आपणी आपे लइे रलाइि जीउ ॥१४॥ तूं सभना माहि समाइिआ ॥ तिनि करतै आपु लुकाइिआ ॥ नानक गुरमुखि परगटु होइिआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥ आपे खसमि निवाजिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइि कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥ सभि संजम रहे सिआणपा ॥ मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥ प्रगट प्रतापु वरताइिए सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥ मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥ प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥ कंठि लाइि कै रखिएनु लगै न तती वाउ जीउ ॥१८॥ मै मनि तनि प्रभू धिआइिआ ॥ जीइि इिछिअड़ा फलु पाइिआ ॥ साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक

जीवै नाउ जीउ ॥१६॥ तुधु आपे आपु उपाइआ ॥ दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥ सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥२०॥ गुर परसादी पाइआ ॥ तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी आपे लइे समाइ जीउ ॥२१॥ गोपी नै गोआलीआ ॥ तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥ हुकमी भाँडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥२२॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥ निरमल जोति तिन प्राणीआ एइि चले जनमु सवारि जीउ ॥२३॥ तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥ मै राति दिहै वडिआईआँ ॥ अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥२४॥१॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पै पाइ मनाई सोइि जीउ ॥ सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइि जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ गोसाई मिह्मडा इठड़ा ॥ अंम अबे थावहु मिठड़ा ॥ भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइि जीउ ॥१॥ तेरै हुकमे सावणु आइआ ॥ मै सत का हलु जोआइआ ॥ नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥२॥ हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ॥ दुया कागलु चिति न जाणदा ॥ हरि इकतै कारै लाइिएनु जिउ भावै तिंवै निबाहि जीउ ॥३॥ तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईए ॥ हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥४॥ हउ आइिआ सामै तिह्मडीआ ॥ पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥ कन्नु कोई कढि न ह्मघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥५॥ हउ वारी घुंमा जावदा ॥ इक साहा तुधु धिआइदा ॥ उजड़ु थेहु वसाइिए हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥६॥ हरि इठै नित धिआइदा ॥ मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥ सभे काज सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥७॥ मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥ गोसाई सेवी सचड़ा ॥ नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥८॥ मै सुखी हूं सुखु पाइआ ॥ गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ॥ सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥६॥ मै बधी सचु धरम साल है ॥ गुरसिखा लहदा भालि कै ॥ पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि

लगा पाइ जीउ ॥१०॥ सुणि गला गुर पहि आइआ ॥ नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ॥ सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥११॥ सभ सृसटि सेवे दिनु राति जीउ ॥ दे कन्नु सुणहु अरदासि जीउ ॥ ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ ॥१२॥ हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥ पै कोइ न किसै रञाणदा ॥ सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥१३॥ झिंमि झिंमि अंमृतु वरसदा ॥ बोलाइआ बोली खसम दा ॥ बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥१४॥ तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥ हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥ देहु दरसु सुखदातिआ मै गल विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥१५॥ तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥ तूं दीप लोअ पइआलिआ ॥ तूं थानि थन्नतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥१६॥ हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥ मै गुर मिलि उच दुमालड़ा ॥ सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥१७॥ वात वजनि टंमक भेरीआ ॥ मल लथे लैदे फेरीआ ॥ निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥१८॥ सभ इकठे होइ आइआ ॥ घरि जासनि वाट वटाइआ ॥ गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ॥१९॥ तूं वरना चिहना बाहरा ॥ हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥ सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ॥२०॥ मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥ गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥ हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ॥२१॥२॥२९॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥ उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥ खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥ जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥ कहु नानक

प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइिआ गरभासि ॥१॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइिआ धिआनु ॥ हथो हथि नचाईअै वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ हथो हथि नचाईअै प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइिआ धिआनु ॥२॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥ हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइिआ संगि माइिआ ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइिआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइिआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि चलाइिआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिए जा जमि पकड़ि चलाइिआ ॥ झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइिआ पराइिआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइिआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥ सिरीरागु महला १ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ खीरु पीअै खेलाईअै वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माइिआ मोहु सबाई ॥ संजोगी आइिआ किरतु कमाइिआ करणी कार कराई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥ राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाइि भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइि ॥ जोबनु घटै जरूआ जिणै

वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥ अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥ बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥३॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥ अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कन्नी सुणै न वैण ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥ गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवण जाणा ॥ खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥ एड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥ इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥ गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जंमणु मरणा ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥ पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥ कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥ सिरीरागु महला ४ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥ हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥ हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥ बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥ जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥ मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥ लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥ जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥ कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥ धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरि नामा हरि न समालि ॥ हरि नामा हरि हरि कदे

न समालै जि होवै अंति सखाई ॥ इहु धनु संपै माइिआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥ जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइि मिले हरि नालि ॥३॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥ हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥ हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥ गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखाँदी ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिउ रैणि भगता दी ॥४॥ १॥३॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइिता उदरै माहि ॥ दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥ मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइिआ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइिआ ॥ करम सुकरम कराइे आपे इिसु जंतै वसि किछु नाहि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइिता उदरै माहि ॥१॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइि ॥ बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहमेइि ॥ बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥ पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥ धरम राइि जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइि ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइि ॥२॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥ पुतृ कलतृ मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥ अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥ साधसंगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥ सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इिक निमख न लगो धिआनु ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइिआ सोइि ॥ गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइि ॥ गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते

होइ सखाई ॥ इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥ सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥ लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥ इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा एनी तकड़े पाइे हाथ ॥ लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥ जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥ करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥ कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥५॥१॥४॥

सिरीरागु महला ४ घरु २ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुंध इआणी पेईअड़ै किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥ हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कंम सिखै ॥ साहुरड़ै कंम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआइे ॥ सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाइे ॥ लेखा धरम राइि की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥ मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥१॥ वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइिआ ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइिआ ॥ बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ हउमै रोगु गइिआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ अकाल मूरति वरु पाइिआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइिआ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइिआ ॥२॥ हरि सति सते मेरे बाबुला हरि जन मिलि जंञ सुहंदी ॥ पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥ साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥ सभु सफलिए जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥ हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइिआ पुरखु अन्नदी ॥ हरि सति सति मेरे बाबोला हरि जन मिलि जंञ सोहंदी ॥३॥ हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु

दानु मै दाजो ॥ हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥ खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥ होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥४॥ हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलम्दी ॥ जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ नानक संत संत हरि इको जपि हरि हरि नामु सोहन्दी ॥ हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥

सिरीरागु महला ५ छंत

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥ मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥ संगि सहाई हरि नामु धिआई बिरथा कोइ न जाइे ॥ मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाइे ॥ जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥ मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥ चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥ गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥ आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥२॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥ हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥ चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥३॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नामु जपत परगासो ॥ सिमरि सुआमी

सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥ पुरबे कमाइे स्रीरंग पाइे हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥ अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥ नानकु सिख देइि मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥४॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥ हरि पी आघाने अंम्रित बाने स्रब सुखा मन वुठे ॥ स्रीधर पाइे मंगल गाइे इछ पुंनी सतिगुर तुठे ॥ लड़ि लीने लाइे नउ निधि पाइे नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥ नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥५॥१॥२॥

सिरीराग के छंत महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ डखणा ॥

हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥ संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥१॥ छंतु ॥ चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवइे जीउ ॥ दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावइे जीउ ॥ दासा नह भावइे बिनु दरसावइे इक खिनु धीरजु किउ करै ॥ नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥ मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंगि मिलि गावइे ॥ नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावइे ॥१॥ डखणा ॥ सोहंदड़ो हभ ठाइि कोइि न दिसै डूजड़ो ॥ खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥१॥ छंतु ॥ तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥ सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥ किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥ मन बाँछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥ अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥ नानक की बेन्नती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥२॥ डखणा ॥ धूड़ी मजनु साध खे साई थीइे क्रिपाल ॥ लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥१॥ छंतु ॥ सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥ मनि तने

गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अंमृतु पीवते जीउ ॥ अंमृतु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥ भइे किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥ सरबसो सूख आन्नद घन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥ इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥३॥ डखणा ॥ जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिएहि ॥ आपे ही आपि मोहिएहु जसु नानक आपि सुणिएहि ॥१॥ छंतु ॥ प्रेम ठगउरी पाइि रीझाइि गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥ हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भइे ॥ मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गइे ॥ सखी मंगलो गाइिआ इिछ पुजाइिआ बहुड़ि न माइिआ होहिआ ॥ करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥४॥ डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥१॥ छंतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धन्नु लिखतंी कुलु तारिआ जीउ ॥ जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥ ब्रहमु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥ करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥ सतिगुर दइिआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ कथनु न जाइि अकथु सुआमी सदकै जाइि नानकु वारिआ ॥५॥१॥३॥

सिरीरागु महला ४ वणजारा

ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइि जीउ ॥ हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइि ॥ सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइि ॥ जो मोहि माइिआ चितु लाइिदे से छोडि चले दुखु रोइि ॥ जन नानक नामु धिआइिआ हरि अंति सखाई होइि ॥१॥ मै हरि बिनु अवरु न कोइि ॥ हरि गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइि ॥१॥ रहाउ ॥

संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥ विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥ पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥ वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥ जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥२॥ मनि हरि हरि लगा चाउ ॥ गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥ चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥ जिनी हरि हरि नामु न चेतिए से अंति गए पछुताइ ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥ मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ गुर सबदी पारि लघाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥ हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥ गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥ जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥४॥ मनि हरि हरि जपनु करे ॥ हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ॥१॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥ गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥ मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥ मै हरि हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥ जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥ हरि धिआवहु हरि प्रभु सति ॥ गुर बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥ सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥ धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥ गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥ जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥ हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥ मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥

सलोक मः ३ ॥ रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥ सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥ रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥ जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥ नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥१॥ मः ३ ॥ होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ ॥ इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥ सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥ नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥ हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥ हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥ हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥१॥ सलोक मः १ ॥ दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इक जागंदे ना लहनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥१॥ मः १ ॥ सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकाँ ॥ दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥ तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥ तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥ हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥२॥ सलोक मः १ ॥ फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥ सभना जीआ इका छाउ ॥ आपहु जे को भला कहाए ॥ नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥१॥ मः २ ॥ जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥ ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥ दस चारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥ इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥ तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अंम्रितु पीवे ॥ एइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥३॥ सलोक मः १ ॥ कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥

वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥ कुदरति है कीमति नही पाइ ॥ जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥ सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥ सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥ जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥ मः ३ ॥ गुर सभा इेव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ नानक सतिगुरु ताँ मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥२॥ पउड़ी ॥ सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दस असट पुराणा ॥ हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥ सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारग पाणा ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥ तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥४॥ सलोक मः ३ ॥ कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ॥ कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥ नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ॥१॥ मः ३ ॥ नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ॥ सतिगुरि सचु दृड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥ जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥ सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥ जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥ लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ मः ३ ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥ नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ हउ हउ करती सभ मुई संपउ किसै न नालि ॥ दूजै भाइ दुखु पाइआ

सभ जोही जमकालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥१॥ मः १ ॥ गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥ मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥ नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥ नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥२॥ पउड़ी ॥ तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥ तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥ तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥ तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुर सबदी वेखि निहालु ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥ जे धन खसमै चलै रजाई ॥ दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ नानक करमी इह मति पाई ॥ गुर परसादी सचि समाई ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ॥ इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥ दूजै लगे पचि मुझे मूरख अंध गवार ॥ बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥ नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु संबाहिआ ॥ इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥ तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ॥ इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥ हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥ मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥ सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥ नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुरु

सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥ गुरमती आपु पछाणिआ राम नाम परगासु ॥ सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥ सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥ जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥ गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥२॥ पउड़ी ॥ सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥ सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥ जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥ तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि वेखहु को निरजासि ॥ सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥९॥ सलोक मः ३ ॥ पंडितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ॥ अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥ दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमै वारो वार ॥१॥ मः ३ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥ सदा साँति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ॥ आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुर सबदी वीचारु ॥ नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥ जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरि नामु धिआइ ॥ गुर सबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥ मनहठि किनै न पाइए पुछहु वेदा जाइ ॥ नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लइ हरि लाइ ॥१०॥ सलोक मः ३ ॥ नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥ गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥ आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥ सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ॥ मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥ सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥ आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥ नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥१॥ मः ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥ हउमै मारि इेक लिव लागी अंतरि

नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नामु लइे ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२॥ पउड़ी ॥ जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥ जिथै एहु जाइ तिथै एहु सुरखरू उस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥ एसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मन्नीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥ जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥११॥ सलोक मः ३ ॥ आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥ आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥ गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥ खिनु पलु हरि नामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥ सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥ धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥ मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥ नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥ मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥ लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥ गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥ मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥ मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥ अंमृत नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥ विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥ मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥ गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥ नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥ जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥ हरि अंमृत कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी ॥ तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥ अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ॥१२॥ सलोकु मः ३ ॥

सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइि ॥ विचहु आपु गवाइि कै रहनि सचि लिव लाइि ॥ सतिगुरु जिनी न सेविए तिना बिरथा जनमु गवाइि ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइि ॥१॥ मः ३ ॥ मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइि ॥ दूजै भाइि अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइि ॥ आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइि ॥ जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइि ॥ नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइि पाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥ जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ॥१३॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविए सबदि न कीतो वीचारु ॥ अंतरि गिआनु न आइिए मिरतकु है संसारि ॥ लख चउरासीह फेरु पइिआ मरि जंमै होइि खुआरु ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराइे सोइि ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइि ॥ सचि रते गुर सबद सिउ तिन सची सदा लिव होइि ॥ नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइि ॥१॥ मः ३ ॥ सो भगउती जुो भगवंतै जाणै ॥ गुर परसादी आपु पछाणै ॥ धावतु राखै इिकतु घरि आणै ॥ जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥ ऐसा भगउती उतमु होइि ॥ नानक सचि समावै सोइि ॥२॥ मः ३ ॥ अंतरि कपटु भगउती कहाइे ॥ पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाइे ॥ पर निंदा करे अंतरि मलु लाइे ॥ बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाइे ॥ सतसंगति सिउ बादु रचाइे ॥ अनदिनु दुखीआ दूजै भाइि रचाइे ॥ हरि नामु न चेतै बहु करम कमाइे ॥ पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाइे ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे मोखु न पाइे ॥३॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु जिनी धिआइिआ से कड़ि न सवाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइिआ से तृपति अघाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइिआ तिन

जम डरु नाही ॥ जिन कउ होआ कृपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥ तिन अैथै एथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥१४॥ सलोक मः २ ॥ जो सिरु साँई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥ नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥१॥ मः ५ ॥ मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥ कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुंमि पईआसु ॥२॥ पउड़ी ॥ सो अैसा हरि नामु धिआईअै मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाइे ॥ सो अैसा हरि नामु जपीअै मन मेरे जो अंती अउसरि लइे छडाइे ॥ सो अैसा हरि नामु जपीअै मन मेरे जु मन की तृसना सभ भुख गवाइे ॥ सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाइे ॥ नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाइे ॥१५॥ सलोक मः ३ ॥ वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ॥ पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥ गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ॥ लिखिआ मेटि न सकीअै जो धुरि लिखिआ करतारि ॥ मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ॥ बिनु नावै किनै न पाइिआ देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक सा सुआलिए सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ॥ १॥ मः ३ ॥ माइिआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥ मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइिदे डुबे हरि नामु विसारि ॥ भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइि पिआरु ॥ सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥ नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उर धारि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइि ॥ हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइि ॥ सचिआरा देइि वडिआई हरि धरम निआउ कीएइि ॥ सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीएइि ॥ जैकारु कीए धरमीआ का पापी कउ डंडु दीएइि ॥ १६॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥ तृसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥ नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी

परहरि छोडी भतारि ॥१॥ मः ३ ॥ सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥ सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥ नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढी हूं तूं डाढिआ ॥ हरि अहंकारीआ मारि निवाड़े मनमुख मूड़ साधिआ ॥ हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥ १७॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥ हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥ किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥ नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥१॥ मः ३ ॥ नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव तार ॥ माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥ पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥ गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोख दुआरु ॥ मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥ गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥ हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥ सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥१८॥ सलोक मः ३ ॥ आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥ सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥ नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥१॥ मः ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी कृपा करे ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ आपणी आपि करे

परतीति आपे सेव घालीअनु ॥ हरि भगता नो देहि अन्नदु थिरु घरी बहालिअनु ॥ पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥ हरि भगता नो देहि पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ॥१६॥ सलोक मः १ ॥ कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥ कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नालि ॥ सचु संजमु करणी काराँ नावणु नाउ जपेही ॥ नानक अगै ऊतम सेई जि पापाँ पंदि न देही ॥१॥ मः १ ॥ किआ हसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥ जो तिसु भावै नानका कागहु हसु करेइ ॥२॥ पउड़ी ॥ कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥ संता संगि निधानु अंमृतु चाखीऐ ॥ भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥२०॥ सलोक मः ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥ नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥ एना के मुख सद उजले एना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥ अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥ नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥ हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥ हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥ नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरि नामु धिआइआ ॥ हरि दातै हरि नामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥२१॥१॥ सुधु

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥ मोर मोर करि अधिक

लाड़ु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥ ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥ १॥ रहाउ ॥ कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥ जाँ तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥ उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥ इतु संगति नाही मरणा ॥ हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ सिरीरागु तृलोचन का ॥ माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ कुटंबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥ दूड़ा आइिएहि जमहि तणा ॥ तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥ कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइिआ ॥ माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइिए आलसीआ ॥२॥ बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जाँ तजीअले संसारं ॥३॥ आजु मेरै मनि प्रगटु भइिआ है पेखीअले धरमराए ॥ तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥ जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि तृणि रतड़ा नाराइिणा ॥ ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति तृलोचनु रामईआ ॥५॥२॥ स्रीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ अचरज इेकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ सुरि नर गण गंध्रब जिनि मोहे तृभवण मेखुली लाई ॥१॥ राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥१॥ रहाउ ॥ भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइिआ ॥ तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइिआ ॥२॥ इेक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ तीनि भवन महि इेको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥३॥ ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥ अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइिन माता ॥४॥३॥

स्रीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ पहरिआ कै घरि गावणा ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि इेकु अगिआन सु नागा ॥ ते दिन संमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ गरभ छोडि मृत मंडल आइिआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥१॥ फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ चेति रामु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥१॥ रहाउ ॥ बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ रसु मिसु मेधु अंमृतु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥ जपु तपु संजमु छोडि सुकृत मति राम नामु न अराधिआ ॥ उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बाँधिआ ॥२॥ तरुण तेजु पर तृअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुन्नु न पछानिआ ॥ सुत संपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइिआ ॥ अवर मरत माइिआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइिआ ॥३॥ पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥ ता ते बिखै भई मति पावसि काइिआ कमलु कुमलाणा ॥ अवगति बाणि छोडि मृत मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥४॥ निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥ लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आँगनि न सुखाई ॥ बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥५॥ सिरीरागु ॥ तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥ जउ पै हम न पाप करंता अहे अन्नता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्ह जु नाइिक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥ सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥ रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥

राग माझ चउपदे घरु १ महला ४

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥ गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥१॥ मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥ मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥२॥ हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥३॥ सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥४॥१॥ माझ महला ४ ॥ मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥१॥ हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥२॥ मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥३॥ मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥४॥२॥

माझ महला ४ ॥ हरि गुण पड़ीऐ हरि गुण गुणीऐ ॥ हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥ मिलि सतसंगति हरि गुण गाइे जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥१॥ आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ मेरे प्रीतम का मै देइि सनेहा ॥ मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥२॥ मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ मै अउखधु मंत्रु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥३॥ हम चातृक दीन सतिगुर सरणाई ॥ हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥ हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरीऐ जीउ ॥४॥३॥ माझ महला ४ ॥ हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥ मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥ मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥१॥ मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥ हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ हरि हरि अंमृतु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अंमृतु पीजै जीउ ॥२॥ वडभागी हरि संगति पावहि ॥ भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥३॥ मै आइि मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ हरि हरि नामु दइिआ मनि धारे ॥ गुरमति नामु मीठा मनि भाइिआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥४॥४॥ माझ महला ४ ॥ हरि गुर गिआनु हरि रसु हरि पाइिआ ॥ मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइिआ ॥ हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥१॥ आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥ मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥ हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥२॥ वडभागी हरि संतु मिलाइिआ ॥ गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइिआ ॥ भागहीन सतिगुरु नही पाइिआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥३॥ आपि दइिआलि दइिआ प्रभि धारी ॥ मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ नानक हट पटण विचि काँइिआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥४॥५॥ माझ महला ४ ॥ हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥ मिलि संगति मनि नामु वसाई ॥ हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी

मिलि सतिगुर हरि रसु कीचै जीउ ॥१॥ धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥२॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ ॥ अंमृत रसु सचु अंमृतु बोली गुरि पूरै अंमृतु लीचै जीउ ॥३॥ हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईऐ ॥ मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईऐ ॥ नानक हरि कथा सुणी मुखि बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥४॥६॥ माझ महला ४ ॥ आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआ ॥ जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥१॥ जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥ गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥२॥ इको पवणु माटी सभ इेका सभ इेका जोति सबाईआ ॥ सभ इिका जोति वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥ गुर परसादी इिकु नदरी आइिआ हउ सतिगुर विटहु वताइिआ जीउ ॥३॥ जनु नानकु बोलै अंमृत बाणी ॥ गुरसिखाँ कै मनि पिआरी भाणी ॥ उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥४॥७॥ सत चउपदे महले चउथे के ॥

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चातृक की निआई ॥ तृखा न उतरै साँति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धन्नु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ इिक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि

मिलीऐ पृअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥१॥८॥ रागु माझ महला ५ ॥ सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कंमु सुहेला जो तेरी घाली ॥ सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥१॥ तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥ जिसु तूं देहि सु तृपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥२॥ सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥ सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥३॥ तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥४॥२॥९॥ माझ महला ५ ॥ अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ सबदि अनन्द करे सद केला ॥ सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥१॥ फिरि घिरि अपुने गृह महि आइआ ॥ जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ तृपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥२॥ आपे राजनु आपे लोगा ॥ आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥३॥ जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥ तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥४॥३॥१०॥ माझ महला ५ ॥ जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ तितु घरि सखीइे मंगलु गाइआ ॥ अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥१॥ सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥२॥ अचारवंति साई परधाने ॥ सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥३॥ महिमा तिस की कहणु न जाइे ॥ जो पिरि मेलि लई अंगि

लाइे ॥ थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥४॥४॥११॥ माझ महला ५ ॥ खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥१॥ खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ निवली करम आसन चउरासीह इन महि साँति न आवै जीउ ॥२॥ अनिक बरख कीड़े जप तापा ॥ गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ इकु खिनु हिरदै साँति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥३॥ करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥४॥५॥१२॥ माझ महला ५ ॥ पारब्रहम अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥१॥ गुरमुखि मधुसूदनु निसतारे ॥ गुरमुखि संगी कृसन मुरारे ॥ दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥२॥ निरहारी केसव निरवैरा ॥ कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥ गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥३॥ अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥ वड समरथु सदा दातारा ॥ गुरमुखि नामु जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥४॥६॥१३॥ माझ महला ५ ॥ कहिआ करणा दिता लैणा ॥ गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥ सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥१॥ भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥ भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥२॥ ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥३॥ खाकु संतन की देहु पिआरे ॥ आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥४॥७॥१४॥ माझ महला ५ ॥ दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥ सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ ॥१॥ सतिगुरु मेरा वड

समरथा ॥ जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥२॥ बारिक वाँगी हउ सभ किछु मंगा ॥ देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥३॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥ हिरदै नामु दे निरमल कीइे नानक रंगि रसाला जीउ ॥४॥८॥१५॥ माझ महला ५ ॥ लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे ॥ ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवाँ जीउ ॥१॥ दुख भंजन निधान अमोले ॥ निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ अकाल मूरति अजूनी संभौ मन सिमरत ठंढा थीवाँ जीउ ॥२॥ सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ नामु रसाइणु मनु तृपताइणु गुरमुखि अंमृतु पीवाँ जीउ ॥३॥ दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ इेह सुमति गुरू ते पाई ॥ नानक की धर तूंहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवाँ जीउ ॥४॥९॥१६॥ माझ महला ५ ॥ धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ धन्नु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु एहि संजोगा जीउ ॥१॥ उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइिआ ॥ नामु निधानु सतिगुरू सुणाइिआ मिटि गइे सगले रोगा जीउ ॥२॥ अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ गुरि कहिआ सभु इेको इेको अवरु न कोई होइिगा जीउ ॥३॥ अंमृत रसु हरि गुर ते पीआ ॥ हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥४॥१०॥१७॥ माझ महला ५ ॥ सगल संतन पहि वसतु इिक माँगउ ॥ करउ बिन्नती मानु तिआगउ ॥ वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥१॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥२॥ दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥ आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥३॥

रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ सच घरि बैसि रहे गुण गाइे नानक बिनसे कूरा जीउ ॥४॥११॥१८॥ माझ महला ५ ॥ विसरु नाही इेवड दाते ॥ करि किरपा भगतन संगि राते ॥ दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई इेहु दानु मोहि करणा जीउ ॥१॥ माटी अंधी सुरति समाई ॥ सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥२॥ जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ छतीह अंमृत भोजनु खाणा ॥ सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥३॥ सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ सास सास तेरे गुण गावा एट नानक गुर चरणा जीउ ॥४॥१२॥१६॥ माझ महला ५ ॥ सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥१॥ अंमृतु नामु तेरा सोई गावै ॥ जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥२॥ तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥ संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ अपुने संत तुधु खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ ॥३॥ उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥ तिन कै संगि सदा सुखु पाइिआ हरि रस नानक तृपति अघाना जीउ ॥४॥१३॥ २०॥ माझ महला ५ ॥ तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ तेरा नामु बूंद हम चातृक तिखहारे ॥ तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥१॥ जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥ तृखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥२॥ जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ भरता चितवत पूरन आसा ॥ मिलि प्रीतम जिउ होत अन्नदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥३॥ संतन मो कउ हरि मारगि पाइिआ ॥ साध कृपालि हरि संगि गिझाइिआ ॥ हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥४॥१४॥२१॥ माझ महला ५ ॥ अंमृत नामु सदा निरमलीआ ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ अवरि साद चखि सगले देखे मन

हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥१॥ जो जो पीवै सो तृपतावै ॥ अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥२॥ जिनि हरि रसु पाइआ सो तृपति अघाना ॥ जिनि हरि सादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥३॥ हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥४॥१५॥२२॥ माझ महला ५ ॥ निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गंभीरै ॥ लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥१॥ दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥२॥ जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ ऊच अपार अगोचर थाना एहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥३॥ गहिर गंभीर अंमृत नामु तेरा ॥ मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥४॥१६॥२३॥ माझ महला ५ ॥ प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥१॥ नामु अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥ किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥२॥ जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥ सो मुकता सागर संसारा ॥ सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥३॥ जब ते साधू संगति पाए ॥ गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥४॥१७॥२४॥ माझ महला ५ ॥ ओति पोति सेवक संगि राता ॥ प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥ पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥१॥ काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥ सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥२॥ तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥

ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥३॥ अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥४॥१८॥२५॥ माझ महला ५ ॥ सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥१॥ झिमि झिमि वरसै अंमृत धारा ॥ मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥२॥ जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ साध कृपा ते सूका हरिआ ॥ सुमति पाइे नामु धिआइे गुरमुखि होइे मेला जीउ ॥३॥ जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ॥ कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥४॥१९॥२६॥ माझ महला ५ ॥ तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥१॥ तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ नैन निहाली तिसु पुरख दइिआलै ॥ मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥२॥ से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥ साध कै संगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥३॥ तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ माणु ताणु तजि मोहु अंधेरा ॥ नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥४॥२०॥२७॥ माझ महला ५ ॥ तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ तूं सूखमु होआ असथूली ॥ तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ॥१॥ तूं सूतु मणीइे भी तूंहै ॥ तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई अवरु न कोइि दिखालीऐ जीउ ॥२॥ तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ तूं निरबाणु रसीआ रंगि राता ॥ अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥३॥ तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥ तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ नानक दासु सदा गुण गावै इिक भोरी नदरि निहालीऐ

जीउ ॥४॥२१॥२८॥ माझ महला ५ ॥ सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥ धन्नु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आइे ते परवाना जीउ ॥१॥ से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥ से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥२॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ साधसंगि खिन माहि उधारे ॥ किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गइे आवण जाणा जीउ ॥३॥ दुइि कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥ करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ नानक कउ प्रभ भइे कृपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥४॥२२ ॥२९॥ माझ महला ५ ॥ अंमृत बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ जलनि बुझी सीतलु होइि मनूआ सतिगुर का दरसनु पाइे जीउ ॥१॥ सूखु भइिआ दुखु दूरि पराना ॥ संत रसन हरि नामु वखाना ॥ जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइि न जाइे जीउ ॥२॥ दइिआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ मिहरवान किरपाल दइिआला सगले तृपति अघाइे जीउ ॥३॥ वणु तृणु तृभवणु कीतोनु हरिआ ॥ करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाइे जीउ ॥४॥२३॥३०॥ माझ महला ५ ॥ तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥१॥ तुमरी कृपा ते तुधु पछाणा ॥ तूं मेरी एट तूंहै मेरा माणा ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥२॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाइे ॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाइे ॥ सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥३॥ नामु धिआइि महा सुखु पाइिआ ॥ हरि गुण गाइि मेरा मनु सीतलाइिआ ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥२४॥३१॥ माझ महला ५ ॥ जीअ प्राण प्रभ मनहि अधारा ॥ भगत जीवहि गुण गाइि अपारा ॥ गुण निधान अंमृतु हरि नामा हरि धिआइि धिआइि सुखु पाइिआ जीउ ॥१॥ मनसा धारि जो घर ते आवै ॥

साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥ आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥२॥ अगम अगोचर किछु मिति नही जानी ॥ साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥३॥ अनद मंगल कलिआण निधाना ॥ सूख सहज हरि नामु वखाना ॥ होइ कृपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥४॥२५॥३२॥ माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी एट गोपाला जीउ ॥१॥ गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥२॥ प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ तुमरी कृपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥३॥ सति सति सति प्रभु सोई ॥ सदा सदा सद आपे होई ॥ चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥४॥ २६॥३३॥ माझ महला ५ ॥ हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ सीतल साँति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥१॥ सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥२॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥३॥ सासि सासि नानकु सालाहे ॥ सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥४॥२७॥३४॥ माझ महला ५ ॥ आउ साजन संत मीत पिआरे ॥ मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥१॥ जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥२॥ नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥३॥ आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥

करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अंमृतु पीइे जीउ ॥४॥२८॥३५॥ माझ महला ५ ॥ भइे कृपाल गोविंद गुसाई ॥ मेघु वरसै सभनी थाई ॥ दीन दइिआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥१॥ अपुने जीअ जंत प्रतिपारे ॥ जिउ बारिक माता संमारे ॥ दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥२॥ जलि थलि पूरि रहिआ मिहरवाना ॥ सद बलिहारि जाईअै कुरबाना ॥ रैणि दिनसु तिसु सदा धिआई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥३॥ राखि लीइे सगले प्रभि आपे ॥ उतरि गइे सभ सोग संतापे ॥ नामु जपत मनु तनु हरीआवलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥४॥२९॥३६॥ माझ महला ५ ॥ जिथै नामु जपीअै प्रभ पिआरे ॥ से असथल सोइिन चउबारे ॥ जिथै नामु न जपीअै मेरे गोइिदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥१॥ हरि रुखी रोटी खाइि समाले ॥ हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥ खाइि खाइि करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥२॥ संता सेती रंगु न लाइे ॥ साकत संगि विकरम कमाइे ॥ दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥३॥ तेरी सरणि मेरे दीन दइिआला ॥ सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥ करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाड़ी जीउ ॥४॥३०॥३७॥ माझ महला ५ ॥ चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ कलि कलेस सभ दूरि पइिआणे ॥ साँति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥१॥ लागी प्रीति न तूटै मूले ॥ हरि अंतरि बाहरि रहिआ भरपूरे ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥२॥ अंमृतु वरखै अनहद बाणी ॥ मन तन अंतरि साँति समाणी ॥ तृपति अघाइि रहे जन तेरे सतिगुरि कीआ दिलासा जीउ ॥३॥ जिस का सा तिस ते फलु पाइिआ ॥ करि किरपा प्रभ संगि मिलाइिआ ॥ आवण जाण रहे वडभागी नानक पूरन आसा जीउ ॥४॥३१॥३८॥ माझ महला ५ ॥ मीहु पइिआ परमेसरि पाइिआ ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाइिआ ॥ गइिआ कलेसु भइिआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥१॥ जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥ पारब्रहम प्रभ भइे रखवारे ॥ सुणी

बेन्नती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥२॥ सरब जीआ कउ देवणहारा ॥ गुर परसादी नदरि निहारा ॥ जल थल महीअल सभि तृपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥३॥ मन की इछ पुजावणहारा ॥ सदा सदा जाई बलिहारा ॥ नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥४॥३२॥३९॥ माझ महला ५ ॥ मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥१॥ सदा सदा तूंहै सुखदाई ॥ निवि निवि लागा तेरी पाई ॥ कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥२॥ प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥ जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥ जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥३॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥ आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥४॥३३॥४०॥ माझ महला ५ ॥ पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥ साँति भई बुझी सभ तृसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥१॥ सुखदाता दुख भंजनहारा ॥ आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥२॥ जा की सरणि पइआ गति पाईऐ ॥ सासि सासि हरि नामु धिआईऐ ॥ तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥३॥ तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥ नानकु दासु कहै बेन्नती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥४॥३४॥४१॥ माझ महला ५ ॥ सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥ गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥१॥ अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥ घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥ सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥२॥ प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ सहजि संतोखि सदा तृपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥३॥ हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥ जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥

४॥३५॥४२॥ माझ महला ५ ॥ कीनी दइिआ गोपाल गुसाई ॥ गुर के चरण वसे मन माही ॥ अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥१॥ मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ दूत दुसमण सभि सजण होइे इेको सुआमी आहिआ जीउ ॥२॥ जो किछु करे सु आपे आपै ॥ बुधि सिआणप किछू न जापै ॥ आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥३॥ चरण कमल जन का आधारो ॥ आठ पहर राम नामु वापारो ॥ सहज अन्नद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥४॥३६॥४३॥ माझ महला ५ ॥ सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईअै ॥ सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईअै ॥ सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥१॥ सचु वडाई कीम न पाई ॥ कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ धिआइि धिआइि जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥२॥ सचु सालाहणु वडभागी पाईअै ॥ गुर परसादी हरि गुण गाईअै ॥ रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु नामु नीसाणो जीउ ॥३॥ सचे अंतु न जाणै कोई ॥ थानि थन्नतरि सचा सोई ॥ नानक सचु धिआईअै सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥४॥३७ ॥४४॥ माझ महला ५ ॥ रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥ जपि अंमृत नामु संतसंगि मेला ॥ घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥१॥ सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे ॥ भै भउ भरमु खोइिआ गुरि पूरै देखा सभनी जाई जीउ ॥२॥ प्रभु समरथु वड ऊच अपारा ॥ नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥३॥ करि किरपा मेरे दीन दइिआला ॥ जाचिकु जाचै साध रवाला ॥ देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥४॥३८॥४५॥ माझ महला ५ ॥ अैथै तूंहै आगै आपे ॥ जीअ जंत्र सभि तेरे थापे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर एट तुमारी जीउ ॥१॥ रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥ जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइिआ सो जनमु न जूअै हारी जीउ ॥२॥ नामु

अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल इेहा है कारी जीउ ॥३॥ दृसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु नमसकारिआ ॥ इिकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इिह मति सारी जीउ ॥४॥३६॥४६॥ माझ महला ५ ॥ मनु तनु रता राम पिआरे ॥ सरबसु दीजै अपना वारे ॥ आठ पहर गोविंद गुण गाईअै बिसरु न कोई सासा जीउ ॥१॥ सोई साजन मीतु पिआरा ॥ राम नामु साधसंगि बीचारा ॥ साधू संगि तरीजै सागरु कटीअै जम की फासा जीउ ॥२॥ चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ पारजातु जपि अलख अभेवा ॥ कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥३॥ पूरन भाग भइे जिसु प्राणी ॥ साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥ नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥४॥४०॥४७॥ माझ महला ५ ॥ सिमरत नामु रिदै सुखु पाइिआ ॥ करि किरपा भगतीं प्रगटाइिआ ॥ संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥१॥ जा कै गृहि नव निधि हरि भाई ॥ तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥२॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ आपि इिकंती आपि पसारा ॥ लेपु नही जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥३॥ अंचलि लाइि सभ सिसटि तराई ॥ आपणा नाउ आपि जपाई ॥ गुर बोहिथु पाइिआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥४॥४१॥४८॥ माझ महला ५ ॥ सोई करणा जि आपि कराइे ॥ जिथै रखै सा भली जाइे ॥ सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥१॥ सभ परोई इिकतु धागै ॥ जिसु लाइि लइे सो चरणी लागै ॥ ऊंध कवलु जिसु होइि प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥२॥ तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥ अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥ हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥३॥ तूं निरवैरु संत तेरे निरमल ॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ नानक नामु धिआइि धिआइि जीवै

बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥४॥४२॥४६॥ माँझ महला ५ ॥ झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥ तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥ पारब्रहमु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥१॥ प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥ बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥२॥ चरन कमल भगताँ मनि वुठे ॥ विणु परमेसर सगले मुठे ॥ संत जनाँ की धूड़ि नित बाँछहि नामु सचे का गहणा ॥३॥ ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥ जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥ नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥४॥४३॥५०॥

रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १ 　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ सची दरगह महलि बुलाए ॥ सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ अंमृत नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना को मेरा हउ किसु केरा ॥ साचा ठाकुरु तृभवणि मेरा ॥ हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ हुकमु पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥३॥ मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ जम दरि बधा चोटा खाए ॥ बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥४॥ साकत कूड़े सचु न भावै ॥ दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥५॥ पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥ झूठि विछुन्नी रोवै धाही ॥ अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥६॥ पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥ गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥७॥ गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ सचे ठाकुर साचो भावै ॥ नानक सचु कहै बेन्नती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥८॥१॥ माझ महला ३ घरु १ ॥ करमु होवै

सतिगुरू मिलाइे ॥ सेवा सुरति सबदि चितु लाइे ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइिआ माइिआ मोहु चुकावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजे ता नाउ पाइे ॥ धावतु राखै ठाकि रहाइे ॥ गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥२॥ इिसु काइिआ अंदरि वसतु असंखा ॥ गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥३॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥४॥ पाप पुन्न की सार न जाणी ॥ दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥५॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइिआ ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइिआ ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥६॥ हउमै मारि मंनि वसाइिआ ॥ गुर चरणी सदा चितु लाइिआ ॥ गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥७॥ जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ नानक नामु धिआइि सदा तूं जंमणु मरणु सवारणिआ ॥८॥१॥२॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥ बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपि सुणै तै आपे वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ आपे लाइि लइे सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥२॥ जिसु आपि भुलाइे सु किथै हथु पाइे ॥ पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाइे ॥ जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥३॥ पेईअड़ै धन अनदिनु सुती ॥ कंति विसारी अवगणि मुती ॥ अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥४॥ पेईअड़ै सुखदाता जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ सेज सुहावी सदा पिरु

रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥५॥ लख चउरासीह जीअ उपाइे ॥ जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाइे ॥ किलबिख काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥६॥ लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥ सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥ आपे बखसि लइे प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥७॥ आपि करे तै आपि कराइे ॥ पूरे गुर कै सबदि मिलाइे ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥८॥२॥३॥ माझ महला ३ ॥ इिको आपि फिरै परछन्ना ॥ गुरमुखि वेखा ता इिहु मनु भिन्ना ॥ तृसना तजि सहज सुखु पाइिआ इेको मंनि वसावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी इिकसु सिउ चितु लावणिआ ॥ गुरमती मनु इिकतु घरि आइिआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु जगु भूला तैं आपि भुलाइिआ ॥ इिकु विसारि दूजै लोभाइिआ ॥ अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥२॥ जो रंगि राते करम बिधाते ॥ गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ जिस नो आपि देइि वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥३॥ माइिआ मोहि हरि चेतै नाही ॥ जमपुरि बधा दुख सहाही ॥ अन्ना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥४॥ इिकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाइे ॥ भाइि भगति तेरै मनि भाइे ॥ सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इिछा आपि पुजावणिआ ॥५॥ हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥६॥ अनदिनु राते जो हरि भाइे ॥ मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाइे ॥ सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥७॥ जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लावणिआ ॥८॥३॥४॥ माझ महला ३ ॥ सबदि मरै सु मुआ जापै ॥ कालु न चापै दुखु न संतापै ॥ जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइि सोभा पावणिआ ॥ सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइिआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ कची कचा चीरु हढाइे ॥ दूजै लागी महलु न पाइे ॥

अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥२॥ देही जाति न आगै जाइे ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाइे ॥ सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै एथै नामि समावणिआ ॥३॥ भै भाइि सीगारु बणाइे ॥ गुर परसादी महलु घरु पाइे ॥ अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥४॥ सभना पिरु वसै सदा नाले ॥ गुर परसादी को नदरि निहाले ॥ मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥५॥ माइिआ मोहि इिहु जगु सुता ॥ नामु विसारि अंति विगुता ॥ जिस ते सुता सो जागाइे गुरमति सोझी पावणिआ ॥६॥ अपिउ पीऐ सो भरमु गवाइे ॥ गुर परसादि मुकति गति पाइे ॥ भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥७॥ आपि उपाइे धंधै लाइे ॥ लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाइे ॥ नानक नामु धिआइि सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥८॥४॥५॥ माझ महला ३ ॥ अंदरि हीरा लालु बणाइिआ ॥ गुर कै सबदि परखि परखाइिआ ॥ जिन सचु पलै सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंजन माहि निरंजनु पाइिआ जोती जोति मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ इिसु काइिआ अंदरि बहुतु पसारा ॥ नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥ गुरमुखि होवै सोई पाइे आपे बखसि मिलावणिआ ॥२॥ मेरा ठाकुरु सचु दृड़ाइे ॥ गुर परसादी सचि चितु लाइे ॥ सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥३॥ वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥ किलविख अवगण काटणहारा ॥ प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइि भगति दृड़ावणिआ ॥४॥ तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ आपे देइि न पछोतावै ॥ सभना जीआ का इेको दाता सबदे मारि जीवावणिआ ॥५॥ हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही ॥ हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥ आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ ॥६॥ मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥ तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥ तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥

तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥८॥५॥६॥ माझ महला ३ ॥ सभ घट आपे भोगणहारा ॥ अलखु वरतै अगम अपारा ॥ गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गुर सबदु मंनि वसावणिआ ॥ सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ पंच दूत मुहहि संसारा ॥ मनमुख अंधे सुधि न सारा ॥ गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥२॥ इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥ सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥ इेकम इेकै आपु उपाइिआ ॥ दुबिधा दूजा तृबिधि माइिआ ॥ चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ सभु है सचा जे सचे भावै ॥ जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइि समावणिआ ॥५॥ सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥ दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ गुरमुखि होवै सु इेको जाणै इेको सेवि सुखु पावणिआ ॥६॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥ आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ अनदिनु आपे कार कराइे आपे मेलि मिलावणिआ ॥७॥ तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥८॥६॥७॥ माझ महला ३ ॥ अंमृत बाणी गुर की मीठी ॥ गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥ अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ सतिगुरु है अंमृत सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा सचे किनै अंतु न पाइिआ ॥ गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइिआ ॥ तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥२॥ इेको वेखा अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी अंमृतु पीआ ॥ गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥३॥ रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइि लागै ॥ जो बीजै सोई फलु पाइे सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥ अपनी किरपा करे सोई जनु पाइे ॥ गुर का सबदु

मंनि वसाइे ॥ अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥५॥ भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥६॥ सिमृति सासत बेद वखाणै ॥ भरमे भूला ततु न जाणै ॥ बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाइे दुखो दुखु कमावणिआ ॥७॥ आपि करे किसु आखै कोई ॥ आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥ नानक आपे करे कराइे नामे नामि समावणिआ ॥८॥७॥८॥ माझ महला ३ ॥ आपे रंगे सहजि सुभाइे ॥ गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाइे ॥ मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥ गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै ॥ मरणु लिखाइ आइे नही बूझै ॥ मनमुख करम करे नही पाइे बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥३॥ सचु करणी सबदु है सारु ॥ पूरै गुरि पाईऐ मोख दुआरु ॥ अनदिनु बाणी सबदि सुणाइे सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥४॥ रसना हरि रसि राती रंगु लाइे ॥ मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाइे ॥ सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥५॥ जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥ हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥६॥ सचा सचो सचि पतीजै ॥ गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ बैसि सुथानि हरि गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥७॥ जिस नो नदरि करे सो पाइे ॥ गुर परसादी हउमै जाइे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥८॥८॥९॥ माझ महला ३ ॥ सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई ॥ हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥ हरि जीउ सफलिए बिरखु है अंमृतु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥

सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥ हरि निरमलु हउमै मैलु गवाइे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥२॥ बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥३॥ इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ अनहत बाणी निरमल सबदु वजाइे गुर सबदी सचि समावणिआ ॥४॥ बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥५॥ गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाइे ॥ दूजा भरमु गुर सबदि जलाइे ॥ काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥६॥ गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥ गुरमुखि पाइे मोख दुआरु ॥ अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥७॥ सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥८॥६॥१०॥ माझ महला ३ ॥ आपु वंञाइे ता सभ किछु पाइे ॥ गुर सबदी सची लिव लाइे ॥ सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥२॥ भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाइे ॥ अन रसु चूकै हरि रसु मंनि वसाइे ॥ सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥३॥ सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ फिरि एइ किथहु पाइिनि मोख दुआरा ॥ मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥४॥ सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ सचे सेवि सदा सुखु पाइिनि नउ निधि नामु मंनि वसावणिआ ॥५॥ सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ ॥

६॥ मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥७॥ सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥८॥१०॥११॥ माझ महला ३ ॥ तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥ हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥२॥ इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥३॥ सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥४॥ बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥ अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥५॥ मुकते सेवे मुकता होवै ॥ हउमै ममता सबदे खोवै ॥ अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥६॥ आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥७॥ सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥११॥१२॥ माझ महला ३ ॥ ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥ सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥ दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ हरि का नामु मंनि

वसाइे ॥ सबदि मरै मनु मारै अपुना मुकती का दरु पावणिआ ॥३॥ किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ गुर का सबदु रखै उर धारे ॥ सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥४॥ अंतरि रतनु मिलै मिलाइिआ ॥ तृबिधि मनसा तृबिधि माइिआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥५॥ आपे रंगे रंगु चड़ाइे ॥ से जन राते गुर सबदि रंगाइे ॥ हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥६॥ गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥ गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥७॥ गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआइे नामे नामि समावणिआ ॥८॥१२॥१३॥ माझ महला ३ ॥ उतपति परलउ सबदे होवै ॥ सबदे ही फिरि एपति होवै ॥ गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइि समावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥ गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ सो निगुरा जो मरि मरि जंमै निगुरे आवण जावणिआ ॥२॥ तिनि करतै इकु खेलु रचाइिआ ॥ काइिआ सरीरै विचि सभु किछु पाइिआ ॥ सबदि भेदि कोई महलु पाइे महले महलि बुलावणिआ ॥३॥ सचा साहु सचे वणजारे ॥ सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥ सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ बिनु रासी को वथु किउ पाइे ॥ मनमुख भूले लोक सबाइे ॥ बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइि दुखु पावणिआ ॥५॥ इिकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥ आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ आइे से परवाणु होइे मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ६॥ अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥ मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ जिथै वथु होवै तिथहु कोइि न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥७॥ आपे देवै सबदि बुलाइे ॥ महली महलि सहज सुखु पाइे ॥ नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥८॥१३॥१४॥ माझ महला ३ ॥ सतिगुर

साची सिख सुणाई ॥ हरि चेतहु अंति होइि सखाई ॥ हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइि पावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ आपु गवाइे ता हरि पाइे हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइिआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइिआ ॥ बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥२॥ गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ गुर कै तकीऐ नामि अधारे ॥ गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥३॥ मनमुखि अंधे सुधि न काई ॥ आतम घाती है जगत कसाई ॥ निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥४॥ इिहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ सदा समाले को नाही खाली ॥ जेही वासना पाइे तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥५॥ मनमुखु रोगी है संसारा ॥ सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥ दुखीइे निति फिरहि बिललादे बिनु गुर साँति न पावणिआ ॥६॥ जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ जेहा अंदरि पाइे तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥७॥ तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ जिसु लाइि लइे सो निरमलु होई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥८॥१४॥१५॥ माझ महला ३ ॥ अंमृत नामु मंनि वसाइे ॥ हउमै मेरा सभु दुखु गवाइे ॥ अंमृत बाणी सदा सलाहे अंमृति अंमृतु पावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी अंमृत बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंमृत बाणी मंनि वसाइे अंमृतु नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृतु बोलै सदा मुखि वैणी ॥ अंमृतु वेखै परखै सदा नैणी ॥ अंमृत कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ ॥२॥ अंमृत रंगि रता लिव लाइे ॥ अंमृतु गुर परसादी पाइे ॥ अंमृतु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अंमृतु पीआवणिआ ॥३॥ सो किछु करै जु चिति न होई ॥ तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ हुकमे वरतै अंमृत बाणी हुकमे अंमृतु पीआवणिआ ॥४॥ अजब कंम करते हरि केरे ॥ इिहु मनु भूला जाँदा फेरे ॥ अंमृत बाणी सिउ चितु लाइे अंमृत सबदि वजावणिआ ॥

५॥ खोटे खरे तुधु आपि उपाइे ॥ तुधु आपे परखे लोक सबाइे ॥ खरे परखि खजानै पाइिहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥६॥ किउ करि वेखा किउ सालाही ॥ गुर परसादी सबदि सलाही ॥ तेरे भाणे विचि अंमृतु वसै तूं भाणै अंमृतु पीआवणिआ ॥७॥ अंमृत सबदु अंमृत हरि बाणी ॥ सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥ नानक अंमृत नामु सदा सुखदाता पी अंमृतु सभ भुख लहि जावणिआ ॥८॥ १५॥१६॥ माझ महला ३ ॥ अंमृतु वरसै सहजि सुभाइे ॥ गुरमुखि विरला कोई जनु पाइे ॥ अंमृतु पी सदा तृपतासे करि किरपा तृसना बुझावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अंमृतु पीआवणिआ ॥ रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सहजु को पाइे ॥ दुबिधा मारे इिकसु सिउ लिव लाइे ॥ नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥२॥ सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥ किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥३॥ गुरमुखि ततु है बीचारा ॥ अंमृति भरे तेरे भंडारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥४॥ सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥ अंमृत नामि अंतरु मनु मोहै ॥ अंमृति मनु तनु बाणी रता अंमृतु सहजि सुणावणिआ ॥५॥ मनमुखु भूला दूजै भाइि खुआइे ॥ नामु न लेवै मरै बिखु खाइे ॥ अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥६॥ अंमृतु पीवै जिस नो आपि पीआइे ॥ गुर परसादी सहजि लिव लाइे ॥ पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥७॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥८॥१६॥१७॥ माझ महला ३ ॥ से सचि लागे जो तुधु भाइे ॥ सदा सचु सेवहि सहज सुभाइे ॥ सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ सचु धिआइिनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जह देखा सचु सभनी थाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि

वखानणिआ ॥२॥ मनसा मारि सचि समाणी ॥ इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥३॥ गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥४॥ जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ हरि नामु समालहि से वडभागी ॥ सचै सबदि आपि मिलाइे सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥५॥ लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥ एहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥६॥ पड़ि पड़ि थाके साँति न आई ॥ तृसना जाले सुधि न काई ॥ बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥७॥ गुर परसादी इको जाणा ॥ दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ नानक इको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥८॥१७॥१८॥ माझ महला ३ ॥ वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ मरि मरि जंमहि फेर पवहि घणेरे ॥ तूं इको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ ॥ तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सभ इका जोति जाणै जे कोई ॥ सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥२॥ तिसना अगनि जलै संसारा ॥ लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ मरि मरि जनमै पति गवाइे अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥३॥ गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ आपु मारे ता तृभवणु सूझै ॥ फिरि एहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥४॥ माइआ महि फिरि चितु न लाइे ॥ गुर कै सबदि सद रहै समाइे ॥ सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥५॥ सचु सालाही सदा हजूरे ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ गुर परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥६॥ सचु मन अंदरि रहिआ समाइि ॥ सदा सचु निहचलु आवै न जाइि ॥ सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥७॥ सचु सालाही अवरु न कोई ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु

होई ॥ नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥८॥१८॥१९॥ माझ महला ३ ॥ निरमल सबदु निरमल है बाणी ॥ निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ निरमल नामु वसिआ मनि आइे ॥ मनु तनु निरमलु माइिआ मोहु गवाइे ॥ निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ ॥२॥ निरमल अंमृतु गुर ते पाइिआ ॥ विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइिआ ॥ निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥३॥ जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥४॥ निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥ निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥५॥ सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥ सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥६॥ मनु मैला है दूजै भाइि ॥ मैला चउका मैलै थाइि ॥ मैला खाइि फिरि मैलु वधाइे मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥७॥ मैले निरमल सभि हुकमि सबाइे ॥ से निरमल जो हरि साचे भाइे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥८॥१९॥२०॥ माझ महला ३ ॥ गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥ मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गोबिदु गावहि सहजि सुभाइे ॥ गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाइे ॥ सदा अन्नदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ ॥२॥ मनूआ नाचै भगति दृड़ाइे ॥ गुर कै सबदि मनै मनु मिलाइे ॥ सचा तालु पूरे माइिआ मोहु चुकाइे सबदे निरति करावणिआ ॥३॥ ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥ माइिआ मोहि

जोहिआ जमकाले ॥ माइआ मोहु इिसु मनहि नचाइे अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥४॥ गुरमुखि भगति जा आपि कराइे ॥ तनु मनु राता सहजि सुभाइे ॥ बाणी वजै सबदि वजाइे गुरमुखि भगति थाइि पावणिआ ॥५॥ बहु ताल पूरे वाजे वजाइे ॥ ना को सुणे न मंनि वसाइे ॥ माइिआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइि दुखु पावणिआ ॥६॥ जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥ इिंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥ गुर कै सबदि सदा हरि धिआइे इेहा भगति हरि भावणिआ ॥७॥ गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ होरतु भगति न पाइे कोई ॥ नानक नामु गुर भगती पाईअै गुर चरणी चितु लावणिआ ॥८॥२०॥ २१॥ माझ महला ३ ॥ सचा सेवी सचु सालाही ॥ सचै नाइि दुखु कब ही नाही ॥ सुखदाता सेवनि सुखु पाइिनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सभु को तेरा भगतु कहाइे ॥ सेई भगत तेरै मनि भाइे ॥ सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥२॥ सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ जा तुधु भावै ता नाइि रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥३॥ गुरमती हरि मंनि वसाइिआ ॥ हरखु सोगु सभु मोहु गवाइिआ ॥ इिकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥४॥ भगत रंगि राते सदा तेरै चाइे ॥ नउ निधि नामु वसिआ मनि आइे ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाइिआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥५॥ तूं दइिआलु सदा सुखदाता ॥ तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥ तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥६॥ सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥ गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ इेकसु सिउ मनु रहिआ समाइे मनि मंनिअै मनहि मिलावणिआ ॥७॥ गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥८॥२१॥२२॥ माझ महला ३ ॥ तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥ गुर कै सबदि नामि सवारे ॥ सदा अन्नदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ

॥१॥ हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥ हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जीउ साचा साची नाई ॥ गुर परसादी किसै मिलाई ॥ गुर सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥२॥ तुझ ते बाहरि कछू न होइ ॥ तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ आपे करे कराइे करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥३॥ कामणि गुणवंती हरि पाइे ॥ भै भाइि सीगारु बणाइे ॥ सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥४॥ सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥ भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥ हलतु पलतु तिनी दोवै गवाइे दुखे दुखि विहावणिआ ॥५॥ लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥ दूजै भाइि सुखु पाइे न कोई ॥ कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥६॥ गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥ सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥७॥ मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२२॥२३॥ माझ महला ३ ॥ आतम राम परगासु गुर ते होवै ॥ हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥ मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥ तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे करता कारणु कराइे ॥ जितु भावै तितु कारै लाइे ॥ पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥२॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाइे ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसाइे ॥ सदा मुकतु हरि मंनि वसाइे सहजे सहजि समावणिआ ॥३॥ बहु करम कमावै मुकति न पाइे ॥ देसंतरु भवै दूजै भाइि खुआइे ॥ बिरथा जनमु गवाइिआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥४॥ धावतु राखै ठाकि रहाइे ॥ गुर परसादी परम पदु पाइे ॥ सतिगुरु आपे मेलि मिलाइे मिलि प्रीतम सुखु

पावणिआ ॥५॥ इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाइे ॥ दूजै भाइि बिरथा जनमु गवाइे ॥ आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥६॥ इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ भाइि भगति जा हउमै सोखै ॥ सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइि तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥७॥ आपि कराइे करता सोई ॥ होरु कि करे कीतै किआ होई ॥ नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥८॥२३॥२४॥ माझ महला ३ ॥ इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी अंमृत नामु मंनि वसावणिआ ॥ अंमृत नामु महा रसु मीठा गुरमती अंमृतु पीआवणिआ ॥ १॥ रहाउ ॥ हउमै मारि बजर कपाट खुलाइिआ ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइिआ ॥ बिनु सबदै नामु न पाइे कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥२॥ गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइिआ ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइिआ ॥ जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥ सरीरहु भालणि को बाहरि जाइे ॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाइे ॥ मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइि गुरमुखि वथु पावणिआ ॥४॥ गुर परसादी सचा हरि पाइे ॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाइे ॥ बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥५॥ नउ दर ठाके धावतु रहाइे ॥ दसवै निज घरि वासा पाइे ॥ एथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥ ६॥ बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥७॥ गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥ नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥८॥२४॥२५॥ माझ महला ३ ॥ गुरमुखि मिलै मिलाइे आपे ॥ कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि

नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥ गुरमुखि मरै न कालु न खाइे गुरमुखि सचि समावणिआ ॥२॥ गुरमुखि हरि दरि सोभा पाइे गुरमुखि विचहु आपु गवाइे ॥ आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥३॥ गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥ गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥ गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥४॥ गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥ गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥ सदा अन्नदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥५॥ गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥ गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥ गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥६॥ बाझु गुरू है अंध अंधारा ॥ जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥ अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥७॥ गुरमुखि आपे करे कराइे ॥ गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आइे ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२५॥२६॥ माझ महला ३ ॥ इेका जोति जोति है सरीरा ॥ सबदि दिखाइे सतिगुरु पूरा ॥ आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ बाझु गुरू को सहजु न पाइे गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥ तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥ तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥२॥ आपे करता करे कराइे ॥ आपे सबदु गुर मंनि वसाइे ॥ सबदे उपजै अंमृत बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥३॥ आपे करता आपे भुगता ॥ बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥ सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥४॥ आपे माइिआ आपे छाइिआ ॥ आपे मोहु सभु जगतु उपाइिआ ॥ आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥५॥ आपे करे कराइे आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ तुझ ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥६॥ आपे मारे आपि जीवाइे ॥ आपे मेले मेलि मिलाइे ॥ सेवा ते सदा सुखु पाइिआ गुरमुखि सहजि

समावणिआ ॥७॥ आपे ऊचा ऊचो होई ॥ जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥८॥२६॥२७॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मंनि वसावणिआ ॥ हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ घर महि धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ सदा अन्नदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥२॥ काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ जंमण मरणु न चूकै फेरा ॥ गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥३॥ काइआ अंदरि पापु पुन्नु दुइ भाई ॥ दुही मिलि कै सृसटि उपाई ॥ दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥४॥ घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥५॥ अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥६॥ अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ गुरमुखि पाइे नामु अपारा ॥ गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥७॥ आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ नानक जिसु नदरि करे सो पाइे करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥८॥२७॥२८॥ माझ महला ३ ॥ हरि आपे मेले सेव कराइे ॥ गुर कै सबदि भाउ दूजा जाइे ॥ हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥ सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ अंमृत नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥२॥ इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥३॥

गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥ नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ हरि गुण गावै सबदि सुहाइे मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥४॥ जमु जागाती दूजै भाइि करु लाइे ॥ नावहु भूले देइि सजाइे ॥ घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥५॥ पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥ दूजै मुठी रोवै धाही ॥ खरी कुआलिए कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥६॥ पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइिआ ॥ पूरै गुरि हदूरि दिखाइिआ ॥ कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइि सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥७॥ आपे देवै सदि बुलाइे ॥ आपणा नाउ मंनि वसाइे ॥ नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥८॥२८॥२९॥ माझ महला ३ ॥ ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु तृपतावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥ गुरमुखि पड़हि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अलख अभेउ हरि रहिआ समाइे ॥ उपाइि न किती पाइिआ जाइे ॥ किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥२॥ दूजै भाइि पड़ै नही बूझै ॥ तृबिधि माइिआ कारणि लूझै ॥ तृबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥३॥ इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥ दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥ बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥४॥ हउ हउ करे तै आपु जणाइे ॥ बहु करम करै किछु थाइि न पाइे ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥५॥ उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ अनदिनु दूजै भाइि फिराही ॥ मनमुख जनमु गइिआ है बिरथा अंति गइिआ पछुतावणिआ ॥६॥ पिरु परदेसि सिगारु बणाइे ॥ मनमुख अंधु ऐसे करम कमाइे ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥७॥ हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥८॥ सभ महि वरतै इेको सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक नामि रते जन सोहहि करि

किरपा आपि मिलावणिआ ॥६॥२६॥३०॥ माझ महला ३ ॥ मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥ दूजै भाइ महा दुखु पावहि ॥ बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥ वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥२॥ अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥ गुरमती मनि सचो भावै ॥ सचो सचु रवहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥३॥ जो सचि रते तिन सचो भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥४॥ कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥ गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥५॥ त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥ मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥६॥ वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥ मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि इकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥७॥ जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥८॥३०॥ ३१॥ माझ महला ३ ॥ निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥ आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥ हरि रसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥ नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥२॥ हउमै करै निहकरमी न होवै ॥ गुर परसादी हउमै खोवै ॥ अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥३॥ हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥ संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥४॥ निरमल हंसा प्रेम पिआरि ॥ हरि सरि वसै हउमै

मारि ॥ अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥५॥ मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥ इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥६॥ रतनु पदारथु घर ते पाइिआ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइिआ ॥ गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥७॥ आपि उपाइे तै आपे वेखै ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥८॥३१॥३२॥ माझ महला ३ ॥ माइिआ मोहु जगतु सबाइिआ ॥ त्रै गुण दीसहि मोहे माइिआ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी माइिआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ माइिआ मोहु जलाइे सो हरि सिउ चितु लाइे हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ देवी देवा मूलु है माइिआ ॥ सिंमृति सासत जिंनि उपाइिआ ॥ कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइि जाइि दुखु पावणिआ ॥२॥ तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइिआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइिआ ॥ जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥३॥ पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥ दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥ हलतु पलतु दोवै गवाइे सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥ पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥ गुर परसादी वेखै नाले ॥ पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥५॥ सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइिआ ॥ दूजा भाउ गुर सबदि जलाइिआ ॥ इेको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥६॥ सतिगुरु न सेवे सो काहे आइिआ ॥ ध्रिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥७॥ जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥८॥१॥३२॥३३॥ माझ महला ४ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु आपे ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ सभ महि वरतै इेको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ

॥ तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥२॥ तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥ भगती भरे तेरे भंडारा ॥ गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥३॥ अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥४॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥ अपणी कृपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥ पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥५॥ रसना गुणवंती गुण गावै ॥ नामु सलाहे सचे भावै ॥ गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥६॥ मनमुखु करम करे अहंकारी ॥ जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥७॥ आपे करता दे वडिआई ॥ जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ नानक नामु मिलै भउ भंजनु गुर सबदी सुखु पावणिआ ॥८॥१॥३४॥ माझ महला ५ घरु १ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥२॥ आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ धरती सेवक पाइक चरना ॥ खाणी बाणी सरब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥३॥ साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥ पूरे गुर कै सबदि सिञापै ॥ जिन पीआ सेई तृपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥४॥ तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ अनद बिनोद करे सद केला ॥ सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥५॥ पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥ तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥६॥ जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआइे ॥ साध जना का मंत्रु कमाइे ॥ आपि तरै सगले कुल तारे

तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥७॥ तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥ तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥ हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसावणिआ ॥८॥१॥३५॥ माझ महला ५ ॥ कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥ कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥ कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाइे जीउ ॥१॥ किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥ कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाइे जीउ ॥२॥ कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥ कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इहि बिधि कउणु प्रगटाइे जीउ ॥३॥ कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥ कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआइे किनि बिधि कीरतनु गाइे जीउ ॥४॥ गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ धन्नु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाइे जीउ ॥५॥ हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाइे जीउ ॥६॥ गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥ गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाइे जीउ ॥७॥ गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥ गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआइे गुरमुखि कीरतनु गाइे जीउ ॥८॥ सगली बणत बणाई आपे ॥ आपे करे कराइे थापे ॥ इकसु ते होइिए अन्नता नानक इेकसु माहि समाइे जीउ ॥ ९॥२॥३६॥ माझ महला ५ ॥ प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥ हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥१॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ तूं मेरा परबतु तूं मेरा एला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥ थानि थन्नतरि तूंहै तूंहै इको इकु वरतावणिआ ॥२॥ सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥ भगती भाइ भरे भंडारा ॥ दइिआ धारि राखे

तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥३॥ अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥ करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ गुण गावहि पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥४॥ ऐथै एथै तूंहै रखवाला ॥ मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ माइिआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥५॥ किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥ तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥६॥ जिस कउ तूं प्रभ भइिआ सहाई ॥ तिसु तती वाउ न लगै काई ॥ तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥७॥ तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥ तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥८॥३॥३७॥ माझ महला ५ घरु २ ॥ नित नित दयु समालीऐ ॥ मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥ संता संगति पाईऐ ॥ जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥ तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥१॥ जो सिमरंदे साँईऐ ॥ नरकि न सेई पाईऐ ॥ तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइि जीउ ॥२॥ सेई सुंदर सोहणे ॥ साधसंगि जिन बैहणे ॥ हरि धनु जिनी संजिआ सेई गंभीर अपार जीउ ॥३॥ हरि अमिउ रसाइिणु पीवीऐ ॥ मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥ कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥४॥ जो हरि कीता आपणा ॥ तिनहि गुसाई जापणा ॥ सो सूरा परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥५॥ मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥ इेहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ मंदा मूलि न उपजिए तरे सची कारै लागि जीउ ॥६॥ करता मंनि वसाइिआ ॥ जनमै का फलु पाइिआ ॥ मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥७॥ अटल पदारथु पाइिआ ॥ भै भंजन की सरणाइिआ ॥ लाइि अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥८॥४॥३८॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ माझ महला ५ घरु ३ ॥

हरि जपि जपे मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि गुरदेउ मिटि गइे भै दूरे ॥१॥ सरनि

आवै पारब्रहम की ता फिरि काहे झूरे ॥२॥ चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥३॥ घटि घटि इेकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥४॥ पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥५॥ सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥६॥ करतै कीआ तपावसो दुसट मुइे होइि मूरे ॥७॥ नानक रता सचि नाइि हरि वेखै सदा हजूरे ॥८॥५॥३६॥१॥३२॥१॥५॥३६॥

बारह माहा माँझ महला ५ घरु ४ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आइे प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीअै साजनै कत पाईअै बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेन्नतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥ चेति गोविंदु अराधीअै होवै अन्नदु घणा ॥ संत जना मिलि पाईअै रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइिआ प्रभु आपणा आइे तिसहि गणा ॥ इिकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिन्ना भागु मणा ॥ हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाइे सो प्रभू तिस कै पाइि लगा ॥२॥ वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइिआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी एहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इिकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइि ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइि ॥

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥ हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिन्ना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥ सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीऐ प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥ भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥ असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ

मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से तृपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होइे राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गइे जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै ताँ उतरहि सभि बिएग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥ मंघिरि माहि सोह्मदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ एट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सोह्मदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥ माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ

गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुन्न जीअ दइिआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइिआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचे से काँढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ फलगुणि अन्नद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइि ॥ संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइि ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइि ॥ इिछ पुनी वडभागणी वरु पाइिआ हरि राइि ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइि ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइि ॥ हलतु पलतु सवारिएनु निहचल दितीअनु जाइि ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइि ॥ जिहवा इेक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइि ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइि ॥१३॥ जिनि जिनि नामु धिआइिआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गइे दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि इेकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥

माझ महला ५ दिन रैणि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ आपु तिआगि सरणी पवाँ मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ नानक की बेन्नतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥१॥ जीअ की बिरथा सो सुणे हरि संमृथ पुरखु अपारु ॥ मरणि जीवणि

आराधणा सभना का आधारु ॥ ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥ ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥ आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥२॥ संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥ गुर सबदी आराधीऐ जपीऐ निरमल मंतु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥ जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥ जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥ नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥ दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥३॥ सरब कला प्रभ पूरणो मंञु निमाणी थाउ ॥ हरि एट गही मन अंदरे जपि जपि जीवाँ नाउ ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥ सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥४॥१॥

वार माझ की तथा सलोक महला १

मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ ੧ੳ सिति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥१॥ मः १ ॥ पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ दूजै माइ बाप की सुधि ॥ तीजै भया भाभी बेब ॥ चउथै पिआरि उपन्नी खेड ॥ पंजवै खाण पीअण की धातु ॥ छिवै कामु न पुछै जाति ॥ सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ नावै धउले उभे साह ॥ दसवै दधा होआ सुआह ॥ गडे सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिआ हंसु दसाइे राह ॥

आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥ पिछै पतलि सदिहु काव ॥ नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥ बाझु गुरू डुबा संसारु ॥२॥ मः १ ॥ दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥ चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥ सतरि का मतिहीणु असीहाँ का विउहारु न पावै ॥ नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥ ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूऐ का धवलहरु ॥३॥ पउड़ी ॥ तूं करता पुरखु अगंमु है आपि सृसटि उपाती ॥ रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ रंगि हरि रंगि राती ॥ सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥ जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥१॥ सलोक मः १ ॥ जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत बणाइ ॥ अखी देखै जिहवा बोलै कन्नी सुरति समाइ ॥ पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥१॥ मः २ ॥ देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥ सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीऐ ॥ अंतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥ जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥ तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीऐ ॥ जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥ मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ तिसना अंदरि अगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइआ ॥ सहसा इहु संसारु है मरि जंमै आइआ जाइआ ॥ बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम कमाइआ ॥ गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ कुलु

उधारे आपणा धन्नु जणेदी माइआ ॥ सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥२॥ सलोकु मः २ ॥ अखी बाझहु वेखणा विणु कन्ना सुनणा ॥ पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥ जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥१॥ मः २ ॥ दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥ रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥ नानकु कहै सिआणीऐ इव कंत मिलावा होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सदा सदा तूं इेकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥ हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ एहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥३॥ सलोकु मः १ ॥ सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥ पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥१॥ मः १ ॥ वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥ अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥ वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥२॥ पवड़ी ॥ काइआ ह्मसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥ तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥ मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥ सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥ मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥ सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥ करता करे सु होगु न चलै चलाइआ ॥४॥ सलोकु मः १ ॥ कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥

अवरी नो समझावणि जाइ ॥ मुठा आपि मुहाइे साथै ॥ नानक ऐसा आगू जापै ॥१॥ महला ४ ॥ जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाइे ॥ एहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाइे ॥ जे अगै तीरथु होइि ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाइे ॥ तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआइे ॥ एहु आपि छुटा कुटंब सिउ दे हरि हरि नामु सभ सृसटि छडाइे ॥ जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाइे ॥२॥ पउड़ी ॥ इिकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥ इिकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥ अंदरि तृसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ बिरथा जनमु गवाइि न गिरही न उदासा ॥ जमकालु सिरहु न उतरै तृबिधि मनसा ॥ गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनि दासा ॥ सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥ नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥५॥ सलोकु मः १ ॥ जे रतु लगै कपड़ै जामा होइि पलीतु ॥ जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ नानक नाउ खुदाइि का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥१॥ मः १ ॥ जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवाँ ॥ आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवाँ ॥ नानक अंधा होइि कै दसे राहै सभसु मुहाइे साथै ॥ अगै गइिआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥२॥ पउड़ी ॥ माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥ तूं गणतै किनै न पाइिए सचे अलख अपारा ॥ पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥ गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥ निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥ सचा साहु इिकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥६॥ सलोकु मः १ ॥ मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ सरम सुन्नति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥ तसबी सा तिसु

भावसी नानक रखै लाज ॥१॥ मः १ ॥ हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥ मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥२॥ मः १ ॥ पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥३॥ पउड़ी ॥ इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुइे कूड़िआरा ॥ मनमुख दूजै पचि मुइे ना बूझहि वीचारा ॥ इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥ नानक आपि कराइे करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥७॥ सलोकु मः १ ॥ मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥ होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ रब की रजाइ मन्ने सिर उपरि करता मन्ने आपु गवावै ॥ तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥१॥ महला ४ ॥ परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥ तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥ नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥२॥ पउड़ी ॥ राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीए ॥ हट पटण बाजार हुकमी ढहसीए ॥ पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥ ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ तंबू पलम्घ निवार सराइचे लालती ॥ नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥८॥ सलोकु मः १ ॥ नदीआ होवहि धेणवा सुंम होवहि दुधु घीउ ॥ सगली

धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥ परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥१॥ मः १ ॥ भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥२॥ मः १ ॥ जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥ रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि इेवै जापै भाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥३॥ मः १ ॥ अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥ सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ भी तूहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥४॥ पवड़ी ॥ बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥ कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥ राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥ सिझै दरि दीवानि आपु गवाईऐ ॥९॥ मः १ सलोकु ॥ सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ राजि रंगु मालि रंगु ॥ रंगि रता नचै न्नगु ॥ नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥१॥ मः १ ॥ किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ जा मनि नाही सचा सोइ ॥ किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥२॥ पवड़ी ॥ जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥ महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥ हुकमु मन्ने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥ फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ इकि होए असवार इकना साखती ॥ इकनी बधे भार इकना ताखती ॥१०॥ सलोकु मः १ ॥ जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥ सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥ दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥ जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥१॥ मः १ ॥ वेखु जि

मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥ खुंढा अंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥ भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥ नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥२॥ पवड़ी ॥ इकना मरणु न चिति आस घणेरिआ ॥ मरि मरि जंमहि नित किसै न केरिआ ॥ आपनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिआ ॥ जमराजै नित नित मनमुख हेरिआ ॥ मनमुख लूण हाराम किआ न जाणिआ ॥ बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥ सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥ करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥११॥ मः १ सलोकु ॥ मछी तारू किआ करे पंखी किआ आकासु ॥ पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥ कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ बोला जे समझाईऐ पड़ीअहि सिंमृति पाठ ॥ अंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥१॥ मः १ ॥ कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ अगनी गंढु पाए लोहारु ॥ गोरी सेती तुटै भतारु ॥ पुतीं गंढु पवै संसारि ॥ राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥ भुखिआ गंढु पवै जा खाइ ॥ काला गंढु नदीआ मीह झोल ॥ गंढु परीती मिठे बोल ॥ बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥ मुइआ गंढु नेकी सतु होइ ॥ एतु गंढि वरतै संसारु ॥ मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥ नानकु आखै एहु बीचारु ॥ सिफती गंढु पवै दरबारि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥ इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥ खरे खजानै पाईअहि खोटे सटीअहि बाहर वारि ॥ खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥ सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥ सतिगुरु खोटिअहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ सची दरगह मंनीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥ गणत तिना दी को किआ करे जो आपि बखसे करतारि ॥१२॥ सलोकु मः १ ॥ हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥ मे रवदि बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥ एक तूही एक तुही ॥१॥ मः १ ॥ न देव दानवा नरा ॥ न सिध साधिका धरा ॥ असति एक

दिगरि कुई ॥ इेक तुई इेक तुई ॥२॥ मः १ ॥ न दादे दिह्मद आदमी ॥ न सपत जेर जिमी ॥ असति इेक दिगरि कुई ॥ इेक तुई इेक तुई ॥३॥ मः १ ॥ न सूर ससि मंडलो ॥ न सपत दीप नह जलो ॥ अन्न पउण थिरु न कुई ॥ इेकु तुई इेकु तुई ॥४॥ मः १ ॥ न रिजकु दसत आ कसे ॥ हमा रा इेकु आस वसे ॥ असति इेकु दिगर कुई ॥ इेक तुई इेकु तुई ॥५॥ मः १ ॥ परंदइे न गिराह जर ॥ दरखत आब आस कर ॥ दिह्मद सुई ॥ इेक तुई इेक तुई ॥६॥ मः १ ॥ नानक लिलारि लिखिआ सोइि ॥ मेटि न साकै कोइि ॥ कला धरै हिरै सुई ॥ इेकु तुई इेकु तुई ॥७॥ पउड़ी ॥ सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ गुरमती आपु गवाइि सचु पछाणिआ ॥ सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥ मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ विणु नावै दुखु पाइि आवण जाणिआ ॥ नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥ सीहा बाजा चरगा कुहीआ इेना खवाले घाह ॥ घाहु खानि तिना मासु खवाले इेहि चलाइे राह ॥ नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥ कीड़ा थापि देइि पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥ नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइि गिराह ॥१॥ मः १ ॥ इिकि मासहारी इिकि तृणु खाहि ॥ इिकना छतीह अंमृत पाहि ॥ इिकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ इिकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ इिकि निरंकारी नाम आधारि ॥ जीवै दाता मरै न कोइि ॥ नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥ गुरमती आपु गवाइि नामु धिआईऐ ॥ दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥ विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥ सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥ विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥ दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥ नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥१४॥ सलोकु मः १ ॥ तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥

जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंङी नादु वजावहि ॥ जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥ जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥ जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥ नानकु इेक कहै बेन्नती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥१॥ मः १ ॥ जा तूं वडा सभि वडिआँईआ चंगै चंगा होई ॥ जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥ आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥ सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥ लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥ मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥ सचे दै दरि जाइ सचु चवाँईऐ ॥ सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥ नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥१५॥ सलोकु मः १ ॥ कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ हउ भालि विकुन्नी होई ॥ आधेरै राहु न कोई ॥ विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥१॥ मः ३ ॥ कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥ नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥२॥ पउड़ी ॥ भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥ करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥ भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ एना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥१६॥ सलोकु मः १ ॥ सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥ सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुइे ॥ दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥ बहुतु पइे असगाह

गोते खाहि न निकलहि ॥ तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइि भउकीआ ॥ खाधा होइि सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥ चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइिआ ॥ भी उठि रचिएनु वादु सै वर्हिआ की पिड़ बधी ॥ सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइि ॥ नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइि ॥१॥ मः २ ॥ सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइिआ ॥ अठी वेपरवाह रहनि इिकतै रंगि ॥ दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥ करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥२॥ पउड़ी ॥ जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ ॥ मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥ इेनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥ जितु घटि सचु न पाइि सु भंनि घड़ाईऐ ॥ किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥ कोइि न आखै घटि हउमै जाईऐ ॥ लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥ सउदा इिकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥१७॥ सलोक मः २ ॥ अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥ तिसु विचि नउ निधि नामु इेकु भालहि गुणी गहीरु ॥ करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥ चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥ तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ एथै अंमृतु वंडीऐ करमी होइि पसाउ ॥ कंचन काइिआ कसीऐ वन्नी चड़ै चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि ॥ एथै पापु पुन्नु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥ एथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥ बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥१॥ मः २ ॥ पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिनसु राति दुइि दाई दाइिआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइिआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥ सचे ही पतीआइि सचि विगसिआ ॥ सचै कोटि गिराँइि निज घरि वसिआ ॥ सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥ सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥ झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥

सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ ॥ सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥१८॥ सलोकु मः १ ॥ पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ धरि ताराजी अंबरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥ इेवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ इेता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥ नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥१॥ मः २ ॥ आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कन्न ॥ अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इिक वन्न ॥ भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइि ॥ नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ सभु जगु ठगिए ठगि आईऐ जाईऐ ॥ तन महि तृसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥१९॥ सलोक मः १ ॥ नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥ १॥ मः १ ॥ सुइिने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ अठिसठि तीरथ गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ ह्मसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥२॥ पउड़ी ॥ जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ ॥ झूठा इिहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ आपे देइि पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ मुहतु न चसा विलम्मु भरीऐ पाईऐ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाईऐ ॥२०॥ सलोकु मः १ ॥ तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥ मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही ॥ नानक कहीऐ किसु ह्मढनि करमा बाहरे ॥१॥ मः १ ॥ मति पंखेरू किरतु साथि

कब उतम कब नीच ॥ कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति ॥ नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति ॥२॥ पउड़ी ॥ केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥ वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा ॥ पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा ॥ खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥ सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥ मन्ने नाउ बिसंख दरगह पावणा ॥ खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥ नानक जुगु जुगु इेकु मंनि वसावणा ॥२१॥ सलोकु महला २ ॥ मंत्री होइि अठूहिआ नागी लगै जाइि ॥ आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइि ॥ हुकमु पइिआ धुरि खसम का अती हू धका खाइि ॥ गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइि ॥ दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइि ॥ नानक इेवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइि ॥१॥ महला २ ॥ नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥ रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥ वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥ मूलु जाणि गला करे हाणि लाइे हाणु ॥ लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥ सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥ अगै एहु अगंमु है वाहेदड़ु जाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारीआ ॥ करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥ महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ ॥ सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ ॥ सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥ सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥ बिनु नावै ध्रिगु वासु फिटु सु जीविआ ॥ सबदि सवारीआसु अंमृतु पीविआ ॥२२॥ सलोकु मः १ ॥ मारू मीहि न तृपतिआ अगी लहै न भुख ॥ राजा राजि न तृपतिआ साइिर भरे किसुक ॥ नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥१॥ महला २ ॥ निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥ पउड़ी ॥ खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥ सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ ॥ खसमहु पूरा पाइि मनहु रहसिआ ॥ दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥ सचा सतिगुरु सेवनि सचा

मारगु दसिआ ॥ सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥ ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥ नानक गुण गहि रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥२३॥ सलोकु मः १ ॥ खतिअहु जंमे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥ धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥१॥ मः १ ॥ नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीअहि सुख ॥ सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥ जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥२॥ पउड़ी ॥ चारे कुंडा देखि अंदरु भालिआ ॥ सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥ उझड़ि भुले राह गुरि वेखालिआ ॥ सतिगुर सचे वाहु सचु समालिआ ॥ पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥ सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥ निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥ नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥२४॥ सलोकु मः ३ ॥ भै विचि जंमै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥१॥ मः ३ ॥ भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥ नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥२५॥ सलोकु मः १ ॥ सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥ फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥ माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ एना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥ अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अंनु न खाही ॥ सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥ लकी कासे हथी फुंमण अगो पिछी जाही ॥ ना एइ जोगी ना एइ जंगम

ना एहि काजी मुंला ॥ दयि विगोइे फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥ दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ पाणी विचहु रतन उपन्ने मेरु कीआ माधाणी ॥ अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ नाइि निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ मुइिआ जीवदिआ गति होवै जाँ सिरि पाईअै पाणी ॥ नानक सिरखुथे सैतानी इेना गल न भाणी ॥ वुठै होइिअै होइि बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥ वुठै अन्नु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ वुठै घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥ तितु घिइि होम जग सद पूजा पइिअै कारजु सोहै ॥ गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई ॥१॥ मः २ ॥ अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥ धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइि ॥ नानक ता पति जाणीअै जा पति रखै सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥ सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ मंनिअै गिआनु धिआनु तुधै ते पाइिआ ॥ करमि पवै नीसानु न चलै चलाइिआ ॥ तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइिआ ॥ नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइिआ ॥२६॥ सलोकु मः २ ॥ दीखिआ आखि बुझाइिआ सिफती सचि समेउ ॥ तिन कउ किआ उपदेसीअै जिन गुरु नानक देउ ॥१॥ मः १ ॥ आपि बुझाइे सोई बूझै ॥ जिसु आपि सुझाइे तिसु सभु किछु सूझै ॥ कहि कहि कथना माइिआ लूझै ॥ हुकमी सगल करे आकार ॥ आपे जाणै सरब वीचार ॥ अखर नानक अखिए आपि ॥ लहै भराति होवै जिसु दाति ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी वेकारु कारै लाइिआ ॥ राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइिआ ॥ ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइिआ ॥ सची सिफति सालाह कपड़ा पाइिआ ॥ सचा अंमृत नामु भोजनु आइिआ ॥ गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइिआ ॥ ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइिआ ॥ नानक सचु सालाहि पूरा पाइिआ ॥२७॥ सुधु

रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ मन मति हउली बोले बोलु ॥ सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥ नदरी करमी गुर बीचारु ॥१॥ भै बिनु कोइ न लम्घसि पारि ॥ भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥ भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥ भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ अंधा सचा अंधी सट ॥२॥ बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥३॥१॥ गउड़ी महला १ ॥ डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥१॥ रहाउ ॥ ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ ॥२॥ हंसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ भउ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधे मरि होहि गवार ॥३॥ जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥४॥२॥ गउड़ी महला १ ॥ माता मति पिता संतोखु ॥ सतु भाई करि एहु विसेखु ॥१॥ कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ तउ कुदरति कीमति

नही पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइि ससुर भइे ॥ करणी कामणि करि मन लइे ॥२॥ साहा संजोगु वीआहु विजोगु ॥ सचु संतति कहु नानक जोगु ॥३॥३॥ गउड़ी महला १ ॥ पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ चंचल चपल बुधि का खेलु ॥ नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ बुझु रे गिआनी इेहु बीचारु ॥१॥ कथता बकता सुनता सोई ॥ आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥१॥ रहाउ ॥ देही माटी बोलै पउणु ॥ बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥ मूई सुरति बादु अहंकारु ॥ एहु न मूआ जो देखणहारु ॥२॥ जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥ रतन पदारथ घट ही माही ॥ पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥ भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥३॥ हउ न मूआ मेरी मुई बलाइि ॥ एहु न मूआ जो रहिआ समाइि ॥ कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइिआ ॥ मरता जाता नदरि न आइिआ ॥४॥४॥ गउड़ी महला १ दखणी ॥ सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ आपि भुलाइे ठउर न ठाउ ॥ तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥१॥ नामु मिलै चलै मै नालि ॥ बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥१॥ रहाउ ॥ खेती वणजु नावै की एट ॥ पापु पुन्नु बीज की पोट ॥ कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ नामु विसारि चले मनि खोट ॥२॥ साचे गुर की साची सीख ॥ तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ जल पुराइिनि रस कमल परीख ॥ सबदि रते मीठे रस ईख ॥३॥ हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥ आपि तुलै आपे वणजार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥५॥ गउड़ी महला १ ॥ जातो जाइि कहा ते आवै ॥ कह उपजै कह जाइि समावै ॥ किउ बाधिए किउ मुकती पावै ॥ किउ अबिनासी सहजि समावै ॥१॥ नामु रिदै अंमृतु मुखि नामु ॥ नरहर नामु नरहर निहकामु ॥१॥ रहाउ ॥ सहजे आवै सहजे जाइि ॥ मन ते उपजै मन माहि समाइि ॥ गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइि ॥ सबदु बीचारि छुटै हरि नाइि ॥२॥ तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥ सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ दह दिसि धावहि करमि

लिखिआसु ॥३॥ नाम संजोगी गोइलि थाटु ॥ काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥४॥ साधु मिलै पूरब संजोग ॥ सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥ नानक तिन कै लागउ पाइ ॥५॥६॥ गउड़ी महला १ ॥ कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥ झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥१॥ वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ हउ पापी तूं निरमलु इेक ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ जिहवा इंद्री इेकु सुआउ ॥ दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ आपु मारे ता पाइे नाउ ॥२॥ सबदि मरै फिरि मरणु न होइि ॥ बिनु मूइे किउ पूरा होइि ॥ परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइि ॥ थिरु नाराइिणु करे सु होइि ॥३॥ बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ सचु सालाही धन्नु गुरदुआरु ॥ नानक दरि घरि इेकंकारु ॥४॥७॥ गउड़ी महला १ ॥ उलटिए कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ अंमृत धार गगनि दस दुआरि ॥ तृभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥१॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिऐ अंमृत रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥ आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥ नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥२॥ जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ नर नाराइिण अंतरजामि ॥३॥ आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ नानक गुरमति सहजि समाउ ॥४॥८॥ गउड़ी महला १ ॥ सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाइे ॥ मरण रहण रसु अंतरि भाइे ॥ गरबु निवारि गगन पुरु पाइे ॥१॥ मरणु लिखाइि आइे नही रहणा ॥ हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु आगै ॥२॥ सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥ गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥३॥ गुरि मिलिऐ मिलि अंकि समाइिआ ॥ करि किरपा घरु महलु दिखाइिआ ॥ नानक हउमै मारि मिलाइिआ ॥४॥९॥

गउड़ी महला १ ॥ किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥ किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ अवरु न करणै वाला दूआ ॥१॥ ना जाणा करम केवड तेरी दाति ॥ करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥१॥ रहाउ ॥ तू एवडु दाता देवणहारु ॥ तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ कीआ गरबु न आवै रासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥२॥ तू मारि जीवालहि बखसि मिलाइ ॥ जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥ तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥३॥ तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ नानक रहणा भगति सरणाई ॥४॥१०॥ गउड़ी महला १ ॥ जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ अन भै विसरे नामि समाइआ ॥१॥ किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥२॥ जाहि सवारै साझ बिआल ॥ इत उत मनमुख बाधे काल ॥३॥ अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥४॥११॥ गउड़ी महला १ ॥ जनमि मरै त्रै गुण हितकारु ॥ चारे बेद कथहि आकारु ॥ तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥ तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥१॥ राम भगति गुर सेवा तरणा ॥ बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा ॥१॥ रहाउ ॥ चारि पदारथ कहै सभु कोई ॥ सिंमृति सासत पंडित मुखि सोई ॥ बिनु गुर अरथु बीचारु न पाइआ ॥ मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥२॥ जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥ गुरमुखि भगति परापति होई ॥ हरि की भगति मुकति आनंदु ॥ गुरमति पाए परमानंदु ॥३॥ जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥ आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥ दीना नाथु सरब सुखदाता ॥ नानक हरि चरणी मनु राता ॥४॥१२॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अंम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥१॥ सुणि सुणि सिख हमारी ॥ सुकृतु कीता रहसी मेरे जीअड़े

बहुड़ि न आवै वारी ॥१॥ रहाउ ॥ हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥ निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥ हंसु चलिआ तूं पिछै रहीऐहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥२॥ तूं काइआ रहीअहि सुपन्नतरि तुधु किआ करम कमाइआ ॥ करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥३॥ हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अंमृतु नामु तुमारा ॥४॥ दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥ संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥ सोइन लंका सोइन माड़ी संपै किसै न केरी ॥५॥ सुणि मूरख मन्न अजाणा ॥ होगु तिसै का भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥६॥१॥१३॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥१॥ स्री राम नामा उचरु मना ॥ आगै जम दलु बिखमु घना ॥१॥ रहाउ ॥ उसारि मड़ोली राखै दुआरा भीतरि बैठी सा धना ॥ अंमृत केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥२॥ ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा सा धन पकड़ी एक जना ॥ जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥३॥ कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥ नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥४॥२॥१४॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ॥ पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥१॥ जोग जुगति इव पावसिता ॥ एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥१॥ रहाउ ॥ मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥ त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥२॥ करि पटंबु गली मनु लावसि संसा मूलि न

जावसिता ॥ इेकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥३॥ जपसि निरंजनु रचसि मना ॥ काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ कमली ह्मसु इिआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥४॥३॥१५॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अउखध मंत्र मूलु मन इेकै जे करि दृड़ु चितु कीजै रे ॥ जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥१॥ मन इेको साहिबु भाई रे ॥ तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ सकर खंडु माइिआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥२॥ मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥३॥ सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥४॥४॥१६॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आइे ॥ अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाइे ॥१॥ मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥ कहे न जानी अउगण मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाइे ॥ केते नाग कुली महि आइे केते पंख उडाइे ॥२॥ हट पटण बिज मंदर भन्नै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥३॥ तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥४॥ जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ दइिआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥५॥ जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥६॥५॥१७॥ गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ रैणि गवाई सोइि कै दिवसु गवाइिआ खाइि ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइि ॥१॥ नामु न जानिआ राम का ॥ मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥१॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइि ॥ अनत कउ चाहन जो गइे से आइे अनत गवाइि ॥२॥ आपण लीआ जे मिलै ता सभु को

भागठु होइ ॥ करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥३॥ नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ ॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥४॥१॥१८॥ गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥१॥ मै बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥२॥ मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥३॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥४॥२॥१९॥

गउड़ी पूरबी दीपकी महला १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि इहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥२०॥

रागु गउड़ी गुआरेरी ॥ महला ३ चउपदे ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ आपे मेलि मिलावै सोई ॥ मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥१॥ सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ भै राचै सच रंगि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ॥ सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥२॥ गुरि मिलिऐ

सभ मति बुधि होइि ॥ मनि निरमलि वसै सचु सोइि ॥ साचि वसिऐ साची सभ कार ॥ ऊतम करणी सबद् बीचार ॥३॥ गुर ते साची सेवा होइि ॥ गुरमुखि नामु पछाणै कोइि ॥ जीवै दाता देवणहारु ॥ नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥४॥१॥२१॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर ते गिआनु पाइे जनु कोइि ॥ गुर ते बूझै सीझै सोइि ॥ गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥ गुर ते पाइे मुकति दुआरु ॥१॥ पूरै भागि मिलै गुरु आइि ॥ साचै सहजि साचि समाइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ तृसना अगनि बुझाइे ॥ गुर ते साँति वसै मनि आइे ॥ गुर ते पवित पावन सुचि होइि ॥ गुर ते सबदि मिलावा होइि ॥२॥ बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई ॥ बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥ दरसनि सचै सची पति होई ॥३॥ किस नो कहीऐ दाता इिकु सोई ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचि समावा ॥४॥२॥२२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सु थाउ सचु मनु निरमलु होइि ॥ सचि निवासु करे सचु सोइि ॥ सची बाणी जुग चारे जापै ॥ सभु किछु साचा आपे आपै ॥१॥ करमु होवै सतसंगि मिलाइे ॥ हरि गुण गावै बैसि सु थाइे ॥१॥ रहाउ ॥ जलउ इिह जिहवा दूजै भाइि ॥ हरि रसु न चाखै फीका आलाइि ॥ बिनु बूझे तनु मनु फीका होइि ॥ बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइि ॥२॥ रसना हरि रसु चाखिआ सहजि सुभाइि ॥ गुर किरपा ते सचि समाइि ॥ साचे राती गुर सबदु वीचार ॥ अंमृतु पीवै निरमल धार ॥३॥ नामि समावै जो भाडा होइि ॥ ऊंधै भाँडै टिकै न कोइि ॥ गुर सबदी मनि नामि निवासु ॥ नानक सचु भाँडा जिसु सबद् पिआस ॥४॥३॥२३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ इिकि गावत रहे मनि सादु न पाइि ॥ हउमै विचि गावहि बिरथा जाइि ॥ गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥ साची बाणी सबद् बीचारु ॥१॥ गावत रहै जे सतिगुर भावै ॥ मनु तनु राता नामि सुहावै ॥१॥ रहाउ ॥ इिकि गावहि इिकि भगति करेहि ॥ नामु न पावहि बिनु असनेह ॥ सची भगति गुर सबद् पिआरि ॥ अपना पिरु राखिआ

सदा उरि धारि ॥२॥ भगति करहि मूरख आपु जणावहि ॥ नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ नचिऐ टपिऐ भगति न होइ ॥ सबदि मरै भगति पाइ जनु सोइ ॥३॥ भगति वछलु भगति कराइे सोइ ॥ सची भगति विचहु आपु खोइ ॥ मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै ॥ नानक बखसे नामु पछाणै ॥४॥४॥२४॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ बिनु मूइे कैसे हरि पाइ ॥ मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥ जिस नो बखसे दे वडिआई ॥ गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥ अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजे विकार ॥३॥ जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे ही जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥५॥२५॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥ धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥१॥ हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥ जगजीवनु सेवि जुग चारे जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ कृपा करे प्रभ करम बिधाता ॥२॥ से जन सचे जो गुर सबदि मिलाइे ॥ धावत वरजे ठाकि रहाइे ॥ नामु नव निधि गुर ते पाइे ॥ हरि किरपा ते हरि वसै मनि आइे ॥३॥ राम राम करतिआ सुखु साँति सरीर ॥ अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥ आपे साहिबु आपि वजीर ॥ नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥४॥६॥२६॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥ जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥१॥ हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ तिन तूं विसरहि जि तुधु

आपि भुलाइे ॥ तिन तूं विसरहि जि दूजै भाइे ॥ मनमुख अगिआनी जोनी पाइे ॥२॥ जिन इिक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाइे ॥ जिन इिक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाइे ॥ गुरमती हरि नामि समाइे ॥३॥ जिना पोतै पुन्नु से गिआन बीचारी ॥ जिना पोतै पुन्नु तिन हउमै मारी ॥ नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥७॥२७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥१॥ जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥२॥ गुरमुखि सेवा महली थाउ पाइे ॥ गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाइे ॥ गुरमुखि भगति हरि नामि समाइे ॥३॥ आपे दाति करे दातारु ॥ पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ४॥८॥२८॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ इेकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥ भिन्न भिन्न वेखै हरि प्रभु रंगा ॥१॥ इेकु अचरजु इेको है सोई ॥ गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥१॥ रहाउ ॥ सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ आपे सुतिआ देइि जगाई ॥२॥ तिस की कीमति किनै न होई ॥ कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥३॥ सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाइे ॥ वडी वडिआई गुर सेवा ते पाइे ॥ नानक नामि रते हरि नामि समाइे ॥४॥९॥२९॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनमुखि सूता माइिआ मोहि पिआरि ॥ गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥ १॥ सहजे जागै सवै न कोइि ॥ पूरे गुर ते बूझै जनु कोइि ॥१॥ रहाउ ॥ असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ कथनी करे तै माइिआ नालि लूझै ॥ अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥२॥ इिसु जुग महि राम नामि निसतारा ॥ विरला को पाइे गुर सबदि वीचारा ॥ आपि तरै सगले कुल उधारा ॥३॥

इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥ कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥ नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥४॥१०॥३०॥ गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ सचै महलि सचि नामि समाहु ॥१॥ सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥१॥ रहाउ ॥ भरमे आवै भरमे जाइ ॥ इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥२॥ आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥ इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥ किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥ एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥४॥११॥३१॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥ से धनवंत हरि नामु कमाइ ॥ पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥१॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥ जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥ सहजे सहजि समावै सोइ ॥२॥ दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥ हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ पुति कुटंबि गृहि मोहिआ माइ ॥ मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥३॥ हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥ गुरमति विरला बूझै कोइ ॥ नानक नामि समावै सोइ ॥४॥१२॥३२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर सेवा जुग चारे होई ॥ पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥ ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥१॥ ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ गुरमुखि सेवा अंमृत रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवहि से महापुरख संसारे ॥ आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ हरि का नामु रखहि उर धारे ॥ नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥२॥ सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ हउमै मारि कमलु परगासा ॥ अनहदु वाजै निज घरि वासा ॥ नामि रते घर माहि उदासा ॥३॥ सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥ अनदिनु

जपहि हरि सारंगपाणी ॥ नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥४॥१३॥३३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥ हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥१॥ गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥२॥ करम काँड बहु करहि अचार ॥ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥३॥ बंधनि बाधिए माइआ फास ॥ जन नानक छूटै गुर परगास ॥४॥१४॥३४॥ महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ जैसी धरती ऊपरिमेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥ जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥१॥ बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥ जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥१॥ रहाउ ॥ इसतरी पुरख होइ कै किआ एइ करम कमाही ॥ नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही माहि समाही ॥२॥ इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥३॥ तेरा सबदु तूंहै हहि आपे भरमु कहाही ॥ नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥४॥१॥१५॥३५॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ हउमै करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥१॥ मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लइे छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥ गुर का सबदु न चीनिए फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥३॥ मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥ जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥४॥२॥१६॥३६॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ पेवकड़ै गुण संमलै साहुरै वासु पाइआ ॥ गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥१॥ ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ आपि निरंजनु

अलखु है आपे मेलाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईऐ ॥ वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अंमृतु पाईऐ ॥ हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईऐ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥२॥ मनमुखि गरबि न पाइए अगिआन इआणे ॥ सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ मेरे करते इवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥३॥ मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥ हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥४॥३॥१७॥३७॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥ सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥१॥ हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥ हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥२॥ गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥३॥ सहजु अन्नदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥४॥४॥१८॥३८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पंडितु सासत सिमृति पड़िआ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥१॥ ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू

तारी ॥१॥ रहाउ ॥ संनिआसी बिभूत लाइि देह सवारी ॥ पर तृअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ मै मूरख हरि आस तुमारी ॥२॥ खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥ सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥ मै मूरख हरि नामु छडावै ॥३॥ सभ तेरी सृसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥ गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥४॥१॥३९॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ भजु मिलि साधू संगति जन की ॥ तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥१॥ गोबिंद सतसंगति मेलाइि ॥ हरि रसु रसना राम गुन गाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥ तिन दासनि दास करहु हम रामा ॥ जन की सेवा ऊतम कामा ॥२॥ जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥ जन पग रेणु वडभागी पावै ॥३॥ संत जना सिउ प्रीति बनि आई ॥ जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ ते जन नानक नामि समाई ॥४॥२॥४०॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ माता प्रीति करे पुतु खाइि ॥ मीने प्रीति भई जलि नाइि ॥ सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइि ॥१॥ ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥२॥ सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ नरपति प्रीति माइिआ देखि पसारा ॥ हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥३॥ नर प्राणी प्रीति माइिआ धनु खाटे ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥४॥३॥४१॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइि ॥ भूखे प्रीति होवै अन्नु खाइि ॥ गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइि ॥१॥ हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥२॥ बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइि ॥ हिरदै बिगसै देखै माइि ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइि ॥३॥ होरु सभ प्रीति माइिआ मोहु काचा ॥ बिनसि जाइि कूरा कचु पाचा ॥ जन नानक

प्रीति तृपति गुरु साचा ॥४॥४॥४२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ जितु मिलि हरि नामु धिआइिआ हरि धणी ॥ जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥१॥ गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइिआ ॥ धावत पंच रहे हरि धिआइिआ ॥ अनदिनु नगरी हरि गुण गाइिआ ॥२॥ सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥३॥ गुर सेवा आपि हरि भावै ॥ कृसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥४॥५॥४३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥ हरि आपे तपु तापै लाइि तारी ॥१॥ ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ हरि आपि जपाइि आपे हरि जापे ॥२॥ हरि आपे सारिंग अंमृतधारा ॥ हरि अंमृतु आपि पीआवणहारा ॥ हरि आपि करे आपे निसतारा ॥३॥ हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ हरि आपे नानक पावै पारा ॥४॥६॥४४॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइिआलु होइि देहि ॥१॥ हम वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥१॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइिआ ॥ हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइिआ ॥२॥ होरु वणजु करहि वापारीड़े अन्नत तरंगी दुखु माइिआ ॥ एड़ि जेहै वणजि हरि लाइिआ फलु तेहा तिन पाइिआ ॥३॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु कृपालु होइि प्रभु देई ॥ जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ वडा होइि धनु खाटि देइि करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा

दे आपि हथासा ॥१॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥१॥ रहाउ ॥ मंदरि घरि आन्नदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥२॥ जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥३॥ लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥४॥२॥८॥४६॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥१॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥१॥ रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥२॥ बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥३॥ इहु माइआ मोह कुटंबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥ जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥४॥३॥९॥४७॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कंमि हरि लाइआ ॥१॥ मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कंमि लाइ ॥ नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ धन्नु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥२॥ नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥ जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥३॥

जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ जिसु हरि आपि कृपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै ॥ जन नानक हरि रसि तृपतिआ फिरि भूख न लागै ॥४॥४॥१०॥४८॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥१॥ मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥१॥ रहाउ ॥ हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीए हरि नामु छडावै ॥२॥ तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥३॥ जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ धन्नु धन्नु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥४॥५॥११॥४९॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ हरि प्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥१॥ मेरे राम इह नीच करम हरि मेरे ॥ गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥ किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥ हम पापी संगि गुर उबरे पुन्नु सतिगुर केरा ॥२॥ सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥ अन्नु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ जिनि दीए सु चिति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥३॥ सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥ हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि

गुलम गुलामी ॥४॥६॥१२॥५०॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥ अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥१॥ मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥ धन्नु धन्नु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीइे सिआणे ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ एह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥२॥ जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥ कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥ तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥३॥ भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लइे छडाइआ ॥४॥७॥१३॥५१॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिसु मिलिऐ मनि होइ अन्नदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥१॥ मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ इछ पुन्नी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥२॥ हरि भगति दृड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥ तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति दृड़ीऐ ॥३॥ जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ नानक तिसु गुर मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥४॥८॥१४॥५२॥ महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ हरि दइिआलि दइिआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥ गुरमुखि रंगु भइिआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥१॥ अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥१॥ रहाउ ॥ करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥ हरि हरि रूपु सभ जोति

सबाई हरि निकटि वसै हरि कोली ॥२॥ हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरंपर पुरखु अतोली ॥ हरि हरि प्रगटु कीए गुरि पूरै सिरु वेचिए गुर पहि मोली ॥३॥ हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ जनु नानकु अनदिनु हरि गुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥४॥१॥१५॥ ५३॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ जगजीवन अपरंपर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते ॥ जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥१॥ राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥ सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥२॥ जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोख सरि नाते ॥ दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥३॥ राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥ जनु नानकु नामु लइे ताँ जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥४॥२॥१६॥५४॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ करहु कृपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेती राचे ॥ सतिगुरि बचनु दीए अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥१॥ राम मेरा मनु तनु बेधि लीए हरि साचे ॥ जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥ तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥२॥ तुम दइिआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥३॥ आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥ मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥४॥३॥१७॥५५ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ तुम दइिआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥ जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥१॥ राम हम सतिगुर पारब्रहम करि माने ॥ हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥१॥ रहाउ ॥ जितने रस अन रस

हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ हरि का नामु अंमृत रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥२॥ जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥ तिन के करमहीन धुरि पाइे देखि दीपकु मोहि पचाने ॥३॥ जिन कउ तुम दइिआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥४॥४॥१८॥५६॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऔ ॥ हरि आपे बखसि लइे प्रभु साचा हरि आपि छडाइे छुटीऔ ॥१॥ मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऔ ॥ सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऔ ॥१॥ रहाउ ॥ मेरे मन सेवहु सो प्रभ स्रब सुखदाता जितु सेविऔ निज घरि वसीऔ ॥ गुरमुखि जाइि लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऔ ॥२॥ मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऔ ॥ हरि हरि आपि दइिआ करि देवै ता अंमृतु हरि रसु चखीऔ ॥३॥ मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऔ ॥ ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऔ ॥४॥ मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऔ लेखा छुटीऔ ॥ जन नानक हरि प्रभि पूरे कीइे खिनु मासा तोलु न घटीऔ ॥५॥५॥१९॥५७॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ दइिआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥१॥ राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ गुर कृपालि कृपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइि प्रभु मेरी ॥१॥ रहाउ ॥ जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥२॥ गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइिआ हरि मिलिआ आइि प्रभु मेरी ॥ अनदिनु अनदु भइिआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥३॥ जगन्नाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ जन नानक सरणागति आइे हरि राखहु पैज जन केरी ॥४॥६॥२०॥५८॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इिहु

मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी दह दह दिसि चलि चलि हाढे ॥ गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥१॥ राम हम सतिगुर लाले काँढे ॥१॥ रहाउ ॥ हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥ परउपकारु पुन्नु बहु कीआ भउ दुतरु तारि पराढे ॥२॥ जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥३॥ हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥४॥७॥२१॥५९॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ करि साधू अंजुली पुन्नु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥८॥२२॥६०॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥१॥ राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥१॥ रहाउ ॥ हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥ जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥२॥ मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥३॥ हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥ जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥४॥९॥२३॥६१॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥१॥ राम

गुरमति हरि लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥ हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥२॥ अंधिआरै दीपक आनि जलाइे गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥ अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिए घरि वसतु लही मन जागे ॥३॥ साकत बधिक माइिआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥ उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ एइि आवहि जाहि अभागे ॥४॥ हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥ जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिए सतिगुर आगे ॥५॥१०॥२४॥६२॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हम अह्मकारी अह्मकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइिआ ॥ हउमै रोगु गइिआ सुखु पाइिआ धनु धन्नु गुरू हरि राइिआ ॥१॥ राम गुर कै बचनि हरि पाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै प्रीति राम राइि की गुरि मारगु पंथु बताइिआ ॥ मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुड़िआ हरि गलि लाइिआ ॥२॥ मेरै अंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइिआ ॥ सहज अनन्दु भइिआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइिआ ॥३॥ हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइिआ ॥ अब नानक सरणागति आइे हरि राखहु लाज हरि भाइिआ ॥४॥११॥२५॥६३॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइिआ धनु धन्नु गुरू लिव लावै ॥१॥ गुरमुखि हरि लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥ हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥२॥ हिरदै गुरमति राम रसाइिणु जिहवा हरि गुण गावै ॥ मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥३॥ कोई करै उपाव अनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु दृड़ावै ॥४॥१२॥२६॥६४॥ रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ गुरमुखि जिंदू जपि नामु करंमा ॥ मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥ संतोखु पिता

करि गुरु पुरखु अजनमा ॥ वडभागी मिलु रामा ॥१॥ गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥ गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु हरि रंगि भिन्ना ॥२॥ आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥ विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ करि सेवा संता अंमृतु मुखि पाहा जीउ ॥ मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥३॥ सावणि वरसु अंमृति जगु छाइआ जीउ ॥ मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥ हरि अंमृतु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ जन नानक प्रेमि रतन्ना ॥४॥१॥२७॥६५॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥ गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥ हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलीआ जीउ ॥१॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ मै मेले मित्रु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ मनु देवाँ संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥२॥ वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥३॥ हरि आपि उपाइे हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥ इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ इकि राजे तखति बहहि नित सुखीइे इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥ सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥४॥२॥२८॥६६॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥ हरि रंगु नालि न लखीअै मेरे गोविदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ ॥ हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥१॥ नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ मेरा मनु

तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥ संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी जीउ ॥ हरि आइि मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥२॥ मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ ॥ हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥ ३॥ वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का मेरे गोविदा हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥ सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ ॥ हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥४॥३॥ २९॥६७॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ हरि आपे कानु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥ १॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥ इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ ॥२॥ हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥ आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥ हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥३॥ हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाइे तिउ वाजै जीउ ॥ हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥ आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै

जीउ ॥ वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥४॥४॥३०॥६८॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥ मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥१॥ गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥ जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥ हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥२॥ किउ हरि प्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ गुर सबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ वडभागी जपि नाउ जीउ ॥३॥ मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥ सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥ जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥४॥५॥३१॥६९॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मेरा बिरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ मन अंदरि अंमृतु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥ मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥ हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥१॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ मेरा प्रीतमु मित्रु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥ गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥ हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥२॥ हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥ हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥ हरि नामे नामि समाई जीउ ॥३॥ मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ गुर सरधा पूरि अंमृतु मुखि पाई जीउ ॥ हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई जीउ ॥ जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥४॥६॥२०॥१८॥३२॥७०॥

महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥

कुसलु न गृहि मेरी सभ माइआ ॥ ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥ झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥

१॥ हसती घोड़े देखि विगासा ॥ लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥२॥ राजु कमावै दह दिस सारी ॥ माणै रंग भोग बहु नारी ॥ जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥३॥ ‍इेकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइिआ ॥ हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइिआ ॥ जन नानक हउमै मारि समाइिआ ॥४॥ इिनि बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ इिउ पाईअै हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ किउ भ्रमीअै भ्रमु किस का होई ॥ जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥ गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥१॥ जिसु राखै आपि रामु दइिआरा ॥ तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ सभ महि वरतै ‍इेकु अनता ॥ ता तूं सुखि सोउ होइि अचिंता ॥ ‍इेहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥२॥ मनमुख मुझे जिन दूजी पिआसा ॥ बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥ जैसा बीजहि तैसा खासा ॥३॥ देखि दरसु मनि भइिआ विगासा ॥ सभु नदरी आइिआ ब्रहमु परगासा ॥ जन नानक की हरि पूरन आसा ॥४॥२॥७१॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कई जनम भझे कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥ कई जनम पंखी सरप होइिए ॥ कई जनम हैवर बृख जोइिए ॥ १॥ मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरंकाल इिह देह संजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ कई जनम साख करि उपाइिआ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइिआ ॥२॥ साधसंगि भइिए जनमु परापति ॥ करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥ तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ जीवत मरहि दरगह परवानु ॥३॥ जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ ता मिलीअै जा लैहि मिलाइि ॥ कहु नानक हरि हरि गुण गाइि ॥४॥३॥७२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ करम भूमि महि बोअहु नामु ॥ पूरन होइि तुमारा कामु ॥ फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥१॥ हरि हरि नामु अंतरि उरि धारि ॥ सीघर कारजु लेहु सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ ता तूं दरगह पावहि

मानु ॥ उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ संत जना की चरणी लागु ॥२॥ सरब जीअ हहि जा कै हाथि ॥ कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ उपाव छोडि गहु तिस की एट ॥ निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥३॥ सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥ प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥४॥४॥७३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥१॥ जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ संत का कीआ सति करि मानि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर का बचनु अटल अछेद ॥ गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥२॥ गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥ गुर कै बचनि रसना अंमृतु रवै ॥३॥ गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ जिसु जन होइ आपि कृपाल ॥ नानक सतिगुर सदा दइआल ॥४॥५॥७४॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥१॥ रमईआ रेनु साध जन पावउ ॥ गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥ जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥ सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥२॥ जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥३॥ जिसु प्रसादि माइिआ सिलक काटी ॥ गुर प्रसादि अंमृतु बिखु खाटी ॥ कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ राखनहारे कउ सालाही ॥४॥६॥७५॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ दास अपने की राखनहार ॥१॥ जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥ घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥१॥ रहाउ ॥ तिस की टेक मनै महि

राखु ॥ गुर का सबदु अंमृत रसु चाखु ॥ अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ करि किरपा राखै आपि लाज ॥२॥ किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ झूठा माइिआ का सभु सोरु ॥ करण करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ सरब सुखा सुखु साचा इेहु ॥ गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ जा कउ राम नाम लिव लागी ॥ कहु नानक सो धन्नु वडभागी ॥४॥७॥७६॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ महा पुनीत भइे सुख सैलु ॥ वडै भागि पाइिआ साधसंगु ॥ पारब्रहम सिउ लागो रंगु ॥१॥ हरि हरि नामु जपत जनु तारिए ॥ अगनि सागरु गुरि पारि उतारिए ॥१॥ रहाउ ॥ करि कीरतनु मन सीतल भइे ॥ जनम जनम के किलविख गइे ॥ सरब निधान पेखे मन माहि ॥ अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥२॥ प्रभ अपुने जब भइे दइिआल ॥ पूरन होई सेवक घाल ॥ बंधन काटि कीइे अपने दास ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥३॥ इेको मनि इेको सभ ठाइि ॥ पूरन पूरि रहिए सभ जाइि ॥ गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइिआ ॥ हरि सिमरत नानक सुखु पाइिआ ॥४॥८॥७७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ अगले मुइे सि पाछै परे ॥ जो उबरे से बंधि लकु खरे ॥ जिह धंधे महि एइि लपटाइे ॥ उन ते दुगुण दिड़ी उन माइे ॥१॥ एह बेला कछु चीति न आवै ॥ बिनसि जाइि ताहू लपटावै ॥१॥ रहाउ ॥ आसा बंधी मूरख देह ॥ काम क्रोध लपटिए असनेह ॥ सिर ऊपरि ठाढो धरम राइि ॥ मीठी करि करि बिखिआ खाइि ॥२॥ हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥ हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥ हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥ करणैहारु न बुझै बिगाना ॥३॥ अपुनी गति मिति आपे जानै ॥ किआ को कहै किआ आखि वखानै ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ अपना भला सभ काहू मंगना ॥४॥ सभ किछु तेरा तूं करणैहारु ॥ अंतु नाही किछु पारावारु ॥ दास अपने कउ दीजै दानु ॥ कबहू न विसरै नानक नामु ॥५॥९॥७८॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ अनिक जतन नही होत छुटारा ॥ बहुतु सिआणप आगल भारा ॥ हरि की सेवा निरमल हेत ॥ प्रभ की दरगह

सोभा सेत ॥१॥ मन मेरे गहु हरि नाम का एला ॥ तुझै न लागै ताता झोला ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ बोहिथु भै सागर माहि ॥ अंधकार दीपक दीपाहि ॥ अगनि सीत का लाहसि दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥२॥ उतरि जाइ तेरे मन की पिआस ॥ पूरन होवै सगली आस ॥ डोलै नाही तुमरा चीतु ॥ अंमृत नामु जपि गुरमुखि मीत ॥३॥ नामु अउखधु सोई जनु पावै ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवावै ॥ हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥ दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥४॥१०॥७९॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥ अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥ पुत्र कलत्र उरझिए जानि मेरी ॥ एह बिनसै एहि भसमै ढेरी ॥१॥ बिनु हरि भजन देखउ बिललाते ॥ ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु माइआ संगि राते ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥ एहि खसमै कै गृहि उन दूख सहाम ॥ जिउ सुपनै होइ बैसत राजा ॥ नेत्र पसारै ता निरारथ काजा ॥२॥ जिउ राखा खेत ऊपरि पराइे ॥ खेतु खसम का राखा उठि जाइे ॥ उसु खेत कारणि राखा कड़ै ॥ तिस कै पालै कछू न पड़ै ॥३॥ जिस का राजु तिसै का सुपना ॥ जिनि माइआ दीनी तिनि लाई तृसना ॥ आपि बिनाहे आपि करे रासि ॥ नानक प्रभ आगै अरदासि ॥४॥११॥८०॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बहु रंग माइआ बहु बिधि पेखी ॥ कलम कागद सिआनप लेखी ॥ महर मलूक होइ देखिआ खान ॥ ता ते नाही मनु तृपतान ॥१॥ सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥ तृसना बूझै मनु तृपतावहु ॥१॥ रहाउ ॥ असु पवन हसति असवारी ॥ चोआ चंदनु सेज सुंदरि नारी ॥ नट नाटिक आखारे गाइिआ ॥ ता महि मनि संतोखु न पाइिआ ॥२॥ तखतु सभा मंडन दोलीचे ॥ सगल मेवे सुंदर बागीचे ॥ आखेड़ बिरति राजन की लीला ॥ मनु न सुहेला परपंचु हीला ॥३॥ करि किरपा संतन सचु कहिआ ॥ सरब सूख इहु आन्नदु लहिआ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥ जा कै हरि धनु सोई सुहेला ॥ प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥८१॥ गउड़ी गुआरेरी

महला ५ ॥ प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ होनु न पाईऐ राम के दासा ॥१॥ कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ कवन सु मति जितु तरै इह माहि ॥१॥ रहाउ ॥ जो भलाई सो बुरा जानै ॥ साचु कहै सो बिखै समानै ॥ जाणै नाही जीत अरु हार ॥ इहु वलेवा साकत संसार ॥२॥ जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ अंमृतु नामु जानै करि कउरा ॥ साधसंग कै नाही नेरि ॥ लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥३॥ एकै जालि फहाए पंखी ॥ रसि रसि भोग करहि बहु रंगी ॥ कहु नानक जिसु भए कृपाल ॥ गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥४॥१३॥८२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥ तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥ तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ हम ते कछू न होवै देव ॥१॥ रहाउ ॥ तुधु भावै ता गावा बाणी ॥ तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥२॥ जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥ जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥ तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥३॥ मनु तनु निरमलु होइ हरि रंगि ॥ सरब सुखा पावउ सतसंगि ॥ नामि तेरै रहै मनु राता ॥ इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥४॥१४॥८३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ आन रसा जेते तै चाखे ॥ निमख न तृसना तेरी लाथे ॥ हरि रस का तूं चाखहि सादु ॥ चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥१॥ अंमृतु रसना पीउ पिआरी ॥ इह रस राती होइ तृपतारी ॥१॥ रहाउ ॥ हे जिहवे तूं राम गुण गाउ ॥ निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥ साधसंगति वडभागी पाईऐ ॥२॥ आठ पहर जिहवे आराधि ॥ पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥ ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ हरि गुण गावत रसन अमोली ॥३॥ बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ आन न रस कस लवै न लाई ॥ कहु नानक गुर भए है सहाई ॥४॥१५॥८४॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ मनु मंदरु तनु साजी बारि ॥

इिस ही मधे बसतु अपार ॥ इिस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥१॥ नाम रतन को को बिउहारी ॥ अंमृत भोजनु करे आहारी ॥१॥ रहाउ ॥ मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ पाइि लगउ तजि मेरा तेरै ॥ कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥२॥ महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले संचारे ॥३॥ खोजत खोजत निज घरु पाइिआ ॥ अमोल रतनु साचु दिखलाइिआ ॥ करि किरपा जब मेले साहि ॥ कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥४॥१६॥८५॥ गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ रैणि दिनसु रहै इिक रंगा ॥ प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ ठाकुर नामु कीए उनि वरतनि ॥ तृपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥१॥ हरि संगि राते मन तन हरे ॥ गुर पूरे की सरनी परे ॥१॥ रहाउ ॥ चरण कमल आतम आधार ॥ इेकु निहारहि आगिआकार ॥ इेको बनजु इेको बिउहारी ॥ अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥२॥ हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ पारब्रहम का एिड़ धिआनु धरते ॥३॥ संतन की महिमा कवन वखानउ ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥ धूरि संतन की नानक दीजै ॥४॥१७॥८६॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥१॥ तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥२॥ तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ तूं मेरी एिट तूं है मेरा तकीआ ॥३॥ मन तन अंतरि तुही धिआइिआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइिआ ॥ सतिगुर ते दृड़िआ इिकु इेकै ॥ नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥४॥१८॥८७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥

बिआपत हरख सोग बिसथार ॥ बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥ मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥१॥ माइिआ बिआपत बहु परकारी ॥ संत जीवहि प्रभ एट तुमारी ॥१ ॥ रहाउ ॥ बिआपत अह्मबुधि का माता ॥ बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥ बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥२॥ बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥ बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥ बिआपत सेज महल सीगार ॥ पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥३॥ बिआपत करम करै हउ फासा ॥ बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ आचार बिउहार बिआपत इिह जाति ॥ सभ किछु बिआपत बिनु हरि रंग रात ॥४॥ संतन के बंधन काटे हरि राइि ॥ ता कउ कहा बिआपै माइि ॥ कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥ ता कै निकटि न आवै माई ॥५॥१६॥८८॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ नैनहु नीद पर दृसटि विकार ॥ स्रवण सोइे सुणि निंद वीचार ॥ रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ मनु सोइिआ माइिआ बिसमादि ॥१॥ इिसु गृह महि कोई जागतु रहै ॥ साबतु वसतु एहु अपनी लहै ॥१॥ रहाउ ॥ सगल सहेली अपनै रस माती ॥ गृह अपुने की खबरि न जाती ॥ मुसनहार पंच बटवारे ॥ सूने नगरि परे ठगहारे ॥२॥ उन ते राखै बापु न माई ॥ उन ते राखै मीतु न भाई ॥ दरबि सिआणप ना एिइ रहते ॥ साधसंगि एिइ दुसट वसि होते ॥३॥ करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥ संतन धूरि सरब निधान ॥ साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥ नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥४॥ सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥ इिह पूंजी साबतु धनु मालु ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२०॥८९॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जा कै वसि खान सुलतान ॥ जा कै वसि है सगल जहान ॥ जा का कीआ सभु किछु होइि ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइि ॥१॥ कहु बेन्नती अपुने सतिगुर पाहि ॥ काज तुमारे देइि निबाहि ॥१॥ रहाउ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ सरब बिआपित पूरन धनी ॥ जा की सोभा घटि घटि बनी ॥२॥ जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ जिसु सिमरत

होत सूके हरे ॥ जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥ संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥४॥२१॥९०॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ अंमृत बाणी गुरमुखि बोलै ॥१॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥१॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥२॥ संत कृपा ते मिटे मोह भरम ॥ साध रेण मजन सभि धरम ॥ साध कृपाल दइआल गोविंदु ॥ साधा महि इह हमरी जिंदु ॥३॥ किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ साधसंगि नानक नामु लइआ ॥४॥२२॥९१॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ साधसंगि जपिए भगवंतु ॥ केवल नामु दीए गुरि मंतु ॥ तजि अभिमान भइे निरवैर ॥ आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥१॥ अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥१॥ रहाउ ॥ सहज सूख आन्नद निधान ॥ राखनहार रखि लेइ निदान ॥ दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ आवण जाण रखे करि करम ॥२॥ पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ संत प्रसादि भइए परगासु ॥ पूरि रहे इेकै गुणतासु ॥३॥ कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥ कहु नानक जा कउ होहु कृपाल ॥ तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥४॥२३॥९२॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ मन महि लागै साचु धिआनु ॥ मिटहि कलेस सुखी होइि रहीऐ ॥ ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥१॥ सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥ १॥ रहाउ ॥ जिसु होइि दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ सरब निधान गुरू ते पावै ॥ आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥२॥ जन ऊपरि प्रभ भइे दइआल ॥

जन की टेक इेक गोपाल ॥ इेका लिव इेको मनि भाउ ॥ सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥३॥ पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥ निरमल करणी साची रीति ॥ गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ नानक का प्रभु अपर अपारा ॥४॥२४॥९३॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिसु मनि वसै तरै जनु सोइि ॥ जा कै करमि परापति होइि ॥ दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ अंमृत नामु रिदै हरि जापै ॥१॥ पारब्रहमु परमेसुरु धिआईअै ॥ गुर पूरे ते इिह मति पाईअै ॥१॥ रहाउ ॥ करण करावनहार दइिआल ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥२॥ जा की सेवा सरब निधानु ॥ प्रभ की पूजा पाईअै मानु ॥ जा की टहल न बिरथी जाइि ॥ सदा सदा हरि के गुण गाइि ॥ ३॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई ॥४॥२५॥९४॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ प्रभ चिति आइे सभु दुखु जाइि ॥ भै सभ बिनसहि हरि कै नाइि ॥१॥ बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ जा की जोति जीअ परगास ॥ जा की बखस न मेटै कोइि ॥ सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइि ॥२॥ आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ अनिक तीरथ मजनु इिसनानु ॥ पारब्रहम की सरणी पाहि ॥ कोटि कलम्क खिन महि मिटि जाहि ॥३॥ बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥ नानक पारब्रहम समराथ ॥४॥२६॥९५॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ जनम जनम का सोइिआ जागा ॥ अंमृत गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ पूरे गुर की सुमति पराणी ॥१॥ प्रभ सिमरत कुसल सभि पाइे ॥ घरि बाहरि सुख सहज सबाइे ॥१॥ रहाउ ॥ सोई पछाता जिनहि उपाइिआ ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइिआ ॥ बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥२॥ मंत्र तंत्र अउखधु पुनहचारु ॥

हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ साचा धनु पाइिए हरि रंगि ॥ दुतरु तरे साध कै संगि ॥३॥ सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ हरि धनु खटिए जा का नाहि सुमारु ॥ जिसहि परापति तिसु गुरु देइि ॥ नानक बिरथा कोइि न हेइि ॥४॥२७॥९६॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हसत पुनीत होहि ततकाल ॥ बिनसि जाहि माइिआ जंजाल ॥ रसना रमहु राम गुण नीत ॥ सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥१॥ लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ राम नाम हरि अंमृत बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ इिह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ सिमरत राम नाही जम मार ॥ धरम राइि के दूत न जोहै ॥ माइिआ मगन न कछूअै मोहै ॥२॥ उधरहि आपि तरै संसारु ॥ राम नाम जपि इेकंकारु ॥ आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥ राम नाम हिरदै परवेस ॥३॥ जा कै माथै इेहु निधानु ॥ सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥४॥२८॥९७॥

राग़ु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो पराइिए सोई अपना ॥ जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥१॥ कहहु गुसाई मिलीअै केह ॥ जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥१॥ रहाउ ॥ झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ सति होवनु मनि लगै न राती ॥२॥ बावै मारगु टेढा चलना ॥ सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥३॥ दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥४॥२९॥९८॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कलिजुग महि मिलि आइे संजोग ॥ जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥१॥ जलै न पाईअै राम सनेही ॥ किरति संजोगि सती उठि होई ॥१॥ रहाउ ॥ देखा देखी मनहठि जलि जाईअै ॥ प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईअै ॥२॥ सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥ तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥३॥ कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥ धन्नु सती दरगह परवानिआ ॥४॥३०॥९९॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हम धनवंत भागठ सच नाइि ॥ हरि गुण गावह

सहजि सुभाइि ॥१॥ रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइिआ निधाना ॥१॥ रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥ खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि न आवै वधदो जाई ॥३॥ कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइि ॥ सु इेतु खजानै लइिआ रलाइि ॥४॥३१॥१००॥ गउड़ी महला ५ ॥ डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥ डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥ १॥ सतिगुर अपुने कउ बलिहारै ॥ छोडि न जाई सरपर तारै ॥१॥ रहाउ ॥ दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ सदा अन्नदु जा हरि गुण गामु ॥२॥ बुरा भला कोई न कहीजै ॥ छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥३॥ कहु नानक गुर मंत्रु चितारि ॥ सुखु पावहि साचै दरबारि ॥४॥३२॥१०१॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥१॥ जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ रसु हरि रसु है आइिए ॥ सो अन रस नाही लपटाइिए ॥२॥ जा का कहिआ दरगह चलै ॥ सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥३॥ जा का सभु किछु ता का होइि ॥ नानक ता कउ सदा सुखु होइि ॥४॥३३॥१०२॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥१॥ सहज अन्नद हरि साधू माहि ॥ आगिआकारी हरि हरि राइि ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै अचिंतु वसै मनि आइि ॥ ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥२॥ जा कै बिनसिए मन ते भरमा ॥ ता कै कछू नाही डरु जमा ॥३॥ जा कै हिरदै दीए गुरि नामा ॥ कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥४॥३४॥१०३॥ गउड़ी महला ५ ॥ अगम रूप का मन महि थाना ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाना ॥१॥ सहज कथा के अंमृत कुंटा ॥ जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥१॥ रहाउ ॥ अनहत बाणी थानु निराला ॥ ता की धुनि मोहे गोपाला ॥२॥ तह सहज अखारे अनेक अन्नता ॥ पारब्रहम के संगी संता ॥३॥ हरख अन्नत सोग नही बीआ ॥ सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥ ४॥३५॥१०४॥ गउड़ी मः ५ ॥ कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ कवन जोग काइिआ ले साधउ ॥१॥

कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ कवन सु पूजा तेरी करउ ॥ कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥२॥ कवन तपु जितु तपीआ होइ ॥ कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥३॥ गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइिआल ॥४॥ तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥ जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३६॥१०५॥ गउड़ी महला ५ ॥ आपन तनु नही जा को गरबा ॥ राज मिलख नही आपन दरबा ॥१॥ आपन नही का कउ लपटाइए ॥ आपन नामु सतिगुर ते पाइए ॥१॥ रहाउ ॥ सुत बनिता आपन नही भाई ॥ इसट मीत आप बापु न माई ॥२॥ सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ हैवर गैवर आपन नही काम ॥३॥ कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥४॥३७॥१०६॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥१॥ सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥ आतम चीनि परम रंग मानी ॥१॥ रहाउ ॥ चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ अह्मबुधि तिनि सगल तिआगी ॥२॥ गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥ पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥३॥ गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥४॥३८॥१०७॥ गउड़ी महला ५ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥ जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥१॥ हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥१॥ रहाउ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥२॥ तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥ आदि जुगादि जा का भरवासा ॥३॥ जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥४॥३९॥१०८॥ गउड़ी महला ५ ॥ मीतु करै सोई हम माना ॥ मीत के करतब कुसल समाना ॥१॥ इेका टेक मेरै मनि चीत ॥ जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥१॥ रहाउ ॥ मीतु हमारा वेपरवाहा ॥ गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥२॥ मीतु हमारा अंतरजामी ॥ समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी ॥३॥ हम दासे तुम

ठाकुर मेरे ॥ मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥४॥४०॥१०६॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ तुम भइे समरथ अंगा ॥ ता कउ कछु नाही कालंगा ॥१॥ माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ ता कउ कछु नाही संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥ ता कउ सहसा नाही कोइ ॥२॥ जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ ता कै निकटि न आवै पीर ॥३॥ कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥ पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥४॥४१॥११०॥ गउड़ी महला ५ ॥ दुलभ देह पाई वडभागी ॥ नामु न जपहि ते आतम घाती ॥१॥ मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ नाम बिहून जीवन कउन काम ॥१॥ रहाउ ॥ खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ कवन अरथ मिरतक सीगार ॥२॥ जो न सुनहि जसु परमानन्दा ॥ पसु पंखी तृगद जोनि ते मंदा ॥३॥ कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥ केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥४॥४२॥१११॥ गउड़ी महला ५ ॥ का की माई का को बाप ॥ नाम धारीक झूठे सभि साक ॥१॥ काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ इेका माटी इेका जोति ॥ इेको पवनु कहा कउनु रोति ॥२॥ मेरा मेरा करि बिललाही ॥ मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥३॥ कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ मुकतु भइे बिनसे भ्रम थाट ॥४॥४३॥११२॥ गउड़ी महला ५ ॥ वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥१॥ कउन वडा माइआ वडिआई ॥ सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ छोडि चलै तृसना नही बुझै ॥२॥ कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥३॥४४॥ ११३॥ गउड़ी महला ५ ॥ पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥ सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥१॥ पूरी रही जा पूरै राखी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥१॥ रहाउ ॥ पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥२॥ हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥३॥ करणहारु सद वसै हदूरा ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥४॥४५॥११४॥ गउड़ी महला ५ ॥ संत की धूरि

मिटे अघ कोट ॥ संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥१॥ संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ संत कृपा ते जपीऐ नामु ॥१॥ रहाउ ॥ संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥ दृसटि आवै सभु इेकंकारु ॥२॥ संत सुप्रसन्न आइे वसि पंचा ॥ अंमृतु नामु रिदै लै संचा ॥३॥ कहु नानक जा का पूरा करम ॥ तिसु भेटे साधू के चरन ॥४॥४६॥११५॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥ हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥१॥ सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥ वडै भागि साधू संगु पावै ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि पाईऐ निधि नामा ॥ साधसंगि पूरन सभि कामा ॥२॥ हरि की भगति जनमु परवाणु ॥ गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥३॥ कहु नानक सो जनु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥४॥४७॥११६॥ गउड़ी महला ५ ॥ इेकसु सिउ जा का मनु राता ॥ विसरी तिसै पराई ताता ॥१॥ बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ करन करावन करता सोई ॥१॥ रहाउ ॥ मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इित उत कतहि न डोलै ॥२॥ जा कै हरि धनु सो सच साहु ॥ गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥३॥ जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइिआ ॥ कहु नानक परम पदु पाइिआ ॥४॥४८॥११७॥ गउड़ी महला ५ ॥ नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ नामो धनु नामो बिउहारु ॥१॥ नाम वडाई जनु सोभा पाइे ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाइे ॥१॥ रहाउ ॥ नामु भगत कै सुख असथानु ॥ नाम रतु सो भगतु परवानु ॥२॥ हरि का नामु जन कउ धारै ॥ सासि सासि जनु नामु समारै ॥३॥ कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ नाम संगि ता का मनु लागु ॥४॥४६॥११८॥ गउड़ी महला ५ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइिआ ॥ तब ते धावतु मनु तृपताइिआ ॥१॥ सुख बिस्रामु पाइिआ गुण गाइि ॥ स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइि ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल अराधि भगवंता ॥ हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥२॥ सभ तजि अनाथु इेक सरणि आइिए ॥ ऊच असथानु तब सहजे पाइिए ॥३॥ दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ करणहारु नानक मनि बसिआ ॥४॥५०॥११६॥ गउड़ी महला ५ ॥ कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥

चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥१॥ भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥२॥ सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥ जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥३॥ चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ दुलभ देह नानक निसतारि ॥४॥५१॥१२०॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ सो जनु रसना नामु उचारै ॥१॥ हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥१॥ रहाउ ॥ हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥२॥ हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥३॥ मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥४॥५२॥१२१॥ गउड़ी महला ५ ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ गुर पूरे की टेक टिकाई ॥१॥ दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का नामु दीए गुरि मंत्रु ॥ मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥२॥ अनद भए गुर मिलत कृपाल ॥ करि किरपा काटे जम जाल ॥३॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥४॥५३॥१२२॥ गउड़ी महला ५ ॥ राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ मनमुख कउ लागो संतापु ॥१॥ गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥१॥ रहाउ ॥ गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥२॥ गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई ॥३॥ गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरी पूरी परी ॥४॥५४॥१२३॥ गउड़ी महला ५ ॥ अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥ मोह की जेवरी बाधिए चोर ॥१॥ मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ आवत जात जोनी दुख खीना ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥ जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥२॥ सगल सरीर आवत सभ काम ॥ निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥३॥ कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥४॥५५॥१२४॥ गउड़ी महला ५ ॥

कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥ आवण जाण रहे सुख सारे ॥१॥ भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥ अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥२॥ बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जिसु भेटत गति भई हमारी ॥४॥५६॥१२५॥ गउड़ी महला ५ ॥ साधसंगि ता की सरनी परहु ॥ मनु तनु अपना आगै धरहु ॥१॥ अंमृत नामु पीवहु मेरे भाई ॥ सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥ हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥२॥ सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ सो धनु संचहु जो चालै नाले ॥३॥ तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥ कहु नानक ता की चरणी लागु ॥४॥५७॥१२६॥ गउड़ी महला ५ ॥ सूके हरे कीए खिन माहे ॥ अंमृत दृसटि संचि जीवाए ॥१॥ काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥ करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥२॥ दुख नाठे सुख आइ समाए ॥ ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥३॥ इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ नानक ते जन सुफल फले ॥४॥५८॥१२७॥ गउड़ी महला ५ ॥ ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥१॥ प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ जनम जनम के बिछुरे मेले ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥२॥ सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥ आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥३॥ दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥४॥५९॥१२८॥ गउड़ी महला ५ ॥ भले दिनस भले संजोग ॥ जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥१॥ एह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥ जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ सफल मूरतु सफल एह घरी ॥ जितु रसना उचरै हरि हरी ॥२॥ सफलु एहु माथा संत नमसकारसि ॥ चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥३॥ कहु नानक भला मेरा करम ॥ जितु भेटे साधू के चरन ॥४॥६०॥१२९॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥१॥ बिनु भगवंत नाही अन कोइि ॥ मारै राखै ड़ेको सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥ अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥२॥ गुर मूरति सिउ लाइि धिआनु ॥ ईहा ऊहा पावहि मानु ॥३॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइिआ ॥ मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइिआ ॥४॥६१॥१३०॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिसु सिमरत दूखु सभु जाइि ॥ नामु रतनु वसै मनि आइि ॥१॥ जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥ साधू जन रामु रसन वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ इिकसु बिनु नाही दूजा कोइि ॥ जा की दृसटि सदा सुखु होइि ॥२॥ साजनु मीतु सखा करि ड़ेकु ॥ हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥३॥ रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥ गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥४॥६२॥१३१॥ गउड़ी महला ५ ॥ भै महि रचिए सभु संसारा ॥ तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥१॥ भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ जो तुधु भावै सोई करणा ॥१॥ रहाउ ॥ सोग हरख महि आवण जाणा ॥ तिनि सुखु पाइिआ जो प्रभ भाणा ॥२॥ अगनि सागरु महा विआपै माइिआ ॥ से सीतल जिन सतिगुरु पाइिआ ॥३॥ राखि लेइि प्रभु राखनहारा ॥ कहु नानक किआ जंत विचारा ॥४॥६३॥१३२॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुमरी कृपा ते जपीऐ नाउ ॥ तुमरी कृपा ते दरगह थाउ ॥१॥ तुझ बिनु पारब्रहम नही कोइि ॥ तुमरी कृपा ते सदा सुखु होइि ॥ १॥ रहाउ ॥ तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥ तुमरी कृपा ते भ्रमु भउ भागै ॥२॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ नानक नामु मिलै सचु रासि ॥४॥६४॥१३३॥ गउड़ी महला ५ ॥ कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ नाम बिहून सूने से मुखा ॥१॥ हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥ नाम बिहून ध्रिगु देह बिगानी ॥१॥ रहाउ ॥ नाम बिना नाही मुखि भागु ॥ भरत बिहून कहा सोहागु ॥२॥ नामु बिसारि लगै अन सुआइि ॥ ता की आस न पूजै काइि ॥३॥ करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ नानक नामु जपै

दिन राति ॥४॥६५॥१३४॥ गउड़ी महला ५ ॥ तूं समरथु तूंहै मेरा सुआमी ॥ सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥१॥ पारब्रहम पूरन जन एट ॥ तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥१॥ रहाउ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ तुमरी कृपा ते सूख घनेरे ॥२॥ जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥३॥ करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ नानक सिमरै नामु निधानु ॥४॥६६॥१३५॥ गउड़ी महला ५ ॥ ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ जा की राम नामि लिव लागी ॥१॥ जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥१॥ रहाउ ॥ सरब निधान राखे जन माहि ॥ ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥२॥ जन की महिमा कथी न जाइ ॥ पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥३॥ करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥४॥६७॥१३६॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥१॥ भजु मन मेरे इेको नाम ॥ जीअ तेरे कै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ रैणि दिनसु गुण गाउ अन्नता ॥ गुर पूरे का निरमल मंता ॥२॥ छोडि उपाव इेक टेक राखु ॥ महा पदारथु अंमृत रसु चाखु ॥३॥ बिखम सागरु तेई जन तरे ॥ नानक जा कउ नदरि करे ॥४॥६८॥१३७॥ गउड़ी महला ५ ॥ हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥१॥ गोविंद गुण गावहु मेरे भाई ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ दुलभ देह होई परवानु ॥ सतिगुर ते पाइिआ नाम नीसानु ॥२॥ हरि सिमरत पूरन पदु पाइिआ ॥ साधसंगि भै भरम मिटाइिआ ॥३॥ जत कत देखउ तत रहिआ समाइि ॥ नानक दास हरि की सरणाइि ॥४॥६९॥१३८॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥१॥ पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥ करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल हिरदै उर धारी ॥ मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥२॥ सफल जनमु होवै परवाणु ॥ गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥३॥ संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ नानक गुर

भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥४॥७०॥१३९॥ गउड़ी महला ५ ॥ करै दुहकरम दिखावै होरु ॥ राम की दरगह बाधा चोरु ॥१॥ रामु रमै सोई रामाणा ॥ जलि थलि महीअलि इेकु समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि बिखु मुखि अंमृतु सुणावै ॥ जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥२॥ अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ खिन महि प्रगट होहि संसार ॥३॥ अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥४॥७१॥१४०॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रंगु कदे उतरि न जाइि ॥ गुरु पूरा जिसु देइि बुझाइि ॥१॥ हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ रहाउ ॥ संतह संगि बैसि गुन गाइि ॥ ता का रंगु न उतरै जाइि ॥२॥ बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइिआ ॥ आन रंग फीके सभ माइिआ ॥३॥ गुरि रंगे से भइे निहाल ॥ कहु नानक गुर भइे है दइिआल ॥४॥७२॥१४१॥ गउड़ी महला ५ ॥ सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ सूख सहज आन्नद निवासे ॥१॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिए अंदेसा ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥२॥ करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ चरण कमल की दीनी एट ॥३॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥४॥७३॥ १४२॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥१॥ हरि धन को वापारी पूरा ॥ जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ भइे कृपाल गुसाई ॥ से जन लागे गुर की पाई ॥२॥ सूख सहज साँति आन्नदा ॥ जपि जपि जीवे परमान्नदा ॥३॥ नाम रासि साध संगि खाटी ॥ कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥४॥७४॥१४३॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥ चरण कमल मन महि परवेस ॥१॥ उचरहु राम नामु लख बारी ॥ अंमृत रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥१॥ रहाउ ॥ सूख सहज रस महा अन्नदा ॥ जपि जपि जीवे परमान्नदा ॥२॥ काम क्रोध लोभ मद खोइे ॥ साध कै संगि किलबिख सभ धोइे ॥३॥ करि किरपा प्रभ दीन दइिआला ॥ नानक दीजै

साध रवाला ॥४॥७५॥१४४॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिस का दीआ पैनै खाइ ॥ तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥१॥ खसमु बिसारि आन कंमि लागहि ॥ कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥ दासि सलामु करत कत सोभा ॥२॥ अंमृत रसु खावहि खान पान ॥ जिनि दीइे तिसहि न जानहि सुआन ॥३॥ कहु नानक हम लूण हरामी ॥ बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ॥४॥७६॥१४५॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥ सगल तीरथ मजन इसनानु ॥१॥ हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ मन बाँछत सगले फल पाई ॥२॥ जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥३॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ जिना परापति साधू धूरे ॥४॥७७॥१४६॥ गउड़ी महला ५ ॥ खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥ तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥१॥ तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥१॥ रहाउ ॥ साकत की अैसी है रीति ॥ जो किछु करै सगल बिपरीति ॥२॥ जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥ सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥३॥ बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ नानक उधरु कृपा सुख सागर ॥४॥ पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥ बंधन काटि तरै हरि नाइ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७८॥१४७॥ गउड़ी महला ५ ॥ अपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥ सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥१॥ अैसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ अपुनै सुआइ रिदै लै धारिआ ॥ दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥२॥ रसना गीधी बोलत राम ॥ पूरन होइे सगले काम ॥३॥ अनिक बार नानक बलिहारा ॥ सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥४॥७९॥१४८॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥१॥ पीवत राम रसु अंमृत गुण जासु ॥ जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥१॥ रहाउ ॥ सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥ जा कै रिदै वसहि भगवान

॥२॥ अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ करणैहारु रिदे महि धारु ॥३॥ तजि सभि भरम भजिए पारब्रहमु ॥ कहु नानक अटल इहु धरमु ॥४॥८०॥१४९॥ गउड़ी महला ५ ॥ करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥१॥ राम रमण तरण भै सागर ॥ सरणि सूर फारे जम कागर ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मंत्रु दीए हरि नाम ॥ इह आसर पूरन भए काम ॥२॥ जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥३॥ मान मोह खोए गुरि भरम ॥ पेखु नानक पसरे पारब्रहम ॥४॥८१॥१५०॥ गउड़ी महला ५ ॥ बिखै राज ते अंधुला भारी ॥ दुखि लागै राम नामु चितारी ॥१॥ तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥१॥ रहाउ ॥ रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥२॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ आन सुखा नही आवहि चीति ॥३॥ सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥४॥८२॥१५१॥ गउड़ी महला ५ ॥ आठ पहर संगी बटवारे ॥ करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥१॥ ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ सरब कला पूरन प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ महा तपति सागर संसार ॥ प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥२॥ अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥ सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥३॥ उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥ करि किरपा नानक गुण गाहि ॥४॥८३॥१५२॥ गउड़ी महला ५ ॥ थाती पाई हरि को नाम ॥ बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥१॥ वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥ पारब्रहम तूं देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥ भव सागरु चड़ि उतरहि पारि ॥२॥ साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥३॥ प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥ नानक दरगह पाईऐ मानु ॥४॥८४॥१५३॥ गउड़ी महला ५ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥१॥ ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥१॥ रहाउ ॥ चरण

कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ सगल दूख का होइआ नासु ॥२॥ आसा माणु ताणु धनु इेक ॥ साचे साह की मन महि टेक ॥३॥ महा गरीब जन साध अनाथ ॥ नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥४॥८५॥१५४॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुन्न फल मूचे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ जनम जनम के किलविख नसे ॥१॥ साधसंगि कीरतन फलु पाइिआ ॥ जम का मारगु दृसटि न आइिआ ॥२॥ मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥ ता ते छुटिए बिखु संसारु ॥३॥ करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥४॥८६॥१५५॥ गउड़ी महला ५ ॥ पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥१॥ भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥ डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै रिदै बसिए हरि नाम ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥२॥ जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥३॥ मीतु साजनु सखा प्रभु इेक ॥ नामु सुआमी का नानक टेक ॥४॥८७॥१५६॥ गउड़ी महला ५ ॥ बाहरि राखिए रिदै समालि ॥ घरि आइे गोविंदु लै नालि ॥१॥ हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ मनु तनु राता राम कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥२॥ सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ पूरे गुर का निरमल मंतु ॥३॥ चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥८८॥१५७॥ गउड़ी महला ५ ॥ धन्नु इिहु थानु गोविंद गुण गाइे ॥ कुसल खेम प्रभि आपि बसाइे ॥१॥ रहाउ ॥ बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि अन्नद जह हरि गुन गाही ॥१॥ हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥२॥ सो वडभागी निहचल थानु ॥ जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥३॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥ नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥४॥८९॥१५८॥ गउड़ी महला ५ ॥ जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥ पड़िआ अणपड़िआ परम गति पावै ॥१॥ साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥१॥ रहाउ ॥

रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥ जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥२॥ जग महि आइिआ सो परवाणु ॥ घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥३॥ कहु नानक जा के पूरन भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग ॥४॥९०॥१५९॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ एहु बिखई एसु राम को रंगु ॥१॥ रहाउ ॥ मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥१॥ बैल कउ नेत्रा पाइि दुहावै ॥ गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥२॥ गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥३॥ नानक राम नामु जपि चीत ॥ सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥४॥९१॥१६०॥ गउड़ी महला ५ ॥ सा मति निरमल कहीअत धीर ॥ राम रसाइिणु पीवत बीर ॥१॥ हरि के चरण हिरदै करि एट ॥ जनम मरण ते होवत छोट ॥१॥ रहाउ ॥ सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ राम रंगि निरमल परतापु ॥२॥ साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ सभ ते ऊच इेहो उपकार ॥३॥ प्रेम भगति राते गोपाल ॥ नानक जाचै साध रवाल ॥४॥९२॥१६१॥ गउड़ी महला ५ ॥ अैसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ मेलि लइे पूरन वडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥१॥ पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ एति पोति जनु हरि सिउ राता ॥२॥ लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥३॥ बिसरु नही इिकु तिलु दातार ॥ नानक के प्रभ प्रान अधार ॥४॥९३॥१६२॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रसाइिणि जो जन गीधे ॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥१॥ रहाउ ॥ आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ नाम बिना निहफल संसार ॥१॥ अंध कूप ते काढे आपि ॥ गुण गोविंद अचरज परताप ॥२॥ वणि तृणि तृभवणि पूरन गोपाल ॥ ब्रहम पसारु जीअ संगि दइिआल ॥३॥ कहु नानक सा कथनी सारु ॥ मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥४॥९४॥१६३॥ गउड़ी महला ५ ॥ नितप्रति नावणु राम सरि कीजै ॥ झोलि महा रसु हरि अंमृतु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ निरमल उदकु गोविंद का नाम ॥ मजनु करत पूरन

सभि काम ॥१॥ संतसंगि तह गोसटि होइ ॥ कोटि जनम के किलविख खोइ ॥२॥ सिमरहि साध करहि आन्नदु ॥ मनि तनि रविआ परमान्नदु ॥३॥ जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥ नानक दास तिसहि कुरबान ॥४॥९५॥१६४॥ गउड़ी महला ५ ॥ सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ हरि कीरतन महि इहु मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ इको सिमरि न दूजा भाउ ॥ संतसंगि जपि केवल नाउ ॥१॥ करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥ पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥२॥ ता की पूरन होई घाल ॥ जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥३॥ सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥४॥९६॥१६५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवत छाडि जाहि देवाने ॥ मुइआ उन ते को वरसाँने ॥१॥ सिमरि गोविंदु मनि तनि धुरि लिखिआ ॥ काहू काज न आवत बिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई ॥ ता की तृसना कबहूं न जाई ॥२॥ दारन दुख दुतर संसारु ॥ राम नाम बिनु कैसे उतरसि पारि ॥३॥ साधसंगि मिलि दुइ कुल साधि ॥ राम नाम नानक आराधि ॥४॥९७॥१६६॥ गउड़ी महला ५ ॥ गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१॥ पूरा निआउ करे करतारु ॥ अपुने दास कउ राखनहारु ॥१॥ रहाउ ॥ आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥ निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥२॥ तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ आगै पाछै मंदी सोइ ॥३॥ अपुने दास राखै कंठि लाइ ॥ सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥४॥९८॥१६७॥ गउड़ी महला ५ ॥ महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥ पापी कउ लागा संतापु ॥१॥ जिसहि सहाई गोबिदु मेरा ॥ तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ साची दरगह बोलै कूड़ु ॥ सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ु ॥२॥ रोग बिआपे करदे पाप ॥ अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥३॥ अपन कमाइऐ आपे बाधे ॥ दरबु गइआ सभु जीअ कै साथै ॥४॥ नानक सरनि परे दरबारि ॥ राखी पैज मेरै करतारि ॥५॥९९॥१६८॥ गउड़ी महला ५ ॥ जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥१॥ रहाउ ॥

अह्मबुधि मन पूरि थिधाई ॥ साध धूरि करि सुध मंजाई ॥१॥ अनिक जला जे धोवै देही ॥ मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥२॥ सतिगुरु भेटिए सदा कृपाल ॥ हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥३॥ मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥ प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥४॥१००॥१६९॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवन पदवी हरि के दास ॥ जिन मिलिआ आतम परगासु ॥१॥ हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥ सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥१॥ रहाउ ॥ आठ पहर धिआईऐ गोपालु ॥ नानक दरसनु देखि निहालु ॥२॥१०१॥१७०॥ गउड़ी महला ५ ॥ साँति भई गुर गोबिदि पाई ॥ ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु नित रसन बखान ॥ बिनसे रोग भड़े कलिआन ॥१॥ पारब्रहम गुण अगम बीचार ॥ साधू संगमि है निसतार ॥२॥ निरमल गुण गावहु नित नीत ॥ गई बिआधि उबरे जन मीत ॥३॥ मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥४॥१०२॥ १७१॥ गउड़ी महला ५ ॥ नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ भरम गड़े पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ पारब्रहम प्रभ किरपा धारी ॥१॥ नानक नामु जपै सो जीवै ॥ साधसंगि हरि अंमृतु पीवै ॥२॥१०३॥१७२॥ गउड़ी महला ५ ॥ धनु एहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥ धनु एहि भगत जिन तुम संगि हेत ॥१॥ नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥ रसना राम नाम जसु कहीऐ ॥ १॥ रहाउ ॥ तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥ नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥२॥१०४॥१७३॥ गउड़ी महला ५ ॥ तूंहै मसलति तूंहै नालि ॥ तूहै राखहि सारि समालि ॥१॥ ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥ दास की पैज रखै मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ आगै आपि इहु थानु वसि जा कै ॥ आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥२॥ पति परवाणु सचु नीसाणु ॥ जा कउ आपि करहि फुरमानु ॥३॥ आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥ नित नित नानक राम नामु समालि ॥४॥१०५॥१७४॥ गउड़ी महला ५ ॥ सतिगुरु पूरा भइआ कृपालु ॥ हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥१॥ रामु रवत

सद ही सुखु पाइआ ॥ मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥२॥१०६॥ गउड़ी महला ५ ॥ धोती खोलि विछाए हेठि ॥ गरधप वांगू लाहे पेटि ॥१॥ बिनु करतूती मुकति न पाईऐ ॥ मुकति पदारथु नामु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा तिलक करत इसनानां ॥ छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥२॥ बेदु पड़ै मुखि मीठी बाणी ॥ जीआं कुहत न संगै पराणी ॥३॥ कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥ हिरदा सुधु ब्रहमु बीचारै ॥४॥१०७॥ गउड़ी महला ५ ॥ थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥ सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ जन की पैज रखी करतारे ॥१॥ बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥ अंम्रित नाम महा रस पीने ॥२॥ निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥३॥ सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ नानक एट पकरी प्रभ सुआमी ॥४॥१०८॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि संगि राते भाहि न जलै ॥ हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ हरि संगि राते नही डूबै जला ॥ हरि संगि राते सुफल फला ॥१॥ सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥ हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ हरि संगि राते पूरन आस ॥२॥ हरि संगि राते दूखु न लागै ॥ हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥३॥ हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ हरि संगि राते निरमल सोइ ॥ कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥ जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥४॥१०६॥ गउड़ी महला ५ ॥ उदमु करत सीतल मन भए ॥ मारगि चलत सगल दुख गए ॥ नामु जपत मनि भए अनन्द ॥ रसि गाए गुन परमानन्द ॥१॥ खेम भइआ कुसल घरि आए ॥ भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥ गोबिंद की टहल सफल इह

काँइआ ॥ संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥२॥ जन की कीनी आपि सहाइ ॥ सुखु पाइआ लगि दासह पाइ ॥ आपु गइआ ता आपहि भए ॥ कृपा निधान की सरनी पए ॥३॥ जो चाहत सोई जब पाइआ ॥ तब ढूंढन कहा को जाइआ ॥ असथिर भए बसे सुख आसन ॥ गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥४॥११०॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि मजन कीनो इसनान ॥ लाख अरब खरब दीनो दानु ॥ जा मनि वसिए हरि को नामु ॥१॥ सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥ पाप मिटहि साधू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥ बहुतु उरध तप साधन साधे ॥ अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥ हरि हरि नाम रसन आराधे ॥२॥ सिंमृति सासत बेद बखाने ॥ जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥३॥ अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ नामु जपत नामु रिदे बीचारे ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥४॥१११॥ गउड़ी मः ५ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥१॥ गुर गोबिंदु पारब्रहमु पूरा ॥ तिसहि अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ अनदिनु जपउ गुरू गुर नाम ॥ ता ते सिधि भए सगल काँम ॥२॥ दरसन देखि सीतल मन भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥३॥ कहु नानक कहा भै भाई ॥ अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥४॥११२॥ गउड़ी महला ५ ॥ अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥१॥ प्रभ की सरनि उबरै सभ कोइ ॥ करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ भै बिनसे आतम सुख सारा ॥२॥ करि किरपा अपने जन राखे ॥ जनम जनम के किलबिख लाथे ॥३॥ कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ नानक दास सदा सरनाई ॥४॥११३॥

रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राम को बलु पूरन भाई ॥ ता ते बृथा न बिआपै काई ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो चितवै दासु हरि माई ॥ सो सो करता आपि कराई ॥१॥ निंदक की प्रभि पति गवाई ॥ नानक हरि गुण निरभउ

गाई ॥२॥११४॥ गउड़ी महला ५ ॥ भुज बल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥ दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥ चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥२॥२॥११५॥

रागु गउड़ी बैरागणि महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै बासु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ तुझ बिनु घरी न जीवना ध्रिगु रहणा संसारि ॥ जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥१॥ हसत अलम्बनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥ मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥२॥ किआ सुख तेरे संमला कवन बिधी बीचार ॥ सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥३॥ सगल पदारथ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥ सुप्रसन्न भइे केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥४॥ मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे प्राण अधार ॥ साधसंगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥५॥१॥११६॥

गउड़ी बैरागणि रहोइे के छंत के घरि मः ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

है कोई राम पिआरो गावै ॥ सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥ बिरले काहू इेक लिव लागी ॥ जिनि हरि पाइिआ से वडभागी ॥१॥ ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥ जोगी जती सिध हरि आहै ॥ जिसहि परापति सो हरि गुण गाहै ॥२॥ ता की सरणि जिन बिसरत नाही ॥ वडभागी हरि संत मिलाही ॥ जनम मरण तिह मूले नाही ॥३॥ करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥ बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ नानकु माँगतु नामु अधारे ॥४॥१॥११७॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥१॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥ दीन दइआल कृपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥४॥१॥११८॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥१॥ पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिए पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिए अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥ २॥२॥११९॥ गउड़ी महला ५ ॥ निकसु रे पंखी सिमरि हरि पाँख ॥ मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे संगि राखु ॥१॥ रहाउ ॥ भ्रम की कूई तृसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥१॥ करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥ करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरी रासि ॥२॥३॥१२०॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ सेवा करउ दास दासन की अनिक भाँति तिसु करउ निहोरा ॥ तुला धारि तोले सुख सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥१॥ संत प्रसादि गाइे गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥ आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु कृतारथु सफलु सवेरा ॥२॥४॥१२१॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ कोई ऐसा संतु सहज सुखदाता मोहि मारगु देइ बताई

॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥ माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥१॥ इेका संगति इकतु गृहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥ इेक बसतु बिनु पंच दुहेले एह बसतु अगोचर ठाई ॥२॥ जिस का गृहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ॥ अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥३॥ जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥ पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥४॥ मेरे राम राइ इिन बिधि मिलै गुसाई ॥ सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२२॥ गउड़ी महला ५ ॥ अैसो परचउ पाइिए ॥ करी कृपा दइिआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइिए ॥१॥ रहाउ ॥ जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइि आइिए ॥ कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइिए ॥१॥ लहिए सहसा बंधन गुरि तोरे ताँ सदा सहज सुखु पाइिए ॥ होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइिए ॥२॥ खंड ब्रहमंड का इेको ठाणा गुरि परदा खोलि दिखाइिए ॥ नउ निधि नामु निधानु इिक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइिए ॥३॥ इेकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइिए ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोई है इिव ततै ततु मिलाइिए ॥४॥२॥१२३॥ गउड़ी महला ५ ॥ अउध घटै दिनसु रैनारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ करउ बेन्नती[२] सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ इिहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिए ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइि पीआइे हरि रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जा कउ आइे सोई विहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइिगो फेरा ॥३॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानकु दासु इिही सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥३॥१२४॥ गउड़ी महला ५ ॥ राखु पिता प्रभ मेरे ॥ मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ पंच बिखादी इेकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥ खेदु

करहि अरु बहुतु संतावहि आइिए सरनि तुहारे ॥१॥ करि करि हारिए अनिक बहु भाती छोडहि कतहूं नाही ॥ इेक बात सुनि ताकी एटा साधसंगि मिटि जाही ॥२॥ करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइिआ ॥ संती मंतु दीए मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइिआ ॥३॥ जीति लइे एइि महा बिखादी सहज सुहेली बाणी ॥ कहु नानक मनि भइिआ परगासा पाइिआ पदु निरबाणी ॥४॥४॥१२५॥ गउड़ी महला ५ ॥ एहु अबिनासी राइिआ ॥ निरभउ संगि तुमारै बसते इिहु डरनु कहा ते आइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ इेक महलि तूं होहि अफारो इेक महलि निमानो ॥ इेक महलि तूं आपे आपे इेक महलि गरीबानो ॥१॥ इेक महलि तूं पंडितु बकता इेक महलि खलु होता ॥ इेक महलि तूं सभु किछु ग्राहजु इेक महलि कछू न लेता ॥२॥ काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥ जैसा भेखु करावै बाजीगरु एहु तैसो ही साजु आनै ॥३॥ अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥ जैसे महलि राखै तैसै रहना किआ इिहु करै बिचारा ॥४॥ जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इिह सभ बिधि साजी ॥ कहु नानक अपरंपर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥५॥५॥१२६॥ गउड़ी महला ५ ॥ छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥ उरझि रहिए रे बावर गावर जिउ किरखै हरिआइिए पसूआ ॥१ ॥ रहाउ ॥ जो जानहि तूं अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ ॥ नागो आइिए नाग सिधासी फेरि फिरिए अरु कालि गरसूआ ॥१॥ पेखि पेखि रे कसुंभ की लीला राचि माचि तिनहूं लउ हसूआ ॥ छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछूआ ॥२॥ करत करत इिव ही बिरधानो हारिए उकते तनु खीनसूआ ॥ जिउ मोहिए उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥३॥ जगु ऐसा मोहि गुरहि दिखाइिए तउ सरणि परिए तजि गरबसूआ ॥ मारगु प्रभ को संति बताइिए दृड़ी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥४॥६॥१२७॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु हमारा ॥ मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ अंतर की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥ सरब सुखा मै तुझ ते पाइे

मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥१॥ बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥ अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥२॥ भ्रमु भउ काटि कीड़े निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥ जनम मरण को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥३॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥ जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ संगि मिरीआ ॥४॥७॥१२८॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥१॥ रहाउ ॥ सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सरब समानो इकै एही ॥ सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥१॥ पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निरमल सीतलोही ॥ गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥२॥८॥१२९॥ गउड़ी महला ५ ॥ मिलहु पिआरे जीआ ॥ प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥१॥ सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किन ही कीता ॥ तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥२॥ बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि दइआला ॥ राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥३॥ जिस नो तुमहि दिखाइए दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥ करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु बाछै ॥४॥६॥१३०॥ गउड़ी महला ५ ॥ हउ ता कै बलिहारी ॥ जा कै केवल नामु अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रहम रंगि राते ॥ सूख सहज आनन्द तिना संगि उन समसरि अवर न दाते ॥१॥ जगत उधारण सेई आइे जो जन दरस पिआसा ॥ उन की सरणि परै सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥२॥ ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥ भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥३॥ राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥ नामु निधानु सद नवतनु निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिआ ॥४॥१०॥१३१॥

गउड़ी महला ५ ॥ जोग जुगति सुनि आइिए गुर ते ॥ मो कउ सतिगुर सबदि बुझाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ नउ खंड पृथमी इिसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥ दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी दृड़िए इेकु निरंकारा ॥१॥ पंच चेले मिलि भइे इिकत्रा इेकसु कै वसि कीइे ॥ दस बैरागनि आगिआकारी तब निरमल जोगी थीइे ॥२॥ भरमु जराइि चराई बिभूता पंथु इेकु करि पेखिआ ॥ सहज सूख सो कीनी भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥३॥ जह भउ नाही तहा आसनु बाधिए सिंगी अनहत बानी ॥ ततु बीचारु डंडा करि राखिए जुगति नामु मनि भानी ॥४॥ अैसा जोगी वडभागी भेटै माइिआ के बंधन काटै ॥ सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥५॥ ११॥१३२॥ गउड़ी महला ५ ॥ अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइिले मीता ॥ हरि अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निरमल चीता ॥१॥ रहाउ ॥ अंधकारु मिटिए तिह तन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥ भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसंगति बिस्नासा ॥१॥ तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ॥ पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिए हरि रंगा ॥२॥ नाम खजाना भगती पाइिआ मन तन तृपति अघाइे ॥ नानक हरि जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकमु मनाइे ॥३॥१२॥१३३॥ गउड़ी महला ५ ॥ दइिआ मइिआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥ अंध [५]कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ करन करावन सभ किछु तुम ही तुम समरथ नाही अन होरी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥१॥ अपुने सेवक संगि तुम प्रभ राते एति पोति भगतन संगि जोरी ॥ पृउ पृउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे दृसटि एह चंद चकोरी ॥२॥ राम संत महि भेदु किछु नाही इेकु जनु कई महि लाख करोरी ॥ जा कै हीअै प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु कीरतनु रसन रमोरी ॥३॥ तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥ नानक कउ प्रभ कीजै किरपा

उन संतन कै संगि संगोरी ॥४॥१३॥१३४॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुम हरि सेती राते संतहु ॥ निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते एड़ि पहुचावहु दाते ॥१॥ रहाउ ॥ तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥१॥ तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ करि किरपा जिसु राखहु संगे ते ते पारि पराते ॥२॥ ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥ अैसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे ॥३॥ निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥ संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल ध्रापे ॥४॥१४॥१३५॥ गउड़ी महला ५ ॥ सहजि समाइिए देव ॥ मो कउ सतिगुर भइे दइिआल देव ॥१॥ रहाउ ॥ काटि जेवरी कीए दासरो संतन टहलाइिए ॥ इेक नाम को थीए पूजारी मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइिए ॥१॥ भइिए प्रगासु सरब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइिए ॥ अंमृतु नामु पीए मनु तृपतिआ अनभै ठहराइिए ॥२॥ मानि आगिआ सरब सुख पाइे दूखह ठाउ गवाइिए ॥ जउ सुप्रसन्न भइे प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइिए ॥३॥ ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीए हरि राइिए ॥ कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइिए ॥४॥१५॥१३६॥ गउड़ी महला ५ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की एट गहीजै रे ॥ जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥१॥ रहाउ ॥ मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझि सुखु पाईअै रे ॥ जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि एही धिआईअै रे ॥१॥ कोटि पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥२॥ सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिए रतनागरु रे ॥३॥ जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ नानकु दासु ता की सरणाई जा ते बृथा न कोई रे ॥४॥१६॥१३७॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि कबहू न मनहु बिसारे ॥ ईहा ऊहा सरब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥१॥ रहाउ ॥ महा कसट काटै खिन भीतरि रसना नामु चितारे ॥ सीतल साँति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे ॥१॥ गरभ कुंड नरक ते राखै भवजलु पारि उतारे ॥ चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥२॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥ गुण गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥३॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे ॥ करि किरपा अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे ॥४॥१॥१३८॥

रागु गउड़ी चेती महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुखु नाही रे हरि भगति बिना ॥ जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥१॥ रहाउ ॥ सुत संपति बनिता बिनोद ॥ छोडि गए बहु लोग भोग ॥१॥ हैवर गैवर राज रंग ॥ तिआगि चलिए है मूड़ न्नग ॥२॥ चोआ चंदन देह फूलिआ ॥ सो तनु धर संगि रूलिआ ॥३॥ मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥ कहु नानक सदा हदूरि है ॥४॥१॥१३९॥ गउड़ी महला ५ ॥ मन धर तरबे हरि नाम नो ॥ सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पार गरामनो ॥१॥ रहाउ ॥ कलि कालख अंधिआरीआ ॥ गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥१॥ बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥ उबरे जपि जपि हरि गुनी ॥२॥ मतवारो माइआ सोइआ ॥ गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥३॥ कहु नानक एकु धिआइआ ॥ घटि घटि नदरी आइआ ॥४॥२॥१४०॥ गउड़ी महला ५ ॥ दीबानु हमारो तुही एक ॥ सेवा थारी गुरहि टेक ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति नही पाइआ ॥ गुरि चाकर लै लाइआ ॥१॥ मारे पंच बिखादीआ ॥ गुर किरपा ते दलु साधिआ ॥२॥ बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥ सूख सहज आनन्द बिस्राम ॥३॥

प्रभ के चाकर से भले ॥ नानक तिन मुख ऊजले ॥४॥३॥१४१॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीअरे एला नाम का ॥ अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥१॥ रहाउ ॥ अवर जतनि नही पाईऐ ॥ वडै भागि हरि धिआईऐ ॥१॥ लाख हिकमती जानीऐ ॥ आगै तिलु नही मानीऐ ॥२॥ अह्मबुधि करम कमावने ॥ गृह बालू नीरि बहावने ॥३॥ प्रभु कृपालु किरपा करै ॥ नामु नानक साधू संगि मिलै ॥४॥४॥१४२॥ गउड़ी महला ५ ॥ बारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥ नामो हो नामु साहिब को प्रान अधरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ करन करावन तुही इेक ॥ जीअ जंत की तुही टेक ॥१॥ राज जोबन प्रभ तूं धनी ॥ तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥२॥ ईहा ऊहा तुम रखे ॥ गुर किरपा ते को लखे ॥३॥ अंतरजामी प्रभ सुजानु ॥ नानक तकीआ तुही ताणु ॥४॥५॥१४३॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ ॥ संतसंगि हरि मनि वसै भरमु मोहु भउ साधीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ बेद पुराण सिमृति भने ॥ सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥१॥ सगल असथान भै भीत चीन ॥ राम सेवक भै रहत कीन ॥२॥ लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥ गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥३॥ बल बुधि सिआनप हउमै रही ॥ हरि साध सरणि नानक गही ॥४॥६॥१४४॥ गउड़ी महला ५ ॥ मन राम नाम गुन गाईऐ ॥ नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ संतसंगि हरि मनि वसै ॥ दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥१॥ संत प्रसादि हरि जापीऐ ॥ सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥२॥ जा कउ गुरु हरि मंत्रु दे ॥ सो उबरिआ माइिआ अगनि ते ॥३॥ नानक कउ प्रभ मइिआ करि ॥ मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥४॥७॥१४५॥ गउड़ी महला ५ ॥ रसना जपीऐ इेकु नाम ॥ ईहा सुखु आन्नदु घना आगै जीअ कै संगि काम ॥१॥ रहाउ ॥ कटीऐ तेरा अह्म रोगु ॥ तूं गुर प्रसादि करि राज जोगु ॥१॥ हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥ ता की तृसना लाथीआ ॥२॥ हरि बिस्राम निधि पाइिआ ॥ सो बहुरि न कत ही धाइिआ ॥३॥ हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥ नानक ता का भउ गइिआ ॥४॥८॥१४६॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ बिसरै राम नाम ताहू कउ पीर ॥ साधसंगति मिलि हरि रवहि से गुणी गहीर ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ गुरमुखि रिदै बुधि ॥ ता कै कर तल नव निधि सिधि ॥१॥ जो जानहि हरि प्रभ धनी ॥ किछु नाही ता कै कमी ॥२॥ करणैहारु पछानिआ ॥ सरब सूख रंग माणिआ ॥३॥ हरि धनु जा कै गृहि वसै ॥ कहु नानक तिन संगि दुखु नसै ॥४॥६॥१४७॥ गउड़ी महला ५ ॥ गरबु बडो मूलु इतनो ॥ रहनु नही गहु कितनो ॥१॥ रहाउ ॥ बेबरजत बेद संतना उआहू सिउ रे हितनो ॥ हार जूआर जूआ बिधे इंद्री वसि लै जितनो ॥१॥ हरन भरन संपूरना चरन कमल रंगि रितनो ॥ नानक उधरे साधसंगि किरपा निधि मै दितनो ॥२॥१०॥१४८॥ गउड़ी महला ५ ॥ मोहि दासरो ठाकुर को ॥ धानु प्रभ का खाना ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसो है रे खसमु हमारा ॥ खिन महि साजि सवारणहारा ॥१॥ कामु करी जे ठाकुर भावा ॥ गीत चरित प्रभ के गुन गावा ॥२॥ सरणि परिए ठाकुर वजीरा ॥ तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥३॥ इेक टेक इेको आधारा ॥ जन नानक हरि की लागा कारा ॥४॥११॥१४६॥ गउड़ी महला ५ ॥ है कोई ऐसा हउमै तोरै ॥ इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥१॥ रहाउ ॥ अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥ रैणि अंधारी कारीआ कवन जुगति जितु भोरै ॥१॥ भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥ कहु नानक किरपा भई साधसंगति निधि मोरै ॥२॥१२॥१५०॥ गउड़ी महला ५ ॥ चिंतामणि करुणा मइे ॥१॥ रहाउ ॥ दीन दइिआला पारब्रहम ॥ जा कै सिमरणि सुख भइे ॥१॥ अकाल पुरख अगाधि बोध ॥ सुनत जसो कोटि अघ खइे ॥२॥ किरपा निधि प्रभ मइिआ धारि ॥ नानक हरि हरि नाम लइे ॥३॥१३॥१५१॥ गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाइे ॥ जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाइे ॥१॥ रहाउ ॥ इेक रैण के पाहुन तुम आइे बहु जुग आस बधाइे ॥ गृह मंदर संपै जो दीसै जिउ तरवर की छाइे ॥१॥ तनु मेरा संपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाइे ॥ देवनहारा बिसरिए ठाकुरु खिन महि होत

पराइे ॥२॥ पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाइे ॥ निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाइे ॥३॥ जउ होइि कृपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाइे ॥ मुकतु भइिआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाइे ॥४॥१४॥१५२॥ गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीऐ ॥ रतन जनमु सफलु गुरि कीआ दरसन कउ बलिहरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईऐ ॥ जउ होइि दैआलु सतिगुरु अपुना ता इिह मति बुधि पाईऐ ॥१॥ मेरे मन नामि लइे जम बंध ते छूटहि सरब सुखा सुख पाईऐ ॥ सेवि सुआमी सतिगुरु दाता मन बंछत फल आईऐ ॥२॥ नामु इिसटु मीत सुत करता मन संगि तुहारै चालै ॥ करि सेवा सतिगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै ॥३॥ गुरि किरपालि कृपा प्रभि धारी बिनसे सरब अंदेसा ॥ नानक सुखु पाइिआ हरि कीरतनि मिटिए सगल कलेसा ॥४॥१५॥१५३॥

रागु गउड़ी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तृसना बिरले ही की बुझी हे ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ परै परै ही कउ लुझी हे ॥१॥ सुंदर नारी अनिक परकारी पर गृह बिकारी ॥ बुरा भला नही सुझी हे ॥२॥ अनिक बंधन माइिआ भरमतु भरमाइिआ गुण निधि नही गाइिआ ॥ मन बिखै ही महि लुझी हे ॥३॥ जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साधसंगि माइिआ तरै ॥ नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥४॥१॥१५४॥ गउड़ी महला ५ ॥ सभहू को रसु हरि हो ॥१॥ रहाउ ॥ काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥ काहू हो डंड धरि हो ॥१॥ काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥ काहू हो गउनु करि हो ॥२॥ काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥ नानका भगति प्रिअ हो ॥३॥२॥१५५॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुन कीरति निधि मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ तूंही रस तूंही जस तूंही रूप तूही रंग ॥ आस एट प्रभ तोरी ॥१॥ तूही मान तूंही धान तूही पति तूही प्रान ॥ गुरि तूटी लै जोरी ॥२॥ तूही गृहि तूही बनि

तूही गाउ तूही सुनि ॥ है नानक नेर नेरी ॥३॥३॥१५६॥ गउड़ी महला ५ ॥ मातो हरि रंगि मातो ॥१॥ रहाउ ॥ एही पीए एही खीए गुरहि दीए दानु कीए ॥ उआहू सिउ मनु रातो ॥१॥ एही भाठी एही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥ मनि एहो सुखु जातो ॥२॥ सहज केल अनद खेल रहे फेर भइे मेल ॥ नानक गुर सबदि परातो ॥३॥४॥१५७॥

रागु गौड़ी मालवा महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि नामु लेहु मीता लेहु आगै बिखम पंथु भैआन ॥१॥ रहाउ ॥

सेवत सेवत सदा सेवि तेरै संगि बसतु है कालु ॥ करि सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जालु ॥१॥ होम जग तीरथ कीइे बिचि हउमै बधे बिकार ॥ नरकु सुरगु दुइि भुंचना होइि बहुरि बहुरि अवतार ॥२॥ सिव पुरी ब्रहम इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥ बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि ॥३॥ जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥ नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइि उधारु ॥४॥१॥१५८॥

रागु गउड़ी माला महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पाइिए बाल बुधि सुखु रे ॥ हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥१॥ रहाउ ॥ जउ लउ हउ किछु सोचउ चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥ जउ कृपालु गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥१॥ जेती सिआनप करम हउ कीइे तेते बंध परे ॥ जउ साधू करु मसतकि धरिए तब हम मुकत भइे ॥२॥ जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥ मनु तनु बुधि अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोइे ॥३॥ जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥ पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभइे ॥४॥१॥१५९॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ भावनु तिआगिए री तिआगिए ॥ तिआगिए मै गुर मिलि तिआगिए ॥ सरब सुख आन्नद मंगल रस मानि गोबिंदै

आगिए ॥१॥ रहाउ ॥ मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिए ॥ संपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिए ॥१॥ बास बासरी इकै सुआमी उदिआन दृसटागिए ॥ निरभउ भइे संत भ्रमु डारिए पूरन सरबागिए ॥२॥ जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिए ॥ साधसंगति परसादि संतन कै सोइिए मनु जागिए ॥३॥ जन नानक एड़ि तुहारी परिए आइिए सरणागिए ॥ नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिए ॥४॥२॥१६०॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ पाइिआ लालु रतनु मनि पाइिआ ॥ तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ लाथी भूख तृसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ करु मसतकि गुरि पूरै धरिए मनु जीतो जगु सारी ॥१॥ तृपति अघाइि रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे मूके ॥२॥ अचरजु इकु सुनहु रे भाई गुरि अैसी बूझ बुझाई ॥ लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिए तउ बिसरी ताति पराई ॥३॥ कहिए न जाई इहु अचंभउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ कहु नानक सच भइे बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥४॥३॥१६१॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ उबरत राजा राम की सरणी ॥ सरब लोक माइिआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥१॥ रहाउ ॥ सासत सिंमृति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूं लहिआ ॥१॥ तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥२॥ अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल बृथे बिनु नामा ॥३॥ हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ साधसंगति जनम मरणु निवारै नानक जन की धूरा ॥४॥४॥१६२॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ मो कउ इह बिधि को समझावै ॥ करता होइि जनावै ॥१॥ रहाउ ॥ अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ दह दिसि लै इहु मनु दउराइिए कवन करम करि बाधा ॥१॥ मन तन धन भूमि का ठाकुरु हउ इस का

इहु मेरा ॥ भरम मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पड़े पैरा ॥२॥ तब इहु कहा कमावन परिआ जब इहु कछू न होता ॥ जब इेक निरंजन निरंकार प्रभ सभु किछु आपहि करता ॥३॥ अपने करतब आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥ कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥५॥१६३॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥ जप तप संजम करम कमाणे इहि एरै मूसे ॥१॥ रहाउ ॥ बरत नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥ आगै चलणु अउरु है भाई ऊंहा कामि न आइआ ॥१॥ तीरथि नाइि अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥ ऊहा कामि न आवै इह बिधि एहु लोगन ही पतीआवै ॥२॥ चतुर बेद मुख बचनी उचरै आगै महलु न पाईऔ ॥ बूझै नाही इेकु सुधाखरु एहु सगली झाख झखाईऔ ॥३॥ नानकु कहतो इहु बीचारा जि कमावै सु पार गरामी ॥ गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥४॥६॥१६४॥ गउड़ी माला ५ ॥ माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऔ ॥ हम ते कछू न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऔ ॥१॥ रहाउ ॥ किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥ जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारे ॥१॥ करहु क्रिपा सरब के दाते इेक रूप लिव लावहु ॥ नानक की बेन्नती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥२॥७॥१६५॥

रागु गउड़ी माझ महला ५ 　　　　　　　 ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दीन दइिआल दमोदर राइिआ जीउ ॥ कोटि जना करि सेव लगाइिआ जीउ ॥ भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइिआ जीउ ॥ पूरन सभनी जाई जीउ ॥१॥ किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥ संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥ इहु जीउ वताई बलि बलि जाई जीउ ॥ तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥२॥ पोथी पंडित बेद खोजंता जीउ ॥ होइि बैरागी तीरथि नावंता जीउ ॥ गीत नाद कीरतनु गावंता जीउ ॥ हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥३॥ भइे क्रिपाल सुआमी मेरे जीउ ॥ पतित पवित लगि

गुर के पैरे जीउ ॥ भ्रमु भउ काटि कीडे निरवैरे जीउ ॥ गुर मन की आस पूराई जीउ ॥४॥ जिनि नाउ पाइआ सो धनवंता जीउ ॥ जिनि प्रभु धिआइआ सु सोभावंता जीउ ॥ जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ ॥ जन नानक सहजि समाई जीउ ॥५॥१॥१६६॥ गउड़ी महला ५ माझ ॥ आउ हमारै राम पिआरे जीउ ॥ रैणि दिनसु सासि सासि चितारे जीउ ॥ संत देउ संदेसा पै चरणारे जीउ ॥ तुधु बिनु कितु बिधि तरीऐ जीउ ॥१॥ संगि तुमारै मै करे अन्नदा जीउ ॥ वणि तिणि तृभवणि सुख परमान्नदा जीउ ॥ सेज सुहावी इहु मनु बिगसंदा जीउ ॥ पेखि दरसनु इहु सुखु लहीऐ जीउ ॥२॥ चरण पखारि करी नित सेवा जीउ ॥ पूजा अरचा बंदन देवा जीउ ॥ दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ ॥ बिनउ ठाकुर पहि कहीऐ जीउ ॥३॥ इछ पुन्नी मेरी मनु तनु हरिआ जीउ ॥ दरसन पेखत सभ दुख परहरिआ जीउ ॥ हरि हरि नामु जपे जपि तरिआ जीउ ॥ इहु अजरु नानक सुखु सहीऐ जीउ ॥४॥२॥१६७॥ गउड़ी माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि साजन मन मित पिआरे जीउ ॥ मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ ॥ विसरु नाही प्रभ प्राण अधारे जीउ ॥ सदा तेरी सरणाई जीउ ॥१॥ जिसु मिलिऐ मनु जीवै भाई जीउ ॥ गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ ॥ सभ किछु प्रभ का प्रभ कीआ जाई जीउ ॥ प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ ॥२॥ एहु निधानु जपै वडभागी जीउ ॥ नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ ॥ गुरु पूरा पाइआ सभु दुखु मिटाइआ जीउ ॥ आठ पहर गुण गाइआ जीउ ॥३॥ रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥ तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ ॥ हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥ जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥४॥३॥१६८॥

रागु गउड़ी माझ महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तूं मेरा बहु माणु करते तूं मेरा बहु माणु ॥ जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ सभे गला जातीआ सुणि कै चुप कीआ ॥ कद ही सुरति न लधीआ माइआ मोहड़िआ ॥१॥ देहि

बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥ कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥२॥ इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥ इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥३॥ भगत सचे दरि सोहदे अनद करहि दिन राति ॥ रंगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥४॥१॥१६९ ॥ गउड़ी महला ५ माँझ ॥ दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥ आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥ जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥१॥ सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥ एट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥२॥ भए कृपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥ तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥३॥ गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥४॥२॥१७०॥ गउड़ी माझ महला ५ ॥ हरि राम राम राम रामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥१॥ रहाउ ॥ राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवित्रु ॥ हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मित्रु ॥१॥ सभि पदारथ सभि फला सरब गुणा जिसु माहि ॥ किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥२॥ जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥३॥ जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥ नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥४॥३॥१७१॥ गउड़ी माझ महला ५ ॥ मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूं मीठे हरि गुण गाउ ॥ सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका होइ ॥ विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥१॥ अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥ पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥२॥ साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥ अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥३॥ मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥ नानकु जाचकु दरि तेरै प्रभ तुधनो मंगै दानु ॥४॥४॥१७२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी महला ९ ॥ साधो मन का मानु तिआगउ ॥ कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥ सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥ हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥ उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥ जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो रचना राम बनाई ॥ इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिए न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तनु साचा करि मानिए जिउ सुपना रैनाई ॥१॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥ जन नानक जगु जानिए मिथिआ रहिए राम सरनाई ॥ २॥२॥ गउड़ी महला ९ ॥ प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥ अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥ मृग तृसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥ भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥ जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो इहु मनु गहिए न जाई ॥ चंचल तृसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥ कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥ रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥ जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥ जन नानक हरि भइे दइिआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥ मानस जनमु अमोलकु पाइिए बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥ गज को त्रासु मिटिए जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥ तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥ नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइि तुम पावउ ॥२॥५॥ गउड़ी महला ९ ॥ कोऊ माई

भूलिए मनु समझावै ॥ बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ दुरलभ देह पाइि मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥ माइिआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥ अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥ गउड़ी महला ६ ॥ साधो राम सरनि बिसरामा ॥ बेद पुरान पड़े को इिह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥ लोभ मोह माइिआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥ हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥ सुरग नरक अंमृत बिखु इे सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥ उसतति निंदा इे सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥ दुखु सुखु इे बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानउ इिह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥ गउड़ी महला ६ ॥ मन रे कहा भइिए तै बउरा ॥ अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइिए लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥ जो तनु तै अपनो करि मानिए अरु सुंदर गृह नारी ॥ इिन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥ रतन जनमु अपनो तै हारिए गोबिंद गति नही जानी ॥ निमख न लीन भइिए चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥ कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥ अउर सगल जगु माइिआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥ गउड़ी महला ६ ॥ नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ दीन दइिआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ ॥ बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीअै मो धरु रे ॥ पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥ मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥ नानक कहत गाइि करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥

रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

निधि सिधि निरमल नामु बीचारु ॥ पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥ तृकुटी छूटी बिमल मझारि ॥

गुर की मति जीइि आई कारि ॥१॥ इिन बिधि राम रमत मनु मानिआ ॥ गिआन अंजनु गुर सबदि पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ इिकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइिआ ॥ निरमल बाणी भरमु चुकाइिआ ॥ लाल भइे सूहा रंगु माइिआ ॥ नदरि भई बिखु ठाकि रहाइिआ ॥२॥ उलट भई जीवत मरि जागिआ ॥ सबदि रवे मनु हरि सिउ लागिआ ॥ रसु संग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ ॥ भाइि बसे जम का भउ भागिआ ॥३॥ साद रहे बादं अहंकारा ॥ चितु हरि सिउ राता हुकमि अपारा ॥ जाति रहे पति के आचारा ॥ दृसटि भई सुखु आतम धारा ॥४॥ तुझ बिनु कोइि न देखउ मीतु ॥ किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥ किसु पूछउ किसु लागउ पाइि ॥ किसु उपदेसि रहा लिव लाइि ॥५॥ गुर सेवी गुर लागउ पाइि ॥ भगति करी राचउ हरि नाइि ॥ सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥ हुकमि संजोगी निज घरि जाउ ॥६॥ गरब गतं सुख आतम धिआना ॥ जोति भई जोती माहि समाना ॥ लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना ॥ करता करणा करता जाना ॥७॥ नह पंडितु नह चतुरु सिआना ॥ नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥ कथउ न कथनी हुकमु पछाना ॥ नानक गुरमति सहजि समाना ॥८॥१॥ गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ मनु कुंचरु काइिआ उदिआनै ॥ गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥ राज दुआरै सोभ सु मानै ॥१॥ चतुराई नह चीनिआ जाइि ॥ बिनु मारे किउ कीमति पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ घर महि अंमृतु तसकरु लेई ॥ न्ननाकारु न कोइि करेई ॥ राखै आपि वडिआई देई ॥२॥ नील अनील अगनि इिक ठाई ॥ जलि निवरी गुरि बूझ बुझाई ॥ मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥३॥ जैसा घरि बाहरि सो तैसा ॥ बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥ सागरि डूगरि निरभउ अैसा ॥४॥ मूइे कउ कहु मारे कउनु ॥ निडरे कउ कैसा डरु कवनु ॥ सबदि पछानै तीने भउन ॥५॥ जिनि कहिआ तिनि कहनु वखानिआ ॥ जिनि बूझिआ तिनि सहजि पछानिआ ॥ देखि बीचारि मेरा मनु मानिआ ॥६॥ कीरति सूरति मुकति इिक नाई ॥ तही निरंजनु रहिआ समाई ॥ निज घरि बिआपि रहिआ निज ठाई ॥७॥ उसतति करहि केते मुनि प्रीति

॥ तनि मनि सूचै साचु सु चीति ॥ नानक हरि भजु नीता नीति ॥८॥२॥ गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ ना मनु मरै न कारजु होइ ॥ मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥ मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥१॥ निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥ आपु निवारि बीचारे सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनु भूलो बहु चितै विकारु ॥ मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥ मनु मानै हरि इेकंकारु ॥२॥ मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥ कामि बिरूधउ रहै न ठाइ ॥ हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥३॥ गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥ बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥ जूऐ खेलणु काची सारी ॥४॥ संपउ संची भइे विकार ॥ हरख सोक उभे दरवारि ॥ सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥५॥ नदरि करे ता मेलि मिलाइे ॥ गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाइे ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पाइे ॥६॥ बिनु नावै सभ दूख निवासु ॥ मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥ गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥७॥ मनु चंचलु धावतु फुनि धावै ॥ साचे सूचे मैलु न भावै ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण गावै ॥८॥३॥ गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥ मनमति झूठी सचा सोइ ॥ सगल बिगूते भावै दोइ ॥ सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥१॥ अैसा जगु देखिआ जूआरी ॥ सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥१॥ रहाउ ॥ अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥ बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥ गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥ सेवा सुरति इेक लिव लाइ ॥२॥ सुखु माँगत दुखु आगल होइ ॥ सगल विकारी हारु परोइ ॥ इेक बिना झूठे मुकति न होइ ॥ करि करि करता देखै सोइ ॥३॥ तृसना अगनि सबदि बुझाइे ॥ दूजा भरमु सहजि सुभाइे ॥ गुरमती नामु रिदै वसाइे ॥ साची बाणी हरि गुण गाइे ॥४॥ तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥ नाम बिना नाही निज ठाउ ॥ प्रेम पराइिण प्रीतम राउ ॥ नदरि करे ता बूझै नाउ ॥५॥ माइिआ मोहु सरब जंजाला ॥ मनमुख कुचील कुछित बिकराला ॥ सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥ अंमृत नामु सदा सुखु नाला ॥६॥ गुरमुखि बूझै इेक लिव लाइे ॥ निज घरि वासै साचि समाइे ॥ जंमणु मरणा ठाकि रहाइे ॥ पूरे गुर ते इिह मति पाइे ॥७॥ कथनी

कथउ न आवै एरु ॥ गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥ दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥ नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥८॥४॥ गउड़ी महला १ ॥ दूजी माइआ जगत चित वासु ॥ काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥१॥ दूजा कउणु कहा नही कोई ॥ सभ महि इेकु निरंजनु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ दूजी दुरमति आखै दोइ ॥ आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥२॥ धरणि गगन नह देखउ दोइ ॥ नारी पुरख सबाई लोइ ॥३॥ रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥ सरब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥४॥ करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥ सतिगुरि मो कउ इेकु बुझाइआ ॥५॥ इेकु निरंजनु गुरमुखि जाता ॥ दूजा मारि सबदि पछाता ॥६॥ इेको हुकमु वरतै सभ लोई ॥ इेकसु ते सभ एपति होई ॥७॥ राह दोवै खसमु इेको जाणु ॥ गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥८॥ सगल रूप वरन मन माही ॥ कहु नानक इेको सालाही ॥९॥५॥ गउड़ी महला १ ॥ अधिआतम करम करे ता साचा ॥ मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥१॥ अैसा जोगी जुगति बीचारै ॥ पंच मारि साचु उरि धारै ॥१॥ रहाउ ॥ जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥२॥ रवि ससि इेको गृह उदिआनै ॥ करणी कीरति करम समानै ॥३॥ इेक सबद इिक भिखिआ मागै ॥ गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥४॥ भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥ कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥५॥ आपे मेले भरमु चुकाइे ॥ गुर परसादि परम पदु पाइे ॥६॥ गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥ हउमै मारे करणी सारु ॥७॥ जप तप संजम पाठ पुराणु ॥ कहु नानक अपरंपर मानु ॥८॥६॥ गउड़ी महला १ ॥ खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥ रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ मुकत भइे प्रभ रूप न रेखं ॥१॥ जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥ रूखि बिरखि गृहि बाहरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥ सो जोगी मेरै मनि भावै ॥२॥ कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥ जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥ आपि तरै पितरी निसतारे ॥३॥ सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥ भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥ जैसा सेवै तैसो होइ ॥

४॥ नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥ अनाथह नाथ करे बलि जाउ ॥ पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥ ५॥ अंतरि बाहरि इेको जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ साचै सबदि दरि नीसाणै ॥६॥ सबदि मरै तिसु निज घरि वासा ॥ आवै न जावै चूकै आसा ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥७॥ जो दीसै सो आस निरासा ॥ काम क्रोध बिखु भूख पिआसा ॥ नानक बिरले मिलहि उदासा ॥८॥७॥ गउड़ी महला १ ॥ अैसो दासु मिलै सुखु होई ॥ दुखु विसरै पावै सचु सोई ॥१॥ दरसनु देखि भई मति पूरी ॥ अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥१॥ रहाउ ॥ नेत्र संतोखे इेक लिव तारा ॥ जिहवा सूची हरि रस सारा ॥२॥ सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥ मनु तृपतासिआ अलख अभेवा ॥३॥ जह जह देखउ तह तह साचा ॥ बिनु बूझे झगरत जगु काचा ॥४॥ गुरु समझावै सोझी होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥५॥ करि किरपा राखहु रखवाले ॥ बिनु बूझे पसू भइे बेताले ॥६॥ गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥ किसु कहु देखि करउ अन पूजा ॥७॥ संत हेति प्रभि तृभवण धारे ॥ आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥८॥ साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥ प्रणवति नानक हम ता के दास ॥९॥८॥ गउड़ी महला १ ॥ ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥ जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥१॥ अैसा गरबु बुरा संसारै ॥ जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥१॥ रहाउ ॥ बलि राजा माइिआ अह्मकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिनु गुर पूछे जाइि पइिआरी ॥२॥ हरीचंदु दानु करै जसु लेवै ॥ बिनु गुर अंतु न पाइि अभेवै ॥ आपि भुलाइि आपे मति देवै ॥३॥ दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥ प्रभु नाराइिणु गरब प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥४॥ भूलो रावणु मुगधु अचेति ॥ लूटी लम्का सीस समेति ॥ गरबि गइिआ बिनु सतिगुर हेति ॥५॥ सहसबाहु मधु कीट महिखासा ॥ हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ दैत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥६॥ जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ रकतबीजु कालुनेमु बिदारे ॥ दैत संघारि संत निसतारे ॥७॥ आपे

सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ दूजै भाइ दैत संघारे ॥ गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥८॥ बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥ रामु न जानिआ करता सोई ॥ जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥९॥ जनमेजै गुर सबदु न जानिआ ॥ किउ सुखु पावै भरमि भुलानिआ ॥ इकु तिलु भूले बहुरि पछुतानिआ ॥१०॥ कंसु केसु चाँडूरु न कोई ॥ रामु न चीनिआ अपनी पति खोई ॥ बिनु जगदीस न राखै कोई ॥११॥ बिनु गुर गरबु न मेटिआ जाइ ॥ गुरमति धरमु धीरजु हरि नाइ ॥ नानक नामु मिलै गुण गाइ ॥१२॥९॥ गउड़ी महला १ ॥ चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥ पाट पटंबर पहिरि हढावउ ॥ बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ ॥१॥ किआ पहिरउ किआ एढि दिखावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ कानी कुंडल गलि मोतीअन की माला ॥ लाल निहाली फूल गुलाला ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥२॥ नैन सलोनी सुंदर नारी ॥ खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥ बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥३॥ दर घर महला सेज सुखाली ॥ अहिनिसि फूल बिछावै माली ॥ बिनु हरि नाम सु देह दुखाली ॥४॥ हैवर गैवर नेजे वाजे ॥ लसकर नेब खवासी पाजे ॥ बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥५॥ सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ ॥ ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सचु पावउ ॥६॥ खानु मलूकु कहावउ राजा ॥ अबे तबे कूड़े है पाजा ॥ बिनु गुर सबद न सवरसि काजा ॥७॥ हउमै ममता गुर सबदि विसारी ॥ गुरमति जानिआ रिदै मुरारी ॥ प्रणवति नानक सरणि तुमारी ॥८॥१०॥ गउड़ी महला १ ॥ सेवा इेक न जानसि अवरे ॥ परपंच बिआधि तिआगै कवरे ॥ भाइ मिलै सचु साचै सचु रे ॥१॥ ऐसा राम भगतु जनु होई ॥ हरि गुण गाइ मिलै मलु धोई ॥१॥ रहाउ ॥ ऊंधो कवलु सगल संसारै ॥ दुरमति अगनि जगत परजारै ॥ सो उबरै गुर सबदु बीचारै ॥२॥ भ्रिंग पतंगु कुंचरु अरु मीना ॥ मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥ तृसना राचि ततु नही बीना ॥३॥ कामु चितै कामणि हितकारी ॥ क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥ पति मति खोवहि नामु

विसारी ॥४॥ पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइि ॥ गलि जेवरी धंधै लपटाइि ॥ गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइि ॥५॥ जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥ कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥ बिनु पिर तृपति न कबहूं होई ॥६॥ पड़ि पड़ि पोथी सिंमृति पाठा ॥ बेद पुराण पड़ै सुणि थाटा ॥ बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥७॥ जिउ चातृक जल प्रेम पिआसा ॥ जिउ मीना जल माहि उलासा ॥ नानक हरि रसु पी तृपतासा ॥८॥११॥ गउड़ी महला १ ॥ हठु करि मरै न लेखै पावै ॥ वेस करै बहु भसम लगावै ॥ नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥१॥ तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥ नामु बिसारि सहहि जम दूख ॥१॥ रहाउ ॥ चोआ चंदन अगर कपूरि ॥ माइिआ मगनु परम पदु दूरि ॥ नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि ॥२॥ नेजे वाजे तखति सलामु ॥ अधकी तृसना विआपै कामु ॥ बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥३॥ वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥ मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥ दूजै भाइि अगिआनु दुहेला ॥४॥ बिनु दम के सउदा नही हाट ॥ बिनु बोहिथ सागर नही वाट ॥ बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥५॥ तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥६॥ वाहु वाहु तिस कउ जिस का इिहु जीउ ॥ गुर सबदी मथि अंमृतु पीउ ॥ नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥७॥ नाम बिना किउ जीवा माइि ॥ अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइि ॥ नानक नामि रते पति पाइि ॥८॥१२॥ गउड़ी महला १ ॥ हउमै करत भेखी नही जानिआ ॥ गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ ॥१॥ हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥ हउमै जाइि परम पदु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ हउमै करि राजे बहु धावहि ॥ हउमै खपहि जनमि मरि आवहि ॥२॥ हउमै निवरै गुर सबदु वीचारै ॥ चंचल मति तिआगै पंच संघारै ॥३॥ अंतरि साचु सहज घरि आवहि ॥ राजनु जाणि परम गति पावहि ॥४॥ सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥ निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥५॥ हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥ पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥६॥ जेती है तेती किहु नाही ॥ गुरमुखि गिआन भेटि

गुण गाही ॥७॥ हउमै बंधन बंधि भवावै ॥ नानक राम भगति सुखु पावै ॥८॥१३॥ गउड़ी महला १ ॥ प्रथमे ब्रहमा कालै घरि आइआ ॥ ब्रहम कमलु पइआलि न पाइआ ॥ आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥१॥ जो उपजै सो कालि संघारिआ ॥ हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥ कालु न छोडै बिनु गुर की सेवा ॥ एहु अबिनासी अलख अभेवा ॥२॥ सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥ नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥ मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥३॥ चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥ साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥ मै धनु दीजै हरि अंमृत नामु ॥४॥ रयति महर मुकदम सिकदारै ॥ निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥ अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥५॥ निहचलु इेकु सचा सचु सोई ॥ जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥ एहु गुरमुखि जापै ताँ पति होई ॥६॥ काजी सेख भेख फकीरा ॥ वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥ कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥७॥ कालु जालु जिहवा अरु नैणी ॥ कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥ बिनु सबदै मूठे दिनु रैणी ॥८॥ हिरदै साचु वसै हरि नाइि ॥ कालु न जोहि सकै गुण गाइि ॥ नानक गुरमुखि सबदि समाइि ॥९॥१४॥ गउड़ी महला १ ॥ बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥ चालहि गुरमुखि हुकमि रजाई ॥ रहहि अतीत सचे सरणाई ॥१॥ सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥ मनमुख कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥१॥ रहाउ ॥ अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीऐ ॥ निज घरि बैसि सहज घरु लहीऐ ॥ हरि रसि माते इिहु सुखु कहीऐ ॥२॥ गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥ गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥ पीवै अंमृतु ततु विरोलै ॥३॥ सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥ मनु तनु अरपिए अंतर गति कीनी ॥ गति मिति पाई आतमु चीनी ॥४॥ भोजनु नामु निरंजन सारु ॥ परम ह्मसु सचु जोति अपार ॥ जह देखउ तह इेकंकारु ॥५॥ रहै निरालमु इेका सचु करणी ॥ परम पदु पाइआ सेवा गुर चरणी ॥ मन ते मनु मानिआ चूकी अह्म भ्रमणी ॥६॥ इिन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥ हरि जसि संत भगत

निसतारिआ ॥ प्रभ पाइे हम अवरु न भारिआ ॥७॥ साच महलि गुरि अलखु लखाइिआ ॥ निहचल महलु नही छाइिआ माइिआ ॥ साचि संतोखे भरमु चुकाइिआ ॥८॥ जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥ तिन की संगति गुरमुखि होई ॥ नानक साचि नामि मलु खोई ॥९॥१५॥ गउड़ी महला १ ॥ रामि नामि चितु रापै जा का ॥ उपजंपि दरसनु कीजै ता का ॥१॥ राम न जपहु अभागु तुमारा ॥ जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥ तितु घट अनहत बाजे तूरा ॥२॥ जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥ से प्रभि राखे किरपा धारि ॥३॥ जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥ तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥४॥ सरब जीआ महि इेको रवै ॥ मनमुखि अहंकारी फिरि जूनी भवै ॥५॥ सो बूझै जो सतिगुरु पाइे ॥ हउमै मारे गुर सबदे पाइे ॥६॥ अरध उरध की संधि किउ जानै ॥ गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥७॥ हम पापी निरगुण कउ गुणु करीअै ॥ प्रभ होइि दइिआलु नानक जन तरीअै ॥८॥१६॥ सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥

गउड़ी बैरागणि महला १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ गाई कउ गोइिली राखहि करि सारा ॥ अहिनिसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥१॥ इित उत राखहु दीन दइिआला ॥ तउ सरणागति नदरि निहाला ॥१॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ तूं दाता भुगता तूंहै तूं प्राण अधारा ॥२॥ किरतु पइिआ अध ऊरधी बिनु गिआन बीचारा ॥ बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥३॥ जगु बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा ॥ गुर सेवा प्रभु पाइिआ सचु मुकति दुआरा ॥४॥ निज घरि महलु अपार को अपरंपरु सोई ॥ बिनु सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥५॥ किआ लै आइिआ ले जाइि किआ फासहि जम जाला ॥ डोलु बधा कसि जेवरी आकासि पताला ॥६॥ गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईअै ॥ अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईअै ॥७॥ नदरि करे प्रभु आपणी गुण अंकि समावै ॥ नानक

मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥८॥१॥१७॥ गउड़ी महला १ ॥ गुर परसादी बूझि ले तउ होइ निबेरा ॥ घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥१॥ बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥ जे लख करम कमावही बिनु गुर अंधिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥ बिनु गुर पंथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥२॥ खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥ अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥३॥ सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥ जीवत कउ मूआ कहै मूड़े नही रोता ॥४॥ आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥ पर की कउ अपुनी कहै अपुनो नही भाइआ ॥५॥ मीठे कउ कउड़ा कहै कड़ूए कउ मीठा ॥ राते की निंदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥६॥ चेरी की सेवा करहि ठाकुरु नही दीसै ॥ पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥७॥ इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरू हमारा ॥ नानक चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥८॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥ गुर किरपा ते बूझीऐ सभु ब्रहमु समाइआ ॥९॥२॥१८॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन का सूतकु दूजा भाउ ॥ भरमे भूले आवउ जाउ ॥१॥ मनमुखि सूतकु कबहि न जाइ ॥ जिचरु सबदि न भीजै हरि कै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥ मरि मरि जंमै वारो वार ॥२॥ सूतकु अगनि पउणै पाणी माहि ॥ सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि ॥३॥ सूतकि करम न पूजा होइ ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥४॥ सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ॥ मरै न जनमै कालु न खाइ ॥५॥ सासत सिंमृति सोधि देखहु कोइ ॥ विणु नावै को मुकति न होइ ॥६॥ जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ॥ कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥७॥ साचा मरै न आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥८॥१॥ गउड़ी महला ३ ॥ गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥ हरि जीउ राखहु हिरदै उर धारा ॥ गुरमुखि सोभा साच दुआरा ॥१॥ पंडित हरि पड़ु तजहु विकारा ॥ गुरमुखि भउजलु उतरहु पारा

॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि विचहु हउमै जाइ ॥ गुरमुखि मैलु न लागै आइ ॥ गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥२॥ गुरमुखि करम धरम सचि होई ॥ गुरमुखि अहंकारु जलाइे दोई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु होई ॥३॥ आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥ लोक समझावहु सुणे न कोई ॥ गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई ॥४॥ मनमुखि डंफु बहुतु चतुराई ॥ जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥ आवै जावै ठउर न काई ॥५॥ मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥ बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥ जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥६॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥ गुरु दाता जुग चारे होई ॥७॥ गुरमुखि जाति पति नामे वडिआई ॥ साइर की पुत्री बिदारि गवाई ॥ नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥८॥२॥ गउड़ी मः ३ ॥ इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ ऐथै अगै हरि नामु सखाई ॥१॥ राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥ गुर परसादी मैलु उतारु ॥१॥ रहाउ ॥ वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥ मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥२॥ हउमै मैला इहु संसारा ॥ नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ॥ बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥३॥ सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥ गुर कै सबदि पंच संघारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥४॥ माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥ मनमुख अंध रहे लपटाई ॥ गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई ॥५॥ बहुते भेख करै भेखधारी ॥ अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ॥ आपु न चीनै बाजी हारी ॥६॥ कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥ माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥ बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई ॥७॥ नामि रते सदा बैरागी ॥ गृही अंतरि साचि लिव लागी ॥ नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥८॥३॥ गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा मूलु वेद अभिआसा ॥ तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥ त्रै गुण भरमे नाही निज घरि वासा ॥१॥ हम हरि राखे सतिगुरू मिलाइआ ॥ अनदिनु भगति हरि नामु दृड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला ॥ पड़ि वादु

वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥ ततु न चीनहि बन्नहि पंड पराला ॥२॥ मनमुख अगिआनि कुमारगि पाइे ॥ हरि नामु बिसारिआ बहु करम दृड़ाइे ॥ भवजलि डूबे दूजै भाइे ॥३॥ माइिआ का मुहताजु पंडितु कहावै ॥ बिखिआ राता बहुतु दुखु पावै ॥ जम का गलि जेवड़ा नित कालु संतावै ॥४॥ गुरमुखि जमकालु नेड़ि न आवै ॥ हउमै दूजा सबदि जलावै ॥ नामे राते हरि गुण गावै ॥५॥ माइिआ दासी भगता की कार कमावै ॥ चरणी लागै ता महलु पावै ॥ सद ही निरमलु सहजि समावै ॥६॥ हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥ तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज कराही ॥ सहजे गुण रवहि साचे मन माही ॥७॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइिआ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइिआ ॥ नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइिआ ॥८॥४॥ गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥ अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥ ता प्रभु पाइे गुर सबदु वखाणै ॥१॥ गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइि ॥ मनमुख खाधे दूजै भाइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥ गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥ मेरा प्रभु पाइिआ गुर कै सबदि सीधे ॥२॥ सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाइे ॥ मेरे प्रभ साचे कै मनि भाइे ॥ हरि गुण गावहि सहजि सुभाइे ॥३॥ बिनु गुर साचे भरमि भुलाइे ॥ मनमुख अंधे सदा बिखु खाइे ॥ जम डंडु सहहि सदा दुखु पाइे ॥४॥ जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥ हउमै मारि सचि लिव लाई ॥ सदा रहै हरि नामि लिव लाई ॥५॥ सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता ॥ मन सिउ मनु मिलाइि सभु जगु जीता ॥ इिन बिधि कुसलु तेरै मेरे मीता ॥६॥ सतिगुरू सेवे सो फलु पाइे ॥ हिरदै नामु विचहु आपु गवाइे ॥ अनहद बाणी सबदु वजाइे ॥७॥ सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥ भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥ नानक राम नामि वडिआई ॥८॥५॥ गउड़ी महला ३ ॥ त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइि ॥ बंधन न तूटहि मुकति न पाइि ॥ मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि ॥१॥ गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइि ॥ सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण कालै की

सिरि कारा ॥ नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ मरि जंमहि फिरि वारो वारा ॥२॥ अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥ मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥३॥ माइिआ करि मूलु जंत्र भरमाइे ॥ हरि जीउ विसरिआ दूजै भाइे ॥ जिसु नदरि करे सो परम गति पाइे ॥४॥ अंतरि साचु बाहरि साचु वरताइे ॥ साचु न छपै जे को रखै छपाइे ॥ गिआनी बूझहि सहजि सुभाइे ॥५॥ गुरमुखि साचि रहिआ लिव लाइे ॥ हउमै माइिआ सबदि जलाइे ॥ मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाइे ॥६॥ सतिगुरु दाता सबदु सुणाइे ॥ धावतु राखै ठाकि रहाइे ॥ पूरे गुर ते सोझी पाइे ॥७॥ आपे करता सृसटि सिरजि जिनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥८॥६॥ गउड़ी महला ३ ॥ नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥ नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥ अंमृतु नामु रसना नित गावै ॥ जिस नो कृपा करे सो हरि रसु पावै ॥१॥ अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा ॥१॥ रहाउ ॥ हिरदै सूखु भइिआ परगासु ॥ गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥ दासनि दास नित होवहि दासु ॥ गृह कुटंब महि सदा उदासु ॥२॥ जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥ परम पदारथु पावै सोई ॥ त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥ सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥३॥ मोह कुटंब सिउ प्रीति न होइि ॥ जा हिरदै वसिआ सचु सोइि ॥ गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु होइि ॥ हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइि ॥४॥ तूं करता मै अवरु न कोइि ॥ तुझु सेवी तुझ ते पति होइि ॥ किरपा करहि गावा प्रभु सोइि ॥ नाम रतनु सभ जग महि लोइि ॥५॥ गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥ अंतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥ सहजे सचु मिलिआ परसादी ॥ सतिगुरु पाइिआ पूरै वडभागी ॥६॥ हउमै ममता दुरमति दुख नासु ॥ जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥ जब हिरदै रविआ चरण निवासु ॥७॥ जिसु नामु देइि सोई जनु पाइे ॥ गुरमुखि मेले आपु गवाइे ॥ हिरदै साचा नामु वसाइे ॥ नानक सहजे साचि समाइे ॥८॥७॥ गउड़ी महला ३ ॥ मन ही मनु सवारिआ भै सहजि

सुभाइ ॥ सबदि मनु रंगिआ लिव लाइ ॥ निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥१॥ सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ॥ गोविदु पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥ मेरा प्रभु निरमला सभ तै रहिआ समाइ ॥ गुर किरपा ते मिलै मिलाइ ॥२॥ हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥ मेरा हरि प्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥ हरि किरपा ते राम गुण गाए ॥३॥ ध्रिगु बहु जीवणु जितु हरि नामि न लगै पिआरु ॥ ध्रिगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥ तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु ॥४॥ ध्रिगु ध्रिगु गृहु कुटंबु जितु हरि प्रीति न होइ ॥ सोई हमारा मीतु जो हरि गुण गावै सोइ ॥ हरि नाम बिना मै अवरु न कोइ ॥५॥ सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥ हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥ सदा अनन्दु हरि नामि लिव लाई ॥६॥ गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥ हउमै तृसना सभ अगनि बुझई ॥ बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥७॥ हरि आपे कृपा करे नामु देवै ॥ गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥ नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥८॥८॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंनि ॥ अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लह्मनि ॥१॥ हरि हरि राखहु कृपा धारि ॥ सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥१॥ रहाउ ॥ से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलमनि ॥ आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रह्मनि ॥२॥ जिस दा पिंडु पराण है तिस की सिरि कार ॥ एहु किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ॥३॥ नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ ॥४॥ सतिगुर ते जो मुहु फेरे एइ भ्रमदे ना टिकंनि ॥ धरति असमानु न झलई विचि विसटा पए पचंनि ॥५॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ मोह ठगउली पाइ ॥ जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ ॥६॥ सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैलु

गवाइ ॥ सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥७॥ हरि प्रभ दाता इेकु तूं तूं आपे बखसि मिलाइ ॥ जनु नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥८॥१॥६॥

राग गउड़ी पूरबी महला ४ करहले ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥ गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥१॥ मन करहला सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥ जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाइ ॥२॥ मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥ परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुड़ि चोटा खाइ ॥३॥ मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥ उपाइ कितै न लभई गुरु हिरदै हरि देखाइ ॥४॥ मन करहला मेरे प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥ घरु जाइ पावहि रंग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥५॥ मन करहला तूं मीतु मेरा पाखंडु लोभु तजाइ ॥ पाखंडि लोभी मारीऐ जम डंडु देइ सजाइ ॥६॥ मन करहला मेरे प्रान तूं मैलु पाखंडु भरमु गवाइ ॥ हरि अंमृत सरु गुरि पूरिआ मिलि संगती मलु लहि जाइ ॥७॥ मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिख सुणाइ ॥ इहु मोहु माइआ पसरिआ अंति साथि न कोई जाइ ॥८॥ मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥९॥ मन करहला गुरि मंनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥ गुर आगै करि जोदड़ी जन नानक हरि मेलाइ ॥१०॥१॥ गउड़ी महला ४ ॥ मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥ बन फिरि थके बन वासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥१॥ मन करहला गुर गोविंदु समालि ॥१॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ मनमुख फाथिआ महा जालि ॥ गुरमुखि प्राणी मुकतु है हरि हरि नामु समालि ॥२॥ मन करहला मेरे पिआरिआ सतसंगति सतिगुरु भालि ॥ सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥३॥ मन करहला वडभागीआ

हरि इक नदरि निहालि ॥ आपि छडाए छुटीऐ सतिगुर चरण समालि ॥४॥ मन करहला मेरे पिआरिआ विचि देही जोति समालि ॥ गुरि नउ निधि नामु विखालिआ हरि दाति करी दइआलि ॥५॥ मन करहला तूं चंचला चतुराई छडि विकरालि ॥ हरि हरि नामु समालि तूं हरि मुकति करे अंत कालि ॥६॥ मन करहला वडभागीआ तूं गिआनु रतनु समालि ॥ गुर गिआनु खड़गु हथि धारिआ जमु मारिअड़ा जमकालि ॥७॥ अंतरि निधानु मन करहले भ्रमि भवहि बाहरि भालि ॥ गुरु पुरखु पूरा भेटिआ हरि सजणु लधड़ा नालि ॥८॥ रंगि रतड़े मन करहले हरि रंगु सदा समालि ॥ हरि रंगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु समालि ॥९॥ हम पंखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु अकालि ॥ वडभागी गुरमुखि पाइआ जन नानक नामु समालि ॥१०॥२॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

जब इहु मन महि करत गुमाना ॥ तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥ जब इहु हूआ सगल की रीना ॥ ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥१॥ सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥ सतिगुर अपुनै मोहि दानु दीनी ॥१॥ रहाउ ॥ जब किस कउ इहु जानसि मंदा ॥ तब सगले इसु मेलहि फंदा ॥ मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥ ता ते इसु संगि नही बैराई ॥२॥ जब इनि अपुनी अपनी धारी ॥ तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥ जब इनि करणैहारु पछाता ॥ तब इस नो नाही किछु ताता ॥३॥ जब इनि अपुनो बाधिए मोहा ॥ आवै जाइ सदा जमि जोहा ॥ जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥ भेदु नाही है पारब्रहमा ॥४॥ जब इनि किछु करि माने भेदा ॥ तब ते दूख डंड अरु खेदा ॥ जब इनि एको एकी बूझिआ ॥ तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥५॥ जब इहु धावै माइआ अरथी ॥ नह तृपतावै नह तिस लाथी ॥ जब इस ते इहु होइए जउला ॥ पीछै लागि चली उठि कउला ॥६॥ करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिए ॥ मन मंदर महि दीपकु जलिए ॥ जीत हार की सोझी करी ॥ तउ इसु घर की

कीमति परी ॥७॥ करन करावन सभु किछु इकै ॥ आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥ दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥ सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥८॥१॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥१॥ ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ जासु जपत इह हउमै भागै ॥२॥ जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ जासु जपत रिदै अंमृतु संचा ॥ जासु जपत इह तृसना बुझै ॥ जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥३॥ जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ जासु जपत हरि होवहि साध ॥ जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥ जासु जपत मलु सगली खोवै ॥४॥ जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥ जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥५॥ जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥ जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥ जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥६॥ जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥ जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ जासु जपत इह निरमल सोइ ॥ जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥७॥ गुरि सुभ दृसटि सभ ऊपरि करी ॥ जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥८॥२॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥ पंच जना सिउ संगु निवारै ॥ दस इंद्री करि राखै वासि ॥ ता कै आतमै होइ परगासु ॥१॥ ऐसी दृड़ता ता कै होइ ॥ जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ साजनु दुसटु जा कै इक समानै ॥ जेता बोलणु तेता गिआनै ॥ जेता सुनणा तेता नामु ॥ जेता पेखनु तेता धिआनु ॥२॥ सहजे जागणु सहजे सोइ ॥ सहजे होता जाइ सु होइ ॥ सहजि बैरागु सहजे ही हसना ॥ सहजे चूप सहजे ही जपना ॥३॥ सहजे भोजनु सहजे भाउ ॥ सहजे मिटिए सगल दुराउ ॥ सहजे होआ साधू संगु ॥ सहजि मिलिए पारब्रहमु निसंगु ॥४॥ सहजे

गृह महि सहजि उदासी ॥ सहजे दुबिधा तन की नासी ॥ जा कै सहजि मनि भइआ अन्नदु ॥ ता कउ भेटिआ परमान्नदु ॥५॥ सहजे अंमृतु पीए नामु ॥ सहजे कीनो जीअ को दानु ॥ सहज कथा महि आतमु रसिआ ॥ ता कै संगि अबिनासी वसिआ ॥६॥ सहजे आसणु असथिरु भाइआ ॥ सहजे अनहत सबदु वजाइआ ॥ सहजे रुण झुणकारु सुहाइआ ॥ ता कै घरि पारब्रहमु समाइआ ॥७॥ सहजे जा कउ परिए करमा ॥ सहजे गुरु भेटिए सचु धरमा ॥ जा कै सहजु भइआ सो जाणै ॥ नानक दास ता कै कुरबाणै ॥८॥३॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रथमे गरभ वास ते टरिआ ॥ पुत्र कलत्र कुटंब संगि जुरिआ ॥ भोजनु अनिक प्रकार बहु कपरे ॥ सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥१॥ कवनु असथानु जो कबहु न टरै ॥ कवनु सबदु जितु दुरमति हरै ॥१॥ रहाउ ॥ इंद्र पुरी महि सरपर मरणा ॥ ब्रहम पुरी निहचलु नही रहणा ॥ सिव पुरी का होइगा काला ॥ त्रै गुण माइआ बिनसि बिताला ॥२॥ गिरि तर धरणि गगन अरु तारे ॥ रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥ दिनसु रैणि बरत अरु भेदा ॥ सासत सिंमृति बिनसहिगे बेदा ॥३॥ तीरथ देव देहुरा पोथी ॥ माला तिलकु सोच पाक होती ॥ धोती डंडउति परसादन भोगा ॥ गवनु करैगो सगलो लोगा ॥४॥ जाति वरन तुरक अरु हिंदू ॥ पसु पंखी अनिक जोनि जिंदू ॥ सगल पासारु दीसै पासारा ॥ बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥५॥ सहज सिफति भगति ततु गिआना ॥ सदा अन्नदु निहचलु सचु थाना ॥ तहा संगति साध गुण रसै ॥ अनभउ नगरु तहा सद वसै ॥६॥ तह भउ भरमा सोगु न चिंता ॥ आवणु जावणु मिरतु न होता ॥ तह सदा अन्नद अनहत आखारे ॥ भगत वसहि कीरतन आधारे ॥७॥ पारब्रहम का अंतु न पारु ॥ कउणु करै ता का बीचारु ॥ कहु नानक जिसु किरपा करै ॥ निहचल थानु साधसंगि तरै ॥८॥४॥ गउड़ी महला ५ ॥ जो इसु मारे सोई सूरा ॥ जो इसु मारे सोई पूरा ॥ जो इसु मारे तिसहि वडिआई ॥ जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥१॥ ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥ इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥१॥ रहाउ ॥

जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि ॥ जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥ जो इसु मारे तिस की तृसना बुझै ॥ जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥२॥ जो इसु मारे सो धनवंता ॥ जो इसु मारे सो पतिवंता ॥ जो इसु मारे सोई जती ॥ जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥३॥ जो इसु मारे तिस का आइिआ गनी ॥ जो इसु मारे सु निहचलु धनी ॥ जो इसु मारे सो वडभागा ॥ जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥४॥ जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥ जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥ जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥ जो इसु मारे सु सहज धिआनी ॥५॥ इसु मारी बिनु थाइि न परै ॥ कोटि करम जाप तप करै ॥ इसु मारी बिनु जनमु न मिटै ॥ इसु मारी बिनु जम ते नही छुटै ॥६॥ इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥ इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥७॥ जा कउ भइे कृपाल कृपा निधि ॥ तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥ गुरि दुबिधा जा की है मारी ॥ कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥८॥५॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥ हरि सिउ जुरै त निहचलु चीतु ॥ हरि सिउ जुरै न विआपै काड़्हा ॥ हरि सिउ जुरै त होइि निसतारा ॥१॥ रे मन मेरे तूं हरि सिउ जोरु ॥ काजि तुहारै नाही होरु ॥१॥ रहाउ ॥ वडे वडे जो दुनीआदार ॥ काहू काजि नाही गावार ॥ हरि का दासु नीच कुलु सुणहि ॥ तिस कै संगि खिन महि उधरहि ॥२॥ कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥ कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥ कोटि पुन्न सुणि हरि की बाणी ॥ कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥३॥ मन अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥ बिनसि जाहि माइिआ के हेत ॥ हरि अबिनासी तुमरै संगि ॥ मन मेरे रचु राम कै रंगि ॥४॥ जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥ जा कै कामि न जोहहि दूत ॥ जा कै कामि तेरा वड गमरु ॥ जा कै कामि होवहि तूं अमरु ॥५॥ जा के चाकर कउ नही डान ॥ जा के चाकर कउ नही बान ॥ जा कै दफतरि पुछै न लेखा ॥ ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥६॥ जा कै ऊन नाही काहू बात ॥ इेकहि आपि अनेकहि भाति ॥ जा की दृसटि होइि सदा निहाल ॥ मन मेरे करि ता की घाल ॥७॥ ना को चतुरु नाही को मूड़ा ॥ ना को

हीणु नाही को सूरा ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा ॥ सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥८॥६॥ गउड़ी महला ५ ॥ बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी ॥ तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥१॥ इेक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास ॥ काग बतन बिसटा महि वास ॥२॥ बिनु सिमरन भइे कूकर काम ॥ साकत बेसुआ पूत निनाम ॥३॥ बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥ बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥४॥ बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥ साकत थान भरिसट फिराही ॥५॥ बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥६॥ बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥७॥ जिसु भइिआ कृपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ॥ कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥८॥७॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर कै बचनि मोहि परम गति पाई ॥ गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥१॥ गुर कै बचनि धिआइिए मोहि नाउ ॥ गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी ॥ गुर किरपा ते अंमृत मेरी बाणी ॥२॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ गुर की दइिआ ते मेरा वड परतापु ॥३॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ गुर कै बचनि पेखिए सभु ब्रहमु ॥४॥ गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु ॥ गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥५॥ गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥ गुर कै बचनि पाइिआ नाउ निधि ॥६॥ जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ तिस की कटीअै जम की फासा ॥७॥ गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥ नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥८॥८॥ गउड़ी महला ५ ॥ तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ गुर के चरण धोइि धोइि पीवा ॥१॥ गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥२॥ तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥३॥ तिसु गुर कै गृहि ढोवउ पाणी ॥ जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥४॥ तिसु गुर कै गृहि पीसउ नीत ॥ जिसु

परसादि वैरी सभ मीत ॥५॥ जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥६॥ आपे लाइिए अपना पिआरु ॥ सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥७॥ कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥८॥९॥ गउड़ी महला ५ ॥ मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥ नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु असनेहु ॥१॥ रहाउ ॥ नाम बिना जो पहिरै खाइि ॥ जिउ कूकरु जूठन महि पाइि ॥१॥ नाम बिना जेता बिउहारु ॥ जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥२॥ नामु बिसारि करे रस भोग ॥ सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥३॥ नामु तिआगि करे अन काज ॥ बिनसि जाइि झूठे सभि पाज ॥४॥ नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥ कोटि करम करतो नरकि जावै ॥५॥ हरि का नामु जिनि मनि न आराधा ॥ चोर की निआई जम पुरि बाधा ॥६॥ लाख अडंबर बहुतु बिसथारा ॥ नाम बिना झूठे पासारा ॥७॥ हरि का नामु सोई जनु लेइि ॥ करि किरपा नानक जिसु देइि ॥८॥१०॥ गउड़ी महला ५ ॥ आदि मधि जो अंति निबाहै ॥ सो साजनु मेरा मनु चाहै ॥१॥ हरि की प्रीति सदा संगि चालै ॥ दइिआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥१॥ रहाउ ॥ बिनसत नाही छोडि न जाइि ॥ जह पेखा तह रहिआ समाइि ॥२॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु जीअ दाता ॥ भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥३॥ जीवन प्रान अधार मेरी रासि ॥ प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥४॥ माइिआ सिलक काटी गोपालि ॥ करि अपुना लीनो नदरि निहालि ॥५॥ सिमरि सिमरि काटे सभि रोग ॥ चरण धिआन सरब सुख भोग ॥६॥ पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥ हरि अंतरि बाहरि संगि रखवाला ॥७॥ कहु नानक हरि हरि पदु चीन ॥ सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥८॥११॥

रागु गउड़ी माझ महला ५　　　　　　੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

खोजत फिरे असंख अंतु न पारीआ ॥ सेई होइे भगत जिना किरपारीआ ॥१॥ हउ वारीआ हरि वारीआ ॥१॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि पंथु डराउ बहुतु भैहारीआ ॥ मै तकी एट संताह लेहु उबारीआ ॥

२॥ मोहन लाल अनूप सरब साधारीआ ॥ गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीआ ॥३॥ मै कीइे मित्र अनेक इकसु बलिहारीआ ॥ सभ गुण किस ही नाहि हरि पूर भंडारीआ ॥४॥ चहु दिसि जपीअै नाउ सूखि सवारीआ ॥ मै आही एड़ि तुहारि नानक बलिहारीआ ॥५॥ गुरि काढिए भुजा पसारि मोह कूपारीआ ॥ मै जीतिए जनमु अपारु बहुरि न हारीआ ॥६॥ मै पाइिए सरब निधानु अकथु कथारीआ ॥ हरि दरगह सोभावंत बाह लुडारीआ ॥७॥ जन नानक लधा रतनु अमोलु अपारीआ ॥ गुर सेवा भउजलु तरीअै कहउ पुकारीआ ॥८॥१२॥

गउड़ी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइिण हरि रंग रंगो ॥ जपि जिहवा हरि इेक मंगो ॥१॥ रहाउ ॥ तजि हउमै गुर गिआन भजो ॥ मिलि संगति धुरि करम लिखिए ॥१॥ जो दीसै सो संगि न गइिए ॥ साकतु मूड़ु लगे पचि मुइिए ॥ २॥ मोहन नामु सदा रवि रहिए ॥ कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिए ॥३॥ हरि संतन करि नमो नमो ॥ नउ निधि पावहि अतुलु सुखो ॥४॥ नैन अलोवउ साध जनो ॥ हिरदै गावहु नाम निधो ॥५॥ काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥ जनम मरन दुहु ते रहिए ॥६॥ दूखु अंधेरा घर ते मिटिए ॥ गुरि गिआनु दृड़ाइिए दीप बलिए ॥७॥ जिनि सेविआ सो पारि परिए ॥ जन नानक गुरमुखि जगतु तरिए ॥ ८॥१॥१३॥ महला ५ गउड़ी ॥ हरि हरि गुरु गुरु करत भरम गड़े ॥ मेरै मनि सभि सुख पाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ बलतो जलतो तउकिआ गुर चंदनु सीतलाइिए ॥१॥ अगिआन अंधेरा मिटि गइिआ गुर गिआनु दीपाइिए ॥२॥ पावकु सागरु गहरो चरि संतन नाव तराइिए ॥३॥ ना हम करम न धरम सुच प्रभि गहि भुजा आपाइिए ॥४॥ भउ खंडनु दुख भंजनो भगति वछल हरि नाइिए ॥५॥ अनाथह नाथ कृपाल दीन संमृथ संत एटाइिए ॥६॥ निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइिए ॥७॥ नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइिए ॥८॥२॥१४॥

गउड़ी महला ५ ॥ रंगि संगि बिखिआ के भोगा इन संगि अंध न जानी ॥१॥ हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥ हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥२॥ जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥३॥ जिउ उलझाइए बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥४॥ भाई मीत बंधप सखे पाछे तिनहू कउ संपानी ॥५॥ जितु लागो मनु बासना अंति साई प्रगटानी ॥६॥ अह्मबुधि सुचि करम करि इह बंधन बंधानी ॥७॥ दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥८॥३॥१५॥४४॥ जुमला

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥ मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥ सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥ धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए ॥ सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥ मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥१॥ मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥ किउ सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥ नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ॥ बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥ नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥२॥ मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥ सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥ निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥ साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलए ॥ नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥३॥ मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥ गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि एमाहए ॥ साजन रह्मसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहए ॥ कर जोड़ि सा धन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिन्नीआ ॥ नानक पिरु धन करहि

रलीआ इछ मेरी पुन्नीआ ॥४॥१॥ गउड़ी छंत महला १ ॥ सुणि नाह प्रभू जीउ इेकलड़ी बन माहे ॥ किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ॥ धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ॥ नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेन्नती मेरीआ ॥ बाझहु पिआरे कोइि न सारे इेकलड़ी कुरलाइे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाइे ॥१॥ पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ॥ रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥ सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥ सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अंमृत बाणी ॥ नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी ॥२॥ माइिआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥ हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै ॥ पुन्न दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥ नाम बिना गति कोइि न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥ नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥३॥ तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ तिसु बाझु वखरु कोइि न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥ परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइिआ ॥ नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइिआ ॥४॥२॥

रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३ ੧ਓ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

सा धन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥ खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥ बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु न पाईऐ ॥ जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईऐ ॥ हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाइे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाइे ॥१॥ धन रैणि सुहेलड़ीइे जीउ हरि सिउ चितु लाइे ॥ सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाइे ॥ विचहु आपु गवाइे हरि गुण गाइे अनदिनु लागा भाए ॥ सुणि सखी सहेली

जीअ की मेली गुर कै सबदि समाए ॥ हरि गुण सारी ता कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥ नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥२॥ धन इेकलड़ी जीउ बिनु नाह पिआरे ॥ दूजै भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥ बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु तारे माइिआ मोहि खुआई ॥ कूड़ि विगुती ता पिरि मुती सा धन महलु न पाई ॥ गुर सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहै समाइे ॥ नानक कामणि सदा रंगि राती हरि जीउ आपि मिलाइे ॥३॥ ता मिलीअै हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाइे ॥ बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाइे ॥ गुरु भरमु चुकाइे इिउ मिलीअै माइे ता सा धन सुखु पाइे ॥ गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाइे ॥ कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइिआ गुर कै भाइि पिआरे ॥४॥१॥ गउड़ी महला ३ ॥ पिर बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥ पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु तनि न सुहाई ॥ कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईअै ॥ सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईअै ॥ गुर सबदै मेला ता पिरु रावी लाहा नामु संसारे ॥ नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥१॥ सा धन रंगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे ॥ अहिनिसि रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥ गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इिन बिधि मिलहु पिआरे ॥ सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ॥ अपुने गुर मिलि रहीअै अंमृतु गहीअै दुबिधा मारि निवारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइिआ सगले दूख विसारे ॥२॥ कामणि पिरहु भुली जीउ माइिआ मोहि पिआरे ॥ झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूअै जनमु न हारे ॥ गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥ हरि का नामु रिदै वसाइे अैसा करे सीगारो ॥ नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥३॥ मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥ मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अन्नु न पाणी ॥ पाणी अन्नु न भावै मरीअै हावै बिनु पिर किउ सुखु

पाईऐ ॥ गुर आगै करउ बिन्नती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ॥ आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए ॥ नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए ॥४॥२॥ गउड़ी महला ३ ॥ कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए ॥ मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ॥ दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए ॥ इहु सरीरु कूड़ि कुसति भरिआ गल ताई पाप कमाए ॥ गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥ नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए ॥१॥ कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥ रैणि सुखि सुती जीउ अंतरि उरि धारे ॥ अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे ॥ अंतरि महलु पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ॥ अंमृतु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे ॥ नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे ॥२॥ आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे ॥ कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे ॥ सचि सबदि सीगारे हउमै मारे गुरमुखि कारज सवारे ॥ जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ॥ मनमुखि कामि विआपी मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥ नानक मनमुखि थाउ न पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥३॥ मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥ आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा ॥ अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ॥ प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सदा अन्नदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ नानक सहजे हरि वरु पाइआ सा धन नउ निधि पाई ॥४॥३॥ गउड़ी महला ३ ॥ माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ ॥ राम नामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ ॥ सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ ॥ गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ खिन महि राम नामि किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥ नानक राम नामि निसतारा कंचन भए मनूरा ॥१॥

इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी ॥ मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुइे बिनु पाणी ॥ डूबि मुइे बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे ॥ जो आइिआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥ गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै आपि तरै कुल तारे ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥२॥ राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ बाजी है संसारा ॥ दृड़ु भगति सची जीउ राम नामु वापारा ॥ राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ ॥ सेवा सुरति भगति इिह साची विचहु आपु गवाईऐ ॥ हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाइे ॥ नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिनु हरि गुण गाइे ॥३॥ आपि कराइे करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥ आपे सतिगुरु आपि सबदु जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥ जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाइे ॥ आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराइे ॥ आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाइे ॥ नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराइे ॥४॥४॥ गउड़ी महला ३ ॥ गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआइे ॥ मंञहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाइे ॥ घरि बैठिआ हरि पाइे सदा चितु लाइे सहजे सति सुभाइे ॥ गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराइे ॥ नामो बीजे नामो जंमै नामो मंनि वसाइे ॥ नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाइे ॥१॥ हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाइे ॥ रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाइे ॥ सदा हरि रसु पाइे जा हरि भाइे रसना सबदि सुहाइे ॥ नामु धिआइे सदा सुखु पाइे नामि रहै लिव लाइे ॥ नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाइे ॥ नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लइे लवाइे ॥२॥ इेह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाइे ॥ दूजै किनै सुखु न पाइिए पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाइे ॥ बिखिआ लोभि लुभाइे भरमि भुलाइे एहु किउ करि सुखु पाइे ॥ चाकरी विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु

गवाइे ॥ माइिआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताइे ॥ नानक माइिआ का दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाइे ॥३॥ मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाइे ॥ माइिआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाइे ॥ किउ मारगु पाइे बिनु सतिगुर भाइे मनमुखि आपु गणाइे ॥ हरि के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चितु लाइे ॥ जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाइे ॥ नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि बुझाइे ॥४॥५॥७॥

रागु गउड़ी छंत महला ५ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि बैरागु भइिआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥ मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥ पुरखो बिधाता इेकु स्रीधरु किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥ कर करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥ सासि सासि न घड़ी विसरै पलु मूरतु दिनु राते ॥ नानक सारिंग जिउ पिआसे किउ मिलीअै प्रभ दाते ॥१॥ इिक बिनउ करउ जीउ सुणि कंत पिआरे ॥ मेरा मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥ चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरइे ॥ गुणवंत नाह दइिआलु बाला सरब गुण भरपूरइे ॥ पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुड़ी बुरिआरे ॥ बिनवंति नानक दइिआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे ॥२॥ हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥ हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइि सदेसा ॥ अरपिआ त सीसु सुथानि गुर पहि संगि प्रभू दिखाइिआ ॥ खिन माहि सगला दूखु मिटिआ मनहु चिंदिआ पाइिआ ॥ दिनु रैणि रलीआ करै कामणि मिटे सगल अंदेसा ॥ बिनवंति नानकु कंतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥३॥ मेरै मनि अनदु भइिआ जीउ वजी वाधाई ॥ घरि लालु आइिआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइिआ ॥ सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइिआ ॥ अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई ॥ बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ

कंतु सुखदाई ॥४॥१॥ गउड़ी महला ५ ॥ मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥ मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरम साला ॥ धरम साल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन कृपारा ॥ बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥१॥ मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥ मोहन तूं मानहि इेकु जी अवर सभ राली ॥ मानहि त इेकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥ तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥२॥ मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥ जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इिक मनि धिआवहे ॥ मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥ बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥३॥ मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ मोहन पुत्र मीत भाई कुटंब सभि तारे ॥ तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइिआ ॥ जिनी तुधनो धन्नु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइिआ ॥ बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥ बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥ ४॥२॥ गउड़ी महला ५ ॥ सलोकु ॥ पतित असंख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥ नानक राम नामु जपि पावको तिन किलबिख दाहनहार ॥१॥ छंत ॥ जपि मना तूं राम नराइिणु गोविंदा हरि माधो ॥ धिआइि मना मुरारि मुकंदे कटीऐ काल दुख फाधो ॥ दुखहरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ ॥ जम पंथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीऐ ॥ कलिमलह दहता सुधु करता दिनसु रैणि अराधो ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिंद माधो ॥१॥ सिमरि मना दामोदरु दुखहरु भै भंजनु हरि राइिआ ॥ स्रीरंगो दइिआल मनोहरु भगति वछलु बिरदाइिआ ॥

भगति वछल पुरख पूरन मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तम अंध कूप ते उधारै नामु मंनि वसाईऐ ॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन गुण अनिक भगती गाइिआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा पारब्रहम हरि राइिआ ॥२॥ चेति मना पारब्रहमु परमेसरु सरब कला जिनि धारी ॥ करुणा मै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥ प्राण मन तन जीअ दाता बेअंत अगम अपारो ॥ सरणि जोगु समरथु मोहनु सरब दोख बिदारो ॥ रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा समरथ सभ कल धारी ॥३॥ गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभ ते ऊच दइिआला ॥ बिसंभरु देवन कउ इेकै सरब करै प्रतिपाला ॥ प्रतिपाल महा दइिआल दाना दइिआ धारे सभ किसै ॥ कालु कंटकु लोभु मोहु नासै जीअ जा कै प्रभु बसै ॥ सुप्रसन्न देवा सफल सेवा भई पूरन घाला ॥ बिनवंत नानक इिछ पुनी जपत दीन दैआला ॥४॥३॥ गउड़ी महला ५ ॥ सुणि सखीइे मिलि उदमु करेहा मनाइि लैहि हरि कंतै ॥ मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मंतै ॥ सखी वसि आइिआ फिरि छोडि न जाई इिह रीति भली भगवंतै ॥ नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जंतै ॥१॥ सुणि सखीइे इिह भली बिन्नती इेहु मतांँतु पकाईऐ ॥ सहजि सुभाइि उपाधि रहत होइि गीत गोविंदहि गाईऐ ॥ कलि कलेस मिटहि भ्रम नासहि मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥२॥ सखी इिछ करी नित सुख मनाई प्रभ मेरी आस पुजाइे ॥ चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाइे ॥ खोजि लहउ हरि संत जना संगु संमृथ पुरख मिलाइे ॥ नानक तिन मिलिआ सुरिजनु सुखदाता से वडभागी माइे ॥३॥ सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा मनु तनु हरि संगि हिलिआ ॥ सुणि सखीइे मेरी नीद भली मै आपनड़ा पिरु मिलिआ ॥ भ्रमु खोइिए साँति सहजि सुआमी परगासु भइिआ कउलु खिलिआ ॥ वरु पाइिआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥४॥४॥२॥५॥११॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥ सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ गुरदेव साँति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ गुरदेव तीरथु अंमृत सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥ सलोकु ॥ आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥ नानक इेको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥१॥ पउड़ी ॥ एअं साध सतिगुर नमसकारं ॥ आदि मधि अंति निरंकारं ॥ आपहि सुन्न आपहि सुख आसन ॥ आपहि सुनत आप ही जासन ॥ आपन आपु आपहि उपाइिए ॥ आपहि बाप आप ही माइिए ॥ आपहि सूखम आपहि असथूला ॥ लखी न जाई नानक लीला ॥१॥ करि किरपा प्रभ दीन दइिआला ॥ तेरे संतन की मनु होइि रवाला ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन इेक ॥ इेकहि इेक बखाननो नानक इेक अनेक ॥१॥ पउड़ी ॥ एअं गुरमुखि कीए अकारा ॥ इेकहि सूति परोवनहारा ॥ भिन्न भिन्न त्रै गुण बिसथारं ॥ निरगुन ते सरगुन दृसटारं ॥ सगल भाति करि करहि उपाइिए ॥ जनम मरन मन मोहु बढाइिए ॥ दुहू भाति ते आपि निरारा ॥ नानक अंतु न पारावारा ॥२॥ सलोकु ॥ सेई साह भगवंत से सचु संपै हरि रासि ॥ नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥१॥ पवड़ी ॥ ससा सति सति सति सोऊ ॥ सति पुरख ते भिन्न न कोऊ ॥ सोऊ सरनि परै जिह पायं ॥ सिमरि सिमरि गुन गाइि सुनायं ॥ संसै भरमु नही कछु बिआपत ॥ प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥ सो साधू इिह पहुचनहारा ॥ नानक ता कै सद बलिहारा ॥३॥ सलोकु ॥ धनु धनु कहा पुकारते माइिआ मोह

सभ कूर ॥ नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥१॥ पवड़ी ॥ धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥ धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥ धनु नही बाछहि सुरग न आछहि ॥ अति पृअ प्रीति साध रज राचहि ॥ धंधे कहा बिआपहि ताहू ॥ जो इेक छाडि अन कतहि न जाहू ॥ जा कै हीऔ दीए प्रभ नाम ॥ नानक साध पूरन भगवान ॥४॥ सलोक ॥ अनिक भेख अरु ङिआन धिआन मनहठि मिलिअउ न कोइि ॥ कहु नानक किरपा भई भगतु ङिआनी सोइि ॥१॥ पउड़ी ॥ ङंङा ङिआनु नही मुख बातउ ॥ अनिक जुगति सासत्र करि भातउ ॥ ङिआनी सोइि जा कै दृड़ सोऊ ॥ कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥ ङिआनी रहत आगिआ दृड़ु जा कै ॥ उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥ ङिआनी ततु गुरमुखि बीचारी ॥ नानक जा कउ किरपा धारी ॥५॥ सलोकु ॥ आवन आइे सृसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर ॥ नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर ॥१॥ पउड़ी ॥ या जुग महि इेकहि कउ आइिआ ॥ जनमत मोहिए मोहनी माइिआ ॥ गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥ सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ उरझि परे जो छोडि छडाना ॥ देवनहारु मनहि बिसराना ॥ धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥ इित उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥६॥ सलोकु ॥ आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिन्न न कोइि ॥ आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइि ॥१॥ पउड़ी ॥ इेऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥ मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥ इिनि माइिआ त्रै गुण बसि कीने ॥ आपन मोह घटे घटि दीने ॥ इे साजन कछु कहहु उपाइिआ ॥ जा ते तरउ बिखम इिह माइिआ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलाइे ॥ नानक ता कै निकटि न माइे ॥७॥ सलोकु ॥ किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥ पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥१॥ पउड़ी ॥ इेकहि आपि करावनहारा ॥ आपहि पाप पुन्न बिसथारा ॥ इिआ जुग जितु जितु आपहि लाइिए ॥ सो सो पाइिए जु आपि दिवाइिए ॥ उआ का अंतु न जानै कोऊ ॥ जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥ इेकहि ते सगला बिसथारा ॥ नानक आपि सवारनहारा ॥८॥ सलोकु ॥ राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रंग बिख सोर ॥ नानक तिह

सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥१॥ पउड़ी ॥ रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥ हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ॥ प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥ भ्रम के मोहे नह बुझहि सो प्रभु सदहू संग ॥ लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥ जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल बुधि ॥९॥ सलोकु ॥ टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥ जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ॥१॥ पउड़ी ॥ रारा रंगहु इआ मनु अपना ॥ हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥ आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ उआ महली पावहि तू बासा ॥ जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ मसतकि करमु लिखिए धुरि जा कै ॥ हरि संपै नानक घरि ता कै ॥१०॥ सलोकु ॥ लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥ लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥१॥ पउड़ी ॥ लला लपटि बिखै रस राते ॥ अहंबुधि माइआ मद माते ॥ इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ कोऊ ऊन न कोऊ पूरा ॥ कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥११॥ सलोकु ॥ लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह ॥ दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह ॥१॥ पउड़ी ॥ लला ता कै लवै न कोऊ ॥ एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ होवनहारु होत सद आइआ ॥ उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥ कीट हसति महि पूर समाने ॥ प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥ नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥१२॥ सलोकु ॥ आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ॥ नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ॥१॥ पउड़ी ॥ आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥ जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥ आइ बसहि साधू कै संगे ॥ अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥ आवत सो जनु नामहि राता ॥ जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥ नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥१३॥ सलोकु ॥ यासु जपत मनि होइ अन्नदु बिनसै दूजा भाउ ॥ दूख

दरद तृसना बुझै नानक नामि समाउ ॥१॥ पउड़ी ॥ यया जारउ दुरमति दोऊ ॥ तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥ यया जाइ परहु संत सरना ॥ जिह आसर इआ भवजलु तरना ॥ यया जनमि न आवै सोऊ ॥ इेक नाम ले मनहि परोऊ ॥ यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥ नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै इेक ॥१४॥ सलोकु ॥ अंतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत ॥१॥ पउड़ी ॥ अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥ इिह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिए सभु कोइि ॥ का को मात पिता सुत धीआ ॥ गृह बनिता कछु संगि न लीआ ॥ अैसी संचि जु बिनसत नाही ॥ पति सेती अपुनै घरि जाही ॥ साधसंगि कलि कीरतनु गाइिआ ॥ नानक ते ते बहुरि न आइिआ ॥१५॥ सलोकु ॥ अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत ॥ मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥१॥ पउड़ी ॥ ङंङा खटु सासत्र होइि ङिआता ॥ पूरकु कुंभक रेचक करमाता ॥ ङिआन धिआन तीरथ इिसनानी ॥ सोमपाक अपरस उदिआनी ॥ राम नाम संगि मनि नही हेता ॥ जो कछु कीनो सोऊ अनेता ॥ उआ ते ऊतमु गनउ चंडाला ॥ नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥१६॥ सलोकु ॥ कुंट चारि दह दिसि भ्रमे करम किरति की रेख ॥ सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिए लेख ॥१॥ पवड़ी ॥ कका कारन करता सोऊ ॥ लिखिए लेखु न मेटत कोऊ ॥ नही होत कछु दोऊ बारा ॥ करनैहारु न भूलनहारा ॥ काहू पंथु दिखारै आपै ॥ काहू उदिआन भ्रमत पछुतापै ॥ आपन खेलु आप ही कीनो ॥ जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥१७॥ सलोकु ॥ खात खरचत बिलछत रहे टूटि न जाहि भंडार ॥ हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥१॥ पउड़ी ॥ खखा खूना कछु नही तिसु संम्रथ कै पाहि ॥ जो देना सो दे रहिए भावै तह तह जाहि ॥ खरचु खजाना नाम धनु इिआ भगतन की रासि ॥ खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥ खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत कृपाल ॥ सदीव गनीव सुहावने राम नाम गृहि माल ॥ खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥ नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी

तिना परी ॥१८॥ सलोकु ॥ गनि मिनि देखहु मनै माहि सरपर चलनो लोग ॥ आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥१॥ पउड़ी ॥ गगा गोबिद गुण रवहु सासि सासि जपि नीत ॥ कहा बिसासा देह का बिलम न करिहो मीत ॥ नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥ एह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु ॥ गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इहि ठाइ ॥ छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥ गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥ नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥१९॥ सलोकु ॥ घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥ आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥१॥ पउड़ी ॥ घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥ नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥ घूलहि तउ मन जउ आवहि सरना ॥ नाम ततु कलि महि पुनहचरना ॥ घालि घालि अनिक पछुतावहि ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥ घोलि महा रसु अंम्रितु तिह पीआ ॥ नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥२०॥ सलोकु ॥ ङणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार ॥ जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥१॥ पउड़ी ॥ ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥ अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥ ङिआन धिआन ताहू कउ आए ॥ करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥ ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥ काची गागरि सरपर फूटै ॥ सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥ प्रगट भए नानक नह छपिआ ॥२१॥ सलोकु ॥ चिति चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसांत ॥ प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मतांत ॥१॥ पउड़ी ॥ चचा चरन कमल गुर लागा ॥ धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥ चारि कुंट दह दिसि भ्रमि आइओ ॥ भई क्रिपा तब दरसनु पाइओ ॥ चार बिचार बिनसिओ सभ दूआ ॥ साधसंगि मनु निरमल हूआ ॥ चिंत बिसारी एक द्रिसटेता ॥ नानक गिआन अंजनु जिह नेत्रा ॥२२॥ सलोकु ॥ छाती सीतल मनु सुखी छंत गोबिद गुन गाइ ॥ ऐसी किरपा करहु प्रभ नानक दास दसाइ ॥१॥ पउड़ी ॥ छछा छोहरे दास तुमारे ॥ दास दासन के पानीहारे ॥ छछा

छारु होत तेरे संता ॥ अपनी कृपा करहु भगवंता ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ संतन की मन टेक टिकाई ॥ छारु की पुतरी परम गति पाई ॥ नानक जा कउ संत सहाई ॥२३॥ सलोकु ॥ जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥ अहमबुधि बंधन परे नानक नाम छुटार ॥१॥ पउड़ी ॥ जजा जानै हउ कछु हूआ ॥ बाधिए जिउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ जउ जानै हउ भगतु गिआनी ॥ आगै ठाकुरि तिलु नही मानी ॥ जउ जानै मै कथनी करता ॥ बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥ साधसंगि जिह हउमै मारी ॥ नानक ता कउ मिले मुरारी ॥२४॥ सलोकु ॥ झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥ काह्रा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥१॥ पउड़ी ॥ झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥ राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥ झूरत झूरत साकत मूआ ॥ जा कै रिदै होत भाउ बीआ ॥ झरहि कसंमल पाप तेरे मनूआ ॥ अंमृत कथा संतसंगि सुनूआ ॥ झरहि काम क्रोध द्रुसटाई ॥ नानक जा कउ कृपा गुसाई ॥२५॥ सलोकु ॥ ञतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न पावहु मीत ॥ जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥१॥ पवड़ी ॥ ञंञा ञाणहु दृड़ु सही बिनसि जात इेह हेत ॥ गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥ ञो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीऐ संगु ॥ ञाणहु इआ बिधि सही चित झूठउ माइआ रंगु ॥ ञाणत सोई संतु सुइ भ्रम ते कीचित भिन्न ॥ अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसन्न ॥ ञा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥ नानक तिह उसतति करउ ञाहू कीए संजोग ॥२६॥ सलोकु ॥ टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥ नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥१॥ पउड़ी ॥ टहल करहु तउ इेक की जा ते बृथा न कोइि ॥ मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइि ॥ टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध कृपाल ॥ साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइिआल ॥ टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥ टलहि जाम के दूत तिह जु साधू संगि समाहि ॥ बारि बारि जाउ संत सदके ॥ नानक पाप बिनासे कदि के ॥२७॥ सलोकु ॥ ठाक न होती तिनहु दरि जिह होवहु सुप्रसन्न ॥ जो जन

प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धंनि ॥१॥ पउड़ी ॥ ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥ जो सगल तिआगि इेकहि लपटाही ॥ ठहकि ठहकि माइिआ संगि मूड़े ॥ उआ कै कुसल न कतहू हूड़े ॥ ठाँढि परी संतह संगि बसिआ ॥ अंमृत नामु तहा जीअ रसिआ ॥ ठाकुर अपुने जो जनु भाइिआ ॥ नानक उआ का मनु सीतलाइिआ ॥२८॥ सलोकु ॥ डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥ डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥१॥ पउड़ी ॥ डडा डेरा इिहु नही जह डेरा तह जानु ॥ उआ डेरा का संजमो गुर कै सबदि पछानु ॥ इिआ डेरा कउ स्रमु करि घालै ॥ जा का तसू नही संगि चालै ॥ उआ डेरा की सो मिति जानै ॥ जा कउ दृसटि पूरन भगवानै ॥ डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइिआ ॥ नानक ते जन नह डोलाइिआ ॥२९॥ सलोकु ॥ ढाहन लागे धरम राइि किनहि न घालिए बंध ॥ नानक उबरे जपि हरी साधसंगि सनबंध ॥१॥ पउड़ी ॥ ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इिआ मन माहि ॥ संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥ ढेरी ढाहहु साधसंगि अहंबुधि बिकराल ॥ सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥ ढेरी जामै जमि मरै गरभ जोनि दुख पाइि ॥ मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइि ॥ ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइि ॥ दुख के फाहे काटिआ नानक लीड़े समाइि ॥३०॥ सलोकु ॥ जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥ णा हउ णा तूं णह छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥१॥ पउड़ी ॥ णाणा रण ते सीझीऐ आतम जीतै कोइि ॥ हउमै अन सिउ लरि मरै सो सोभा दू होइि ॥ मणी मिटाइि जीवत मरै गुर पूरे उपदेस ॥ मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥ णा को जाणै आपणो इेकहि टेक अधार ॥ रैणि दिणसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥ रेण सगल इिआ मनु करै इेऊ करम कमाइि ॥ हुकमै बूझै सदा सुखु नानक लिखिआ पाइि ॥३१॥ सलोकु ॥ तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥ नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥१॥ पउड़ी ॥ तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइि ॥ फल पावहि मन बाछते

तपति तुहारी जाइ ॥ त्रास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥ गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥ ताहू संगि न धनु चलै गृह जोबन नह राज ॥ संतसंगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥ ताता कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥ प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई बाप ॥३२॥ सलोकु ॥ थाके बहु बिधि घालते तृपति न तृसना लाथ ॥ संचि संचि साकत मूझे नानक माइआ न साथ ॥१॥ पउड़ी ॥ थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ अनिक बंच बल छल करहु माइआ इेक उपाव ॥ थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥ मन कै कामि न आवई अंते अउसर बार ॥ थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख लेहु ॥ प्रीति करहु सद इेक सिउ इआ साचा असनेहु ॥ कारन करन करावनो सभ बिधि इेकै हाथ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जंत अनाथ ॥३३॥ सलोकु ॥ दासह इेकु निहारिआ सभु कछु देवनहार ॥ सासि सासि सिमरत रहहि नानक दरस अधार ॥१॥ पउड़ी ॥ ददा दाता इेकु है सभ कउ देवनहार ॥ देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार ॥ दैनहारु सद जीवनहारा ॥ मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ दोसु नही काहू कउ मीता ॥ माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥ दरद निवारहि जा के आपे ॥ नानक ते ते गुरमुखि ध्रापे ॥३४॥ सलोकु ॥ धर जीअरे इिक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईअै कारजु आवै रासि ॥१॥ पउड़ी ॥ धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ॥ धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ धनु साचा तेऊ सच साहा ॥ हरि हरि पूंजी नाम बिसाहा ॥ धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥ हरि हरि नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥ गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥ नानक तिह जन मिली वडाई ॥३५॥ सलोकु ॥ नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नरकु नाहि साधसंगि ॥१॥ पउड़ी ॥ ञनना नरकि परहि ते नाही ॥ जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ नामु निधानु गुरमुखि जो जपते ॥ बिखु माइआ महि ना एइि खपते ॥ ञननाकारु न होता ता कहु ॥ नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु

॥ निधि निधान हरि अंमृत पूरे ॥ तह बाजे नानक अनहद तूरे ॥३६॥ सलोकु ॥ पति राखी गुरि पारब्रहम तजि परपंच मोह बिकार ॥ नानक सोऊ आराधीऐ अंतु न पारावारु ॥१॥ पउड़ी ॥ पपा परमिति पारु न पाइआ ॥ पतित पावन अगम हरि राइआ ॥ होत पुनीत कोट अपराधू ॥ अंमृत नामु जपहि मिलि साधू ॥ परपच ध्रोह मोह मिटनाई ॥ जा कउ राखहु आपि गुसाई ॥ पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥ नानक दूसर अवरु न कोऊ ॥३७॥ सलोकु ॥ फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥ नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥१॥ पउड़ी ॥ फफा फिरत फिरत तू आइआ ॥ दुलभ देह कलिजुग महि पाइआ ॥ फिरि इआ अउसरु चरै न हाथा ॥ नामु जपहु तउ कटीअहि फासा ॥ फिरि फिरि आवन जानु न होई ॥ इेकहि इेक जपहु जपु सोई ॥ करहु कृपा प्रभ करनैहारे ॥ मेलि लेहु नानक बेचारे ॥३८॥ सलोकु ॥ बिनउ सुनहु तुम पारब्रहम दीन दइिआल गुपाल ॥ सुख संपै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥१॥ पउड़ी ॥ बबा ब्रहमु जानत ते ब्रहमा ॥ बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥ बीरा आपन बुरा मिटावै ॥ ताहू बुरा निकटि नही आवै ॥ बाधिए आपन हउ हउ बंधा ॥ दोसु देत आगह कउ अंधा ॥ बात चीत सभ रही सिआनप ॥ जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥३६॥ सलोकु ॥ भै भंजन अघ दूख नास मनहि अराधि हरे ॥ संतसंग जिह रिद बसिए नानक ते न भ्रमे ॥१॥ पउड़ी ॥ भभा भरमु मिटावहु अपना ॥ इिआ संसारु सगल है सुपना ॥ भरमे सुरि नर देवी देवा ॥ भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥ भरमि भरमि मानुख डहकाइे ॥ दुतर महा बिखम इिह माइे ॥ गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइिआ ॥ नानक तेह परम सुख पाइिआ ॥४०॥ सलोकु ॥ माइिआ डोलै बहु बिधी मनु लपटिए तिह संग ॥ मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि रंग ॥१॥ पउड़ी ॥ ममा मागनहार इिआना ॥ देनहार दे रहिए सुजाना ॥ जो दीनो सो इेकहि बार ॥ मन मूरख कह करहि पुकार ॥ जउ मागहि तउ मागहि बीआ ॥ जा ते कुसल न काहू थीआ ॥ मागनि माग त इेकहि माग ॥ नानक जा ते परहि

पराग ॥४१॥ सलोक ॥ मति पूरी परधान ते गुर पूरे मन मंत ॥ जिह जानिए प्रभु आपुना नानक ते भगवंत ॥१॥ पउड़ी ॥ ममा जाहू मरमु पछाना ॥ भेटत साधसंग पतीआना ॥ दुख सुख उआ कै समत बीचारा ॥ नरक सुरग रहत अउतारा ॥ ताहू संग ताहू निरलेपा ॥ पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥ उआ रस महि उआहू सुखु पाइिआ ॥ नानक लिपत नही तिह माइिआ ॥४२॥ सलोकु ॥ यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥ नानक तिह बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥१॥ पवड़ी ॥ यया जतन करत बहु बिधीआ ॥ इेक नाम बिनु कह लउ सिधीआ ॥ याहू जतन करि होत छुटारा ॥ उआहू जतन साध संगारा ॥ या उबरन धारै सभु कोऊ ॥ उआहि जपे बिनु उबर न होऊ ॥ याहू तरन तारन समराथा ॥ राखि लेहु निरगुन नरनाथा ॥ मन बच क्रम जिह आपि जनाई ॥ नानक तिह मति प्रगटी आई ॥४३॥ सलोकु ॥ रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥ होइि निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥१॥ पउड़ी ॥ रारा रेन होत सभ जा की ॥ तजि अभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥ रणि दरगहि तउ सीझहि भाई ॥ जउ गुरमुखि राम नाम लिव लाई ॥ रहत रहत रहि जाहि बिकारा ॥ गुर पूरे कै सबदि अपारा ॥ राते रंग नाम रस माते ॥ नानक हरि गुर कीनी दाते ॥४४॥ सलोकु ॥ लालच झूठ बिखै बिआधि इिआ देही महि बास ॥ हरि हरि अंमृतु गुरमुखि पीआ नानक सूखि निवास ॥१॥ पउड़ी ॥ लला लावउ अउखध जाहू ॥ दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥ नाम अउखधु जिह रिदै हितावै ॥ ताहि रोगु सुपनै नही आवै ॥ हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥ गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ गुरि पूरै संजमु करि दीआ ॥ नानक तउ फिरि दूख न थीआ ॥४५॥ सलोकु ॥ वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइि ॥ अंतरि बाहरि संगि है नानक काइि दुराइि ॥१॥ पउड़ी ॥ ववा वैरु न करीअै काहू ॥ घट घट अंतरि ब्रहम समाहू ॥ वासुदेव जल थल महि रविआ ॥ गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥ वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥ वरन चिहन

सगलह ते रहता ॥ नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥४६॥ सलोकु ॥ हउ हउ करत बिहानीआ साकत मुगध अजान ॥ ड़ड़कि मुइे जिउ तृखावंत नानक किरति कमान ॥१॥ पउड़ी ॥ ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू ॥ करम धरम ततु नाम अराधू ॥ रूड़ो जिह बसिए रिद माही ॥ उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥ ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥ जेह हीऔ अह्मबुधि बिकारा ॥ ड़ाड़ा गुरमुखि ड़ाड़ि मिटाई ॥ निमख माहि नानक समझाई ॥४७॥ सलोकु ॥ साधू की मन एट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥ गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥१॥ पउड़ी ॥ ससा सरनि परे अब हारे ॥ सासत्र सिमृति बेद पूकारे ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥ सासि सासि हम भूलनहारे ॥ तुम समरथ अगनत अपारे ॥ सरनि परे की राखु दइिआला ॥ नानक तुमरे बाल गुपाला ॥४८॥ सलोकु ॥ खुदी मिटी तब सुख भइे मन तन भइे अरोग ॥ नानक दृसटी आइिआ उसतति करनै जोगु ॥१॥ पउड़ी ॥ खखा खरा सराहउ ताहू ॥ जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥ खरा निमाना होत परानी ॥ अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥ भावै खसम त उआ सुखु देता ॥ पारब्रहमु ऐसो आगनता ॥ असंख खते खिन बखसनहारा ॥ नानक साहिब सदा दइिआरा ॥४९॥ सलोकु ॥ सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइि ॥ उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लइे समाइि ॥१॥ पउड़ी ॥ ससा सिआनप छाडु इिआना ॥ हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥ सहस भाति करहि चतुराई ॥ संगि तुहारै इेक न जाई ॥ सोऊ सोऊ जपि दिन राती ॥ रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥ साध सेवा लावै जिह आपै ॥ नानक ता कउ दूखु न बिआपै ॥५०॥ सलोकु ॥ हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइि ॥ नानक सभ महि रवि रहिआ थान थन्नतरि सोइि ॥१॥ पउड़ी ॥ हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥ होवत आइे सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन ॥ हउ छुटकै होइि अन्नदु तिह हउ नाही तह आपि ॥ हते दूख जनमह मरन संतसंग परताप ॥ हित करि नाम दृड़ै दइिआला ॥ संतह संगि होत

किरपाला ॥ एरै कछू न किनहू कीआ ॥ नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥५१॥ सलोकु ॥ लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥ बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥१॥ पउड़ी ॥ लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥ जीउ पिंडु जिनि सुख दीझे ताहि न जानत तत ॥ लाहा माइिआ कारने दह दिसि ढूढन जाइि ॥ देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइि ॥ लालच झूठ बिकार मोह इिआ संपै मन माहि ॥ लम्पट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाइि ॥ तुधु भावै ता बखसि लैहि खोटे संगि खरे ॥ नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ॥५२॥ सलोकु ॥ खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥ भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥१॥ पउड़ी ॥ खेलत खेलत आइिए अनिक जोनि दुख पाइि ॥ खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइि ॥ खिमा गही सचु संचिए खाइिए अंमृतु नाम ॥ खरी कृपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥ खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आइे पतिवंत ॥ खरा दिलासा गुरि दीआ आइि मिले भगवंत ॥ आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि ॥ नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि ॥५३॥ सलोकु ॥ आइे प्रभ सरनागती किरपा निधि दइिआल ॥ इेक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥१॥ पउड़ी ॥ अखर महि तृभवन प्रभि धारे ॥ अखर करि करि बेद बीचारे ॥ अखर सासत्र सिंमृति पुराना ॥ अखर नाद कथन वख्याना ॥ अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥ अखर करम किरति सुच धरमा ॥ दृसटिमान अखर है जेता ॥ नानक पारब्रहम निरलेपा ॥५४॥ सलोकु ॥ हथि कलम्म अगंम मसतकि लिखावती ॥ उरझि रहिए सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइि मुखहु तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ पउड़ी ॥ हे अचुत हे पारब्रहम अबिनासी अघनास ॥ हे पूरन हे सरब मै दुख भंजन गुणतास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक ॥ हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥ हे अपरंपर हरि हरे हहि भी होवनहार ॥ हे संतह कै सदा संगि निधारा आधार ॥ हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइि ॥

नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ ॥५५॥ सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ गुरदेव साँति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ गुरदेव तीरथु अंमृत सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥ इेहु सलोकु आदि अंति पड़णा ॥

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ सलोकु ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥१॥ असटपदी ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिंमृति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ काँखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥ सुखमनी सुख अंमृत प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥ प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥ सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से

सिमरहि जिन आपि सिमराइे ॥ नानक ता कै लागउ पाइे ॥३॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइि ॥ अंमृत नामु रिद माहि समाइि ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥४॥ प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइिआला ॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥ प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥ सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइिआ ॥ नानक तिन जन सरनी पइिआ ॥७॥ हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाइे ॥ हरि सिमरनि लगि बेद उपाइे ॥ हरि सिमरनि भइे सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीए सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइिआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइिआ ॥८॥१॥ सलोकु ॥ दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि

तुमारी आइए नानक के प्रभ साथ ॥१॥ असटपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बंधु न परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै ॥ अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥ छूटत नही कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥ अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥ हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्राम ॥ हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥ नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥ जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अंमृतु बरखै ॥४॥ भगत जना की बरतनि नामु ॥ संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का नामु दास की एट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रंगि रते रंग इकै ॥ नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥ हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ हरि कै नामि जन कउ तृपति भुगति ॥ हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥ हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥ हरि का नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि जन सोभा

पाई ॥ हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ हरि नामु जपत कछु नाहि बिएगु ॥ जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥ हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि हरि जन कै एट सताणी ॥ हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ एति पोति जन हरि रसि राते ॥ सुन्न समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥ हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ नानक जन संगि केते तरे ॥७॥ पारजातु इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ संत का संगु वडभागी पाईअै ॥ संत की सेवा नामु धिआईअै ॥ नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥ सलोकु ॥ बहु सासत्र बहु सिमृती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥ असटपदी ॥ जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ खट सासत्र सिमृति वखिआन ॥ जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥ सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ अनिक प्रकार कीडे बहु जतना ॥ पुन्न दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइि होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक गुरमुखि नामु जपीअै इक बार ॥१॥ नउ खंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ अगनि माहि होमत परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग संजम अति साधन ॥ निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ बहुतु सिआणप जम का

भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि तृसन ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥ चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै ॥ जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥ सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल सृसटि साजना ॥ सूख दूख जन सम दृसटेता ॥ नानक पाप पुन्न नही लेपा ॥६॥ निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ तुम्‍री उसतति तुम ते होइ ॥ नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥ सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल कृआ महि ऊतम किरिआ ॥ साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अंमृत बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते एहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥ सलोकु ॥ निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥ असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन दृसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥

मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ आदि अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥ ता कउ अंधा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥३॥ रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥ साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ संगि सहाई तिसु परहरै ॥ चंदन लेपु उतारै धोइ ॥ गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥ करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥ सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥ करु गहि लेहु एड़ि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसनपद गावै गुंग ॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ दृड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ

ध्रोह ॥ इिआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥ तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥ कोइि न जानै तुमरा अंतु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥ सगल समग्री तुमरै सूतृ धारी ॥ तुम ते होइि सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥ सलोकु ॥ देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइि ॥ नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइि ॥१॥ असटपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ इेक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ इेक भी न देइि दस भी हिरि लेइि ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइि ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइिआ ॥ सरब थोक नानक तिनि पाइिआ ॥१॥ अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइि ॥ अगिआनी मनि रोसु करेइि ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइिआलु ॥२॥ अनिक भाति माइिआ के हेत ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइिआ सिउ रंगु लावै ॥ एह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि रहिए तह अंध अंधारु ॥ बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा नानक आपि लइे लाई ॥३॥ मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइिआ ॥ मिथिआ हउमै ममता माइिआ ॥ मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रंग संगि माइिआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ

हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर तृअ रूपाद् ॥ मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद् ॥ मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु बृथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिए हरि नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान थन्नतरि रहिआ समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥ सलोकु ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहमेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥ असटपदी ॥ जिह प्रसादि छतीह अंमृत खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ जिह प्रसादि गृह संगि सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥ जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ जिह

प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥ जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह प्रसादि तेरा एला रहत ॥ मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई दुलभ देह ॥ नानक ता की भगति करेह ॥३॥ जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ जो इेक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥ जिह प्रसादि करहि पुन्न बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥ सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥ जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसादि बोलहि अंमृत रसना ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ अैसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥ जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥ आपि जपाइे जपै सो नाउ ॥ आपि गावाइे सु हरि गुन गाउ ॥

प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसन्न बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥ सलोकु ॥ अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥ जो जो कहै सु मुकता होइ ॥ सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥ साध जना की अचरज कथा ॥१॥ असटपदी ॥ साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥ साधसंगि मलु सगली खोत ॥ साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥ साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥ साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥ साधसंगि सभु होत निबेरा ॥ साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥ साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥ साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥ साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥ साध कै संगि सदा परफुलै ॥ साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥ साधसंगि अंमृत रसु भुंचा ॥ साधसंगि होइ सभ की रेन ॥ साध कै संगि मनोहर बैन ॥ साध कै संगि न कतहूं धावै ॥ साधसंगि असथिति मनु पावै ॥ साध कै संगि माइआ ते भिन्न ॥ साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसन्न ॥२॥ साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥ साधू कै संगि महा पुनीत ॥ साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥ साध कै संगि न बीगा पैरु ॥ साध कै संगि नाही को मंदा ॥ साधसंगि जाने परमान्नदा ॥ साध कै संगि नाही हउ तापु ॥ साध कै संगि तजै सभु आपु ॥ आपे जानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥ साध कै संगि न कबहू धावै ॥ साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥ साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥ साधू कै संगि अजरु सहै ॥ साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥ साधू कै संगि महलि पहूचै ॥ साध कै संगि दृड़ै सभि धरम ॥ साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥ साध कै संगि पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥ साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥ साधू कै संगि सो धनु पावै ॥ जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥ साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै संगि पाप पलाइन ॥ साधसंगि अंमृत गुन गाइन ॥ साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥

नानक साध कै संगि सफल जन्नम ॥५॥ साध कै संगि नही कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥ साध कै संगि कलूखत हरै ॥ साध कै संगि नरक परहरै ॥ साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥ साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥ जो इछै सोई फलु पावै ॥ साध कै संगि न बिरथा जावै ॥ पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥ साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥ साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥ साधसंगि सरपर निसतरै ॥ साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥ साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥ साधसंगि भए आगिआकारी ॥ साधसंगि गति भई हमारी ॥ साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥ नानक साध भेटे संजोग ॥७॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ साध की उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा का नाही अंत ॥ साध की सोभा सदा बेअंत ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बनि आई ॥ नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥ सलोकु ॥ मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥ अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥ असटपदी ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रहम गिआनी से जन भए ॥ नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥ ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥

ब्रहम गिआनी की दृसटि अंमृतु बरसी ॥ ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥ ब्रहम गिआनी ड़ेक ऊपरि आस ॥ ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥ ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥ ब्रहम गिआनी कै होड़ि सु भला ॥ ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥ ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥ ब्रहम गिआनी कै ड़ेकै रंग ॥ ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥ ब्रहम गिआनी अह्मबुधि तिआगत ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि परमान्नद ॥ ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अन्नद ॥ ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥ ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥ ब्रहम गिआनी ड़ेक संगि हेता ॥ ब्रहम गिआनी कै होड़ि अचिंत ॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥ ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाड़ि अधाख्यरु ॥ ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ ब्रहम गिआनी सभ सृसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सगल

अकारु ॥ ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥ ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥ सलोकु ॥ उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक एहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥ असटपदी ॥ मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ पर तृअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संतसंगि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निंदा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसन्न ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिन्न ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि दृड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक एहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥ भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ सगल तिआगै दुसट का संगु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ साधसंगि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥ सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिमृति बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥ बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ साधसंगि पावै जनु कोइ ॥ करि किरपा अंतरि उर धारै ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखदु नामु ॥ कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ जिस कै

मनि पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का नामु सति रामदासु ॥ आतम रामु तिसु नदरी आइिआ ॥ दास दसंतण भाइि तिनि पाइिआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ सगल संगि आतम उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनन्दु तह नही बिएगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अंमृतु तैसी बिखु खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ जो वरताइे साई जुगति ॥ नानक एहु पुरखु कहीऔ जीवन मुकति ॥७॥ पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिए आपि होइि अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥ जैसी मति देइि तैसा परगास ॥ पारब्रहमु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइिआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भइे निहाल ॥८॥१॥ सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥ असटपदी ॥ कई कोटि होइे पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भइे तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥ कई कोटि भइे अभिमानी ॥ कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइिआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पंखी सरप उपाइे ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाइे ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि

ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिमृति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किन्नर पिसाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥ कई कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवंत ॥ कई कोटि माइआ महि चिंत ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥ कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ आतम महि पारब्रहमु लह्मते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिए प्रभु अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसंगु ॥ पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥ जिन कउ होए आपि सुप्रसन्न ॥ नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥ कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिए पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥ कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ ता का अंतु न जानै कोइ ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥ कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक एइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥ सलोकु ॥ करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥ असटपदी ॥ करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥

अंतु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक दृसटी अवरु न आवै ॥२॥ कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥ खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का दृसटि कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥ इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥ कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥ कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक

जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥ कबहू साधसंगति इहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ अंतरि होइ गिआन परगासु ॥ उसु असथान का नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इक रंगि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥ जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥ सलोकु ॥ सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥ असटपदी ॥ जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥ सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ जो जानै मै जोबनवंतु ॥ सो होवत बिसटा का जंतु ॥ आपस कउ करमवंतु कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १॥ धनवंता होइ करि गरबावै ॥ तृण समानि कछु संगि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवंतु ॥ खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥ गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥ सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥ कोटि करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ आपस कउ जो भला कहावै ॥ तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥ सरब की रेन जा का मनु होइ ॥ कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥ जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥ तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥ सहस खटे

लख कउ उठि धावै ॥ तृपति न आवै माइिआ पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥ बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥ नाम रंगि सरब सुखु होइि ॥ बडभागी किसै परापति होइि ॥ करन करावन आपे आपि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ करन करावन करनैहारु ॥ इिस कै हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी दृसटि करे तैसा होइि ॥ आपे आपि आपि प्रभु सोइि ॥ जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ आपहि इेक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाइि ॥ नानक सद ही रहिआ समाइि ॥६॥ आपि उपदेसै समझै आपि ॥ आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ सभु कछु उस का एहु करनैहारु ॥ उस ते भिन्न कहहु किछु होइि ॥ थान थन्नतरि इेकै सोइि ॥ अपुने चलित आपि करणैहार ॥ कउतक करै रंग आपार ॥ मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइि ॥७॥ सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ सचु सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ अति सुंदर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥ सलोकु ॥ संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥ असटपदी ॥ संत कै दूखनि आरजा घटै ॥ संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ संत कै दूखनि सुखु सभु जाइि ॥ संत कै दूखनि नरक महि पाइि ॥ संत कै दूखनि मति होइि मलीन ॥ संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ संत के हते कउ रखै न कोइि ॥ संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइि ॥ संत कृपाल कृपा जे करै ॥ नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥ संत के दूखन ते मुखु भवै ॥ संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइि ॥ संत कै दूखनि तृगद जोनि किरमाइि ॥ संतन कै दूखनि तृसना महि जलै ॥ संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ संत कै दूखनि तेजु सभु जाइि ॥ संत कै दूखनि नीचु नीचाइि ॥ संत दोखी का थाउ को नाहि ॥

नानक संत भावै ता एइ भी गति पाहि ॥२॥ संत का निंदकु महा अतताई ॥ संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ संत का निंदकु महा हतिआरा ॥ संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥ संत का निंदकु राज ते हीनु ॥ संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥ संत का दोखी सदा अपवितु ॥ संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ संत का दोखी महा अहंकारी ॥ संत का दोखी सदा बिकारी ॥ संत का दोखी जनमै मरै ॥ संत की दूखना सुख ते टरै ॥ संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक संत भावै ता लइे मिलाइ ॥४॥ संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक संत भावै ता लइे उबारि ॥५॥ संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥ संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥ संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ संत कै दोखि न तृसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥७॥ सभ घट तिस के एहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु

कहै बीचारु ॥ जिस नो कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥ सलोकु ॥ तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ इेक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥ असटपदी ॥ मानुख की टेक बृथी सभ जानु ॥ देवन कउ इेकै भगवानु ॥ जिस कै दीअै रहै अघाइ ॥ बहुरि न तृसना लागै आइ ॥ मारै राखै इेको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥ उसतति मन महि करि निरंकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना अंमृतु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥ चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीअै हरि बिंद ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवंत गनी संसार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ इेको इेकु इेकु पछानै ॥ इित उत की एहु सोझी जानै ॥ नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥ गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु तृसना बुझै ॥ साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते एहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ गृहसत महि सोई निरबानु ॥ इेक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीअै जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा दृसटाइिआ ॥ अपुने कारज महि आपि समाइिआ ॥ सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥ नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु दृसटि अनदृसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ सृसटि ॥

आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खंड ॥ धारण धारि रहिए ब्रहमंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाइे त नानक जाप ॥६॥ जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥ सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लइे किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भइे निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइि होवै सो होइि ॥ करणैहारु पछाणै सोइि ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा दृसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाइे ॥ एइि सुख निधान उनहू बनि आइे ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु इेको जानु ॥८॥१४॥ सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥ असटपदी ॥ टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइि ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइि ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि इेक हरि नाम ॥१॥ रूपवंतु होइि नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवंता होइि किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइि बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥ जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइि बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ मन मूरख

काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै संग ॥ लपटि रहिए रसि लोभी पतंग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ जिसु वखर कउ लैनि तू आइिआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइिआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप संतह संगि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ धंनि धंनि कहै सभु कोइि ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइि ॥ इिहु वापारु विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥ ५॥ चरन साध के धोइि धोइि पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इिसनानु ॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हरि गुन गाइि अंमृत रसु चाखै ॥ एट गही संतह दरि आइिआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइिआ ॥६॥ मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की दृसटी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का एहु करनै जोगु ॥ तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इिह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥ जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइि ॥ जा कै हिरदै इेको होइि ॥ सचु करणी सचु ता की रहत ॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची दृसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥ सलोकु ॥ रूपु न रेख न रंगु किछु तृहु गुण ते प्रभ भिन्न ॥ तिसहि बुझाइे नानका जिसु होवै सुप्रसन्न ॥१॥ असटपदी ॥ अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोइि ॥ सरब निरंतरि इेको सोइि ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥ कृपा निधान दइिआल बखसंद ॥ साध

तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥ अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥ धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥ २॥ जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाइे ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाइे ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी इेकंकारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिए पूरनु सभ ठाइि ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के धारे सिमृति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि लाइे ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाइे ॥५॥ रूपु सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाइे तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइि ॥ नामु जपत ता की गति होइि ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी

मिति गति ॥ जिस की सृसटि सु करणैहारु ॥ अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥ बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ एइ दाते दुख काटनहार ॥ जा कै संगि तरै संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै संगि इेक लिव लागी ॥ गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥ सलोकु ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥ असटपदी ॥ चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥ सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥ सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिन्न न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक इेक ॥२॥ ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर की सेवक के निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवकु जिसु दइिआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥ अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने दास कउ देइ वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइिआ ॥ नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइिआ ॥४॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु न काढत आपि ॥

ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै अवरु न कोइि ॥ सरब जीआ का राखा सोइि ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी अंमृतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥ नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइिआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही दृसटाइिआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥ नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥ नाम रसि जो जन तृपताने ॥ मन तन नामहि नामि समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥ बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आतम कै चाइि ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइि ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि इेक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिन की एट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥ सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥ असटपदी ॥ सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कउ गुरु सदा दइिआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइि ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥ गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइि निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥

अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ इेकहि आपि नही कछु भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ न जाईऔ ॥ नानक औसा गुरु बडभागी पाईऔ ॥३॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत संगि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि संतोखु आतम पतीआने ॥ पूरा गुरु अख्यए जा का मंत्र ॥ अंमृत दृसटि पेखै होइि संत ॥ गुण बिअंत कीमति नही पाइि ॥ नानक जिसु भावै तिसु लइे मिलाइि ॥४॥ जिहबा इेक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि औसा प्रभु जपने ॥५॥ इिहु हरि रसु पावै जनु कोइि ॥ अंमृतु पीवै अमरु सो होइि ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हरि का नामु लेइि ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइि ॥ मोह माइिआ कै संगि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि इेकु ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइिआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइि बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥ साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥ निरगुनु आपि सरगुनु भी एही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाइे ॥ अपुनी कीमति आपे पाइे ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइि ॥ सरब निरंतरि इेको सोइि ॥ एति पोति रविआ रूप रंग ॥ भइे

प्रगास साध कै संग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥ सलोकु ॥ साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥ असटपदी ॥ संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ दृड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥ जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू संगि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥ अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥ मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ भगति भाइ आतम परगास ॥ तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै सो काचो काचा ॥ आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिंमृति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥ मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥ संगि न चालसि तेरै धना ॥ तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥ इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माइआ बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥ गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥ चरन कमल राखहु

मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ सार भूत सति हरि को नाउ ॥ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥ गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साधसंगि पावहि सचु धना ॥ हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरंतरि ड़ेको देखु ॥ कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥ ड़ेको जपि ड़ेको सालाहि ॥ ड़ेकु सिमरि ड़ेको मन आहि ॥ ड़ेकस के गुन गाउ अन्नत ॥ मनि तनि जापि ड़ेक भगवंत ॥ ड़ेको ड़ेकु ड़ेकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिए प्रभु बिआपि ॥ अनिक बिसथार ड़ेक ते भड़े ॥ ड़ेकु अराधि पराछत गड़े ॥ मन तन अंतरि इकु प्रभु राता ॥ गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१६॥ सलोकु ॥ फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥ असटपदी ॥ जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ ड़ेक एट ड़ेको आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥ प्रभ की दृसटि महा सुखु होइ ॥ हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन चाखिआ से जन तृपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥ उपजै चाउ साध कै संगि ॥ परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥ सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइए दइआलु ॥ सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ नानक भगती नामि समाइ ॥३॥ सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जि

कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥ साजन संत करहु इहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ बूडत जात पाइ बिस्रामु ॥ सगल दूख का होवत नासु ॥ नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥ उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥ भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥ बिरला कोऊ पावै संगु ॥ एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ ता की उपमा कही न जाइ ॥ नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥ प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥ भगति वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥ सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥ सलोकु ॥ सरगुन निरगुन निरंकार सुन्न समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥ असटपदी ॥ जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ पाप पुन्न तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुन्न समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह कहा

किसु होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ जब इेकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइि ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइि ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइि ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइि ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ इेका ॥ तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु तृपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥ जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ तब कवन माइि बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीअै चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥ जह अछल अछेद अभेद समाइिआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइिआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह इेकहि इेक इेक भगवंता ॥ तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥ जह आपि रचिए परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ पापु पुन्नु तह भई

कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ आल जाल माइआ जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीए बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक इेकै ॥७॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥ सलोकु ॥ जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक इेको पसरिआ दूजा कह दृसटार ॥१॥ असटपदी ॥ आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ आपहि इेकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता सृसटि उपाइे ॥ आपनै भाणै लइे समाइे ॥ तुम ते भिन्न नही किछु होइि ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइि ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाइे ॥ सचु नामु सोई जनु पाइे ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल सृसटि का जेता ॥१॥ जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥ दीन दइिआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइि न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइि ॥ सभ सिरि इेकु निरंजन राइि ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ २॥ पूरन पूरि रहे दइिआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अंतरजामी रहिए बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिए सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लइे मिलाइि ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइि ॥ मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ करनहारु नानक इिकु जानिआ ॥३॥ जनु लागा हरि इेकै नाइि ॥ तिस की आस न बिरथी जाइि ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ इिस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥ बंधन तोरि भइे निरवैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इिह लोक सुखीइे

परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥ साधसंगि मिलि करहु अन्नद ॥ गुन गावहु प्रभ परमान्नद ॥ राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ दुलभ देह का करहु उधारु ॥ अंमृत बचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अंतरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ इेका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ मति पूरी अंमृतु जा की दृसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत सृसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ धन्नु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भइे अमरा पदु पाइआ ॥ साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥ सलोकु ॥ गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥ असटपदी ॥ संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री इेकसु घट माहि ॥ अनिक रंग नाना दृसटाहि ॥ नउ निधि अंमृतु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुन्न समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाइे ॥ नानक तिसु जन सोझी पाइे ॥१॥ सो अंतरि सो बाहरि अन्नत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन

प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिन्न नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ बेद पुरान सिंमृति महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि इेकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाईअै गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिए सुआमी एति पोति ॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि इेहु बिसासु ॥३॥ संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥ संत जना सुनहि सुभ बचन ॥ सरब बिआपी राम संगि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इिह रहत ॥ सति बचन साधू सभि कहत ॥ जो जो होइि सोई सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अंतरि बसे बाहरि भी एही ॥ नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ तिसु भावै ता इेकंकारु ॥ अनिक कला लखी नह जाइि ॥ जिसु भावै तिसु लइे मिलाइि ॥ कवन निकटि कवन कहीअै दूरि ॥ आपे आपि आप भरपूरि ॥ अंतरगति जिसु आपि जनाइे ॥ नानक तिसु जन आपि बुझाइे ॥५॥ सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥ आवन जानु इिकु खेलु बनाइिआ ॥ आगिआकारी कीनी माइिआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ जाइि ॥ नानक जा भावै ता लइे समाइि ॥६॥ इिस ते होइि सु नाही बुरा ॥ अरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ एति पोति आपन संगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइि ॥ दूसर होइि त सोझी पाइि ॥ तिस का कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इिहु जानु ॥७॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइि ॥ आपि मिलाइि लइे प्रभु सोइि ॥ एहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धन्नु धन्नु धन्नु जनु आइिआ ॥

जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥ सलोकु ॥ पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥ असटपदी ॥ पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित तिआगहु तरंग ॥ संत जना की धूरि मन मंग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ खेम कुसल सहज आन्नद ॥ साधसंगि भजु परमान्नद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिंद अंमृत रसु पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइण इेक ॥ इेक रूप जा के रंग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥ दुख भंजन पूरन किरपाल ॥ सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥ नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥ उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल इेहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥ जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महाँत कै माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥ सरनि जोगु सुनि सरनी आइे ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाइे ॥ मिटि गइे बैर भइे सभ रेन ॥ अंमृत नामु साधसंगि लैन ॥ सुप्रसन्न भइे गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान इेकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब इिछा ता की पूरन होइि ॥ प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइि ॥ सभ ते ऊच पाइे असथानु ॥ बहुरि न होवै आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु सोइि ॥ नानक जिसहि परापति होइि ॥५॥ खेम साँति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥ बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥

गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी इेक दृसटेता ॥ इिह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥ इिहु निधानु जपै मनि कोइि ॥ सभ जुग महि ता की गति होइि ॥ गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ सिमृति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मताँत केवल हरि नाम ॥ गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥ संत कृपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करम प्रभि पाइे ॥ साध सरणि नानक ते आइे ॥७॥ जिसु मनि बसै सुनै लाइि प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंमृत ता की बानी ॥ इेकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इिह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥

थिती गउड़ी महला ५ ॥ सलोकु ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजनहारु ॥ अनिक भाँति होइि पसरिआ नानक इेकंकारु ॥१॥ पउड़ी ॥ इेकम इेकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइि ॥ गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइि ॥ ता की आस कलिआण सुख जा ते सभु कछु होइि ॥ चारि कुंट दह दिसि भ्रमिए तिसु बिनु अवरु न कोइि ॥ बेद पुरान सिमृति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥ पतित उधारन भै हरन सुख सागर निरंकार ॥ दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु अवरु न जाइि ॥ जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइि ॥१॥ गोबिंद जसु गाईऐ हरि नीत ॥ मिलि भजीऐ साधसंगि मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ करउ बंदना अनिक वार सरनि परउ हरि राइि ॥ भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ दुतीआ दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥ राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥ मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि सगल कलेस ॥ आपु तजहु

गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै हरि दरगह पतिवंत ॥ राम नाम धनु संचवै साच साह भगवंत ॥ ऊठत बैठत हरि भजहु साधू संगि परीति ॥ नानक दुरमति छुटि गई पारब्रहम बसे चीति ॥२॥ सलोकु ॥ तीनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥ नानक संत निरमल भइे जिन मनि वसिआ सोइ ॥३॥ पउड़ी ॥ तृतीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥ नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा संघारै मीचु ॥ हरख सोग सहसा संसारु हउ हउ करत बिहाइ ॥ जिनि कीइे तिसहि न जाणनी चितवहि अनिक उपाइ ॥ आधि बिआधि उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥ पारब्रहम पूरन धनी नह बूझै परताप ॥ मोह भरम बूडत घणो महा नरक महि वास ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक तेरी आस ॥३॥ सलोकु ॥ चतुर सिआणा सुघड़ु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥ चारि पदारथ असट सिधि भजु नानक हरि नामु ॥४॥ पउड़ी ॥ चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिए ततु बीचारु ॥ सरब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥ नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥ मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन परवेस ॥ भउ बिनसै अंमृतु रसै रंगि रते निरंकार ॥ दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥ सुरि नर मुनि जन खोजते सुख सागर गोपाल ॥ मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥४॥ सलोकु ॥ पंच बिकार मन महि बसे राचे माइिआ संगि ॥ साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥५॥ पउड़ी ॥ पंचमि पंच प्रधान ते जिह जानिए परपंचु ॥ कुसम बास बहु रंगु घणो सभ मिथिआ बलबंचु ॥ नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥ सुआद मोह रस बेधिए अगिआनि रचिए संसारु ॥ जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने करम अनेक ॥ रचनहारु नह सिमरिए मनि न बीचारि बिबेक ॥ भाउ भगति भगवान संगि माइिआ लिपत न रंच ॥ नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥५॥ सलोकु ॥ खट सासत्र ऊचौ कहहि अंतु न पारावार ॥ भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै दुआर ॥६॥ पउड़ी ॥ खसटमि खट सासत्र कहहि सिंमृति कथहि अनेक ॥

ऊतमु ऊचौ पारब्रहमु गुण अंतु न जाणहि सेख ॥ नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥ रस गीधे हरि सिउ बीधे भगत रचे भगवंत ॥ मोह मान भ्रमु बिनसिए पाई सरनि दइआल ॥ चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै साधसंगि लिव लाइ ॥ खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥६॥ सलोकु ॥ संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ ॥ नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥७॥ पउड़ी ॥ सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥ संतसंगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥ दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥ अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहारु पछाणु ॥ सो साजनु सो सखा मीतु जो हरि की मति देइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥७॥ सलोकु ॥ आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि जंजाल ॥ जमकंकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥८॥ पउड़ी ॥ असटमी असट सिधि नव निधि ॥ सगल पदारथ पूरन बुधि ॥ कवल प्रगास सदा आनन्द ॥ निरमल रीति निरोधर मंत ॥ सगल धरम पवित्र इसनानु ॥ सभ महि ऊच बिसेख गिआनु ॥ हरि हरि भजनु पूरे गुर संगि ॥ जपि तरीऐ नानक नाम हरि रंगि ॥८॥ सलोकु ॥ नाराइणु नह सिमरिए मोहिए सुआद बिकार ॥ नानक नामि बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥९॥ पउड़ी ॥ नउमी नवे छिद्र अपवीत ॥ हरि नामु न जपहि करत बिपरीति ॥ पर तृअ रमहि बकहि साध निंद ॥ करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥ हिरहि पर दरबु उदर कै ताई ॥ अगनि न निवरै तृसना न बुझाई ॥ हरि सेवा बिनु एह फल लागे ॥ नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ॥९॥ सलोकु ॥ दस दिस खोजत मै फिरिए जत देखउ तत सोइ ॥ मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥१०॥ पउड़ी ॥ दसमी दस दुआर बसि कीने ॥ मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥ करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥ नैनी पेखत साध दइआल ॥ रसना गुन गावै बेअंत ॥ मन

महि चितवै पूरन भगवंत ॥ हसत चरन संत टहल कमाईऐ ॥ नानक इहु संजमु प्रभ किरपा पाईऐ ॥१०॥ सलोकु ॥ इेको इेकु बखानीऐ बिरला जाणै स्वादु ॥ गुण गोबिंद न जाणीऐ नानक सभु बिसमादु ॥११॥ पउड़ी ॥ इेकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥ इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥ मनि संतोखु सरब जीअ दइिआ ॥ इिन बिधि बरतु संपूरन भइिआ ॥ धावत मनु राखै इिक ठाइि ॥ मनु तनु सुधु जपत हरि नाइि ॥ सभ महि पूरि रहे पारब्रहम ॥ नानक हरि कीरतनु करि अटल इेहु धरम ॥११॥ सलोकु ॥ दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध क्रिपाल ॥ नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ॥१२॥ पउड़ी ॥ दुआदसी दानु नामु इिसनानु ॥ हरि की भगति करहु तजि मानु ॥ हरि अंम्रित पान करहु साधसंगि ॥ मन त्रिपतासै कीरतन प्रभ रंगि ॥ कोमल बाणी सभ कउ संतोखै ॥ पंच भू आतमा हरि नाम रसि पोखै ॥ गुर पूरे ते इेह निहचउ पाईऐ ॥ नानक राम रमत फिरि जोनि न आईऐ ॥ १२॥ सलोकु ॥ तीनि गुणा महि बिआपिआ पूरन होत न काम ॥ पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥१३॥ पउड़ी ॥ त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥ आवत जात नरक अवतार ॥ हरि हरि भजनु न मन महि आइिए ॥ सुख सागर प्रभु निमख न गाइिए ॥ हरख सोग का देह करि बाधिए ॥ दीरघ रोगु माइिआ आसाधिए ॥ दिनहि बिकार करत स्रमु पाइिए ॥ नैनी नीद सुपन बरड़ाइिए ॥ हरि बिसरत होवत इेह हाल ॥ सरनि नानक प्रभ पुरख दइिआल ॥१३॥ सलोकु ॥ चारि कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥ नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥१४॥ पउड़ी ॥ चउदहि चारि कुंट प्रभ आप ॥ सगल भवन पूरन परताप ॥ दसे दिसा रविआ प्रभु इेकु ॥ धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥ जल थल बन परबत पाताल ॥ परमेस्वर तह बसहि दइिआल ॥ सूखम असथूल सगल भगवान ॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु पछान ॥१४॥ सलोकु ॥ आतमु जीता गुरमती गुण गाइे गोबिंद ॥ संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥१५॥ पउड़ी ॥ अमावस आतम सुखी भइे संतोखु दीआ गुरदेव ॥

मनु तनु सीतलु साँति सहज लागा प्रभ की सेव ॥ टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥ दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ सरनि गही पारब्रहम की मिटिआ आवा गवन ॥ आपि तरिआ कुटंब सिउ गुण गुबिंद प्रभ रवन ॥ हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ॥ गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्रामु ॥१५॥ सलोकु ॥ पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥ दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥१६॥ पउड़ी ॥ पूरनमा पूरन प्रभ इेकु करण कारण समरथु ॥ जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥ अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ पारब्रहमु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ संत सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥ अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहु हरि के चरन ॥ पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥१६॥ सलोकु ॥ दुख बिनसे सहसा गइिए सरनि गही हरि राइ ॥ मनि चिंदे फल पाइिआ नानक हरि गुन गाइ ॥१७॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥ को उपदेसै को दृड़ै तिस का होइ उधारु ॥ किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥ हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ सो सूरा कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥ जिनि जानिए प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥१७॥

गउड़ी की वार महला ४ ॥ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु दइिआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥ इेक दृसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥ सतिगुर विचि अंमृतु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥१॥ मः ४ ॥ हउमै माइिआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अंमृतु हरि उर धारि ॥

सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ तुधुनो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई ॥ तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥१॥ सलोक मः ४ ॥ विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥ १॥ मः ४ ॥ सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥ नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी ॥२॥ पउड़ी ॥ तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥ जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥ तुधु जेवडु दाता तूहै निरंजना तूहै सचु मेरै मनि भाइआ ॥ सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥ २॥ सलोक मः ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥ मः ४ ॥ मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥ जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू करता पुरखु अगंमु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥ तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तूहै पड़ीऐ ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥ तू सचा सभस दा खसमु है सभ दू तू चड़ीऐ ॥ तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥३॥ सलोक मः ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु पिरंम का अठे पहर लगंनि ॥ जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि ॥१॥ मः ४ ॥ जिन अंदरि प्रीति पिरंम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥ नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥ तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥ तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ तू साहिबु अगमु

दइिआलु है सभि तुधु धिआही ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥४॥ सलोक मः ४ ॥ सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि ॥ गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि ॥१॥ मः ४ ॥ सतिगुरु दाता दइिआलु है जिस नो दइिआ सदा होइि ॥ सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इिकु सोइि ॥ निरवैरा नालि जि वैरु चलाइिदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइि ॥ सतिगुरु सभना दा भला मनाइिदा तिस दा बुरा किउ होइि ॥ सतिगुर नो जेहा को इिछदा तेहा फलु पाइे कोइि ॥ नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥ जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लइे सो साहिब मनि भाणी ॥ जे को एस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥ जिस नो सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥५॥ सलोक मः ४ ॥ हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥ जिन जपिआ इिक मनि इिक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ धनु धन्नु गुरू गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ जन नानक तिन कउ वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु ॥१॥ मः ४ ॥ आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ विचि आपे जंत उपाइिअनु मुखि आपे देइि गिरासु ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ जन नानक नामु धिआइि तू सभि किलविख कटे तासु ॥२॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइि जावै ॥६॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाइे ॥ गुरसिखी अंमृतु बीजिआ तिन अंमृत फलु हरि पाइे ॥ एना हलति पलति मुख उजले एइि हरि दरगह सची पैनाइे ॥ इिकन्

अंदरि खोटु नित खोटु कमावहि एहु जेहा बीजे तेहा फलु खाइे ॥ जा सतिगुरु सराफु नदरि करि देखै सुआवगीर सभि उघड़ि आइे ॥ एड़ि जेहा चितवहि नित तेहा पाइिनि एड़ि तेहो जेहे दयि वजाइे ॥ नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै नित करि करि देखै चलत सबाइे ॥१॥ मः ४ ॥ इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइि पाइि ॥ कोई गला करे घनेरीआ जि घरि वथु होवै साई खाइि ॥ बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अह्मकारु न विचहु जाइि ॥ अह्मकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि घरि घरि मंगाइि ॥ कूड़ु ठगी गुझी ना रहै मुलम्मा पाजु लहि जाइि ॥ जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइि ॥ जिउ लोहा पारसि भेटीअै मिलि संगति सुवरनु होइि जाइि ॥ जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाइे ॥ गुण की साझि तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाइे ॥ अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाइे ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआइे ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि आलाइे ॥७॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि नामु रमत सुच संजमु हरि नामे ही तृपतावै ॥ हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख करावै ॥ जो चितु लाइि पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥ फेरि एह वेला एसु हथि न आवै एहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥ नरकि घोरि मुहि कालै खड़िआ जिउ तसकरु पाइि गलावै ॥ फिरि सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि बाता आखि सुणाइे नानकु हरि करते इेवै भावै ॥१॥ मः ४ ॥ पूरे गुर का हुकमु न मन्नै एहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइिआ ॥ एसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि एस दै गलि पाइिआ ॥ एहु गल फरोसी करे बहुतेरी एस दा बोलिआ किसै न भाइिआ ॥ एहु घरि घरि ह्मढै जिउ रन्न दोहागणि एसु नालि मुहु जोड़े एसु भी लछणु लाइिआ ॥ गुरमुखि होइि सु अलिपतो वरतै एस दा पासु छडि गुर

पासि बहि जाइआ ॥ जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु एनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥ पहिला आगमु निगमु नानकु आखि सुणाइे पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥ गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा एह वेला हथि न आइआ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु सचा सभ दू वडा है सो लइे जिसु सतिगुरु टिके ॥ सो सतिगुरु जि सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु इके ॥ सोई सतिगुरु पुरखु है जिनि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥ जि बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अंदरि कूड़ु फिटु फिटु मुह फिके ॥ एइि बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥८॥ सलोक मः ४ ॥ हरि प्रभ का सभु खेतु है हरि आपि किरसाणी लाइिआ ॥ गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइिआ ॥ सभु को बीजे आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु जमाइिआ ॥ गुरसिखी हरि अंमृतु बीजिआ हरि अंमृत नामु फलु अंमृतु पाइिआ ॥ जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै मारि कढाइिआ ॥ किरसाणी जंमी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइिआ ॥ तिन का काड़ा अंदेसा सभु लाहिएनु जिनी सतिगुरु पुरखु धिआइिआ ॥ जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइिआ ॥१॥ मः ४ ॥ सारा दिनु लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥ राती ऊघै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥ मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है नित देवहि भला ॥ जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥ कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥ सतिगुर कै आखिऐ जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥ जोरा पुरख सभि आपि उपाइिअनु हरि खेल सभि खिला ॥ सभ तेरी बणत बणावणी नानक भल भला ॥२॥ पउड़ी ॥ तू वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीऐ ॥ से वडभागी जि तुधु धिआइदे जिन सतिगुरु मिलीऐ ॥ सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥ सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥ एन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइिआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥६॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जनु होइि सु सेवा घाले ॥ जिन अंदरि कपटु विकारु झूठु एइि आपे सचै वखि कढे जजमाले

॥ सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाइ भाले ॥ जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥ जिन अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥ सतिगुर नो मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै एहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥ जन नानक इकना गुरु मेलि सुखु देवै इकि आपे वखि कढै ठगवाले ॥१॥ मः ४ ॥ जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ जाँ करता वलि ता सभु को वलि सभि दरसनु देखि करहि साबासि ॥ साहु पातिसाहु सभु हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ॥ गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुलु सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चड़ै सवाइआ ॥ कोई निंदकु वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥ जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥२॥ पउड़ी ॥ तू साहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा ॥ तुधु जेवडु मै होरु को दिसि ना आवई तूहैं सुघड़ु मेरै मनि भाणा ॥ मोहु कुटंबु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण जाणा ॥ जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥ नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मुइे अजाणा ॥१०॥ सलोक मः ४ ॥ अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कंमि न आवै ॥ अध विचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥ जिसु अंदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥ जे कृपा करे मेरा हरि प्रभु करता ताँ सतिगुरु पारब्रहमु नदरी आवै ॥ ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अंदेसा भरमु चुकावै ॥ सदा अन्नदि रहै दिनु राती जन नानक अनदिनु हरि गुण गावै ॥१॥ मः ४ ॥ गुर सतिगुर का जो सिखु अखाइे सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥ उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंमृत सरि नावै ॥ उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥ जो सासि गिरासि धिआइे मेरा हरि हरि

सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ जिस नो दइिआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥२॥ पउड़ी ॥ जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े ॥ जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े ॥ तुधुनो सभ धिआइदी से थाइ पइे जो साहिब लोड़े ॥ जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुइे मरि जंमे कोड़्हे ॥ एइि हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥ मनि खोटे दयि विछोड़े ॥११॥ सलोक मः ४ ॥ मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखै नो पाइिआ ॥ पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलु लाइि मनमुखु आइिआ ॥ पराई जो निंदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ एथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइिआ ॥ तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइि कै उठि घरि आइिआ ॥ अगै संगती कुड़मी वेमुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजंी फिरि आणि घरि पाइिआ ॥ हलतु पलतु दोवै गइे नित भुखा कूके तिहाइिआ ॥ धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइिआ ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइिआ ॥ इेहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइिआ ॥१॥ मः ४ ॥ साहिबु जिस का न्नगा भुखा होवै तिस दा नफरु किथहु रजि खाइे ॥ जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी किथहु पाइे ॥ जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई ॥ नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की फिरि लेखा मंगै न कोई ॥२॥ पउड़ी ॥ नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कह्मदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे ॥ सुखु न पाइिनि मुगध नर संत नालि खह्मदे ॥ एइि लोचनि एना गुणै नो एइि अह्मकारि सड़ंदे ॥ एइि विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ वैरु करहि निरवैर नालि धरम निआइि पचंदे ॥ जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ पेडु मुंढाहूं कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥१२॥ सलोक मः ४

॥ अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥ तुसि दिती पूरै सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥ सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है ताँ झखि झखि मरै सभ लोकाई ॥ निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥ जिउ जिउ निंदक निंद करहि तिउ तिउ नित नित चड़ै सवाई ॥ जन नानक हरि आराधिआ तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥१॥ मः ४ ॥ सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ नित झहीआ पाइे झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥ नित उपाव करै माइिआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइिआ ॥ किआ एहु खटे किआ एहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइिआ ॥ निरवैरै नालि जि वैरु रचाइे सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइिआ ॥ एसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पइिआ ॥ जे सुइिने नो एहु हथु पाइे ता खेहू सेती रलि गइिआ ॥ जे गुर की सरणी फिरि एहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइिआ ॥ जन नानक अनदिनु नामु धिआइिआ हरि सिमरत किलविख पाप गइिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ तूहै सचा सचु तू सभ दू उपरि तू दीबाणु ॥ जो तुधु सचु धिआइिदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥ एना अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥ से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥ सचु जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥१३॥ सलोक मः ४ ॥ धुरि मारे पूरै सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥ जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे ॥ सतसंगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥ कोई जाइि मिलै हुणि एना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥ गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥ गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि इेना वेचारे ॥ गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥ जो इिछै सो फलु पाइिसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥ सभि निधान सतिगुरू विचि जिसु अंदरि हरि उर धारे ॥ सो पाइे पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥ जनु नानकु मागै धूड़ि तिन जो गुरसिख मित

पिआरे ॥१॥ मः ४ ॥ जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाइे ॥ डरीऐ ताँ जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाइे ॥ देखहु भाई इेहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाइे ॥ आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराइे ॥ सतिगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराइे ॥ अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाइे ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाइे ॥ गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराइे ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाइे ॥ २॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ सचु पूजी नामु दृड़ाइि प्रभ वणजारे थारे ॥ सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥ सेवक भाइि से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥१४॥ सलोक मः ४ ॥ जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ॥ एस दै आखिऐ कोई न लगै नित एजाड़ी पूकारे खला ॥ जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ एस दा सभु गइिआ ॥ नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै एस दा काला भइिआ ॥ करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाइे ॥ गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाइे ॥ भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाइे ॥ जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाइे ॥१॥ मः ४ ॥ होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ कोई जाइि मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही ॥ जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ एना दा आखिआ को न सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी एना अगै पिछै थाउ नाही ॥ जो सतिगुरि मारे तिन

जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥ एहि अगै कुसटी गुर के फिटके जि एसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥ हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥ धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥ जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही ॥ नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ॥२॥ मः ४ ॥ जि होंदै गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥ तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ लोई ॥ तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिस कै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ॥ गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥ जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥३॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥ गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥ विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥ से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥१५॥ सलोक मः ४ ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥ नरक घोरु दुख खूहु है एथै पकड़ि एहु ढोइआ ॥ कूक पुकार को न सुणे एहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥ एनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ ॥ एहु तेली संदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु तिदू किछु गुझा न होइआ ॥ जैसा बीजे सो लुणै जेहा पुरबि किनै बोइआ ॥ जिसु कृपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ ॥ जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥१॥ मः ४ ॥ वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥ गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ ताँ इकु रविआ इको एति पोति ॥ इकु देखिआ इकु मंनिआ इको सुणिआ स्रवण सरोति ॥

जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥१६॥ सलोक मः ४ ॥ सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन हरि वसिआ मन माहि ॥ हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥ जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ भउ कोई नाहि ॥ हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन कउ धुरि लिखिआ आहि ॥ ते हरि दरगहि पैनाईअहि जिन हरि वुठा मन माहि ॥ एइि आपि तरे सभ कुटंब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥ जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम जीवाहि ॥१॥ मः ४ ॥ सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइि ॥ से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइि ॥ धनु धन्नु पिता धनु धन्नु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइि ॥ धनु धन्नु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइि ॥ हरि सतिगुरु मेलहु दइिआ करि जनु नानकु धोवै पाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ जा डिठा पूरा सतिगुरू ताँ अंदरहु मनु साधारिआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥ गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥१७॥ सलोक मः ४ ॥ करि किरपा सतिगुरु मेलिएनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥ सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥ जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥ जिन रखण कउ हरि आपि होइि होर केती झखि झखि जाइसी ॥ जन नानक नामु धिआइि तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥१॥ मः ४ ॥ गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥ हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥ गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥ गुर सतिगुर ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥ जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥ हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥ जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥ सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति

किनै न पाई ॥ सचु सचा रसु जिनी चखिआ से तृपति रहे आघाई ॥ इहु हरि रसु सेई जाणदे जिउ गूंगै मिठिआई खाई ॥ गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥१८॥ सलोक मः ४ ॥ जिना अंदरि उमरथल सेई जाणनि सूलीआ ॥ हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥ हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु तिन विटहु तल रोलीआ ॥ जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥ हरि रंगि चलूलै जो रते तिन भिनी हरि रंगि चोलीआ ॥ करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥१॥ मः ४ ॥ अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥ गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥ सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥ नानक तिन सचु वणंजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥ सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥ सचु सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥ सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड़ बेताले ॥ एह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥१९॥ सलोक महला ३ ॥ गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ ॥ सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥ जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ ॥ रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥ कूड़ ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलम्मा पलेटि धरेहु ॥ कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु ॥ नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥१॥ मः ४ ॥ सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ॥ एइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि परउपकारिआ ॥ हरि नामु दृड़ावहि हरि नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ ॥ गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नव खंड जगति नमसकारिआ ॥ तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥ तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ ॥ कोई विछुड़ि जाइ

सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ ॥ तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ ॥ सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥ जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ ॥२॥ महला ३ ॥ हउमै जगतु भुलाइआ दुरमति बिखिआ बिकार ॥ सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर ॥ नानक आपे मेलि लइे जिस नो सबदि लाइे पिआरु ॥३॥ पउड़ी ॥ सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अंदरु भिजै ॥ जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन का कंधु न कबहू छिजै ॥ धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अंमृतु पिजै ॥ सचु सचा जिन मनि भावदा से मनि सची दरगह लिजै ॥ धनु धन्नु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचु करिजै ॥२०॥ सलोक मः ४ ॥ साकत जाइि निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥ जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि घुसरि बगुलारे ॥ गुरसिखा अंदरि सतिगुरु वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥ एइि अगै पिछै बहि मुहु छपाइिनि न रलनी खोटेआरे ॥ एना दा भखु सु एथै नाही जाइि कूड़ु लहनि भेडारे ॥ जे साकतु नरु खावाईऐ लोचीऐ बिखु कढै मुखि उगलारे ॥ हरि साकत सेती संगु न करीअहु एइि मारे सिरजणहारे ॥ जिस का इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥१॥ मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु अगंमु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ सतिगुरू नो अपड़ि कोइि न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ ॥ सतिगुरू का खड़गु संजोउ हरि भगति है जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥ सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥ जो मंदा चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥ इेह गल होवै हरि दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥ से विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥ जिन मनि तनि सचा भावदा से सची दरगह गवे ॥ जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥२१॥ सलोकु मः ४ ॥ किआ सवणा किआ जागणा गुरमुखि ते

परवाणु ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख परधान ॥ करमी सतिगुरु पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु ॥ तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥ सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि ॥ नानक ते मुख उजले जि नित उठि संमालेनि ॥१॥ मः ४ ॥ सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥ भउजलि डुबदिआ कढि लइे हरि दाति करे दातारु ॥ धन्नु धन्नु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥ वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥ जन नानक जिन कउ कृपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु सचे के जन भगत हहि सचु सचा जिनी अराधिआ ॥ जिन गुरमुखि खोजि ढंढोलिआ तिन अंदरहु ही सचु लाधिआ ॥ सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ कालु कंटकु मारि तिनी साधिआ ॥ सचु सचा सभ दू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥ सचु सचे नो साबासि है सचु सचा सेवि फलाधिआ ॥२२॥ सलोक मः ४ ॥ मनमुखु प्राणी मुगधु है नामहीण भरमाइ ॥ बिनु गुर मनूआ ना टिकै फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ हरि प्रभु आपि दइिआल होहि ताँ सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ ॥१॥ मः ४ ॥ गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रंगि सुभाइ ॥ सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ ॥ जिहवा सालाहि न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ ॥ नानक नावै की मनि भुख है मनु तृपतै हरि रसु खाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु सचा कुदरति जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ ॥ सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ ॥ सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाईआ ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू ता हाजरु नदरी आईआ ॥ सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिना भुखा सभि गवाईआ ॥२३॥ सलोक मः ४ ॥ मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोड़ि ॥ विसटु गुरू मै पाइिआ जिनि हरि प्रभु दिता जोड़ि ॥१॥ मः ३ ॥ माइिआधारी अति अन्ना बोला ॥ सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ॥ गुरमुखि जापै सबदि लिव लाइ ॥ हरि नामु सुणि मन्ने हरि नामि समाइ ॥ जो तिसु भावै सु करे कराइिआ ॥ नानक वजदा जंतु वजाइिआ ॥२॥

पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा जो जीआ अंदरि वरतै ॥ तू करता आपि अगणतु है सभु जगु विचि गणतै ॥ सभु कीता तेरा वरतदा सभ तेरी बणतै ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा सचु साहिब चलतै ॥ सतिगुर नो मिले सु हरि मिले नाही किसै परतै ॥२४॥ सलोकु मः ४ ॥ इहु मनूआ दृड़ु करि रखीऐ गुरमुखि लाईऐ चितु ॥ किउ सासि गिरासि विसारीऐ बहदिआ उठदिआ नित ॥ मरण जीवण की चिंता गई इहु जीअड़ा हरि प्रभ वसि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू जन नानक नामु बखसि ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुखु अहंकारी महलु न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ॥ सदा बुलाईऐ महलि न आवै किउ करि दरगह सीझै ॥ सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ॥ आपणी कृपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि ॥२॥ पउड़ी ॥ सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मन्ने ॥ जा सतिगुर का मनु मंनिआ ता पाप कसंमल भन्ने ॥ उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कन्ने ॥ जिन सतिगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगणि वन्ने ॥ इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिन्ने ॥२५॥ सलोकु मः ३ ॥ जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिसु ठउर न ठाउ ॥ हलतु पलतु दोवै गए दरगह नाही थाउ ॥ एह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ॥ सतिगुर की गणतै घुसीऐ दुखे दुखि विहाइ ॥ सतिगुरु पुरखु निरवैरु है आपे लए जिसु लाइ ॥ नानक दरसनु जिना वेखालिअनु तिना दरगह लए छडाइ ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुखु अगिआनु दुरमति अहंकारी ॥ अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥ कूड़ु कुसतु एहु पाप कमावै ॥ किआ एहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥ अन्ना बोला खुइ उझड़ि पाइ ॥ मनमुखु अंधा आवै जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे थाइ न पाइ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥ एथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥ एइ वलु छलु करि झति कढदे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ॥ विचि सचे कूड़ु न गडई मनि वेखहु को निरजासि ॥ कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि ॥

२६॥ सलोक मः ५ ॥ रहदे खुहदे निंदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥ संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥१॥ मः ५ ॥ मुंढहु भुले मुंढ ते किथै पाइिनि हथु ॥ तिन्नै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥२॥ पउड़ी ५ ॥ लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥ तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥ सन्ही देन्हि विखंम थाइि मिठा मदु माणी ॥ करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥ अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥२७॥ सलोक मः ५ ॥ सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥ दूजा सेवनि नानका से पचि पचि मुइे अजाण ॥१॥ मः ५ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइि ॥ राम नामु धनु वखरो नानक सदा धिआइि ॥२॥ पउड़ी ५ ॥ नाराइिणि लइिआ नाठूंगड़ा पैर किथै रखै ॥ करदा पाप अमितिआ नित विसो चखै ॥ निंदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥ सचै साहिब मारिआ कउणु तिस नो रखै ॥ नानक तिसु सरणागती जो पुरखु अलखै ॥२८॥ सलोक मः ५ ॥ नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥ तिनि प्रभि मारे नानका होइि होइि मुइे हरामु ॥१॥ मः ५ ॥ अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥ आपि भुलाइे नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥२॥ पउड़ी ५ ॥ तुसि दिता पूरै सतिगुरू हरि धनु सचु अखुटु ॥ सभि अंदेसे मिटि गइे जम का भउ छुटु ॥ काम क्रोध बुरिआईआँ संगि साधू तुटु ॥ विणु सचे दूजा सेवदे हुइि मरसनि बुटु ॥ नानक कउ गुरि बखसिआ नामै संगि जुटु ॥२९॥ सलोक मः ४ ॥ तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइिआ नो फिरै जजमालिआ ॥ अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लइे नाही पिछो दे पछुताइि कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ पंच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥ जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥ भाई इेहु तपा न होवी बगुला है बहि साध जना वीचारिआ ॥ सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतती विचि होवै इेतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥ महा पुरखाँ की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइिआ तपे का घालिआ ॥ बाहरि बहै पंचा विचि तपा सदाइे ॥ अंदरि बहै तपा

पाप कमाडे ॥ हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ ॥ धरम राइि जमकंकरा नो आखि छडिआ इेसु तपे नो तिथै खड़ि पाइिहु जिथै महा महाँ हतिआरिआ ॥ फिरि इेसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही इेहु सतिगुरि है फिटकारिआ ॥ हरि कै दरि वरतिआ सु नानकि आखि सुणाइिआ ॥ सो बूझै जु दयि सवारिआ ॥१॥ मः ४ ॥ हरि भगताँ हरि आराधिआ हरि की वडिआई ॥ हरि कीरतनु भगत नित गाँवदे हरि नामु सुखदाई ॥ हरि भगताँ नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित चड़ै सवाई ॥ हरि भगताँ नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥ निंदकाँ पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देइि सजाई ॥ जेहा निंदक अपणै जीइि कमावदे तेहो फलु पाई ॥ अंदरि कमाणा सरपर उघड़ै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥ जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥२॥ पउड़ी मः ५ ॥ भगत जनाँ का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥ गुमानु करहि मूड़ गुमानीआ विसु खाधी मरीऐ ॥ आइि लगे नी दिह थोड़ड़े जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥ जेहे करम कमावदे तेवेहो भणीऐ ॥ जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीऐ ॥३०॥ सलोक मः ४ ॥ मनमुख मूलहु भुलिआ विचि लबु लोभु अह्मकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥ सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंध्यारु ॥ नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइिआ मोह पिआरु ॥१॥ मः ४ ॥ जिना अंदरि दूजा भाउ है तिन्ा गुरमुखि प्रीति न होइि ॥ एहु आवै जाइि भवाईऐ सुपनै सुखु न कोइि ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु उचरै कूड़ि लगिआ कूड़ु होइि ॥ माइिआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइि ॥ नानक धातु लिवै जोड़ु न आवई जे लोचै सभु कोइि ॥ जिन कउ पोतै पुन्नु पइिआ तिना गुर सबदी सुखु होइि ॥२॥ पउड़ी मः ५ ॥ नानक वीचारहि संत मुनि जनाँ चारि वेद कह्मदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ परगट पाहारै जापदे सभि लोक सुणंदे ॥ सुखु न पाइिनि मुगध नर संत नालि खह्मदे ॥ एइि लोचनि एना गुणा नो एइि अह्मकारि सड़ंदे ॥ एइि

वेचारे किआ करहि जाँ भाग धुरि मंदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ पचंदे ॥ जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥३१॥ सलोक मः ५ ॥ गुर नानक हरि नामु दृड़ाइआ भन्नण घड़ण समरथु ॥ प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥१॥ मः ५ ॥ खुधिआवंतु न जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥ नानकु माँगै नामु हरि करि किरपा संजोगु ॥२॥ पउड़ी ॥ जेवेहे करम कमावदा तेवेहे फलते ॥ चबे तता लोह सारु विचि संघै पलते ॥ घति गलावाँ चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥ काई आस न पुन्नीआ नित पर मलु हिरते ॥ कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥ सभे धिराँ निखुटीअसु हिरि लईअसु धर ते ॥ विझण कलह न देवदा ताँ लड़िआ करते ॥ जो जो करते अह्मेउ झड़ि धरती पड़ते ॥३२॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥ हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ पवितु पावनु परम बीचारी ॥ जि एसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥ अंतरि हरि नामु बासना समाणी ॥ हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥ जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ॥१॥ मः ४ ॥ सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥ गुरसिखाँ अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखाँ नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥ सतिगुर आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखाँ की घाल सचा थाइ पावै ॥ विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखाँ पासहु कंमु कराइआ लोड़े तिसु गुरसिखु फिरि नेड़ि न आवै ॥ गुर सतिगुर अगै को जीउ लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥ जि ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेड़ै गुरसिखु मूलि न आवै ॥ ब्रहमु बीचारु नानकु आखि सुणावै ॥ जि विणु सतिगुर के मनु मन्ने कंमु कराइे सो जंतु महा दुखु पावै ॥२॥ पउड़ी ॥ तूं सचा साहिबु अति वडा तुहि जेवडु तूं वड वडे ॥ जिसु तूं मेलहि सो तुधु मिलै तूं आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥ जिस नो तूं आपि मिलाइदा सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥ तूं सचा साहिबु सचु तू सभु जीउ पिंडु चंमु तेरा हडे ॥ जिउ

भावै तिउ रखु तूं सचिआ नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥३३॥१॥ सुधु ॥

गउड़ी की वार महला ५ राड़ि कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक मः ५ ॥ हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥ तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥ जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥ संत संगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥१॥ मः ५ ॥ भलके उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥ पाउ पखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥ नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥ गृहु धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥ हरि नाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥२॥ पउड़ी ॥ जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥ तू सभ महि इेकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥ साधसंगि मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥ नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥१॥ सलोक मः ५ ॥ चेता ई ताँ चेति साहिबु सचा सो धणी ॥ नानक सतिगुरु सेवि चड़ि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥१॥ मः ५ ॥ वाऊ संदे कपड़े पहिरहि गरबि गवार ॥ नानक नालि न चलनी जलि बलि होइे छारु ॥२॥ पउड़ी ॥ सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥ मुहि डिठै तिन कै जीवीऐ हरि अंमृतु चखे ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ॥ करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥ नानक चलत न जापनी को सकै न लखे ॥२॥ सलोक मः ५ ॥ नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥१॥ मः ५ ॥ नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥ कुमित्रा सेई काँढीअहि इिक विख न चलहि साथि ॥२॥ पउड़ी ॥ अंमृतु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ॥३॥ सलोक मः ५ ॥ डिठड़ो हभ ठाइि ऊण न काई जाइि ॥ नानक लधा तिन सुआउ जिना सतिगुरु

भेटिआ ॥१॥ मः ५ ॥ दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥ वथु सुहावी साइि नानक नाउ जपंदो तिसु धणी ॥२॥ पउड़ी ॥ सिमृति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥ जो जनु भेटै साधसंगि सो हरि रंगु माणी ॥ सचु नामु करता पुरखु इेह रतना खाणी ॥ मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥ तोसा दि्चै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥४॥ सलोक मः ५ ॥ अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥१॥ मः ५ ॥ मुठड़े सेई साथ जिनी सचु न लदि्आ ॥ नानक से साबासि जिनी गुर मिलि इिकु पछाणिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुह्मदा ॥ एइि सेवनि संमृथु आपणा बिनसै सभु मंदा ॥ पतित उधारण पारब्रहम संत बेदु कह्मदा ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतंदा ॥ नानकु जाचै इेकु नामु मनि तनि भावंदा ॥५॥ सलोक मः ५ ॥ चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥ अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥१॥ मः ५ ॥ घर मंदर खुसीआ तही जह तू आवहि चिति ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता ॥ तिसै परापति भाइिरहु जिसु देइि बिधाता ॥ मन तन भीतरि मउलिआ हरि रंगि जनु राता ॥ साधसंगि गुण गाइिआ सभि दोखह खाता ॥ नानक सोई जीविआ जिनि इिकु पछाता ॥६॥ सलोक मः ५ ॥ खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक कंठि ॥ बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गंठि ॥१॥ मः ५ ॥ विसारेदे मरि गइे मरि भि न सकहि मूलि ॥ वेमुख होइे राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥२॥ पउड़ी ॥ सुख निधानु प्रभु इेकु है अबिनासी सुणिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥ ऊच नीच सभ इिक समानि कीट हसती बणिआ ॥ मीत सखा सुत बंधिपो सभि तिस दे जणिआ ॥ तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रंगु मणिआ ॥७॥ सलोक मः ५ ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामाँ मनि मंतु ॥ धन्नु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥१॥ मः ५ ॥ अठे पहर भउदा फिरै खावण संदड़ै सूलि ॥ दोजकि पउदा

किउ रहै जा चिति न होइि रसूलि ॥२॥ पउड़ी ॥ तिसै सरेवहु प्राणीहो जिस दै नाउ पलै ॥ ऐथै रहहु सुहेलिआ अगै नालि चलै ॥ घरु बंधहु सच धरम का गडि थंमु अहलै ॥ एट लैहु नाराइिणै दीन दुनीआ झलै ॥ नानक पकड़े चरण हरि तिसु दरगह मलै ॥८॥ सलोक मः ५ ॥ जाचकु मंगै दानु देहि पिआरिआ ॥ देवणहारु दातारु मै नित चितारिआ ॥ निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥ नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥१॥ मः ५ ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत इेक ॥२॥ पउड़ी ॥ एथै अंमृतु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥ जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ जिस नो आइिआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥ पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥९॥ सलोक मः ५ ॥ सतिगुरि पूरै सेविऐ दूखा का होइि नासु ॥ नानक नामि अराधिऐ कारजु आवै रासि ॥१॥ मः ५ ॥ जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मंगल बिस्राम ॥ नानक जपीऐ सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥२॥ पउड़ी ॥ तिन की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि लधा ॥ साधा सरणी जो पवै सु छुटै बधा ॥ गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥ गुरु भेटिआ पारब्रहमु हरि पड़ि बुझि समधा ॥ नानक पाइिआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥१०॥ सलोक मः ५ ॥ कामु न करही आपणा फिरहि अवता लोइि ॥ नानक नाइि विसारिऐ सुखु किनेहा होइि ॥१॥ मः ५ ॥ बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइि ॥ नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ इिह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥ जमकंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥ भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीऐ ॥ हरि गुण गुंफहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीऐ ॥ नानक प्रीतम मिलि रहे पारब्रहम नरहरीऐ ॥११॥ सलोक मः ५ ॥ नानक आइे से परवाणु है जिन हरि वुठा चिति ॥ गाल्ी अल पलालीआ कंमि न आवहि मित ॥१॥ मः ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु दृसटी आइिआ पूरन अगम

बिसमाद ॥ नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुर परसादि ॥२॥ पउड़ी ॥ धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥ करतब करनि भलेरिआ मदि माइिआ सुते ॥ फिरि फिरि जूनि भवाईअनि जम मारगि मुते ॥ कीता पाइिनि आपणा दुख सेती जुते ॥ नानक नाइि विसारिऐ सभ मंदी रुते ॥१२॥ सलोक मः ५ ॥ उठंदिआ बह्मदिआ सवंदिआ सुखु सोइि ॥ नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइि ॥१॥ मः ५ ॥ लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइि ॥ जिसु गुरु भेटै नानका तिसु मनि वसिआ सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥ सादु आइिआ तिन हरि जनाँ चखि साधी डिठा ॥ पारब्रहमि जिसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥ इिकु निरंजनु रवि रहिआ भाउ दुया कुठा ॥ हरि नानकु मंगै जोड़ि कर प्रभु देवै तुठा ॥१३॥ सलोक मः ५ ॥ जाचड़ी सा सारु जो जाचंदी हेकड़ो ॥ गाली बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ ॥१॥ मः ५ ॥ नीहि जि विधा मन्नु पछाणू विरलो थिए ॥ जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥२॥ पउड़ी ॥ सोई सेविहु जीअड़े दाता बखसिंदु ॥ किलविख सभि बिनासु होनि सिमरत गोविंदु ॥ हरि मारगु साधू दसिआ जपीऐ गुरमंतु ॥ माइिआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावंदु ॥ धिआइि नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥१४॥ सलोक मः ५ ॥ वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइि ॥ तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइि ॥१॥ मः ५ ॥ मंगणा त सचु इिकु जिसु तुसि देवै आपि ॥ जितु खाधै मनु तृपतीऐ नानक साहिब दाति ॥२॥ पउड़ी ॥ लाहा जग महि से खटहि जिन हरि धनु रासि ॥ दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥ निहचलु इेकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥ पारब्रहमु जिसु विसरै तिसु बिरथा सासु ॥ कंठि लाइि जन रखिआ नानक बलि जासु ॥१५॥ सलोक मः ५ ॥ पारब्रहमि फुरमाइिआ मीहु वुठा सहजि सुभाइि ॥ अन्नु धन्नु बहुतु उपजिआ पृथमी रजी तिपति अघाइि ॥ सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइिआ बिलाइि ॥ पूरबि लिखिआ पाइिआ मिलिआ तिसै रजाइि ॥ परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइि ॥१॥ मः ५ ॥

जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥ दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ ॥ डिठा सभु संसारु सुखु न नाम बिनु ॥ तनु धनु होसी छारु जाणै कोइ जनु ॥ रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥ जिसु भुलाइे आपि तिसु कल नही जाणीआ ॥ रंगि रते निरबाणु सचा गावही ॥ नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही ॥२॥ पउड़ी ॥ जंमणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लड़ि लागे ॥ जीवत से परवाणु होइे हरि कीरतनि जागे ॥ साधसंगु जिन पाइिआ सेई वडभागे ॥ नाइि विसरिऐ ध्रिगु जीवणा तूटे कच धागे ॥ नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥१६॥ सलोकु मः ५ ॥ धरणि सुवन्नी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा ॥ सभे काज सुहेलड़े थीइे गुरु नानकु सतिगुरु तुठा ॥१॥ मः ५ ॥ फिरदी फिरदी दह दिसा जल परबत बनराइि ॥ जिथै डिठा मिरतको इिल बहिठी आइि ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ ॥ नेड़ै देखउ पारब्रहमु इकु नामु धिआवउ ॥ होइि सगल की रेणुका हरि संगि समावउ ॥ दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥ पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥१७॥ सलोक दोहा मः ५ ॥ इेकु जि साजनु मै कीआ सरब कला समरथु ॥ जीउ हमारा खन्नीऐ हरि मन तन संदड़ी वथु ॥१॥ मः ५ ॥ जे करु गहहि पिआरड़े तुधु न छोडा मूलि ॥ हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै ॥ जपि जपि जीवहि संत जन पापा मलु धोवै ॥ चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥ गुरु पूरा जिसु भेटीऐ मरि जनमि न रोवै ॥ प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥१८॥ सलोक डखणा मः ५ ॥ भोरी भरमु वञाइि पिरी मुहबति हिकु तू ॥ जिथहु वंञै जाइि तिथाऊ मउजूदु सोइि ॥१॥ मः ५ ॥ चड़ि कै घोड़ड़ै कुंदे पकड़हि खूंडी दी खेडारी ॥ हसा सेती चितु उलासहि कुकड़ दी एडारी ॥२॥ पउड़ी ॥ रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥ हरि जसु लिखहि लाइि भावनी से हसत पविता ॥ अठसठि तीरथ मजना सभि पुन्न तिनि किता ॥ संसार सागर ते उधरे

बिखिआ गड़ु जिता ॥ नानक लड़ि लाइि उधारिअनु दयु सेवि अमिता ॥१९॥ सलोक मः ५ ॥ धंधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥ नानक सेई तन्न फुटंनि जिना साँई विसरै ॥१॥ मः ५ ॥ परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥ सभे सिख उबारिअनु प्रभि काज सवारे ॥ निंदक पकड़ि पछाड़िअनु झूठे दरबारे ॥ नानक का प्रभु वडा है आपि साजि सवारे ॥२॥ पउड़ी ॥ प्रभु बेअंतु किछु अंतु नाहि सभु तिसै करणा ॥ अगम अगोचरु साहिबो जीआँ का परणा ॥ हसत देइि प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥ मिहरवानु बखसिंदु आपि जपि सचे तरणा ॥ जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥२०॥ सलोक मः ५ ॥ तिन्ना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइि ॥ नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइि ॥१॥ मः ५ ॥ जाचिकु मंगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥ नानक परमेसरु जजमानु तिसहि भुख न मूलि ॥२॥ पउड़ी ॥ मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥ प्रीति लगी हरि नाम सिउ इे हसती घोड़े ॥ राज मिलख खुसीआ घणी धिआइि मुखु न मोड़े ॥ ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥ नानक मनि तनि चाउ इेहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥२१॥१॥ सुधु कीचे

राग़ु गउड़ी भगताँ की बाणी

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

गउड़ी गुआरेरी स्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥ अब मोहि जलत राम जलु पाइिआ ॥ राम उदकि तनु जलत बुझाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मनु मारण कारणि बन जाईअै ॥ सो जलु बिनु भगवंत न पाईअै ॥१॥ जिह पावक सुरि नर है जारे ॥ राम उदकि जन जलत उबारे ॥२॥ भव सागर सुख सागर माही ॥ पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥३॥ कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥ राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥ गउड़ी कबीर जी ॥ माधउ जल की पिआस न जाइि ॥ जल महि अगनि उठी अधिकाइि ॥१॥ रहाउ ॥ तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥ जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥ तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥ जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥ तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥ मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥

तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥ कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥४॥२॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जब हम इेको इेकु करि जानिआ ॥ तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥१॥ हम अपतह अपुनी पति खोई ॥ हमरै खोजि परहु मति कोई ॥१॥ रहाउ ॥ हम मंदे मंदे मन माही ॥ साझ पाति काहू सिउ नाही ॥२॥ पति अपति ता की नही लाज ॥ तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥३॥ कहु कबीर पति हरि परवानु ॥ सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥४॥३॥ गउड़ी कबीर जी ॥ नगन फिरत जौ पाईअै जोगु ॥ बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥ किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥ मूड मुंडाइे जौ सिधि पाई ॥ मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥ बिंदु राखि जौ तरीअै भाई ॥ खुसरै किउ न परम गति पाई ॥३॥ कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥४॥४॥ गउड़ी कबीर जी ॥ संधिआ प्रात इस्नानु कराही ॥ जिउ भइे दादुर पानी माही ॥१॥ जउ पै राम राम रति नाही ॥ ते सभि धरम राइि कै जाही ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ रति बहु रूप रचाही ॥ तिन कउ दइिआ सुपनै भी नाही ॥२॥ चारि चरन कहहि बहु आगर ॥ साधू सुखु पावहि कलि सागर ॥३॥ कहु कबीर बहु काइि करीजै ॥ सरबसु छोडि महा रसु पीजै ॥४॥५॥ कबीर जी गउड़ी ॥ किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥ जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥ रे जन मनु माधउ सिउ लाईअै ॥ चतुराई न चतुरभुजु पाईअै ॥ रहाउ ॥ परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥२॥ करम करत बधे अहमेव ॥ मिलि पाथर की करही सेव ॥३॥ कहु कबीर भगति करि पाइिआ ॥ भोले भाइि मिले रघुराइिआ ॥४॥६॥ गउड़ी कबीर जी ॥ गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥ ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥ कहु रे पंडित बामन कब के होइे ॥ बामन कहि कहि जनमु मत खोइे ॥१॥ रहाउ ॥ जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइिआ ॥ तउ आन बाट काहे नही आइिआ ॥२॥ तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥ हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥ कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥ सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै

॥४॥७॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥१॥ जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥ उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥१॥ रहाउ ॥ जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥ प्रान गइे कहु का की माइआ ॥२॥ जस जंती महि जीउ समाना ॥ मूइे मरमु को का कर जाना ॥३॥ ह्मसा सरवरु कालु सरीर ॥ राम रसाइिन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जोति की जाति जाति की जोती ॥ तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥ कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥ भउ भजि जाइि अभै होइि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ तटि तीरथि नही मनु पतीआइि ॥ चार अचार रहे उरझाइि ॥२॥ पाप पुन्न दुइि इेक समान ॥ निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥ कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ इिसु परचाइि परचि रहु इेसु ॥४॥६॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन परमिति परमनु जाना ॥ बातन ही बैकुंठ समाना ॥१॥ ना जाना बैकुंठ कहा ही ॥ जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥१॥ रहाउ ॥ कहन कहावन नह पतीअई है ॥ तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥२॥ जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥ तब लगु होइि नही चरन निवासु ॥३॥ कहु कबीर इिह कहीऐ काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥ ४॥१०॥ गउड़ी कबीर जी ॥ उपजै निपजै निपजि समाई ॥ नैनह देखत इिहु जगु जाई ॥१॥ लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ अंत की बार नही कछु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जतन करि काइिआ पाली ॥ मरती बार अगनि संगि जाली ॥२॥ चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥३॥ कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥ बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥४॥११॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अवर मूइे किआ सोगु करीजै ॥ तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥१॥ मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ अब मोहि मिलिए है जीआवनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ इिआ देही परमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमान्नदा ॥२॥ कूअटा इेकु पंच पनिहारी ॥ टूटी लाजु भरै मति हारी ॥३॥ कहु कबीर इिक बुधि बीचारी ॥ ना एहु कूअटा ना पनिहारी ॥४॥१२॥ गउड़ी कबीर जी ॥ असथावर जंगम कीट पतंगा ॥ अनिक

जनम कीड़े बहु रंगा ॥१॥ ऐसे घर हम बहुतु बसाइे ॥ जब हम राम गरभ होइि आइे ॥१॥ रहाउ ॥ जोगी जती तपी ब्रहमचारी ॥ कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥ साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥ राम रसाइिनु रसना पीवहि ॥३॥ कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ हारि परे अब पूरा दीजै ॥४॥१३॥ गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइि लिखिआ महला ५ ॥ ऐसो अचरजु देखिए कबीर ॥ दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥१॥ रहाउ ॥ हरी अंगूरी गदहा चरै ॥ नित उठि हासै हीगै मरै ॥१॥ माता भैसा अंमुहा जाइि ॥ कुदि कुदि चरै रसातलि पाइि ॥२॥ कहु कबीर परगटु भई खेड ॥ लेले कउ चूघै नित भेड ॥३॥ राम रमत मति परगटी आई ॥ कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥४॥१॥१४॥ गउड़ी कबीर जी पंचपदे ॥ जिउ जल छोडि बाहरि भइिए मीना ॥ पूरब जनम हउ तप का हीना ॥१॥ अब कहु राम कवन गति मोरी ॥ तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ ॥ सगल जनमु सिव पुरी गवाइिआ ॥ मरती बार मगहरि उठि आइिआ ॥२॥ बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥ मरनु भइिआ मगहर की बासी ॥३॥ कासी मगहर सम बीचारी ॥ एछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥ कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥ मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥५॥१५॥ गउड़ी कबीर जी ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥१॥ इिसु तन धन की कवन बडाई ॥ धरनि परै उरवारि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥ इिकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥२॥ हाथि त डोर मुखि खाइिए तंबोर ॥ मरती बार कसि बाधिए चोर ॥३॥ गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥ रामै राम रमत सुखु पावै ॥४॥ किरपा करि कै नामु दृड़ाई ॥ हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥५॥ कहत कबीर चेति रे अंधा ॥ सति रामु झूठा सभु धंधा ॥६॥१६॥ गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके ॥ जम ते उलटि भइे है राम ॥ दुख बिनसे सुख कीए बिसराम ॥ बैरी उलटि भइे है मीता ॥ साकत उलटि सुजन भइे चीता ॥१॥ अब मोहि सरब कुसल करि मानिआ ॥ साँति भई जब गोबिदु जानिआ ॥१॥

रहाउ ॥ तन महि होती कोटि उपाधि ॥ उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥ आपु पछानै आपै आप ॥ रोगु न बिआपै तीनौ ताप ॥२॥ अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥ कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥ आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥३॥१७॥ गउड़ी कबीर जी ॥ पिंडि मूऐ जीउ किह घरि जाता ॥ सबदि अतीति अनाहदि राता ॥ जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥ जिउ गूंगे साकर मनु मानिआ ॥१॥ ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥ मन रे पवन दृड़ सुखमन नारी ॥१॥ रहाउ ॥ सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥ सो पदु रवहु जि बहुरि न रवना ॥ सो धिआनु धरहु जि बहुरि न धरना ॥ ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ॥२॥ उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥ बिनु जल संगम मन महि न्हावउ ॥ लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥ ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥३॥ अपु तेजु बाइ पृथमी आकासा ॥ ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥ तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥४॥१८॥ गउड़ी कबीर जी तिपदे ॥ कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥ मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥१॥ अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥ सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥ १॥ रहाउ ॥ ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥ राम भगति बैठे घरि आइआ ॥२॥ कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥ केवल राम भगति निज भागी ॥३॥१॥१९॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥ सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥१॥ अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥ मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥ सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥२॥ कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥ गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥३॥२०॥ गउड़ी कबीर जी ॥ कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥ खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥१॥ लागी होइ सु जानै पीर ॥ राम भगति अनीआले तीर ॥१॥ रहाउ ॥ इेक भाइ देखउ सभ नारी ॥ किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥२॥ कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥ सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥३॥२१॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥ मुकति अन्नत पुकारणि जाई ॥१॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहू का कवनु निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ तीनि लोक जा कै हहि भार ॥ सो काहे न करै प्रतिपार ॥२॥ कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥३॥२२॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥ पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥१॥ प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥ जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥१॥ रहाउ ॥ साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥ सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥२॥ तनु मनु धनु गृहु सउपि सरीरु ॥ सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥३॥२३॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥ बिखिआ लै डूबी परवारु ॥१॥ रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥ हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥१॥ रहाउ ॥ सुरि नर दाधे लागी आगि ॥ निकटि नीरु पसु पीवसि न झागि ॥२॥ चेतत चेतत निकसिए नीरु ॥ सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥३॥२४॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥ बिधवा कस न भई महतारी ॥१॥ जिह नर राम भगति नहि साधी ॥ जनमत कस न मुए अपराधी ॥१॥ रहाउ ॥ मुचु मुचु गरभ गइे कीन बचिआ ॥ बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥२॥ कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥३॥२५॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन लेहि खसम का नाउ ॥ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥१॥ सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥ सो भाई मेरै मनि भावै ॥१॥ रहाउ ॥ जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥ तिन की पग पंकज हम धूरि ॥२॥ जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥३॥२६॥ गउड़ी कबीर जी ॥ गगनि रसाल चुअै मेरी भाठी ॥ संचि महा रसु तनु भइिआ काठी ॥१॥ उआ कउ कहीअै सहज मतवारा ॥ पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥ आन्नदि माते अनदिनु जाई ॥२॥ चीनत चीतु निरंजन लाइिआ ॥ कहु कबीर तौ अनभउ पाइिआ ॥३॥२७॥ गउड़ी कबीर जी ॥ मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥

मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥१॥ कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥ मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥१॥ रहाउ ॥ मन अंतरि बोलै सभु कोई ॥ मन मारे बिनु भगति न होई ॥२॥ कहु कबीर जो जानै भेउ ॥ मनु मधुसूदनु तृभवण देउ ॥३॥२८॥ गउड़ी कबीर जी ॥ एहि जु दीसहि अंबरि तारे ॥ किनि एहि चीते चीतनहारे ॥१॥ कहु रे पंडित अंबरु का सिउ लागा ॥ बूझै बूझनहारु सभागा ॥१॥ रहाउ ॥ सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥ सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥२॥ कहु कबीर जानैगा सोइि ॥ हिरदै रामु मुखि रामै होइि ॥३॥२९॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बेद की पुत्री सिंमृति भाई ॥ साँकल जेवरी लै है आई ॥१॥ आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥ मोह कै फाधि काल सरु साँधिआ ॥१॥ रहाउ ॥ कटी न कटै तूटि नह जाई ॥ सा सापनि होइि जग कउ खाई ॥२॥ हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥ कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥३॥३०॥ गउड़ी कबीर जी ॥ देइि मुहार लगामु पहिरावउ ॥ सगल त जीनु गगन दउरावउ ॥१॥ अपनै बीचारि असवारी कीजै ॥ सहज कै पावड़ै पगु धरि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥ हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥२॥ कहत कबीर भले असवारा ॥ बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥३॥३१॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मुखि पाँचउ अंमृत खाइे ॥ तिह मुख देखत लूकट लाइे ॥१॥ इकु दुखु राम राइि काटहु मेरा ॥ अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ बिगूती बहु बिधि भाती ॥ को जारे को गडि ले माटी ॥२॥ कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥ पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥३॥३२॥ गउड़ी कबीर जी ॥ आपे पावकु आपे पवना ॥ जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥ राम जपत तनु जरि की न जाइि ॥ राम नाम चितु रहिआ समाइि ॥१॥ रहाउ ॥ का को जरै काहि होइि हानि ॥ नट वट खेलै सारिगपानि ॥२॥ कहु कबीर अखर दुइि भाखि ॥ होइिगा खसमु त लेइिगा राखि ॥३॥३३॥ गउड़ी कबीर जी दुपदे ॥ ना मै जोग धिआन चितु लाइिआ ॥ बिनु बैराग न छूटसि माइिआ ॥१॥ कैसे जीवनु होइि हमारा ॥

जब न होइ राम नाम अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ कहु कबीर खोजउ असमान ॥ राम समान न देखउ आन ॥२॥३४॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ सो सिरु चुंच सवारहि काग ॥१॥ इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥ राम नामु काहे न दृड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ इही हवाल होहिगे तेरे ॥२॥३५॥ गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥

राग़ु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सुखु माँगत दुखु आगै आवै ॥ सो सुखु हमहु न माँगिआ भावै ॥१॥ बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥ कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥ इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना ॥ सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥ सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥ तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥३॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥ गुर परसादी जैदेउ नामाँ ॥ भगति कै प्रेमि इन ही है जानाँ ॥५॥ इसु मन कउ नही आवन जाना ॥ जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥६॥ इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥ इस मन का कोई जानै भेउ ॥ इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥ जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥ इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥ गउड़ी गुआरेरी ॥ अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिध भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ साधक सिध सगल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥ जो हरि हरे सु होहि न आना ॥ कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥ गउड़ी भी सोरठि भी ॥ रे जीअ निलज लाज तुोहि नाही ॥ हरि तजि कत काहू के जाँही ॥१॥ रहाउ ॥ जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥ सो जनु पर घर जात न सोही ॥१॥ सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥ कवला चरन सरन है जा के ॥ कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥ सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो सम्रथु निज पति है दाता ॥४॥ कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥

कउनु को पूतु पिता को का को ॥ कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥ हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥ हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥२॥ कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥३॥३९॥ अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ जनम मरन कटि परम गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ साधू संगति दीए रलाइ ॥ पंच दूत ते लीए छडाइ ॥ अंमृत नामु जपउ जपु रसना ॥ अमोल दासु करि लीनो अपना ॥१॥ सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ काढि लीन सागर संसार ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥२॥ माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥ मनि संतोखु नामु आधारु ॥ जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ जत पेखउ तत अंतरजामी ॥३॥ अपनी भगति आप ही दृड़ाई ॥ पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ जिसु कृपा करे तिसु पूरन साज ॥ कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥४॥४०॥ जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक एपति होई ॥ जनमे सूतकु मूए फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥१॥ कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥ ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥१॥ रहाउ ॥ नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥ ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥२॥ फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥ कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥३॥४१॥ गउड़ी ॥ झगरा एकु निबेरहु राम ॥ जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥१॥ रहाउ ॥ इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥१॥ ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥ बेदु बडा कि जहाँ ते आइआ ॥२॥ कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥ तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३॥४२॥ रागु गउड़ी चेती ॥ देखौ भाई ग्यान की आई आँधी ॥ सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बाँधी ॥१॥ रहाउ ॥ दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥ तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भाँडा फूटा ॥

१॥ आँधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनाँ ॥ कहि कबीर मनि भइिआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥२॥४३॥

गउड़ी चेती ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥ बातन ही असमानु गिरावहि ॥१॥ ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥ जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥ तिह निंदहि जिह गंगा आनी ॥२॥ बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥ आपु गए अउरन हू घालहि ॥३॥ छाडि कुचरचा आन न जानहि ॥ ब्रहमा हू को कहिए न मानहि ॥४॥ आपु गए अउरन हू खोवहि ॥ आगि लगाइ मंदर मै सोवहि ॥५॥ अवरन हसत आप हहि काँने ॥ तिन कउ देखि कबीर लजाने ॥६॥१॥४४॥

रागु गउड़ी बैरागणि कबीर जी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥ पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥१॥ मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥ कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥१॥ रहाउ ॥ माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥ ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥२॥ सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंत काल कउ भारी ॥ राम नाम की गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥३॥ देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥ कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥४॥१॥४५॥ गउड़ी ॥ जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुंनि समाइआ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ बहुड़ि न भवजलि पाइआ ॥१॥ मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ ॥ गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अंमृतु पीओईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥ सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि बासा ॥२॥ तिनि

बिनु बाणै धनखु चढाईऐ इहु जगु बेधिआ भाई ॥ दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥३॥ उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ॥ कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥४६॥ गउड़ी बैरागणि तिपदे ॥ उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुन्न अनरागी ॥ आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोजु बैरागी ॥१॥ मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥ गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥१॥ रहाउ ॥ निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥ अलउती का जैसे भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥२॥ तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥ कहु कबीर जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी ॥३॥३॥४७॥ गउड़ी ॥ तह पावस सिंधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥ जीवन मिरतु न दुखु सुखु बिआपै सुन्न समाधि दोऊ तह नाही ॥१॥ सहज की अकथ कथा है निरारी ॥ तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै न भारी ॥१॥ रहाउ ॥ अरध उरध दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥ जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर तहा समाही ॥२॥ अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥ कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि रहीऐ ॥३॥४॥४८॥ गउड़ी ॥ पापु पुन्नु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिए ॥ तृसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि टाँड बिसाहिए ॥१॥ ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ सगल संसारु कीए बनजारा ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु दुइ भइे जगाती मन तरंग बटवारा ॥ पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टाँडा उतरिए पारा ॥२॥ कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई ॥ घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥३॥५॥४६॥ गउड़ी पंचपदा ॥ पेवकड़ै दिन चारि है साहुरड़ै जाणा ॥ अंधा लोकु न जाणई मूरखु इेआणा ॥१॥ कहु डंडीआ बाधै धन खड़ी ॥ पाहू घरि आइे मुकलाऊ आइे ॥१॥ रहाउ ॥ एह जि दिसै खूहड़ी कउन लाजु वहारी ॥ लाजु घड़ी सिउ तूटि पड़ी उठि चली पनिहारी ॥२॥ साहिबु

होइ दइिआलु कृपा करे अपुना कारजु सवारे ॥ ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥३॥ किरत की बाँधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥ एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥४॥ भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥ हरि की चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥५॥६॥५०॥ गउड़ी ॥ जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥ रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥१॥ हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा ॥ जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा ॥१॥ रहाउ ॥ जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥ पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥२॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझे किउ रहीऐ ॥ सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥३॥ तजि बावे दाहने बिकारा हरि पदु दृड़ु करि रहीऐ ॥ कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥४॥७॥५१॥

रागु गउड़ी पूरबी कबीर जी ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जह कछु अहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही ॥ इड़ा पिंगुला सुखमन बंदे ए अवगन कत जाही ॥१॥ तागा तूटा गगनु बिनसि गइआ तेरा बोलतु कहा समाई ॥ एह संसा मो कउ अनदिनु बिआपै मो कउ को न कहै समझाई ॥१॥ रहाउ ॥ जह बरभंडु पिंडु तह नाही रचनहारु तह नाही ॥ जोड़नहारो सदा अतीता इह कहीऐ किसु माही ॥२॥ जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै जब लगु होइ बिनासी ॥ का को ठाकुरु का को सेवकु को काहू कै जासी ॥३॥ कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन राती ॥ उआ का मरमु ओही परु जानै ओहु तउ सदा अबिनासी ॥४॥१॥५२॥ गउड़ी ॥ सुरति सिमृति दुइ कन्नी मुंदा परमिति बाहरि खिंथा ॥ सुन्न गुफा महि आसणु बैसणु कलप बिबरजित पंथा ॥१॥ मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥ मरत न सोग बिओगी ॥१॥ रहाउ ॥ खंड ब्रहमंड महि सिंङी मेरा बटूआ सभु जगु भसमाधारी ॥ ताड़ी लागी तृपलु पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥२॥ मनु पवनु दुइ तूंबा करी है जुग जुग

सारद साजी ॥ थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥३॥ सुनि मन मगन भइे है पूरे माइिआ डोल न लागी ॥ कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइिए बैरागी ॥४॥२॥५३॥ गउड़ी ॥ गज नव गज दस गज इिकीस पुरीआ इेक तनाई ॥ साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगो अधिकाई ॥१॥ गई बुनावन माहो ॥ घर छोडिअै जाइि जुलाहो ॥१॥ रहाउ ॥ गजी न मिनीअै तोलि न तुलीअै पाचनु सेर अढाई ॥ जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥२॥ दिन की बैठ खसम की बरकस इिह बेला कत आई ॥ छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिए जुलाहो रीसाई ॥३॥ छोछी नली तंतु नही निकसै नतर रही उरझाई ॥ छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥४॥३॥५४॥ गउड़ी ॥ इेक जोति इेका मिली किंबा होइि महोइि ॥ जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइि ॥१॥ सावल सुंदर रामईआ ॥ मेरा मनु लागा तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ साधु मिलै सिधि पाईअै कि इेहु जोगु कि भोगु ॥ दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥२॥ लोगु जानै इिहु गीतु है इिहु तउ ब्रहम बीचार ॥ जिउ कासी उपदेसु होइि मानस मरती बार ॥३॥ कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइि ॥ कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइि ॥४॥१॥४॥५५॥ गउड़ी ॥ जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिए रे ॥ करम धरम करते बहु संजम अह्मबुधि मनु जारिए रे ॥१॥ सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिए रे ॥ हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिए रे ॥ १॥ रहाउ ॥ तृसना तृखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिए रे ॥ उनमत मान हिरिए मन माही गुर का सबदु न धारिए रे ॥२॥ सुआद लुभत इिंद्री रस प्रेरिए मद रस लैत बिकारिए रे ॥ करम भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिए रे ॥३॥ धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिए रे ॥ कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिए रे ॥४॥१॥५॥५६॥ गउड़ी ॥ कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिए जगदीस ॥ काम सुआइि गज बसि परे

मन बउरा रे अंकसु सहिए सीस ॥१॥ बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥ निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिए न राम जहाजु ॥१॥ रहाउ ॥ मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥ छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिए घर घर बारि ॥२॥ जिउ नलनी सूअटा गहिए मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥ जैसा रंगु कसुंभ का मन बउरा रे तिउ पसरिए पासारु ॥३॥ नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥ कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥४॥१॥६॥५७॥ गउड़ी ॥ अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥ राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥१॥ हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै सार धनु कहीअै ॥ जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीअै ॥१॥ रहाउ ॥ इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भइे उदासी ॥ मनि मुकंदु जिहबा नाराइनु परै न जम की फासी ॥२॥ निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा ॥ जलत अंभ थंभि मनु धावत भरम बंधन भउ भागा ॥३॥ कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी ॥ तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि इेकु मुरारी ॥४॥१॥७॥५८॥ गउड़ी ॥ जिउ कपि के कर मुसटि चनन की लुबधि न तिआगु दइिए ॥ जो जो करम कीइे लालच सिउ ते फिरि गरहि परिए ॥१॥ भगति बिनु बिरथे जनमु गइिए ॥ साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिए ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ उदिआन कुसम परफुलित किनहि न घ्राउ लइिए ॥ तैसे भ्रमत अनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हइिए ॥२॥ इिआ धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कउ जु दइिए ॥ तिन ही माहि अटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइिए ॥३॥ अउध अनल तनु तिन को मंदरु चहु दिस ठाटु ठइिए ॥ कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर एट लइिए ॥४॥१॥८॥५९॥ गउड़ी ॥ पानी मैला माटी गोरी ॥ इस माटी की पुतरी जोरी ॥१॥ मै नाही कछु आहि न मोरा ॥ तनु धनु सभु रसु गोबिंद तोरा ॥१॥ रहाउ ॥ इिस

माटी महि पवनु समाइआ ॥ झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥२॥ किनहू लाख पाँच की जोरी ॥ अंत की बार गगरीआ फोरी ॥३॥ कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ खिन महि बिनसि जाइ अह्मकारी ॥४॥१॥९॥६०॥ गउड़ी ॥ राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥ ध्रू प्रहिलाद जपिए हरि जैसे ॥१॥ दीन दइआल भरोसे तेरे ॥ सभु परवारु चड़ाइआ बेड़े ॥१॥ रहाउ ॥ जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै ॥ इस बेड़े कउ पारि लघावै ॥२॥ गुर परसादि ऐसी बुधि समानी ॥ चूकि गई फिरि आवन जानी ॥३॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ उरवारि पारि सभ इको दानी ॥४॥२॥१०॥६१॥ गउड़ी ९ ॥ जोनि छाडि जउ जग महि आइए ॥ लागत पवन खसमु बिसराइए ॥१॥ जीअरा हरि के गुना गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥ तउ जठर अगनि महि रहता ॥२॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइए ॥ अब के छुटके ठउर न ठाइए ॥३॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ आवत दीसै जात न जानी ॥४॥१॥११॥६२॥ गउड़ी पूरबी ॥ सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥ होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥१॥ रमईआ गुन गाईऐ ॥ जा ते पाईऐ परम निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥ जब लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥२॥ संपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥ जिउ संपै तिउ बिपति है बिध ने रचिआ सो होइ ॥३॥ कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥ सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥४॥१॥१२॥६३॥ गउड़ी ॥ रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥ बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥१॥ राम रसु पीआ रे ॥ जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥१॥ रहाउ ॥ अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ ॥ जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥२॥ जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥ कहि कबीर चिति चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥३॥२॥१३॥६४॥ रागु गउड़ी ॥ पंथु निहारै कामनी लोचन

भरी ले उसासा ॥ उर न भीजै पगु ना खिसै हरि दरसन की आसा ॥१॥ उडहु न कागा कारे ॥ बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ इेकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ॥२॥१॥१४॥६५॥ रागु गउड़ी ११ ॥ आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बना रसि गाऊं रे ॥ उआ का सरूपु देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे ॥१॥ तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर ॥ सो मिलै जो बडभागो ॥१॥ रहाउ ॥ बिंद्राबन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे ॥ जा का ठाकुरु तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥२॥२॥१५॥६६॥ गउड़ी पूरबी १२ ॥ बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥ कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिए गिआता ॥१॥ जीअरे जाहिगा मै जानाँ ॥ अबिगत समझु इआना ॥ जत जत देखउ बहुरि न पेखउ संगि माइआ लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥ गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥ कहि कबीर इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अंधा ॥२॥१॥१६॥६७॥ गउड़ी १२ ॥ मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डाँडे ॥ सूरु कि सनमुख रन ते डरपै सती कि साँचै भाँडे ॥१॥ डगमग छाडि रे मन बउरा ॥ अब तउ जरे मरे सिधि पाईऔ लीनो हाथि संधउरा ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ कहि कबीर राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥२॥२॥१७॥६८॥ गउड़ी १३ ॥ फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार ॥ तुही दरीआ तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥१॥ बंदे बंदगी इकतीआर ॥ साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥ कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥२॥१८॥६९॥ गउड़ी ॥ लख चउरासीह जीअ जोनि महि भ्रमत न्नदु बहु थाको रे ॥ भगति हेति अवतारु लीए है भागु[५] बडो बपुरा को रे ॥१॥ तुम् जु कहत हउ न्नद को न्नदनु न्नद सु न्नदनु का को रे ॥ धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु न्नदु कहा थो रे ॥

१॥ रहाउ ॥ संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥ कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न बापो रे ॥२॥१६॥७०॥ गउड़ी ॥ निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥१॥ रहाउ ॥ निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥१॥ निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु ॥ निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥ निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै उधारु ॥ जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥३॥२०॥७१॥ राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥ अब हम तुम इेक भइे हहि इेकै देखत मनु पतीआही ॥ १॥ जब बुधि होती तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥ कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥२॥२१॥७२॥ गउड़ी ॥ खट नेम करि कोठड़ी बाँधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥ कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥१॥ अब मन जागत रहु रे भाई ॥ गाफलु होइ कै जनमु गवाइिए चोरु मुसै घरु जाई ॥१॥ रहाउ ॥ पंच पहरूआ दर महि रहते तिन का नही पतीआरा ॥ चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥२॥ नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ॥ कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥३॥२२॥७३॥ गउड़ी ॥ माई मोहि अवरु न जानिए आनानाँ ॥ सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानाँ ॥ रहाउ ॥ हिरदे प्रगासु गिआन गुर गंमित गगन मंडल महि धिआनानाँ ॥ बिखै रोग भै बंधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥१॥ इेक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥ चंदन बासु भइे मन बासन तिआगि घटिए अभिमानाना ॥२॥ जो जन गाइि धिआइि जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानाँ ॥ तिह बड भाग बसिए मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥३॥ काटि सकति सिव सहजु

प्रगासिए इकै इक समानाना ॥ कहि कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानाँ ॥४॥२३॥७४॥

राग़ु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥ इे अखर खिरि जाहिगे एइि अखर इन महि नाहि ॥१॥ जहा बोल तह अछर आवा ॥ जह अबोल तह मनु न रहावा ॥ बोल अबोल मधि है सोई ॥ जस एहु है तस लखै न कोई ॥२॥ अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥ बटक बीज महि रवि रहिए जा को तीनि लोक बिसथार ॥३॥ अलह लह्मता भेद छै कछु कछु पाइिए भेद ॥ उलटि भेद मनु बेधिए पाइिए अभंग अछेद ॥४॥ तुरक तरीकति जानीऐ ह्मिदू बेद पुरान ॥ मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन ॥५॥ एअंकार आदि मै जाना ॥ लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥ एअंकार लखै जउ कोई ॥ सोई लखि मेटणा न होई ॥६॥ कका किरणि कमल महि पावा ॥ ससि बिगास संपट नही आवा ॥ अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥ अकह कहा कहि का समझावा ॥७॥ खखा इहै खोड़ि मन आवा ॥ खोड़े छाडि न दह दिस धावा ॥ खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥ तउ होइि निखिअउ अखै पदु लहै ॥८॥ गगा गुर के बचन पछाना ॥ दूजी बात न धरई काना ॥ रहै बिह्मगम कतहि न जाई ॥ अगह गहै गहि गगन रहाई ॥९॥ घघा घटि घटि निमसै सोई ॥ घट फूटे घटि कबहि न होई ॥ ता घट माहि घाट जउ पावा ॥ सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥१०॥ ङंङा निग्रहि सनेहु करि निरवारो संदेह ॥ नाही देखि न भाजीऐ परम सिआनप इेह ॥११॥ चचा रचित चित्र है भारी ॥ तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥ चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥ तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥१२॥ छछा इहै छत्रपति पासा ॥ छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥ रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥ ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥१३॥ जजा जउ तन जीवत जरावै ॥ जोबन जारि जुगति सो पावै ॥ अस जरि पर जरि जरि जब रहै ॥ तब जाइि जोति

उजारउ लहै ॥१४॥ झझा उरझि सुरझि नही जाना ॥ रहिए झझकि नाही परवाना ॥ कत झखि झखि अउरन समझावा ॥ झगरु कीड़े झगरउ ही पावा ॥१५॥ ञंञा निकटि जु घट रहिए दूरि कहा तजि जाइि ॥ जा कारणि जगु ढूढिअउ नेरउ पाइिअउ ताहि ॥१६॥ टटा बिकट घाट घट माही ॥ खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥ देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥ रहै लपटि घट परचउ पावा ॥१७॥ ठठा इिहै दूरि ठग नीरा ॥ नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥ जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥ सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥१८॥ डडा डर उपजे डरु जाई ॥ ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥ जउ डर डरै ता फिरि डरु लागै ॥ निडर हूआ डरु उर होइि भागै ॥१९॥ ढढा ढिग ढूढहि कत आना ॥ ढूढत ही ढहि गड़े पराना ॥ चड़ि सुमेरि ढूढि जब आवा ॥ जिह गड़ु गड़िए सु गड़ महि पावा ॥२०॥ णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥ ना निवै ना फुनि संचरै ॥ धंनि जनमु ताही को गणै ॥ मारै इेकहि तजि जाइि घणै ॥२१॥ तता अतर तरिए नह जाई ॥ तन तृभवण महि रहिए समाई ॥ जउ तृभवण तन माहि समावा ॥ तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥२२॥ थथा अथाह थाह नही पावा ॥ एहु अथाह इिहु थिरु न रहावा ॥ थोड़ै थलि थानक आरंभै ॥ बिनु ही थाभह मंदिरु थंभै ॥२३॥ ददा देखि जु बिनसनहारा ॥ जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥ दसवै दुआरि कुंची जब दीजै ॥ तउ दइिआल को दरसनु कीजै ॥२४॥ धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥ अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥ तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥२५॥ नंना निसि दिनु निरखत जाई ॥ निरखत नैन रहे रतवाई ॥ निरखत निरखत जब जाइि पावा ॥ तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥२६॥ पपा अपर पारु नही पावा ॥ परम जोति सिउ परचउ लावा ॥ पाँचउ इिंद्री निग्रह करई ॥ पापु पुन्नु दोऊ निरवरई ॥२७॥ फफा बिनु फूलह फलु होई ॥ ता फल फंक लखै जउ कोई ॥ दूणि न परई फंक बिचारै ॥ ता फल फंक सभै तन फारै ॥२८॥ बबा बिंदहि बिंद मिलावा ॥ बिंदहि बिंदि न बिछुरन पावा ॥ बंदउ होइि

बंदगी गहै ॥ बंदक होइि बंध सुधि लहै ॥२९॥ भभा भेदहि भेद मिलावा ॥ अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥ जो बाहरि सो भीतरि जानिआ ॥ भइिआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥३०॥ ममा मूल गहिआ मनु मानै ॥ मरमी होइि सु मन कउ जानै ॥ मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥ मगन भइिआ ते सो सचु पावै ॥३१॥ ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइि ॥ मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइि ॥३२॥ इिहु मनु सकती इिहु मनु सीउ ॥ इिहु मनु पंच तत को जीउ ॥ इिहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥३३॥ यया जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइिआ गाउ ॥ रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥३४॥ रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ होइि निरस सु रसु पहिचानिआ ॥ इिह रस छाडे उह रसु आवा ॥ उह रसु पीआ इिह रसु नही भावा ॥३५॥ लला अैसे लिव मनु लावै ॥ अनत न जाइि परम सचु पावै ॥ अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥ तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥३६॥ ववा बार बार बिसन सम्हारि ॥ बिसन संम्हारि न आवै हारि ॥ बलि बलि जे बिसनतना जसु गावै ॥ विसन मिले सभ ही सचु पावै ॥३७॥ वावा वाही जानीअै वा जाने इिहु होइि ॥ इिहु अरु एहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइि ॥३८॥ ससा सो नीका करि सोधहु ॥ घट परचा की बात निरोधहु ॥ घट परचै जउ उपजै भाउ ॥ पूरि रहिआ तह तृभवण राउ ॥३९॥ खखा खोजि परै जउ कोई ॥ जो खोजै सो बहुरि न होई ॥ खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥ तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥४०॥ ससा सो सह सेज सवारै ॥ सोई सही संदेह निवारै ॥ अलप सुख छाडि परम सुख पावा ॥ तब इिह त्रीअ एहु कंतु कहावा ॥४१॥ हाहा होत होइि नही जाना ॥ जब ही होइि तबहि मनु माना ॥ है तउ सही लखै जउ कोई ॥ तब एही उहु इेहु न होई ॥४२॥ लिम्उ लिम्उ करत फिरै सभु लोगु ॥ ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥ लखिमी बर सिउ जउ लिउ लावै ॥ सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥४३॥ खखा खिरत खपत गइे केते ॥ खिरत खपत अजहूं नह चेते ॥ अब जगु जानि जउ मना रहै ॥ जह का

बिछुरा तह थिरु लहै ॥४४॥ बावन अखर जोरे आनि ॥ सकिआ न अखरु इेकु पछानि ॥ सत का सबदु कबीरा कहै ॥ पंडित होइि सु अनभै रहै ॥ पंडित लोगह कउ बिउहार ॥ गिआनवंत कउ ततु बीचार ॥ जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ कहि कबीर जानैगा सोई ॥४५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी थितीं कबीर जी कीं ॥ सलोकु ॥ पंद्रह थितीं सात वार ॥ कहि कबीर उरवार न पार ॥ साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥१॥ थितीं ॥ अंमावस महि आस निवारहु ॥ अंतरजामी रामु समारहु ॥ जीवत पावहु मोख दुआर ॥ अनभउ सबदु ततु निजु सार ॥१॥ चरन कमल गोबिंद रंगु लागा ॥ संत प्रसादि भइे मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥१॥ रहाउ ॥ परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥ घट महि खेलै अघट अपार ॥ काल कलपना कदे न खाइि ॥ आदि पुरख महि रहै समाइि ॥२॥ दुतीआ दुह करि जानै अंग ॥ माइिआ ब्रहम रमै सभ संग ॥ ना एहु बढै न घटता जाइि ॥ अकुल निरंजन इेकै भाइि ॥३॥ तृतीआ तीने सम करि लिआवै ॥ आनद मूल परम पदु पावै ॥ साधसंगति उपजै बिस्वास ॥ बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥४॥ चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥ काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥ जल थल माहे आपहि आप ॥ आपै जपहु आपना जाप ॥५॥ पाँचै पंच तत बिसथार ॥ कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥ प्रेम सुधा रसु पीवै कोइि ॥ जरा मरण दुखु फेरि न होइि ॥६॥ छठि खटु चक्र छहूं दिस धाइि ॥ बिनु परचै नही थिरा रहाइि ॥ दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥ करम धरम की सूल न सहहु ॥७॥ सातैं सति करि बाचा जाणि ॥ आतम रामु लेहु परवाणि ॥ छूटै संसा मिटि जाहि दुख ॥ सुन्न सरोवरि पावहु सुख ॥८॥ असटमी असट धातु की काइिआ ॥ ता महि अकुल महा निधि राइिआ ॥ गुर गम गिआन बतावै भेद ॥ उलटा रहै अभंग अछेद ॥९॥ नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥ बहती मनसा राखहु बाँधि ॥ लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥

जुगु जुगु जीवहु अमर फल खाहु ॥१०॥ दसमी दह दिस होइ अन्नद ॥ छूटै भरमु मिलै गोबिंद ॥ जोति सरूपी तत अनूप ॥ अमल न मल न छाह नही धूप ॥११॥ इेकादसी इेक दिस धावै ॥ तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥ सीतल निरमल भइिआ सरीरा ॥ दूरि बतावत पाइिआ नीरा ॥१२॥ बारसि बारह उगवै सूर ॥ अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥ देखिआ तिहू लोक का पीउ ॥ अचरजु भइिआ जीव ते सीउ ॥१३॥ तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥ अरध उरध बिचि सम पहिचाणि ॥ नीच ऊच नही मान अमान ॥ बिआपिक राम सगल सामान ॥१४॥ चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥ सत संतोख का धरहु धिआन ॥ कथनी कथीअै ब्रहम गिआन ॥१५॥ पूनिउ पूरा चंद अकास ॥ पसरहि कला सहज परगास ॥ आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥ सुख सागर महि रमहि कबीर ॥१६॥

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥ बार बार हरि के गुन गावउ ॥ गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ आदित करै भगति आरंभ ॥ काइिआ मंदर मनसा थंभ ॥ अहिनिसि अखंड सुरही जाइि ॥ तउ अनहद बेणु सहज महि बाइि ॥१॥ सोमवारि ससि अंमृतु झरै ॥ चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥ बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥ तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥२॥ मंगलवारे ले माहीति ॥ पंच चोर की जाणै रीति ॥ घर छोडें बाहरि जिनि जाइि ॥ नातरु खरा रिसै है राइि ॥३॥ बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥ हिरदै कमल महि हरि का बास ॥ गुर मिलि दोऊ इेक सम धरै ॥ उरध पंक लै सूधा करै ॥४॥ बृहसपति बिखिआ देइि बहाइि ॥ तीनि देव इेक संगि लाइि ॥ तीनि नदी तह तृकुटी माहि ॥ अहिनिसि कसमल धोवहि नाहि ॥५॥ सुकृतु सहारै सु इिह ब्रति चड़ै ॥ अनदिन आपि आप सिउ लड़ै ॥ सुरखी पाँचउ राखै सबै ॥ तउ दूजी दृसटि न पैसै कबै ॥६॥ थावर थिरु करि राखै सोइि ॥ जोति दी वटी घट महि जोइि ॥ बाहरि भीतरि भइिआ प्रगासु ॥ तब हूआ

सगल करम का नासु ॥७॥ जब लगु घट महि दूजी आन ॥ तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ रमत राम सिउ लागो रंगु ॥ कहि कबीर तब निरमल अंग ॥८॥१॥

राग गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देवा पाहन तारीअले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥ तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥ चरन बधिक जन तेऊ मुकति भइे ॥ हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥१॥ दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीइे ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभाँती ॥१॥ राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥ मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥ कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥ बेगि मिलहु जन करि न बिलाँबा ॥३॥१॥ बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ नाँ तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहाँ खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम इेक सो आही ॥ आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहाँ गनी बसहि मामूर ॥२॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥ कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥ घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ रमईइे सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥ को बनजारो राम को मेरा टाँडा

लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥ हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥ मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥ उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥ मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३॥ जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥ मेरे रमईऐ रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥

गउड़ी पूरबी रविदास जीउ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कूपु भरिए जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ करहु कृपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥

गउड़ी बैरागणि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥ तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥ पारु कैसे पाइबो रे ॥ मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥ जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥ कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२॥ करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥ संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥३॥ बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥ सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४॥ रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो ताबो छुइ कनक होत नही बार ॥५॥ परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥ उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥६॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥ सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥७॥ अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥ प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥८॥१॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरम दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाइे तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता अपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि

हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥१॥ आसा महला ४ ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि इेको पुरखु समाणा ॥ इिकि दाते इिकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन् कुरबाणा ॥२॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भइे जिन् हरि धिआइिआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन् हरि निरभउ धिआइिआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन् सेविआ जिन् सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइिआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अन्नता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिंमृति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु इेको सदा सदा तूं इेको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥ सुणि वडा आखै सभ कोई ॥ केवडु वडा

डीठा होई ॥ कीमति पाइि न कहिआ जाइि ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइि ॥१॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुर हाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआँ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ आखण वाला किआ बेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥४॥१॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ तितु भूखै खाइि चलीअहि दूख ॥१॥ सो किउ विसरै मेरी माइि ॥ साचा साहिबु साचै नाइि ॥१॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइि ॥२॥ ना एहु मरै न होवै सोगु ॥ देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइि ॥ ना को होआ ना को होइि ॥३॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥२॥ आसा महला १ ॥ जे दरि माँगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइि ॥१॥ जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥१॥ रहाउ ॥ आपि कराए आपि करेइि ॥ आपि उलाम्हे चिति धरेइि ॥ जा तूं करणहारु करतारु ॥ किआ मुहताजी किआ संसारु ॥२॥ आपि उपाए आपे देइि ॥ आपे दुरमति मनहि करेइि ॥ गुर परसादि वसै मनि आइि ॥ दुखु अन्हेरा विचहु जाइि ॥३॥ साचु पिआरा आपि करेइि ॥ अवरी कउ साचु न देइि ॥ जे किसै देइि वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइि ॥४॥३॥ आसा महला १ ॥ ताल मदीरे घट के घाट ॥ दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ नारदु नाचै कलि का भाउ ॥ जती सती कह राखहि पाउ ॥१॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ गुरू पासहु फिरि चेला खाइि ॥ तामि परीति वसै घरि

आदि ॥ जे सउ वरि्आ जीवण खाणु ॥ खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥२॥ दरसनि देखिऐ दइिआ न होइि ॥ लइे दिते विणु रहै न कोइि ॥ राजा निआउ करे हथि होइि ॥ कहै खुदाइि न मानै कोइि ॥३॥ माणस मूरति नानकु नामु ॥ करणी कुता दरि फुरमानु ॥ गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥ ता किछु दरगह पावै मानु ॥४॥४॥ आसा महला १ ॥ जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइिआ तेरी ॥ तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥१॥ साहिबु मेरा इेको है ॥ इेको है भाई इेको है ॥१॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइि ॥ आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइि ॥२॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥३॥ कलि कलवाली माइिआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ आपे रूप करे बहु भाँतीं नानकु बपुड़ा इेव कहै ॥४॥५॥ आसा महला १ ॥ वाजा मति पखावजु भाउ ॥ होइि अनन्दु सदा मनि चाउ ॥ इेहा भगति इेहो तप ताउ ॥ इितु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥१॥ पूरे ताल जाणै सालाह ॥ होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥१॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु वजहि दुइि ताल ॥ पैरी वाजा सदा निहाल ॥ रागु नादु नही दूजा भाउ ॥ इितु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥२॥ भउ फेरी होवै मन चीति ॥ बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥ इितु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥३॥ सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥ गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥ नानक आखणु वेरा वेर ॥ इितु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥४॥६ ॥ आसा महला १ ॥ पउणु उपाइि धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥ अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइिआ रावणु मारि किआ वडा भइिआ ॥१॥ किआ उपमा तेरी आखी जाइि ॥ तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ उपाइि जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइिआ ॥ किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥२॥ नालि कुटंबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण सृसटि गइिआ ॥ आगै अंतु न पाइिए ता का कंसु छेदि किआ वडा भइिआ ॥३॥ रतन उपाइि

धरे खीरु मथिआ होरि भखलाइे जि असी कीआ ॥ कहै नानकु छपै किउ छपिआ इेकी इेकी वंडि दीआ ॥४॥७॥ आसा महला १ ॥ करम करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥ तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥१॥ करे वखिआणु जाणै जे कोई ॥ अंमृतु पीवै सोई ॥१॥ रहाउ ॥ जिन् पीआ से मसत भइे है तूटे बंधन फाहे ॥ जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइिआ के लाहे ॥२॥ सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइिआ ॥ रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइिआ ॥३॥ बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥ सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥४॥८॥ आसा महला १ ॥ मै गुण गला के सिरि भार ॥ गली गला सिरजणहार ॥ खाणा पीणा हसणा बादि ॥ जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥१॥ तउ परवाह केही किआ कीजै ॥ जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मन की मति मतागलु मता ॥ जो किछु बोलीअै सभु खतो खता ॥ किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥ पापु पुन्नु दुइि साखी पासि ॥२॥ जैसा तूं करहि तैसा को होइि ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइि ॥ जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥३॥ राग रतन परीआ परवार ॥ तिसु विचि उपजै अंमृतु सार ॥ नानक करते का इिहु धनु मालु ॥ जे को बूझै इेहु बीचारु ॥४॥९॥ आसा महला १ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइिआ ता मिलि सखीआ काजु रचाइिआ ॥ खेलु देखि मनि अनदु भइिआ सहु वीआहण आइिआ ॥१॥ गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ हमरै घरि आइिआ जगजीवनु भतारु ॥१॥ रहाउ ॥ गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जाँ सहु मिलिआ ताँ जानिआ ॥ तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइिआ मनु मानिआ ॥२॥ आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ जितु कारजि सतु संतोखु दइिआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥३॥ भनति नानकु सभना का पिरु इेको सोइि ॥ जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइि ॥४॥१०॥ आसा महला १ ॥ गृहु बनु समसरि सहजि सुभाइि ॥ दुरमति गतु भई कीरति ठाइि ॥ सच पउड़ी साचउ

मुखि नाँउ ॥ सतिगुरु सेवि पाइे निज थाउ ॥१॥ मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ सरब जोति पूरन भगवानु ॥१॥ रहाउ ॥ अधिक तिआस भेख बहु करै ॥ दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥२॥ सिफति सलाहणु सहज अन्नद ॥ सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥ आपे करे आपे बखसिंदु ॥ तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥३॥ झूठ विकार महा दुखु देह ॥ भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ जो उपजै सो आवै जाइि ॥ नानक असथिरु नामु रजाइि ॥४॥११॥ आसा महला १ ॥ इेको सरवरु कमल अनूप ॥ सदा बिगासै परमल रूप ॥ ऊजल मोती चूगहि हंस ॥ सरब कला जगदीसै अंस ॥१॥ जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ बिरला बूझै पावै भेदु ॥ साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ नाद बिंद की सुरति समाइि ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पाइि ॥२॥ मुकतो रातउ रंगि रवाँतउ ॥ राजन राजि सदा बिगसाँतउ ॥ जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ बूडत पाहन तारहि तारि ॥३॥ तृभवण महि जोति तृभवण महि जाणिआ ॥ उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ अहिनिसि भगति करे लिव लाइि ॥ नानकु तिन कै लागै पाइि ॥४॥१२॥ आसा महला १ ॥ गुरमति साची हुजति दूरि ॥ बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥ लागी मैलु मिटै सच नाइि ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइि ॥१॥ है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ु कमावै आवै जावै ॥ कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ बिनु नावै मनि तृपति न आवै ॥२॥ जो जनमे से रोगि विआपे ॥ हउमै माइिआ दूखि संतापे ॥ से जन बाचे जो प्रभि राखे ॥ सतिगुरु सेवि अंमृत रसु चाखे ॥३॥ चलतउ मनु राखै अंमृतु चाखै ॥ सतिगुर सेवि अंमृत सबदु भाखै ॥ साचै सबदि मुकति गति पाइे ॥ नानक विचहु आपु गवाइे ॥४॥१३॥ आसा महला १ ॥ जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥ अंमृत नामु सतिगुरि दीआ ॥ हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥१॥ हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥

गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ करम धरम सचु साचा नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ जो हरि राते से जन परवाणु ॥ तिन की संगति परम निधानु ॥२॥ हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥ हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ आपि तरै संगति कुल तारै ॥ सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥३॥ हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ करम धरम संजमु सत भाउ ॥ नानक बखसे पूछ न होइ ॥ दूजा मेटे एको सोइ ॥४॥१४॥ आसा महला १ ॥ इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ इकि हरि राते रहहि समाई ॥ इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥ से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥१॥ गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥ इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लघाई ॥१॥ रहाउ ॥ जिन् कउ आप लए प्रभु मेलि ॥ तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥ गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥ जिउ जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥२॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥ दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥ अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥३॥ सासत बेद सिंम्रिति बहु भेद ॥ अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥४॥१५॥ आसा महला १ ॥ निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥१॥ बोलहु रामु करे निसतारा ॥ गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥१॥ रहाउ ॥ रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥२॥ हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥३॥ मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥४॥१६॥ आसा महला १ ॥ किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझे सतिगुर

सबदि संतोखि रहे ॥१॥ ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ हरि भजु मेरे मन गहिर गंभीरा ॥१॥ रहाउ ॥ अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ राम भगति जनु रहै निरारा ॥२॥ सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ आदि अपारु अपरंपरु हीरा ॥ लालि रता मेरा मनु धीरा ॥३॥ कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥ सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥ नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥४॥१७॥ आसा महला १ तितुका ॥ कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ कोई राजा रहिआ समाइ ॥ किस ही मानु किसै अपमानु ॥ ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ किसु वेखाली चंगा होइ ॥१॥ मै ताँ नामु तेरा आधारु ॥ तूं दाता करणहारु करतारु ॥१॥ रहाउ ॥ वाट न पावउ वीगा जाउ ॥ दरगह बैसण नाही थाउ ॥ मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥ खीन खराबु होवै नित कंधु ॥ खाण जीवण की बहुती आस ॥ लेखै तेरै सास गिरास ॥२॥ अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥ भउजल डूबत चिंत करेइ ॥ कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥ जाँ तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥ दरगह बैसण होवै थाउ ॥ जाँ तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥ गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥४॥१८॥ आसा महला १ पंचपदे ॥ दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥ किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥१॥ की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥१॥ रहाउ ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही कन्नी पवणु न वाजै ॥ चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥२॥ अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही ॥ सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥३॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥४॥ मति विचि मरणु जीवणु

होरु कैसा जा जीवा ताँ जुगति नाही ॥ कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥५॥१६॥ आसा महला १ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥ गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥१॥ पाँडे अैसा ब्रहम बीचारु ॥ नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥१॥ रहाउ ॥ बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ धोती टिका नामु समालि ॥ अैथै एथै निबही नालि ॥ विणु नावै होरि करम न भालि ॥२॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ इेको वेखहु अवरु न भालि ॥ चीनै् ततु गगन दस दुआर ॥ हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥३॥ भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥ तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु इेकु ॥ बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥४॥ आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥ असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥ नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥५॥२०॥ आसा महला १ ॥ सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥ जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥१॥ साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥१॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि ॥ महली खसमु सुणे साबासि ॥ सचै तखति बुलावै सोइ ॥ दे वडिआई करे सु होइ ॥२॥ तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥ गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ मन्ने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥३॥ पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥४॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ तूं आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ नानक इेको दरु दीबाणु ॥ गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥५॥२१॥ आसा महला १ ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीअै बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥१॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूंहै तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥१॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ सखी साजनी के

हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥२॥ आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥ जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥३॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत तृहु गुण आस निरास भई ॥ तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की एट लही ॥४॥ गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाइे सहज सेवा ॥५॥२२॥ आसा महला १ पंचपदे ॥ मोहु कुटंबु मोहु सभ कार ॥ मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥१॥ मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर ॥ साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ सचु नामु जा नव निधि पाई ॥ रोवै पूतु न कलपै माई ॥२॥ इेतु मोहि डूबा संसारु ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥३॥ इेतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥४॥ गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ ना मोहु तूटै ना थाइि पाहि ॥५॥ नदरि करे ता इेहु मोहु जाइि ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइि ॥६॥२३॥ आसा महला १ ॥ आपि करे सचु अलख अपारु ॥ हउ पापी तूं बखसणहारु ॥१॥ तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥२॥ दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥३॥ ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ गुर हरि मिलिआ भगति दृड़ाई ॥४॥ सगलीं सउदीं तोटा आवै ॥ नानक राम नामु मनि भावै ॥५॥२४॥ आसा महला १ चउपदे ॥ विदिआ वीचारी ताँ परउपकारी ॥ जाँ पंच रासी ताँ तीरथ वासी ॥१॥ घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥१॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ संनिआसी ॥ जाँ जतु जोगी ताँ काइिआ भोगी ॥२॥ दइिआ दिगंबरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा नह मारी ॥३॥ इेकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ नानकु जाणै चोज न तेरे ॥४॥२५॥ आसा महला १ ॥ इेक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥१॥ इिउ किउ कंत पिआरी होवा ॥ सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥१॥ रहाउ ॥

आस पिआसी सेजै आवा ॥ आगै सह भावा कि न भावा ॥२॥ किआ जाना किआ होइगा री माई ॥ हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥३॥ अजै सु जागउ आस पिआसी ॥ भईले उदासी रहउ निरासी ॥१॥ रहाउ ॥ हउमै खोइ करे सीगारु ॥ तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥४॥ तउ नानक कंतै मनि भावै ॥ छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥१॥ रहाउ ॥२६॥ आसा महला १ ॥ पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥ तिसु सह की मै सार न जाणी ॥१॥ सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ नदरि करे मेलावा होई ॥१॥ रहाउ ॥ साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥ सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥२॥ गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥ ताँ कामणि कंतै मनि भावै ॥३॥ कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ सद ही सेजै रवै भतारु ॥४॥२७॥ आसा महला १ ॥ न किस का पूतु न किस की माई ॥ झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥१॥ मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥ जाँ तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ बहुते अउगण कूकै कोई ॥ जा तिसु भावै बखसे सोई ॥२॥ गुर परसादी दुरमति खोई ॥ जह देखा तह एको सोई ॥३॥ कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ ताँ को सचे सचि समावै ॥४॥२८॥ आसा महला १ दुपदे ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन् की सरणा जिन् तूं नाही वीसरिआ ॥२॥२९॥ आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुर गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥३०॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ३ महला १ ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥ लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ जाँ पति लेखै ना पवै ताँ सभि निराफल काम ॥१॥ हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥ जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥१॥ रहाउ ॥ लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ जाँ पति लेखै ना पवै ताँ जीअ किथै फिरि पाहि ॥२॥ लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥ जाँ पति लेखै ना पवै ताँ सभे कुपरवाण ॥३॥ सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥४॥१॥३१॥ आसा महला १ ॥ दीवा मेरा इेकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ उनि चानणि एहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥१॥ लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ लख मड़िआ करि इेकठे इेक रती ले भाहि ॥१॥ रहाउ ॥ पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ ऐथै एथै आगै पाछै इेहु मेरा आधारु ॥२॥ गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ सचा नावणु ताँ थीऐ जाँ अहिनिसि लागै भाउ ॥३॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥४॥२॥३२॥

आसा घरु ४ महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीइे ॥ जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भइे ॥१॥ तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ तेरे नाम अनेका रूप अन्नता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥१॥ रहाउ ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइिति देस गइे ॥ पीर पेकाँबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइि पइे ॥२॥ साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीइे ॥ दुखीइे दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भइे ॥३॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ी ॥ तूं साहिबु हउ साँगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥४॥१॥३३॥

आसा घरु ५ महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥ थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥१॥ मनु मेरा दइिआल सेती थिरु न रहै ॥ लोभी कपटी पापी पाखंडी माइिआ अधिक लगै ॥१॥ रहाउ ॥ फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥२॥ पंच सखी हम इेकु भतारो ॥ पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥३॥ पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥४॥१॥३४॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आसा घरु ६ महला १ ॥ मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥१॥ लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ तेरे गुण होहि न अवरी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥ कर करि करता कंगन पहिरै इिन बिधि चितु धरेई ॥२॥ मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥३॥ मन मंदरि जे दीपकु जाले काइिआ सेज करेई ॥ गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥४॥१॥३५॥ आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइिआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥१॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ किरतु पइिआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥ जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥२॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥३॥ ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ बंदी अंदरि सिफति कराइे ता कउ कहीऐ बंदा ॥४॥२॥३६॥ आसा महला १ ॥ गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥ जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ

॥१॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥ अंमृतु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥१॥ रहाउ ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥ सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥२॥ पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥ हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥३॥ सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेकं ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव इेकं ॥४॥३॥३७॥ आसा महला १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥१॥ बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥ अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआइे जा कउ नदरि करे ॥ अंमृत का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥२॥ गुर की साखी अंमृत बाणी पीवत ही परवाणु भइिआ ॥ दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥३॥ सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंमृत धारै ॥४॥४॥३८॥ आसा महला १ ॥ खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइिआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइिआ ॥ इेती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइिआ ॥१॥ करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोइे कुतीं मुइिआ सार न काई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥२॥ जे को नाउ धराइे वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाइे नानक नामु वखाणे ॥३॥५॥३९॥

रागु आसा घरु २ महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि दरसनु पावै वडभागि ॥ गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ खटु दरसनु वरतै

वरतारा ॥ गुर का दरसनु अगम अपारा ॥१॥ गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ॥ साचा आपि वसै मनि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ जे को लाइे भाउ पिआरा ॥ भाउ पिआरा लाइे विरला कोइ ॥ गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥२॥ गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ निगुरे कउ गति काई नाही ॥ अवगणि मुठे चोटा खाही ॥३॥ गुर कै सबदि सुखु सांँति सरीर ॥ गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥४॥१॥४०॥ आसा महला ३ ॥ सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥ निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ सची बाणी पाइे भागि कोइ ॥१॥ गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥ गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ अंमृत सबदि नामु वखाणै ॥ साची बाणी सूचा होइ ॥ गुण ते नामु परापति होइ ॥२॥ गुण अमोलक पाइे न जाहि ॥ मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥ से वडभागी जिन् नामु धिआइिआ ॥ सदा गुणदाता मंनि वसाइिआ ॥३॥ जो गुण संग्रहै तिन् बलिहारै जाउ ॥ दरि साचै साचे गुण गाउ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ नानक कीमति कहणु न जाइ ॥४॥२॥४१॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥ चिरी विछुन्ने मेलि मिलाई ॥ आपे मेले मेलि मिलाइे ॥ आपणी कीमति आपे पाइे ॥१॥ हरि की कीमति किन बिधि होइ ॥ हरि अपरंपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥ विरले करमि परापति होइ ॥ ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥२॥ विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥ सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥ पीवत रहै पीआइे सोइ ॥ गुर किरपा ते हरि रसु पाइे ॥ नानक नामि रते गति पाइे ॥४॥३॥४२॥ आसा महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीर ॥ सेवत ही सुखु सांँति सरीर ॥ सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ तिन कै

हम सद लागह पाइि ॥१॥ जो मनि राते हरि रंगु लाइि ॥ तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइि ॥१॥ रहाउ ॥ सबदु चाखै साचा सादु पाइे ॥ हरि का नामु मंनि वसाइे ॥ हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥२॥ आखणि आखै बकै सभु कोइि ॥ आपे बखसि मिलाइे सोइि ॥ कहणै कथनि न पाइिआ जाइि ॥ गुर परसादि वसै मनि आइि ॥३॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाइि ॥ हरि रंगि राते मोहु चुकाइि ॥ अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥ ४॥४३॥ आसा महला ३ ॥ दूजै भाइि लगे दुखु पाइिआ ॥ बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ सतिगुरु सेवै सोझी होइि ॥ दूजै भाइि न लागै कोइि ॥१॥ मूलि लागे से जन परवाणु ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि इेको जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ डाली लागै निहफलु जाइि ॥ अंधीं कंमी अंध सजाइि ॥ मनमुखु अंधा ठउर न पाइि ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइि ॥२॥ गुर की सेवा सदा सुखु पाइे ॥ संतसंगति मिलि हरि गुण गाइे ॥ नामे नामि करे वीचारु ॥ आपि तरै कुल उधरणहारु ॥३॥ गुर की बाणी नामि वजाइे ॥ नानक महलु सबदि घरु पाइे ॥ गुरमति सत सरि हरि जलि नाइिआ ॥ दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइिआ ॥४॥५॥४४॥ आसा महला ३ ॥ मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ दूजै भाइि आतम संघारहि ॥ मेरा मेरा करि करि विगूता ॥ आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥१॥ मरु मुइिआ सबदे मरि जाइि ॥ उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इिसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ नाम विहूण गरभ गलि जाइि ॥ बिरथा जनमु दूजै लोभाइि ॥ नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥ सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥२॥ मनु चंचलु बहु चोटा खाइि ॥ इेथहु छुड़किआ ठउर न पाइि ॥ गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥३॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ निरमल बाणी निज घरि वासा ॥ नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥४॥६॥४५॥ आसा महला ३ ॥ लालै आपणी

जाति गवाई ॥ तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ॥ हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥१॥ सो लाला जीवतु मरै ॥ सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥१॥ रहाउ ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई ॥ बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ करणी कीरति नामु वसाई ॥ आपे देवै ढिल न पाई ॥२॥ मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥ विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥ मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥३॥ सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥ गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥ नानक नामि वडाई होइ ॥४॥७॥४६॥ आसा महला ३ ॥ मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥ खसमै का महलु कदे न पावै ॥ दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ ममता बाधा आवै जावै ॥१॥ दोहागणी का मन देखु सीगारु ॥ पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाइे झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥ गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥२॥ सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥ अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥ नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥ मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥३॥ आगै जाति रूपु न जाइ ॥ तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥ सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ नानक साचि समावै सोइ ॥४॥८॥४७॥ आसा महला ३ ॥ भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥ मनमुख रुन्ने अपनी पति खोइ ॥१॥ मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ सदा अन्नदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ अंतरु निरमलु अंमृत सरि नाए ॥ सदा सूचे साचि समाए ॥२॥ हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥३॥ गुरु सागरु पूरा भंडार ॥ ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ गुर परसादी देवणहारु ॥ नानक बखसे बखसणहारु ॥४॥९॥४८॥ आसा महला ३ ॥ गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ पूरै भागि गुर

सेवा होइ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ गुर परसादी सेव कराए ॥१॥ गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ गुर परसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ अंतरि महलु गुर सबदि पछाणै ॥ आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥२॥ जंमणु मरणा है संसारु ॥ मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥ पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥ विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥३॥ सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ गुर का सबदु हरि भगति दृड़ाए ॥ भाणा मन्ने सदा सुखु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥४॥१०॥४९॥ आसा महला ३ पंचपदे ॥ सबदि मरै तिसु सदा अन्नद ॥ सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ पूरे गुर ते साचि समाइ ॥१॥ जिन् कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥१॥ रहाउ ॥ जिन् कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ तिन् की गहण गति कही न जाइ ॥ पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥ ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥२॥ जो किछु करे सु आपे आपि ॥ एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ जे सउ घाले थाइ न पाए ॥३॥ जिन् कै पोतै पुन्नु तिना गुरू मिलाए ॥ सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ जहाँ सबदु वसै तहाँ दुखु जाए ॥ गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥४॥ नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ पूरै सबदि मंनि वसाए ॥ नानक नामि रते सुखु पाए ॥५॥११॥५०॥ आसा महला ३ ॥ निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥ अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ दीवा बलै न सोझी पाइ ॥१॥ गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥ आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥ गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥२॥ गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥ गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥ गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ पाखंडि भगति निरति दुखु होइ

॥३॥ इेहा भगति जनु जीवत मरै ॥ गुर परसादी भवजलु तरै ॥ गुर कै बचनि भगति थाइि पाइि ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइि ॥४॥ हरि कृपा करे सतिगुरू मिलाइे ॥ निहचल भगति हरि सिउ चितु लाइे ॥ भगति रते तिन् सची सोइि ॥ नानक नामि रते सुखु होइि ॥५॥१२॥५१॥

आसा घरु ८ काफी महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥ गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥१॥ मै सहु दाता इेकु है अवरु नाही कोई ॥ गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ इिसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥ बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥२॥ हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥३॥ हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइिआ मति ऊतम होई ॥ नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥४॥३६॥१३॥५२॥

आसा महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तूं करता सचिआरु मैडा साँई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइिआ ॥ जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइिआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइिआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइिआ ॥१॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणाइिहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइिआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइिआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइि ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइि ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइि ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइि ॥४॥१॥५३॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु २ महला ४ ॥ किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥१॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥१॥ रहाउ ॥ जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥ झूठु धड़े करि पछोताहि ॥ थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥२॥ इेह सभि धड़े माइिआ मोह पसारी ॥ माइिआ कउ लूझहि गावारी ॥ जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥ हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥३॥ कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाइे ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाइे ॥ जिस नो कृपा करे तिसु सतसंगि मिलाइे ॥ हमरा हरि धड़ा जिनि इेह धड़े सभि गवाइे ॥४॥ मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥ पराइिआ छिद्रु अटकलै आपणा अह्मकारु वधावै ॥ जैसा बीजै तैसा खावै ॥ जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ सृसटि जिणि आवै ॥५॥२॥५४॥ आसा महला ४ ॥ हिरदै सुणि सुणि मनि अंमृतु भाइिआ ॥ गुरबाणी हरि अलखु लखाइिआ ॥१॥ गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ इेको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अंमृत बैना ॥१॥ रहाउ ॥ मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ सतिगुरु पुरखु पाइिआ वडभागु ॥२॥ दूजै भाइि भवहि बिखु माइिआ ॥ भागहीन नही सतिगुरु पाइिआ ॥३॥ अंमृतु हरि रसु हरि आपि पीआइिआ ॥ गुरि पूरै नानक हरि पाइिआ ॥४॥३॥५५॥ आसा महला ४ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ नामु जपी नामो सुख सारु ॥१॥ नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥ नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥१॥ रहाउ ॥ नाम बिना नही जीविआ जाइि ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पाइि ॥२॥ नामहीन कालख मुखि माइिआ ॥ नाम बिना

ध्रिगु ध्रिगु जीवाइिआ ॥३॥ वडा वडा हरि भाग करि पाइिआ ॥ नानक गुरमुखि नामु दि्वाइिआ ॥४॥४॥५६॥ आसा महला ४ ॥ गुण गावा गुण बोली बाणी ॥ गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥१॥ जपि जपि नामु मनि भइिआ अन्नदा ॥ सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइिआ रसि गाइे गुण परमान्नदा ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ वडै भागि पाइे हरि निरजोगा ॥२॥ गुण विहूण माइिआ मलु धारी ॥ विणु गुण जनमि मुइे अह्मकारी ॥३॥ सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीइे ॥ नानक गुरमुखि मथि ततु कढीइे ॥४॥५॥५७॥ आसा महला ४ ॥ नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥१॥ नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥ जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥२॥ नामहीण गइे मूड़ न्नगा ॥ पचि पचि मुइे बिखु देखि पतंगा ॥३॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ नानक नामु देवै हरि आपे ॥४॥६॥५८॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥ फल लागे हरि रसक रसाई ॥१॥ हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जमकंकर भुइिअंगा ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥२॥ हउमै करम किछु बिधि नही जाणै ॥ जिउ कुंचरु नाइि खाकु सिरि छाणै ॥३॥ जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥४॥७॥५९॥ आसा महला ४ ॥ हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥ नामि सुनिअै मनु तृपतै मेरे भाई ॥१॥ नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥१॥ रहाउ ॥ नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥२॥ नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ सभ निहफल करम कीइे दुखु धंधा ॥३॥ हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥४॥८॥६०॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥ हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥१॥ जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ जुगु जुगु हरि हरि इको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥२॥ काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥३॥ जोगी जंगम सृसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥४॥९॥६१॥ आसा महला ४ ॥ कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥१॥ मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥ मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥२॥ कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥३॥ कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥४॥१०॥६२॥ आसा महला ४ ॥ सतसंगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥ गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥१॥ हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥२॥ आपे हरि अपरंपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥३॥ नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥ भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥४॥११॥६३॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ८ के काफ़ी महला ४ ॥ आइिआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥ गुरमुखि नामु धिआइि असथिरु होईऐ ॥१॥ गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखे डेह सि आइे माइिआ ॥ चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइिआ ॥२॥ बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारिआ ॥ जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥३॥ जीवणि मरणि सुखु होइि जिन्हा गुरु पाइिआ ॥ नानक सचे सचि सचि समाइिआ ॥४॥१२॥६४॥ आसा महला ४ ॥ जनमु पदारथु पाइि नामु धिआइिआ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाइिआ ॥१॥ जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइिआ ॥ दरि सचै सचिआर महलि बुलाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥ अनदिनु नामु धिआइि हरि गुण गाईऐ ॥२॥ अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥ हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥३॥ नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥ गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥४॥१३॥६५॥

रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइिआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥१॥ रहाउ ॥ हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥१॥ किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥ हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥२॥१४॥६६॥ आसावरी महला ४ ॥ माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥१॥ रहाउ ॥ हमरा मनु बैराग बिरकतु भइिए हरि दरसन मीत कै ताई ॥ जैसे

अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥ राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥ जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥२॥३६॥१३॥१५॥६७॥

रागु आसा घरु २ महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ भाई मीत कुटंब देखि बिबादे ॥ हम आई वसगति गुर परसादे ॥१॥ ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥१॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥ इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥ इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै ॥ हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥२॥ तपु करते तपसी भूलाए ॥ पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥ हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥३॥ गिआनी की होइ वरती दासि ॥ कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥४॥१॥ आसा महला ५ ॥ ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥१॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥२॥ सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥ जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ महा अनन्दु गुर सबदु वीचारि ॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥३॥ जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥ जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ हरि सेती एहु रहै समाइ ॥४॥२॥ आसा महला ५ ॥ निज भगती सीलवंती नारि ॥ रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ जितु गृहि वसै सो गृहु सोभावंता ॥ गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥१॥ सुकरणी कामणि

गुर मिलि हम पाई ॥ जजि काजि परथाइ सुहाई ॥१॥ रहाउ ॥ जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥ करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥ गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥२॥ बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥ सगल संतोखी देर जेठानी ॥३॥ सभ परवारै माहि सरेसट ॥ मती देवी देवर जेसट ॥ धन्नु सु गृहु जितु प्रगटी आइ ॥ जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥४॥३॥ आसा महला ५ ॥ मता करउ सो पकनि न देई ॥ सील संजम कै निकटि खलोई ॥ वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ गृहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥१॥ घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥ जतन करउ उरझाइ परेवै ॥१॥ रहाउ ॥ धुर की भेजी आई आमरि ॥ नउ खंड जीते सभि थान थन्नतर ॥ तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥ पड़ि थाके सिंमृति बेद अभिआस ॥२॥ जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥ होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥३॥ सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥ गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु दृड़ाइआ ॥ निज घरि वसिआ गुण गाइ अन्नता ॥ प्रभु मिलिए नानक भइे अचिंता ॥४॥ घरु मेरा इहि नाइकि हमारी ॥ इहि आमरि हम गुरि कीइे दरबारी ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥ दुतीइे मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ तृतीइे मता किछु करउ उपाइआ ॥ मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥१॥ महा अन्नद अचिंत सहजाइआ ॥ दुसमन दूत मुइे सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥ जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ तूं मेरी एट तूंहै दीबाणु ॥२॥ तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥ आन न बीआ तेरी समसरि ॥ तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥३॥ तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥४॥५॥

आसा महला ५ ॥ परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ गुण रासि बंनि् पलै आनी ॥ देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥१॥ साह वापारी दुआरै आए ॥ वखरु काढहु सउदा कराए ॥१॥ रहाउ ॥ साहि पठाइआ साहै पासि ॥ अमोल रतन अमोला रासि ॥ विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥२॥ भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ सही सलामति घरि लै आइआ ॥३॥ मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ धंनु साह पूरे बखसिंद ॥ इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ सहली खेप नानकु लै आइआ ॥४॥६॥ आसा महला ५ ॥ गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥ चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥१॥ सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥१॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥ कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ आँगनि मेरै सोभा चंद ॥ निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥२॥ बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ दुसट दूत की चूकी कानि ॥३॥ सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥ नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥४॥७॥ आसा महला ५ ॥ दानु देइ करि पूजा करना ॥ लैत देत उन् मूकरि परना ॥ जितु दरि तुम् है ब्राहमण जाणा ॥ तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥१॥ ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ निरापराध चितवहि बुरिआई ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥ निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ माइआ मूठा चेतै नाही ॥ भरमे भूला बहुती राही ॥२॥ बाहरि भेख करहि घनेरे ॥ अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥३॥ मूरख बामण प्रभू समालि ॥ देखत सुनत तेरै है नालि ॥ कहु नानक जे होवी भागु ॥ मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥४॥८॥ आसा महला ५ ॥

दूख रोग भइे गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइि ॥ भइे अन्नद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइि ॥१॥ तपति बुझी गुर सबदी माइि ॥ बिनसि गइिए ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिए सहजि सुभाइि ॥१॥ रहाउ ॥ धावत रहे इेकु इिकु बूझिआ आइि बसे अब निहचलु थाइि ॥ जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइि ॥२॥ जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइि ॥ सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइि ॥३॥ करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइि ॥ नामु तेरा जपि जीवै नानकु एति पोति मेरै संगि सहाइि ॥४॥६॥ आसा महला ५ ॥ अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥ पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥१॥ रहाउ ॥ जे कोई उस का संगी होवै नाले लइे सिधावै ॥ अणहोदा अजगरु भारु उठाइे निंदकु अगनी माहि जलावै ॥१॥ परमेसर कै दुआरै जि होइि बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥ भगत जना कउ सदा अन्नदु है हरि कीरतनु गाइि बिगसावै ॥२॥१०॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै कीए सगल सीगारा ॥ तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥ एहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥ पृअ देखत जीवउ मेरी माई ॥१॥ माई कहा करउ इिहु मनु न धीरै ॥ पृअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥१॥ रहाउ ॥ बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ एइि भी जानउ कितै न लेखै ॥ पति सोभा अरु मानु महतु ॥ आगिआकारी सगल जगतु ॥ गृहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥२॥ बिंजन भोजन अनिक परकार ॥ रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥ राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइिसि ॥ मनु नही ध्रापै तृसना ना जाइिसि ॥ बिनु मिलबे इिहु दिनु न बिहावै ॥ मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥३॥ खोजत खोजत सुनी इिह सोइि ॥ साधसंगति बिनु तरिए न कोइि ॥ जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइिआ ॥ पूरी आसा मनु तृपताइिआ ॥ प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥ नानक लधा मन तन मंझा ॥४॥११॥ आसा महला ५

पंचपदे॒ ॥ प्रथमे तेरी नीकी जाति ॥ दुतीआ तेरी मनीऐ पाँति ॥ तृतीआ तेरा सुंदर थानु ॥ बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥१॥ सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥ अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥१॥ रहाउ ॥ अति सूची तेरी पाकसाल ॥ करि इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥ गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥ सभि बिधि खोई लोभि सुआन ॥२॥ कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥ आचार करहि सोभा महि लोग ॥ चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥ संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥३॥ अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥ इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ सीलु बिगारिए तेरा काम ॥४॥ जा कउ दृसटि मइिआ हरि राइि ॥ सा बंदी ते लई छडाइि ॥ साधसंगि मिलि हरि रसु पाइिआ ॥ कहु नानक सफल एह काइिआ ॥५॥ सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥ अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥ आसा महला ५ इकितुके २ ॥ जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥१॥ जीवत मुइे मुइे से जीवे ॥ हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइिआ गुर सबदी रसु अंमृतु पीवे ॥१॥ रहाउ ॥ काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥ जिसु छूटै तृकुटी तिसु निज घरि वासा ॥२॥ ऊचा चड़ै सु पवै पइिआला ॥ धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥३॥ भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइिआ ॥ से असथिर जिन गुर सबदु कमाइिआ ॥४॥ जीउ पिंडु सभु हरि का मालु ॥ नानक गुर मिलि भइे निहाल ॥५॥१३॥ आसा महला ५ ॥ पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ जानु सति करि होइिगी माटी ॥१॥ मूलु समालहु अचेत गवारा ॥ इितने कउ तुम् किआ गरबे ॥१॥ रहाउ ॥ तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥२॥ बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥ इसु ऊपरि ले राखिए गुमान ॥३॥ इेक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥ बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥४॥ कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥ जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥५॥१४॥ आसा महला ५ इकितुके चउपदे ॥ इक घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे ॥ मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥१॥ इकु पलु दिनसु मो कउ कबहु न बिहावै ॥

दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥ चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ रैणि भई तब अंतु न जाने ॥२॥ पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥३॥ जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥४॥१५॥ आसा महला ५ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु ॥ हरि सेवा मुखि अंमृत नामु ॥१॥ हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥ दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि मेरी एट मै हरि का ताणु ॥ हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥२॥ हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥ गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥३॥ गुर किरपा ते इहि मति आवै ॥ जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥४॥१६॥ आसा महला ५ ॥ प्रभु होइ कृपालु त इहु मनु लाई ॥ सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥१॥ मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥ मनसा का दाता सभ सुख निधानु अंमृत सरि सद ही भरपूरा ॥१॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥२॥ पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥३॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥४॥१७॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥ मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥१॥ ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥ भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥ खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥ इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥३॥ तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥४॥१८॥ आसा महला ५ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ काची पाकी बाढि परानी ॥१॥ जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी राति ॥ रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥२॥ माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ गुर प्रसादि को विरला

जागे ॥३॥ कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥४॥१९॥ आसा महला ५ ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ इछा पूरकु रखै निदान ॥१॥ तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥१॥ रहाउ ॥ जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥२॥ जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥३॥ साचे साहिब अलख अभेव ॥ नानक लाइआ लागा सेव ॥४॥२०॥ आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥१॥ करै न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥ अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ जिस की मीरा राखै आणि ॥२॥ जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥ तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥३॥ वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ नानक दास कहहु गुर वाहु ॥४॥२१॥ आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥१॥ सुनी न जाई सचु अंम्रित काथा ॥ रारि करत झूठी लगि गाथा ॥१॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ ऐसे गुनह अछादिए प्रानी ॥२॥ तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥ कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥३॥ कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥४॥२२॥ आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ ईहा ऊहाँ उन संगि कामु ॥१॥ बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥ तृपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥ गावत सुनत कमावत निहाल ॥२॥ चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥३॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥ प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥४॥२३॥ आसा महला ५ ॥ अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥ अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥१॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥१॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥ आपे करता अवरु न कोइ ॥२॥ जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥३॥

पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ नानक भगत मिली वडिआई ॥४॥२४॥ आसा महला ५ ॥ गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥ गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥१॥ ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥ धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ तृपति अघावनु साचै नाइ ॥ अठसठि मजनु संत धूराइ ॥२॥ सभ महि जानउ करता इेक ॥ साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥३॥ दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥४॥२५॥ आसा महला ५ ॥ बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ ता ते बिनसी दुरमति दूरी ॥१॥ अैसी गुरमति पाईअले ॥ बूडत घोर अंध कूप महि निकसिए मेरे भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ महा अगाह अगनि का सागरु ॥ गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥२॥ दुतर अंध बिखम इहि माइिआ ॥ गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइिआ ॥३॥ जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥ गुर नानक सरणागति तोरी ॥४॥२६॥ आसा महला ५ तिपदे २ ॥ हरि रसु पीवत सद ही राता ॥ आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ हरि रस के माते मनि सदा अन्नद ॥ आन रसा महि विआपै चिंद ॥१॥ हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ आन रसा सभि होछे रे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि रस की कीमति कही न जाइि ॥ हरि रसु साधू हाटि समाइि ॥ लाख करोरी मिलै न केह ॥ जिसहि परापति तिस ही देहि ॥२॥ नानक चाखि भइे बिसमादु ॥ नानक गुर ते आइिआ सादु ॥ ईत ऊत कत छोडि न जाइि ॥ नानक गीधा हरि रस माहि ॥३॥२७॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥ होइि निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥१॥ सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥ दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥१॥ रहाउ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ दासन की होइि दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥२॥ इिही अचार इिही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइि तुमारी ॥ जो इिहु मंत्र कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥३॥२८॥

आसा महला ५ दुपदे ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इहि तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥२९॥ आसा महला ५ ॥ तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥ तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥१॥ तुमरी एट तुमारी आसा ॥ बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥ नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥२॥३०॥ आसा महला ५ ॥ हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥१॥ संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥२॥३१॥ आसा महला ५ ॥ अउखधु खाइए हरि को नाउ ॥ सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥१॥ तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥ अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥२॥३२॥ आसा महला ५ ॥ बाँछत नाही सु बेला आई ॥ बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥१॥ ठंढी ताती मिटी खाई ॥ एहु न बाला बूढा भाई ॥१॥ रहाउ ॥ नानक दास साध सरणाई ॥ गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥२॥३३॥ आसा महला ५ ॥ सदा सदा आतम परगासु ॥ साधसंगति हरि चरण निवासु ॥१॥ राम नाम निति जपि मन मेरे ॥ सीतल साँति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरन करम ॥ सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥२॥३४॥ दूजे घर के चउतीस ॥ आसा महला ५ ॥ जा का हरि सुआमी प्रभु

बेली ॥ पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा चरन संगि मेली ॥ सूख सहज आन्नद सुहेली ॥१॥ साधसंगि गुण गाइि अतोली ॥ हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥२॥३५॥ आसा महला ५ ॥ काम क्रोध माइिआ मद मतसर इे खेलत सभि जूऐ हारे ॥ सतु संतोखु दइिआ धरमु सचु इिह अपुनै गृह भीतरि वारे ॥१॥ जनम मरन चूके सभि भारे ॥ मिलत संगि भइिए मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥१॥ रहाउ ॥ सभ की रेनु होइि रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ समारे ॥२॥ इेको इेकु आपि इिकु इेकै इेकै है सगला पासारे ॥ जपि जपि होइे सगल साध जन इेकु नामु धिआइि बहुतु उधारे ॥३॥ गहिर गंभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥ तुम्‍री कृपा ते गुन गावै नानक धिआइि धिआइि प्रभ कउ नमसकारे ॥४॥३६॥ आसा महला ५ ॥ तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इिहु सभु तेरा आकारु ॥ किआ हम जंत करह चतुराई जाँ सभु किछु तुझै मझारि ॥१॥ मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥ देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे जननि जठर महि प्रानी एहु रहता नाम अधारि ॥ अनदु करै सासि सासि सम्‍मारै ना पोहै अगनारि ॥२॥ पर धन पर दारा पर निंदा इिन सिउ प्रीति निवारि ॥ चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥३॥ गृहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥ जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्‍मारि ॥४॥३७॥

आसा घरु ३ महला ५ — ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राज मिलक जोबन गृह सोभा रूपवंतु जुोआनी ॥ बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥ आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥१॥ काहे इेक बिना चितु लाईऐ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते

पवाड़े ॥ हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते इेव बबाड़े ॥ आइिआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ इेक दिहाड़े ॥२॥ करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥ उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ नाँगा आइिआ नाँगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥३॥ संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा इेहु पसारा ॥ मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुइे गवारा ॥ गुर मिलि नानक नामु धिआइिआ साचि नामि निसतारा ॥४॥१॥३८॥

रागु आसा घरु ५ महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥ कोऊ जागै हरि जनु ॥१॥ महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥ कोऊ तिआगै विरला ॥२॥ चरन कमल आनूप हरि संत मंत ॥ कोऊ लागै साधू ॥३॥ नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥ वडभागे किरपा ॥४॥१॥३६॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥ जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥ करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥१॥ तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥ मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृतु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइिआ ॥ तृपति अघाइि सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइिआ ॥२॥ जा कउ टेक तुमारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥ जा कउ दइिआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥३॥ भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइिआ ॥ वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइिआ ॥४॥१॥४०॥

आसा महला ५ ॥ जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥ ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइि पचावै ॥१॥ निंदकि अहिला जनमु गवाइिआ ॥ पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ किरतु पइिआ निंदक बपुरे का किआ एहु करै बिचारा ॥ तहा बिगूता

जह कोइि न राखै एहु किसु पहि करे पुकारा ॥२॥ निंदक की गति कतहूं नाही खसमै इेवै भाणा ॥ जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥३॥ संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥ कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीइे रुड़ाई ॥४॥२॥४१॥ आसा महला ५ ॥ बाहरु धोइि अंतरु मनु मैला दुइि ठउर अपुने खोइे ॥ ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोइे ॥१॥ गोविंद भजन की मति है होरा ॥ वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥१॥ रहाउ ॥ माइिआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥ बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥२॥ उघरि गइिआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइिआ ॥ अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइिआ ॥३॥ कूड़ि कपटि बंचि निंमुनीआदा बिनसि गइिआ ततकाले ॥ सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥४॥३॥४२॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ पंच जना ले वसगति राखै मन महि इेकंकारे ॥१॥ तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥१॥ रहाउ ॥ प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥ राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥२॥ कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥ मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥३॥ जो जो सुनै पेखै लाइि सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ अैसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥४॥४॥४३॥ आसा महला ५ ॥ अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥ पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥१॥ घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइिआ रे ॥ बिनु जड़ीइे लै जड़िए जड़ावा थेवा अचरजु लाइिआ रे ॥२॥ दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइिआ रे ॥ मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु

धाइआ रे ॥३॥ सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥४॥५॥४४॥ आसा महला ५ ॥ बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥१॥ गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥ काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥ सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥२॥ भगति प्रेम परम पदु पाइआ साधसंगि दुख नाठे ॥ छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥३॥ अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥४॥६॥४५॥ आसा महला ५ ॥ जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥१॥ बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥२॥ किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥३॥ जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥४॥७॥४६॥ आसा महला ५ ॥ अंम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीए ॥ जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिए भरमु बीए ॥१॥ दरसनु पेखत मै जीए ॥ सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीए ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साधसंगु एहु काजु तुम्ह आपि कीए ॥ दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीए ॥२॥ सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीए ॥ करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीए ॥३॥ धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीए ॥ धंनु सु कलिजुगु साधसंगि कीरतनु गाईऐ

नानक नामु अधारु हीए ॥४॥८॥४७॥ आसा महला ५ ॥ आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥ भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥१॥ सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥ काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अंमृतु मुखि नामु दीआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥ अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥२॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥ ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥३॥ गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ सरणि पइआ नानक सोहेला ॥४॥९॥४८॥ आसा महला ५ ॥ तूं विसरहि ताँ सभु को लागू चीति आवहि ताँ सेवा ॥ अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥१॥ चीति आवै ताँ सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुमारे ॥१॥ रहाउ ॥ तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥ जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥२॥ एहो सुखु एहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥३॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥ कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥४॥१०॥४९॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी साधसंगि हरि पाईऐ ॥ खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥१॥ मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥ पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥ सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अंमृतु हरि रसना ॥२॥ तनु धनु थापि कीए सभु अपना कोमल बंधन बाँधिआ ॥ गुर परसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥३॥ राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ जीउ पिंडु सभु तुमरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥४॥११॥ ५०॥ आसा महला ५ ॥ मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइए री ॥ महा मोहनी तुधु न

विआपै तेरा आलसु कहा गहिए री ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु अह्मकारु गाखरो संजमि कउन छुटिए री ॥ सुरि नर देव असुर त्रै गुनीआ सगलो भवनु लुटिए री ॥१॥ दावा अगनि बहुतु तृण जाले कोई हरिआ बूटु रहिए री ॥ ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिए री ॥२॥ काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिए री ॥ महा मंत्रु गुर हिरदै बसिए अचरज नामु सुनिए री ॥३॥ करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥४॥१२॥५१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥ लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ सुरिजन भानी ताँ मनु मोहिआ ॥१॥ कवन बनी री तेरी लाली ॥ कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥१॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥ तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥२॥ तूं सतवंती तूं परधानि ॥ तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥३॥ प्रीतम भानी ताँ रंगि गुलाल ॥ कहु नानक सुभ दृसटि निहाल ॥४॥ सुनि री सखी इहि हमरी घाल ॥ प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥५२॥ आसा महला ५ ॥ दूखु घनो जब होते दूरि ॥ अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥१॥ चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥१॥ रहाउ ॥ निकटि आनि पृअ सेज धरी ॥ काणि कढन ते छूटि परी ॥२॥ मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥ अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥३॥ मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥४॥२॥५३॥ आसा महला ५ ॥ साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥१॥ बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥१॥ रहाउ ॥ मुख की बात सगल सिउ करता ॥ जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥२॥ दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥ सगल चरन की इहु मनु राला ॥३॥ नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥

अंतरि बाहरि इेकु दिखाइिआ ॥४॥३॥५४॥ आसा महला ५ ॥ पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥१॥ कान कुंडलीआ बसत्र एढलीआ ॥ सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥२॥ रूप सुंदरीआ अनिक इिसतरीआ ॥ हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥३॥ माइिआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दइिअलीआ ॥४॥४॥५५॥ आसा महला ५ ॥ इेकु बगीचा पेड घन करिआ ॥ अंमृत नामु तहा महि फलिआ ॥१॥ अैसा करहु बीचारु गिआनी ॥ जा ते पाईअै पदु निरबानी ॥ आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अंमृतु है भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ सिंचनहारे इेकै माली ॥ खबरि करतु है पात पत डाली ॥२॥ सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ सगली फूली निफल न काई ॥३॥ अंमृत फलु नामु जिनि गुर ते पाइिआ ॥ नानक दास तरी तिनि माइिआ ॥४॥५॥५६॥ आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥१॥ सरब सुखा बने तेरै एलै ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोले ॥१॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥ सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥२॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ नामि रता सोई निरबाणु ॥३॥ जा कउ मिलिए नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥४॥६॥५७॥ आसा महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ पंडित पूछउ त माइिआ राते ॥१॥ सो असथानु बतावहु मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥१॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पाप पुन्न वीचार ॥ नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥२॥ गिरसत महि चिंत उदास अहंकार ॥ करम करत जीअ कउ जंजार ॥३॥ प्रभ किरपा ते मनु वसि आइिआ ॥ नानक गुरमुखि तरी तिनि माइिआ ॥४॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईअै ॥ इिहु असथानु गुरू ते पाईअै ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥ आसा महला ५ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥१॥ सगल सूख जाँ तूं चिति आँवैं ॥

सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥१॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥२॥ हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ साचु सबदु जा का नीसानु ॥३॥ गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइआ ॥ भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥४॥८॥५९॥ आसा महला ५ ॥ जहा पठावहु तह तह जाईं ॥ जो तुम देहु सोई सुखु पाईं ॥१॥ सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ तुम्री क्रिपा ते त्रिपति अघाईं ॥१॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्उ खाईं ॥ तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥२॥ मन तन अंतरि तुझै धिआईं ॥ तुम्रै लवै न कोऊ लाईं ॥३॥ कहु नानक नित इवै धिआईं ॥ गति होवै संतह लगि पाईं ॥४॥९॥६०॥ आसा महला ५ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥१॥ स्रवन सुनीजै अंम्रित कथा ॥ जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥१॥ रहाउ ॥ कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ गुर प्रसादि हरि अंम्रितु पीजै ॥२॥ दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥३॥ आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥ गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥४॥१०॥६१॥ आसा महला ५ ॥ जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥ भई कलिआण दुख होवत नासु ॥१॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥२॥ पर का बुरा न राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥३॥ हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥ इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥४॥११॥६२॥ आसा महला ५ ॥ जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥२॥ जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥३॥ साधसंगि मन सोवत जागे ॥ तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥४॥१२॥६३॥ आसा महला ५ ॥ एको एकी नैन निहारउ ॥ सदा सदा हरि नामु

समारउ ॥१॥ राम रामा रामा गुन गावउ ॥ संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥ १॥ रहाउ ॥ सगल समग्री जा कै सूति परोई ॥ घट घट अंतरि रविआ सोई ॥२॥ एपति परलउ खिन महि करता ॥ आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥३॥ करन करावन अंतरजामी ॥ अनन्द करै नानक का सुआमी ॥४॥१३॥६४॥ आसा महला ५ ॥ कोटि जनम के रहे भवारे ॥ दुलभ देह जीती नही हारे ॥१॥ किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ भइे पुनीत संतन की धूरि ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ के संत उधारन जोग ॥ तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥२॥ मनि आन्नदु मंत्रु गुरि दीआ ॥ तृसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥३॥ नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ नानक गुर ते पाई बुधि ॥४॥१४॥ ६५॥ आसा महला ५ ॥ मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥ साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥१॥ सूख सहज आन्नदु घना ॥ गुर सेवा ते भइे मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥१॥ रहाउ ॥ बिनसिए मन का मूरखु ढीठा ॥ प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥२॥ गुर पूरे के चरण गहे ॥ कोटि जनम के पाप लहे ॥३॥ रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥४॥१५॥६६॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुरु अपना सद सदा समारे ॥ गुर के चरन केस संगि झारे ॥१॥ जागु रे मन जागनहारे ॥ बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥१॥ रहाउ ॥ गुर की बाणी सिउ रंगु लाइि ॥ गुरु किरपालु होइि दुखु जाइि ॥२॥ गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥३॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि ॥ आठ पहर नानक गुर जापि ॥४॥१६॥६७॥ आसा महला ५ ॥ आपे पेडु बिसथारी साख ॥ अपनी खेती आपे राख ॥१॥ जत कत पेखउ इेकै एही ॥ घट घट अंतरि आपे सोई ॥१॥ रहाउ ॥ आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥ सोई गुपतु सोई आकारु ॥२॥ सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ दुह मिलि इेकै कीनो ठाउ ॥३॥ कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइिआ ॥ अनद रूपु सभु नैन अलोइिआ ॥४॥१७॥६८॥ आसा महला ५ ॥ उकति सिआनप किछू न जाना ॥

दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥१॥ मै निरगुन गुणु नाही कोइि ॥ करन करावनहार प्रभ सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ नाम तेरे की आस मनि धारी ॥२॥ जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥३॥ किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ बिनवति नानक एट प्रभ तोरी ॥४॥१८॥६९॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि अखर दुइि इिह माला ॥ जपत जपत भइे दीन दइिआला ॥१॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि माला उर अंतरि धारै ॥ जनम मरण का दूखु निवारै ॥२॥ हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इित उत कतहि न डोलै ॥३॥ कहु नानक जो राचै नाइि ॥ हरि माला ता कै संगि जाइि ॥४॥१९॥७०॥ आसा महला ५ ॥ जिस का सभु किछु तिस का होइि ॥ तिसु जन लेपु न बिआपै कोइि ॥१॥ हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥ जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥१॥ रहाउ ॥ सगल तिआगि हरि सरणी आइिआ ॥ तिसु जन कहा बिआपै माइिआ ॥ २॥ नामु निधानु जा के मन माहि ॥ तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥३॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइिआ ॥ भरमु मोहु सगल बिनसाइिआ ॥४॥२०॥७१॥ आसा महला ५ ॥ जउ सुप्रसन्न होइिए प्रभु मेरा ॥ ताँ दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥१॥ सुनि सुनि जीवा सोइि तुमारी ॥ मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥१॥ रहाउ ॥ मिटि गइिआ दूखु बिसारी चिंता ॥ फलु पाइिआ जपि सतिगुर मंता ॥२॥ सोई सति सति है सोइि ॥ सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइि ॥३॥ कहु नानक कउन उह करमा ॥ जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥४॥२१॥७२॥ आसा महला ५ ॥ कामि क्रोधि अह्मकारि विगूते ॥ हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥१॥ सोइि रहे माइिआ मद माते ॥ जागत भगत सिमरत हरि राते ॥१॥ रहाउ ॥ मोह भरमि बहु जोनि भवाइिआ ॥ असथिरु भगत हरि चरण धिआइिआ ॥२॥ बंधन अंध कूप गृह मेरा ॥ मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥३॥ कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ ईहा सुखु

आगै गति पाई ॥४॥२२॥७३॥ आसा महला ५ ॥ तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥१॥ तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥१॥ रहाउ ॥ तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥२॥ तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ तू समरथु मै तेरा ताणु ॥३॥ अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥ नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥४॥२३॥७४॥ आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना ॥ हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥१॥ को मूआ का कै घरि गावनु ॥ को रोवै को हसि हसि पावनु ॥१॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥२॥ तृहु गुण महि वरतै संसारा ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥३॥ कहु नानक जो लाइआ नाम ॥ सफल जनमु ता का परवान ॥४॥२४॥७५॥ आसा महला ५ ॥ सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥ भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥१॥ पृअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥१॥ रहाउ ॥ कर महि अंमृतु आणि निसारिए ॥ खिसरि गइए भूम परि डारिए ॥२॥ सादि मोहि लादी अहंकारे ॥ दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥३॥ साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥ नानक मेली सिरजणहारे ॥४॥२५॥७६॥ आसा महला ५ ॥ चरन कमल की आस पिआरे ॥ जमकंकर नसि गए विचारे ॥१॥ तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥ सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥२॥ दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ सहज अनन्द बसै बैरागी ॥३॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ केवल नामु रिदे महि दीजै ॥४॥२६॥७७॥ आसा महला ५ ॥ मनु तृपतानो मिटे जंजाल ॥ प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥१॥ संत प्रसादि भली बनी ॥ जा कै गृहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥१॥ रहाउ ॥ नामु दृड़ाइआ साध कृपाल ॥ मिटि गई भूख महा बिकराल ॥२॥ ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ जलनि बुझी मनि होई साँति ॥३॥ मिटि गई भाल मनु

सहजि समाना ॥ नानक पाइआ नाम खजाना ॥४॥२७॥७८॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥ भोजन पूरन रहे अघाई ॥१॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥१॥ रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई ॥ मानुख की कहु केत चलाई ॥२॥ जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥३॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ कहु नानक नाही तिन कामी ॥४॥२८॥७९॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥१॥ मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ नामि रते जन भए भगवंता ॥१॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥२॥ जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥ ताँ पूरन होई मनसा मेरी ॥३॥ देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ नानक दास तेरा भरवासा ॥४॥२९॥८०॥ आसा महला ५ ॥ अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥१॥ सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥१॥ रहाउ ॥ द्रुम की छाइआ निहचल गृहु बाँधिआ ॥ काल कै फाँसि सकत सरु साँधिआ ॥२॥ बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥ सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥३॥ साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥ नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥४॥३०॥८१॥ आसा महला ५ दुतुके ९ ॥ उन कै संगि तू करती केल ॥ उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥१॥ ते बैरागी कहा समाए ॥ तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥१॥ रहाउ ॥ उन्ह कै संगि तू गृह महि माहरि ॥ उन्ह कै संगि तू होई है जाहरि ॥ उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि ॥ ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥२॥ उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु ॥ उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु ॥ उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ ओसु बिना तूं होई है माटी ॥३॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥ अपनी कुदरति जाणै आपि ॥४॥३१॥८२॥ आसा महला ५ ॥

ना एहु मरता ना हम डरिआ ॥ ना एहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ ना एहु निरधनु ना हम भूखे ॥ ना एसु दूखु न हम कउ दूखे ॥१॥ अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ एसु अन्नदु त हम सद केला ॥२॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ ना उसु भूख न हम कउ तृसना ॥ जा उहु निरमलु ताँ हम जचना ॥३॥ हम किछु नाही इकै एही ॥ आगै पाछै इको सोई ॥ नानक गुरि खोइे भ्रम भंगा ॥ हम एइि मिलि होइे इिक रंगा ॥४॥३२॥८३॥ आसा महला ५ ॥ अनिक भाँति करि सेवा करीअै ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीअै ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ अनिक बार जाईअै कुरबानु ॥१॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥ १॥ रहाउ ॥ दासनि दासी की पनिहारि ॥ उन् की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ संगु ॥ मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥२॥ जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ उन् कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥३॥ निमख निमख इेही आराधउ ॥ दिनसु रैणि इेह सेवा साधउ ॥ भइे कृपाल गुपाल गोबिंद ॥ साधसंगि नानक बखसिंद ॥४॥३३॥८४॥ आसा महला ५ ॥ प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइि ॥ प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइि ॥ प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइि ॥ प्रभ की प्रीति सद निरमल होइि ॥१॥ सुनहु मीत अैसा प्रेम पिआरु ॥ जीअ प्रान घट घट आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ की प्रीति भइे सगल निधान ॥ प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥ प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥२॥ प्रभ की प्रीति इिहु भवजलु तरै ॥ प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥३॥ आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ जिसु कृपालु तिसु साधसंगि घूलै ॥ कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥ संत एट प्रभ तेरा ताणु ॥४॥३४॥८५॥ आसा महला ५ ॥ भूपति होइि कै राजु कमाइिआ ॥ करि करि अनरथ

विहाझी माइिआ ॥ संचत संचत थैली कीन्ी ॥ प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ी ॥१॥ काच गगरीआ अंभ मझरीआ ॥ गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥१॥ रहाउ ॥ निरभउ होइिए भइिआ निह्मगा ॥ चीति न आइिए करता संगा ॥ लसकर जोड़े कीआ संबाहा ॥ निकसिआ फूक त होइि गइिए सुआहा ॥२॥ ऊचे मंद्र महल अरु रानी ॥ हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥ वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥३॥ जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥ सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ नानक दास जिसु खसमु दइिआलु ॥४॥३५॥८६॥ आसा महला ५ ॥ इिन् सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥ गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥१॥ जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ निरगुनु मिलिए वजी वधाई ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥ बाटि घाटि गृहि बनि बनि जोहै ॥ मनि तनि लागै होइि कै मीठी ॥ गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥२॥ अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥ छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ मेली अपने उनि ले बाँधे ॥ गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥३॥ अब मोरै मनि भइिआ अन्नद ॥ भउ चूका टूटे सभि फंद ॥ कहु नानक जा सतिगुरु पाइिआ ॥ घरु सगला मै सुखी बसाइिआ ॥४॥३६॥८७॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर निकटि करि जानै ॥ प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ इेकु नामु संतन आधारु ॥ होइि रहे सभ की पग छारु ॥१॥ संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ उआ की महिमा कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ वरतणि जा कै केवल नाम ॥ अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥ मित्र सत्रु जा कै इेक समानै ॥ प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥२॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ सूरबीर बचन के बली ॥ कउला बपुरी संती छली ॥३॥ ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥ अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥४॥३७॥८८॥ आसा महला ५ ॥ सगल सूख जपि इेकै नाम ॥ सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ महा पवित्र

साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥१॥ गुर प्रसादि एहि आनन्द पावै ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥१॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान तिनि सिंमृति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥२॥ प्रगटिए सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ भेटिए हरि हरि राइ ॥ ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥३॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु पावउ ॥ मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ नानक आइ पड़े सरणाइ ॥४॥३८॥८९॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर उदक इसनानी ॥ सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥ बिरथा काहू छोडै नाही ॥ बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥१॥ सालगिरामु हमारै सेवा ॥ पूजा अरचा बंदन देवा ॥१॥ रहाउ ॥ घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥ आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ ता का धूपु सदा परफुलै ॥२॥ घटि घटि संपटु है रे जा का ॥ अभग सभा संगि है साधा ॥ आरती कीरतनु सदा अन्नद ॥ महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥३॥ जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ संत चरन एहु आइए सरना ॥ हाथि चड़िए हरि सालगिरामु ॥ कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥४॥३९॥९०॥ आसा महला ५ पंचपदा ॥ जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरारी ॥१॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही उह जन ते बाट ॥२॥ जह आवटे बहुत घन साथ ॥ पारब्रहम के संगी साध ॥३॥ चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ भगत जना कउ दृसटि न पेखा ॥४॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता कै अनहद तूरा ॥५॥४०॥९१॥ आसा महला ५ दुपदा १ ॥ साधू संगि सिखाइए नामु ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ बुझि गई तृसना हरि जसहि अघाने ॥ जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥१॥ करन करावन सरनि परिआ ॥ गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥

लाल जवेहर भरे भंडार ॥ तोटि न आवै जपि निरंकार ॥ अंमृत सबदु पीवै जनु कोइि ॥ नानक ता की परम गति होइि ॥२॥४१॥९२॥ आसा घरु ७ महला ५ ॥ हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ संगी साथी सगल तराँई ॥१॥ गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु माँगै ॥२॥४२॥९३॥ आसा महला ५ ॥ साधू संगति तरिआ संसारु ॥ हरि का नामु मनहि आधारु ॥१॥ चरन कमल गुरदेव पिआरे ॥ पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥ कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥२॥४३॥९४॥ आसा महला ५ ॥ मीठी आगिआ पिर की लागी ॥ सउकनि घर की कंति तिआगी ॥ पृअ सोहागनि सीगारि करी ॥ मन मेरे की तपति हरी ॥१॥ भलो भइिए पृअ कहिआ मानिआ ॥ सूखु सहजु इिसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥ हउ बंदी पृअ खिजमतदार ॥ एहु अबिनासी अगम अपार ॥ ले पखा पृअ झलउ पाइे ॥ भागि गइे पंच दूत लावे ॥२॥ ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ किआ जाना किउ भानी कंत ॥ मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ कंत पकरि हम कीनी रानी ॥३॥ जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥ सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥ कहु नानक मोरी पूरन आसा ॥ सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥४॥१॥९५॥ आसा महला ५ ॥ माथै तृकुटी दृसटि करूरि ॥ बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥ सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥१॥ अैसी इिसत्री इिक रामि उपाई ॥ उनि सभु जगु खाइिआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ पाइि ठगउली सभु जगु जोहिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥ गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥२॥ वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ तट तीरथ भवे सभ धरना ॥ से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥३॥ माइिआ मोहि सभो जगु बाधा ॥ हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥४॥२॥९६॥ आसा महला ५ ॥ सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥ ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥१॥ संत तृपतासे

हरि हरि ध्याइ ॥ करि किरपा अपुनै नाइ लाइ सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ संगि होवत कउ जानत दूरि ॥ सो जनु मरता नित नित झूरि ॥२॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥३॥ कहु नानक प्रभु सिमरहु इेक ॥ गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥४॥३॥९७॥ आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ कलमल दोख सगल परहरिआ ॥१॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना के पूजे पैर ॥ मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥२॥ गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥३॥ जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥४॥४॥९८॥ आसा महला ५ ॥ गावि लेहि तू गावनहारे ॥ जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥१॥ सदा अन्नद अन्नदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥ बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही ॥ भली भाति सभ सहजि समाही ॥ जा की बखस न मेटै कोई ॥ मनि वासाईऐ साचा सोई ॥२॥ सगल समग्री गृह जा कै पूरन ॥ प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ एटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥ सासि सासि सो गुन निधि गाईऐ ॥३॥ दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥ नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥ अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥ नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥४॥५॥९९॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ मन सगल कउ होआ सूखु ॥ करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥१॥ गुरु पूरा पाइिए मेरे भाई ॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाइे ॥ मन चिंतत सगले फल पाइे ॥ अगनि बुझी सभ होई साँति ॥ करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥२॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ बंधन काटि सेवक करि राखे ॥ अंमृत बानी रसना चाखे ॥३॥ वडै भागि पूज गुर चरना ॥ सगल तिआगि

पाई प्रभ सरना ॥ गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ सो जनु होआ सदा निहाला ॥४॥६॥१००॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइि कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥१॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ साचे साहिब कै मनि भावै ॥२॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइिआ ॥ भए अचिंत एक लिव लाइिआ ॥३॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइिआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥४॥७॥१०१॥ आसा महला ५ ॥ गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥१॥ गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥ जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ सरनि परे साचे गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक सेव ॥२॥ जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥३॥८॥१०२॥

आसा घरु ८ काफी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥१॥ माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥२॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥३॥ जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥४॥१॥१०३॥ आसा महला ५ ॥ सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥१॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥ नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥१॥ रहाउ ॥ भागठु सचा सोइि है जिसु हरि धनु

अंतरि ॥ सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥२॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥ एहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥३॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥४॥२॥१०४॥ आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥१॥ हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥ होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥१॥ रहाउ ॥ बिंदक गालि्‍ सुणी सचे तिसु धणी ॥ सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥२॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥३॥ बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥ नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥४॥३॥१०५॥ आसा महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥१॥ तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥ तूं सभना के नाथ तेरी सृसटि सभ ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ नाम बिहूनड़िआ से मरनि्‍ विसूरि विसूरि ॥२॥ दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ विसरिआ जिना्‍ नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥३॥ जैसे पसु हरि्‍आउ तैसा संसारु सभ ॥ नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥४॥४॥१०६॥ आसा महला ५ ॥ हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥१॥ आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥ जीवाँ तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥१॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥२॥ जो न ढह्मदो मूलि सो घरु रासि करि ॥ हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥३॥ तिना्‍ पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥४॥५॥१०७॥ आसा महला ५ ॥ जिना्‍ न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ भेदु न जाणहु मूलि साँई जेहिआ ॥१॥ मनु तनु होइ निहालु तुम्‍ संगि भेटिआ ॥ सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिन्‍्‍ खे ॥ जिन्‍ मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥२॥

जिस नो मन्ने आपि सोई मानीऐ ॥ प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥३॥ दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥ नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥४॥६॥१०८॥ आसा महला ५ ॥ पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥ एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥१॥ जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥ जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥२॥ जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥ भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥३॥ जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥ नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥४॥७॥१०९॥ आसा महला ५ ॥ किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ कितीं इतु दरीआइ वंञनि् वहदिआ ॥१॥ बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लम्घीऐ ॥ आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥ हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥२॥ कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥ बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥३॥ महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥४॥८॥११०॥ आसा महला ५ ॥ कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥ एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥१॥ मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥ देखि तुमारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥ राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो ॥ हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनो ॥२॥ जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥ सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥३॥ सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गंभीरे ॥ आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥४॥९॥१११॥ आसा महला ५ ॥ जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥१॥ नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥ तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥२॥ राखनहारु अपारु राखै अगनि

माहि ॥ सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥३॥ सूख सहज आन्नद घणा नानक जन धूरा ॥ कारज सगले सिधि भइे भेटिआ गुरु पूरा ॥४॥१०॥११२॥ आसा महला ५ ॥ गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऔ ॥ होइि कृपालु दइिआलु हरि रंगु माणीऔ ॥१॥ आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥१॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥२॥ चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइिआ ॥ धन्नु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइिआ ॥३॥ जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ नानक कै सुखु सोइि जो प्रभ भावई ॥४॥११॥११३॥ आसा महला ५ ॥ आवहु मीत इिकत्र होइि रस कस सभि भुंचह ॥ अंमृत नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥१॥ ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ खीन भइे सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥२॥ जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥३॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥ राम रसाइिणि जो रते नानक सच अमली ॥४॥१२॥११४॥ आसा महला ५ ॥ उदमु कीआ कराइिआ आरंभु रचाइिआ ॥ नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु दृड़ाइिआ ॥१॥ पाइि परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥२॥ सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ नेमु निबाहिए सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥३॥ नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥४॥१३॥११५॥ आसा महला ५ ॥ जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ एहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥१॥ हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥ करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ दूजा नाही अउरु को ता का भउ

करीऐ ॥ गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥२॥ द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥ जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥३॥ अंम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥४॥१४॥११६॥ आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ सभु किछु ता का कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥१॥ जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥१॥ रहाउ ॥ वेपरवाहु अनन्द मै नाउ माणक हीरा ॥ रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥२॥ सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावउ ॥ सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥३॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥४॥१५॥११७॥ आसा महला ५ ॥ संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥ सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥१॥ इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥ तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ दूजा भाउ विसारीऐ एहु त्मबोला खाइ री ॥२॥ गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥३॥ तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥४॥१६॥११८॥ आसा महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥१॥ एइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥ हम छूटे अब उन्हा ते एइ हम ते छूटे ॥१॥ रहाउ ॥ मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥२॥ जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥३॥ ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा ॥ गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥४॥१७॥११९॥ आसा महला ५ ॥ सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥१॥ बलिहारी गुर आपणे

सद सद बलि जाउ ॥ गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥२॥ पुन्न दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥३॥ भै बिनसे भ्रम मोह गड़े को दिसै न बीआ ॥ नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥४॥१८॥१२०॥

आसा घरु ६ महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ इेकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥१॥ हउ मागउ आन लजावउ ॥ सगल छत्रपति इेको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥ १॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक सनक सन्नदन सनातन सनतकुमार तिन् कउ महलु दुलभावउ ॥२॥ अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥३॥ भइिए कृपालु दइिआलु प्रभु ठाकुरु काटिए बंधु गरावउ ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइिए तउ फिरि जनमि न आवउ ॥४॥१॥१२१॥ आसा महला ५ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ संगि चलन कउ तोसा दीन्ा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥१॥ अवर बिसारी बिसारी ॥ नाम दानु गुरि पूरै दीए मै इेहो आधारी ॥१॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्ारी ॥ नाम दृड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥२॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ सतसंगति महि बिसासु होइि हरि जीवत मरत संगारी ॥३॥ जन नानक कउ इिहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥४॥२॥१२२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥ जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा

॥ पुत्र कलत्र गृह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥१॥ रे मन किआ करहि है हा हा ॥ दृसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे बसतर देह एढाने दिन दोइि चारि भोराहा ॥ भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति एरको आहा ॥२॥ जैसे अंभ कुंड करि राखिए परत सिंधु गलि जाहा ॥ आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥३॥ रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण एटाहा ॥४॥१॥१२३ ॥ आसा महला ५ ॥ अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ अंधकार महि रतनु प्रगासिए मलीन बुधि हछनई ॥१॥ जउ किरपा गोबिंद भई ॥ सुख संपति हरि नाम फल पाइे सतिगुर मिलई ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि किरपन कउ कोइि न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥२॥ आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल तृसन बुझि गई ॥ इेकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ॥३॥ इेक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥४॥२॥१२४॥ आसा महला ५ ॥ रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइिआ ॥ ससत वखरु तूं घिन्नहि नाही पापी बाधा रेनाइिआ ॥१॥ सतिगुर तेरी आसाइिआ ॥ पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै इेहा एटाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइिआ ॥ निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिए बूझी उलटाइिआ ॥२॥ पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइिआ ॥ साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइिआ ॥३॥ दीन दइिआल कृपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइिआ ॥ नानक आहि सरण प्रभ आइिए राखु लाज अपनाइिआ ॥४॥३॥१२५॥ आसा महला ५ ॥ मिथिआ संगि संगि लपटाइे मोह माइिआ करि बाधे ॥ जह जानो सो चीति न आवै अह्मबुधि भइे आँधे ॥१॥ मन बैरागी किउ न अराधे ॥ काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥१॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी करत

दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ जैसे मीठै सादि लोभाइे झूठ धंधि दुरगाधे ॥२॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह इिह इिंद्री रसि लपटाधे ॥ दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥३॥ जउ भइिए कृपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥४॥ इिउ जपिए भाई पुरखु बिधाते ॥ भइिए कृपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥१२६॥ आसा महला ५ ॥ निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥१॥ अंधे चेति हरि हरि राइिआ ॥ तेरा सो दिनु नेड़ै आइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ पलक दृसटि देखि भूलो आक नीम को तूंमरु ॥ जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इिहु पर गृहु ॥२॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥ छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥३॥ सगल संसारु इिहै बिधि बिआपिए सो उबरिए जिसु गुरु पूरा ॥ कहु नानक भव सागरु तरिए भइे पुनीत सरीरा ॥४॥५॥१२७॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ लूकि कमानो सोई तुम् पेखिए मूड़ मुगध मुकरानी ॥ आप कमाने कउ ले बाँधे फिरि पाछै पछुतानी ॥१॥ प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥१॥ रहाउ ॥ जितु जितु लाइे तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ॥२॥६॥१२८॥ आसा महला ५ ॥ अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ सेवक कउ निकटी होइि दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइि आवै ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइि सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥२॥७॥१२६॥

आसा घरु ११ महला ५ ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है एहु तैसा रे ॥ अनिक जोनि भ्रमिए भ्रम भीतरि सुखहि नाही

परवेसा रे ॥१॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥ साधसंगि मिलि हरि गुण गाइे इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइिआ ब्रहम की कीन्ी कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥ घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥२॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिए ततु नानक इहु जाना रे ॥ सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥३॥१॥१३०॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥ नाम रंगि इहु मनु तृपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥१॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥ नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइिआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥ २॥२॥१३१॥ आसा महला ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥१॥ जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥ जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥१॥ रहाउ ॥ वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥ कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥२॥३॥१३२॥ आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥१॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि नानक पीकी रे ॥२॥४॥१३३॥ आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अंमृत धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥१॥ खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥२॥५॥१३४॥ आसा महला ५ ॥ नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥१॥ चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥२॥ हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥३॥६॥१३५॥

रागु आसा महला ५ घरु १२

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु ॥ इेक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥१॥ सो प्रभु जाणीअै सद संगि ॥ गुर प्रसादी बूझीअै इेक हरि कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ सरणि समरथ इेक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ महा भउजलु लम्घीअै सदा हरि गुण गाउ ॥२॥ जनम मरणु निवारीअै दुखु न जम पुरि होइि ॥ नामु निधानु सोई पाइे कृपा करे प्रभु सोइि ॥३॥ इेक टेक अधारु इेको इेक का मनि जोरु ॥ नानक जपीअै मिलि साधसंगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥४॥१॥१३६ ॥ आसा महला ५ ॥ जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीइे सभि रस भोग ॥ दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥१॥ मेरे मन धिआइि हरि हरि नाउ ॥ हलति पलति सहाइि संगे इेक सिउ लिव लाउ ॥१॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥ करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥२॥ कामु क्रोधु अह्मकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥ नामु दृड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥३॥ चरण सरण दइिआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥ जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥४॥२॥१३७॥ आसा महला ५ ॥ डोलि डोलि महा दुखु पाइिआ बिना साधू संग ॥ खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इिक रंग ॥१॥ हरि को नामु जपीअै नीति ॥ सासि सासि धिआइि सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥१॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥२॥ मीतु सखा सहाइि संगी ऊच अगम अपारु ॥ चरण कमल बसाइि हिरदै जीअ को आधारु ॥३॥ करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ ॥ सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥४॥३॥१३८॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥ हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥१॥ मन महि राम नामा जापि ॥ करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइि सहाई आपि ॥१॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन

का चाउ ॥ दइिआ करहु किरम अपुने कउ इिहै मनोरथु सुआउ ॥२॥ तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥३॥ जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि ॥ भाइि भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥४॥४॥१३६॥ आसा महला ५ ॥ अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाइे जिसु मसतकि भागु ॥ आपि कृपालि कृपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥१॥ कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ तू आपि करता सभ सृसटि धरता सभ महि रहिआ समाइि ॥ धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइि ॥२॥ सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाइे कोई न पकड़ीऐ किसै थाइि ॥३॥ हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि इेहु तेरा बिरदु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥४॥५॥१४०॥

राग़ु आसा महला ५ घरु १३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥१॥ जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥२॥ कोइि न जानै कोइि न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥३॥ कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥४॥१॥१४१॥ आसा महला ५ ॥ बावर सोइि रहे ॥१॥ रहाउ ॥ मोह कुटंब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥१॥ मिथन मनोरथ सुपन आनन्द उलास मनि मुखि सति कहे ॥२॥ अंमृतु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥३॥ करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥४॥२॥१४२॥ आसा महला ५ तिपदे ॥ एहा प्रेम पिरी ॥१॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥१॥ राज न भाग न

हुकम न सादन ॥ किछु किछु न चाही ॥२॥ चरनन सरनन संतन बंदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥ नानक तपति हरी ॥ मिले प्रेम पिरी ॥३॥३॥१४३॥ आसा महला ५ ॥ गुरहि दिखाइिए लोइिना ॥१॥ रहाउ ॥ ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥१॥ कारन करना धारन धरना इेकै इेकै सोहिना ॥२॥ संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइिना ॥३॥४॥१४४॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला ॥ एहु सहजि सुहेला ॥१॥ रहाउ ॥ संगि सहाई छोडि न जाई एहु अगह अतोला ॥१॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का एला ॥२॥ अलखु लखाइिआ गुर ते पाइिआ नानक इिहु हरि का चोला ॥३॥५॥१४५॥ आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि ॥ ठाकुर आइिए आहि ॥१॥ रहाउ ॥ नामु पदारथु होइि सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥१॥ इेह मुकता इेह जुगता राखहु संत संगाहि ॥२॥ नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥३॥६॥१४६॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे ॥ हरि संतन पावे ॥१॥ रहाउ ॥ आपु गवाइिआ सेव कमाइिआ गुन रसि रसि गावे ॥१॥ इेकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥२॥ दइिआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥३॥७॥१४७॥ आसा महला ५ ॥ इेकु सिमरि मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥१॥ प्रभ सरनी आईअै सरब फल पाईअै सगले दुख जाही ॥२॥ जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥३॥८॥१४८॥ आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥१॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिए नलिनी भ्रमि सूआ ॥२॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥

आसा महला ५ घरु १४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एहु नेहु नवेला ॥ अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥१॥ रहाउ ॥ जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥ हरि

प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥१॥ प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥२॥१॥१५०॥ आसा महला ५ ॥ मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥१॥ रहाउ ॥ सिंमृति सासत्र बहु करम कमाइे प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥१॥ वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥२॥२॥१५१॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बिकार माइआ मादि सोइए सूझ बूझ न आवै ॥ पकरि केस जमि उठारिए तद ही घरि जावै ॥१॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥१॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ निपटि बाजी हारि मूका पछुताइए मनि भोरा ॥२॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ जेंह कारजि रहै एलु सोइि कामु न करिआ ॥३॥ ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइिए तउ इेक कीरति गाइिआ ॥ मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइिआ ॥४॥१॥१५२॥ आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाइे ॥ साध संत मनाइे पृअ पाइे गुन गाइे पंच नाद तूर बजाइे ॥१॥ रहाउ ॥ किरपा पाइे सहजाइे दरसाइे अब रातिआ गोविंद सिउ ॥ संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाइे ॥१॥ गुर गिआनु मनि दृड़ाइे रहसाइे नही आइे सहजाइे मनि निधानु पाइे ॥ सभ तजी मनै की काम करा ॥ चिरु चिरु चिरु चिरु भइिआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥ नानक दीन सरणि आइे गलि लाइे ॥२॥२॥१५३॥ आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै ॥ आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मान इहि बिआधि छोरै ॥१॥ संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ निधि नामु नानक मोरै ॥२॥३॥१५४॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ मनि सिमरि गोबिंद नाम ॥ हरि भजन सफल काम ॥

१॥ रहाउ ॥ तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ मन संतना कै चरनि लागु ॥१॥ प्रभ गोपाल दीन दइिआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥ करि भगति नानक पूरन भागु ॥२॥४॥१५५॥ आसा महला ५ ॥ हरख सोग बैराग अन्नदी खेलु री दिखाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ खिनहूं भै निरभै खिनहूं खिनहूं उठि धाइिए ॥ खिनहूं रस भोगन खिनहूं खिनहू तजि जाइिए ॥१॥ खिनहूं जोग ताप बहु पूजा खिनहूं भरमाइिए ॥ खिनहूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइिए ॥२॥५॥१५६॥

राग आसा महला ५ घरु १७ आसावरी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गोबिंद करि हाँ ॥ हरि हरि मनि पिआरि हाँ ॥ गुरि कहिआ सु चिति धरि हाँ ॥ अन सिउ तोरि फेरि हाँ ॥ ऐसे लालनु पाइिए री सखी ॥१॥ रहाउ ॥ पंकज मोह सरि हाँ ॥ पगु नही चलै हरि हाँ ॥ गहडिए मूड़ नरि हाँ ॥ अनिन उपाव करि हाँ ॥ तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥१॥ थिर थिर चित थिर हाँ ॥ बनु गृहु समसरि हाँ ॥ अंतरि इेक पिर हाँ ॥ बाहरि अनेक धरि हाँ ॥ राजन जोगु करि हाँ ॥ कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥२॥१॥१५७॥ आसावरी महला ५ ॥ मनसा इेक मानि हाँ ॥ गुर सिउ नेत धिआनि हाँ ॥ दृड़ु संत मंत गिआनि हाँ ॥ सेवा गुर चरानि हाँ ॥ तउ मिलीऐ गुर कृपानि मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ टूटे अन भरानि हाँ ॥ रविए सरब थानि हाँ ॥ लहिए जम भइिआनि हाँ ॥ पाइिए पेड थानि हाँ ॥ तउ चूकी सगल कानि ॥१॥ लहनो जिसु मथानि हाँ ॥ भै पावक पारि परानि हाँ ॥ निज घरि तिसहि थानि हाँ ॥ हरि रस रसहि मानि हाँ ॥ लाथी तिस भुखानि हाँ ॥ नानक सहजि समाइिए रे मना ॥२॥२॥१५८॥ आसावरी महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुनी हाँ ॥ जपीऐ सहज धुनी हाँ ॥ साधू रसन भनी हाँ ॥ छूटन बिधि सुनी हाँ ॥ पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ खोजहि जन मुनी हाँ ॥ स्रब का प्रभ धनी हाँ ॥ दुलभ कलि दुनी हाँ ॥ दूख बिनासनी हाँ ॥ प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥१॥ मन सो सेवीऐ हाँ ॥

अलख अभेवीऐ हाँ ॥ ताँ सिउ प्रीति करि हाँ ॥ बिनसि न जाइ मरि हाँ ॥ गुर ते जानिआ हाँ ॥ नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥२॥३॥१५९॥ आसावरी महला ५ ॥ इेका एट गहु हाँ ॥ गुर का सबदु कहु हाँ ॥ आगिआ सति सहु हाँ ॥ मनहि निधानु लहु हाँ ॥ सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ जीवत जो मरै हाँ ॥ दुतरु सो तरै हाँ ॥ सभ की रेनु होइ हाँ ॥ निरभउ कहउ सोइ हाँ ॥ मिटे अंदेसिआ हाँ ॥ संत उपदेसिआ मेरे मना ॥१॥ जिसु जन नाम सुखु हाँ ॥ तिसु निकटि न कदे दुखु हाँ ॥ जो हरि हरि जसु सुने हाँ ॥ सभु को तिसु मन्ने हाँ ॥ सफलु सु आइिआ हाँ ॥ नानक प्रभ भाइिआ मेरे मना ॥२॥४॥१६०॥ आसावरी महला ५ ॥ मिलि हरि जसु गाईऐ हाँ ॥ परम पदु पाईऐ हाँ ॥ उआ रस जो बिधे हाँ ॥ ता कउ सगल सिधे हाँ ॥ अनदिनु जागिआ हाँ ॥ नानक बडभागिआ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ संत पग धोईऐ हाँ ॥ दुरमति खोईऐ हाँ ॥ दासह रेनु होइ हाँ ॥ बिआपै दुखु न कोइ हाँ ॥ भगताँ सरनि परु हाँ ॥ जनमि न कदे मरु हाँ ॥ असथिरु से भइे हाँ ॥ हरि हरि जिन् जपि लइे मेरे मना ॥१॥ साजनु मीतु तूं हाँ ॥ नामु दृड़ाइि मूं हाँ ॥ तिसु बिनु नाहि कोइि हाँ ॥ मनहि अराधि सोइि हाँ ॥ निमख न वीसरै हाँ ॥ तिसु बिनु किउ सरै हाँ ॥ गुर कउ कुरबानु जाउ हाँ ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥२॥५॥१६१॥ आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तूं हाँ ॥ अवरु ना सुझै मूं हाँ ॥ करहि सु होईऐ हाँ ॥ सहजि सुखि सोईऐ हाँ ॥ धीरज मनि भइे हाँ ॥ प्रभ कै दरि पइे मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हाँ ॥ पूरन संजमे हाँ ॥ जब ते छुटे आप हाँ ॥ तब ते मिटे ताप हाँ ॥ किरपा धारीआ हाँ ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥१॥ इिहु सुखु जानीऐ हाँ ॥ हरि करे सु मानीऐ हाँ ॥ मंदा नाहि कोइि हाँ ॥ संत की रेन होइि हाँ ॥ आपे जिसु रखै हाँ ॥ हरि अंमृतु सो चखै मेरे मना ॥२॥ जिस का नाहि कोइि हाँ ॥ तिस का प्रभू सोइि हाँ ॥ अंतरगति बुझै हाँ ॥ सभु किछु तिसु सुझै हाँ ॥ पतित उधारि लेहु हाँ ॥ नानक अरदासि इेहु मेरे मना ॥३॥६॥१६२॥ आसावरी महला ५ इिकतुका ॥ एइि परदेसीआ हाँ ॥ सुनत संदेसिआ हाँ ॥१॥ रहाउ ॥ जा सिउ रचि

रहे हाँ ॥ सभ कउ तजि गइे हाँ ॥ सुपना जिउ भइे हाँ ॥ हरि नामु जिन्हि लइे ॥१॥ हरि तजि अन लगे हाँ ॥ जनमहि मरि भगे हाँ ॥ हरि हरि जनि लहे हाँ ॥ जीवत से रहे हाँ ॥ जिसहि कृपालु होइि हाँ ॥ नानक भगतु सोइि ॥२॥७॥१६३॥२३२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ९ ॥ बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ लोभि ग्रसिए दस हू दिस धावत आसा लागिए धन की ॥१॥ रहाउ ॥ सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥ मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥ बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥ जलु आकासी सुंनि समावै ॥ रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥१॥ ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥१॥ रहाउ ॥ सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥ गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ पारसु परसि परम पदु पावै ॥२॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै ॥ सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ जै सिउ राता तैसो होवै ॥ आपे करता करे सु होवै ॥३॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ निरमल बाणी नादु वजावै ॥४॥ अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावणहारा ॥५॥ रसि रसिआ मति एकै भाइि ॥ तखत निवासी पंच समाइि ॥ कार कमाई खसम रजाइि ॥ अविगत नाथु न लखिआ जाइि ॥६॥ जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥७॥ अंतरि बाहरि अवरु न

कोइि ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइि ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ निरमल नामु मेरा आधारु ॥ ८॥१॥ आसा महला १ ॥ सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ बिनु बूझे को थाइि न पाई ॥ नाम बिहूणै माथे छाई ॥१॥ साच धणी जगु आइि बिनासा ॥ छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥१॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ गुरमती इिकि भइे उदासा ॥ अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ तिन् कउ नाही जम की त्रासा ॥२॥ जगु तृअ जितु कामणि हितकारी ॥ पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ बिरथा जनमु गवाइिआ बाजी हारी ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥३॥ बाहरहु हउमै कहै कहाइे ॥ अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाइे ॥ माइिआ मोहु गुर सबदि जलाइे ॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआइे ॥४॥ धावतु राखै ठाकि रहाइे ॥ सिख संगति करमि मिलाइे ॥ गुर बिनु भूलो आवै जाइे ॥ नदरि करे संजोगि मिलाइे ॥५॥ रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ सभि दुख मेटे साचै नाई ॥६॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ नदरि करे राखै रखवाला ॥७॥ तृभवण सूझै आपु गवावै ॥ बाणी बूझै सचि समावै ॥ सबदु वीचारे इेक लिव तारा ॥ नानक धन्नु सवारणहारा ॥८॥२॥ आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ लेख असंख अलेखु अपारु ॥१॥ अैसा साचा तूं इेको जाणु ॥ जंमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥१॥ रहाउ ॥ माइिआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ बाँधा छूटै नामु सम्हालि ॥ गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥ हलति पलति निबही तुधु नालि ॥२॥ सबदि मरै ताँ इेक लिव लाइे ॥ अचरु चरै ताँ भरमु चुकाइे ॥ जीवन मुकतु मनि नामु वसाइे ॥ गुरमुखि होइि त सचि समाइे ॥३॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ सरब निरंतरि आपे आपि ॥ किसै न पूछे बखसे आपि ॥४॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥

सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ इेको साहिबु इेकु वजीरु ॥५॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिआनी विरला आचारी ॥ जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥६॥ जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइि ॥ जगु रोगी भोगी गुण रोइि ॥ जगु उपजै बिनसै पति खोइि ॥ गुरमुखि होवै बूझै सोइि ॥७॥ महघो मोलि भारि अफारु ॥ अटल अछलु गुरमती धारु ॥ भाइि मिलै भावै भइिकारु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥८॥३॥ आसा महला १ ॥ इेकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ हउमै जाइि सबदि मलु धोवहि ॥ समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥१॥ कउणु मरै कउणु रोवै एही ॥ करण कारण सभसै सिरि तोही ॥१॥ रहाउ ॥ मूइे कउ रोवै दुखु कोइि ॥ सो रोवै जिसु बेदन होइि ॥ जिसु बीती जाणै प्रभ सोइि ॥ आपे करता करे सु होइि ॥२॥ जीवत मरणा तारे तरणा ॥ जै जगदीस परम गति सरणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥३॥ निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥ बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ जनमि मूइे बिनु भगति सरोति ॥४॥ मूइे कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ दुखु सुखु परहरि सहजि सुचीत ॥ तनु मनु सउपउ कृसन परीति ॥५॥ भीतरि इेकु अनेक असंख ॥ करम धरम बहु संख असंख ॥ बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥६॥ आपि मरै मारे भी आपि ॥ आपि उपाइे थापि उथापि ॥ सृसटि उपाई जोती तू जाति ॥ सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥७॥ सूतकु अगनि भखै जगु खाइि ॥ सूतकु जलि थलि सभ ही थाइि ॥ नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ गुर परसादी हरि रसु पीजै ॥८॥४॥ रागु आसा महला १ ॥ आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥ इेक दृसटि तारे गुर पूरा ॥ गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥१॥ अैसा साहु सराफी करै ॥ साची नदरि इेक लिव तरै ॥१॥ रहाउ ॥ पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ निरमलु साचि रता पैकारु ॥ सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥२॥ आसा मनसा सबदि जलाइे ॥ राम नराइिणु कहै कहाइे ॥ गुर ते वाट महलु

घरु पाइे ॥३॥ कंचन काइिआ जोति अनूपु ॥ तृभवण देवा सगल सरूपु ॥ मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥४॥ पंच तीनि नव चारि समावै ॥ धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ बाहरि जातउ उलटि परावै ॥ ५॥ मूरखु होइि न आखी सूझै ॥ जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥६॥ ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥७॥ हीरा नामु जवेहर लालु ॥ मनु मोती है तिस का मालु ॥ नानक परखै नदरि निहालु ॥८॥५॥ आसा महला १ ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ गुरमुखि महली महलु पछानु ॥ गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥१॥ ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥ अहिनिसि निरमलु थानि सुथानु ॥ तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥२॥ साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥ अंमृतु गिआनु महा रसु भोगु ॥ पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥३॥ सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥४॥ ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ गुर बिनु पूरा कोइि न पावै ॥५॥ बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥६॥ जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥ भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ गलि फाही बउरा बउराना ॥७॥ बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥ सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ नानक गुर की चरणी लागे ॥८॥६॥ आसा महला १ ॥ गावहि गीते चीति अनीते ॥ राग सुणाइि कहावहि बीते ॥ बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥१॥ कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ गुरमुखि राम नामि तृपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥२॥ अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥ अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥३॥ निरंकार महि आकारु समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥४॥ जहाँ नामु मिलै तह जाउ ॥

गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे राता हरि गुण गाउ ॥५॥ गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ अंमृत नामु वसिआ सुखदाता ॥ अनदिनु बाणी नामे राता ॥६॥ मेरा प्रभु लाइे ता को लागै ॥ हउमै मारे सबदे जागै ॥ ऐथै एथै सदा सुखु आगै ॥७॥ मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥ मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥८॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ साधू जन संगति होइि निवासु ॥ किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥९॥ करि बीचारु आचारु पराता ॥ सतिगुर बचनी इेको जाता ॥ नानक राम नामि मनु राता ॥१०॥७॥ आसा महला १ ॥ मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ बन खंडि माइिआ मोहि हैराना ॥ इित उत जाहि काल के चापे ॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥१॥ बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥२॥ इिहु मनु करमा इिहु मनु धरमा ॥ इिहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ साकतु लोभी इिहु मनु मूड़ा ॥ गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥३॥ गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ गुरमुखि तृभवणि सोझी होई ॥ इिहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥ गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥४॥ मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ राम रसाइिणु गुरमुखि चाखै ॥ दरि घरि महली हरि पति राखै ॥५॥ इिहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ इिहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥ मारे पंच अपुनै वसि कीइे ॥ हउमै ग्रासि इिकतु थाइि कीइे ॥६॥ गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ गुरमुखि इिहु मनु भगती जागे ॥ अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ आतमु चीन्हि भइे निरंकारी ॥७॥ इिहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥ गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ अहिनिसि हरि जसु गुर परसादि ॥ घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥८॥ राम रसाइिणि इिहु मनु माता ॥ सरब रसाइिणु गुरमुखि जाता ॥ भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥ नानक हरि जन के दासनि दासा

॥६॥८॥ आसा महला १ ॥ तनु बिनसै धनु का को कहीऐ ॥ बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥ राम नाम धनु संगि सखाई ॥ अहिनिसि निरमलु हरि लिव लाई ॥१॥ राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥१॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥ दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥२॥ हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥ गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥३॥ अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥ हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥४॥ रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥ गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ आदि पुरख गुर दरस न देखहि ॥ विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥५॥ देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ तुम समसरि अवरु को नाही ॥६॥ जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ संत भगत की संगति रामु ॥ बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥ छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥७॥ ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ जो जनु राम नामि लिव जागै ॥ भगति वछलु भगता हरि संगि ॥ नानक मुकति भए हरि रंगि ॥८॥६॥ आसा महला १ इकतुकी ॥ गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥१॥ रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥१॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता संसारि ॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥२॥ बंधन करम धरम हउ कीआ ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥३॥ बंधन किरखी करहि किरसान ॥ हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥४॥ बंधन सउदा अणवीचारी ॥ तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥५॥ बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥ बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥६॥ बंधन बेदु बादु अहंकार ॥ बंधनि बिनसै मोह विकार ॥७॥ नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥८॥१०॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिन सिरि सोहनि पटीआ माँगी पाइ संधूरु ॥ से सिर काती मुन्नीअनि् गल विचि आवै धूड़ि ॥ महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलनि् हदूरि ॥१॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥१॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥२॥ इकु लखु लहनि् बहिठीआ लखु लहनि् खड़ीआ ॥ गरी छुहारे खाँदीआ माणनि् सेजड़ीआ ॥ तिन् गलि सिलका पाईआ तुटनि् मोतसरीआ ॥३॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिनी रखे रंगु लाइ ॥ दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥४॥ अगो दे जे चेतीऐ ताँ काइतु मिलै सजाइ ॥ साहाँ सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥५॥ इकना वखत खुआईअहि इकना् पूजा जाइ ॥ चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ रामु न कबहू चेतिए हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥६॥ इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ इकना् एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥७॥११॥

आसा महला १ ॥ कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥ कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥ कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥१॥ इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥ एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भाँई ॥१॥ रहाउ ॥ कहाँ सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥ कहाँ सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥२॥ इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥३॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु

सुणिआ धाइिआ ॥ थान मुकाम जले बिज मंद्र मुछि मुछि कुइिर रुलाइिआ ॥ कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइिआ ॥४॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥ एन्ी तुपक ताणि चलाई एन्ी हसति चिड़ाई ॥ जिन् की चीरी द्रगह पाटी तिन्ा मरणा भाई ॥५॥ इिक ह्निद्वाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ इिकन्ा पेरण सिर खुर पाटे इिकन्ा वासु मसाणी ॥ जिन् के बंके घरी न आइिआ तिन् किउ रैणि विहाणी ॥६॥ आपे करे कराइे करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइि रूआईऐ ॥ हुकमी हुकमि चलाइे विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥७॥१२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥ जैसे गोइिलि गोइिली तैसे संसारा ॥ कूड़ु कमावहि आद्मी बाँधहि घर बारा ॥१॥ जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥१॥ रहाउ ॥ नीत नीत घर बाँधीअहि जे रहणा होई ॥ पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥२॥ एही एही किआ करहु है होसी सोई ॥ तुम रोवहुगे एस नो तुम् कउ कउणु रोई ॥३॥ धंधा पिटिहु भाईहो तुम् कूड़ु कमावहु ॥ एहु न सुणई कत ही तुम् लोक सुणावहु ॥४॥ जिस ते सुता नानका जागाइे सोई ॥ जे घरु बूझै आपणा ताँ नीद् न होई ॥५॥ जे चलदा लै चलिआ किछु संपै नाले ॥ ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥६॥ वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥७॥ धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥ ताँ वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥८॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥९॥ जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥१०॥१३॥ आसा महला १ ॥ चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ी मैडा ॥ जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥१॥ दरु बीभा मै नीम्ि को कै करी सलामु ॥ हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ मै इिकु नामु न वीसरै साचे गुर

बुधि ॥२॥ जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥ गुर का सबदु न चीन्ही ततु सारु निरंतर ॥३॥ पंडित पाधे जोइसी नित पड़्हहि पुराणा ॥ अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥४॥ इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥ आपु न चीनहि तामसी काहे भइे उदासा ॥५॥ इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६॥ इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ नामु दानु इसनानु दृड़ु हरि भगति सु जागे ॥७॥ गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥ नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥८॥१४॥ आसा महला १ ॥ मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥१॥ तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥२॥ इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥ गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥३॥ कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥ मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥४॥ लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥५॥ दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥ अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥६॥ मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥७॥ हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ नानक नामु न वीसरै मथि अंमृतु पीआ ॥८॥१५॥ आसा महला १ ॥ चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥१॥ किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥ ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥ सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥२॥ मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥३॥ हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥ लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥४॥

हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥ हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥५॥ लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ ॥ लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥६॥ मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ ॥ ठगि मुठी कूड़िआर बंनि् चलाईऐ ॥७॥ साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ गुनहाँ बखसणहारु सबदु कमावही ॥८॥ नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ ॥९॥१६॥ आसा महला १ ॥ किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥१॥ जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ ॥ गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥२॥ सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥ आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥३॥ अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥ पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥४॥ आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले ॥ गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥५॥ जंमण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ ॥ आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥६॥ साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥ जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥७॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥८॥१७॥ आसा महला १ ॥ जिनी् नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥ मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥१॥ बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई ॥ गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी् इेको सेविआ पूरी मति भाई ॥ आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥२॥ साहिबु मेरा इेकु है अवरु नही भाई ॥ किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥३॥ गुर बिनु किनै न पाइए केती कहै कहाइे ॥ आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति दृड़ाइे ॥४॥ मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाइे ॥ बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाइे ॥५॥ जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥ ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥६॥

जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥ आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥७॥ गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराइे ॥ नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाइे ॥८॥१८॥ आसा महला १ ॥ रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥ वडै भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥१॥ मै एलगीआ एलगी हम छोरू थारे ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥२॥ साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई ॥ जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥३॥ आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥ गुरमुखि होइि निहालीऐ इिउ कीमति पाई ॥४॥ जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥ पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥५॥ मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाइे ॥ मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाइे ॥६॥ ता जगि आइिआ जाणीऐ साचै लिव लाइे ॥ गुर भेटे पारसु भइे जोती जोति मिलाइे ॥७॥ अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥ नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥८॥१९॥ आसा महला १ ॥ केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥ मै निधरिआ धर इेक तूं मै ताणु सताणा ॥१॥ नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥ आपु गइिआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥१॥ रहाउ ॥ हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु ॥ साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥२॥ अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥ ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥३॥ हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ खोटे ठवर न पाइिनी रले जूठानै ॥४॥ नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ ॥ खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥५॥ जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ इेको अंमृत बिरखु है फलु अंमृतु होई ॥६॥ अंमृत फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ तिन्ना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥७॥ हुकमि संजोगी आइिआ चलु सदा रजाई ॥ अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥८॥२०॥ आसा महला १ ॥ मनु रातउ हरि नाइि सचु वखाणिआ ॥ लोका दा

किआ जाइि जा तुधु भाणिआ ॥१॥ जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥ लाहा हरि गुण गाइि मिलै सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ सची तेरी कार देहि दइिआल तूं ॥ हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥२॥ दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥ भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥३॥ दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥ वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥४॥ सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइि ॥ मनहु छोडि विकार सचा सचु देइि ॥५॥ सचे सचा नेहु सचै लाइिआ ॥ आपे करे निआउ जो तिसु भाइिआ ॥६॥ सचे सची दाति देहि दइिआलु है ॥ तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥७॥ तूं उतमु हउ नीचु सेवकु काँढीआ ॥ नानक नदरि करेहु मिलै सचु वाँढीआ ॥८॥२१॥ आसा महला १ ॥ आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥१॥ बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥१॥ रहाउ ॥ आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ राम नामु धनु रासि देइि बिनसै भ्रमु कूरा ॥२॥ संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाइे ॥ आदि पुरखु अपरंपरा गुरमुखि हरि पाइे ॥३॥ नटूऐ साँगु बणाइिआ बाजी संसारा ॥ खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥४॥ हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥ सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥५॥ जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि नामु हमारै ॥ राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥६॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥ अंति सखाई पाइिआ जन मुकति दुआरा ॥७॥ जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥८॥२२॥

आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ 　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सासतु बेदु सिंमृति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ साखा तीनि मूलु मति रावै तूं ताँ सरब विडाणी ॥१॥ ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अंमृत बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी दास

तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥२॥ तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ करमु होवै ता परम पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥३॥ तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥४॥ नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥५॥ चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥६॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥७॥ तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥८॥१॥२३॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥ सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥१॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ जिनि ममता अगनि तृसना बुझाई ॥ सहजे माता हरि गुण गाई ॥२॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥३॥ गुर सेवा तपाँ सिरि तपु सारु ॥ हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ दरि साचै दीसै सचिआरु ॥४॥ गुर सेवा ते तृभवण सोझी होइ ॥ आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ साची बाणी महलु परापति होइ ॥५॥ गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ निरमल नामु रखै उरि धारे ॥ साची सोभा साचि दुआरे ॥६॥ से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ अनदिनु भगति सचु नामु दृड़ाए ॥ नामे उधरे कुल सबाए ॥७॥ नानकु साचु कहै वीचारु ॥ हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥ हरि भगती राते मोख दुआरु ॥८॥२॥२४॥ आसा महला ३ ॥ आसा आस करे सभु कोई ॥ हुकमै बूझै निरासा होई ॥ आसा विचि सुते कई लोई ॥ सो जागै जागावै सोई ॥१॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख

न जाई ॥ नामे तृसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ कलि कीरति सबदु पछानु ॥ इेहा भगति चूकै अभिमानु ॥ सतिगुरु सेविअै होवै परवानु ॥ जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥२॥ तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाइे ॥ करि किरपा नामु मंनि वसाइे ॥ इिहु सिरु दीजै आपु गवाइे ॥ हुकमै बूझे सदा सुखु पाइे ॥३॥ आपि करे तै आपि कराइे ॥ आपे गुरमुखि नामु वसाइे ॥ आपि भुलावै आपि मारगि पाइे ॥ सचै सबदि सचि समाइे ॥४॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥ मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥५॥ तीनि भवन महि इेका माइिआ ॥ मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ दृड़ाइिआ ॥ बहु करम कमावै दुखु सबाइिआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइिआ ॥६॥ अंमृतु मीठा सबदु वीचारि ॥ अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ सहजि अनंदि किरपा धारि ॥ नामि रते सदा सचि पिआरि ॥७॥ हरि जपि पड़ीअै गुर सबदु वीचारि ॥ हरि जपि पड़ीअै हउमै मारि ॥ हरि जपीअै भइि सचि पिआरि ॥ नानक नामु गुरमति उर धारि ॥८॥३॥२५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥ गुर ते साँति ऊपजै जिनि तृसना अगनि बुझाई ॥ गुर ते नामु पाईअै वडी वडिआई ॥१॥ इेको नामु चेति मेरे भाई ॥ जगतु जलम्दा देखि कै भजि पइे सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥ गुर ते घरु दरु पाइिआ भगती भरे भंडारा ॥२॥ गुरमुखि नामु धिआईअै बूझै वीचारा ॥ गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥३॥ गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ गुरमुखि हउमै मारीअै मनु निरमलु होई ॥४॥ सतिगुरि मिलिअै आपु गइिआ तृभवण सोझी पाई ॥ निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥५॥ पूरै गुरि समझाइिआ मति ऊतम होई ॥ अंतरु सीतलु साँति होइि नामे सुखु होई ॥६॥ पूरा सतिगुरु ताँ मिलै जाँ नदरि करेई ॥ किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न

होई ॥७॥ आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाइे ॥ नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाइे ॥८॥४॥२६॥ आसा महला ३ ॥ सुणि मन मंनि वसाइि तूं आपे आइि मिलै मेरे भाई ॥ अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥१॥ इेको नामु धिआइि तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥ हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ इिसु भगती नो सुरि नर मुनि जन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइि ॥ पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइि ॥२॥ आपै थै सभु रखिएनु किछु कहणु न जाई ॥ आपे देइि सु पाईअै गुरि बूझ बुझाई ॥३॥ जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ मंदा किस नो आखीअै जे दूजा होई ॥४॥ इिको हुकमु वरतदा इेका सिरि कारा ॥ आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥५॥ इिक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ भगति भी एना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥६॥ गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥ एइि भुलाइे किसै दे न भुलन्ी सचु जाणनि सोई ॥७॥ घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥ नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ी नामि हउमै मारी ॥८॥५॥२७॥ आसा महला ३ ॥ घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥ गुर परसादी पाईअै अंतरि कपट खुलाही ॥१॥ सतिगुर ते हरि पाईअै भाई ॥ अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का गाहकु होवै सो लइे पाइे रतनु वीचारा ॥ अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥२॥ अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ मन चिंदिआ फलु पाइिसी फिरि होइि न फेरा ॥३॥ पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥ नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥४॥ बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥ भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥५॥ घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ चोरै वाँगू पकड़ीअै बिनु नावै चोटा खाई ॥६॥ जिन्ी घरु जाता आपणा से सुखीइे भाई ॥ अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥७॥ आपे दानु करे किसु आखीअै आपे देइि बुझाई ॥ नानक नामु धिआइि तूं दरि सचै सोभा पाई ॥८॥६॥२८॥

आसा महला ३ ॥ आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥१॥ हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥ गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥२॥ नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥३॥ नामु सुणीऐ नामु मन्नीऐ नामे वडिआई ॥ नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥४॥ नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥५॥ बिनु नावै कोइ न मन्नीऐ मनमुखि पति गवाई ॥ जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥६॥ नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥ नामहु ही नामु मन्नीऐ नामे वडिआई ॥७॥ जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥ नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥८॥७॥२९॥ आसा महला ३ ॥ दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥ फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥१॥ इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥१॥ रहाउ ॥ सोहागणी आपि सवारीअनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥२॥ सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥३॥ गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥ सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥४॥ सोहागणी विचि रंगु रखिअनु सचै अलखि अपारि ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥५॥ सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥ प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥६॥ भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥ बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥७॥ हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥८॥८॥३०॥ आसा महला ३ ॥ सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ ऐथै घरि घरि जापदे आगै

जुगि जुगि परगटु होइ ॥१॥ इे मन रूड़े रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥ रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होइे निरमल जोति अपार ॥२॥ बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥ गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥३॥ भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥४॥ जिस नो आपे रंगे सु रपसी सतसंगति मिलाइ ॥ पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥५॥ बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥६॥ इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥ गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥७॥ सभना का दाता इेकु है सिरि धंधै लाइ ॥ नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लइे मिलाइ ॥८॥६॥३१॥ आसा महला ३ ॥ सभ नावै नो लोचदी जिसु कृपा करे सो पाइे ॥ बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाइे ॥१॥ तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि इेकु है बहु बिधि सृसटि उपाई ॥ हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥२॥ बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥ इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥३॥ इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाइे ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाइे ॥४॥ इकि कुचल कुचील विखली पते नावहु आपि खुआइे ॥ ना एन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताइे ॥५॥ नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाइे ॥ सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाइे ॥६॥ लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ॥ गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥७॥ इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥ नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥८॥१०॥३२॥ आसा महला ३ ॥ सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि ॥

घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥१॥ अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥ हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥२॥ जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥३॥ दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥ पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥४॥ सचा साहिबु इकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥५॥ सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥६॥ मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥ महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥७॥ सो पिरु मेरा इकु है इकसु सिउ लिव लाइ ॥ नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥८॥११॥३३॥ आसा महला ३ ॥ अंमृतु जिन्हा चखाइअनु रसु आइआ सहजि सुभाइ ॥ सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥१॥ अंमृतु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥ जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सु कमाहि ॥२॥ गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥३॥ गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उर धारि ॥४॥ जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥५॥ तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ सेज सुखाली पिरु रवै हउमै तृसना मारि ॥६॥ करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥ वरु पाइआ सोहागणी केवल इकु मुरारि ॥७॥ सभे गुनह बखसाइ लइअनु मेले मेलणहारि ॥ नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥८॥१२॥३४॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥

सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥१॥ इ मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥२॥ इ मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥३॥ सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥४॥ इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥५॥ जिनी नामु विसारिआ से मुइे मरि जाहि ॥ हरि रस सादु न आइए बिसटा माहि समाहि ॥६॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥ सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥७॥ बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अन्ना भरमाइ ॥ बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥८॥ जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ नानक नामु तिन्ना कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥९॥१३॥३५॥ आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥ विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥१॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ सफलु तिन्ना का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥२॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥३॥ आवहि इसु रासी के वापारीइे जिन्ना नामु पिआरा ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाइे तिन्ना अंतरि सबदु वीचारा ॥४॥ भगती सार न जाणन्ी मनमुख अह्मकारी ॥ धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥५॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥६॥ जिस नो भगति कराइे सो करे गुर सबद वीचारि ॥ हिरदै इको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥७॥ भगता की जति पति इको नामु है आपे लइे सवारि ॥ सदा सरणाई तिस की जिउ भावै

तिउ कारजु सारि ॥८॥ भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥६॥१४॥३६॥ आसा महला ३ ॥ अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ सतिगुरु पुरखु न भेटिए जि सची बूझ बुझाइ ॥१॥ इे मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥ अन रसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥२॥ आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥ गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥३॥ बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥ इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥४॥ दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥५॥ सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥६॥ मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ मनमुख मरि मरि जंमहि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥७॥ आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥८॥२२॥१५॥३७॥

आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ पंच मनाए पंच रुसाए ॥ पंच वसाए पंच गवाए ॥१॥ इन् बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥ साच धरम की करि दीनी वारि ॥ फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥२॥ नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥३॥ साँति सहज सुख के सभि हाट ॥ साह वापारी एकै थाट ॥४॥ जेजीआ डन्नु को लए न जगाति ॥ सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥५॥ वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥६॥ सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥७॥ सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ अबिचल नगरी नानक देव ॥८॥१॥

आसावरी महला ५ घरु ३

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ साधसंगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥१॥ मनु परदेसी आइआ मिलिए साध कै संगि ॥ जिसु वखर कउ चाहता सो पाइए नामहि रंगि ॥२॥ जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥३॥ सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥४॥ मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ इेकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥५॥ चरन कमल बोहिथ भइे लगि सागरु तरिए तेह ॥ भेटिए पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥६॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥७॥ सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अन्नद ॥ कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमान्नद ॥८॥१॥२॥

आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥१॥ जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥२॥ इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥३॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥४॥ कामु क्रोधु लोभु तजि गइे पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥५॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥६॥ हरि रसु जिन्ी चाखिआ पिआरे तृपति रहे आघाइ ॥७॥ अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥८॥१॥३॥ जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥१॥ सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥२॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥३॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥४॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥५॥ साची प्रीति

न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥६॥ जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥७॥ नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥८॥२॥४॥ सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥१॥ तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥२॥ सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥३॥ जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥४॥ दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥५॥ साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥६॥ एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥७॥ संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥८॥३॥२२॥१५॥२॥४२॥

रागु आसा महला १ पटी लिखी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ससै सोइ सृसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ॥१॥ मन काहे भूले मूड़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥ ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥ एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥२॥ ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥ सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥३॥ ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥ सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥४॥ ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥५॥ खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥६॥ गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ घड़ि भाँडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥७॥ घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥ बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥८॥ चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु

आपि थीआ ॥६॥ छछै छाइिआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ भरमु उपाइि भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्‍ गुरू मिलिआ ॥१०॥ जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥ इेको लेवै इेको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥११॥ झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥ दे दे वेखै हुकमु चलाइे जिउ जीआ का रिजकु पइिआ ॥१२॥ ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ इेको रवि रहिआ सभ थाई इेकु वसिआ मन माही ॥१३॥ टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥१४॥ ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्‍ का चितु लागा ॥ चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइिआ ॥१५॥ डडै डंफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥१६॥ ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ करि करि वेखै हुकमु चलाइे तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥१७॥ णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥ आपे आपि मिलाइे करता पुनरपि जनमु न होई ॥१८॥ ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइिआ ॥ ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइिआ ॥१६॥ थथै थानि थान्नतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥ किआ भरमु किआ माइिआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥२०॥ ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥ जो मै कीआ सो मै पाइिआ दोसु न दीजै अवर जना ॥२१॥ धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥ तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइिआ ॥२२॥ न्‍नै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संम्‍हलिआ ॥ गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ ॥२३॥ पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥२४॥ फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइिआ ॥ गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइिआ ॥२५॥ बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा

॥ जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥२६॥ भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन् कउ भउ पइआ ॥ मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥२७॥ मंमै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मंमा अखरु वीसरिआ ॥२८॥ ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥ गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि इको जाणै ॥२९॥ रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीड़े जंता ॥ जंत उपाइ धंधै सभ लाइे करमु होआ तिन नामु लइआ ॥३०॥ ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥ खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥३१॥ ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥ वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥३२॥ ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥ तिसहि धिआवहु सचि समावहु एसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥३३॥ हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ हरि नामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥३४॥ आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ करे कराइे सभ किछु जाणै नानक साइिर इव कहिआ ॥३५॥१॥

राग आसा महला ३ पटी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अयो अंङै सभु जगु आइआ काखै घंङै कालु भइआ ॥ रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥१॥ मन अैसा लेखा तूं की पड़िआ ॥ लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सिधंङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥ छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥२॥ बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥ अणहोदा नाउ धराइिए पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥३॥ जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥ इेकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥४॥ तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न

सिखालि बिखिआ ॥ पहिला फाहा पइिआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥५॥ ससै संजमु गइिए मूड़े इेकु दानु तुधु कुथाइि लइिआ ॥ साई पुत्री जजमान की सा तेरी इेतु धानि खाधै तेरा जनमु गइिआ ॥६॥ मंमै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइिआ ॥ अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइिआ का मुहताजु भइिआ ॥७॥ ककै कामि क्रोधि भरमिएहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥८॥ ततै तामसि जलिएहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥ घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइिआ ॥९॥ पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥ सचै आपि खुआइिएहु मूड़े इिहु सिरि तेरै लेखु पइिआ ॥१०॥ भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइिआ विचि गलतानु भइिआ ॥ गुर परसादी इेको जाणै इेक घड़ी महि पारि पइिआ ॥११॥ ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥ इेह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइिआ ॥१२॥ झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥ सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥१३॥ धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइिआ ॥ गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइिआ ॥१४॥ गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइिआ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाइि मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइिआ ॥१५॥ हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥ मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥१६॥ रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥ गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥१७॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥ नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥१८॥१॥२॥

रागु आसा महला १ छंत घरु १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ मुंध जोबनि बालड़ीइे मेरा पिरु रलीआला राम ॥ धन पिर नेहु घणा

रसि प्रीति दड़िआला राम ॥ धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अंमृत भरे ॥ करि दड़िआ मड़िआ दड़िआल साचे सबदि मिलि गुण गावए ॥ नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि एमाहए ॥१॥ मुंध सहजि सलोनड़ीहे इक प्रेम बिन्नती राम ॥ मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ प्रभ प्रेमि राती हरि बिन्नती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजड़े ॥ नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजड़े ॥२॥ सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥ हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥ इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारड़े ॥ नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारड़े ॥३॥ हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावड़े ॥ तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अंमृत फलु पावड़े ॥ बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥४॥१॥ आसा महला १ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥ अनदिनु राता मनु बैरागी सुन्न मंडलि घरु पाइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥१॥ तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ॥ सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥ सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥ तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥२॥ गुरु सागरो

रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥ करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥ निरमल जलि न्हाइे जा प्रभ भाइे पंच मिले वीचारे ॥ कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ हउमै लोभ लहरि लब थाके पाइे दीन दइिआला ॥ नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥३॥ हउ बनु बनो देखि रही तृणु देखि सबाइिआ राम ॥ तृभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइिआ राम ॥ तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥४॥२॥ आसा महला १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ सचु साहिबो आदि पुरखु अपरंपरो धारे राम ॥ अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥ आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईअै ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईअै ॥१॥ मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ हउमै ममता माइिआ संगि न जाई राम ॥ माता पित भाई सुत चतुराई संगि न संपै नारे ॥ साइिर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइिआ जह देखा तह सोई ॥ नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइि सु होई ॥२॥ मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥ अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥ आवणु जावणु ठाकि रहाइे गुरमुखि ततु वीचारो ॥ साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु रतनु परगासिआ अैसी गुरमति पाई ॥३॥ सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो दाता राम ॥ जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइिआ ॥ साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइिआ ॥ हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥४॥३॥

रागु आसा महला १ छंत घरु २

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥ कोट कोटंतर पापा केरे इेक घड़ी महि खोवै ॥ ह्मस सि ह्मसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥१॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जंमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥२॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥ हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु इेकु पछाणै ॥ एहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥३॥ नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥४॥१॥४॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छंत घरु ३ ॥ तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥ बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापइे ॥

एहु जेव साइिर देइि लहरी बिजुल जिवै चमकइे ॥ हरि बाझु राखा कोइि नाही सोइि तुझहि बिसारिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥१॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥ मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातए ॥ सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातए ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥२॥ मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥ साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ मछुली विछुन्नी नैण रुन्नी जालु बधिकि पाइिआ ॥ संसारु माइिआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइिआ ॥ भगति करि चितु लाइि हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥३॥ नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥ जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥ बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥ सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥४॥१॥५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु १ ॥ हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइिआ राम ॥ धन पिर मेलु भइिआ प्रभि आपि मिलाइिआ राम ॥ प्रभि आपि मिलाइिआ सचु मंनि वसाइिआ कामणि सहजे माती ॥ गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ आपु गवाइे हरि वरु पाइे ता हरि रसु मंनि वसाइिआ ॥ कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइिआ ॥१॥ दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाइे राम ॥ कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाइे राम ॥ बिरथा जनमु गवाइे मनमुखि इिआणी अउगणवंती झूरे ॥ आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइिआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥ देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाइे ॥ नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी

मिलि प्रीतम सुखु पाइे ॥२॥ पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥ अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥ सबदि तपति बुझाई अंतरि साँति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥ नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥३॥ सा धन मनि अनदु भइिआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥ सा धन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥ सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥ जितु घरि नामु हरि सदा धिआईअै सोहिलड़ा जुग चारे ॥ नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥४॥१॥६॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥ साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥ गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावइे ॥ आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवइे ॥ भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावइे ॥ कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावइे ॥१॥ मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥ हरि सोहिला तिन् सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणइे ॥ जलि थलि महीअलि इेको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणइे ॥ जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावइे ॥ इिव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावइे ॥२॥ जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ मन सिआणप छोडीअै गुर का सबदु समाले ॥ साथि तेरै सो सहु सदा है इिकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ॥ साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ इिउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥३॥ सतिगुर मिलिअै धावतु थंमि्आ निज घरि वसिआ आइे ॥ नामु विहाझे नामु लइे नामि रहे समाइे ॥

धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ तिथै अंमृत भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ ॥ तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाइ ॥ इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आइ ॥४॥ मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ मूलु पछाणहि ताँ सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ गुर परसादी इको जाणहि ताँ दूजा भाउ न होई ॥ मनि साँति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥५॥ मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥ अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥ इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥६॥ मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥ सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥७॥ धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ महा अनन्दु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥ सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥ से जन परवाणु होए जिन्ही इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ इउ कहै नानकु धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥८॥ इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए ॥ दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए ॥ तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥ तिन की गति अवगति तूंहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥ हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥ इउ कहै

नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाइे ॥६॥ सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥ इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥१०॥२॥७॥५॥२॥७॥

राग़ु आसा छंत महला ४ घरु १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ जीवनो मै जीवनु पाइिआ गुरमुखि भाइे राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाइे राम ॥ हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाइे सभु संसा दूखु गवाइिआ ॥ अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइिआ पवित्र परम पदु पाइिआ ॥ अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥ नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥१॥ मनमुखा मनमुखि मुइे मेरी करि माइिआ राम ॥ खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइिआ राम ॥ लाइिआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुंभ दिखाइिआ ॥ खिनु पूरबि खिनु पछमि छाइे जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइिआ ॥ दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥२॥ मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥ हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुन्ने सुंनि समावै ॥ वणजारे इिक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥ नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाइे ॥३॥ रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम ॥ बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम ॥ गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥ हरि हरि नामु अतोलकु पाइिआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥ समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इिक वसतु अनूप दिखाई ॥ गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥४॥१॥८॥ आसा महला ४ ॥ झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अंमृत धारा राम ॥

गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥ कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥१॥ रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ रविआ रामु हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आइे ॥ लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाइे ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाइे ॥ आपि कृपालु कृपा करि देवै नानक गुर सरणाइे ॥२॥ बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाइे राम ॥ रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआइे राम ॥ राम नामु धिआइे पवितु होइि आइे तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ तृसना भूख गवाई ॥ मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥३॥ जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥ तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइिआ लागी राम ॥ माइिआ मलु लागी मूड़ भइे अभागी जिन राम नामु नह भाइिआ ॥ अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइिआ ॥ महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआइिआ ता पाइे मोख दुआरा ॥४॥ रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ इिहु मनूआ खिनु ऊभ पइिआली भरमदा इिकतु घरि आणै राम ॥ मनु इिकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाइे ॥ जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराइे ॥ रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइिआ ॥ नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइिआ ॥५॥ जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइिआ राम ॥ सभि अरथा सभि धरम मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइिआ राम ॥ मन चिंदिआ फलु पाइिआ राम नामु धिआइिआ राम नाम गुण गाइे ॥ दुरमति कबुधि गई सुधि

होई राम नामि मनु लाइे ॥ सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥ नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥६॥ जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइिआ राम ॥ जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइिआ राम ॥ राम नामु मनि भाइिआ परम सुखु पाइिआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥ राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई ॥ राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥७॥ रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥ सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइिआ राम ॥ मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइि मिलाइे ॥ दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाइे ॥ गुरू सिखु सिखु गुरू है इेको गुर उपदेसु चलाइे ॥ राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाइे ॥८॥२॥६॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा छंत महला ४ घरु २ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ हरि सेवा भाई परम गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ हरि ऊतमु कामु जपीअै हरि नामु हरि जपीअै असथिरु होवै ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीअै आतम रामु जीउ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥१॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीअै सतिगुर भाइि जीउ ॥ गुरमुखि हरि पड़ीअै गुरमुखि हरि सुणीअै हरि जपत सुणत दुखु जाइि जीउ ॥ हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरि नामु परम सुखु पाइिआ ॥ सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइिआ ॥ हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइि जीउ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीअै सतिगुर भाइि जीउ ॥२॥ हरि हरि मनि भाइिआ परम सुख पाइिआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥

आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइिआ ॥ जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइिआ ॥ जिन हरि धिआइिआ धुरि भाग लिखि पाइिआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ हरि हरि मनि भाइिआ परम सुख पाइिआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥३॥ जिन् हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥ हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइिआ ॥ से धन्नु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइिआ ॥ जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ जिन् हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥४॥३॥१०॥ आसा महला ४ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु इेको दूजा अवरु न कोई ॥ हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥१॥ तेता जुगु आइिआ अंतरि जोरु पाइिआ जतु संजम करम कमाइि जीउ ॥ पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइि जीउ ॥ मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइिआ ॥ अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइिआ ॥ हरि हरि कृपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइि जीउ ॥ तेता जुगु आइिआ अंतरि जोरु पाइिआ जतु संजम करम कमाइि जीउ ॥२॥ जुगु दुआपुरु आइिआ भरमि भरमाइिआ हरि गोपी कानु उपाइि जीउ ॥ तपु तापन तापहि जग पुन्न आरंभहि अति किरिआ करम कमाइि जीउ ॥ किरिआ करम कमाइिआ पग दुइि खिसकाइिआ दुइि पग टिकै टिकाइि जीउ ॥ महा जुध जोध बहु कीन्े विचि हउमै पचै पचाइि जीउ ॥ दीन दइिआलि गुरु साधु मिलाइिआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइि जीउ ॥ जुगु दुआपुरु आइिआ भरमि भरमाइिआ हरि गोपी

कानु उपाइ जीउ ॥३॥ कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि साँति पाइ जीउ ॥ हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥ जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥४॥४॥११॥ आसा महला ४ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥ धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥ जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥१॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ तिन् हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥ गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥ सभ इेक दृसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥२॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥ अवरु न कोइ हरि अंमृतु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ धनु धन्नु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥ नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥३॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बाँह प्रभू पकराइ जीउ ॥ प्रभि बाँह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु

लागा ॥ हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइि जीउ ॥ हरि दइिआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइि जीउ ॥४॥५॥१२॥ आसा महला ४ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ जो जन मरि जीवे तिन् अंमृतु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥ मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥ जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥ मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥१॥ जगि मरणु न भाइिआ नित आपु लुकाइिआ मत जमु पकरै लै जाइि जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु इेको इिहु जीअड़ा रखिआ न जाइि जीउ ॥ किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइि जीउ ॥ मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइि जीउ ॥ जिस की वसतु प्रभु लइे सुआमी जन उबरे सबदु कमाइि जीउ ॥ जगि मरणु न भाइिआ नित आपु लुकाइिआ मत जमु पकरै लै जाइि जीउ ॥२॥ धुरि मरणु लिखाइिआ गुरमुखि सोहाइिआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥ हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइिआ ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइिआ ॥ हरि जन प्रभु रलि इेको होइे हरि जन प्रभु इेक समानि जीउ ॥ धुरि मरणु लिखाइिआ गुरमुखि सोहाइिआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥३॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइि जीउ ॥ गुरु मंत्रु दृड़ाइे हरि रसकि रसाइे हरि अंमृतु हरि मुखि चोइि जीउ ॥ हरि अंमृत रसु पाइिआ मुआ जीवाइिआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥ हरि हरि नामु अमर पदु पाइिआ हरि नामि समावै सोई ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइि जीउ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइि जीउ ॥४॥६॥१३॥

आसा महला ४ छंत ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ गोविंदु अलख अपारु अपरंपरु आपु आपणा जाणै ॥ किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥१॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥२॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ हरि हरि प्रभु इको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ हरि सभ महि रविआ इको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥३॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ सभ सबदि समावै जाँ तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥ तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥४॥७॥१४॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥ हरि अंमृत भिन्ने लोइणा मनु प्रेमि रतन्ना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविन्ना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिन्ना ॥

जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धन्ना ॥१॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥३॥ दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥ पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुन्ने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिन्ने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मन्ने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥३॥ गुर अंमृत भिन्नी देहुरी अंमृतु बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंमृति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥४॥९॥१६॥ आसा महला ४ ॥ हरि अंमृत भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धन्नु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥ सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भाँडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भाँडे

विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति इेहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आइे राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाइे ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाइे ॥ जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाइे ॥४॥१०॥१७॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥ जिनी अैसा हरि नामु न चेतिए से काहे जगि आइे राम राजे ॥ इिहु माणस जनमु दुलम्भु है नाम बिना बिरथा सभु जाइे ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिए अगै भुखा किआ खाइे ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाइे ॥२॥ तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाइे राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाइे ॥ जिन् तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाइे ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराइे ॥३॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइि किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥ आसा महला ४ ॥ जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥ जिथै जाइि बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिखा की घाल थाइि पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन् नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥ गुरसिखा मनि हरि

प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुन्नु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुन्न केरी ॥३॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१९॥ आसा महला ४ ॥ जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु दृड़ावै राम राजे ॥ तिस की तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥२॥ जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥ हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥

आसा महला ४ छंत घरु ५

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥ १॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ मनि तृसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥२॥

पिर रतिअड़े मैडे लोइिण मेरे पिआरे चातृक बूंद जिवै ॥ मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥ तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥३॥ चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आँगणि धूड़ि लुते ॥ मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइि नैन जुते ॥ गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥४॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइिआ ॥ हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइिआ ॥५॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ गुरु नानकु पाइिआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥६॥१४॥२१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥ अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥ हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइिआ ॥ गृहु वसि आइिआ मंगलु गाइिआ पंच दुसट एइि भागि गइिआ ॥ सीतल आघाणे अंमृत बाणे साजन संत बसीठा ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥१॥ सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥ आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥ अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥२॥ नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ सभु किछु मै सभु किछु पाइिआ नामु धिआई राम ॥ नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥३॥ सरसिअड़े

सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥ बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥ गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥ पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ कहु नानक जाँ वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥४॥१ ॥ आसा महला ५ ॥ अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥ जपि इकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥ बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥१॥ हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥ वडभागी वडभागी सतसंगति पाई राम ॥ वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै ॥ करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥२॥ हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥ घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥३॥ बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥ हरि धूड़ी न्हाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥ मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा ॥ बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥४॥२॥

आसा छंत महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥ मिलि संतसंगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ हरि घटि घटे डीठा अंमृतो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ गुण निधि गाइआ

सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ पृउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥ हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥१॥ जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीइे लड़ि लाइे ॥ हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाइे ॥ प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥२॥ चातृकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥ सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥ हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥ प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥ चातृकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥३॥ मिले नराइिण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ ढाठी भीति भरंम की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥ पूरन गुर पाइे पुरबि लिखाइे सभ निधि दीन दइिआला ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥ सूख सहज आन्नद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ हरि मिले नराइिण नानका मानोरथो पूरा ॥४॥१॥३॥

आसा महला ५ छंत घरु ६

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ जा कउ भइे कृपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन् राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥ छंतु ॥ जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥ अब उरझिए अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥ जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साधसंगि न डरपीऐ ॥ करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे ॥ कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥१॥ जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा

नेहु करेहु ॥ जैसी चातृक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ गुर सुप्रसन्ने मिलु नाह विछुन्ने धन देदी साचु सनेहा ॥ कहु नानक छंत अन्नत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥२॥ चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥ कोकिल अंब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥ हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ अब किआ रंगु लाइिए मोहु रचाइिए नागे आवण जावणिआ ॥ थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥ कहु नानक छंत दइिआल पुरख के मन हरि लाइि परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥३॥ निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥ पिरु अपना पाइिआ रंगु लालु बणाइिआ अति मिलिए मित्र चिराणे ॥ गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ कहु नानक छंत दइिआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥४॥१॥४॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ नानक भेटे साध जब हरि पाइिआ मन माहि ॥१॥ छंत ॥ जा कउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥ ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥ जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥ करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥ मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥ दइिआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइि गते ॥१॥ कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥ चाहहि तुझहि दइिआर मनि तनि रुच अपार ॥ अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥ सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किन्नर गुण भनी ॥ कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥ अनाथ नाथ दइिआल नानक साधसंगति मिलि उधार ॥२॥ कोटि देवी जा कउ

सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥ गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावइे ॥ सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवइे ॥ सिमृति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥३॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा ॥ सरब जाचिक इेकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ वसि भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ इिहु दानु मानु नानकु पाइे सीसु साधह धरि चरनी ॥४॥२॥५॥ आसा महला ५ ॥ सलोक ॥ उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइि ॥ नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइि ॥१॥ छंतु ॥ नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥ दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइि सो प्रभु मनि मुखी ॥ कृपाल दइिआल रसाल गुण निधि करि दइिआ सेवा लाईऐ ॥ नानकु पइिअंपै चरण जंपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥१॥ पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥ गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ ॥ इिक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना ॥ नानकु पइिअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥२॥ एट गही गोपाल दइिआल कृपा निधे ॥ मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ हरि चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे ॥ सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥ नानकु पइिअंपै चरन जंपै एट गही गोपाल दइिआल कृपा निधे ॥३॥ भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइिआ ॥ जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइिआ ॥ प्रभि आपि लीइे समाइि सहजि सुभाइि भगत कारज सारिआ ॥ आन्नद हरि जस महा मंगल सरब

दूख विसारिआ ॥ चमतकार प्रगासु दह दिस इेकु तह दृसटाइिआ ॥ नानकु पइिअंपै चरण जंपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइिआ ॥४॥३॥६॥ आसा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न जावइे ॥ जा कै गृहि हरि नाहु सु सद ही रावइे ॥ अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ प्रानपति गति मति जा ते पृअ प्रीति प्रीतमु भावइे ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावइे ॥१॥ जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥ सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥ सरब सिधि नव निधि तितु गृहि नही ऊना सभु कछू ॥ मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥२॥ आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ ॥ तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ ॥ सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥ करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥३॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइिआ ॥ ता की पूरन आस जिन्ह साधसंगु पाइिआ ॥ साधसंगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥ मनि साँति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइिआ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइिआ ॥४॥४॥७॥ आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जमकालु ॥ नानक मनु तनु सुखी होइि अंते मिलै गोपालु ॥१॥ छंत ॥ मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइिआ ॥ कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइिआ ॥ समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ इेहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥

१॥ अपराधी मतिहीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥ सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥ मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवई ॥ बनिता बिनोद अनन्द माइआ अगिआनता लपटावई ॥ खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥ बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥२॥ भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ लपटि रहिए तिह संगि मीठे भोग सोन ॥ भ्रमत भार अगनत आइए बहु प्रदेसह धाइए ॥ अब एट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइए ॥ राखनहारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥ सूख सहज आन्नद नानक कृपा तेरी तरै भउन ॥३॥ नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥ जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥ सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥ बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥४॥५॥८॥ आसा महला ५ ॥ पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥ निरभउ भइे परान चिंता सगल लही ॥ मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥ गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ प्रभ इेक अनिक अलख ठाकुर एट नानक तिसु गही ॥१॥ अंमृत बनु संसारु सहाई आपि भइे ॥ राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गइे ॥ गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥ अगनि सागर भइे सीतल साध अंचल गहि रहे ॥ गोविंद गुपाल दइिआल संमृथ बोलि साधू हरि जै जइे ॥ नानक नामु धिआइ पूरन साधसंगि पाई परम गते ॥२॥ जह देखउ तह संगि इेको रवि रहिआ ॥ घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ आदि अंते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥ ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि इेकु नानक रवि रहिआ ॥३॥ दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत

नामु हरे ॥ चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥ मिलि साधसंगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ हरि देखि दरसनु इछ पुन्नी कुल संबूहा सभि तरे ॥ दिनसु रैणि अन्नद अनदिनु सिमरंत नानक हरि हरे ॥४॥६॥९॥

आसा महला ५ छंत घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥१॥ छंत ॥ भिन्नी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥ राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥ तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥१॥ मेरी सेजड़ीऐ आडंबरु बणिआ ॥ मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥ अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आन्नद रसु बणिआ ॥२॥ मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥ रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥ भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥३॥ सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥ साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥ सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥ हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ सुभ दिवस आइे सहजि पाइे सगल निधि प्रभ पागे ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥४॥१॥१०॥ आसा महला ५ ॥ उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइिआ ॥ मुहलति पुन्नड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइिआ ॥ कूड़े लुभाइिआ धोहु माइिआ करहि पाप अमितिआ ॥ तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ

॥ मालु जोबनु छोडि वैसी रहिए पैनणु खाइआ ॥ नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥१॥ फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ हरिचंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥ लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥ नानक मृग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥२॥ मिठै मखु मुआ किउ लए एडारी ॥ हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥३॥ हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥ कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ साधसंगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी ॥ नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥४॥२॥११॥

आसा महला ५ ॥ वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥ रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥ संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥ सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥ बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ दृसटि सिंचंती ॥ बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥१॥ नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साधसंगि वखाणिआ ॥ आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥ मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥ बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥२॥ नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥ जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ धरम धीरज सहज सुखीए साधसंगति हरि भजे ॥ करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण ॥ बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस

पुजाइण ॥३॥ निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥ गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥ साधसंगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥४॥३॥१२॥ आसा महला ५ ॥ दिनु राति कमाइअड़ो सो आइए माथै ॥ जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥ संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥ सुकृतु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥ भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥१॥ वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥ दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु इेकु करणैहारा ॥२॥ खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥ कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥ संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही इेकु धिआइआ ॥ तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥३॥ पेखु हरिचंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥ माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥ हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ हरि इेक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु इेकु करि मन माही ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥४॥४॥१३॥

आसा महला ५ छंत घरु ८

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे गृह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥ दिन

खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणा पते ॥ जनम मरण अनेक बीते पृअ संग बिनु कछु नह गते ॥ कुल रूप धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ कर जोड़ि नानकु सरणि आइिए पृअ नाथ नरहर करहु गात ॥१॥ मीना जलहीन मीना जलहीन हे एहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु पृअ बिनु होत ॥ सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान हे मृग अरपे मन तन प्रान हे एहु बेधिए सहज सरोत ॥ पृअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना ॥ पलका न लागै पृअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥ स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥ करि मइिआ दइिआ दइिआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥२॥ अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥ चातृक चित पिआस चातृक चित पिआस हे घन बूंद बचितृ मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥ तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु दृसटि धारत मिटत पाप ॥ नानकु जंपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥३॥ चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥ हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोह्मतीआ ॥ प्रभ दृसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भइे हान ॥ बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥४॥१॥१४॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि

॥ आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥ सलोकु मः १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीइे करत न लागी

वार ॥१॥ महला २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ इते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥ मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजिए आपीन्है रचिए नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥ सलोकु मः १ ॥ सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥१॥ मः १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥ महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लइे इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लइे इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ इेव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ एथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गइे हारि गइे सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥ सलोक मः १ ॥ विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ विसमादु नागे फिरहि

जंत ॥ विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥ मः १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्णु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपीनै् भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥ सलोक मः १ ॥ भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरंकारु सचु इकु ॥१॥ मः १ ॥ नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका

से तन होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ इहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥ सलोक मः १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥ मः १ ॥ वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥ सलोक मः १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि

धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ एइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अन्नदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥ मः १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भाँडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइए बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिएनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु इहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥ सलोक मः १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुन्न वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ सेव कीती

संतोखीइंी जिन्ी सचो सचु धिआइिआ ॥ एन्ी मंदै पैरु न रखिए करि सुकृतु धरमु कमाइिआ ॥ एन्ी दुनीआ तोड़े बंधना अन्नु पाणी थोड़ा खाइिआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइिआ ॥ वडिआई वडा पाइिआ ॥७॥ सलोक मः १ ॥ पुरखाँ बिरखाँ तीरथाँ तटाँ मेघाँ खेताँह ॥ दीपाँ लोआँ मंडलाँ खंडाँ वरभंडाँह ॥ अंडज जेरज उतभुजाँ खाणी सेतजाँह ॥ सो मिति जाणै नानका सराँ मेराँ जंताह ॥ नानक जंत उपाइि कै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइिआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥ मः १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुन्ना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथाँ सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु इेकु तूं जिनि सचो सचु वरताइिआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ी सचु कमाइिआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइिआ जिन् कै हिरदै सचु वसाइिआ ॥ मूरख सचु न जाणन्ी मनमुखी जनमु गवाइिआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइिआ ॥८॥ सलोकु मः १ ॥ पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इिक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥ मः १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ अन्नु न खाइिआ सादु गवाइिआ ॥ बहु दुखु पाइिआ दूजा भाइिआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अंधै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइि न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अंधु न

जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो सुखु पाइे ॥ हरि का नामु मंनि वसाइे ॥ नानक नदरि करे सो पाइे ॥ आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाइे ॥२॥ पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ी धावदे ॥ इिकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइिदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइिदे ॥ तिन् मंगा जि तुझै धिआइिदे ॥ ९॥ सलोकु मः १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइिना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्णहारु ॥ कूड़ु काइिआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होइे खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥ मः १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइि ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइि ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाइे मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइिआ साधि कै विचि देइि करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइि ॥ दइिआ जाणै जीअ की किछु पुन्नु दानु करेइि ॥ सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइि दारू पाप कढै धोइि ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइि इिक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्ा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥ सलोकु मः १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गइे अब किउ उगवै दालि ॥ जे इिकु होइि त उगवै रुती हू रुति होइि ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइि ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइि ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइि न कोइि ॥१॥ मः १ ॥ लबु पापु दुइि राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि

बहि करे बीचारु ॥ अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥ मः १ ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥ सलोकु मः १ ॥ दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥ मः २ ॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा कृतह ॥ सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥ मः २ ॥ एक कृसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥ मः १ ॥ कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥ पउड़ी ॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु

अगै मारीअै ॥१२॥ सलोकु मः १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ मः १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइअै पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह कृसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिअै खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥ सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीअै निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइअै किआ थीअै जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥ मः १ ॥ पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥ पउड़ी ॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम

कीड़े मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ न्नगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥ सलोकु मः १ ॥ दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ इेहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना इेहु तुटै ना मलु लगै ना इेहु जलै न जाइ ॥ धन्नु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ एहु मुआ एहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥ मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥ मः १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥ मः १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका इेहु विडाणु ॥ मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥ सलोक मः १ ॥ गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछाँ खाई ॥ अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥ मः १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भि आवहि एई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत

कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अन्नु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥ सलोकु मः १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी इेह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥ मः १ ॥ जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे इेहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥ सलोकु मः १ ॥ जे करि सूतकु मन्नीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अन्न के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु इेव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥१॥ मः १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर तृअ पर धन रूपु ॥ कन्नी सूतकु कंनि पै लाइितबारी खाहि ॥ नानक ह्मसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥ मः १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवित्र है दितोनु रिजकु संबाहि ॥ नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ

तिन्हा सूतकु नाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥ सलोकु मः १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिएनु कोइ न भिटिए जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु इहु लगा दोखु ॥ अन्नु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥ मः १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥ सलोकु मः १ ॥ नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥ मः १ ॥ अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥

२॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीए कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥ सलोकु महला २ ॥ इेह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु काँढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मन्ने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु इेहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा मूलि न कीचई दे लम्मी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥ सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाइे सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाइे मानु ॥ नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥ महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगै अंमृतु वेखहु इेहु निआउ ॥२॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥ महला २ ॥ होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिस नो अगली एहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाइे अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥ सलोकु महला २ ॥ इेह

किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥ महला २ ॥ इेह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ी हरि ता के पारावार ॥ आपि कराइे साखती फिरि आपि कराइे मार ॥ इिकन्ा गली जंजीरीआ इिकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराइे करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥ सलोकु मः १ ॥ आपे भाँडे साजिअनु आपे पूरणु देइि ॥ इिकन्ी दुधु समाईऐ इिकि चुल्है रहन्ि चड़े ॥ इिकि निहाली पै सवन्ि इिकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिन्ा सवारे नानका जिन् कउ नदरि करे ॥१॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जंत उपाइि कै देखै थापि उथापि ॥ किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥ पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइि ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिन्नै पाइि ॥ नानक इेकी बाहरी होर दूजी नाही जाइि ॥ सो करे जि तिसै रजाइि ॥२४॥१॥ सुधु

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

रागु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ आसा स्री कबीर जीउ ॥ गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइिआ ॥ कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइिआ ॥१॥ देव करहु दइिआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥ जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥१॥ रहाउ ॥ माइिआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥ आपा पदु निरबाणु न चीन्िआ इिन बिधि अभिउ न चूके ॥२॥ कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥३॥ जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुंभु बिगराना ॥ कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानाँ

॥४॥१॥ आसा ॥ गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥ गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥ एहि हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥१॥ ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥ डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥१॥ रहाउ ॥ बासन माँजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥२॥ एहि पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुटंब डुबावहि ॥३॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥ कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥४॥२॥ आसा ॥ बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ सेज सुखाली मुखि अंमृतु दीन्हा ॥ तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ आगै गइआ न बाजी हारी ॥१॥ मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥१॥ रहाउ ॥ बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥ पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ पंच मारि पावा तलि दीने ॥ हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥२॥ पिता हमारो वड गोसाई ॥ तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥३॥ हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥ इकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ कहु कबीर जनि इको बूझिआ ॥ गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥४॥३॥ आसा ॥ इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥ १॥ नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥ किनहि बिबेकी काटी तूं ॥१॥ रहाउ ॥ सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥ सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥२॥ हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ एहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥३॥ नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥४॥४॥ आसा ॥ जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥ लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥ १॥ ता ते सेवीअले रामना ॥ रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥१॥ रहाउ ॥ आगम निरगम

जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥२॥ राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥ पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥३॥ बेद पुरान सिंमृति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥ आसा ॥ फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥१॥ राजा राम ककरीआ बरे पकाइे ॥ किनै बूझनहारै खाइे ॥१॥ रहाउ ॥ बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥२॥ बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइिने मंडप छाइे ॥ रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाइे ॥३॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइिआ ॥ कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइिआ ॥४॥६॥ आसा ॥ बटूआ इेकु बहतरि आधारी इेको जिसहि दुआरा ॥ नवै खंड की पृथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥१॥ अैसा जोगी नउ निधि पावै ॥ तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥१॥ रहाउ ॥ खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥२॥ दइिआ फाहुरी काइिआ करि धूई दृसटि की अगनि जलावै ॥ तिस का भाउ लइे रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥३॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ कहु कबीर जे किरपा धारै देइि सचा नीसाना ॥४॥७॥ आसा ॥ ह्मिदू तुरक कहा ते आइे किनि इेह राह चलाई ॥ दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥१॥ काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ पड्हत गुनत अैसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥१॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुन्नति करीअै मै न बदउगा भाई ॥ जउ रे खुदाइि मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥२॥ सुन्नति कीइे तुरकु जे होइिगा अउरत का किआ करीअै ॥ अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते ह्मिदू ही रहीअै ॥३॥ छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥४॥८॥ आसा ॥ जब लगु

तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सून्ना मंदरु होई ॥१॥ रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥ तूं राम नामु जपि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥२॥ देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गड़े भाई ॥ लट छिटकाइे तिरीआ रोवै ह्मसु इकेला जाई ॥३॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥४॥९॥ दुतुके

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥ सनक सन्नद अंतु नही पाइआ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥१॥ हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥ सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥२॥ हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ गुर प्रसादि पावै अंमृत धारा ॥३॥ कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥ राम नाम लगि उतरे तीरा ॥४॥१॥१०॥ आसा ॥ बाती सूकी तेलु निखूटा ॥ मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥१॥ बुझि गई अगनि न निकसिए धूंआ ॥ रवि रहिआ इेकु अवरु नही दूआ ॥१॥ रहाउ ॥ टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥ भूलि बिगारिए अपना काजु ॥२॥ कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिए गावनु ॥३॥ कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥४॥२॥११॥ आसा ॥ सुतु अपराध करत है जेते ॥ जननी चीति न राखसि तेते ॥१॥ रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥ काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ जे अति क्रोप करे करि धाइआ ॥ ता भी चीति न राखसि माइआ ॥२॥ चिंत भवनि मनु परिए हमारा ॥ नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥३॥ देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥ सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥४॥३॥१२॥ आसा ॥ हज हमारी गोमती तीर ॥ जहा बसहि पीतंबर पीर ॥१॥ वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥ हरि का नामु

मेरै मनि भावता है ॥१॥ रहाउ ॥ नारद सारद करहि खवासी ॥ पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥२॥ कंठे माला जिहवा रामु ॥ सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥३॥ कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥४॥४॥१३॥

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१॥ भूली मालनी है एउ ॥ सतिगुरु जागता है देउ ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥ तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥२॥ पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥ जे एह मूरति साची है तउ गड़्हणहारे खाउ ॥३॥ भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥ भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥४॥ मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥ कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥५॥१॥१४॥ आसा ॥ बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥ तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥१॥ मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥१॥ रहाउ ॥ सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥२॥ चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥३॥ हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥४॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥ आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥५॥२॥१५॥ आसा ॥ काहू दीन्हे पाट पटंबर काहू पलघ निवारा ॥ काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥१॥ अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥१॥ रहाउ ॥ कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥ काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥२॥ सूमहि धनु

राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥३॥ हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥४॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ चिरगट फारि चटारा लै गइिए तरी तागरी छूटी ॥५॥३॥१६॥ आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥ अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥१॥ काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥ सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥२॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥ पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥३॥ खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ आपु जनाइि अवर कउ जानै तब होइि भिसत सरीकी ॥४॥ माटी इेक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥ कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥५॥४॥१७॥ आसा ॥ गगन नगरि इिक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ पारब्रहम परमेसुर माधो परम ह्मसु ले सिधाना ॥१॥ बाबा बोलते ते कहा गइे देही के संगि रहते ॥ सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥१॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गइिए जिनि इिहु मंदरु कीन्ा ॥ साखी सबदु सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीन्ा ॥२॥ स्रवनन बिकल भइे संगि तेरे इिंद्री का बलु थाका ॥ चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥३॥ थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥४॥ मिरतक भइे दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥ कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥५॥५॥१८॥ आसा इिकतुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥१॥ मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥ जिनि तृभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥१॥ रहाउ ॥ स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥२॥ स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ स्रपनी जीती कहा करै जमरा

॥३॥ इहि स्रपनी ता की कीती होई ॥ बलु अबलु किआ इस ते होई ॥४॥ इहि बसती ता बसत सरीरा ॥ गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥५॥६॥१९॥ आसा ॥ कहा सुआन कउ सिमृति सुनाइे ॥ कहा साकत पहि हरि गुन गाइे ॥१॥ राम राम राम रमे रमि रहीऔ ॥ साकत सिउ भूलि नही कहीऔ ॥१॥ रहाउ ॥ कऊआ कहा कपूर चराइे ॥ कह बिसीअर कउ दूधु पीआइे ॥२॥ सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥ पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥३॥ साकतु सुआनु सभु करे कराइिआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइिआ ॥४॥ अंमृतु लै लै नीमु सिंचाई ॥ कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥५॥७॥२० ॥ आसा ॥ लम्का सा कोटु समुंद सी खाई ॥ तिह रावन घर खबरि न पाई ॥१॥ किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ देखत नैन चलिए जगु जाई ॥१॥ रहाउ ॥ इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ तिह रावन घर दीआ न बाती ॥२॥ चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥३॥ गुरमति रामै नामि बसाई ॥ असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥४॥ कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई ॥५॥८॥२१॥ आसा ॥ पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ गुरु लागो चेले की पाई ॥१॥ इेकु अचंभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ देखत सिंघु चरावत गाई ॥१॥ रहाउ ॥ जल की मछुली तरवरि बिआई ॥ देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥२॥ तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥ तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥३॥ घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥ बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥४॥ कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥५॥९॥२२॥ बाईस चउपदे तथा पंचपदे

आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइिआ ॥ दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइिआ ॥१॥ प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइिआ ॥ पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइिआ होना सो होइिआ ॥ जा जमु आइि झोट पकरै तबहि काहे

रोइिआ ॥२॥ जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥३॥१॥२३॥ आसा ॥ तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ राम राइि सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥ गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥ मेरे गृह आइे राजा राम भतारा ॥१॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥ राम राइि सो दूलहु पाइिए अस बडभाग हमारा ॥२॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आइे कोटि तेतीस उजानाँ ॥ कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख इेक भगवाना ॥३॥२॥२४॥ आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥१॥ मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिए किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ सेजै रमतु नैन नही पेखउ इिहु दुखु का सउ कहउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ बापु सावका करै लराई माइिआ सद मतवारी ॥ बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥२॥ कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइिआ ॥ झूठी माइिआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइिआ ॥३॥३॥२५॥ आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ तुम् तउ बेद पड़हु गाइित्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥१॥ मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइिन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥१॥ रहाउ ॥ हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ कबहूं न पारि उतारि चराइिहु कैसे खसम हमारे ॥२॥ तूं बाम्नु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ तुम् तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥३॥४॥२६॥ आसा ॥ जगि जीवनु अैसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥१॥ बाबा माइिआ मोह हितु कीन् ॥ जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन् ॥१॥ रहाउ ॥ नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥२॥ करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइि ॥ कहि कबीर जगजीवनु अैसा दुतीअ नाही कोइि ॥३॥५॥२७॥ आसा ॥

जउ मै रूप कीइे बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥१॥ अब मोहि नाचनो न आवै ॥ मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु माइिआ लै जारी तृसना गागरि फूटी ॥ काम चोलना भइिआ है पुराना गइिआ भरमु सभु छूटी ॥२॥ सरब भूत इेकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ कहि कबीर मै पूरा पाइिआ भइे राम परसादा ॥३॥६॥२८॥ आसा ॥ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥१॥ काजी साहिबु इेकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै ॥१॥ रहाउ ॥ साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥२॥ अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ ह्मिदू तुरक दुहूं महि इेकै कहै कबीर पुकारी ॥३॥७॥२९॥ आसा ॥ तिपदा ॥ इिकतुका ॥ कीए सिंगारु मिलन के ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥१॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ धन पिर इेकै संगि बसेरा ॥ सेज इेक पै मिलनु दुहेरा ॥२॥ धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥३॥८॥३०॥

आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ सगल जोति इिनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥१॥ हरि की कथा अनाहद बानी ॥ ह्मसु हुइि हीरा लेइि पछानी ॥१॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस देखिए जग मह रहा समाई ॥ गुपता हीरा प्रगट भइिए जब गुर गम दीआ दिखाई ॥२॥१॥३१॥ आसा ॥ पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईअै बुरी ॥ अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥१॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥१॥ रहाउ ॥ कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिए ॥ लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिए

॥२॥२॥३२॥ आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ ले राखिए राम जनीआ नाउ ॥१॥ इन्हि मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥१॥ रहाउ ॥ कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥ इन्हि मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥२॥३॥३३॥ आसा ॥ रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥ अंत की बार लहैगी न आढै ॥१॥ रहाउ ॥ घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥ उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥१॥ घूंघट काढे की इहै बडाई ॥ दिन दस पाँच बहू भले आई ॥२॥ घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥ हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥३॥ कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥४॥१॥३४॥ आसा ॥ करवतु भला न करवट तेरी ॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥१॥ हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥१॥ रहाउ ॥ जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥ पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥२॥ हम तुम बीचु भइए नही कोई ॥ तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥३॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ अब तुमरी परतीति न होई ॥४॥२॥३५॥ आसा ॥ कोरी को काहू मरमु न जानाँ ॥ सभु जगु आनि तनाइए तानाँ ॥१॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानाँ ॥ तब हम इतनकु पसरिए तानाँ ॥१॥ धरनि अकास की करगह बनाई ॥ चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥२॥ पाई जोरि बात इक कीनी तह ताँती मनु मानाँ ॥ जोलाहे घरु अपना चीन्हाँ घट ही रामु पछानाँ ॥३॥ कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ सूतै सूत मिलाइे कोरी ॥४॥३॥३६॥ आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानाँ ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥१॥ पूजहु रामु इेकु ही देवा ॥ साचा नावणु गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे एइि नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥२॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बाँचिआ जाई ॥ हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ॥३॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥ कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥४॥४॥३७॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी स्री नामदेउ जी की

इेक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ माइिआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥१॥ सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ सूतु इेकु मणि सत सहंस जैसे एति पोति प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई ॥ इिहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥२॥ मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ सुकृत मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥३॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल इेक मुरारी ॥४॥१॥ आसा ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इिसनानु करउ ॥ बइिआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइि करउ ॥१॥ जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ महा अन्नद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥ आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइि करउ ॥२॥ आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ पहिले दूधु बिटारिए बछरै बीठलु भैला काइि करउ ॥३॥ ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ थान थन्नतरि नामा प्रणवै पूरि रहिए तूं सरब मही ॥४॥२॥ आसा ॥ मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ मपि मपि काटउ जम की फासी ॥१॥ कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ राम को नामु जपउ दिन राती ॥१॥ रहाउ ॥ राँगनि राँगउ सीवनि सीवउ ॥ राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥२॥ भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥३॥ सुइिने की सूई रुपे का धागा ॥ नामे का चितु हरि सउ लागा ॥४॥३॥ आसा ॥ सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥ उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥१॥ काहे कउ कीजै धिआनु जपन्ना ॥ जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥१॥ रहाउ ॥ सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥ अैसे ही ठगदेउ बखानै ॥२॥ नामे के

सुआमी लाहि ले झगरा ॥ राम रसाइनि पीउ रे दगरा ॥३॥४॥ आसा ॥ पारब्रहमु जि चीन्सी आसा ते न भावसी ॥ रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥१॥ कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥ झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥१॥ रहाउ ॥ छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥ संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥२॥५॥

आसा बाणी स्री रविदास जीउ की　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मृग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर इेक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥ माधो अबिदिआ हित कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥ तृगद जोनि अचेत संभव पुन्न पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥ जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमान्नद करहु निदान ॥४॥१॥ आसा ॥ संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥ संत ची संगति संत कथा रसु ॥ संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च एल्हग एल्हगणी ॥२॥ अउर इकि मागउ भगति चिंतामणि ॥ जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ संत अन्नतहि अंतरु नाही ॥४॥२॥ आसा ॥ तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ नीच रूख ते ऊच भइे है गंध सुगंध निवासा ॥१॥ माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ सतसंगति मिलि रहीअै माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२॥ जाती एछा पाती एछा एछा जनमु हमारा ॥ राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥३॥३॥ आसा ॥ कहा भइिए जउ तनु भइिए छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइि तउ डरपै तेरो जनु ॥१॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान करत पाइिए पाइिए रामईआ धनु ॥१॥ रहाउ ॥ संपति बिपति

पटल माइिआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२॥ प्रेम की जेवरी बाधिए तेरो जन ॥ कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥ आसा ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ हरि सिमरत जन गइे निसतरि तरे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥१॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइिआ ॥ तउ जग जनम संकट नही आइिआ ॥२॥ जन रविदास राम रंगि राता ॥ इिउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥ माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिए फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइिआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ बिनसि गइिआ जाइि कहूं समाना ॥२॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ बाजीगर सउ मुोहि प्रीति बनि आई ॥३॥६॥

आसा बाणी भगत धन्ने जी की　　　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥ बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ गुन ते प्रीति बढी अन भाँती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥ जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥ बिखु फल संचि भरे मन अैसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥ गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन इेक मइे ॥ प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ तृपति अघाने मुकति भइे ॥३॥ जोति समाइि समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ धन्नै धनु पाइिआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥ ४॥१॥ महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ आढ दाम को छीपरो होइिए लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥ बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ नीच कुला जोलाहरा भइिए गुनीय गहीरा ॥१॥ रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइिआ ॥ परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइिआ ॥२॥ सैनु नाई बुतकारीआ एहु घरि घरि सुनिआ ॥ हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता

महि गनिआ ॥३॥ इिह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले प्रतखि गुसाईआ धन्ना वडभागा ॥४॥२॥ रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥ रहाउ ॥ जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥ देइि अहारु अगनि महि राखै अैसा खसमु हमारा ॥१॥ कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ पूरन परमान्नद मनोहर समझि देखु मन माही ॥२॥ पाखणि कीटु गुपतु होइि रहता ता चो मारगु नाही ॥ कहै धन्ना पूरन ताहू को मत रे जीअ डराँही ॥३॥३॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ ॥ जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि काँढे कचिआ ॥१॥ रते इिसक खुदाइि रंगि दीदार के ॥ विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइि भारु थीइे ॥१॥ रहाउ ॥ आपि लीइे लड़ि लाइि दरि दरवेस से ॥ तिन धन्नु जणेदी माउ आइे सफलु से ॥२॥ परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥ जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥३॥ तेरी पनह खुदाइि तू बखसंदगी ॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥ आसा ॥ बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ इिहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥१॥ आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईअै घुमि न आईअै ॥ झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईअै ॥२॥ बोलीअै सचु धरमु झूठु न बोलीअै ॥ जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीअै ॥३॥ छैल लम्घंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ कंचन वन्ने पासे कलवति चीरिआ ॥४॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइिआ ॥५॥ कतिक कूंजाँ चेति डउ सावणि बिजुलीआँ ॥ सीआले सोहंदीआँ पिर गलि बाहड़ीआँ ॥६॥ चले चलणहार विचारा लेइि मनो ॥ गंढेदिआँ छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥७॥ जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गइे ॥ जालण गोराँ नालि उलामे जीअ सहे ॥८॥२॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

राग़ु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥

तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥१॥ पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥२॥ पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अंम्रितु देहि ॥ नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥३॥ नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥ जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥४॥१॥ गूजरी महला १ ॥ नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥ ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥१॥ प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥ जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥ गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥२॥ सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥३॥ सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥४॥२॥

रागु गूजरी महला ३ घरु १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥१॥ ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥२॥ बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥३॥ नानक ऐसे सतिगुर की किआ एहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥ सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे कृपा करेइ ॥४॥१॥३॥ गूजरी महला ३ ॥ हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥ हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥१॥ हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै इहा सेव बनी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि मेरा सिमृति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु तृपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥२॥ हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥ हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥३॥ सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥ कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥४॥२॥४॥ गूजरी महला ३ ॥ जुग माहि नामु दुलम्भु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥१॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जाँ भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥२॥ सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥ दसवै दुआरि रहत करे तृभवण सोझी पाइ ॥३॥ नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की

रजाइि ॥ इिहु कारणु करता करे जोती जोति समाइि ॥४॥३॥५॥ गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिअै रामु न होइि ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइि ॥१॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥१॥ रहाउ ॥ हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ तृसना मूलि न चुकई अंति गइे पछुताहि ॥२॥ अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइि ॥ जिसु नर की दुबिधा न जाइि धरम राइि तिसु देइि सजाइि ॥३॥ करमु होवै सोई जनु पाइे गुरमुखि बूझै कोई ॥ नानक विचहु हउमै मारे ताँ हरि भेटै सोई ॥४॥४॥६॥ गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन साँति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाइे ॥ सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाइे ॥१॥ हरि चेति अचेत मना जो इिछहि सो फलु होई ॥ गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइि त पूज कराइे ॥ जो उसु पूजे सो फलु पाइे दीखिआ देवै साचु बुझाइे ॥२॥ विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाइे ॥ गुरू सदाइे अगिआनी अंधा किसु एहु मारगि पाइे ॥३॥ नानक विणु नदरी किछू न पाईअै जिसु नदरि करे सो पाइे ॥ गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताइे ॥४॥५॥७॥ गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइि ॥ सतिगुर मिलिअै मति ऊपजै ता इिह सोझी पाइि ॥१॥ हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइि ॥ इिह मति तेरी थिरु रहै ताँ भरमु विचहु जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि चरण रिदै वसाइि तू किलविख होवहि नासु ॥ पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥२॥ मनमुखि इिहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइि ॥ हरि का नामु न बुझई अंति गइिआ पछुताइि ॥३॥ इिहु मनु कासी सभि तीरथ सिमृति सतिगुर दीआ बुझाइि ॥ अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइि ॥४॥ नानक सतिगुर मिलिअै हुकमु बुझिआ इेकु वसिआ मनि आइि ॥ जो तुधु भावै सभु सचु है सचे

रहै समाइ ॥५॥६॥८॥ गूजरी महला ३ तीजा ॥ इेको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥१॥ हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ हरि रसु रसना चाखु तूं ताँ मनु निरमलु होई ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिअै मनु संतोखीअै ता फिरि तृसना भूख न होइ ॥ नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥२॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥३॥ सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥४॥ सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥५॥७॥९॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥ हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइिआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आइे ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धन्नु धन्नु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥४॥१॥ गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ जपि गोविंदु गोविंदु धिआईअै सभ कउ दानु देइ प्रभु एहै ॥१॥ मेरे भाई जना मो कउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥१॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि एहै ॥ जन कउ

राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥२॥ दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥ कऊआ काग कउ अंमृत रसु पाईऐ तृपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥३॥ अंमृत सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ नानक धनु धन्नु वडे वडभागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥४॥२॥ गूजरी महला ४ ॥ हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥१॥ राम मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ हरि हरि अंमृतु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥२॥ जिन दरसनु सतिगुर सत पुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥३॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥४॥३॥ गूजरी महला ४ ॥ होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥१॥ मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥ गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लइे छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥२॥ माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई ॥ नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥३॥ जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ धन्नु धन्नु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लइे गलि लाई ॥४॥४॥ गूजरी महला ४ ॥ गुरमुखि सखी सहेली मेरी मो कउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ हम होवह लाले गोले गुरसिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥१॥ मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥ मेरे प्रान सखा गुर के

सिख भाई मो कउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्‍ वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥२॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥३॥ आपि कृपालु कृपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥४॥५॥ गूजरी महला ४ ॥ जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मो कउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥ मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥१॥ भाई रे मो कउ कोई आइ मिलै हरि नामु दृड़ावै ॥ मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥१॥ रहाउ ॥ धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै हरि सिउ चितु लावै ॥ अंमृत बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अंमृतु पावै ॥२॥ निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुइे मरि जावै ॥३॥ आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥४॥६॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गूजरी महला ४ घरु ३ ॥ माई बाप पुत्र सभि हरि के कीइे ॥ सभना कउ सनबंधु हरि करि दीइे ॥१॥ हमरा जोरु सभु रहिए मेरे बीर ॥ हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ विचे गृसत उदास रहाई ॥२॥ जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥ तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥३॥ जितु कारै कंमि हम हरि लाइे ॥ सो हम करह जु आपि कराइे ॥४॥ जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥५॥१॥७॥१६॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाइे ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइिआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइि न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥१॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरिआचार करहि खटु करमा इितु राते संसारी ॥ अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥१॥ मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥ कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥१॥ रहाउ ॥ सासत बेद सिमृति सभि सोधे सभ इेका बात पुकारी ॥ बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥२॥ अठसठि मजनु करि इिसनाना भ्रमि आइे धर सारी ॥ अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥३॥ धावत धावत सभु जगु धाइिए अब आइे हरि दुआरी ॥ दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥४॥१॥२॥ गूजरी महला ५ ॥ हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइिआ ॥ निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइिआ ॥१॥ माई खाटि आइिए घरि पूता ॥ हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥१॥ रहाउ ॥ हरि धनु इिसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइि धिआना ॥ हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि

पराना ॥२॥ हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ हरि धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिए हरि थोका ॥३॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥४॥२॥३॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥ अंमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥ भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन संगि लपटाइए जिउ बूंदहि चातृकु मउला ॥४॥३॥४॥ गूजरी महला ५ ॥ मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥१॥ सिआनप काहू कामि न आत ॥ जो अनरूपिए ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥१॥ रहाउ ॥ देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥ लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥२॥ होइ अनंनि मनहठ की दृड़ता आपस कउ जानात ॥ जो अनिंदु निंदु करि छोडिए सोई फिरि फिरि खात ॥३॥ सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥४॥४॥५॥ गूजरी महला ५ ॥ नामु निधानु जिनि जनि जपिए तिन के बंधन काटे ॥ काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥१॥ हरि जसु साधसंगि मिलि गाइए ॥ गुर परसादि भइए मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु कीए सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥२॥ पूरन पूरि रहिए स्रब थाई आन न कतहूं जाता ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविए रंगि राता ॥३॥ भए कृपाल दइआल

गुपाला ता निरभै कै घरि आइिआ ॥ कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइिआ ॥४॥५॥६॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥१॥ गुर हरि बिनु को न बृथा दुखु काटै ॥ प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥१॥ रहाउ ॥ माइिआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइिआ ॥ हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बाँछत फल पाइिआ ॥२॥ लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि तृसन न बूझी ॥ सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥३॥ फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइिआ भै भंजन हरि राइिआ ॥ साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइिआ ॥४॥६॥७॥

गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइिआ ॥ चित्र साल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइिआ ॥१॥ अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ गुरि पूरै दीए हरि नामा जीअ कउ इहा वसतु फबी ॥१॥ रहाउ ॥ इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥ जब अंती अउसरु आइि बनिए है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥२॥ करि करि अनरथ बिहाझी संपै सुइिना रूपा दामा ॥ भाड़ी कउ एहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइिए बिराना ॥३॥ हैवर गैवर रथ संबाहे गहु करि कीने मेरे ॥ जब ते होई लाँमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥४॥ नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुटंब सहाई ॥ नामु संपति गुरि नानक कउ दीई एह मरै न आवै जाई ॥५॥१॥८॥

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुख बिनसे सुख कीआ निवासा तृसना जलनि बुझाई ॥ नामु निधानु सतिगुरू दृड़ाइिआ बिनसि न आवै जाई ॥१॥ हरि जपि माइिआ बंधन तूटे ॥ भइे कृपाल दइिआल प्रभ मेरे साधसंगति मिलि छूटे

॥१॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥ हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥२॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥३॥१॥९॥

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पवित्र लीऐ करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥१॥ ठाकुर ऐसो नामु तुमारो ॥ सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चंमिआरो ॥२॥१॥१०॥ गूजरी महला ५ ॥ है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥१॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥१॥ रहाउ ॥ आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥२॥२॥११॥ गूजरी महला ५ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥ जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥१॥ प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥ सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥२॥३॥१२॥ गूजरी महला ५ ॥ दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥१॥ मोहनु प्रान मान रागीला ॥ बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अनन्दा उतरै मनहु जंगीला ॥ मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥२॥४॥१३॥ गूजरी महला ५ ॥ मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥ तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति

कछु न रही ॥१॥ बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥ अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥१॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥२॥५॥१४॥ गूजरी महला ५ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेन्नती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥ हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण आनन्द रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥१॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥२॥६॥१५॥ गूजरी महला ५ ॥ मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥१॥ ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिए तुम्रा धोरा ॥१॥ रहाउ ॥ बलि बलि बलि बलि चरण तुम्रारे ईहा ऊहा तुम्रारा जोरा ॥ साधसंगि नानक दरसु पाइए बिनसिए सगल निहोरा ॥२॥७॥१६॥ गूजरी महला ५ ॥ आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ मन कउ इह उपदेसु दृड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥१॥ साजन ऐसो संतु सहाई ॥ जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥१॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥ मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥२॥८॥१७॥ गूजरी महला ५ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥१॥ धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥ सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्री टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्रै परी ॥ अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥२॥९॥१८॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥१॥ ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥१॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥ नानक टेक भई

करते की होर आस बिडाणी लाही ॥२॥१०॥१६॥ गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥१॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी एर ॥१॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥२॥११॥२०॥ गूजरी महला ५ ॥ ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥१॥ अब मोहि आइ परिए सरनाइ ॥ गुहज पावको बहुतु प्रजारै मो कउ सतिगुरि दीए है बताइ ॥१॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अरु जख्य किन्नर नर रही कंठि उरझाइ ॥ जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि अैसी दासाइ ॥२॥१२॥२१॥ गूजरी महला ५ ॥ अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईअै ॥ जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईअै ॥१॥ जा ते घाल न बिरथी जाईअै ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईअै ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईअै ॥ चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईअै ॥२॥१३॥२२॥ गूजरी महला ५ ॥ बिस्मंभर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥ जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥१॥ मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥ सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥१॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुमारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥२॥१४॥२३॥ गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप ॥ हरि हरि नामु दीए गुरि अवखधु उतरि गइए सभु ताप ॥१॥ रहाउ ॥ हरिगोबिंदु रखिए परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ मिटी बिआधि सरब सुख होइे हरि गुण सदा बीचारि ॥१॥ अंगीकारु कीए मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥२॥१५॥२४॥ गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सिउ

चीतु न लाइिए ॥ धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइिए ॥ बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइिए ॥१॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइिए ॥ गोबिंद दइिआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइिए ॥२॥१६॥२५॥ गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत ॥ छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥१॥ रहाउ ॥ नामु इेकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥१॥ करण कारण संम्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥ मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१७॥२६॥

गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥१॥ रे चित चरण कमल अराधि ॥ सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइि ॥ ईत ऊत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइि ॥२॥ कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ सरणि साधू निरमला गति होइि प्रभ कै नामि ॥३॥ अगम दइिआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥४॥१॥२७॥ गूजरी महला ५ ॥ आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइि मन की चिंद ॥१॥ मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ सूख सहज अन्नद पावहि मिली निरमल थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि उधारि इिहु मनु आठ पहर आराधि ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥२॥ अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥ चरण कमल अराधि हिरदै इेक सिउ लिव लाउ ॥३॥ पारब्रहमि प्रभि दइिआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥ सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥४॥२॥२८॥ गूजरी महला ५ ॥ गुर प्रसादी प्रभु

धिआइिआ गई संका तूटि ॥ दुख अनेरा भै बिनासे पाप गइे निखूटि ॥१॥ हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ मिलि साध बचन गोबिंद धिआइे महा निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ करि अनुग्रहु आपि राखे भइे पूरन काम ॥२॥ सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ ॥ गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥३॥ दीन दरद निवारि तारण दइिआल किरपा करण ॥ अटल पदवी नाम सिमरण दृड़ु नानक हरि हरि सरण ॥४॥३॥ २६॥ गूजरी महला ५ ॥ अह्मबुधि बहु सघन माइिआ महा दीरघ रोगु ॥ हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥१॥ मनि तनि बाछीअै जन धूरि ॥ कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥१॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥ गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणं काटीअै जम जाल ॥२॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥ प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥३॥ मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलम्त ॥ जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥४॥ सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ हरि चरण सरण अपार प्रभ के दृड़ु गही नानक एट ॥५॥४॥३०॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे

ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिएगु ॥१॥ मन चरणारबिंद उपास ॥ कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥१॥ रहाउ ॥ सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥ करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥२॥१॥३१॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइि ॥ जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइि ॥१॥ गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर

सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ कवल प्रगास भइे साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥२॥ आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥३॥ चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी एति पोति प्रभु साथि ॥ सरनि परिए नानक प्रभ तुमरी दे राखिए हरि हाथ ॥४॥२॥३२॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

इेक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ तृहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥१॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ रामु रिदै जपमाली ॥१॥ रहाउ ॥ उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ सहज भाइि जाइि ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥२॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ सरब जोति निरंजन संभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥३॥ सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइिआ जाला ॥ मनि बीचारि इेक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥४॥ सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ तिसु कारणि कंमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥५॥ कामु क्रोधु अह्मकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइिआ ॥ मनि ततु अविगतु धिआइिआ गुर परसादी पाइिआ ॥६॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥७॥ महा गंभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइिआ ॥ उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंमृतु पीआइिआ ॥८॥१॥ गूजरी महला १ ॥ कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥ जैसी भूख होइि अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥१॥ अै जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ हरि हरि नामु देहि सुखु पाईअै तेरी भगति भरे भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ सुन्न समाधि रहहि लिव लागे इेका इेकी सबदु बीचार ॥ जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥२॥ ना तदि माइिआ मगनु न छाइिआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥ सरब

दृसटि लोचन अभ अंतरि इेका नदरि सु तृभवण सार ॥३॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार ॥ सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥४॥ कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइिक देदे तोटि नाही भंडार ॥ ऊंधै भाँडै कछु न समावै सीधै अंमृतु परै निहार ॥५॥ सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ जैसी पिआस होइि मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥६॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥७॥ अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥ नानक चातृकु अंमृत जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥८॥२॥ गूजरी महला १ ॥ अै जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥१॥ भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ गुर परसादी हरि प्रभ जाचे अैसी नाम बडाई ॥१॥ रहाउ ॥ अै जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥२॥ अै जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥३॥ गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥४॥ अै जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥५॥ अै जी भागि परे गुर सरणि तुमारी मै अवर न दूजी भाई ॥ अब तब इेको इेकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥६॥ अै जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥७॥ अै जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइिआ जाई ॥ नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥८॥३॥ गूजरी महला १ ॥ अै जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥१॥ भाई रे

गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ बिनु हरि नाम बृथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥२॥ ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥ रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥३॥ ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥४॥ ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥५॥ ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥६॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥७॥ तूं वड पुरखु अगंम तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥ नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥८॥४॥

गूजरी महला १ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ बिललाप बिलल बिन्नतीआ सुख भाइ चित हितं ॥१॥ जपि मन नामु हरि सरणी ॥ संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥१॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥२॥ चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ थिरु नामु भगति दिड़ं मती गुर वाकि सबद रतं ॥३॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥४॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥५॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥६॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥

हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥७॥ लब लोभ लहरि निवारणं हरि नाम रासि मनं ॥ मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥८॥१॥५॥

गूजरी महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

निरति करी इहु मनु नचाई ॥ गुर परसादी आपु गवाई ॥ चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥१॥ नाचु रे मन गुर कै आगै ॥ गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ आपि नचाइे सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाइे ॥ आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाइे ॥२॥ अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥ सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥३॥ सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी ॥ सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥४॥ खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥ जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥५॥ जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाइे ॥ से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाइे ॥६॥ इेहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥७॥ माइिआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ गुर परसादी सोई जनु पाइे जिन कउ कृपा तुमारी ॥८॥ इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइि ॥ साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइि ॥९॥ सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥ कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥१०॥१॥६॥

गूजरी महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥१॥ मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥ गुरमुखि नामु अंमृत जलु पाईऐ जिन

कउ कृपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सन्नदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥ सरणागति प्रहलाद जन आइे तिन की पैज सवारी ॥२॥ अलख निरंजनु इेको वरतै इेका जोति मुरारी ॥ सभि जाचिक तू इेको दाता मागहि हाथ पसारी ॥३॥ भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ सफल जनमु भइिआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥४॥ मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ संत जना की कथा न भावै एइि डूबे सणु परवारी ॥५॥ निंदकु निंदा करि मलु धोवै एहु मलभखु माइिआधारी ॥ संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥६॥ इेहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ हरि इेको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै इेकंकारी ॥७॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥८॥१॥७॥

गूजरी महला ५ घरु २   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥१॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥ सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥२॥ सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ ग्रसतन महि तूं बडो गृहसती जोगन महि जोगी ॥३॥ करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥४॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ लखिमी केतक गनी न जाईअै गनि न सकउ सीका ॥५॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इिसनानन महि इिसनानी ॥६॥ सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा

॥७॥ जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ साधसंगि नानक जसु गाइिए जो प्रभ की अति पिआरी ॥८॥१॥८॥

गूजरी महला ५ घरु ४ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ॥ भै त्रास नास कृपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥१॥ हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥ चरण सरण दइिआल केसव तारि जग भव सिंध ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥ जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमान्नद ॥२॥ जलत अनिक तरंग माइिआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥ छेदि अह्मबुधि करुणा मै चिंत मेटि पुरख अन्नत ॥३॥ सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ दीन दइिआल प्रसन्न पूरन जाचीऐ रज साध ॥४॥ मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥ रखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥५॥ धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भइे गुण मति धीर ॥६॥ जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥ जीअ दइिआ मइिआ सरबत्र रमणं परम ह्मसह रीति ॥७॥ देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥ अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥८॥१॥२॥५॥१॥१॥२॥५७॥

गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः ३ ॥ इिहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥ गुर कै भाणै जो चलै ताँ जीवण पदवी पाहि ॥ एइि सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥१॥ मः ३ ॥ अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥ दूजै भाइि सुते कबहि न जागहि माइिआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इिहु

मनमुख का आचारु ॥ हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥२॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु उपाइएनु तदहु होरु न कोई ॥ मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥ तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ तदहु आपे आपि निरंकारु है ना एपति होई ॥ जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥१॥ सलोकु मः ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ एहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥ सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥ अवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ ॥ निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥ नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥२॥ पउड़ी ॥ संजोगु विजोगु उपाइएनु सृसटी का मूलु रचाइआ ॥ हुकमी सृसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥ माइआ का मूलु रचाइएनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥२॥ सलोकु मः ३ ॥ सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ नानक आपु छोडि गुर माहि समावै ॥१॥ मः ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै ॥ नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥२॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥ गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥३॥ सलोकु ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥१॥ मः ३ ॥ नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ ॥ हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ हउमै

गई जोति रही सभ आदि ॥ इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥ सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥ सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥४॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ ॥ माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन् सुखु वसिआ मनि आइ ॥ हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरि नामि रहे लिव लाइ ॥ नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ रंगु तिसै कउ अगला वन्नी चड़ै चड़ाइ ॥१॥ मः ३ ॥ माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥ नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥ जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥ नानक हुकमु न मन्नई ता घर ही अंदरि दूरि ॥ हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन् कउ नदरि करेइ ॥ हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥१॥ मः ३ ॥ रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥ नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन् पिआरा पुरखु हरि राउ ॥२॥ पउड़ी ॥ सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी हरि अंम्रित सरि नाता ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥६॥ सलोकु मः ३ ॥ काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ॥ एस नो कूड़ु

बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥ काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥ हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥१॥ मः ३ ॥ इेको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना एचका लै जाइ ॥ इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥ धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥२॥ पउड़ी ॥ मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गंभीरा ॥ सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥ गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥ गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥७॥ सलोकु मः ३ ॥ ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥ मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥ हलति पलति एइ सुखु न पावहि अंति गइे पछुताइ ॥ गुर परसादी को नामु धिआइे तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥ तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥ एइि धरमि रलाइे ना रलन्हि एना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥ नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ बिनु बूझे वडा फेरु पइिआ फिरि आवै जाई ॥ सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइिआ पछुताई ॥ आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥ तृसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥८॥ सलोकु मः ३ ॥ जि सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइि ॥ सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइि ॥ अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइि ॥ अंमृतु खाणा अंमृतु पैनणा नानक नामु वडाई होइि ॥१॥ मः ३ ॥ इे मन गुर की सिख सुणि हरि

पावहि गुणी निधानु ॥ हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥२॥ पउड़ी ॥ सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥ तह जोति प्रगासु अनन्द रसु अगिआनु गविता ॥ अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ सभना दाता इकु है इको हरि मिता ॥९॥ सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाइ ॥ हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाइ ॥ इसु जुग महि को विरला ब्रहम गिआनी जि हउमै मेटि समाइ ॥ नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरि नामु धिआइ ॥१॥ मः ३ ॥ अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ इतु कमाणै सदा दुखु पावै जंमै मरै फिरि आवै जाइ ॥ सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ जिस नो कृपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि ॥ हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥१०॥ सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ जिस नो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥ कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु

॥ नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥२॥ पउड़ी ॥ भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाड़े ॥ हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाड़े ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआइे ॥ सफलु जनमु जिन्ी गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाइे ॥ बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआइे ॥११॥ सलोकु मः ३ ॥ कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइिआ ॥ सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइिआ अनदिनु नामु धिआइिआ ॥ विचे गृह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइिआ ॥ आपि तरिआ कुल जगतु तराइिआ धन्नु जणेदी माइिआ ॥ अैसा सतिगुरु सोई पाइे जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइिआ ॥ जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइिआ ॥१॥ मः ३ ॥ त्रै गुण माइिआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइिआ ॥ पंडित भुलि भुलि माइिआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइिआ ॥ दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइिआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले एना अहंकारु बहु गरबु वधाइिआ ॥ छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु गवाइिआ ॥ इेतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइिआ ॥ जन नानक किस नो आखि सुणाईअै जा करदे सभि कराइिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ माइिआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥ इेह जम की सिरकार है इेना उपरि जम का डंडु करारा ॥ मनमुख जम मगि पाईअनि् जिन् दूजा भाउ पिआरा ॥ जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥ जिस नो कृपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥१२॥ सलोकु मः ३ ॥ हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइि ॥ जो मोहि दूजै चितु लाइिदे तिना विआपि रही लपटाइि ॥ गुर कै सबदि परजालीअै ता इेह विचहु जाइि ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइि ॥ नानक माइिआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइिआ जाइि ॥१॥ मः ३ ॥ इिहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइि ॥ हरि भाणा ता भरमाइिअनु करि परपंचु खेलु उपाइि ॥ जा हरि बखसे ता गुर

मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥ काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥ जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥१३॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥१॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन् कउ परजा पूजण आई ॥ वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥२॥ पउड़ी ॥ बजर कपाट काइआ गड़्ह भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥ भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥ उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ गुर सबदी खोलाईअनि् हरि नामु जपानी ॥ हरि जीउ अंमृत बिरखु है जिन पीआ ते तृपतानी ॥ १४॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सदा अनन्दु होवै मेरी माइ ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥ नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥२॥ पउड़ी ॥ इहे मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥ अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ रसना हरि रसु न चखिए फीका बोलाता ॥ जिना गुरमुखि अंमृतु चाखिआ से जन तृपताता ॥१५॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर गंभीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ

जि गुणदाता मति धीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥ नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥१॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ एना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ गुरमुखि अंमृतु पीवणा वाहु वाहु करहि लिव लाइ ॥ नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले तृभवण सोझी पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥ हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥ हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥ हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥१६॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ ॥ वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥१॥ मः ३ ॥ वाहु वाहु साहिबु सचु है अंमृतु जा का नाउ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सु खाइ ॥ वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जमकंकरु नेड़ि न आवै ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥ अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुन्न पराणी ॥ बिनु गुर किनै न पाइए पचि मुझे अजाणी ॥१७॥ सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥ वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ वाहु वाहु अंमृत नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ वाहु वाहु करमी

पाईऐ आपि दइिआ करि देइि ॥ नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लइेइि ॥१॥ मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइि ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइिआ जाइि ॥ जिन्ा अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइि खुआइि ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइि ॥ जिन्ा सतिगुर सिउ चितु लाइिआ सु खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना एइि दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥ दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ ढाढी दरु घरु पाइिसी सचु रखै उर धारि ॥ ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइि पिआरि ॥ ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥१८॥ सलोकु मः ३ ॥ गूजरी जाति गवारि जा सहु पाइे आपणा ॥ गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥ जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥ सा हुकमु पछाणै कंत का जिस नो कृपा कीती करतारि ॥ एह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ भै पइिऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥ अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥ भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥ ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥१॥ मः ३ ॥ सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥ नानक इेकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ अंसा अउतारु उपाइिएनु भाउ दूजा कीआ ॥ जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥ ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिन्ी न लहीआ ॥ निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥१९॥ सलोकु मः ३ ॥ इेहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु ॥ जिनि इेहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ नानक जे को आपु गणाइिदा सो मूरखु गावारु ॥१॥ मः ३ ॥ मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइि ॥ नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ तिसु आगै

अरदासि जिनि उपाइआ ॥ सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ अंमृत हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥ नानक भइे अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥२०॥ सलोक मः ३ ॥ खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ ॥ महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ नानक तिन् बलिहारणै जिन् गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥१॥ मः ३ ॥ मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥२॥ पउड़ी ॥ प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा साँई ॥ तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥ जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥ चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥२१॥ सलोक मः ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥१॥ मः ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइएनु करि पूरा थाटु ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥२२॥१॥ सुधु

रागु गूजरी वार महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः ५ ॥ अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस नो इेह वथु देइि ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइि ॥१॥ मः ५ ॥ रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइि काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइिआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥

जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ ॥ सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥ कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥ सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥ इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥ हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥ प्रभ जीउ तुधु धिआइे सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥ तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥१॥ सलोकु मः ५ ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥१॥ मः ५ ॥ किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥ नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े ॥ गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥ ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इंद्र इंद्रासणा ॥ संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीइे ॥ एति पोति निरंकार घटि घटि मउलीइे ॥ कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥ जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥२॥ सलोकु मः ५ ॥ चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥ नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥१॥ मः ५ ॥ कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥ नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ अंमृत नामु निधानु दासा घरि घणा ॥ तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥ कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥ आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥ मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ ॥३॥ सलोक मः ५ ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥ मः ५ ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥२॥ पउड़ी ॥ नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥ जिस नो करे रहंम तिसु न विसारदा ॥ आपि उपावणहार

आपे ही मारदा ॥ सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥ जिस नो लाइि सचि तिसहि उधारदा ॥ जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥४॥ सलोक मः ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइि ॥ जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥१॥ मः ५ ॥ सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाइे आहि ॥ नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ तिस की गई बलाइि मिटे अंदेसिआ ॥ तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइि ॥ जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइि ॥ अंमृतु साचा नाउ एथै जापीऐ ॥ मन कउ होइि संतोखु भुखा ध्रापीऐ ॥ जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥ गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥५॥ सलोक मः ५ ॥ मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥१॥ मः ५ ॥ दृसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥२॥ पउड़ी ॥ जीअ की बिरथा होइि सु गुर पहि अरदासि करि ॥ छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइि जरि ॥ साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ मन कउ होइि संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥ सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥६॥ सलोक मः ५ ॥ लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ नानक लहरी लख सै आन डुबण देइि न मा पिरी ॥१॥ मः ५ ॥ बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामाँ ॥२॥ पउड़ी ॥ पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥ पहुचि न सकै कोइि तेरी टेक जन ॥ गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥ सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥ रखै आपि दइिआलु करि दासा आपणे ॥ हरि

हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ॥७॥ सलोक मः ५ ॥ प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥१॥ मः ५ ॥ तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥ जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥२॥ पउड़ी ॥ होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ ॥ वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥ अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥ पूरन होवै आस नाइि मंनि वसाइऐ ॥ कोइि न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥ गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥ तिनि पाइे सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥ तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ॥८॥ सलोक मः ५ ॥ नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुंभै मंझि मुहबति तेरी ॥ तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥१॥ मः ५ ॥ जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥ हउ ढूढेदी जगु सबाइिआ जन नानक विरले केई ॥२॥ पउड़ी ॥ आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ॥ जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥ बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥ तिसु सिउ लाइिन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥ ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥ जा आपे होइि दइिआलु ताँ भगत संगु पाईऐ ॥९॥ सलोक मः ५ ॥ बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही ॥ तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥१॥ मः ५ ॥ सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥ तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥२॥ पउड़ी ॥ सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ पाइिआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥ नदरी आइिआ इिकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ ततु गिआनु लाइि धिआनु दृसटि समेटिआ ॥ सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ परखि खजानै पाइे से बहुड़ि न खोटिआ ॥१०॥ सलोकु मः ५ ॥ विछोहे जंबूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥ जे सो धणी मिलमनि नानक सुख संबूह सचु ॥१॥

मः ५ ॥ जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि ॥ नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥२॥ पउड़ी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही गोचरे ॥ सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥ अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥ जिस नो होहि कृपालु सु नामु धिआईऐ ॥११॥ सलोक मः ५ ॥ कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ ॥ सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥१॥ मः ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥२॥ पउड़ी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥ तिआगहु सगल उपाव तिस की एट गहु ॥ पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥ करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ जपीऐ अंमृत नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥१२॥ सलोक मः ५ ॥ लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥१॥ मः ५ ॥ पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥ गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥२॥ पउड़ी ॥ वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ दइआ धारी समरथि चुके बिल बिलाप ॥ नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥ आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥ तिसन बुझी आस पुन्नी मन संतोखि ध्रापि ॥ वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥१३॥ सलोक मः ५ ॥ जा कउ भए कृपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥ मः ५ ॥ रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥ जिस नो

होइि कृपालु तिस का दूखु जाइि ॥ भगत तेरे दइिआल एन्हा मिहर पाइि ॥ दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइि ॥ भगता इेहु अधारु गुण गोविंद गाइि ॥ सदा सदा दिनु रैणि इिको इिकु धिआइि ॥ पीवति अंमृत नामु जन नामे रहे अघाइि ॥१४॥ सलोक मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥१॥ मः ५ ॥ पिरी मिलावा जा थीऔ साई सुहावी रुति ॥ घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऔ नित ॥२॥ पउड़ी ॥ सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऔ ॥ फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऔ ॥ दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऔ ॥ जिणि जिणि लैन्हि रलाइि इेहो इेना लोड़ीऔ ॥ त्रै गुण इिन कै वसि किनै न मोड़ीऔ ॥ भरमु कोटु माइिआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऔ ॥ गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऔ ॥ हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऔ ॥१५॥ सलोक मः ५ ॥ किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥ कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥१॥ मः ५ ॥ नानक सतिगुरि भेटिऔ पूरी होवै जुगति ॥ हसंदिआ खेलम्दिआ पैन्नदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥२॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु धनु धन्नु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ ॥ सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥ नामु निधानु अखुटु गुरु देइि दारूए ॥ महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूए ॥ पाइिआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥ जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ ॥ महिमा कही न जाइि गुर समरथ देव ॥ गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव ॥१६॥ सलोकु मः ५ ॥ उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ धिआइिदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥१॥ मः ५ ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इिक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥२॥ पउड़ी ॥ तेरा कीता होइि त काहे डरपीऔ ॥ जिसु मिलि जपीऔ नाउ तिसु जीउ अरपीऔ ॥ आइिऔ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥ सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ तेरे दास धिआइिनि

तुधु तूं रखण वालिआ ॥ सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥१७॥ सलोक मः ५ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥ राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥१॥ मः ५ ॥ खाँदिआ खाँदिआ मुहु घठा पैन्नदिआ सभु अंगु ॥ नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥ जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ जिन्ही पछाता हुकमु तिन् कदे न रोवणा ॥ नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥१८॥ सलोक मः ५ ॥ जीवदिआ न चेतिए मुआ रलम्दड़ो खाक ॥ नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥१॥ मः ५ ॥ जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि ॥ जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥२॥ पउड़ी ॥ आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥ मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ जिन् मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥ सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ गुर पूरे की टेक नानक संम्ालिआ ॥१९॥ सलोक मः ५ ॥ आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥ सतिगुरि दिता हरि नामु अंमृतु चखिआ ॥ साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥ पाइे मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥१॥ मः ५ ॥ तिस नो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥ सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥ हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ जिसु होआ आपि कृपालु सु नह भरमाइआ ॥ जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ नानक जिसहि दइआलु बुझाइे हुकमु मित ॥ जिसहि भुलाइे आपि मरि मरि जमहि नित ॥२॥ पउड़ी ॥ निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥ प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि

जोनी जुते ॥ मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ कंठि लाइि दास रखिअनु नानक हरि सते ॥२०॥ सलोक मः ५ ॥ रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइि ॥ नानक नामि धिआइिऐ बिघनु न लागै कोइि ॥१॥ मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥२॥ पउड़ी ॥ सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ इिछ पुन्नी मनि आस गइे विसूरिआ ॥ पाइिआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥ जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ सूख सहज आन्नद वुठे तितु घरि ॥ आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ साहिबु सेवकु इिकु इिकु दृसटाइिआ ॥ गुर प्रसादि नानक सचि समाइिआ ॥२१॥१॥२॥ सुधु

रागु गूजरी भगता की बाणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइि सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥ ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥१॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥१॥ रहाउ ॥ सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ जन भगतन को कहो न मानो कीए अपनो पईहै ॥२॥ दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥ रतन जनमु खोइिए प्रभु बिसरिए इिहु अउसरु कत पईहै ॥३॥ भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥ कहत कबीर राम नाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥४॥१॥ गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ इे बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥१॥ तनना बुनना सभु तजिए है कबीर ॥ हरि का नामु लिखि लीए सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥२॥ एछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नामु लहिए मै लाहा ॥३॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इिन का दाता इेकु रघुराई ॥४॥२॥

गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥ तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥ सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥३॥ इेकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥ जे एहु देउ त एहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥ गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पार मलो परमलीए बैठो री आई ॥ आवत किनै न पेखिए कवनै जाणै री बाई ॥१॥ कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिए न जाई ॥ जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥ जिउ आकासै घड़ूअलो मृग तृसना भरिआ ॥ नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥

गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दूधु त बछरै थनहु बिटारिए ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिए ॥१॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥ बिखु अंमृतु बसहि इक संगा ॥२॥ धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥१॥

गूजरी स्री तृलोचन जीउ के पदे घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे

भइआ संनिआसी ॥१॥ भरमे भूली रे जै चंदा ॥ नही नही चीन्हिआ परमान्नदा ॥१॥ रहाउ ॥ घरि घरि खाइिआ पिंडु बधाइिआ खिंथा मुंदा माइिआ ॥ भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइिआ ॥२॥ काइि जपहु रे काइि तपहु रे काइि बिलोवहु पाणी ॥ लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥ काइि कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइि फिराही ॥ बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥४॥१॥ गूजरी ॥ अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥१॥ अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥२॥ अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥३॥ अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥ अंति कालि नाराइिणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वा के रिदै बसै ॥५॥२॥

गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥ परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥१॥ केवल राम नाम मनोरमं ॥ बदि अंम्रित तत मइिअं ॥ न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइिअं ॥१॥ रहाउ ॥ इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥ भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसन्नमिदं ॥२॥ लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥ तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥३॥ हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥४॥ गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥ जैदेव आइिउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥५॥१॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥

सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥१॥ रहाउ ॥ टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ हमरा मनु मोहिए गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥१॥ सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥२॥१॥ देवगंधारी ॥ मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥ हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥१॥ रहाउ ॥ प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ लटुरी मधुरी ठाकुर भाई एह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥१॥ इको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥ नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥२॥२॥ देवगंधारी ॥ मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥ गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥ कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥१॥ सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अंम्रितु पी झोलीऐ ॥ गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥२॥३॥ देवगंधारी ॥ अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥ जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि

॥१॥ रहाउ ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥ कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीए है ढारि ॥१॥ जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥ जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥२॥४॥ देवगंधारी ॥ हरि गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥ तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥ हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥१॥ हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुमारी ॥२॥५॥ देवगंधारी ॥ हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥ जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिए है ध्रकटी ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥ जिउ निगुरा बहु बाता जाणै एहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥१॥ जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥ नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥२॥६॥ छका १

देवगंधारी महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥ प्रभु होइ कृपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि इको बाहरि इको सभ महि इकु समाईऐ ॥ घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ॥१॥ उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥ सुखदाते दुख भंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥२॥१॥ देवगंधारी ॥ माई होनहार सो होईऐ ॥ राचि रहिए रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ कह फूलहि आन्नद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥ कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥१॥ कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥२॥२॥

देवगंधारी ॥ माई सुनत सोच भै डरत ॥ मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥ निमख न बिसरउ हीडे मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥१॥ सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥२॥३॥ देवगंधारी ॥ मन हरि कीरति करि सदहूं ॥ गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥१॥ रहाउ ॥ जह ते उपजिए तही समाइए इह बिधि जानी तबहूं ॥ जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइए कबहूं ॥१॥ सुखु आइए भै भरम बिनासे कृपाल हूडे प्रभ जबहू ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साधसंगि तजि लबहूं ॥२॥४॥ देवगंधारी ॥ मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइि गरीबु बुलावउ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक अडंबर माइिआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥१॥ दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥२॥५॥ देवगंधारी ॥ प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिए ॥ तुमरी कृपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिए ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिए ॥ नामु जपत महा सुखु पाइिए चिंता रोगु बिदारिए ॥१॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिए ॥ माइिआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिए ॥२॥६॥ देवगंधारी ॥ मन सगल सिआनप रही ॥ करन करावनहार सुआमी नानक एट गही ॥१॥ रहाउ ॥ आपु मेटि पडे सरणाई इह मति साधू कही ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइिआ भरमु अधेरा लही ॥१॥ जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥ खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥२॥७॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥ गुर प्रसादि काहू जाते ॥१॥ रहाउ ॥ संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ रंगि तुमारै लाल

भइे है राम नाम रसि माते ॥१॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ दृसटि तुहारी हाते ॥ सोवत जागि हरि हरि हरि गाइिआ नानक गुर चरन पराते ॥२॥८॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिए नैणी ॥ सुखदाई जीअन को दाता अंमृतु जा की बैणी ॥१॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥१॥ करमु धरमु किछु उपजि न आइिए नह उपजी निरमल करणी ॥ छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥२॥९॥ देवगंधारी ५ ॥ हरि राम नामु जपि लाहा ॥ गति पावहि सुख सहज अन्नदा काटे जम के फाहा ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिए हरि संत जना पहि आहा ॥ तिन्ा परापति इेहु निधाना जिन् कै करमि लिखाहा ॥१॥ से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥ सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन् हरि हरि नामु विसाहा ॥२॥१०॥ देवगंधारी ५ ॥ मन कह अह्मकारि अफारा ॥ दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥१॥ अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥२॥११॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ सिमरि धिआइि गाइि गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥१॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ घरी न मुहतु न चसा बिलम्बहु कालु नितहि नित हेरै ॥१॥ अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥२॥१२॥ छके २ ॥ देवगंधारी ५ ॥ मन गुर मिलि नामु अराधिए ॥ सूख सहज आन्नद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिए ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइिआ फाधिए ॥ भाउ भगति गाइि गुण गोबिद जम का मारगु साधिए ॥१॥ भइिए अनुग्रहु मिटिए मोरचा अमोल पदारथु लाधिए ॥ बलिहारै नानक

लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिए ॥२॥१३॥ देवगंधारी ५ ॥ माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥१॥ पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न दृसटी आवै ॥ नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥२॥१४॥ देवगंधारी ५ ॥ चंचलु सुपनै ही उरझाइए ॥ इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइए संगि माइए ॥१॥ रहाउ ॥ कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ इेक उपाइए ॥ लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइए ॥१॥ फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइए संत दुआरै आइए ॥ करी कृपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीए समाइए ॥२॥१५॥ देवगंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुर चरना ॥ कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥ बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥१॥ सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ भइए कृपालु ठाकुरु नानक कउ परिए साध की सरना ॥२॥१६॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥ आँच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥१॥ कोटि पराध महा अकृतघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥२॥१७॥ देवगंधारी ५ ॥ गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥१॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥२॥१८॥ छके ३ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन

निहारउ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥१॥ रहाउ ॥ साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥१॥ गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ नाम निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरि धारउ ॥२॥१९॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पुरान अविलोके सिमृति ततु बीचारा ॥ दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा ॥१॥ आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥ तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥२॥२०॥ देवगंधारी महला ५ ॥ तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥१॥ रहाउ ॥ बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥१॥ सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥२॥२१॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ मोह रोग सोग तनु बाधिए बहु जोनी भरमाईऐ ॥ टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥१॥ करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥ संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥२॥२२॥ देवगंधारी महला ५ ॥ ठाकुर होइे आपि दइआल ॥ भई कलिआण अन्नद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेन्नती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ वर नारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥२॥२३॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥१॥ परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥२॥२४॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ सरब पाख राखु मुरारे ॥ आगै पाछै अंती वारे ॥१॥ जब चितवउ तब तुहारे ॥ उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥२॥ सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥३॥ मन महि राखउ एक असारे ॥ नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥४॥२५॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥ तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥१॥ सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ ॥ एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥२॥२६॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥ छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥१॥ रहाउ ॥ मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥१॥ मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ॥२॥१॥२७॥ देवगंधारी ५ ॥ दरसन नाम कउ मनु आछै ॥ भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥१॥ रहाउ ॥ किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो

गाछै ॥ साधसंगति की सरनी परीऔ चरण रेनु मनु बाछै ॥१॥ जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइि आछै ॥ आइि पड़िए नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥२॥२॥२८॥ देवगंधारी ५ ॥ अंमृता पृअ बचन तुहारे ॥ अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥१॥ रहाउ ॥ राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥१॥ दीनु दुआरै आइिए ठाकुर सरनि परिए संत हारे ॥ कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥२॥३॥२९॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि जपि सेवकु पारि उतारिए ॥ दीन दइिआल भइे प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिए ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिए ॥ प्रभ गुन गाइि बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिए ॥१॥ चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिए ॥ नानक एट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिए ॥२॥४॥३०॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥१॥ रहाउ ॥ कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥१॥ अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥२॥ मान मोह मेर तेर बिबरजित इेहु मारगु खंडे धार ॥३॥ कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥४॥१॥३१॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै पेखिए री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥१॥ रहाउ ॥ बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ तोलि न तुलीऔ मोलि न मुलीऔ कत पाईऔ मन रूचा ॥१॥ खोज असंखा अनिक तपंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥ कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि

साधू रस भूंचा ॥२॥१॥३२॥ देवगंधारी महला ५ ॥ मै बहु बिधि पेखिए दूजा नाही री कोऊ ॥ खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिए सभ लोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ अगम अगंमा कवन महिमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥ चारि आसरम चारि बरन्ना मुकति भइे सेवतोऊ ॥१॥ गुरि सबदु दृड़ाइिआ परम पदु पाइिआ दुतीअ गइे सुख होऊ ॥ कहु नानक भव सागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥२॥२॥३३॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इकै रे हरि इकै जान ॥ इकै रे गुरमुखि जान ॥१॥ रहाउ ॥ काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥१॥ जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥ बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाइे है परम निधान ॥२॥१॥३४ ॥ देवगंधारी ५ ॥ जानी न जाई ता की गाति ॥१॥ रहाउ ॥ कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥१॥ गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥ चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥२॥२॥३५॥ देवगंधारी महला ५ ॥ धिआइे गाइे करनैहार ॥ भउ नाही सुख सहज अन्नदा अनिक एही रे इेक समार ॥१॥ रहाउ ॥ सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥१॥ समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ ताकी सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥२॥३॥३६॥ देवगंधारी महला ५ ॥ उलटी रे मन उलटी रे ॥ साकत सिउ करि उलटी रे ॥ झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ काजर भरि मंदरु राखिए जो पैसै कालूखी रे ॥ दूरहु ही ते भागि गइिए है जिसु गुर मिलि छुटकी तृकुटी रे ॥१॥ मागउ दानु कृपाल कृपा निधि मेरा

मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥२॥४॥३७॥

राגु देवगंधारी महला ५ घरु ७ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जासन बासन सहज केल करुणा मै इेक अन्नत अनूपै ठाउ ॥१॥ रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥ दइिआ मइिआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥२॥१॥३८॥६॥४४॥

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु देवगंधारी महला ९ ॥ यह मनु नैक न कहिए करै ॥ सीख सिखाइि रहिए अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥ मदि माइिआ कै भइिए बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥ करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥ सुआन पूछ जिउ होइि न सूधो कहिए न कान धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥ देवगंधारी महला ९ ॥ सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥ आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥ मृग तृसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥ देवगंधारी महला ९ ॥ जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिए चीत ॥ अंति कालि संगी नह कोऊ इिह अचरज है रीति ॥१॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिए नीत ॥ नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥

दूतन संगरीआ ॥ भुइअंगनि बसरीआ ॥ अनिक उपरीआ ॥१॥ तउ मै हरि हरि करीआ ॥ तउ सुख सहजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ मिथन मोहरीआ ॥ अन कउ मेरीआ ॥ विचि घूमन घिरीआ ॥२॥ सगल बटरीआ ॥ बिरख इक तरीआ ॥ बहु बंधहि परीआ ॥३॥ थिरु साध सफरीआ ॥ जह कीरतनु हरीआ ॥ नानक सरनरीआ ॥४॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिहागड़ा महला ९ ॥ हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥ जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥ छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥ रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥ अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥ नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥ अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइए ॥ सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइए ॥३॥१॥२॥

रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीइे गुरमुखि नामु अमोले राम ॥ हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा

मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीइे अनत न काहू डोले राम ॥ मन चिंदिअड़ा फलु पाइिआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥१॥ गुरमति मनि अंमृतु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीइे मुखि अंमृत बैण अलाइे राम ॥ अंमृत बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीइे मनि सुणीऐ हरि लिव लाइे राम ॥ चिरी विछुन्ना हरि प्रभु पाइिआ गलि मिलिआ सहजि सुभाइे राम ॥ जन नानक मनि अनदु भइिआ है मेरी जिंदुड़ीइे अनहत सबद वजाइे राम ॥२॥ सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीइे कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीइे हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीइे मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥ नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीइे वडभागी नामु धिआवै राम ॥३॥ करि किरपा प्रभ आइि मिलु मेरी जिंदुड़ीइे गुरमति नामु परगासे राम ॥ हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीइे जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ गुरि पूरै मेलाइिआ मेरी जिंदुड़ीइे हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीइे जन नानक नामि बिगासे राम ॥४॥१॥ रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ अंमृतु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीइे अंमृतु गुरमति पाइे राम ॥ हउमै माइिआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीइे हरि अंमृति बिखु लहि जाइे राम ॥ मनु सुका हरिआ होइिआ मेरी जिंदुड़ीइे हरि हरि नामु धिआइे राम ॥ हरि भाग वडे लिखि पाइिआ मेरी जिंदुड़ीइे जन नानक नामि समाइे राम ॥१॥ हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीइे जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥ हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीइे जिउ चातृकु जल बिनु टेरे राम ॥ सतिगुर सरणी जाइि पउ मेरी जिंदुड़ीइे गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ जन नानक हरि मेलाइिआ मेरी जिंदुड़ीइे घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥२॥ मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीइे बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइिआ मेरी जिंदुड़ीइे तिउ मनमुख सभि वसि काले राम ॥ जो मोहि माइिआ चितु लाइिदे मेरी जिंदुड़ीइे से मनमुख मूड़

बिताले राम ॥ जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीइे गुर नानक हरि रखवाले राम ॥३॥ हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीइे धुरि भाग वडे हरि पाइिआ राम ॥ हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीइे गुर खेवट सबदि तराइिआ राम ॥ हरि हरि पुरखु दइिआलु है मेरी जिंदुड़ीइे गुर सतिगुर मीठ लगाइिआ राम ॥ करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइिआ राम ॥४॥२॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जगि सुकृतु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीइे हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥ हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीइे जपि हरि हरि नामु उधारे राम ॥ सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीइे मलु गुरमुखि नामि उतारे राम ॥ वड पुन्नी हरि धिआइिआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥१॥ जो हरि नामु धिआइिदे मेरी जिंदुड़ीइे तिना पंचे वसगति आइे राम ॥ अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीइे गुरु सतिगुरु अलखु लखाइे राम ॥ गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीइे हरि मिलिआ भुख सभ जाइे राम ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीइे जन नानक हरि गुण गाइे राम ॥२॥ हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीइे परद्रोही ठग माइिआ राम ॥ वडभागी गुरु पाइिआ मेरी जिंदुड़ीइे गुरि पूरै गति मिति पाइिआ राम ॥ गुरि अंमृतु हरि मुखि चोइिआ मेरी जिंदुड़ीइे फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइिआ राम ॥ जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीइे तिन के सभ दुख गवाइिआ राम ॥३॥ अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीइे जितु जपिअै पाप गवाते राम ॥ पतित पवित्र गुरि हरि कीइे मेरी जिंदुड़ीइे चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥ हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीइे हरि अंमृति हरि सरि नाते राम ॥ अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीइे जन नानक खिनु हरि राते राम ॥४॥३॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ हउ बलिहारी तिन् कउ मेरी जिंदुड़ीइे जिन् हरि हरि नामु अधारो राम ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइिआ मेरी जिंदुड़ीइे बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥ जिन इिक मनि हरि धिआइिआ मेरी जिंदुड़ीइे तिन संत जना जैकारो

राम ॥ नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीइे सभि दूख निवारणहारो राम ॥१॥ सा रसना धनु धन्नु है मेरी जिंदुड़ीइे गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीइे हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीइे जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥ गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीइे जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥२॥ ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीइे जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीइे जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीइे जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीइे हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥३॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीइे सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीइे नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ वणु तृणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीइे मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ नानक ते हरि दरि पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीइे जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥४॥४॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिए मेरी जिंदुड़ीइे ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीइे से अंति गइे पछुताणे राम ॥ हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीइे जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीइे हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥१॥ सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीइे जो हरि हरि नामु दृड़ावै राम ॥ हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीइे मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीइे जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीइे जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥२॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीइे सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीइे तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ हरि

निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥३॥ सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥ जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥ गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥४॥५॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम ॥ हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥ मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥ जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥१॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥ नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥२॥ हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि तृसना जाइ राम ॥ जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाइ राम ॥ जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाइ राम ॥ वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाइ राम ॥३॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥ ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥४॥६॥ छका १ ॥

बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १ — ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का इकु अचंभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआइ राम ॥ हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु

मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाइे राम ॥ आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥ इिकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाइे इिकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाइे ॥ सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआइे ॥१॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥ जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥ हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥२॥ कर जोड़िहु संत इिकत्र होइि मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इिहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावइे ॥ जिसु होइि कृपालु दइिआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावइे ॥ भागु मसतकि होइि जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥३॥ दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइिअड़ा घरि आइे राम ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाइे राम ॥ सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइिआ ॥ मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइिआ ॥ जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाइे ॥ जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइिआ हरि पाइिअड़ा घरि आइे ॥४॥१॥ रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुंदर सोभा लाल गोपाल दइिआल की अपर अपारा राम ॥ गोपाल दइिआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥ नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ गिआन अंजन नाम बिंजन भइे सगल सीगारा ॥ नानकु पइिअंपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा ॥१॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी

न धीजीअै ॥ खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीअै ॥ आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीअै इकु तिलै ॥ नानकु पइअंपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥२॥ सेज इेक पृउ संगि दरसु न पाईअै राम ॥ अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईअै राम ॥ निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥ भ्रम भीति खोईअै सहजि सोईअै प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥ गृहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईअै ॥ नानकु पइअंपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईअै ॥३॥ संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥ इछ पुन्नी मनि साँति तपति बुझाइआ राम ॥ सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥ भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥ नानकु पइअंपै संत जंपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥४॥२॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥ अंमृत बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥ समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम् मना ॥ मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥१॥ साधह सरणी पाईअै हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ पतिता पुनीता होहि तिन् संगि जिन् बिधाता पाइआ ॥ नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥ रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥२॥ जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ बहुतु खजाना तिन्न पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥ इेकु जानहि इेकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना एमाहा ॥ बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥३॥ नानक

सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥ गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥ दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ वजी वधाई मनि साँति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुन्नी हमारी ॥४॥३॥

बिहागड़ा महला ५ घरु २ ੧ੴ सतिनामु गुर प्रसादि ॥

वधु सुखु रैनड़ीए पृअ प्रेमु लगा ॥ घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥ पग धूरि बाँछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥ पृअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥ गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥१॥ मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ मनि पृअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥ हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ बड पुरख पूरन गुण संपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ बिनवंति नानक सुणि मंत्र सखीहे हरि नामु नित नित नित जपह ॥२॥ हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥ राँड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे ॥ नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ ॥ सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥ मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा पृअ बचन मीठे भाणे ॥ बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥३॥ तितु गृहि सोहिलड़े कोड अन्नदा ॥ मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमान्नदा ॥ हरि कंत अन्नत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥ प्रभि कृपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो ॥ जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥४॥१॥४॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥

करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥१॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिन्नीआ ॥ हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ इेक अगम अपारो ॥ बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥२॥ सुणि वडभागीआ हरि अंमृत बाणी राम ॥ जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ बिनवंति नानक सदा गाईअै पवित्र अंमृत बाणी ॥३॥ मन तन गलतु भइे किछु कहणु न जाई राम ॥ जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ मिलि ब्रहम जोती एति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ जलि थलि महीअलि इेकु रविआ नह दूजा दृसटाइआ ॥ बणि तृणि तृभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि इेह बणत बणाई ॥४॥२॥५॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ ताणु तनु खीन भइिआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ प्रभ मिलहु पिआरे मइिआ धारे करि दइिआ लड़ि लाइि लीजीअै ॥ देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीअै ॥ समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥१॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीअै ॥ अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीअै ॥ दीन दइिआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥ नानक चातृक हरि

बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥२॥ अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ आनन्द अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै ॥ अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥ बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥३॥ कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ हरि नामु जपत सोहंत प्राणी ता की महिमा कित गना ॥ हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥ सुभ दिवस आइे गहि कंठि लाइे प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥४॥३॥६॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ अन काइे रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ पाप कमावदिआ तेरा कोइि न बेली राम ॥ कोइे न बेली होइि तेरा सदा पछोतावहे ॥ गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ तरवर विछुन्ने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इिकेली ॥ बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥१॥ तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ लेखा धरम भइिआ तिल पीड़े घाणी राम ॥ किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइिआ ॥ महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइिआ ॥ इिकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥ बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥२॥ बीचु न कोइि करे अकृतघणु विछुड़ि पइिआ ॥ आइे खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइिआ ॥ पकड़े चलाइिआ अपणा कमाइिआ महा मोहनी रातिआ ॥ गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थंम्ह गलि लातिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइि गिआनु पछुतापिआ ॥ बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥३॥ तुझ बिनु को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥ पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ पतित उधारन सरनि सुआमी कृपा निधि दइिआला ॥ अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इिकु नामु देहि अधारा

॥ बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥४॥ सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ गहि कंठि लाइे सहजि सुभाइे आदि अंकुरु आइआ ॥ बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ॥५॥४॥७॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ सुनहु बेन्नतीआ सुआमी मेरे राम ॥ कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥ दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥ सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना ॥ सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥ अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥१॥ तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥ माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥ लोभि मोहि बिकारि बाधिए अनिक दोख कमावने ॥ अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने ॥ करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥२॥ तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ पालहि अकिरतघना पूरन दृसटि तेरी राम ॥ अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥ रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥ तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥ नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥३॥ जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम ॥ साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम ॥ गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआण मै परगट भइे ॥ सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लइे ॥ छोडि चिंत अचिंत होइे बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥ नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण निधि गाइआ ॥४॥५॥८॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥ तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥ संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥ पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥ बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ

संसारी ॥१॥ राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥ बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥ बिनवंत नानक जिन साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥२॥ नरपति जाणि ग्रहिए सेवक सिआणे राम ॥ सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥ हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥ बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥ हउ हउ करत न तृसन बूझै नह काँम पूरन गिआने ॥ बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥३॥ धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ भुजा गहि काढि लीए साधू संगु दीना राम ॥ साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ महा धरम सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ रसना अराधै इेकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ नानक जिस नो हरि मिलाइे सो सरब गुण परबीना ॥४॥६॥९॥

बिहागड़े की वार महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥ गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥ नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥१॥ मः ३ ॥ सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइि ॥ सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइि ॥ नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइिआ ॥ सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइिआ ॥ तिस दी तू भगति थाइि पाइिहि जो तुधु मनि भाइिआ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइिआ ॥ सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनाँ की पैज रखदा आइिआ ॥१॥ सलोक मः ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइि ॥ नामे कारज सिधि है सहजे होइि सु होइि ॥ गुरमति मति अचलु है चलाइि न सकै कोइि ॥ भगता

का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि तृसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥ नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥१॥ मः ३ ॥ तिन् भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥ जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥ जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥ सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥२॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ साजन मनि आनन्दु है गुर का सबदु वीचार ॥ अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥१॥ मः ३ ॥ गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥ जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ तू भन्नण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥३॥ सलोक मः ३ ॥ मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ सबदै सादु न पाइए मनहठि किआ गुण गाइ ॥ नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥१॥ मः ३ ॥ आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाइे ॥ मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाइे ॥ सतिगुर कै भै भंनि न घड़िए रहै

अंकि समाइे ॥ अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाइे ॥ कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाइे ॥ चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आइे ॥ सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाइे ॥ जीवतु मरै मरै फुनि जीवै ताँ मोखंतरु पाइे ॥ धुरि करमु न पाइिए पराणी विणु करमा किआ पाइे ॥ गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाइे ॥ नानक सतिगुरु तद ही पाइे जाँ विचहु आपु गवाइे ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥ हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥ जिनि हरि धिआइिआ तिस नो सरब कलिआण होइे नित संत जना की संगति जाइि बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥ सभि दुख भुख रोग गइे हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥ हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥४॥ सलोक मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइिआ ॥ नानक रसना सबदि रसाइि जिनि हरि हरि मंनि वसाइिआ ॥१॥ मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइि पिआरिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराइे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाइे ॥ हरि इिकना मारगि पाइे आपे हरि इिकना उझड़ि पाइे ॥ हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाइे ॥ गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाइे ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ जे घरि घरि ह्मढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥१॥ मः ३ ॥ नानक तरवरु इेकु फलु दुइि पंखेरू आहि ॥ आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥ बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जंमाइि पीसावै ॥ आपि पकावै आपि भाँडे

देहि परोसै आपे ही बहि खावै ॥ आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥ आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥ जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ करम धरम सभि बंधना पाप पुन्न सनबंधु ॥ ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥ जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥ नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥१॥ मः ४ ॥ अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥ बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥ सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥२॥ पउड़ी ॥ जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जाँ अवरु न दूजा कीआ ॥ फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अंमृतु पीआ ॥ आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥ सदा अन्नदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥ अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥ नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥१॥ मः ३ ॥ कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥ विणु करमै किनै न पाइए भउकि मुइे बिललाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ नानक नदरी पाईऐ आपे लइे मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥ आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ आपे पुन्नु सभु आपि कराइे आपि अलिपतु वरतीजै ॥ आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥ गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ मनु कठोरु सबदि भेदि तूं साँति वसै मनि आइ ॥ साँती विचि कार कमावणी सा खसमु पाइे थाइ ॥ नानक कामि क्रोधि किनै न पाइए पुछहु गिआनी जाइ ॥१॥ मः ३ ॥

मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥ नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥ आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ आपि लहाइे करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥ आपे करे कराइे करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइि ॥ नामु पदारथु पाईअै अचिंतु वसै मनि आइि ॥ जनम मरन दुखु कटीअै हउमै ममता जाइि ॥ उतम पदवी पाईअै सचे रहै समाइि ॥ नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइि ॥१॥ मः ३ ॥ नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइि ॥ गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइि ॥ नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइि ॥ नानक सतिगुरु पाइिआ करमि परापति होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥ आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥ आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥ आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥ जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥१०॥ सलोकु मः ४ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥ मः ३ ॥ इिकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥ आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ इिक थै पड़ि बुझै सभु आपे इिक थै आपे करे इिआणे ॥ इिकना

अंदरि महलि बुलाइे जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥११॥ सलोकु मरदाना १ ॥ कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥ मजलस कूड़े लब की पी पी होइि खुआरु ॥ करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥ गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥ गुरमुखि पाईअै नानका खाधै जाहि बिकार ॥१॥ मरदाना १ ॥ काइिआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥ मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाइे जमकालु ॥ इितु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ नानक इिहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥२॥ काँयाँ लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार ॥ सतसंगति सिउ मेलापु होइि लिव कटोरी अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥३॥ पउड़ी ॥ आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥ आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥ आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥ आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥१२॥ सलोकु मः ३ ॥ इेहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइिआ मोहु जलावै ॥ गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥ नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जंमै होइि खुआरु ॥१॥ मः ३ ॥ प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइि ॥ नानक सतिगुरि मिलिअै मेरी पिआस गई पिरु पाइिआ घरि आइि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइिआ ॥ आपे दस अठ वरन उपाइिअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइिआ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइिआ ॥ आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ आपे जिना बुझाइे गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइिआ ॥१३॥ सलोकु मः ५ ॥ हरि नामु न सिमरहि साधसंगि तै तनि उडै खेह ॥ जिनि कीती तिसै न जाणई

नानक फिटु अलूणी देह ॥१॥ मः ५ ॥ घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु ॥ आपे संजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥ आपि दइआलु होइ भउ खंडनु आपि करै सभु दानु ॥ जिस नो गुरमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु ॥ जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥१४॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ॥ सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुरू फुरमाइआ कारी इेह करेहु ॥ गुरू दुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु ॥ साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥ हरि का नामु अंमृतु है दारू इेहु लाइेहु ॥ सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥ नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥ आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥ आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥ आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥१५॥ सलोक मः ३ ॥ माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥ आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥ झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥१॥ मः ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ जा तिन्हि सवालिआ ताँ सवि रहिआ जगाए ताँ सुधि होइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥ हरि

जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥ सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥ सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥१६॥ सलोक ॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइि ॥ अैसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइि ॥१॥ मः ३ ॥ किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइि ॥ जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइि ॥ मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइि ॥ गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइि ॥ नानक अैसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ जा आपि कृपालु होवै हरि सुआमी ता आपणाँ नाउ हरि आपि जपावै ॥ आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणाँ सेवकु आपि हरि भावै ॥ आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ धरम राइि है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥ जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥१७॥ सलोक मः ३ ॥ रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइिआ जाइि ॥ अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइि ॥ कीमति किनै न पाईआ कितै न लइिआ जाइि ॥ गुर कै सबदि भेदिआ इिन बिधि वसिआ मनि आइि ॥ नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइि ॥ आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइि ॥१॥ मः ३ ॥ इे मन इिहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइि ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइि ॥ खाधै खरचिअै तोटि न आवई सदा सदा एहु देइि ॥ सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइि ॥ नानक गुरमुखि पाईअै जा कउ नदरि करेइि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥ आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि ॥ जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुन्नाहरि ॥ एथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ बैठा ताड़ी लाइि आपि सभ दू ही बाहरि ॥ आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥१८॥ सलोक मः ३ ॥ हउमै विचि जगतु

मुआ मरदो मरदा जाइ ॥ जिचरु विचि दंमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ गिआनी होइ सु चेतन्नु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ नानक इथै कमावै सो मिलै अगै पाइ जाइ ॥१॥ मः ३ ॥ धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिव लाइ ॥ दमि दमि सदा समालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥ जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥ नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे दानाँ बीनिआ आपे परधानाँ ॥ आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनाँ ॥ आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनाँ ॥ कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥ उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥१९॥ सलोक मः १ ॥ कली अंदरि नानका जिन्नाँ दा अउतारु ॥ पुतु जिनूरा धीअ जिन्नूरी जोरू जिन्ना दा सिकदारु ॥१॥ मः १ ॥ हिंदू मूले भूले अखुटी जाँही ॥ नारदि कहिआ सि पूज कराँही ॥ अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ एहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ भगत रते रंगि इक कै पूरा वेसाहु ॥ अंमृतु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥ सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥२०॥ सलोक मः ३ ॥ सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥ आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥ नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥ होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥२१॥१॥ सुधु ॥

੧ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥

अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ ॥ जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥१॥ हउ वारी वंञा खन्नीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥१॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलिए रुखड़ा अंमृतु जा का नाउ ॥ जिन पीआ ते तृपत भइे हउ तिन बलिहारै जाउ ॥२॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआँ नालि ॥ तिखा तिहाइिआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥३॥ नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥४॥१॥ वडहंसु महला १ ॥ गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइि ॥ जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइि ॥१॥ मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥१॥ रहाउ ॥ करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइि ॥ माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइि ॥२॥ राहु दसाई न जुलाँ आखाँ अंमड़ीआसु ॥ तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥३॥ नानक इेकी बाहरा दूजा नाही कोइि ॥ तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइि ॥४॥२॥ वडहंसु महला १ घरु २ ॥ मोरी रुण झुण लाइिआ भैणे सावणु आइिआ ॥ तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइिआ ॥ तेरे दरसन विटहु खन्नीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ चूड़ा भन्नु पलम्घ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥ इेते वेस

करेदीझे मुंधे सहु रातो अवराहा ॥ ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥ जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह ऐकि न भावा ॥ माठि गुंदाइी पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥ अगै गई न मन्नीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ मै रोवंदी सभु जगु रुना रुन्नड़े वणहु पंखेरू ॥ इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥ आउ सभागी नीदड़ीझे मतु सहु देखा सोइ ॥ तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइिआ विडाणा ॥१॥३॥

वडहंसु महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ इहि जगतु भरमि भुलाइिआ विरला बूझै कोइ ॥१॥ जपि मन मेरे तू ऐको नामु ॥ सतिगुरि दीआ मो कउ एहु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥ मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥२॥ इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥३॥ भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥४॥१॥ वडहंसु महला ३ ॥ नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ॥ नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥१॥ मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ ऐको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥२॥ जिनि जिहवा हरि रसु न चखिए सा जिहवा जलि जाउ ॥ अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥३॥ सभना नदरि ऐक है आपे फरकु करेइ ॥ नानक

सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥४॥२॥ वडहंसु महला ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥१॥ मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥ सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु इेकु है आपे देइ ता को पाइे ॥ बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाइे ॥२॥ मेरी मेरी करदे घटि गइे तिना हथि किहु न आइिआ ॥ सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइिआ ॥३॥ आसा मनसा इेहु सरीरु है अंतरि जोति जगाइे ॥ नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराइे ॥४॥३॥ वडहंसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइि ॥ सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइि ॥१॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइि ॥ सतगुरि मो कउ हरि दीआ बुझाइि ॥१॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइि ॥ दूजै भाइि करूपी दूखु पावहि आगै जाइि ॥२॥ गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइि ॥ अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइि ॥३॥ सभना का भतारु इेकु है सुआमी कहणा किछू न जाइि ॥ नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइिअनु लाइि ॥४॥४॥ वडहंसु महला ३ ॥ अंमृत नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइिआ ॥ सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइिआ ॥१॥ हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइिआ ॥ पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइिआ मोह पसारा ॥ महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥२॥ किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥ गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥३॥ सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ साचै नाइि रते बैरागी पाइिनि मोख दुआरा ॥४॥ इेको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ नानक इिकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइिआला ॥५॥५॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥ गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥१॥

गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥ सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जाति पति सचु सोइि ॥ गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइि ॥२॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सो होइि ॥ गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइि ॥३॥ गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥ गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥४॥६॥ वडह्मसु महला ३ ॥ रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइि ॥ मनु तृपतिआ हरि नामु धिआइि ॥१॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ इेक लिव लाइि ॥ मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइि ॥२॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइि ॥ नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइि ॥३॥ नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ गुर की बाणी सहज बैरागु ॥४॥७॥ वडह्मसु महला ३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइिआ जाइि ॥ सचै सबदि सचि समाइि ॥१॥ इे मन नामु निधानु तू पाइि ॥ आपणे गुर की मंनि लै रजाइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइि ॥ निरमलु नामु वसै मनि आइि ॥२॥ भरमे भूला फिरै संसारु ॥ मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥३॥ नानक से वडभागी जिन हरि नामु धिआइिआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइिआ ॥४॥८॥ वडह्मसु महला ३ ॥ हउमै नावै नालि विरोधु है दुइि न वसहि इिक ठाइि ॥ हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइि ॥१॥ हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइि ॥ हुकमु मन्नहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइि ॥ रहाउ ॥ हउमै सभु सरीरु है हउमै एपति होइि ॥ हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइि ॥२॥ हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइि ॥ हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइि ॥३॥ नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइि ॥ सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइि ॥४॥९॥१२॥

वडह्मसु महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सेज इेक इेको प्रभु ठाकुरु ॥ गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥१॥ मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥

गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥१॥ रहाउ ॥ मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥ हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥२॥ जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥३॥ हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥४॥१॥ वडहंसु महला ४ ॥ मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥ हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥१॥ हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥१॥ रहाउ ॥ मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥ तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥२॥ जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥ से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥३॥ नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥४॥ तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥ मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥५॥२॥

वडहंसु महला ४ घरु २ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥ हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥ भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआइे ॥ नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाइे ॥१॥ हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ नानक धनु धन्नु धन्नु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥२॥ हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीअै ॥ आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीअै ॥३॥ जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवाँ ॥ नित नित सेव करी

हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाइे ॥ धनु धन्नु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाइे ॥४॥ गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछाँ करि साँझी हरि गुण गावाँ ॥ गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥ नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥५॥ हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ जिस नो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥ नानक हरि जन हरि इके होइे हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥६॥१॥३॥

वडह्मसु महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अति ऊचा ता का दरबारा ॥ अंतु नाही किछु पारावारा ॥ कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥ इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥१॥ सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥१॥ रहाउ ॥ लाख भगत जा कउ आराधहि ॥ लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥ लाख जोगीसर करते जोगा ॥ लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥२॥ घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ है कोई साजणु परदा तोरा ॥ करउ जतन जे होइि मिहरवाना ॥ ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥३॥ फिरत फिरत संतन पहि आइिआ ॥ दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइिआ ॥ महलि बुलाइिआ प्रभ अंमृतु भूंचा ॥ कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥४॥१॥ वडह्मसु महला ५ ॥ धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥१॥ जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥१॥ रहाउ ॥ सचु मंत्रु तुमारा अंमृत बाणी ॥ सीतल पुरख दृसटि सुजाणी ॥२॥ सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥ आइि न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥३॥ तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥४॥२॥ वडह्मसु महला ५ ॥ तू बेअंतु को विरला जाणै ॥ गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥१॥ सेवक की अरदासि

पिआरे ॥ जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥१॥ रहाउ ॥ दइिआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥२॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ इित उत देखउ एट तुमारी ॥३॥ मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥ नानक साधू देखि मनु राता ॥४॥३॥ वडह्मसु मः ५ ॥ अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ दानु देइि साधू की धूरा ॥१॥ करि किरपा प्रभ दीन दइिआला ॥ तेरी एट पूरन गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥२॥ जिस नो नदरि करे सो धिआइे ॥ आठ पहर हरि के गुण गाइे ॥३॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ सरनि परिए नानक हरि दुआरे ॥४॥४॥ वडह्मसु महला ५ ॥ तू वड दाता अंतरजामी ॥ सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥१॥ मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥ मनु निरमलु होइि संता धूरे ॥२॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥३॥ करि किरपा तेरे गुण गावा ॥ नानक नामु जपत सुखु पावा ॥४॥५॥ वडह्मसु महला ५ ॥ साधसंगि हरि अंमृतु पीजै ॥ ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥१॥ वडभागी गुरु पूरा पाईअै ॥ गुर किरपा ते प्रभू धिआईअै ॥१॥ रहाउ ॥ रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भइे निहाला ॥२॥ जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ हरि गुण गाइि निरमल मनु करणा ॥३॥ घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ नानक नामु पाइिआ प्रभु तूठा ॥४॥६॥ वडह्मसु महला ५ ॥ विसरु नाही प्रभ दीन दइिआला ॥ तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥१॥ रहाउ ॥ जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥ जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥१॥ तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥२॥ आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥ जिस तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥३॥ तू इेको साहिबु अवरु न होरि ॥ बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥४॥७॥ वडह्मसु मः ५ ॥ तू जाणाइिहि ता कोई जाणै ॥ तेरा दीआ नामु वखाणै ॥१॥ तू अचरजु कुदरति

तेरी बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥ तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ हुकमे जंमणु हुकमे मरणा ॥२॥ नामु तेरा मन तन आधारी ॥ नानक दासु बखसीस तुमारी ॥३॥८॥

वडहंसु महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ मेरै अंतरि भुख न उतरै अंमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥१॥ सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ एहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चातृकु जल कउ बिललाता ॥ हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥२॥ हउ भई उडीणी कंत कउ अंमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥३॥ मै सभि सीगार बणाइआ अंमाली बिनु पिर कामि न आइे ॥ जा सहि बात न पुछीआ अंमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाइे ॥ धनु धनु ते सोहागणी अंमाली जिन सहु रहिआ समाइे ॥ हउ वारिआ तिन सोहागणी अंमाली तिन के धोवा सद पाइे ॥४॥ जिचरु दूजा भरमु सा अंमाली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अंमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ मै सरब सुखा सुख पाइिआ अंमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥ जन नानक हरि रंगु माणिआ अंमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥५॥१॥६॥

वडहंसु महला ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥१॥ मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥ दासनि दासा होइि रहहि ता पावहि

सचा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइि ॥ बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइि ॥२॥ सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥ अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥३॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरि नाउ ॥ जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाइे थाउ ॥४॥ आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥५॥ अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइि ॥ सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥६॥ सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥७॥ नानक सचै मेले ता मिले आपे लइे मिलाइि ॥ जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइि ॥८॥१॥

वडहंसु महला ३ ॥ मनूआ दह दिस धावदा एहु कैसे हरि गुण गावै ॥ इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥१॥ वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥ राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥ गुरमती आपै आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥२॥ इे मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥३॥ हम नीच से ऊतम भइे हरि की सरणाई ॥ पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥४॥ बिखु से अंमृत भइे गुरमति बुधि पाई ॥ अकहु परमल भइे अंतरि वासना वसाई ॥५॥ माणस जनमु दुलम्भु है जग महि खटिआ आइि ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइि ॥६॥ मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइिआ ॥ हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइिआ ॥७॥ मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइिआ ॥ नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन् पाइिआ ॥८॥२॥

वडहंसु महला १ छंत   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काइिआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥ जब साच अंदरि होइि साचा

तामि साचा पाईऐ ॥ लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥१॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ अंमृतु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ ॥ नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥ सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ ॥ नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ ॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥२॥ वारी खसमु कढाइे किरतु कमावणा ॥ मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥ नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा ॥ जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥ जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा ॥ वारी खसमु कढाइे किरतु कमावणा ॥३॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥ किछु पुन्न दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥ नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥४॥१॥ वडहसु महला १ ॥ करहु दइिआ तेरा नामु वखाणा ॥ सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा ॥ सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धंधै लाईआ ॥ इकि तुझ ही कीइे राजे इकना भिख भवाईआ ॥ लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा इेतु भरमि भुलाणा ॥ सदा दइिआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥१॥ नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ दूखु गइिआ सुखु आइ समाणा ॥ गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥ सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ माइिआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥ इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइिआ तिसु जाणा ॥ नामु तेरा सदा साचा सोइि मै मनि भाणा ॥२॥ तेरा वखतु सुहावा अंमृतु तेरी बाणी ॥ सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥ साउ प्राणी तिना लागा जिनी अंमृतु पाइिआ ॥ नामि तेरै जोइि राते नित चड़हि सवाइिआ ॥ इकु करमु धरमु न होइि संजमु जामि न इेकु पछाणी ॥ वखतु सुहावा सदा तेरा अंमृत तेरी बाणी ॥३॥ हउ

बलिहारी साचे नावै ॥ राजु तेरा कबहु न जावै ॥ राजो त तेरा सदा निहचलु इेहु कबहु न जावइे ॥ चाकरु त तेरा सोइि होवै जोइि सहजि समावइे ॥ दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवइे ॥ हउ बलिहारी सदा होवा इेक तेरे नावइे ॥४॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ जपहि त साचा इेकु मुरारे ॥ साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥ भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि इेहु चुकावहे ॥ गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥५॥ वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ किउ करि करउ बेन्नती हउ आखि न जाणा ॥ नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥ साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ दूख भूख संसारि कीइे सहसा इेहु चुकावहे ॥ बिनवंति नानकु जाइि सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥६॥ तेरे बंके लोइिण दंत रीसाला ॥ सोहणे नक जिन लम्मड़े वाला ॥ कंचन काइिआ सुइिने की ढाला ॥ सोवन्न ढाला कृसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ ह्मस ह्मसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ बंके लोइिण दंत रीसाला ॥७॥ तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ तरला जुआणी आपि भाणी इिछ मन की पूरीइे ॥ सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरइे ॥ स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥ बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥८॥२॥

वडह्मसु महला ३ छंत   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आपणे पिर कै रंगि रती मुईइे सोभावंती नारे ॥ सचै सबदि मिलि रही मुईइे पिरु रावे भाइि पिआरे ॥ सचै भाइि पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइिआ ॥ आपु गवाइिआ ता पिरु पाइिआ गुर कै सबदि समाइिआ ॥ सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥१॥ निरगुणवंतड़ीइे पिरु देखि हदूरे राम ॥ गुरमुखि जिनी

राविआ मुईइे पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥ पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि इेको जाता ॥ धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे ॥ नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥२॥ सोहागणी जाइि पूछहु मुईइे जिनी विचहु आपु गवाइिआ ॥ पिर का हुकमु न पाइिए मुईइे जिनी विचहु आपु न गवाइिआ ॥ जिनी आपु गवाइिआ तिनी पिरु पाइिआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइिआ ॥ नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइिआ ॥३॥ हउमै मारि मुईइे तू चलु गुर कै भाइे ॥ हरि वरु रावहि सदा मुईइे निज घरि वासा पाइे ॥ निज घरि वासा पाइे सबदु वजाइे सदा सुहागणि नारी ॥ पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥ हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाइे ॥ नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाइे ॥४॥१॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥ अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥१॥ गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाइे राम ॥ आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाइे राम ॥ लाहा परथाइे हरि मंनि वसाइे धनु खेती वापारा ॥ हरि नामु धिआइे मंनि वसाइे बूझै गुर बीचारा ॥ मनमुख खेती वणजु करि थाके तृसना भुख न जाइे ॥ नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाइे ॥२॥ हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥ मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥ साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि

नामु सोहागो ॥ नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥३॥ खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥ गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ भउ भंजनु पाइिआ आपु गवाइिआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥४॥२॥ वडहंसु महला ३ ॥ मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाइे ॥ सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाइे ॥ दूजै भाइि भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥ कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥१॥ मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥ जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥ मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइि खुआई ॥ बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥ नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥२॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइि कै इिकि सचि लगे वापारा ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ मनमुख माइिआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ नानक माणस जनमु दुलम्भु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥३॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥ इिक कामणि हितकारी माइिआ मोहि पिआरी मनमुख सोइि रहे अभागे ॥ नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥४॥३॥ वडहंसु महला ३ ॥ रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥

गुण महि गुणी समाइे जिसु आपि बुझाइे लाहा भगति सैसारे ॥ बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो इेतु वापारि लाइे ॥ रतन पदारथ वणजीअहि जाँ सतिगुरु देइि बुझाइे ॥१॥ माइिआ मोहु सभु दुखु है खोटा इिहु वापारा राम ॥ कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥ बहु वधहि विकारा सहसा इिहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ आवण जाणा कदे न चूकै माइिआ मोह पिआरा ॥ माइिआ मोहु सभु दुखु है खोटा इिहु वापारा ॥२॥ खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइिआ ॥ बिखिआ माइिआ जिनि जगतु भुलाइिआ साचा नामु न भाइिआ ॥ मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥३॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम ॥ जितु भावै तितु लाइिसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥ जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ गुर परसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥४॥४॥ वडह्मसु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥ अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ नदरि करे सोई सचु पाइे गुर कै सबदि वीचारा ॥ नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइिआ साचै के वापारा ॥१॥ ह्उमै माइिआ मैलु है माइिआ मैलु भरीजै राम ॥ गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥ रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ अंतरि खूहटा अंमृति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥ जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥२॥ पंडित जोतकी सभि

पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥ माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिष्टा माहि समाई ॥ जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुझे गावारा ॥३॥ माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥ दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाइे ॥ नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाइे ॥४॥५॥ वडहंसु महला ३ ॥ इे मन मेरिआ आवा गउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥ आपे सचा बखसि लइे फिरि होइि न फेरा राम ॥ फिरि होइि न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥ नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥ माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ जिनि सृसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै साँति न आई ॥ नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥२॥ इेहु जगु जलता देखि कै भजि पइे हरि सरणाई राम ॥ अरदासि करीं गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥ रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि इेको जाता ॥ जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ नानक तिस नो सबदु बुझाइे जो जाइि पवै हरि सरणाई ॥३॥ जो हरि मति देइि सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ अंतरि बाहरि इेकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ दरि साचै सदा है साचा साचै

सबदि सुभाखिआ ॥ घर महि निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥४॥६॥

वडहंसु महला ४ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥ ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ साँति पाई ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥१॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ हरि नामो हरि नामु दृड़ाइे जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥२॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाइे ॥ मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाइे ॥ हरि हरि कृपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥३॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ कहु नानक हरि आपि मिलाइे मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥४॥१॥ वडहंसु महला ४ ॥ हउ गुर बिनु हउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ जिसु कारणि हउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि

पाइआ ॥ इेक दृष्टि हरि इेको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ ह्यउ गुर बिनु ह्यउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥१॥ जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाइे राम ॥ तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाइे राम ॥ हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ ॥ तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाइे ॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाइे ॥२॥ ह्यउ वारी ह्यउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ हरि नामो हरि नामु सुणाइे मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवाँ ॥ हरि हरि कृपा करे सुखदाता गुरमुखि अंमृतु पीवाँ ॥ हरि आपे सरधा लाइि मिलाइे हरि आपे आपि सवारे ॥ ह्यउ वारी ह्यउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥३॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥ जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ बहुतु सिआणप लइिआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥४॥२॥ वडह्यसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइिआ राम ॥ तिमर अगिआनु गवाइिआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइिआ राम ॥ गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइिआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ सतिगुर सेवि परम पदु पाइिआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइिआ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइिआ ॥१॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइिआ ॥ जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइिआ ॥ धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ मेरा सतिगुरु मेरा

सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥२॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु बृथा गवाइआ राम ॥ निहफलु जनमु तिन बृथा गवाइआ ते साकत मुइे मरि झूरे ॥ घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥३॥ हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेन्नती राम ॥ गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ हरि हरि सतिगुर करह भगती जाँ हरि प्रभु किरपा धारे ॥ मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्ारे ॥ कहु नानक गुरि नामु दृड़्हाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेन्नती ॥४॥३॥ वडह्सु महला ४ ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ पाइि लगह नित करह बिन्नती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥१॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे ह्उमै पापा राम ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥ हरि प्रभि कृपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे ह्उमै पापा ॥२॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥ मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भइे सरीरा ॥ अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गंभीरा ॥ जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि

भाइआ ॥३॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुमारे राम ॥ हम पापी निरगुण दीन तुमारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ तू दुख भंजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥ सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥४॥४॥

वडहंसु महला ४ घोड़ीआ　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥ धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥ माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥ गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥ इेह देह सु बाँकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥१॥ देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥ चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥ बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥ हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥२॥ कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु दृड़ाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥ महा मारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥३॥ घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु तुखाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ॥ चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥ हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥ जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥४॥१॥५॥

वडहंसु महला ४ ॥ देह तेजनड़ी हरि नव रंगीआ राम ॥ गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥

गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥ सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ ॥ जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥१॥ देह कंचन जीनु सुविना राम ॥ जड़ि हरि हरि नामु रतन्ना राम ॥ जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे ॥ गुर सबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥ हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ ॥ नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मंगीआ ॥२॥ कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम ॥ मनु मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥ मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ सा धन कंति पिआरी ॥ अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ हरि रंगि राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥ नानक जनु हरि दासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥३॥ देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥ मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम ॥ हरि गाइ मंगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ प्रभ जाइ पावै रंग महली हरि रंगु माणै रंग की ॥ गुण राम गाइे मनि सुभाइे हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥ जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥४॥२॥६॥

रागु वडहसु महला ५ छंत घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥ इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥ तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी काँणि जमाणी ॥ असथिरु थीआ अंमृतु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥ सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥ कहु नानक सुखि माणे रलीआँ गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥१॥ सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥ गुरि मंत्रु सबदु सचु दीता राम ॥ सचु सबदु धिआइआ मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥ सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा ॥ प्रभ जी भाणा सचा

माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥२॥ तउ भाणा ताँ तृपति अघाइे राम ॥ मनु थीआ ठंढा सभ तृसन बुझाइे राम ॥ मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइिआ बहुतु खजाना ॥ सिख सेवक सभि भुंचण लगे ह्मउ सतगुर कै कुरबाना ॥ निरभउ भइे खसम रंगि राते जम की त्रास बुझाइे ॥ नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाइे ॥३॥ पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ कहु नानक मै वरु घरि पाइिआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥४॥१॥ सलोकु ॥ किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥ नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥१॥ छंतु ॥ तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आइे ॥ भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाइे ॥ जिन कंउ कृपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥१॥ सलोकु ॥ लोइिण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ नानक से अखड़ीआँ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥१॥ छंतु ॥ जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ से साची दरगह भाणे राम ॥ ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥ हरि रसहि अघाइे सहजि समाइे घटि घटि रमईआ जाते ॥ सेई सजण संत से सुखीइे ठाकुर अपणे भाणे ॥ कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥२॥ सलोकु ॥ देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जन्नमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥१॥ छंतु ॥ तिन खन्नीऐ वंञाँ जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ जन चाखि अघाणे हरि हरि अंमृतु मीठा राम ॥ हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भइे ॥ दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जै जइे ॥ मोह रहत बिकार

थाके पंच ते संगु तूटा ॥ कहु नानक तिन खन्नीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥३॥ सलोकु ॥ जो लोड़ीदे राम सेवक सेई काँढिआ ॥ नानक जाणे सति साँई संत न बाहरा ॥१॥ छंतु ॥ मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥ संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ संमाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ तह सुंनि सहजि समाधि लागी इेकु इेकु वखाणीऐ ॥ आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥ नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥४॥२॥ वडह्मसु महला ५ ॥ प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ समरथ सरणा जोगु सुआमी कृपा निधि सुखदाता ॥ ह्मउ कुरबाणी दास तेरे जिनी इेकु पछाता ॥ वरनु चिहनु न जाइि लखिआ कथन ते अकथा ॥ बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥१॥ इेहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥ भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥२॥ आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥ मन इिछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ मन इिछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जम के त्रासा ॥ गोबिदु गाइिआ साध संगाइिआ भई पूरन आसा ॥ तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥३॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइि न सकै पहूचा ॥ आपि उपाइे आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥४॥३॥

रागु वडह्मसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धन्नु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइिआ ॥ मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति

चलाइआ ॥ जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुन्ने वीर सबाइे ॥ काँइआ ह्मस थीआ वेछोड़ा जाँ दिन पुन्ने मेरी माइे ॥ जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥ धन्नु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥१॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना इेहु पइआणा ॥ इेथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥ आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥ आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना इेहु पइआणा ॥२॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा इेहु संसारो ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥ आइआ तिन का सफलु भइिआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा इेहु संसारो ॥३॥ नानक रुन्ना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइि पिआरो ॥ वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइिआ कारणि रोवै ॥ चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु इेवै खोवै ॥ ऐथै आइिआ सभु को जासी कूड़ि करहु अह्मकारो ॥ नानक रुन्ना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइि पिआरो ॥४॥१॥ वडह्मसु महला १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लइेहाँ ॥ रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु संम्हालेहाँ ॥ साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि एथै जाणा ॥ जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥ जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लइेहा ॥१॥ मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइि ॥ सेविहु साहिबु संम्रथु आपणा पंथु सुहेला आगै होइि ॥ पंथि सुहेलै जावहु ताँ फलु पावहु आगै मिलै वडाई ॥ भेटै सिउ जावहु सचि समावहु ताँ पति लेखै पाई ॥ महली जाइि पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै ॥ मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥२॥ मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइि मरनि

परवाणो ॥ सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ करि इेकु धिआवहि ताँ फलु पावहि जितु सेविअै भउ भागै ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ मरणु मुणसाँ सूरिआ हकु है जो होइि मरहि परवाणो ॥३॥ नानक किस नो बाबा रोईअै बाजी है इिहु संसारो ॥ कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक किस नो बाबा रोईअै बाजी है इिहु संसारो ॥४॥२॥ वडह्मसु महला १ दखणी ॥ सचु सिरंदा सचा जाणीअै सचड़ा परवदगारो ॥ जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥ दुइि पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥१॥ सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ नारी पुरख सिरजिअै बिखु माइिआ मोहु पिआरो ॥ खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ कुदरति तखतु रचाइिआ सचि निबेड़णहारो ॥२॥ आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ जंमणु मरणा आइि गइिआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥ गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥३॥ सदड़े आइे तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥ नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ रूपु न जाणै सोहणीअै हुकमि बधी सिरि कारो ॥ बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥४॥ नउ दर ठाके हुकमि सचै ह्मसु गइिआ गैणारे ॥ सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥ सुरति मुई मरु माईइे महल रुन्नी दर बारे ॥ रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥५॥ जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अंबारे ॥ वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुइे मनु मारे ॥ जानी विछुन्नड़े मेरा मरणु भइिआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥ जीवतु मरै सु जाणीअै पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥६॥ तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी

संसारे ॥ हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे ॥ घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥ मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥७॥ गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥ बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥८॥३॥ वडह्सु महला १ ॥ जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥ सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि इह रचना राची ॥ नामु धिआइे ता सुखु पाइे बिनु नावै पिड़ काची ॥ जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥१॥ बाबा आइिआ है उठि चलणा अध पंधै है संसारोवा ॥ सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ जेहे करम कराइे करता दूजी कार न भाले ॥ आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो ॥ अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइि विकारो ॥२॥ जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥ ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥ गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो ॥ इब के राहे जंमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ बिनु साचे को बेली नाही साचा इेहु बीचारो ॥३॥ बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ रोवै माइिआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥ धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपन्नतरु संसारो ॥ जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अह्मकारो ॥ आपे मारगि पावणहारा आपे करम कमाइे ॥ नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाइे ॥४॥४॥ वडह्सु महला १ ॥ बाबा आइिआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥ सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥ कूड़ि लबि जाँ थाइि न पासी अगै लहै न ठाए ॥ अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काए ॥ जंमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाइे ॥ लबि धंधै माइिआ जगतु

भुलाइआ कालु खड़ा रूआइे ॥१॥ बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥ जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥२॥ बाबा नाँगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥ बहि साचै लिखिआ अंमृतु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥ कामणिआरी कामण पाइे बहु रंगी गलि तागा ॥ होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नाँगो बंधि चलाइआ ॥३॥ बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥ लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥ हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुन्ने रोवणहारे ॥ पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥ नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥४॥५॥

वडहसु महला ३ महला तीजा ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥ जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अंमृत बाणी ॥ गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥१॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लइे मिलाइे ॥ सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाइे ॥ विचहु आपु गवाइे फिरि कालु न खाइे गुरमुखि इेको जाता ॥ कामणि इछ पुन्नी अंतरि भिन्नी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाइे ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लइे मिलाइे ॥२॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ

हउ तिन पूछउ संता जाइे ॥ आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाइे ॥ पिरु सचा मिलै आइे साचु कमाइे साचि सबदि धन राती ॥ कदे न राँड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाइे ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाइे ॥३॥ पिरहु विछुन्नीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाइे ॥ सतिगुरु सदा दइिआलु है अवगुण सबदि जलाइे ॥ अउगुण सबदि जलाइे दूजा भाउ गवाइे सचे ही सचि राती ॥ सचै सबदि सदा सुखु पाइिआ हउमै गई भराती ॥ पिरु निरमाइिलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाइे ॥ पिरहु विछुन्नीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाइे ॥४॥१॥ वडह्मसु महला ३ ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥ अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ रोवै कंत संमालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाइे ॥ गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाइे ॥ जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥१॥ सभु जगु आपि उपाइिएनु आवणु जाणु संसारा ॥ माइिआ मोहु खुआइिअनु मरि जंमै वारो वारा ॥ मरि जंमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ बिनु सबदै पिरु न पाइिए जनमु गवाइिए रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ सभु जगु आपि उपाइिएनु आवणु जाणु संसारे ॥२॥ सो पिरु सचा सद ही साचा है ना एहु मरै न जाइे ॥ भूली फिरै धन इिआणीआ रंड बैठी दूजै भाइे ॥ रंड बैठी दूजै भाइे माइिआ मोहि दुखु पाइे आव घटै तनु छीजै ॥ जो किछु आइिआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइि दूजै ॥ जमकालु न सूझै माइिआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाइे ॥ सो पिरु साचा सद ही साचा ना एहु मरै न जाइे ॥३॥ इिकि रोवहि पिरहि विछुन्नीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥ गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ इिहु तनु रुलै रुलाइिआ कामि न आइिआ जिनि खसमु न

जाता हदूरे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुन्नीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥४॥२॥ वडहंसु मः ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुन्नीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइिआ ॥ सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइिआ ॥ सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ रोवहि पिरहु विछुन्नीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥१॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलाँ प्रीतम पिआरे ॥ सतिगुरि मेली ताँ सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे ॥ सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ माइिआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥२॥ मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥ सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइिआ ॥ अंतरि रंगि राती सहजे माती गइिआ दुसमनु दूखु सबाइिआ ॥ अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै ताँ मनु भीजै तृसना दूख निवारे ॥ मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥३॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइिआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ आपि मिलाइे आपि मिलै आपे देइि पिआरो ॥ आपे देइि पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ धनु जग महि आइिआ आपु गवाइिआ दरि साचै सचिआरो ॥ गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइिआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥४॥३॥ वडहंसु महला ३ ॥ इिहु सरीरु जजरी है इिस नो जरु पहुचै आइे ॥ गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जाइे ॥ होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गइे पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ इिहु सरीरु जजरी है इिस नो जरु पहुचै आई ॥१॥ काइिआ

कंचनु ताँ थीऐ जाँ सतिगुरु लइे मिलाइे ॥ भ्रमु माइिआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाइे ॥ सचै नामि समाइे हरि गुण गाइे मिलि प्रीतम सुखु पाइे ॥ सदा अन्नदि रहै दिनु राती विचहु ह्उमै जाइे ॥ जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइिआ तिन कै ह्उ लागउ पाइे ॥ काँइिआ कंचनु ताँ थीऐ जा सतिगुरु लइे मिलाइे ॥२॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइि बुझाइे ॥ बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाइे ॥ किआ देनि मुहु जाइे अवगुणि पछुताइे दुखो दुखु कमाइे ॥ नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाइे ॥ तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाइे ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइि बुझाइे ॥३॥ जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ ह्उ तिन लागउ पाइे ॥ से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाइे ॥ तिन मिलिआ मलु सभ जाइे सचै सरि नाइे सचै सहजि सुभाइे ॥ नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाइे ॥ अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाइे ॥ जिनी सचड़ा सचु धिआइिआ ह्उ तिन कै लागउ पाइे ॥४॥४॥

वडह्मस की वार महला ४ ललाँ बहलीमा की धुनि गावणी

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक मः ३ ॥ सबदि रते वड ह्मस है सचु नामु उरि धारि ॥ सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥१॥ मः ३ ॥ मै जानिआ वड ह्मसु है ता मै कीआ संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥२॥ मः ३ ॥ ह्मसा वेखि तरंदिआ बगाँ भि आया चाउ ॥ डुबि मुइे बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥३॥ पउड़ी ॥ तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥ तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि

दीआ ॥१॥ सलोकु मः ३ ॥ भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइि ॥ सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइि ॥ दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइि ॥ गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइि ॥ नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइि ॥१॥ मः ३ ॥ इिकि सजण चले इिकि चलि गइे रहदे भी फुनि जाहि ॥ जिनी सतिगुरु न सेविए से आइि गइे पछुताहि ॥ नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि ह्मउमै विचहु मारी ॥ सो सतिगुरु पूरा धनु धन्नु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ सृष्टि सवारी ॥ नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥ गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु ह्मउ सद वारी ॥२॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥ ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥ सची संगति सचि मिलै सचै नाइि पिआरु ॥ सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु ॥१॥ मः ३ ॥ होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ अंमृतु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास ॥ ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइिआ नरकि निवासु ॥ मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥ सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कंमु न आवै रासि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥२॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु दृड़ाइिआ ॥ सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगन्नाथु जगदीसु जपाइिआ ॥ सो सतिगुरु देखहु इिक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइिआ ॥ तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइिआ ॥ सो सतगुरु कहहु सभि धन्नु धन्नु जिनि हरि भगति भंडार लहाइिआ ॥३॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी

भुख न जाइ ॥ दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ अंदरि सहजु न आइए सहजे ही लै खाइ ॥ मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥ पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥ अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ मैलु गई मनु निरमलु होआ अंमृत सरि तीरथि नाइ ॥ सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥ घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ॥ सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥ नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥ सो पाइे पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥ तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥४॥ सलोक मः ३ ॥ सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥ एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥ इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥ नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥१॥ मः ३ ॥ इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ तृसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तिसु गुर

कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥ तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥ सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लइे छडाई ॥ तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥ नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ तृसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥ सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥ नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥१॥ मः ३ ॥ भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ वरमी मारी सापु न मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥ सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥ मनु तनु सीतलु साँति होइ तृसना अगनि बुझाइ ॥ सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥ नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥ सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गइे सभि दुखा ॥ ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥ धनु धन्नु तिना का गुरू है जिसु अंमृत फल हरि लागे मुखा ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥ जमकालै वसि जगु बाँधिआ तिस दा फरू न कोइ ॥ जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥ नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥१॥ मः ३ ॥ इेहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरि नामो मंनि वसाइ ॥ नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ खन्नीऐ जिनि मधुसूदनु हरि नामु सुणाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ तिसु सतिगुर कउ

वड पुन्नु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥७॥ सलोकु मः ३ ॥ भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ ॥ एना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥ गुण निधानु मनि पाइआ इेको सचा सोइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ एहु करे वीचारु ॥ सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥ अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥ तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥ जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥ हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥ रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥ रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ मूरख आपु गणाइदे मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥ सदा सदा नामु उचरै हरि नामो नित बिउहारु ॥ कृपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ मत तुम जाणहु एइ जीवदे एइ आपि मारे करतारि ॥ हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ ॥ नानक मनमुखि जीवदिआ मुइे हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी ॥ जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥ सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥९॥ सलोक मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु

सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥ महला १ ॥ जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥ जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥१०॥ सलोकु मः ३ ॥ भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥ पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥ राजे एइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥१॥ मः ३ ॥ सुणि सिखिऐ सादु न आइए जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरसिखाँ मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ हरि नामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरि नामु लै जावहि ॥ गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण साँझ करावहि ॥ तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥११॥ सलोक मः ३ ॥ नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुइे बिललाइ ॥१॥ मः ३ ॥ कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥२॥ पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धन्नु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कन्नी ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ तिनि ह्उमै दुबिधा भन्नी ॥ बिनु हरि नावै को मित्र नाही

वीचारि डिठा हरि जन्नी ॥ जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मन्नी ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वन्नी ॥१२॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥ नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥१॥ मः ३ ॥ गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥ अंतरि साँति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥ गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥ बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥१३॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ एस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥१॥ मः ३ ॥ इे मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ अंतरि साँति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥ नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥ तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥ माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥१४॥ सलोकु मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जंमै आवै जाइ ॥ विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥१॥ मः ३ ॥ इसु जग महि पुरखु इेकु है होर सगली नारि

सबाई ॥ सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥ पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥ तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥ निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥ अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥२॥ पउड़ी ॥ जिन कै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥ हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा ॥ हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥ हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥ जन नानक कंउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥१५॥ सलोकु मः ३ ॥ जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ अचिंतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि ॥ कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥१॥ मः ३ ॥ हउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥ हउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥ हरि नामु हम स्रेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥ हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अंति छडाता ॥ हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धन्नु गुरू का पिता माता ॥ हउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरि नामु मै जाता ॥१६॥ सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लम्घे पारि ॥१॥ मः ३ ॥ इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ सतिगुरु सेवनि

जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ तृपति भई ॥ हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥ हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥१७॥ सलोक मः ३ ॥ जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥ दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥ सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ ॥ नानक जितु आपे लाइे तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥१॥ मः ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥ अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ नानक जिस नो नदरि करे सो पाइे सो होवै दरि सचिआरा ॥२॥ पउड़ी ॥ धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥ धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरि नामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ ॥ धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥ तिसु गुरसिख कंउ ह्उ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥१८॥ सलोकु मः ३ ॥ मनहठि किनै न पाइए सभ थके करम कमाइ ॥ मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥ गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥१॥ मः ३ ॥

सबदै सादु न आइए नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ साँति आई ॥ धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥ धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई ॥ धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम दृसटि दिखाई ॥ धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥१९॥ सलोकु मः १ ॥ घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित झूरे संम्हाले ॥ मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे ॥१॥ मः १ ॥ नानक गाली कूड़ीआ बाझु परीति करेइ ॥ तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिनि उपाइे जीअ तिनि हरि राखिआ ॥ अंमृतु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥ तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ ॥ सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥ जन नानक भइे निहालु प्रभ की पाखिआ ॥२०॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥ डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥ नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुरू न सेविए मूरख अंध गवारि ॥ दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥ जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार ॥ नानक गुरमती सुखु पाइिआ बखसे बखसणहार ॥२॥ पउड़ी ॥ तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥ हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ ॥ हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥ हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥ उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥२१॥१॥ सुधु

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥

सभना मरणा आइिआ वेछोड़ा सभनाह ॥ पुछहु जाइि सिआणिआ आगै मिलणु किनाह ॥ जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥१॥ भी सालाहिहु साचा सोइि ॥ जा की नदरि सदा सुखु होइि ॥ रहाउ ॥ वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइि ॥ सभना दाता इेकु तू माणस दाति न होइि ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ रन्न कि रुन्नै होइि ॥२॥ धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइि ॥ जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइि ॥ जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥३॥ नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥ जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ अगै गइे न मन्नीअनि मारि कढहु वेपीर ॥४॥१॥ सोरठि महला १ घरु १ ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥१॥ बाबा माइिआ साथि न होइि ॥ इिनि माइिआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइि ॥ रहाउ ॥ हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ सुरति सोच करि भाँडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥२॥ सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ खरचु बन्नु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥३॥ लाइि चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥

बन्नु बदीआ करि धावणी ता को आखै धन्नु ॥ नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वन्नु ॥४॥२॥ सोरठि मः १ चउतुके ॥ माइि बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥ बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ हुकमु भइिआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥१॥ मनु मानिआ नामु सखाई ॥ पाइि परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥ माइिआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥ गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥२॥ साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥३॥ नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ कन्नी सुणि सुणि सबदि सलाही अंमृतु रिदै वसाई ॥ निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥ नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥४॥३॥ सोरठि महला १ दुतुके ॥ पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥ सगल भवण की मूरति इेका मुखि तेरै टकसाला ॥१॥ मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ इिकतु रूपि फिरहि परछन्ना कोइि न किस ही जेहा ॥२॥ अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ इेकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥३॥ तेरे गुण बहुते मै इेकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥४॥४॥ सोरठि महला १ ॥ हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ अंमृतु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥१॥ करता तू मै माणु निमाणे ॥ माणु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ तू पूरा

हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥२॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥३॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ सोई ॥४॥५॥ सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥१॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥२॥ घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥३॥ जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥४॥ सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥५॥६॥ सोरठि महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥ तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥१॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥२॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥३॥ साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥ सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥४॥७॥ सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥ मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥१॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत पइआल अकासु दिखाइए गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥ सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि

देखु मुरारी जीउ ॥२॥ जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥३॥ सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥४॥८॥ सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंमृतु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥१॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंमृतु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥२॥ अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥३॥ परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥४॥९॥ सोरठि महला १ पंचपदे ॥ अपना घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥ घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥१॥ मन रे समझु कवन मति लागा ॥ नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥२॥ हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो तृपतागा ॥ माइिआ मोहित जिनि इहु रसु खोइिआ जा साकत दुरमति लागा ॥३॥ मन का जीउ पवनपति देही देही महि देउ समागा ॥ जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु तृपतै हरि लिव लागा ॥४॥ साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥५॥१०॥ सोरठि महला १ ॥ सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥१॥ मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ अहिनिसि

गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ गुरमुखि इेक दृसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥२॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इिह मति होई जीउ ॥ देखि अदृसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥३॥ पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥४॥ ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥ अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥५॥११॥

सोरठि महला १ घरु ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जा तिसु भावा तद ही गावा ॥ ता गावे का फलु पावा ॥ गावे का फलु होई ॥ जा आपे देवै सोई ॥१॥ मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥ ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ गुर साखी अंतरि जागी ॥ ता चंचल मति तिआगी ॥ गुर साखी का उजीआरा ॥ ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥२॥ गुर चरनी मनु लागा ॥ ता जम का मारगु भागा ॥ भै विचि निरभउ पाइिआ ॥ ता सहजै कै घरि आइिआ ॥३॥ भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ इिसु जग महि करणी सारी ॥ करणी कीरति होई ॥ जा आपे मिलिआ सोई ॥४॥१॥१२॥

सोरठि महला ३ घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइिआ ॥ गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइिआ ॥ अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइिआ ॥१॥ मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ इेको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ जागत रहे तिनी प्रभु पाइिआ सबदे हउमै मारी ॥ गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइिआ हरि राखिआ उर धारी ॥२॥ इिहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइि खुआइिआ ॥

मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु भेटे ता नाउ पाइे हउमै मोहु चुकाइआ ॥३॥ हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥ आपे मेलि लइे प्रभि साचै साचु रखिआ उर धारी ॥ नानक नावहु गति मति पाई इेहा रासि हमारी ॥४॥१॥ सोरठि महला ३ ॥ भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइि ॥ अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइि ॥ नाम धनि मुख उजले होइे हरि पाइआ सचु सोइि ॥१॥ मन मेरे गुर सबदी हरि पाइआ जाइि ॥ बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइि ॥ रहाउ ॥ इिसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥ अंमृतु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइि न सुणै पूकारा ॥ अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥२॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥३॥ सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥४॥२॥ सोरठि मः ३ ॥ दासनि दासु होवै ता हरि पाइे विचहु आपु गवाई ॥ भगता का कारजु हरि अन्नदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ सबदि रते सदा इिक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥१॥ हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥ आपणिआ दासा नो कृपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥२॥ महा गंभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ॥ पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥३॥ हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाइे गुर वीचारा ॥ हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ नानक नामि रता इिक रंगी सबदि सवारणहारा

॥४॥३॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥१॥ हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥२॥ सबदु न जाणहि से अन्ने बोले से कितु आए संसारा ॥ हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जंमहि वारो वारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥३॥ आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥४॥४॥ सोरठि महला ३ ॥ गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥१॥ मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ अंत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥२॥ आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥३॥ सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ नानक दासु कहै बेन्नती हउ लागा तिन कै पाए ॥४॥५॥ सोरठि महला ३ ॥ सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥ बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥१॥ हरि के दास

सुहेले भाई ॥ जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥ बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥२॥ हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइि न किस ही केरा ॥ गुरमुखि महलु पाइिनि गुण गावनि निज घरि होइि बसेरा ॥ ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥ सतिगुरू सदा दइिआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥ इेक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥४॥६॥ सोरठि महला ३ चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाइे हउमै सबदि समाणी ॥ बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इिआणी ॥ मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुइे विणु पाणी ॥१॥ भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥ हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अह्मकारा ॥ सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥ जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥२॥ सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइिआ ॥ हरि रसु चाखि सदा मनु तृपतिआ गुण गावै गुणी अघाइिआ ॥ कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइिआ ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइिआ ॥३॥ राम नाम की गति कोइि न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥४॥७॥ सोरठि मः ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइि ॥ सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइि ॥१॥ मन रे हरि हरि सेती लिव लाइि ॥ मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाइे हरि थाइि ॥ रहाउ ॥

बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥ तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥२॥ गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥ सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥३॥ आइिआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥ नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥४॥८॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥ राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥ मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥२॥ गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ उर धारि ॥३॥ गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥ नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥४॥९॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होर थै सुखु नाही ॥ हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥१॥ प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइिआ ॥ संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइिआ ॥२॥ सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥ हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए ॥३॥ इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥४॥१०॥ सोरठि महला ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ॥ हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥१॥ हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे ॥ सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥ मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइिआ नामु अपारा ॥ हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा

॥२॥ सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ अंमृतु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥३॥ दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥४॥११॥ सोरठि महला ३ ॥ सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाइे ॥ हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाइे ॥१॥ बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइिआ भरमि भुलाइिआ हउमै बंधन कमाइे ॥ जंमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाइे ॥२॥ त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥ गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥३॥ त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥४॥१२॥

सोरठि महला ४ घरु १ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥ वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥ आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥१॥ जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥ गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अंमृतु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥ आपे उझड़ि पाइिदा पिआरा आपि विखाले राहु ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥२॥ आपे आपि उपाइिदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु ॥ आपि कराइे साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु ॥ आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लम्घाहु ॥३॥ आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥ आपे ही चड़ि लम्घदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥ आपे आपि दइिआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥४॥१॥ सोरठि महला ४ चउथा ॥ आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइि ॥ आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइि ॥

आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइि ॥१॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइि ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइिआ अंमृतु मुखि चोइि ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइि ॥ सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइि ॥ आपे खेल खेलाइिदा पिआरा आपे करे सु होइि ॥२॥ आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइि ॥ आपे कीमति पाइिदा पिआरा आपे करे सु होइि ॥ आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइि ॥३॥ आपे गहिर गंभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइि ॥ सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइि ॥ नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइि ॥४॥२॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥१॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥ अंमृत नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ आपे जालु वताइिदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥२॥ आपे सिंङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाइे आपै ॥ आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥३॥ आपे नाउ जपाइिदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ आपे अंमृतु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥४॥३॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइिआ ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइिआ ॥ आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइिआ ॥१॥ मेरे मन हरि हरि धिआइि सुखु पाइिआ ॥ हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइिआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइिआ ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइिआ ॥ आपे ही भउ

पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥२॥ आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥३॥ आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ ॥ जिउ आपि चलाइे तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥४॥४॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे सृसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥ आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥१॥ मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥२॥ आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥ आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥३॥ आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥४॥५॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥ आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥१॥ मेरे मन जपि राम नामु एमाहा ॥ अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥ कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥२॥ आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥ करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥ आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भन्नै मूरख मुगधाहा ॥३॥ सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि

आपे जुगति हथाहा ॥ गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥ जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥४॥६॥ सोरठि मः ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी ॥ साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥१॥ गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ साँति मुरारी ॥ रहाउ ॥ तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥२॥ गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥३॥ पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥४॥७॥ सोरठि महला ४ ॥ हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥१॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ हउ अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही साँति पाई ॥ रहाउ ॥ जिउ चातृकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥ गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥२॥ मनमुख भूखे दह दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥३॥ कृपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ नानक दीन दइआल भए है तृसना सबदि बुझाई ॥४॥८॥ सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥१॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ हरि जीउ कृपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥२॥ जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥ वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥३॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै

गूंगे की मिठिआई ॥ रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥४॥ सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ जिस नो दाति करहि सो पाइे जन नानक अवरु न कोई ॥५॥६॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किस हउ जाची किस आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥१॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिनि हरि धिआइिआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥ अनदु भइिआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥२॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ जिन कउ कृपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥३॥ कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइिआला ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥४॥१॥ सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ साचा साहिबु मनि वसै भाई इेहा करणी सार ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होइे छार ॥ साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन इेकंकार अधार ॥१॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइि ॥ गुरि पूरै जाणाइिआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइि ॥ रहाउ ॥ नाम विहूणे पचि मुइे भाई गणत न जाइि गणी ॥ विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै इेक कणी ॥२॥ सिंमृति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइि ॥ अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइि ॥ चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर

नाही जाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥३॥ सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥४॥२॥ सोरठि महला ५ दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई ॥ आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥१॥ माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ सेवउ साध गहउ एट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिए संगि बैराई ॥२॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥३॥ कोटि पराध अछादिए इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ जन नानक दीन सरनि आइए प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥४॥३॥ सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र लोक गृह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥१॥ रे नर काहे पपोरहु देही ॥ ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ होइ आमरो गृह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥२॥ अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥३॥ जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर एट गहेही ॥४॥४॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा भेटिए वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥१॥ अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनन्दु हमारै ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥२॥ सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥३॥ वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ

रासे ॥ नानक कउ गुरु पूरा भेटिए सगले दूख बिनासे ॥४॥५॥ सोरठि महला ५ ॥ सुखीइे कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥१॥ मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ तिस कै भाणै कोइि न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ संत संगि जा का मनु सीतलु एहु जाणै सगली ठाँढी ॥ हउमै रोगि जा का मनु बिआपित एहु जनमि मरै बिललाती ॥२॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥३॥ सुणि बेन्नती सुआमी अपुने नानकु इिहु सुखु मागै ॥ जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥४॥६॥ सोरठि महला ५ ॥ तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइिआ सरब कुसल तब थीआ ॥१॥ संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥२॥ रसना इेक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥ अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥३॥ निरगुन नीच अनाथ अपराधी एट संतन की आही ॥ बूडत मोह गृह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥४॥७॥ सोरठि महला ५ घरु १ ॥ जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥ दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥१॥ तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥२॥ सरब निरंतरि तुमहि समाने जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ गुर परसादि मिटिए अगिआना प्रगट भइे सभ ठाई ॥३॥ सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ कहु नानक जिसु भइे दइिआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥४॥८॥ सोरठि महला ५ ॥ सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ सुधु न होईऐ काहू

जतना एड़कि को न पहूचे ॥१॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ एहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिए सगल संसारा ॥ पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥२॥ निंदउ नाही काहू बातै इेहु खसम का कीआ ॥ जा कउ कृपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥३॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥४॥९॥ सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिए राम नामु ततु सारा ॥ किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥१॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ सुणि सुणि महा तृपति मनु पावै साधू अंमृत बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥ अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥२॥ स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥ करण कारण समरथ सुआमी जा ते बृथा न कोई ॥३॥ वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु कृपा किरपाला ॥ साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥४॥१०॥ सोरठि महला ५ ॥ करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भइे अरोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइिआला ॥ संता की पैज रखदा आइिआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥२॥ हरि अंमृत नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥३॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥ प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥४॥११॥

सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इेकु पिता इेकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि

दरसनु देहु दिखाई ॥१॥ सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥ सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥२॥ मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥३॥ भइए अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥४॥१॥१२॥ सोरठि महला ५ ॥ कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥ प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥१॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ हरि जीउ नामु परिए रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल कृपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥२॥ हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥३॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥४॥२॥१३॥ सोरठि महला ५ ॥ जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥१॥ देखहु अचरजु भइआ ॥ जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥२॥ जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ इेकु रतनु मो कउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥३॥ इेक बूंद गुरि अंमृतु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥४॥३॥१४॥ सोरठि महला ५ ॥ चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन तृपति अघाई ॥ गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर तृसन तृखाई ॥१॥ हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई

॥ रहाउ ॥ जिह जन एट गही प्रभ तेरी से सुखीइे प्रभ सरणे ॥ जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥२॥ जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अन्नद रसु करिआ ॥ जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥३॥ जितु को लाइिआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥ नानक सह पकरी संतन की रिदै भइे मगन चरनारा ॥४॥४॥१५॥ सोरठि महला ५ ॥ राजन महि राजा उरझाइिए मानन महि अभिमानी ॥ लोभन महि लोभी लोभाइिए तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥१॥ हरि जन कउ इिही सुहावै ॥ पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही तृपतावै ॥ रहाउ ॥ अमलन सिउ अमली लपटाइिए भूमन भूमि पिआरी ॥ खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत अैसे हितकारी ॥२॥ बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥३॥ जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥४॥५॥१६॥ सोरठि महला ५ ॥ हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥१॥ माधो हम अैसे तू अैसा ॥ हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥२॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइिआला ॥ तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥३॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ कहु नानक हम इिहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥४॥६॥१७॥ सोरठि महला ५ घरु २ ॥ मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥१॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मेरै संमानै करणहारु तृणु जानै ॥ तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥२॥ खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ रूड़ो

गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥३॥ साधसंगि जउ तुमहि मिलाइए तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥४॥७॥१८॥ सोरठि महला ५ ॥ हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ संत हमारी एट सताणी संत हमारा गहणा ॥१॥ हम संतन सिउ बणि आई ॥ पूरबि लिखिआ पाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥२॥ संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिए सगलो लेखा ॥३॥ महा अन्नद भइे सुखु पाइिआ संतन कै परसादे ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥४॥८॥१९॥ सोरठि मः ५ ॥ जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥ राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥१॥ पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुम ही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥ होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥२॥ घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥ करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥३॥ गोबिद दामोदर दइिआल माधवे पारब्रहम निरंकारा ॥ नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥४॥९॥२०॥ सोरठि महला ५ ॥ मिरतक कउ पाइिए तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइिआ ॥ पसू परेत मुगध भइे स्रोते हरि नामा मुखि गाइिआ ॥१॥ पूरे गुर की देखु वडाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ दूख सोग का ढाहिए डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥ मन बाँछत फल मिले अचिंता पूरन होइे कामा ॥२॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गइे आवण जाणे ॥ निरभउ भइे हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥३॥ ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ कहु नानक ता के पूर करंमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥४॥१०॥२१॥ सोरठि महला ५ ॥ रतनु छाडि कउडी संगि लागे जा ते

कछू न पाईऐ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥१॥ सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ मृग तृसना अरु सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥ राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥२॥ हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ धावत धावत नह तृपतासिआ राम नामु नही चीना ॥३॥ साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥ नानक की प्रभ पाहि बिन्नती काटहु अवगुण मेरे ॥४॥११॥२२॥ सोरठि महला ५ ॥ गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥१॥ पूरै गुरि मेटिए भरमु अंधेरा ॥ भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ जत कत पूरि रहिए परमेसरु कत आवै कत जाई ॥२॥ जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥ नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥३॥ कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥४॥१२॥२३॥ सोरठि महला ५ ॥ करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी ॥ सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥१॥ मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ सूख सहज आनन्द मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥ गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥२॥ जै जै कारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥ सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥३॥ गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ भइए कृपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥४॥१३॥२४॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥ दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥१॥ प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि नामु निधानु दृड़ाइआ

चिंता सगल बिनासी ॥ करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥२॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥ चरन कमल बसे रिद अंतरि अंमृत हरि रसु चाखे ॥३॥ करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ नानक दास ता कै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥४॥१४॥२५॥ सोरठि महला ५ ॥ माइिआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै ॥ जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥१॥ मन मूड़े देखि रहिए प्रभ सुआमी ॥ जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानी ॥ रहाउ ॥ जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥ बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइिआ हउमै बंधन के भारा ॥२॥ देइि किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥३॥ दीन दइिआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु एट न काई ॥ काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥४॥१५॥२६॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥१॥ हरि साचा सिमरहु भाई ॥ साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥२॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ॥३॥ मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥४॥१६॥२७॥ सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥१॥ संतहु इहा बतावहु कारी ॥ जितु हउमै गरबु निवारी ॥१॥ रहाउ ॥ सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवाँ सगल रेनारी ॥२॥ पेखिए प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥३॥ अउखधु नामु निरमल जलु अंमृतु पाईऐ गुरू दुआरी ॥४॥ कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥५॥१७॥२८॥

सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥१॥ संतहु घटि घटि रहिआ समाहिए ॥ पूरन पूरि रहिए सरब महि जलि थलि रमईआ आहिए ॥१॥ रहाउ ॥ गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइिए ॥ सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइिए ॥२॥१॥२९॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि होइि अन्नदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ चारि पदारथ नव निधि पावहि बहुरि न तृसना भुखी ॥१॥ जा को नामु लैत तू सुखी ॥ सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥१॥ रहाउ ॥ साँति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ गुर नानक कउ प्रभू दिखाइिआ जलि थलि तृभवणि रुखी ॥२॥२॥३०॥ सोरठि महला ५ ॥ काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इिन ते आपि छडावहु ॥ इिह भीतर ते इिन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥१॥ अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ हरि जन मंगल गावहु ॥१॥ रहाउ ॥ बिसरु नाही कबहू हीड़े ते इिह बिधि मन महि पावहु ॥ गुरु पूरा भेटिए वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥२॥३॥३१॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥ तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥ साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥१॥ रहाउ ॥ सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥२॥४॥३२॥ सोरठि महला ५ ॥ अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥१॥ मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ जा की सरणि पइिआँ सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत

दुरमति खोई ॥ तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥२॥५॥३३॥ सोरठि महला ५ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥१॥ मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥ हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥ रहाउ ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥२॥६॥३४॥ सोरठि महला ५ ॥ अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥ बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥१॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥१॥ रहाउ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥२॥७॥३५॥ सोरठि मः ५ ॥ भइे कृपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाइे ॥ असथिर भइे लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाइे ॥१॥ भलो समूरतु पूरा ॥ साँति सहज आन्नद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥१॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ हरि नामु निधानु नानक जन पाइिआ सगली इछ पुजाई ॥२॥८॥३६॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ भइे कृपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥१॥ मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥३७॥ सोरठि महला ५ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ बिलछि बिनोद आन्नद सुख माणहु खाइि जीवहु सिख परवार ॥१॥ हरि के चरन कमल आधार ॥ संत प्रसादि पाइिए सच बोहिथु चड़ि लम्घउ बिखु संसार ॥१॥ रहाउ ॥ भइे कृपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥२॥१०॥३८॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइिआ ॥ आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइिआ ॥१॥ सतिगुरु पूरा मेरै

नालि ॥ पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि थान थन्नतरि जत कत पेखउ सोई ॥ नानक गुरु पाइिए वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥२॥११॥३९॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ राखनहारै राखिए बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥१॥ उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भइे दइिआला ॥ नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥२॥१२॥४०॥ सोरठि महला ५ ॥ साधू संगि भइिआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ मिटि गई चिंता सिमरि अन्नता सागरु तरिआ भाई ॥१॥ हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ सुखु पाइिआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ नानक भगत भइे अबिनासी अपुना प्रभु भइिआ सहाई ॥२॥१३॥४१॥ सोरठि मः ५ ॥ गइे कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥१॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिए मिटिए सगल अंदेसा ॥ २॥१४॥४२॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइिआ ॥ ताप रोग गइे गुर बचनी मन इिछे फल पाइिआ ॥१॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अन्नद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भइे दइिआला ॥ जै जै कार भइे जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥२॥१५॥४३॥ सोरठि महला ५ ॥ हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ हाथ देइि राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ बंधु पाइिआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥ जीउ पाइि पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ अपणे दास की आपि पैज राखी नानक

सद कुरबाणु ॥२॥१६॥४४॥ सोरठि महला ५ ॥ दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥ पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥१॥ होई राजे राम की रखवाली ॥ सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥२॥१७॥४५॥ सोरठि महला ५ ॥ बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥१॥ हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥ सदा अनन्द करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥ वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥२॥१८॥४६॥ सोरठि महला ५ ॥ भए कृपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठाँढि पई संसारि ॥ अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीए हटतारि ॥१॥ हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥ करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥२॥१६॥४७॥ सोरठि महला ५ ॥ संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥१॥ सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥२॥२०॥४८॥ सोरठि महला ५ ॥ मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ धारि कृपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥१॥ रहाउ ॥ तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥ साधसंगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जाँई ॥१॥ हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु

न बीचारिआ ॥ अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥२॥२१॥४९॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत्र सभि तिस के कीइे सोई संत सहाई ॥ अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥१॥ पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी होइे सरब दइिआल ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु नानकु नामु धिआइे जीअ प्रान का दाता ॥ अपुने दास कउ कंठि लाइि राखै जिउ बारिक पित माता ॥२॥२२॥५०॥

सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइिआ ॥ सिकदारहु नह पतीआइिआ ॥ उमरावहु आगै झेरा ॥ मिलि राजन राम निबेरा ॥१॥ अब ढूढन कतहु न जाई ॥ गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ आइिआ प्रभ दरबारा ॥ ता सगली मिटी पूकारा ॥ लबधि आपणी पाई ॥ ता कत आवै कत जाई ॥२॥ तह साच निआइि निबेरा ॥ ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥ अंतरजामी जानै ॥ बिनु बोलत आपि पछानै ॥३॥ सरब थान को राजा ॥ तह अनहद सबद अगाजा ॥ तिसु पहि किआ चतुराई ॥ मिलु नानक आपु गवाई ॥४॥१॥५१॥ सोरठि महला ५ ॥ हिरदै नामु वसाइिहु ॥ घरि बैठे गुरू धिआइिहु ॥ गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ सो सुखु साचा लहिआ ॥१॥ अपुना होइिए गुरु मिहरवाना ॥ अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आइे करि इिसनाना ॥ रहाउ ॥ साची गुर वडिआई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ सिरि साहा पातिसाहा ॥ गुर भेटत मनि एमाहा ॥२॥ सगल पराछत लाथे ॥ मिलि साधसंगति कै साथे ॥ गुण निधान हरि नामा ॥ जपि पूरन होइे कामा ॥३॥ गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ सभ सृसटि करै जैकारा ॥ नानक प्रभु मेरै साथे ॥ जनम मरण भै लाथे ॥४॥२॥५२॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै किरपा धारी ॥ प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ करि इिसनानु गृहि आइे ॥ अनद मंगल सुख पाइे ॥१॥ संतहु राम नामि निसतरीऐ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ

अनदिनु सुकृतु करीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥२॥ उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥३॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु दृड़ाइआ ॥ खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥४॥३॥५३॥ सोरठि महला ५ ॥ साहिबु गुनी गहेरा ॥ घरु लसकरु सभु तेरा ॥ रखवाले गुर गोपाला ॥ सभि जीअ भए दइआला ॥१॥ जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥ तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ बलु धनु तकीआ तेरा ॥ तू भारो ठाकुरु मेरा ॥२॥ जिनि जिनि साधसंगु पाइआ ॥ सो प्रभि आपि तराइआ ॥ करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ कुसल खेम सभ थीआ ॥३॥ होए प्रभू सहाई ॥ सभ उठि लागी पाई ॥ सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥ हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥४॥४॥५४॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख सहज आनन्दा ॥ प्रभु मिलिए मनि भावंदा ॥ पूरै गुरि किरपा धारी ॥ ता गति भई हमारी ॥१॥ हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ हरि चरण की एट सताणी ॥ सभ चूकी काणि लोकाणी ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥२॥ प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ मन पूरन होई आसा ॥ जह पेखा तह सोई ॥ हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥३॥ करि किरपा प्रभि राखे ॥ सभि जनम जनम दुख लाथे ॥ निरभउ नामु धिआइआ ॥ अटल सुखु नानक पाइआ ॥४॥५॥५५॥ सोरठि महला ५ ॥ ठाढि पाई करतारे ॥ तापु छोडि गइआ परवारे ॥ गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥१॥ परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ साँति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु दीए दारू ॥ तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ अपणी किरपा धारी ॥ तिनि सगली बात सवारी ॥२॥ प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ गुर का सबदु

भइए साखी ॥ तिनि सगली लाज राखी ॥३॥ बोलाइआ बोली तेरा ॥ तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपुने दास की पैज राखी ॥४॥६॥५६॥ सोरठि महला ५ ॥ विचि करता पुरखु खलोआ ॥ वालु न विंगा होआ ॥ मजनु गुर आँदा रासे ॥ जपि हरि हरि किलविख नासे ॥१॥ संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥ जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥१॥ रहाउ ॥ जै जै कारु जगु गावै ॥ मन चिंदिअड़े फल पावै ॥ सही सलामति नाइ आइे ॥ अपणा प्रभू धिआइे ॥२॥ संत सरोवर नावै ॥ सो जनु परम गति पावै ॥ मरै न आवै जाई ॥ हरि हरि नामु धिआई ॥३॥ इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥ जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥ बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ सभ चिंता गणत मिटाई ॥४॥७॥५७॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि निबाही पूरी ॥ काई बात न रहीआ ऊरी ॥ गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ हरि हरि नामु सम्हारे ॥१॥ अपने दास का सदा रखवाला ॥ करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥१॥ रहाउ ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥ हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ जपि जीवहि से वडभागा ॥२॥ हरि अंमृत बाणी गावै ॥ साधा की धूरी नावै ॥ अपुना नामु आपे दीआ ॥ प्रभ करणहार रखि लीआ ॥३॥ हरि दरसन प्रान अधारा ॥ इहु पूरन बिमल बीचारा ॥ करि किरपा अंतरजामी ॥ दास नानक सरणि सुआमी ॥४॥८॥५८॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥ हरि संगि सहाई पाइआ ॥ जह जाईऐ तहा सुहेले ॥ करि किरपा प्रभि मेले ॥१॥ हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥ मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ नाराइण प्राण अधारा ॥ हम संत जनाँ रेनारा ॥ पतित पुनीत करि लीने ॥ करि किरपा हरि जसु दीने ॥२॥ पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥ सद जीअ संगि रखवाला ॥ हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ ॥ बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥३॥ जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥ हरि रसु तिन ही जाता ॥ जमकंकरु नेड़ि न आइआ ॥ सुखु नानक

सरणी पाइआ ॥४॥६॥५६॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै कीती पूरी ॥ प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥१॥ गुर के चरन कवल रिद धारे ॥ बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए ॥ पतित पुनीत सभ होए ॥ रामदासि सरोवर नाते ॥ सभ लाथे पाप कमाते ॥२॥ गुन गोबिंद नित गाईअै ॥ साधसंगि मिलि धिआईअै ॥ मन बाँछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिदै धिआए ॥३॥ गुर गोपाल आनन्दा ॥ जपि जपि जीवै परमान्नदा ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥४॥१०॥६०॥ रागु सोरठि महला ५ ॥ दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइए ॥ सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइए ॥१॥ हुणि नही संदेसरो माइए ॥ एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइए ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइए ॥ मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइए ॥२॥ हउ हउ भीति भइए है बीचो सुनत देसि निकटाइए ॥ भाँभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइए ॥३॥ भइए किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइए ॥ कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइए ॥४॥ सभु रहिए अंदेसरो माइए ॥ जो चाहत सो गुरू मिलाइए ॥ सरब गुना निधि राइए ॥ रहाउ दूजा ॥११॥६१॥ सोरठि महला ५ ॥ गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ नामु परिए भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥१॥ हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥२॥ हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईअै ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईअै ॥ अवर एट मै सगली देखी

इक तेरी एट रहाईऐ ॥३॥ होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेन्नती ॥ पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥ हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥४॥१२॥६२॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए अनन्दा दुख कलेस सभि नाठे ॥ गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले साँठे ॥१॥ जगजीवन नामु तुमारा ॥ गुर पूरे दीए उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ तूहै मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥ तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥२॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥ पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥३॥ धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥४॥१३॥६३॥ सोरठि मः ५ ॥ गुरु पूरा नमसकारे ॥ प्रभि सभे काज सवारे ॥ हरि अपणी किरपा धारी ॥ प्रभ पूरन पैज सवारी ॥१॥ अपने दास को भइए सहाई ॥ सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ पिछै लगि चली माइआ ॥ तोटि न कतहू आवै ॥ मेरे पूरे सतगुर भावै ॥२॥ सिमरि सिमरि दइआला ॥ सभि जीअ भए किरपाला ॥ जै जै कारु गुसाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥३॥ तू भारो सुआमी मोरा ॥ इहु पुन्नु पदारथु तेरा ॥ जन नानक एकु धिआइआ ॥ सरब फला पुन्नु पाइआ ॥४॥१४॥६४॥

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होए करि इसनाना ॥ गुरि पूरै कीने दाना ॥१॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साधसंगि मलु लाथी ॥ पारब्रहमु भइए साथी ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥२॥१॥६५॥ सोरठि महला ५ ॥ जितु पारब्रहमु चिति आइआ ॥ सो घरु दयि वसाइआ

॥ सुख सागरु गुरु पाइआ ॥ ता सहसा सगल मिटाइआ ॥१॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ आठ पहर गुण गाई ॥ गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ प्रभ की अकथ कहाणी ॥ जन बोलहि अंमृत बाणी ॥ नानक दास वखाणी ॥ गुर पूरे ते जाणी ॥२॥२॥६६॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु गुरि दीआ ॥ पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ सरब निधान सुख पाइआ ॥ गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥१॥ अपने सतिगुर की वडिआई ॥ मन इछे फल पाई ॥ संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥२॥३॥६७॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर का सबदु रखवारे ॥ चउकी चउगिरद हमारे ॥ राम नामि मनु लागा ॥ जमु लजाइ करि भागा ॥१॥ प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ॥ ता की सेव न बिरथी जासी ॥ अनद करहि तेरे दासा ॥ जपि पूरन होई आसा ॥२॥४॥६८॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर अपुने बलिहारी ॥ जिनि पूरन पैज सवारी ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥१॥ संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ प्रभि अपनै वर दीने ॥ सगल जीअ वसि कीने ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ ता सगले दूख मिटाइआ ॥२॥५॥६९॥ सोरठि महला ५ ॥ तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ वाजे अनहद तूरे ॥ सरब कलिआण प्रभि कीने ॥ करि किरपा आपि दीने ॥१॥ बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ जो मंगहि सो लेवहि ॥ प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥ हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ जन नानक साचु सुभाखिआ ॥२॥६॥७०॥ सोरठि महला ५ ॥ सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ हम बारिक तउ सरणाई ॥ प्रभि आपे पैज रखाई ॥१॥ मेरा मात पिता हरि राइआ ॥ करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत तेरे धारे ॥ प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥

जि करावै सो करणा ॥ नानक दास तेरी सरणा ॥२॥७॥७१॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि नामु रिदै परोइिआ ॥ सभु काजु हमारा होइिआ ॥ प्रभ चरणी मनु लागा ॥ पूरन जा के भागा ॥१॥ मिलि साधसंगि हरि धिआइिआ ॥ आठ पहर अराधिए हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइिआ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला अंकुरु जागिआ ॥ राम नामि मनु लागिआ ॥ मनि तनि हरि द्रसि समावै ॥ नानक दास सचे गुण गावै ॥२॥८॥७२॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥ कारज सभि सवारिआ ॥ मंदा को न अलाइे ॥ सभ जै जै कारु सुणाइे ॥१॥ संतहु साची सरणि सुआमी ॥ जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥ करतब सभि सवारे ॥ प्रभि अपुना बिरदु समारे ॥ पतित पावन प्रभ नामा ॥ जन नानक सद कुरबाना ॥२॥९॥७३॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ इिहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥ अनद करहु पित माता ॥ परमेसरु जीअ का दाता ॥१॥ सुभ चितवनि दास तुमारे ॥ राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु परउपकारी ॥ पूरन कल जिनि धारी ॥ नानक सरणी आइिआ ॥ मन चिंदिआ फलु पाइिआ ॥२॥१०॥७४॥ सोरठि महला ५ ॥ सदा सदा हरि जापे ॥ प्रभ बालक राखे आपे ॥ सीतला ठाकि रहाई ॥ बिघन गए हरि नाई ॥१॥ मेरा प्रभु होआ सदा दइिआला ॥ अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइिआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ प्रभ करण कारण समराथा ॥ हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ अपणे दास की सुणी बेन्नती ॥ सभ नानक सुखि सवंती ॥२॥११॥७५॥ सोरठि महला ५ ॥ अपना गुरू धिआए ॥ मिलि कुसल सेती घरि आए ॥ नामै की वडिआई ॥ तिसु कीमति कहणु न जाई ॥१॥ संतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥ हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥ प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ सो पाए जिसु वडभागी ॥ जन नानक नामु धिआइिआ ॥ तिनि सरब सुखा फल पाइिआ ॥२॥१२॥७६॥ सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बन्ना ॥ दुख रोग का डेरा भन्ना ॥ अनद करहि नर नारी ॥ हरि

हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दइआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥ सोरठि महला ५ ॥ ऐथै ओथै रखवाला ॥ प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥ दास अपने आपि राखे ॥ घटि घटि सबदु सुभाखे ॥१॥ गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ आपि सहाई होआ ॥ सचे दा सचा ढोआ ॥ तेरी भगति वडिआई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१४॥७८॥ सोरठि महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा ॥ ता जपिआ नामु रमाणा ॥ गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी पैज हमारी ॥१॥ हरि के चरन सदा सुखदाई ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ कृपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥२॥ आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥३॥ करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥ कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥४॥१५॥७९॥ सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा हमारी ॥ खंना सगल रेनु छारी ॥ इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ गुर पूरे इह गल सारी ॥१॥ हरि हरि नामु संतन की ओटा ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥१॥ रहाउ ॥ संत संगि जसु गाइआ ॥ इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥ कहु नानक आपु मिटाइआ ॥ सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥२॥१६॥८०॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ बखस अपुनी करि दीनी ॥ नित अनंद सुख पाइआ ॥ थाव सगले सुखी वसाइआ ॥१॥ हरि की भगति फल दाती ॥ गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ गुरबाणी गावह भाई ॥ ओह सफल सदा सुखदाई ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥२॥१७॥८१॥ सोरठि महला ५ ॥

गुरु पूरा आराधे ॥ कारज सगले साधे ॥ सगल मनोरथ पूरे ॥ बाजे अनहद तूरे ॥१॥ संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥ संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर पूरे की बाणी ॥ पारब्रहम मनि भाणी ॥ नानक दासि वखाणी ॥ निरमल अकथ कहाणी ॥२॥१८॥८२॥ सोरठि महला ५ ॥ भूखे खावत लाज न आवै ॥ तिउ हरि जनु हरि गुण गावै ॥१॥ अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥ जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ कामी कामि लुभावै ॥ तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥२॥ जिउ माता बालि लपटावै ॥ तिउ गिआनी नामु कमावै ॥३॥ गुर पूरे ते पावै ॥ जन नानक नामु धिआवै ॥४॥१९॥८३॥ सोरठि महला ५ ॥ सुख साँदि घरि आइआ ॥ निंदक कै मुखि छाइआ ॥ पूरै गुरि पहिराइआ ॥ बिनसे दुख सबाइआ ॥१॥ संतहु साचे की वडिआई ॥ जिनि अचरज सोभ बणाई ॥१॥ रहाउ ॥ बोले साहिब कै भाणै ॥ दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥ नानक प्रभ सुखदाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥२॥२०॥८४॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभु अपुना रिदै धिआइ ॥ घरि सही सलामति आइ ॥ संतोखु भइआ संसारे ॥ गुरि पूरै लै तारे ॥१॥ संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥१॥ रहाउ ॥ हरि नामु रिदै उरि धारे ॥ तिनि सभे थोक सवारे ॥ गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ फिरि नानक दूखु न थीआ ॥२॥२१॥८५॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ जै जै कारु करे सभु कोई ॥ गुर पूरे की वडिआई ॥ ता की कीमति कही न जाई ॥१॥ हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ जिस नो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥१॥ रहाउ ॥ तूं भारो सुआमी मेरा ॥ संताँ भरवासा तेरा ॥ नानक प्रभ सरणाई ॥ मुखि निंदक कै छाई ॥२॥२२॥८६॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु मेरे मीता ॥ पाछे आनदु प्रभि कीता ॥ परमेसुरि बणत बणाई ॥ फिरि डोलत कतहू नाही ॥१॥ साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥

सभ जीअ तेरे दइिआला ॥ अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ अचरजु तेरी वडिआई ॥ नित नानक नामु धिआई ॥२॥२३॥८७॥ सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइिणु मेरै ॥ जमदूतु न आवै नेरै ॥ कंठि लाइि प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥१॥ गुरि पूरै पूरी कीती ॥ दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाइे ॥ सुखि साँदि फिरि आइे ॥ नानक प्रभ सरणाइे ॥ जिनि सगले रोग मिटाइे ॥२॥२४॥८८॥ सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ ॥ दरसनु भेटत होत अन्नदा दूखु गइिआ हरि गाईऐ ॥१॥ हरि रसु पीवहु भाई ॥ नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ नानक की बेन्नती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥२॥२५॥८९॥ सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥१॥ प्रभ जी तेरी एट गुसाई ॥ तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम् धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाइे मन माही ॥२॥ सूख सहज आन्नद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ जिणि घरि आइे सोभा सेती पूरन होई आसा ॥३॥ पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥ गुर चरनी लागि तरिए भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥४॥२६॥९०॥ सोरठि महला ५ ॥ भइिए किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ खिन महि राखि लीए जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥१॥ मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ ॥ सगल कलेस मिटहि इिसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत जा के सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ साधसंगि नानक नामु धिआइिआ मुख ऊजल भइे दरबारा ॥२॥२७॥९१॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरउ अपुना साँई ॥ दिनसु रैनि सद धिआई ॥ हाथ देइि जिनि राखे ॥ हरि नाम महा रस चाखे ॥१॥

अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥ भइे किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होइे मिहरवान ॥ रहाउ ॥ नानक जन सरनाई ॥ जिनि पूरन पैज रखाई ॥ सगले दूख मिटाई ॥ सुखु भुंचहु मेरे भाई ॥२॥२८॥६२॥ सोरठि महला ५ ॥ सुनहु बिन्नती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥१॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥ २॥२९॥६३॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥ अंगीकारु कीए प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥१॥ संतन के कारज सगल सवारे ॥ दीन दइिआल कृपाल कृपा निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥ भगति सिरपाउ दीए जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥२॥३०॥६४॥

सोरठि महला ९ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥ करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ कालु बिआलु जिउ परिए डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥ सोरठि महला ९ ॥ मन की मन ही माहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही ॥ अवर सगल मिथिआ इे जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारिए मानस देह लही ॥ नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ पर दारा निंदिआ रस रचिए राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥ मुकति पंथु जानिए तै नाहनि धन जोरन

कउ धाइआ ॥ अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥ ना हरि भजिए न गुर जनु सेविए नह उपजिए कछु गिआना ॥ घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥ बहुतु जनम भरमत तै हारिए असथिर मति नही पाई ॥ मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥ अटल भइिए ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ दुख हरता इिह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥ जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥ महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रानी कउनु उपाउ करै ॥ जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥ कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥ कल मै इेकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥ अउर धरम ता कै सम नाहनि इिह बिधि बेदु बतावै ॥२॥ सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥ सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिए उरझाई ॥१॥ रहाउ ॥ सगल जनम भरम ही भरम खोइिए नह असथिरु मति पाई ॥ बिखिआसकत रहिए निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥ साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ ॥ बेद पुरान सिमृति के मत सुनि निमख न हीइे बसावै ॥ पर धन पर दारा सिउ रचिए बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥ मदि माइआ कै भइिए बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ घट ही

भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥ जब ही सरनि साध की आइिए दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेतिए चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥ सोरठि महला ६ ॥ रे नर इिह साची जीअ धारि ॥ सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥ बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥ तैसे ही इिह सुख माइिआ के उरझिए कहा गवार ॥१॥ अजहू समझि कछु बिगरिए नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिए तोहि पुकारि ॥२॥८॥ सोरठि महला ६ ॥ इिह जगि मीतु न देखिए कोई ॥ सगल जगतु अपनै सुखि लागिए दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥ जब ही निरधन देखिए नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥ कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इिन सिउ नेहु लगाइिए ॥ दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइिए ॥२॥ सुआन पूछ जिउ भइिए न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥ सोरठि महला ६ ॥ मन रे गहिए न गुर उपदेसु ॥ कहा भइिए जउ मूडु मुडाइिए भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥ साच छाडि कै झूठह लागिए जनमु अकारथु खोइिए ॥ करि परपंच उदर निज पोखिए पसु की निआई सोइिए ॥१॥ राम भजन की गति नही जानी माइिआ हाथि बिकाना ॥ उरझि रहिए बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥ रहिए अचेतु न चेतिए गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥ सोरठि महला ६ ॥ जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥ सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥ नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥ हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥ आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥ कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥ गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इिह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भइिए गोबिंद सिउ

जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ अपने सुख सिउ ही जगु फाँधिए को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥ घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥ जब ही हंस तजी इह काँइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥ इह बिधि को बिउहारु बनिए है जा सिउ नेहु लगाइए ॥ अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइए ॥३॥१२॥१३९॥

सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ तृसना राचि न पर घरि जावा तृसना नामि बुझाई ॥ घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥१॥ मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ इेको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥२॥ मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ भिखिआ नामि रजे संतोखी अंमृतु सहजि पीआई ॥३॥ दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ सभु जगु तेरा तू इेको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ अपर अपार अगंम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥४॥ सुन्न समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥ मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥ करम सुकरम कराइे आपे आपे भगति दृड़ामं ॥ मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥५॥

जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई ॥ अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥ गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥ जिउ चलाइे तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥६॥ इकि भरमि भुलाइे इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥ जितु तुधु लाइे तेहा फलु पाइिआ तू हुकमि चलावणहारा ॥ सेवा करी जे किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा ॥ सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अंमृत नामु अधारा ॥७॥ गगन्नतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥ नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥ सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥८॥१॥ सोरठि महला १ तितुकी ॥ आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी ॥ पापि पुंनि जगु जाइिआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ इिह माइिआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥१॥ सुणि पंडित करमा कारी ॥ जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी ॥ पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ इिन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥२॥ दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइि खुआई ॥ बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु सेवे ता सुखु पाइे भाई आवणु जाणु रहाई ॥३॥ साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥ गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥४॥ पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इिहु जगु इेहा वथु ॥ गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥५॥ इिहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइि ॥ बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइि ॥ इिहु जगु भरमि भुलाइिआ भाई कहणा किछू न जाइि ॥६॥ गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु

॥ गुरु अंकसु जिनि नामु दृड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥७॥ इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ इहु वखरु वापारी सो दृड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥ धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥८॥२॥ सोरठि महला १ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन् के साथ तरे ॥ तिना ठाक न पाईऐ पिआरे अंमृत रसन हरे ॥ बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥१॥ भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥१॥ रहाउ ॥ सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥ तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥२॥ पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥३॥ हुकमै अंदरि निंमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ हुकमै अंदरि जंमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥४॥ हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ हुकमे बंनि् चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥ हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥५॥ हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥६॥ आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन् बलिहारै जाउ ॥ नाउ मिलै संतोखीआँ पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥७॥ काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥८॥३॥ सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥ तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ हम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥१॥ मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥ हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम

विसेखु ॥ रहाउ ॥ बिखु माइिआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइि ॥ चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइि ॥२॥ रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥ जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥३॥ पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥ गुर मिलिऐ सुखु पाइिआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥४॥ जलि मलि काइिआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइि ॥ गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइि ॥५॥ देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥६॥ गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइि ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइि ॥७॥ बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइि ॥ बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइि ॥८॥ सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥९॥ ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइि ॥ खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइि ॥१०॥४॥

सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइिआ ॥ प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइिआ ॥ गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइिआ ॥१॥ हरि जी इेह तेरी वडिआई ॥ भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥ केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥ रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥२॥ मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिए हरि नामि न लागा भाउ ॥ कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥३॥ भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ माइिआ मोह सभ

लोक है तेरी तू इेको पुरखु बिधाता ॥ हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥४॥ अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ एना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥५॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइिआ मनमुखि भउकि मुइे बिललाई ॥ आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥ गुरमुखि होवै सु अंमृतु पीवै सहजे साचि समाई ॥६॥ बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई ॥ वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥७॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ एना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइि न मेटणहारा ॥ नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥८॥१॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लइे भाई सतिगुर की सेवा लाइि ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइि ॥१॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइि ॥ गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लइे रलाइि ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥२॥ मनूरै ते कंचन भइे भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइि ॥ आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइि ॥३॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥४॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइि ॥ सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइि ॥५॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥६॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइि ॥ जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइि ॥७॥ सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइि ॥ नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै

कोइि ॥८॥२॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइि ॥ सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइि ॥१॥ हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइि ॥ गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइि ॥ रहाउ ॥ गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइि ॥ सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइि ॥२॥ पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥३॥ से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइि सचै बैरागु ॥ अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥४॥ सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिस दी वडी है दाति ॥५॥ मनमुखि मैली डुंमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥६॥ इेतु जनमि हरि न चेतिए भाई किआ मुहु देसी जाइि ॥ किड़ी पवंदी मुहाइिएनु भाई बिखिआ नो लोभाइि ॥७॥ नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु साँति सरीर ॥ नानक नामु समालि तू भाई अपरंपर गुणी गहीर ॥८॥३॥

सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु जगु जिनहि उपाइिआ भाई करण कारण समरथु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता इेकु अकथु ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस ते जापै तथु ॥१॥ मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥ नाम दानु देइि जन अपने दूख दरद का ह्मता ॥ रहाउ ॥ जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार ॥ तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥२॥ सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ मिलि संत सभा मनु माँजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥ मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु ॥ गुर बचनी

सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥३॥ मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥ घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥ करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥४॥ प्रेम पदारथु नामु है भाई माइिआ मोह बिनासु ॥ तिसु भावै ता मेलि लइे भाई हिरदै नाम निवासु ॥ गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥ प्रगटु भइिआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥५॥ गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥ रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइिआ थाउ ॥ जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥६॥ बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ एहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइि निथावे थाउ ॥ रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥ जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥७॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि ॥ सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ साधू संगि मिलाइिआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥ जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥८॥ अंचलि लाइि तराइिआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ मनु तनु सीतलु होइिआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥९॥१॥ सोरठि महला ५ ॥ मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइिआ ॥ बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइिआ मोहु वधाइिआ ॥ जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइिआ ॥ सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइिआ ॥१॥ मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी इेक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि आइिआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइि ॥ साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइि ॥ जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे

साचै नाइि ॥ तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइि ॥२॥ मिठा करि कै खाइिआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥ कउड़ा होइि पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ भोग भुंचाइि भुलाइिअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥ जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइिआ संजोगु ॥३॥ माइिआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होइे धूड़ि ॥ बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥४॥ साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइि ॥ जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइि ॥ मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइि ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइि ॥५॥ संजम सहस सिआणपा पिआरे इिक न चली नालि ॥ जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि ॥ सतिगुरु जिना मिलाइिएनु पिआरे साचा नामु समालि ॥६॥ सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥ अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अंमृति पूर भरे ॥ दुख सागरु तिन लमघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥ जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥७॥ संम्रथ पुरखु दइिआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥ तिसु सरणाई ढहि पइे पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥ हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥८॥२॥

सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पाठु पड़िए अरु बेदु बीचारिए निवलि भुअंगम साधे ॥ पंच जना सिउ संगु न छुटकिए अधिक अहंबुधि बाधे ॥१॥ पिआरे इिन बिधि मिलणु न जाई मै कीइे करम अनेका ॥ हारि परिए सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ मोनि भइिए करपाती रहिए नगन फिरिए बन माही ॥ तट

तीरथ सभ धरती भ्रमिए दुबिधा छुटकै नाही ॥२॥ मन कामना तीरथ जाइ बसिए सिरि करवत धराइे ॥ मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराइे ॥३॥ कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ अन्न बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥४॥ पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥ हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥५॥ जोग सिध आसण चउरासीह इे भी करि करि रहिआ ॥ वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥६॥ राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥७॥ हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ कहु नानक तिसु भइिए परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥८॥ तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥ भइिए कृपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥

रागु सोरठि वार महले ४ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥ परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥ सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥ देवर जेठ मुइे दुखि ससू का डरु किसु ॥ जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥१॥ मः ४ ॥ सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥ गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइिआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥२॥ पउड़ी ॥ तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ तुधु आपे खेलु रचाइि तुधु आपि सवारिआ ॥ दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥१॥

सलोकु मः ३ ॥ हउमै जलते जलि मुइे भ्रमि आइे दूजै भाइि ॥ पूरै सतिगुरि राखि लीइे आपणै पन्नै पाइि ॥ इिहु जगु जलता नदरी आइिआ गुर कै सबदि सुभाइि ॥ सबदि रते से सीतल भइे नानक सचु कमाइि ॥१॥ मः ३ ॥ सफलिए सतिगुरु सेविआ धन्नु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइिआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ गुरमुखि मुइे जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुइे न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईअै ॥ सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईअै ॥ हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईअै ॥ हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईअै ॥ हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईअै ॥२॥ सलोकु मः ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥ मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइि मुइिआसु ॥ जिनी गुरमुखि नामु न चेतिए से बहणि न मिलनी पासि ॥ दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ मनमुखा नो को न विसही चुकि गइिआ वेसासु ॥ नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥१॥ मः ३ ॥ से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइि ॥ सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइि ॥ दूजै भाइि लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइि न मेटणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइि कै आपि खेलु रचाइिआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिआ माइिआ मोहु वधाइिआ ॥ विचि हउमै लेखा मंगीअै फिरि आवै जाइिआ ॥ जिना हरि आपि कृपा करे से गुरि समझाइिआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइिआ ॥३॥ सलोकु मः ३ ॥ माइिआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइिआ ॥ मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइिआ ॥ बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी

आइिआ ॥ धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइिआ सुखदाता मनि न वसाइिआ ॥ नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइिआ ॥१॥ मः ३ ॥ घर ही महि अंमृतु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइिआ ॥ जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइिआ ॥ अंमृतु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइिआ ॥ गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइिआ ॥ तनु मनु सीतलु होइिआ रसना हरि सादु आइिआ ॥ सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइिआ ॥ बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ अंमृतु इेको सबदु है नानक गुरमुखि पाइिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ सो हरि पुरखु अगंमु है कहु कितु बिधि पाईअै ॥ तिसु रूपु न रेख अदृसटु कहु जन किउ धिआईअै ॥ निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईअै ॥ जिसु आपि बुझाइे आपि सु हरि मारगि पाईअै ॥ गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईअै ॥४॥ सलोकु मः ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीअै रतु न भोरी डेहि ॥ जीउ वंञै चउ खन्नीअै सचे संदड़ै नेहि ॥ नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥१॥ मः ३ ॥ सजणु मैडा रंगुला रंगु लाइे मनु लेइि ॥ जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥ नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइिदा ॥ हरि आपे सृसटि सवारि सिरि धंधै लाइिदा ॥ इिकना भगती लाइि इिकि आपि खुआइिदा ॥ इिकना मारगि पाइि इिकि उझड़ि पाइिदा ॥ जनु नानकु नामु धिआइे गुरमुखि गुण गाइिदा ॥५॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइि ॥ मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइि ॥ बंधन तोड़ै मुकति होइि सचे रहै समाइि ॥ इिसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइि ॥ नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुख मन्नु अजितु है दूजै लगै जाइि ॥ तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइि ॥ घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइि ॥ इिहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइि ॥ भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइि

॥ मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ गुर परसादी भउ पइिआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ भै पइिऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइिआ नानक सुखि समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥ एहु माइिआ रंगु कसुंभ खिन महि लहि जावणा ॥ चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥ जाँ पकड़ि चलाइिआ कालि ताँ खरा डरावणा ॥ एह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥६॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जंमहि तै मरि जाहि ॥ सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥१॥ मः ३ ॥ जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥ जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥ नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइिआ ॥ जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइिआ ॥ से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइिआ ॥ हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइिआ ॥ गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइिआ ॥७॥ सलोकु मः ३ ॥ थालै विचि तै वसतू पईए हरि भोजनु अंमृतु सारु ॥ जितु खाधै मनु तृपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥ एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ नानक जिसु बुझाइे सु बुझसी हरि पाइिआ गुरमुखि घालि ॥१॥ मः ३ ॥ जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥ नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥ हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥ गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥८॥ सलोकु

मः ३ ॥ विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि ॥ मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ गुरमुखि अंमृतु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥१॥ मः ३ ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥ मनमुख भरमै सहसा होवै ॥ अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥ गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥ नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ से हरि नामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥ हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥ हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥ जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥ गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ अंतरि गिआनु न आइए जितु किछु सोझी पाइ ॥ विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥ मः ३ ॥ इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥ गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥ सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ विखु विचि अंमृतु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ नानक सचु सलाहीऐ धन्नु सवारणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥ जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥ कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ जिसु हरि होइ कृपालु सो नामु धिआवई ॥ हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥१०॥ सलोकु मः ३ ॥ सेखा चउचकिआ चउवाइआ इेहु मनु इकतु घरि आणि ॥ इेहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥ सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥ आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥ नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥१॥ मः ३ ॥ हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥ हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥ कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥ सो बूझै इेहु बिबेकु जिसु बुझाइे आपि हरि ॥ जनु नानकु कहै

विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥११॥ सलोकु मः ३ ॥ परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥१॥ मः ३ ॥ गुरमुखि चितु न लाइए अंति दुखु पहुता आइ ॥ अंदरहु बाहरहु अंधिआँ सुधि न काई पाइ ॥ पंडित तिन की बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥ पड़ि थके संतोखु न आइए अनदिनु जलत विहाइ ॥ कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥ नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥ जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥ गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ॥ हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥ बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥१२॥ सलोकु मः ३ ॥ पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुग चारि ॥ त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥ पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥ अंतरि तृसना भुख है मूरख भुखिआ मुइे गवार ॥ सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ अंदरहु तृसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥ नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरि धारि ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुख हरि नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥ मनहठि सहजि न बीजिए भुखा कि अगै खाइ ॥ नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥ जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥ जो गुरमुखि चखै सादु सा तृपतावणी ॥ गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥ जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥१३॥ सलोकु मः ३ ॥ हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ॥ मनु तनु

आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥१॥ मः ३ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आइे ते परवाणु ॥ नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥१४॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥१॥ मः ३ ॥ नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ धनु संपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥ घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥१५॥ सलोकु मः ३ ॥ बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥१॥ मः १ ॥ इकि दझहि इकि दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ जिन कै पोतै पुन्नु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥१६॥ सलोकु मः ३ ॥ नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ जम दरि बधे मारीअहि

बहुती मिलै सजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ अगै पिछै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ तृसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥ नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥२॥ पउड़ी ॥ जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥ जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥ हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥ वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥१७॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥१॥ मः ३ ॥ महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥ सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥१८॥ सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ ॥ नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥ नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥१॥ मः ३ ॥ किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख तृसना भुख न जाइ ॥ गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ अंदरु तृपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै

आदि ॥ नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ बलिहारी तिन्न कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥ सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा ॥ हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलविख क्रखा ॥ धनु धन्नु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥१९॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥ नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइए गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥ बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै इेहा सिधि इेहा करमाति ॥२॥ पउड़ी ॥ हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥ हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥ हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥ हरि देवहु दानु दइिआल होइ विचि पाथर क्रम जंता ॥ जन नानक नामु धिआइिआ गुरमुखि धनवंता ॥२०॥ सलोकु मः ३ ॥ पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि त्रिसना विकारु ॥ हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥ गुण निधानु हरि पाइिआ सहजि करे वीचारु ॥ धन्नु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥१॥ मः ३ ॥ विणु मनु मारे कोइि न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥ भेखधारी तीरथी भवि थके ना इेहु मनु मारिआ जाइ ॥ गुरमुखि इेहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥ नानक इिसु मन की मलु इिउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इिक किनका ॥ हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ अैसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इिक पलका ॥ हरि हरि दइिआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि

हरि जपि जिणका ॥२१॥ सलोकु मः ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ खन्नली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥ मः ३ ॥ चहु जुगी कलि काली काँढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥ हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥२२॥ सलोकु मः ३ ॥ रे जन उथारै दबिएहु सुतिआ गई विहाइ ॥ सतिगुर का सबदु सुणि न जागिए अंतरि न उपजिए चाउ ॥ सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ जगतु जलम्दा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥१॥ मः ३ ॥ सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइिआ नारि ॥ ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥२॥ पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ एहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥२३॥ सलोकु मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ जंमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिन्न कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥१॥ मः ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥

पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि हरि अपणी दइिआ करि हरि बोली बैणी ॥ हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥ जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥२४॥ सलोकु मः ४ ॥ हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥ हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥१॥ मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥ पउड़ी ॥ रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥ जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥२५॥ सलोकु मः ४ ॥ अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥१॥ मः ४ ॥ मनमुख माइिआ मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ एइि आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ नानक बखसि लइे प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइिआ ॥ सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइिआ ॥ अंमृतु नामु निधानु भोजनु खाइिआ ॥ संत जना की धूरि मसतकि

लाइिआ ॥ नानक भइे पुनीत हरि तीरथि नाइिआ ॥२६॥ सलोकु मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि साँति है मनि तनि नामि समाइि ॥ नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइि ॥ नामु पदारथु पाइिआ चिंता गई बिलाइि ॥ सतिगुरि मिलिअै नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइि ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइि ॥१॥ मः ४ ॥ सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइिआ ॥ एसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइिआ ॥ एसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥ किआ होवै किसै ही दै कीतै जाँ धुरि किरतु एस दा इेहो जेहा पइिआ ॥ जिथै एहु जाइि तिथै एहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ इेहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ गुरि कृपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥ गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इिते ॥२७॥ सलोक मः १ ॥ ता की रजाइि लेखिआ पाइि अब किआ कीजै पाँडे ॥ हुकमु होआ हासलु तदे होइि निबड़िआ ह्मढहि जीअ कमाँदे ॥१॥ मः २ ॥ नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ जहा दाणे तहाँ खाणे नानका सचु हे ॥२॥ पउड़ी ॥ सभे गला आपि थाटि बहालीएनु ॥ आपे रचनु रचाइि आपे ही घालिएनु ॥ आपे जंत उपाइि आपि प्रतिपालिएनु ॥ दास रखे कंठि लाइि नदरि निहालिएनु ॥ नानक भगता सदा अन्नदु भाउ दूजा जालिएनु ॥२८॥ सलोकु मः ३ ॥ इे मन हरि जी धिआइि तू इिक मनि इिक चिति भाइि ॥ हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइि न पछोताइि ॥ हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविअै सुखु पाइि ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइि ॥१॥ मः ३ ॥ आपे सेवा लाइिअनु आपे बखस करेइि ॥ सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइि ॥ नानक नामु धिआइिनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू करण कारण समरथु

हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥ सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ वडिआई गुरमुखि देहि प्रभु हरि पावै सोई ॥ गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धन्नु धन्नु धन्नु गुरु सोई ॥२९॥१॥ सुधु

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥ एइ ले जारे एइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥१॥ मन रे संसारु अंध गहेरा ॥ चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥१॥ रहाउ ॥ कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥२॥ दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥ बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥३॥ राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥४॥१॥ जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥१॥ काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥ जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥ मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥२॥ देहुरी लउ बरी नारि संगि भई आगै सजन सुहेला ॥ मरघट लउ सभु लोगु कुटंबु भइओ आगै हंसु अकेला ॥३॥ कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥४॥२॥ बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा ॥ काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडित पै चले निरासा ॥१॥ मन रे सरिओ न एकै काजा ॥ भजिओ न रघुपति राजा ॥१॥ रहाउ ॥ बन खंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ ॥ नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥२॥ भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥ राग रागनी डिंभ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥३॥ परिओ कालु सभै

जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥ कहु कबीर जन भइे खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥४॥३॥ घरु २ ॥ दुहि दुहि लोचन पेखा ॥ हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ नैन रहे रंगु लाई ॥ अब बे गल कहनु न जाई ॥१॥ हमरा भरमु गइिआ भउ भागा ॥ जब राम नाम चितु लागा ॥१॥ रहाउ ॥ बाजीगर डंक बजाई ॥ सभ खलक तमासे आई ॥ बाजीगर स्वाँगु सकेला ॥ अपने रंग रवै अकेला ॥२॥ कथनी कहि भरमु न जाई ॥ सभ कथि कथि रही लुकाई ॥ जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ ता के हिरदै रहिआ समाई ॥३॥ गुर किंचत किरपा कीनी ॥ सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ कहि कबीर रंगि राता ॥ मिलिए जगजीवन दाता ॥४॥४॥ जा के निगम दूध के ठाटा ॥ समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥ ता की होहु बिलोवनहारी ॥ किउ मेटै गो छाछि तुहारी ॥१॥ चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥ जगजीवन प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ तू घर घर रमईऐ फेरी ॥ तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ तू जमि बपुरी है हेरी ॥२॥ प्रभ करन करावनहारी ॥ किआ चेरी हाथ बिचारी ॥ सोई सोई जागी ॥ जितु लाई तितु लागी ॥३॥ चेरी तै सुमति कहाँ ते पाई ॥ जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥ सु रसु कबीरै जानिआ ॥ मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥४॥५॥ जिह बाझु न जीआ जाई ॥ जउ मिलै त घाल अघाई ॥ सद जीवनु भलो कहाँही ॥ मूऐ बिनु जीवनु नाही ॥१॥ अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥ निज निरखत गत बिउहारा ॥१॥ रहाउ ॥ घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥ बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥ पूति पिता इकु जाइिआ ॥ बिनु ठाहर नगरु बसाइिआ ॥२॥ जाचक जन दाता पाइिआ ॥ सो दीआ न जाई खाइिआ ॥ छोडिआ जाइि न मूका ॥ अउरन पहि जाना चूका ॥३॥ जो जीवन मरना जानै ॥ सो पंच सैल सुख मानै ॥ कबीरै सो धनु पाइिआ ॥ हरि भेटत आपु मिटाइिआ ॥४॥६॥ किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥ किआ बेद पुरानाँ सुनीऐ ॥ पड़े सुने किआ होई ॥ जउ सहज न मिलिए सोई ॥१॥ हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ किआ सोचहि बारं बारा ॥१॥ रहाउ ॥ अंधिआरे दीपकु चहीऐ

॥ इिक बसतु अगोचर लहीअै ॥ बसतु अगोचर पाई ॥ घटि दीपकु रहिआ समाई ॥२॥ कहि कबीर अब जानिआ ॥ जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ मन माने लोगु न पतीजै ॥ न पतीजै तउ किआ कीजै ॥३॥७॥ हृदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥१॥ काँइिआ माँजसि कउन गुनाँ ॥ जउ घट भीतरि है मलनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥ कउरापनु तऊ न जाई ॥२॥ कहि कबीर बीचारी ॥ भव सागरु तारि मुरारी ॥३॥८॥

सोरठि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥ सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥१॥ मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी एक कोई पानीए न पावै ॥२॥ कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥ हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥३॥९॥ संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥ गुरि दिखलाई मोरी ॥ जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ मूंदि लीइे दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥१॥ कुंभ कमलु जलि भरिआ ॥ जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ कहु कबीर जन जानिआ ॥ जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥२॥१०॥ रागु सोरठि ॥ भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हउ माँगउ संतन रेना ॥ मै नाही किसी का देना ॥१॥ माधो कैसी बनै तुम संगे ॥ आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥ दुइि सेर माँगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥ अध सेरु माँगउ दाले ॥ मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥२॥ खाट माँगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर कउ माँगउ खींधा ॥ तेरी भगति करै जनु थींधा ॥३॥ मै नाही कीता लबो ॥ इिकु नाउ तेरा मै फबो ॥ कहि कबीर मनु मानिआ ॥ मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥४॥११॥

रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ जब देखा तब गावा ॥ तउ

जन धीरजु पावा ॥१॥ नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ॥१॥ रहाउ ॥ जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥ तह अनहद सबद बजंता ॥ जोती जोति समानी ॥ मै गुर परसादी जानी ॥२॥ रतन कमल कोठरी ॥ चमकार बीजुल तही ॥ नेरै नाही दूरि ॥ निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥३॥ जह अनहत सूर उज्यारा ॥ तह दीपक जलै छंछारा ॥ गुर परसादी जानिआ ॥ जनु नामा सहज समानिआ ॥४॥१॥ घरु ४ सोरठि ॥ पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥ तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥ री बाई बेढी देनु न जाई ॥ देखु बेढी रहिए समाई ॥ हमारै बेढी प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ बेढी प्रीति मजूरी माँगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥२॥ ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठाँई हो ॥ गूंगै महा अंमृत रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥ बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बाँधि ध्रू थापिए हो ॥ नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिए हो ॥४॥२॥ सोरठि घरु ३ ॥ अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥ बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ बादल बिनु बरखा होई ॥ जउ ततु बिचारै कोई ॥१॥ मो कउ मिलिए रामु सनेही ॥ जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥१॥ रहाउ ॥ मिलि पारस कंचनु होइआ ॥ मुख मनसा रतनु परोइआ ॥ निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ गुर पूछे मनु पतीआगा ॥२॥ जल भीतरि कुंभ समानिआ ॥ सभ रामु इेकु करि जानिआ ॥ गुर चेले है मनु मानिआ ॥ जन नामै ततु पछानिआ ॥३॥३॥

रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ अनल अगम जैसे लहरि मइि एदधि जल केवल जल माँही ॥१॥ माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ जैसा मानीऐ होइि न तैसा ॥१॥ रहाउ ॥ नरपति इेकु सिंघासनि सोइिआ सुपने भइिआ भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुखु पाइिआ सो गति

भई हमारी ॥२॥ राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥ सरबे ऐकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥ जउ हम बाँधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे ऐसी ॥१॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फाँकिए अरु काटिए राँधि कीए बहु बानी ॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिए पानी ॥२॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिए भगत नही संतापा ॥३॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऔ ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऔ ॥४॥२॥ दुलभ जनमु पुन्न फल पाइए बिरथा जात अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि गृह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥ न बीचारिए राजा राम को रसु ॥ जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ जानि अजान भऐ हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥ सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर माँही ॥ बिआस बिचारि कहिए परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥ जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भऐ है चकोरा ॥१॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ

तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥ तुमरे भजन कटहि जम फाँसा ॥ भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥ जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥ हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ राखहु कंध उसारहु नीवाँ ॥ साढे तीनि हाथ तेरी सीवाँ ॥२॥ बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥ इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥ मेरी जाति कमीनी पाँति कमीनी एछा जनमु हमारा ॥ तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥६॥ चमरटा गाँठि न जनई ॥ लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥ आर नही जिह तोपउ ॥ नही राँबी ठाउ रोपउ ॥१॥ लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥ हउ बिनु गाँठे जाइ पहूचा ॥२॥ रविदासु जपै राम नामा ॥ मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥

रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥ रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥१॥ राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ अपने संतह लेहु उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥२॥ हरि का नामु अंमृत जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥३॥१॥ ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥ अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥१॥ हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ जैसे गूंगे की मिठिआई ॥१॥ रहाउ ॥ रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥ कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखाँ तह सोई ॥२॥२॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाइे सोइि ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइि ॥२॥ दइिआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ सरबं साचा इेकु है दूजा नाही कोइि ॥ ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहाँ ॥ दूजा नाही कोइि जिसु आगै पिआरे जाइि कहा ॥१॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइि ॥ नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइि ॥४॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइि ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥ धनासरी महला १ ॥ हम आदमी हाँ इिक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥१॥ अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥१॥ रहाउ ॥ सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥ नानकु साइिरु इेव कहतु है सचे परवदगारा ॥२॥ जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥३॥ नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ जम दुआरि जा पकड़ि चलाइिआ ता

चलदा पछुताणा ॥४॥ जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥५॥२॥

धनासरी महला १ घरु दूजा ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥१॥ हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥ ना को चाखै ना को खाइ ॥ लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ ता पति रहै राखै जा सोइ ॥२॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जे को करे कीतै किआ होइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥३॥ हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥ किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥ जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ विणु नदरी नानक नही कोइ ॥४॥१॥३॥ धनासरी महला १ ॥ नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ आतमा परातमा एको करै ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥१॥ गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥ पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥२॥ ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ साहिब भावै सो परवाणु ॥ सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥३॥ सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ साचा साहिबु किरपा करै ॥ सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥४॥ भनति नानकु करे वीचारु ॥ साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ ता को पावै मोख दुआरु ॥ जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥५॥२॥४॥ धनासरी महला १ ॥ जीउ तपतु है बारो बार ॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ जिउ पका रोगी विललाइ ॥१॥ बहुता बोलणु झखणु होइ ॥ विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि कन कीते अखी नाकु ॥ जिनि जिहवा

दिती बोले तातु ॥ जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥ वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥२॥ जेता मोहु परीति सुआद ॥ सभा कालख दागा दाग ॥ दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ दरगह बैसण नाही जाइ ॥३॥ करमि मिलै आखणु तेरा नाउ ॥ जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥ जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ नानक साचा सरब दातार ॥४॥३॥५॥ धनासरी महला १ ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥१॥ सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥ बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥१॥ रहाउ ॥ चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥ खोटे का मुलु इेकु दुगाणा ॥ जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥२॥ जैसा करे सु तैसा पावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥३॥ जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥ भावै सभु आखउ संसारु ॥ तुधु भावै अधी परवाणु ॥ नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥४॥४॥६॥ धनासरी महला १ ॥ काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥ दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ खोटा कामि न आवै वेखु ॥१॥ नानक जे विचि रुपा होइ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ तीने एजाड़े का बंधु ॥२॥ सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥ गुर परसादी इेको जाणै ॥ काजी सो जो उलटी करै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥ सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥३॥ दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥ मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥ जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥४॥५॥७॥

धनासरी महला १ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥१॥ कल महि राम नामु सारु ॥ अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ आँट सेती नाकु

पकड़हि सूझते तिनि लोअ ॥ मगर पाछै कछु न सूझै इेहु पदमु अलोअ ॥२॥ खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ सृसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥३॥ असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥ बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥४॥१॥६॥८॥

धनासरी महला १ आरती १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइि फूलन्त जोती ॥१॥ कैसी आरती होइि भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना इेक तोही ॥ सहस पद बिमल नन इेक पद गंध बिनु सहस तव गंध इिव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइि ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइि ॥ गुर साखी जोति परगटु होइि ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइि ॥३॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइि जा ते तेरै नामि वासा ॥४॥१॥७॥६॥

धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इिहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइि ॥ पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइि ॥ अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥१॥ से धनवंत हरि नामि लिव लाइि ॥ गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइि ॥ रहाउ ॥ अवगुण काटि गुण रिदै समाइि ॥ पूरे गुर कै सहजि सुभाइि ॥ पूरे गुर की साची बाणी ॥ सुख मन अंतरि सहजि समाणी ॥२॥ इेकु अचरजु जन देखहु भाई ॥ दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥ नामु अमोलकु न पाइिआ जाइि ॥ गुर परसादि वसै मनि आइि ॥३॥ सभ महि वसै प्रभु इेको सोइि ॥ गुरमती घटि परगटु होइि ॥ सहजे जिनि प्रभु जाणि

पछाणिआ ॥ नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥४॥१॥ धनासरी महला ३ ॥ हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥१॥ गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ ॥ तिसु सदा अन्नदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥ सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ निरमल नामि हउमै मलु धोइ ॥ साची भगति सदा सुखु होइ ॥२॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ॥ हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥३॥ बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥ अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥ सतिगुरु मिलै सभु तृसन बुझाइ ॥ नानक नामि साँति सुखु पाइ ॥४॥२॥ धनासरी महला ३ ॥ सदा धनु अंतरि नामु समाले ॥ जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥ मुकति पदारथु तिन कउ पाए ॥ हरि कै नामि रते लिव लाए ॥१॥ गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥ अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥ साँति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ मूलहु भुला जनमु गवाए ॥२॥ गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥ सेवा साची नामि समाणी ॥ सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ साच नामि वडिआई पाए ॥३॥ आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥ नदरि करे मेलावा होइ ॥ गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ॥ नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥४॥३॥ धनासरी महला ३ तीजा ॥ जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥ मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥१॥ गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ॥ अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥ राम नामि राते भगति दृड़ाई ॥ भगति करे जनु वडिआई पाए ॥ साचि रते सुख सहजि समाए ॥२॥ साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥ गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ साची रासि साचा वापारु ॥ सो धन्नु पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥३॥ तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥ ऊतम बाणी सबदु

सुणाइे ॥ प्रभ साचे की साची कार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥ धनासरी महला ३ ॥ जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥ साचो साचु समालिहु दुखु जाइि ॥ साचै सबदि वसै मनि आइि ॥१॥ गुरबाणी सुणि मैलु गवाइे ॥ सहजे हरि नामु मंनि वसाइे ॥१॥ रहाउ ॥ कूड़ु कुसतु तृसना अगनि बुझाइे ॥ अंतरि साँति सहजि सुखु पाइे ॥ गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइि ॥ साचु महलु पाइे हरि गुण गाइि ॥२॥ न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ सतिगुरु भेटे ता सुखु पाइे ॥ हउमै विचहु ठाकि रहाइे ॥३॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोइि ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होइि ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचा भावा ॥४॥५॥ धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि जाइि ॥ बिनु मन मूइे कैसे हरि पाइि ॥ इिहु मनु मरै दारू जाणै कोइि ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइि ॥१॥ जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इिसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ अचरु चरै ता निरमलु होई ॥ गुरमुखि इिहु मनु लइिआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥ जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइि ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइि ॥ आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥६॥ धनासरी महला ३ ॥ काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥ मनमुख भूले अंध गावार ॥ बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइि ॥ ना साथि जाइि न परापति होइि ॥१॥ साचा धनु गुरमती पाइे ॥ काचा धनु फुनि आवै जाइे ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥ सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥२॥ चहु जुग महि अंमृतु साची बाणी ॥ पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ सिध साधिक तरसहि सभि लोइि ॥ पूरै भागि परापति होइि ॥३॥ सभु किछु साचा साचा है सोइि ॥ ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइि ॥ सचु साचा सचु आपि दृड़ाइे ॥

नानक आपे वेखै आपे सचि लाइे ॥४॥७॥ धनासरी महला ३ ॥ नावै की कीमति मिति कही न जाइि ॥ से जन धन्नु जिन इिक नामि लिव लाइि ॥ गुरमति साची साचा वीचारु ॥ आपे बखसे दे वीचारु ॥१॥ हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाइे ॥ कली काल विचि गुरमुखि पाइे ॥१॥ रहाउ ॥ हम मूरख मूरख मन माहि ॥ हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ गुर परसादी ह्चउमै जाइि ॥ आपे बखसे लइे मिलाइि ॥२॥ बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ अह्चकारि डूबै न पावै मानु ॥ आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ गुरमति सालाही सचु सोई ॥३॥ आपे साजे करता सोइि ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइि ॥ जिसु सचि लाइे सोई लागै ॥ नानक नामि सदा सुखु आगै ॥४॥८॥

रागु धनासिरी महला ३ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥१॥ ह्चउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ करण कारण सभना का इेको अवरु न दूजा कोई ॥१॥ रहाउ ॥ बहुते फेर पइे किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ होहु दइिआल दरसनु देहु अपुना अैसी बखस करीजै ॥२॥ भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ ॥ साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥३॥१॥९॥

धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥१॥ हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥ जिउ कंचनु बैसंतरि ताइिए मलु काटी कटित उतारी ॥२॥ हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥ हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥३॥

हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी ॥ जन कउ कृपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥४॥१॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि के संत जना हरि जपिए तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥१॥ हरि कै नामि रता बैरागी ॥ हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ संत जना की जाति हरि सुआमी तुम् ठाकुर हम साँगी ॥ जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥२॥ किआ हम किरम नान् निक कीरे तुम् वड पुरख वडागी ॥ तुम्री गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३॥ हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥ नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥४॥२॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥१॥ हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥२॥ हरि हरि सफलिए बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिए से तृपतानी ॥ हरि हरि अंमृतु पी तृपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥३॥ जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिए जपानी ॥ तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥४॥३॥ धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइिआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥१॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काली ॥२॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होइे हरि मिलिआ केल केलाली ॥३॥ हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन

नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥४॥४॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि हरि बूंद भइे हरि सुआमी हम चातृक बिलल बिललाती ॥ हरि हरि कृपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥१॥ हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥२॥ हरि के संत जना हरि जपिए गुर रंगि चलूलै राती ॥ हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिए ऊतम पाती ॥३॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥४॥५॥ धनासरी महला ४ ॥ कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिए तरै तराकी ॥१॥ हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥ हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥ हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिए हरि बचनाकी ॥ लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥२॥ हरि के संत जपिए मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥ दिनीअरु सूरु तृसना अगनि बुझानी सिव चरिए चंदु चंद्राकी ॥३॥ तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥४॥६॥

धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥ अदृसटु अगोचरु अपरंपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥१॥ राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥ हरि संगि हरी सतसंगु भइे हरि कंचनु चंदनु कीने ॥१॥ रहाउ ॥ नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥२॥१॥७॥ धनासरी महला ४ ॥

गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥१॥ जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥ हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ हरि कृपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि धारी नानक हरि भइे है सखाई ॥२॥२॥८॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥ मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥१॥ मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ मिलि संगति साधू मीत ॥ सदा अन्नदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ हरि हरि करी दृसटि तब भइिए मनि उदमु हरि हरि नामु जपिए गति भई हमारी ॥ जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिए है सरणि तुमारी ॥२॥३॥९॥ धनासरी महला ४ ॥ चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥१॥ जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥ सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ दीन दइिआल कृपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥२॥४॥१०॥ धनासरी महला ४ ॥ सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥ गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥१॥ बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ जन नानक आपि मिलाइे सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि एहा हरि भानी ॥२॥५॥११॥ धनासरी महला ४ ॥ इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥ सो अैसा हरि धिआईअै मेरे

जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥१॥ जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ जह हरि सिमरनु भइिआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥ जन नानक कउ गुरि इिह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥२॥६॥१२॥ धनासरी महला ४ ॥ मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइि ॥ हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइि ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइि ॥ झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइि ॥१॥ सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इिक दाति ॥२॥ सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥३॥ सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥४॥७॥१३॥

धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥ कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जाँ गुरमुखि नामु समारे ॥१॥ मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ दीन दइिआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥२॥ तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥३॥ कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥४॥१॥ धनासरी महला ५ ॥ बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइिए ॥ कमल हेति बिनसिए है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइिए ॥१॥ अब मन इेकस सिउ मोहु कीना ॥ मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर

सबदी चीना ॥१॥ रहाउ ॥ काम हेति कुंचरु लै फाँकिए एहु पर वसि भइिए बिचारा ॥ नाद हेति सिरु डारिए कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥२॥ देखि कुटंबु लोभि मोहिए प्रानी माइिआ कउ लपटाना ॥ अति रचिए करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥३॥ बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा एहु जाणहु सदा दुहेला ॥ कहु नानक गुर इहै बुझाइिए प्रीति प्रभू सद केला ॥४॥२॥ धनासरी मः ५ ॥ करि किरपा दीए मोहि नामा बंधन ते छुटकाइे ॥ मन ते बिसरिए सगलो धंधा गुर की चरणी लाइे ॥१॥ साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥ अह्मबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥१॥ रहाउ ॥ ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ ब्रहमु पसारु पसारिए भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥२॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ दूरि पराइिए मन का बिरहा ता मेलु कीए मेरै राजन ॥३॥ बिनसिए ढीठा अंमृतु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥४॥३॥ धनासरी मः ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस एइि आइे ॥ महा अन्नदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाइे ॥१॥ अब मोहि राम जसो मनि गाइिए ॥ भइिए प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥ भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥२॥ चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भइे बिबाका ॥३॥ गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥४॥४॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥ तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥१॥ जीअ की इेकै ही पहि मानी ॥ अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥ डिगै न डोलै दृड़ु करि रहिए पूरन होइि तृपतानी ॥२॥ एइि जु बीच हम तुम कछु

होते तिन की बात बिलानी ॥ अलम्कार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥३॥ प्रगटिए जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ कहु नानक निहचल घरु बाधिए गुरि कीए बंधानी ॥४॥५॥ धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ता की तृसन न बूझी ॥ लपटि रहे माइिआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥१॥ बिखिआ महि किन ही तृपति न पाई ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥२॥ कामवंत कामी बहु नारी पर गृह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥३॥ हरि हरि नामु अपार अमोला अंमृतु इेकु निधाना ॥ सूखु सहजु आन्नदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥६॥ धनासरी मः ५ ॥ लवै न लागन कउ है कछूऐ जा कउ फिरि इिहु धावै ॥ जा कउ गुरि दीनो इिहु अंमृतु तिस ही कउ बनि आवै ॥१॥ जा कउ आइिए इेकु रसा ॥ खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिए मनु तनु होइिए हरिआ इेक बूंद जिनि पाई ॥ बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥२॥ घाल न मिलिए सेव न मिलिए मिलिए आइि अचिंता ॥ जा कउ दइिआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥३॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥ एति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥४॥७॥ धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु दृड़्हाया ॥ महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥१॥ हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥ ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥२॥ सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै इेकु निधाना ॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥३॥ सीतल साँति महा सुखु पाइिआ संतसंगि रहिए एला ॥ हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इिहु नानक कीनो

चोल्ा ॥४॥८॥ धनासरी महला ५ ॥ जिह करणी होवहि सरमिंदा इिहा कमानी रीति ॥ संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिड़ी बिपरीति ॥१॥ माइिआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ हरिचंदउरी बन हर पात रे इिहै तुहारो बीत ॥१॥ रहाउ ॥ चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ अंम्रित संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥२॥ उतम संत भले संजोगी इिसु जुग महि पवित पुनीत ॥ जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥३॥ जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥ साधसंगि इिन दुख ते निकसिए नानक इेक परीत ॥४॥९॥ धनासरी महला ५ ॥ पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ सासि सासि मनु नामु सम्।रै इिहु बिस्राम निधि पाई ॥१॥ तुम् करहु दइिआ मेरे साई ॥ ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्री क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइि भरमाई ॥ अनद रूपु रविए सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥२॥ तुम् दइिआल किरपाल क्रिपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ कोटि सूख आनन्द राज पाइे मुख ते निमख बुलाई ॥३॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति अघाई ॥४॥१०॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै त्रै गुण भवण चतुर संसारा ॥ जग इिसनान ताप थान खंडे किआ इिहु जंतु विचारा ॥१॥ प्रभ की एट गही तउ छूटो ॥ साध प्रसादि हरि हरि हरि गाइे बिखै बिआधि तब हूटो ॥१॥ रहाउ ॥ नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ ऐसी ठगउरी पाइि भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥२॥ माइि बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिए दूआ ॥ किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥३॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इिहु चलतु दिखाइिआ ॥ गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइिआ ॥४॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइिआ सगले बंधन काटे ॥ हरि हरि नामु नानक धनु पाइिआ अपुनै घरि लै आइिआ खाटे ॥५॥११॥ धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर

प्रतिपालक नाइिक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥ जिहवा इेक कवन गुन कहीअै ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीअै ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥२॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ राखहु राखनहार दइिआला नानक घर के गोले ॥३॥१२॥ धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इिसनाना पुन्न दान बहु दैन ॥ कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥१॥ प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥१॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ इिह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥२॥ अंमृत नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइिए जिसु किरपैन ॥ साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥३॥१३॥ धनासरी महला ५ ॥ बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ असथिरु करे निहचलु इिहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥१॥ है कोऊ अैसो हमरा मीतु ॥ सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर की निंदा इिन सिउ प्रीति न लागै ॥ संतह संगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥२॥ गुण निधान दइिआल पुरख प्रभ सरब सूख दइिआला ॥ मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥३॥१४॥ धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने संत उबारि ॥ हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥१॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥ भ्रमत भ्रमत ऊहाँ ही मूहे बाहुड़ि गृहि न मंझारि ॥१॥ नानक सरणि परिए दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥२॥१५॥ धनासिरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ सिमरि सिमरि पूरन

नाराइिन संगी सगले तारिआ ॥१॥ अउखध मंत्र मूल मन इेकै मनि बिस्रासु प्रभ धारिआ ॥ चरन रेन बाँछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥२॥१६॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥ सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥१॥ रहाउ ॥ हाथ देइि राखिए अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥ निंदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥१॥ साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीइे कंठि लाइि ॥ निरभउ भइे सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइि ॥२॥१७॥ धनासिरी महला ५ ॥ अउखधु तेरो नामु दइिआल ॥ मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥ बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥१॥ तेरी सरनि पइिआ हउ जीवाँ तूं संम्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥२॥१८॥

राग़ु धनासरी महला ५   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ हम ते किछू न होइि मेरे स्रामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि कुटंब सागर संसार ॥ भरम मोह अगिआन अंधार ॥१॥ ऊच नीच सूख दूख ॥ ध्रापसि नाही तृसना भूख ॥२॥ मनि बासना रचि बिखै बिआधि ॥ पंच दूत संगि महा असाध ॥३॥ जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥ नानक जानु सदा हरि नेरा ॥४॥१॥१९॥ धनासरी महला ५ ॥ दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥ तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥१॥ साधू संगि भजहु गुपाल ॥ आन संजम किछु न सूझै इिह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥ आदि अंति दइिआल पूरन तिसु बिना नही कोइि ॥ जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइि ॥२॥ बेद सिंमृति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ मुकति पाईअै साधसंगति बिनसि जाइि अंधारु ॥३॥ चरन कमल अधारु जन

का रासि पूंजी इेक ॥ ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥४॥२॥२०॥ धनासरी महला ५ ॥ फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइिआ ॥ आन सगल बिधि काँमि न आवै हरि हरि नामु धिआइिआ ॥१॥ ता ते मोहि धारी एट गोपाल ॥ सरनि परिए पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पइिआल भू मंडल सगल बिआपे माइि ॥ जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइि ॥२॥ नानक नामु निरंजनु गाईअै पाईअै सरब निधाना ॥ करि किरपा जिसु देइि सुआमी बिरले काहू जाना ॥३॥३॥२१॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

छोडि जाहि से करहि पराल ॥ कामि न आवहि से जंजाल ॥ संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ जो बैराई सेई मीत ॥१॥ अैसे भरमि भुले संसारा ॥ जनमु पदारथु खोइि गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ झूठ धोह सिउ रचिए मीठा ॥ दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ जाणै नाही मरणु विचारा ॥२॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ करम धरम सगला ई खोवै ॥ हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ पाप करै ता पछोताणे ॥३॥ जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥ राखि लेइि साहिबु प्रभु मेरा ॥४॥१॥२२॥ धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥ खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ संचण कउ हरि इेको नामु ॥ हलति पलति ता कै आवै काम ॥१॥ नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ साध गावहि गुण इेक निरंकार ॥ रहाउ ॥ साध की सोभा अति मसकीनी ॥ संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥२॥ जह साध संतन होवहि इिकत्र ॥ तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ साध सभा महि अनद बिस्राम ॥ उन संगु सो पाइे जिसु मसतकि कराम ॥३॥ दुइि कर जोड़ि करी अरदासि ॥ चरन पखारि कहाँ गुणतास ॥ प्रभ दइिआल किरपाल हजूरि ॥ नानकु जीवै संता धूरि ॥

४॥२॥२३॥ धनासरी मः ५ ॥ सो कत डरै जि खसमु समारै ॥ डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥ सफल मूरति जा की निरमल सेव ॥ इकु निरंजनु जा की रासि ॥ मिलि साधसंगति होवत परगास ॥१॥ जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥ कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥ जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ गुरमुखि जा कै मनि तनि बासै ॥२॥ जिस नो आपि लइे लड़ि लाइ ॥ दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥ सेई भगत जि साचे भाणे ॥ जमकाल ते भइे निकाणे ॥३॥ साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥ नानकु जाचै संत रेणारु ॥४॥३॥२४॥

धनासरी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥ करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥१॥ जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥ जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥ चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥२॥१॥२५॥ धनासरी महला ५ ॥ सगल मनोरथ प्रभ ते पाइे कंठि लाइ गुरि राखे ॥ संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥१॥ जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥ पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ चरन सरनि पूरन परमेसर अंतरजामी साखिए ॥ जानि बूझि अपना कीए नानक भगतन का अंकुरु राखिए ॥२॥२॥२६॥ धनासरी महला ५ ॥ जह जह पेखउ तह हज़ूरि दूरि कतहु न जाई ॥ रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥१॥ ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥ बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ॥२॥ अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥ जपि जपि करहि अन्नदु जन अचरज आनूपु ॥३॥ सा मति देहु

दइिआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥४॥३॥२७॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाइे सुख सहज सेती घरि आउ ॥ अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥१॥ तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके ॥ घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥२॥ असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥ जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥३॥ जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइिआ सहाई ॥ अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई ॥४॥४॥२८॥

धनासरी महला ५ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ मन निरमल करम करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ जीवन देवा पारब्रहम सेवा इिहु उपदेसु मो कउ गुरि दीना जीउ ॥१॥ तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जा को किछु नाही बीतु अंत की बार एहु संगि न चालै ॥ मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै संगि तेरे बंधन छूटै ॥२॥ गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥३॥१॥२९॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥ देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके इेकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ तनु धनु आपन थापिए हरि जपु न निमख जापिए अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥१॥ जा को रे करमु भला तिनि एट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ॥ पाइिए रे परम निधानु मिटिए है अभिमानु इेकै निरंकार नानक मनु लगना ॥२॥२॥३०॥

धनासरी महला ५ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
हरि इेकु सिमरि इेकु सिमरि इेकु सिमरि पिआरे ॥ कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ साधसंग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥१॥ चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥ साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥२॥१॥३१॥

धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥१॥ गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥ जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥१॥ रहाउ ॥ निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ सागर महि बोहिथु पाइए हरि नानक करी कृपा किरपाले ॥२॥१॥३२॥ धनासरी महला ५ ॥ भइे कृपाल दइिआल गोबिंदा अंमृतु रिदै सिंचाई ॥ नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥१॥ संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥ गृहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ ता कउ कोइि न पहुचनहारा जा कै अंगि गुसाई ॥ जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥२॥२॥३३॥ धनासरी महला ५ ॥ दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥ राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥१॥ जे कोऊ अपुनी एट समारै ॥ जैसा बितु तैसा होइि वरतै अपुना बलु नही हारै ॥१॥ रहाउ ॥ आन तिआगि भइे इिक आसर सरणि सरणि करि आइे ॥ संत अनुग्रह भइे मन निरमल नानक हरि गुन गाइे ॥२॥३॥३४॥ धनासरी महला ५ ॥ जा कउ हरि रंगु लागो इिसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥ आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का

सतिगुरु पूरा ॥१॥ ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥१॥ रहाउ ॥ जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥ जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु इेही ॥२॥४॥३५॥ धनासरी महला ५ ॥ जतन करै मानुख डहकावै एहु अंतरजामी जानै ॥ पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥१॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥ उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ कहु नानक दइिआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥२॥५॥३६॥ धनासरी महला ५ ॥ नामु गुरि दीए है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥ नामु दृड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥१॥ जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग ॥१॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥२॥६॥३७॥ धनासरी महला ५ ॥ नेत्र पुनीत भइे दरसु पेखे माथै परउ रवाल ॥ रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥१॥ तुम तउ राखनहार दइिआल ॥ सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ महा अन्नद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥ हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बाँधिए पाल ॥२॥७॥३८॥ धनासरी महला ५ ॥ अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥ सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥१॥ हमरे पिता गोपाल दइिआल ॥ जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥१॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइिक सदा सलामति देवा ॥ ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥२॥८॥३९॥ धनासरी महला ५ ॥ संत कृपाल दइिआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इिन ऊपरि लै बारे ॥१॥ मनि तनि राम नाम हितकारे ॥ सूख सहज आन्नद मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥

धंनि सु थानु धंनि एइि भवना जा महि संत बसारे ॥ जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥२॥९॥४०॥ धनासरी महला ५ ॥ छडाइि लीए महा बली ते अपने चरन पराति ॥ इेकु नामु दीए मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥१॥ सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ हरि हरि नामु दीए कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीए प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइिए दिन राति ॥२॥१०॥४१॥ धनासरी महला ५ ॥ पर हरना लोभु झूठ निंद इिव ही करत गुदारी ॥ मृग तृसना आस मिथिआ मीठी इिह टेक मनहि साधारी ॥१॥ साकत की आवरदा जाइि बृथारी ॥ जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी इिह बंधन छुटकारी ॥ बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥२॥११॥४२॥ धनासरी महला ५ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥ रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥१॥ रसना राम रसाइिनि माती ॥ रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ मेलि लीए आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥२॥१२॥४३॥ धनासरी महला ५ ॥ दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥ जो जो तेरे भगत दुखाइे एहु ततकाल तुम मारा ॥१॥ निरखउ तुमरी एरि हरि नीत ॥ मुरारि सहाइि होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ नानक अनद भइे दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥२॥१३॥४४॥ धनासरी महला ५ ॥ चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिए ॥ कृपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिए ॥१॥ हरि जन राखे गुर गोविंद ॥ कंठि लाइि अवगुण सभि मेटे दइिआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥ नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥२॥१४॥४५॥

धनासरी महला ५ ॥ अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥१॥ प्रभ सिउ लागि रहिए मेरा चीतु ॥ आदि अंति प्रभु सदा सहाई धन्नु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भइे साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥२॥१५॥४६॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥ चरन कमल जा का मनु रागिए अमिअ सरोवर पागा ॥१॥ तेरा जनु राम नाम रंगि जागा ॥ आलसु छीजि गइिआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ जह जह पेखउ तह नाराइिण सगल घटा महि तागा ॥ नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥२॥१६॥४७॥ धनासरी महला ५ ॥ जन के पूरन होइे काम ॥ कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥ मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइिए हरि का धाम ॥१॥ चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥ गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥२॥१७॥४८॥ धनासरी महला ५ ॥ माँगउ राम ते इकु दानु ॥ सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥१॥ रहाउ ॥ चरन तुमारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥ सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥१॥ स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥ नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥२॥१८॥४९॥ धनासरी महला ५ ॥ माँगउ राम ते सभि थोक ॥ मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥१॥ रहाउ ॥ घोखे मुनि जन सिंमृति पुरानाँ बेद पुकारहि घोख ॥ कृपा सिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥१॥ आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥२॥१९॥५०॥ धनासरी महला ५ ॥ तृसना बुझै हरि कै नामि ॥ महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन

धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥१॥ सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥२॥२०॥५१॥ धनासरी मः ५ ॥ जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥१॥ रहाउ ॥ जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥१॥ करनहारु रखवाला होआ जा का अंतु न पारावार ॥ नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥२॥२१॥५२॥

धनासरी महला ५ घरु ६ पड़ताल   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥१॥ पतित उधारणा जीअ जंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइए ॥ गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइए ॥२॥१॥५३॥ धनासरी महला ५ ॥ हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसंगति मिलि मुआ जीजै ॥१॥ रहाउ ॥ राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महाँत कहै ॥ आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥१॥ सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥ अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥२॥२॥५४॥

धनासरी महला ५ घरु १२   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥ वडै भागि भेटे गुरदेवा ॥ कोटि पराध मिटे

हरि सेवा ॥१॥ चरन कमल जा का मनु रापै ॥ सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥२॥ सागरु तरिआ साधू संगे ॥ निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥३॥ पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ जम जंदारु न आवै नेड़े ॥४॥ तृसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥५॥१॥५५॥ धनासरी महला ५ ॥ तृपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥१॥ जीवना हरि जीवना ॥ जीवनु हरि जपि साधसंगि ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकारी बसत्र एढाइे ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाइे ॥२॥ हसती रथ असु असवारी ॥ हरि का मारगु रिदै निहारी ॥३॥ मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥ हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥४॥२॥५६॥ धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥१॥ रहाउ ॥ कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥ दासंी हरि का नामु धिआइआ ॥१॥ बंधन काटनहारु सुआमी ॥ जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥२॥३॥५७॥ धनासरी महला ५ ॥ कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ दास तेरे की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ हउमै बंधु हरि देवणहारा ॥१॥ चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ नानक की बेन्नती इेह ॥२॥४॥५८॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धनासरी महला ९ ॥ काहे रे बन खोजन जाई ॥ सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥ बाहरि भीतरि इेको जानहु इिहु गुर गिआनु बताई ॥ जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥ धनासरी महला ९ ॥ साधो इिहु जगु भरम भुलाना ॥ राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि

लपटाना ॥ जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥ धनासरी महला ९ ॥ तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥ पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥ हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥ चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥ धनासरी महला ९ ॥ अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥ जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥ मन बच क्रम हरि गुन नही गाइे यह जीअ सोच धरउ ॥१॥ गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिए पसु जिउ उदरु भरउ ॥ कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥ २॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ अंमृतु संत चुगहि नही दूरे ॥ हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥१॥ किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइि ॥ कीचड़ि डूबै मैलु न जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥ दुबिधा छोडि भइे निरंकारी ॥ मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ आवण जाण रहे गुरि राखे ॥२॥ सरवर हंसा छोडि न जाइि ॥ प्रेम भगति करि सहजि समाइि ॥ सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥ अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥३॥ सुन्न मंडल इकु जोगी बैसे ॥ नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ तृभवण जोति रहे लिव लाई ॥ सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥४॥ आन्नद मूलु अनाथ अधारी ॥ गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ भगति वछल भै काटणहारे ॥ हउमै मारि मिले पगु धारे ॥५॥ अनिक जतन करि कालु संताइे ॥ मरणु लिखाइि मंडल महि आइे ॥

जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥ आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥६॥ कहतउ पड़तउ सुणतउ इेक ॥ धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥ जतु सतु संजमु रिदै समाइे ॥ चउथे पद कउ जे मनु पतीआइे ॥७॥ साचे निरमल मैलु न लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ सूरति मूरति आदि अनूपु ॥ नानकु जाचै साचु सरूपु ॥८॥१॥ धनासरी महला १ ॥ सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥ ठाकुर महि दासु दास महि सोइि ॥ जह देखा तह अवरु न कोइि ॥१॥ गुरमुखि भगति सहज घरु पाईअै ॥ बिनु गुर भेटे मरि आईअै जाईअै ॥१॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु दृड़ावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ हरि के लोग अवर नही कारा ॥ साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥२॥ तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ सो साचा मिलि साचे राचा ॥ सेवकु प्रभ कै लागै पाइि ॥ सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइि ॥३॥ आपि दिखावै आपे देखै ॥ हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ घड़ि भाडे जिनि अंमृतु पाइिआ ॥ प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइिआ ॥४॥ पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥ बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥ नामु जपै भउ भोजनु खाइि ॥ गुरमुखि सेवक रहे समाइि ॥५॥ पूजि सिला तीरथ बन वासा ॥ भरमत डोलत भइे उदासा ॥ मनि मैलै सूचा किउ होइि ॥ साचि मिलै पावै पति सोइि ॥६॥ आचारा वीचारु सरीरि ॥ आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ पल पंकज महि कोटि उधारे ॥ करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥७॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइि ॥ नानक सहजि भाइि गुण गाइि ॥८॥२॥

धनासरी मः ५ घरु ६ असटपदी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो जो जूनी आइिए तिह तिह उरझाइिए माणस जनमु संजोगि पाइिआ ॥ ताकी है एट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइिआ ॥१॥ अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई ॥ करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव करउ

माइिआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥२॥ पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥ कोई ऐसो रे भगतु जु माइिआ ते रहतु इकु अंमृत नामु मेरै रिदै सिंचा ॥३॥ जेते रे तीरथ नाइे अह्मबुधि मैलु लाइे घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आन्नदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥४॥ सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोइे ॥ कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोइे ॥५॥ करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥६॥ मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइिआ रे धारी ॥ कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइि हमारी ॥७॥ सुप्रसन्न गोपाल राइि काटै रे बंधन माइि गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ सदा सदा आन्नदु भेटिए निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥८॥ सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥

धनासरी महला १ छंत

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥१॥ साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ गुणहि हारु परोइि किस कउ रोईऐ ॥ वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवइे ॥ आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावइे ॥ आन्नदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ सचु नामु पाइिआ गुरि दिखाइिआ मैलु नाही सच मने ॥२॥ संगति

मीत मिलापु पूरा नावणो ॥ गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुन्न दान दइिआ मते ॥ पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ॥ आराधि इेकंकारु साचा नित देइि चड़ै सवाइिआ ॥ गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइिआ ॥३॥ कहणु कहै सभु कोइि केवडु आखीअै ॥ हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीअै ॥ सचु गुर की साखी अंमृत भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ नानक साचु कहै बेन्नती मनु माँजै सचु सोई ॥४॥१॥ धनासरी महला १ ॥ जीवा तेरै नाइि मनि आन्नदु है जीउ ॥ साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥ गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥ परवाणा आइिआ हुकमि पठाइिआ फेरि न सकै कोई ॥ आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥ नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥१॥ तुम सरि अवरु न कोइि आइिआ जाइिसी जीउ ॥ हुकमी होइि निबेड़ु भरमु चुकाइिसी जीउ ॥ गुरु भरमु चुकाइे अकथु कहाइे सच महि साचु समाणा ॥ आपि उपाइे आपि समाइे हुकमी हुकमु पछाणा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥ नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥२॥ तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥ इेकु साहिबु दुइि राह वाद वधंदिआ जीउ ॥ दुइि राह चलाइे हुकमि सबाइे जनमि मुआ संसारा ॥ नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ हुकमी आइिआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥३॥ भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइिआ जीउ ॥ बोलहि अंमृत बाणि रसन रसाइिआ जीउ ॥ रसन रसाइे नामि तिसाइे गुर कै सबदि विकाणे ॥ पारसि परसिअै पारसु होइे जा तेरै मनि भाणे ॥ अमरा पदु पाइिआ आपु गवाइिआ विरला गिआन वीचारी ॥ नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥४॥ भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइिसा जीउ ॥

सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥ सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ दीना नाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ नानक नामु महा रसु मीठा तृसना नामि निवारी ॥५॥२॥ धनासरी छंत महला १ ॥ पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥ लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुंनिआ ॥१॥ बूडी घरु घालिए गुर कै भाइ चलो ॥ साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ हरि नामु धिआइ ता सुखु पाइे पेईअड़ै दिन चारे ॥ निज घरि जाइ बहै सचु पाइे अनदिनु नालि पिआरे ॥ विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाइे ॥ नानक सरसी ता पिरु पाइे राती साचै नाइे ॥२॥ पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥ गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ माइआ मोहु जलाइे प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥ प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥ नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥३॥ पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावइे जीउ ॥ झूठे वैण चवे कामि न आवइे जीउ ॥ झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥ अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाइे ॥ नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाइे ॥४॥ धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥ हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती ॥ गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥५॥३॥

धनासरी छंत महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जीउ कृपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ हरि जीउ कृपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥१॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥ स्रवणी सुणी त इहु मनु तृपतै गुरमुखि अंमृतु पीवा ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥२॥ सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥३॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥ माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥ बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥४॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥ अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥५॥१॥

धनासरी महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर दीन दइिआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥ अंमृतु हरि का नामु साधसंगि रावीऐ जीउ ॥ भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥ धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥१॥ निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥ तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ ॥ दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइिआ ॥ संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइिआ ॥ पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥ बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥२॥ आपि लीए लड़ि लाइि किरपा धारीआ जीउ ॥ मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ दइिआल सदा कृपाल सुआमी नीच थापणहारिआ ॥ जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥ बिनवंत नानक गुण गाइि जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥३॥ तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥ संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥ सद सदा सिंम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥४॥१॥

रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सनक सनंद महेस समानाँ ॥ सेखनागि तेरो मरमु न जानाँ ॥१॥ संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ हनूमान सरि गरुड़ समानाँ ॥ सुरपति नरपति नही गुन जानाँ ॥२॥ चारि बेद अरु सिंमृति पुरानाँ ॥ कमलापति कवला नही जानाँ ॥३॥ कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ पग लगि राम रहै

सरनाँही ॥४॥१॥ दिन ते पहर पहर ते घरीआँ आव घटै तनु छीजै ॥ कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥१॥ सो दिनु आवन लागा ॥ मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥ लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥२॥ कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु इेक की सरनाँ ॥३॥२॥ जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥ जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिए जुलाहो ॥१॥ हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥२॥३॥ इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ एछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥१॥ किआ माँगउ किछु थिरु नाही ॥ राम नाम रखु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ सोभा राज बिभै बडिआई ॥ अंति न काहू संग सहाई ॥२॥ पुत्र कलत्र लछमी माइिआ ॥ इिन ते कहु कवनै सुखु पाइिआ ॥३॥ कहत कबीर अवर नही कामा ॥ हमरै मन धन राम को नामा ॥४॥४॥ राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥ राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥१॥ रहाउ ॥ बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई ॥ इिनु मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥१॥ अजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥ तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥२॥ सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥ राम नाम छाडि अंमृत काहे बिखु खाई ॥३॥ तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही ॥ गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥४॥५॥

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाइे ॥ मारकंडे ते को अधिकाई जिनि तृण धरि मूंड बलाइे ॥१॥ हमरो करता रामु सनेही ॥ काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइि झूठी देही ॥१॥ रहाउ ॥

मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥ सरब सोइिन की लम्का होती रावन से अधिकाई ॥ कहा भइिए दरि बाँधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥ दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव इे फल पाइे ॥ कृपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाइे ॥४॥१॥ दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ी पंचहु का मिट नावउ ॥ सतरि दोइि भरे अंमृत सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥१॥ पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ अंमृत बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ बजर कुठारु मोहि है छीनाँ करि मिन्नति लगि पावउ ॥ संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥२॥ इिह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइिआ नह लपटावउ ॥ माइिआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥३॥ इितु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईअै ॥ कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इिह संजम हरि पाईअै ॥४॥२॥ मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इिंदु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥ चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर ह्मसुला ॥ जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥३॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चातृक मुख जैसे जलधरा ॥ मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥ पहिल पुरीइे पुंडरक वना ॥ ता चे ह्मसा सगले जनाँ ॥ कृस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥ पहिल पुरसाबिरा ॥ अथोन पुरसादमरा ॥ असगा अस उसगा ॥ हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥ नाचंती गोपी जन्ना ॥ नईआ ते बैरे कन्ना ॥ तरकु न चा ॥ भ्रमीआ चा ॥ केसवा बचउनी अईइे मईइे इेक आन

जीउ ॥२॥ पिंधी उभकले संसारा ॥ भ्रमि भ्रमि आइे तुम चे दुआरा ॥ तू कुनु रे ॥ मै जी ॥ नामा ॥ हो जी ॥ आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥ पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइिए हरि प्रभु मेरा ॥१॥ मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ दीन का दइिआलु माधौ गरब परहारी ॥ चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥

धनासरी भगत रविदास जी की ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हम सरि दीनु दइिआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१॥ हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इिहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥ कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइिए दरसनु देखे ॥२॥१॥ चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंमृत राम नाम भाखउ ॥१॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइि तेरी ॥ कहै रविदासु इिक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥२॥ नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइिए उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥ दस अठा अठसठे चारे खाणी इिहै वरतणि है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥४॥३॥

धनासरी बाणी भगताँ की तृलोचन

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ नाराइिण निंदसि काइि भूली गवारी ॥ दुकृतु सुकृतु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इिसनान रे ॥ कुल जन मधे मिल्यिो सारग पान रे ॥ करम करि कलम्कु मफीटसि री ॥१॥ बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइि गरुड़ ता चे बाधवा ॥ करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥ अनिक पातिक हरता तृभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ करम करि कपालु मफीटसि री ॥३॥ अंमृत ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥ दाधीले लम्का गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥ पूरबलो कृत करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ बदति तृलोचन राम जी ॥६॥१॥ स्री सैणु ॥ धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ वारने जाउ कमला पती ॥१॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइि को ॥१॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ तुहंी निरंजनु कमला पाती ॥२॥ रामा भगति रामान्नदु जानै ॥ पूरन परमान्नदु बखानै ॥३॥ मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ सैनु भणै भजु परमान्नदे ॥४॥२॥ पीपा ॥ कायउ देवा काइिअउ देवल काइिअउ जंगम जाती ॥ काइिअउ धूप दीप नईबेदा काइिअउ पूजउ पाती ॥१॥ काइिआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु आइिबो ना कछु जाइिबो राम की दुहाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइि लखावै ॥२॥३॥ धन्ना ॥ गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इिक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धन्ना लेवै मंगी ॥२॥४॥

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिए मेरै माथा ॥ जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीए रिनु लाथा ॥१॥ मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर मूड़ भइे है मनमुख ते मोह माइिआ नित फाथा ॥ तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥२॥ जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिए जनमु सनाथा ॥ मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइिआ धारि जगन्नाथा ॥३॥ हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलम्था ॥४॥१॥ जैतसरी महला ४ ॥ हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ रतन गाहकु गुरु साधू देखिए तब रतनु बिकानो लाखा ॥१॥ मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा ॥ दीन दइिआलि मिलाइिए गुरु साधू गुरि मिलिअै हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥ ते ऊझड़ि भरमि मुइे गावारी माइिआ भुअंग बिखु चाखा ॥२॥ हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥ हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥३॥ जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी

पाखाणु डुबत हरि राखा ॥४॥२॥ जैतसरी मः ४ ॥ हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इिआना ॥ हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥१॥ मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ हरि हरि आनि मिलाइिए गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥२॥ जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥३॥ हरि हरि कृपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु दृड़ाइिआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥४॥३॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइिआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ माइिआ भुइिअंग ग्रसिए है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥१॥ मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥ हरि कीड़े पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ धनु धनु वडभाग मिलिए गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ तृसना अगनि बुझी साँति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइिबा ॥२॥ तिन के भाग खीन धुरि पाड़े जिन सतिगुर दरसु न पाइिबा ॥ ते दूजै भाइि पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइिबा ॥३॥ हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइिबा ॥ जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइि दइिआलु दिवाइिबा ॥४॥४॥ जैतसरी महला ४ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न बसिए तिन मात कीजै हरि बाँझा ॥ तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै एिइ खपि खपि मुड़े कराँझा ॥१॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ हरि हरि कृपालि कृपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीए मनु समझा ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥२॥ दरसनु साध मिलिए वडभागी सभि किलबिख गड़े गवाझा ॥ सतिगुरु साहु पाइिआ वड दाणा हरि

कीड़े बहु गुण साझा ॥३॥ जिन कउ कृपा करी जगजीवनि हरि उरि धारिए मन माझा ॥ धरम राइि दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥४॥५॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइिए अरूड़ा ॥ अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अंमृत धार रसि लीड़ा ॥१॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥ मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिए लाइि झपीड़ा ॥ रहाउ ॥ साकत बंध भइे है माइिआ बिखु संचहि लाइि जकीड़ा ॥ हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥२॥ जिन हरि अरथि सरीरु लगाइिआ गुर साधू बहु सरधा लाइि मुखि धूड़ा ॥ हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रंगु लगा मनि गूड़ा ॥३॥ हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥ जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिए मनु मूड़ा ॥४॥६॥

जैतसरी महला ४ घरु २ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥१॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥ हरि हरि अंमृत बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥२॥ मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥ मेरै मनि तनि अंमृत मीठ लगाना ॥ हरि हरि दइिआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥३॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥ हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥४॥१॥७॥ जैतसरी मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥ हरि हरि हरि हरि भगति दृड़ावहु हरि हरि नामु एमाहा राम ॥१॥ हरि हरि नामु दइिआलु धिआहा ॥ हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥ हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि एमाहा राम ॥२॥ आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ सुणि हरि कथा नामु लै लाहा ॥

हरि हरि कृपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि एमाहा राम ॥३॥ करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥ खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ मो कउ धारि कृपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति एमाहा राम ॥४॥२॥८॥ जैतसरी मः ४ ॥ रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥ खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति एमाहा राम ॥१॥ हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥ गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि एमाहा राम ॥२॥ नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ दीन दइआल कृपा करि माधो हरि हरि नामु एमाहा राम ॥३॥ जपि जगदीसु जपउ मन माहा ॥ हरि हरि जगन्नाथु जगि लाहा ॥ धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति एमाहा राम ॥४॥३॥९॥ जैतसरी महला ४ ॥ आपे जोगी जुगति जुगाहा ॥ आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥ आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि एमाहा राम ॥१॥ आपे दीप लोअ दीपाहा ॥ आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा ॥ आपे मथि मथि ततु कढाइे जपि नामु रतनु एमाहा राम ॥२॥ सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥ गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ हरि हरि भगति दृड़ी मनि भाई हरि हरि नामु एमाहा राम ॥३॥ आपे वड दाणा वड साहा ॥ गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु एमाहा राम ॥४॥४॥१०॥ जैतसरी महला ४ ॥ मिलि सतसंगति संगि गुराहा ॥ पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ हरि हरि कृपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि एमाहा राम ॥१॥ हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥ गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि एमाहा राम ॥२॥ सभि तीरथ वरत जग पुन्न तुोलाहा ॥ हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥ हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि एमाहा राम ॥३॥ सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥ किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु एमाहा राम ॥४॥५॥११॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ जिसु होइ कृपालु सोई बिधि बूझै ता की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥ पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥१॥ मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥ हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥२॥ हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुराँगा ॥ संगि न चालिए इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइए नाँगा ॥३॥ हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥ नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥४॥१॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥१॥ रहाउ ॥ को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥१॥ सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥२॥१॥२॥ जैतसरी मः ५ ॥ धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥१॥ बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥२॥ जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥३॥ गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥४॥२॥३॥ जैतसरी महला ५ ॥ लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥ घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥१॥ थानि थन्नतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥ संतसंगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥२॥३॥४॥

जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
अब मै सुखु पाइिए गुर आग्यि ॥ तजी सिआनप चिंत विसारी अह्म छोडिए है तिआग्यि ॥१॥ रहाउ ॥ जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिए गुर भागि ॥ करि किरपा टहल हरि लाइिए तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥१॥ तरिए सागरु पावक को जउ संत भेटे वड भागि ॥ जन नानक सरब सुख पाइे मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥२॥१॥५॥ जैतसरी महला ५ ॥ मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ दृड़्हिए गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइिआ करा ॥१॥ रहाउ ॥ काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥ आइिए दुख हरण सरण करुणापति गहिए चरण आसरा ॥१॥ नाव रूप भइिए साधसंगु भव निधि पारि परा ॥ अपिउ पीए गतु थीए भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥२॥२॥६॥ जैतसरी महला ५ ॥ जा कउ भइे गोविंद सहाई ॥ सूख सहज आन्नद सगल सिउ वा कउ बिआधि न काई ॥१॥ रहाउ ॥ दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ इेकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥१॥ दइिआ मइिआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥ तिन कै संगि नानक निसतरीअै जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥२॥३॥७॥ जैतसरी महला ५ ॥ गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥१॥ रहाउ ॥ सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चड़्हावउ धूप ॥१॥ हारि परिए तुम्हरै प्रभ दुआरै दृड़्हु करि गही तुम्हारी लूक ॥ काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥२॥४॥८॥ जैतसरी महला ५ ॥ कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ॥१॥ रहाउ ॥ मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥ इिआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥१॥ आइिए सरणि

दीन दुख भंजन चितवउ तुम्री एरि ॥ अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ॥२॥५॥६॥ जैतसरी महला ५ ॥ चातृक चितवत बरसत मेंह ॥ कृपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥१॥ हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी कृपा करेंह ॥ चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥२॥६॥१०॥ जैतसरी महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥१॥ रहाउ ॥ प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्मारी ॥१॥ लाइि लइे लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइिए नानक सरणि दुआरे ॥२॥७॥११॥ जैतसरी महला ५ ॥ आइे अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥१॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी ॥ साधसंगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइि तरणी ॥१॥ सुख संपति माइिआ रस मीठे इिह नही मन महि धरणी ॥ हरि दरसन तृपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥२॥८॥१२॥ जैतसरी महला ५ ॥ हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥ हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविदु धाम ॥ भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥१॥ तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥ चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥२॥९॥१३॥

जैतसरी महला ९   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भूलिए मनु माइिआ उरझाइिए ॥ जो जो करम कीए लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ समझ न परी बिखै रस रचिए जसु हरि को बिसराइिए ॥ संगि सुआमी सो जानिए नाहिन बनु खोजन

कउ धाइए ॥१॥ रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइए ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइए ॥२॥१॥ जैतसरी महला ९ ॥ हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ जम को त्रास भइए उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥ भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥ कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥ घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥ नानक हारि परिए सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥ जैतसरी महला ९ ॥ मन रे साचा गहो बिचारा ॥ राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ जोगी खोजत हारे पाइए नाहि तिह पारा ॥ सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥ पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा ॥ नानक सरनि परिए जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥

जैतसरी महला ५ छंत घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ खोलि्ह कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥१॥ छंत ॥ सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥ तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥ तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ ॥ जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥१॥ यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥ यार वे हिक डूं हिक चाड़ै हउ किसु चितेहीआ ॥ हिक दूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥ नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥२॥ यार वे

पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥ यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥ लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ बाँह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुह्मदा ॥ जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥३॥ यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥ वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ॥ आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥ बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥४॥१॥

जैतसरी महला ५ घरु २ छंत

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥१॥ छंतु ॥ जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥ केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥ असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥ मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ ॥ लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥१॥ सलोकु ॥ निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥ नानक की बेन्नतीआ मिलै निथावे थाउ ॥२॥ छंतु ॥ दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ ॥ आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥ धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तजि मान मोहु विकारु दूजा इेक सिउ लिव लाईऐ ॥ अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥ बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥२॥ सलोकु ॥ रे मन ता कउ धिआईऐ सभ बिधि जा कै हाथि ॥ राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥३॥ छंतु ॥ साथीअड़ा प्रभु इेकु दूसर नाहि कोइि ॥ थान थन्नतरि आपि जलि थलि पूर सोइि ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥ गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी ॥ भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइि ॥ बिनवंति

नानक दृड़िआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥३॥ सलोकु ॥ चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥ नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥४॥ छंतु ॥ अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ॥ गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥ हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥ लै अंकि लाइ हरि मिलाइ जनम मरणा दुख जले ॥ बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥४॥२॥ जैतसरी छंत मः ५ ॥ पाधाणू संसारु गारबि अटिआ ॥ करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ ॥ लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥ पुत्र मित्र बिउहार बनिता इह करत बिहावए ॥ पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ ॥ किरत करम न मिटै नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥१॥ उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥ भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही ॥ पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥ बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥ रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही ॥ बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु इकु टिकणु न पावही ॥२॥ जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ ॥ कर कंपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥ नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥ कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ ॥ स्रीराम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥ बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥३॥ चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥ दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ ॥ मिलि साधसंगे भजे स्रीधर करि अंगु प्रभ जी तारिआ ॥ हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥ गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ बिनवंति नानकु सदा त्रिपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥४॥२॥३॥

जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ॥ सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघनासन

जगदीसुरह ॥१॥ पेखन सुनन सुनावनो मन महि दृड़ीऐ साचु ॥ पूरि रहिए सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि इकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥ करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥ खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥ जिसु आपि बुझाइे सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥१॥ सलोक ॥ रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥ सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥१॥ मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइि ॥ नानक सो धणी किउ विसारिए उधरहि जिस दै नाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ रकतु बिंदु करि निंमिआ अगनि उदर मझारि ॥ उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥ हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उर धारि ॥ बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥ प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥२॥ सलोक ॥ मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥ खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥१॥ हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥ सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥२॥ पउड़ी ॥ जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ गृह मंदर रथ असु दीइे रचि भले संजोग ॥ सुत बनिता साजन सेवक दीइे प्रभ देवन जोग ॥ हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥ साधसंगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥३॥ सलोक ॥ कुटंब जतन करणं माइिआ अनेक उदमह ॥ हरि भगति भाव हीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥१॥ तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअन्न सिउ ॥ नानक सची रीति साँई सेती रतिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु बिसरत तनु भसम होइि कहते सभि प्रेतु ॥ खिनु गृह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥ करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥ जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥ अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥४॥ सलोक ॥ कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥ उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥१॥ ईधणु कीतोमू घणा भोरी

दितीमु भाहि ॥ मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ ॥ मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥ पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥५॥ सलोक ॥ गृह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ कदाँच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा कृमह ॥१॥ मुचु अडंबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥ सो साँई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥२॥ पउड़ी ॥ सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥ गृह सोइिन चंदन सुगंध लाइि मोती हीरे ॥ मन इिछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥ बिनु हरि नाम न साँति होइि कितु बिधि मनु धीरे ॥६॥ सलोक ॥ चरन कमल बिरह्म खोजंत बैरागी दह दिसह ॥ तिआगंत कपट रूप माइिआ नानक आन्नद रूप साध संगमह ॥१॥ मनि साँई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ नानक हभि अडंबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभि छिन्ना ॥ जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिन्ना ॥ मित्र न इिठ धन रूपहीण किछु साकु न सिन्ना ॥ राजा सगली सृसटि का हरि नामि मनु भिन्ना ॥ तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइि सुप्रसन्ना ॥७॥ सलोक ॥ अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥ रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइिआ ॥१॥ सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइिआ ध्रोहु ॥२॥ पउड़ी ॥ सुपने सेती चितु मूरखि लाइिआ ॥ बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइिआ ॥ आरजा गई विहाइि धंधै धाइिआ ॥ पूरन भइे न काम मोहिआ माइिआ ॥ किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइिआ ॥८॥ सलोक ॥ बसंति स्वरग लोकह जितते पृथवी नव खंडणह ॥ बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥१॥ कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ महा भइिआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ झूठ

समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥ सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥९॥ सलोक ॥ राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥ संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥१॥ पेखंदड़ो की भुलु तुंमा दिसमु सोहणा ॥ अढु न लहंदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥२॥ पउड़ी ॥ चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥ तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥ हरि बिसरिऐ किउ तृपतावै ना मनु रंजीऐ ॥ प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥ होहु कृपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥१०॥ सलोक ॥ नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ मिसटं साधसंगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥१॥ लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ ॥ विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥ जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥११॥ सलोक ॥ तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चातृक मेघ मंडलह ॥ बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥१॥ मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संताँ मितु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥ बूंद विहूणा चातृको किउ करि तृपतावै ॥ नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥१२॥ सलोक ॥ चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥१॥ सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥२॥ पउड़ी ॥ आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥ मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥ देहु दरसु मनि चाउ लहि

जाहि विसूरीऐ ॥ होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥ पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ ॥१३॥ सलोक ॥ रसना उचरंति नामं स्रवणं सुन्नति सबद अंमृतह ॥ नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥१॥ हभि कूड़ावे कंम इकसु साई बाहरे ॥ नानक सेई धन्नु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥२॥ पउड़ी ॥ सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥ हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥ चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ संताँ संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥१४॥ सलोकु ॥ भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥ गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥१॥ कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥ नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलम्दड़ो मा पिरी ॥२॥ पउड़ी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ वडै भागि सतसंगु होइ निवि लागा पाई ॥ मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥१५॥ सलोक ॥ पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह ॥ सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥१॥ छडिए हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥ नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पड़े दुआरिआ ॥ रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥१६॥ सलोक ॥ संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥ निरमलं संत संगेण एट नानक परमेसुरह ॥१॥ चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घाँम ॥ सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥२॥ पउड़ी ॥ चरन कमल की एट उधरे सगल जन ॥ सुणि परतापु गोविंद निरभउ भइे मन ॥ तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥ संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥ आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥१७॥ सलोक ॥ दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ दइआल

पुरख भगवानह नानक लिपत न माइिआ ॥१॥ भाहि बलम्दड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि ॥ जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥२॥ पउड़ी ॥ जा प्रभ भइे दइिआल न बिआपै माइिआ ॥ कोटि अघा गइे नास हरि इिकु धिआइिआ ॥ निरमल भइे सरीर जन धूरी नाइिआ ॥ मन तन भइे संतोख पूरन प्रभु पाइिआ ॥ तरे कुटंब संगि लोग कुल सबाइिआ ॥१८॥ सलोक ॥ गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइिणह ॥ गुर दइिआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥१॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ नानक पूर करंम सतिगुर चरणी लगिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ धन्नु धन्नु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥ गुर कृपाल जब भइे त अवगुण सभि छपे ॥ पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ काटि सिलक दुख माइिआ करि लीने अप दसे ॥ गुण गाइे बेअंत रसना हरि जसे ॥१६॥ सलोक ॥ दृसटंत इेको सुनीअंत इेको वरतंत इेको नरहरह ॥ नाम दानु जाचंति नानक दइिआल पुरख कृपा करह ॥१॥ हिकु सेवी हिकु संमला हरि इिकसु पहि अरदासि ॥ नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥२॥ पउड़ी ॥ प्रभ दइिआल बेअंत पूरन इिकु इेहु ॥ सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥ आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥२०॥१॥

जैतसरी बाणी भगता की ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछूअ न जानउ ॥ मनु माइिआ कै हाथि बिकानउ ॥१॥ रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१॥ इिन पंचन मेरो मनु जु बिगारिए ॥ पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिए ॥२॥ जत देखउ तत दुख की रासी ॥ अजौं न पत्याइि निगम भइे साखी ॥३॥ गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि सहस भग गाँमी ॥४॥ इिन दूतन खलु बधु करि मारिए ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिए ॥५॥ कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥१॥

੧ੳ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥

हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभ हेरा ॥ सतिगुरि दड़िआलि हरि नामु दृड़ाइिआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥१॥ हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइिआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥२॥ लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ एइि मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥३॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥ जन नानक नामु गुरू ते पाइिआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥४॥१॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

संतन अवर न काहू जानी ॥ बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥ ऐसो अमरु मिलिए भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥१॥ रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥ निरभउ होइि रहे लिव इेकै नानक हरि मनु मानी ॥२॥१॥ टोडी महला ५ ॥ हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ एट

तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥ नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥१॥ गुण निधान गुण तिन ही गाइे जा कउ किरपा धारी ॥ सो सुखीआ धन्नु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥२॥२॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धाइए रे मन दह दिस धाइए ॥ माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिए तिनि प्रभि आपि भुलाइए ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि जस साधसंगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइए ॥ बिगसिए पेखि रंगु कसुंभ को पर गृह जोहनि जाइए ॥१॥ चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइए ॥ धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइए ॥२॥ नाम दानु इसनानु न कीए इक निमख न कीरति गाइए ॥ नाना झूठि लाइ मनु तोखिए नह बूझिए अपनाइए ॥३॥ परउपकार न कबहू कीइे नही सतिगुरु सेवि धिआइए ॥ पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइए ॥४॥ करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइए ॥ नानक भागि परिए हरि पाछै राखु लाज अपुनाइए ॥५॥१॥३॥ टोडी महला ५ ॥ मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु एढाइआ ॥ रहाउ ॥ धाइ धाइ कृपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥ दानु पुन्नु नही संतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥१॥ करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ संगु न पाइए अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥२॥ सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ खेदु भइए बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥३॥ भइए अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥४॥२॥४॥ टोडी महला ५ ॥ कृपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥ महा पतित ते होत पुनीता

हरि कीरतन गुन गावउ ॥१॥ आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीए तुहारो भावउ ॥ जो तू देहि तही इहु तृपतै आन न कतहू धावउ ॥२॥ सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥ साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥३॥ सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥४॥३॥५॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै कृपा गुण गाम ॥१॥ रहाउ ॥ राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥ धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥१॥ बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥२॥१॥६॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥ जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि इेह हमारै ॥१॥ रहाउ ॥ नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥ नामु सखाई सदा मेरै संगि हरि नामु मो कउ निसतारै ॥१॥ बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥ इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥२॥२॥७॥ टोडी मः ५ ॥ नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ मुख ऊजल मनु निरमल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥१॥ रहाउ ॥ चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ छोडि आपतु बादु अह्मकारा मानु सोई जो होगु ॥१॥ संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ कहु नानक इेक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥२॥३॥८॥ टोडी महला ५ ॥ सतिगुर आइए सरणि तुहारी ॥ मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिए तउ दुआरी ॥ लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥१॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ नानक दास संत पाछै परिए राखि लेहु इहु बारी ॥२॥४॥९॥ टोडी महला ५ ॥ रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥ साँति सहजु

रहसु मनि उपजिए सगले दूख पलाइिण ॥१॥ रहाउ ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइिण ॥ जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइिण ॥१॥ खोजत खोजत ततु बीचारिए दास गोविंद पराइिण ॥ अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइिण ॥२॥५॥१०॥ टोडी महला ५ ॥ निंदकु गुर किरपा ते हाटिए ॥ पारब्रहम प्रभ भइे दइिआला सिव कै बाणि सिरु काटिए ॥१॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिए ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिए ॥१॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइिआ ॥ आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइिआ ॥२॥६॥११॥ टोडी मः ५ ॥ किरपन तन मन किलविख भरे ॥ साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इिकु हरे ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥ जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥१॥ गली सैल उठावत चाहै एिइ ऊहा ही है धरे ॥ जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥२॥७॥१२॥ टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ काढि कुठारु पित बात ह्मता अउखधु हरि को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख ह्मता सुख रासि ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥१॥ संत प्रसादि बैद नाराइिण करण कारण प्रभ इेक ॥ बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥२॥८॥१३॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ॥१॥ रहाउ ॥ जिस के से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥ हाथ देइि राखे जन अपने हरि होइे माई बाप ॥१॥ जीअ जंत होइे मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥ नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥२॥९॥१४॥ टोडी महला ५ ॥ स्वामी सरनि परिए दरबारे ॥ कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ साधसंगि परम गति पाईऔ माइिआ रचि बंधि

हारे ॥१॥ चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥ नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥२॥१०॥१५॥

टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

हाँ हाँ लपटिए रे मूड़्हे कछू न थोरी ॥ तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ जो पराई सु अपनी मनूआ ॥१॥ नामु संगी सो मनि न बसाइए ॥ छोडि जाहि वाहू चितु लाइए ॥२॥ सो संचिए जितु भूख तिसाइए ॥ अंमृत नामु तोसा नही पाइए ॥३॥ काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥४॥१॥१६॥ टोडी महला ५ ॥ हमारै इेकै हरी हरी ॥ आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥ वडै भागि गुरु अपुना पाइए ॥ गुरि मो कउ हरि नामु दृड़ाइए ॥१॥ हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥ हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥२॥ आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ महा अन्नद कीरतन हरि सुनीआ ॥३॥ कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ सभु किछु तिस के गृह महि आइआ ॥४॥२॥१७॥

टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥ गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥१॥ इह बुधि पाई मै साधू कन्नहु लेखु लिखिए धुरि माथै ॥ इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥२॥१॥१८॥ टोडी महला ५ ॥ गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीए रे ॥ हीए महराज री माइए ॥ डीहर निआई मोहि फाकिए रे ॥ रहाउ ॥ घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइए रे ॥ महराज रो गाथु वाहू सिउ लुभड़िए निहभागड़ो भाहि संजोइए रे ॥१॥ सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिए रे ॥ जा को लहणो महराज री गाठड़ीए जन नानक गरभासि न पउड़िए रे ॥२॥२॥१६॥

टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ पंच दोख अरु अह्म रोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन ॥ रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिए प्रेम गहिए मोहि हरि रंग भीन ॥१॥ पेखिए लालनु पाट बीच खोइे अनद चिता हरखे पतीन ॥ तिस ही को गृहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिस ही को धीन ॥२॥१॥२०॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन की प्रीति ॥ एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ बाट घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥१॥ संत प्रसादि भइे मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥२॥२॥२१॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी मिलु मेरे प्रान ॥ बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ कोटि राज नाम धनु मेरै अंमृत दृसटि धारहु प्रभ मान ॥१॥ आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥२॥३॥२२॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ दह दिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥१॥ धंध बंध बिनसे माइिआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ सुख संपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥२॥४॥२३॥ टोडी मः ५ ॥ माई मेरे मन की पिआस ॥ इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥ पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जास ॥१॥ संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुणतास ॥

साँति सहज सूख मनि उपजिए कोटि सूर नानक परगास ॥२॥५॥२४॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि पतित पावन ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन ॥ निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन सो खावन ॥१॥ बिसमन बिसम भइे बिसमादा आन न बीए दूसर लावन ॥ रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥२॥६॥२५॥ टोडी महला ५ ॥ माई माइिआ छलु ॥ तृण की अगनि मेघ की छाइिआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइि कर जोड़ि साध मगि चलु ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इिहु ऊतम फलु ॥१॥ बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भइे मल ॥२॥७॥२६॥ टोडी महला ५ ॥ माई चरन गुर मीठे ॥ वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे ॥ असथिर भइे साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥१॥ बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइिआल जाने सभि झूठे ॥ नाम रतनु पाइिए जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥२॥८॥२७॥ टोडी महला ५ ॥ साधसंगि हरि हरि नामु चितारा ॥ सहजि अन्नदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिए बडभागी जा को अंतु न पारावारा ॥ करु गहि काढि लीए जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥१॥ जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ि न संकट दुआरा ॥ नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥२॥९॥२८॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन को सुखु ॥ कोटि अन्नद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥१॥ चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु

॥२॥१०॥२९॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि चरन रिदै उर धारे ॥ सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ पुन्न दान पूजा परमेसर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ गुन गावत अतुल सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥१॥ जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥२॥११॥३०॥

टोडी महला ९

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ उरझिए कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥ रहाउ ॥ जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥ दीन बंध सिमरिए नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१॥ मगन रहिए माइिआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥ कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥

टोडी बाणी भगताँ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ जल की माछुली चरै खजूरि ॥१॥ काँइि रे बकबादु लाइिए ॥ जिनि हरि पाइिए तिनहि छपाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ पंडितु होइि कै बेदु बखानै ॥ मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥२॥१॥ कउन को कलम्कु रहिए राम नामु लेत ही ॥ पतित पवित भइे रामु कहत ही ॥१॥ रहाउ ॥ राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ इेकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाईं ॥१॥ भनति नामदेउ सुकृत सुमति भइे ॥ गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गइे ॥२॥२॥ तीनि छंदे खेलु आछै ॥१॥ रहाउ ॥ कुंभार के घर हाँडी आछै राजा के घर साँडी गो ॥ बामन के घर राँडी आछै राँडी साँडी हाँडी गो ॥१॥ बाणीइे के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥२॥ तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥ माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥३॥ संताँ मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥ नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥४॥३॥

राग बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुनि मन अकथ कथा हरि नाम ॥ रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥१॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइिए नही जानिए हरि मरमाम ॥१॥ सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ नानक कृपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥२॥१॥ बैराड़ी महला ४ ॥ मन मिलि संत जना जसु गाइिए ॥ हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइिए ॥ धनु माइिआ संपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइिए ॥१॥ खिनु किंचित कृपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइिए ॥ जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइिए ॥२॥२॥ बैराड़ी महला ४ ॥ हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥ जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै ॥ हरि आपे ही मति देवै सुआमी

हरि आपे बोलि बुलावै ॥१॥ हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै ॥ जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥२॥३॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन राम नामु निसतारा ॥ कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥१॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा ॥ हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ॥१॥ हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ नानक जिसु कृपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥२॥४॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जा का अंतु न पारावारा ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥१॥ जा कै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥२॥५॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥१॥ रहाउ ॥ सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥१॥ तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥२॥६॥

रागु बैराड़ी महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

संत जना मिलि हरि जसु गाइए ॥ कोटि जनम के दूख गवाइए ॥१॥ रहाउ ॥ जो चाहत सोई मनि पाइए ॥ करि किरपा हरि नामु दिवाइए ॥१॥ सरब सूख हरि नामि वडाई ॥ गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥२॥१॥७॥

रागु तिलंग महला १ घरु १

੧ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥ हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥१॥ दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥१॥ रहाउ ॥ जन पिसर पदर बिरादराँ कस नेस दसतंगीर ॥ आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥२॥ सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥ गाहे न नेकी कार करदम मम इंी चिनी अहवाल ॥३॥ बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकराँ पा खाक ॥४॥१॥

तिलंग महला १ घरु २ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ भउ तेरा भाँग खलड़ी मेरा चीतु ॥ मै देवाना भइिआ अतीतु ॥ कर कासा दरसन की भूख ॥ मै दरि मागउ नीता नीत ॥१॥ तउ दरसन की करउ समाइि ॥ मै दरि मागतु भीखिआ पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ केसरि कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चड़्हणा ॥ चंदन भगता जोति इिनेही सरबे परमलु करणा ॥२॥ घिअ पट भाँडा कहै न कोइि ॥ ऐसा भगतु वरन महि होइि ॥ तेरै नामि निवे रहे लिव लाइि ॥ नानक तिन दरि भीखिआ पाइि ॥३॥१॥२॥

तिलंग महला १ घरु ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ इिहु तनु माइिआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि

रंगाइे ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाइे ॥१॥ ह्मउ कुरबानै जाउ मिहरवाना ह्मउ कुरबानै जाउ ॥ ह्मउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै ह्मउ सद् कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ रंङणि जे थीअै पिआरे पाईअै नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु अैसा रंगु न डीठ ॥२॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइि ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइि ॥४॥१॥३॥ तिलंग मः १ ॥ इिआनड़ीइे मानड़ा काइि करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीइे बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीअै लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ इिआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईअै नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अह्मकार की माती माइिआ माहि समाणी ॥ इिनी बाती सहु पाईअै नाही भई कामणि इिआणी ॥२॥ जाइि पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईअै ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीअै हिकमति हुकमु चुकाईअै ॥ जा कै प्रेमि पदारथु पाईअै तउ चरणी चितु लाईअै ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै अैसा परमलु लाईअै ॥ इेव कहहि सोहागणी भैणे इिनी बाती सहु पाईअै ॥३॥ आपु गवाईअै ता सहु पाईअै अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ अैसे रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइि समाणी ॥ सुंदरि साइि सरूप बिचखणि कहीअै सा सिआणी ॥४॥२॥४॥ तिलंग महला १ ॥ जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ पाप की जंञ लै काबलहु धाइिआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ सरमु धरमु दुइि छपि खलोइे कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइि वे लालो ॥ जाति सनाती होरि हिदवाणीआ इेहि

भी लेखै लाइि वे लालो ॥ खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइि वे लालो ॥१॥ साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इिकेला ॥ सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ काइिआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइिसी सच की बेला ॥२॥३॥५॥

तिलंग महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सभि आइे हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥१॥ सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ जिसु नाही कोइि सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥२॥१॥ तिलंग महला ४ ॥ नित निहफल करम कमाइि बफावै दुरमतीआ ॥ जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥१॥ अैसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइि रामा ॥ रहाउ ॥ सा वेला चिति न आवै जितु आइि कंटकु कालु ग्रसै ॥ तिसु नानक लइे छडाइि जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥२॥२॥

तिलंग महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ खाक नूर करदं आलम दुनीआइि ॥ असमान जिमी दरखत आब पैदाइिसि खुदाइि ॥१॥ बंदे चसम दीदं फनाइि ॥ दुनंीआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइि ॥ रहाउ ॥ गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइि ॥ दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइि ॥२॥ वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइि ॥ जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइि ॥३॥ हवाल मालूमु करदं पाक अलाह ॥ बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥४॥१॥ तिलंग घरु २ महला ५ ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइि ॥ तू करतारु करहि सो होइि ॥ तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ सदा सदा जपि नानक इेक ॥१॥ सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु ॥ तेरी टेक तेरा

आधारु ॥ रहाउ ॥ है तूहै तू होवनहार ॥ अगम अगाधि ऊच आपार ॥ जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ गुर परसादि नानक गुण गाहि ॥२॥ जो दीसै सो तेरा रूपु ॥ गुण निधान गोविंद अनूप ॥ सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥३॥ जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ तिस कै संगि तरै संसार ॥ कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ संत जना की बाछउ धूरि ॥४॥२॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ ॥ तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥१॥ जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥२॥ कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥३॥ तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥४॥३॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ करते कुदरती मुसताकु ॥ दीन दुनीआ इेक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥ रहाउ ॥ खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ कउणु जाणै चलत तेरे अंधिआरे महि दीप ॥१॥ खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥२॥ अजराईलु यारु बंदे जिसु तेरा आधारु ॥ गुनह उस के सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥३॥ दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ गुर मिलि नानक बूझिआ सदा इेकसु गाउ ॥४॥४॥ तिलंग महला ५ ॥ मीराँ दानाँ दिल सोच ॥ मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥१॥ रहाउ ॥ दीदने दीदार साहिब कछु नही इिस का मोलु ॥ पाक परवदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥१॥ दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही इेक ॥ करतार कुदरति करण खालक नानक तेरी टेक ॥२॥५॥

तिलंग महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥

आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥१॥ राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥ रहाउ ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी ॥ हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥२॥ पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी ॥३॥ कंतु लीआ सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह ॥४॥ जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए ॥५॥ हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु लावै ॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥६॥ जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ बाती मेलु न होई ॥७॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥८॥ पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥९॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥१०॥१॥ तिलंग महला ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥ बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥१॥ आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे ॥ रहाउ ॥ हरि के गुण हरि भावदे से गुरू ते पाए ॥ जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुमि घुमि जाए ॥२॥ जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ॥३॥ हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुखि निसतारा ॥४॥ जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥५॥ सा हरि तेरी उसतति है जो हरि प्रभ भावै ॥ जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥६॥ जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ ओइ जपि जपि पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥७॥ जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ घुमि जाइआ ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ ॥८॥ गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धन्नु गुरु धन्नो ॥ गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुन्नु वड पुन्नो ॥९॥

जो गुरसिख गुरु सेवदे से पुन्न पराणी ॥ जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥१०॥ गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥११॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥१२॥ पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥ हरि हरि कदे न चेतिए जमि पकड़ि चलाईआ ॥१३॥ जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरि धारे ॥ तिन जमु नेड़ि न आवई गुरसिख गुर पिआरे ॥१४॥ हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥१५॥ सतिगुरु दाता आखीऐ तुसि करे पसाए ॥ हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा नाए ॥१६॥ सो धन्नु गुरू साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥१७॥ गुर रसना अंमृतु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ जिन सुणि सिखा गुरु मंनिआ तिना भुख सभ जावी ॥१८॥ हरि का मारगु आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥१९॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह वड दाणे ॥ हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुर बचनि समाणे ॥२०॥ तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥ तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणी गहीरा ॥२१॥ आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ॥ जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥२२॥२॥

तिलंग महला ९ काफी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥ अजहू कछु बिगरिए नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥ तिलंग महला ९ ॥ जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइिआ ॥ जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥ जीउ छूटिए जब

देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥ जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाइि लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥ तिलंग महला ९ ॥ हरि जसु रे मना गाइि लै जो संगी है तेरो ॥ अउसरु बीतिए जातु है कहिए मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ ॥ संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइिए ॥ काल फास जब गलि परी सभ भइिए पराइिए ॥१॥ जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिए ॥ पाप करत सुकचिए नही नह गरबु निवारिए ॥२॥ जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥ नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥

तिलंग बाणी भगता की कबीर जी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइि ॥ टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइि ॥१॥ बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ इिह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ दरोगु पड़ि पड़ि खुसी होइि बेखबर बादु बकाहि ॥ हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ॥२॥ असमान म्यिाने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद ॥ करि फकरु दाइिम लाइि चसमे जह तहा मउजूदु ॥३॥ अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइि ॥ कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइि ॥४॥१॥ नामदेव जी ॥ मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ करीमाँ रहीमाँ अलाह तू गनीं ॥ हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनीं ॥१॥ दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥ देहि लेहि इेकु तूं दिगर को नही ॥२॥ तूं दानाँ तूं बीनाँ मै बीचारु किआ करी ॥ नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥३॥१॥२॥ हले याराँ हले याराँ खुसिखबरी ॥ बलि बलि जाँउ हउ बलि बलि जाँउ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥ द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥ खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥ चंदीं हजार आलम इेकल खानाँ ॥ हम चिनी पातिसाह साँवले बरनाँ ॥३॥ असपति गजपति नरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥२॥३॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

राগु सूही महला १ चउपदे घरु १

भाँडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥१॥ जपहु त एको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै ॥ रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अंमृतु पावहु ॥२॥ मनु संपटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती तृपति करे ॥ पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहै ॥३॥ कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ भगति हीणु नानकु जनु जंपै हउ सालाही सचा सोई ॥४॥१॥

सूही महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ अंमृतु छोडि काहे बिखु खाइ ॥१॥ ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ होवहु चाकर साचे केरे ॥१॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ॥ बाँधनि बाँधिआ सभु जगु भवै ॥२॥ सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥३॥ हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥४॥१॥२॥

सूही महला १ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥ धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥१॥ सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलम्नि् ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥१॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ ढठीआ कंमि न आवनी् विचहु सखणीआहा ॥२॥ बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंनि् ॥ घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअनि् ॥३॥ सिंमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलम्नि् ॥ से फल कंमि न आवनी् ते गुण मै तनि हंनि् ॥४॥ अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लम्घा कितु ॥५॥ चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥६॥१॥३॥ सूही महला १ ॥ जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लम्घहि वहेला ॥ ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥१॥ तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥२॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥ आवा गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥३॥ हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ गुर बचनी फलु पाइआ सह के अंमृत बोला ॥४॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥५॥२॥४॥ सूही महला १ ॥ जिन कउ भाँडै भाउ तिना सवारसी ॥ सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥१॥ तिना् मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥ अंमृतु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥२॥ जा कउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥३॥ घले आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥

४॥३॥५॥ सूही महला १ ॥ भाँडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ भाँडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥ गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ इेतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥ अंमृतु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥ माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥१॥४॥६॥ सूही महला १ ॥ जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलि मलि नाइ ॥१॥ तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को बहै अलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सु खाइ ॥ अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥२॥ तैसो जैसा काढीअै जैसी कार कमाइ ॥ जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥३॥ इिहु तनु वेची बै करी जे को लइे विकाइ ॥ नानक कंमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥४॥५॥७॥

सूही महला १ घरु ७

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईअै ॥ जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइअै जोगु न सिंङी वाईअै ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीअै जोग जुगति इिव पाईअै ॥१॥ गली जोगु न होई ॥ इेक दृसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीअै सोई ॥१॥ रहाउ ॥ जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईअै ॥ जोगु न देसि दिसंतरि भविअै जोगु न तीरथि नाईअै ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीअै जोग जुगति इिव पाईअै ॥२॥ सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईअै ॥ निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईअै ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीअै जोग जुगति इिव पाईअै ॥३॥ नानक जीवतिआ मरि रहीअै अैसा जोगु कमाईअै ॥ वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईअै ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीअै जोग जुगति तउ पाईअै ॥४॥१॥८॥ सूही महला १ ॥ कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा

॥१॥ मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥६॥

रागु सूही महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरू गुर के ॥ सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥१॥ मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥१॥ रहाउ ॥ सतसंगति ऊतम सतिगुर केरी गुन गावै हरि प्रभ के ॥ हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति हम धोवह पग जन के ॥२॥ राम नामु सभु है राम नामा रसु गुरमति रसु रसके ॥ हरि अंमृतु हरि जलु पाइआ सभ लाथी तिस तिस के ॥३॥ हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिए सिरु गुर के ॥ जन नानक नामु परिए गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥४॥१॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि नामु भजिए पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ भउ जनम मरणा मेटिए गुर सबदी हरि असथिरु सेवि सुखि समघा ॥१॥ मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ मै मनु तनु अरपि धरिए गुर आगै सिरु वेचि लीए मुलि महघा ॥१॥ रहाउ ॥ नरपति राजे रंग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ धरम राइ सिरि डंडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा ॥२॥ हरि राखु राखु जन किरम तुमारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा ॥ दरसनु संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥३॥ तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मो कउ कीजै दानु हरि निमघा ॥ जन नानक नामु मिलै सुखु पावै हम नाम विटहु सद घुमघा ॥४॥२॥ सूही महला ४ ॥ हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥ गुरि तुठै हरि रंगु

चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥१॥ मेरे मन हरि राम नामि करि रंङु ॥ गुरि तुठै हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसंङु ॥१॥ रहाउ ॥ मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अंङु ॥ हरि प्रभु चिति न आइिए मनि दूजा भाउ सहलम्ङु ॥२॥ हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अंगी अंङु ॥ गुरि अंमृत सरि नवलाइिआ सभि लाथे किलविख पंङु ॥३॥ हरि दीना दीन दइिआल प्रभु सतसंगति मेलहु संङु ॥ मिलि संगति हरि रंगु पाइिआ जन नानक मनि तनि रंङु ॥४॥३॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥ अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥१॥ गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइि खुआई ॥२॥ बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥ हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥३॥ नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआइे ॥ गुर परसादी इेको बूझै इेकसु माहि समाइे ॥४॥४॥

सूही महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥१॥ मेरै मनि हरि हरि सांँति वसाई ॥ तिसना अगनि बुझी खिन अंतरि गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ सतिगुरि दइिआलि गुण नामु दृड़ाई ॥२॥ हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ सतसंगति मिलि हरि रसु पाई ॥३॥ धुरि मसतकि लेख लिखे हरि पाई ॥ गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥४॥१॥५॥ सूही महला ४ ॥ हरि कृपा करे मनि हरि रंगु लाइे ॥ गुरमुखि हरि हरि नामि समाइे ॥१॥ हरि रंगि राता मनु रंग माणे ॥ सदा अन्नदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि समाणे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥ गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥२॥ मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइि

॥ जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥३॥ नदरि करे ता सतिगुरु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि रंगि समावै ॥४॥२॥६॥ सूही महला ४ ॥ जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥१॥ हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ तउ कत अनत सादि लोभाई ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमति रसु राखहु उर धारि ॥ हरि रसि राते रंगि मुरारि ॥२॥ मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥४॥३॥७॥

सूही महला ४ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥१॥ हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥ पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥२॥ नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥ खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥३॥ जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु कढाइ ॥ जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे क्रिपा करे हरि राइ ॥४॥१॥८॥ सूही महला ४ ॥ तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु करे मेरा हरि करतारा ॥१॥ हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥१॥ रहाउ ॥ धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अंम्रित भगति भंडारा ॥ मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥२॥ से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ॥ तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निंदक कै पवै छारा ॥३॥ जिसु घरि विरती सोई जाणै जगत गुर नानक पूछि करहु बीचारा ॥ चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइआ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥४॥२॥९॥ सूही महला ४ ॥ जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु

सहाई ॥ गुर किरपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥१॥ हरि धनु संचीऐ भाई ॥ जि हलति पलति हरि होइ सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ सतसंगती संगि हरि धनु खटीऐ होर थै होरतु उपाइ हरि धनु कितै न पाई ॥ हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाझे कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥२॥ हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अंम्रित वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥ हरि धनु अंम्रित वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई ॥३॥ हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई जमु जागाती डंडु न लगाई ॥४॥ साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक विख नालि न जाई ॥ हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥५॥ इसु हरि धन का साहु हरि आपि है संतहु जिस नो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥६॥३॥१०॥ सूही महला ४ ॥ जिस नो हरि सुप्रसंनु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ तिस की महिमा किआ वरनीऐ जिस कै हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥१॥ गोविंद गुण गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ परम निधानु ॥ जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु अगिआनु ॥२॥ जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे उन का उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥३॥ जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तूं अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ दासनि दासु कहै जनु नानकु जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥४॥४॥११॥

सूही महला ४ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥ तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥१॥ मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥१॥ रहाउ ॥ मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥ मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेन्नती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥२॥ विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥३॥ हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाइे ॥ जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाइे ॥४॥१॥१२॥ सूही महला ४ ॥ तूं करता सभु किछु आपे जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईऐ ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईऐ ॥१॥ मेरे साहिब तूं अंतर की बिधि जाणहि ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै बुलावहि ॥१॥ रहाउ ॥ सभु मोहु माइिआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥ इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवहि इकि मनमुखि धंधु पिटाई ॥२॥ सभु को तेरा तूं सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि लिखिआ लेखु ॥ जेही तूं नदरि करहि तेहा को होवै बिनु नदरी नाही को भेखु ॥३॥ तेरी वडिआई तूंहै जाणहि सभ तुधनो नित धिआइे ॥ जिस नो तुधु भावै तिस नो तूं मेलहि जन नानक सो थाइ पाइे ॥४॥२॥१३॥ सूही महला ४ ॥ जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिन के सभि रोग गवाइे ॥ ते मुकत भइे जिन हरि नामु धिआइिआ तिन पवितु परम पदु पाइे ॥१॥ मेरे राम हरि जन आरोग भइे ॥ गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गइे ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै कार कमाई ॥ जिनि कीइे तिसहि न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥२॥ हउमै रोगि सभु जगतु बिआपिआ

तिन कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ गुर परसादी को विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥३॥ जिनि सिसटि साजी सोई हरि जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक आपे वेखि हरि बिगसै गुरमुखि ब्रहम बीचारो ॥४॥३॥१४॥ सूही महला ४ ॥ कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥१॥ मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ॥ असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥१॥ रहाउ ॥ सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ॥ जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥२॥ पंच ततु करि तुधु सृसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै ॥३॥ हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥४॥४॥१५॥२४॥

रागु सूही महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ नाना रूप भेख दिखलाई ॥ साँगु उतारि थंम्हिए पासारा ॥ तब इेको इेकंकारा ॥१॥ कवन रूप दृसटिए बिनसाइिए ॥ कतहि गइिए उहु कत ते आइिए ॥१॥ रहाउ ॥ जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥ बीजु बीजि देखिए बहु परकारा ॥ फल पाके ते इेकंकारा ॥२॥ सहस घटा महि इेकु आकासु ॥ घट फूटे ते एही प्रगासु ॥ भरम लोभ मोह माइिआ विकार ॥ भ्रम छूटे ते इेकंकार ॥३॥ एहु अबिनासी बिनसत नाही ॥ ना को आवै ना को जाही ॥ गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥४॥१॥ सूही महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो प्रभ होइि ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइि ॥ जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ दास अपुने की राखहु लाज ॥१॥ तेरी सरणि पूरन दइिआला ॥ तुझ बिनु कवनु करे प्रतिपाला ॥१॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरि ॥ लोक पतीआरै कछू न पाईऐ ॥ साचि

लगै ता हउमै जाईऐ ॥२॥ जिस नो लाइि लइे सो लागै ॥ गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ दुरमति जाइि परम पदु पाइे ॥ गुर परसादी नामु धिआइे ॥३॥ दुइि कर जोड़ि करउ अरदासि ॥ तुधु भावै ता आणहि रासि ॥ करि किरपा अपनी भगती लाइि ॥ जन नानक प्रभु सदा धिआइि ॥४॥२॥ सूही महला ५ ॥ धनु सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ मानै हुकमु तजै अभिमानै ॥ प्रिअ सिउ राती रलीआ मानै ॥१॥ सुनि सखीइे प्रभ मिलण नीसानी ॥ मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥१॥ रहाउ ॥ सखी सहेली कउ समझावै ॥ सोई कमावै जो प्रभ भावै ॥ सा सोहागणि अंकि समावै ॥२॥ गरबि गहेली महलु न पावै ॥ फिरि पछुतावै जब रैणि बिहावै ॥ करमहीणि मनमुखि दुखु पावै ॥३॥ बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ प्रभु अबिनासी रहिआ भरपूरि ॥ जनु नानकु गावै देखि हदूरि ॥४॥३॥ सूही महला ५ ॥ गृहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ दस दासी करि दीनी भतारि ॥ सगल समग्री मै घर की जोड़ी ॥ आस पिआसी पिर कउ लोड़ी ॥१॥ कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ सुघड़ सरूप दइिआल मुरारे ॥१॥ रहाउ ॥ सतु सीगारु भउ अंजनु पाइिआ ॥ अंमृत नामु तंबोलु मुखि खाइिआ ॥ कंगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ धन सभ सुख पावै जाँ पिरु घरि आवै ॥२॥ गुण कामण करि कंतु रीझाइिआ ॥ वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइिआ ॥ सभ ते ऊचा मंदरु मेरा ॥ सभ कामणि तिआगी प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥३॥ प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ सेज विछाई सरध अपारा ॥ नव रंग लालु सेज रावण आइिआ ॥ जन नानक पिर धन मिलि सुखु पाइिआ ॥४॥४॥ सूही महला ५ ॥ उमकिए हीउ मिलन प्रभ ताई ॥ खोजत चरिए देखउ प्रिअ जाई ॥ सुनत सदेसरो प्रिअ गृहि सेज विछाई ॥ भ्रमि भ्रमि आइिए तउ नदरि न पाई ॥१॥ किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो ॥१॥ रहाउ ॥ इेका सेज विछी धन कंता ॥ धन सूती पिरु सद जागंता ॥ पीए मदरो धन मतवंता ॥ धन जागै जे पिरु बोलम्ता ॥२॥ भई निरासी बहुतु दिन लागे ॥ देस दिसंतर मै सगले

झागे ॥ खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ होइ कृपालु प्रभ मिलह सभागे ॥३॥ भइए कृपालु सतसंगि मिलाइआ ॥ बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥ सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥ जह देखा तह पिरु है भाई ॥ खोल्हिए कपाटु ता मनु ठहराई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥५॥ सूही महला ५ ॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥१॥ लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥२॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥३॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥४॥६॥

सूही महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ महलु न पावै कहतो पहुता ॥१॥ जो प्रिअ माने तिन की रीसा ॥ कूड़े मूरख की हाठीसा ॥१॥ रहाउ ॥ भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ कहतो महली निकटि न आवै ॥२॥ अतीतु सदाइे माइआ का माता ॥ मनि नही प्रीति कहै मुखि राता ॥३॥ कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥४॥ दरसन देखे की वडिआई ॥ तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥७॥ सूही महला ५ ॥ बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥ नाम की बेला पै पै सोइआ ॥१॥ अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ माइआ मोह रंगि लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥ लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ साध जना का दरसु न डीठा ॥२॥ कबहू न समझै अगिआनु गवारा ॥ बहुरि बहुरि लपटिए जंजारा ॥१॥ रहाउ ॥ बिखै नाद करन सुणि भीना ॥ हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥३॥ दृसटि नाही रे पेखत अंधे ॥ छोडि जाहि झूठे सभि धंधे ॥१॥ रहाउ ॥ कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥

करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥४॥ तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ जिसहि बुझाइे तिसु नामु लैना ॥१॥ रहाउ ॥२॥८॥ सूही महला ५ ॥ घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ गल महि पाहणु लै लटकावै ॥१॥ भरमे भूला साकतु फिरता ॥ नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ एहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥२॥ गुनहगार लूण हरामी ॥ पाहण नाव न पारगिरामी ॥३॥ गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ॥४॥३॥६॥ सूही महला ५ ॥ लालनु राविआ कवन गती री ॥ सखी बतावहु मुझहि मती री ॥१॥ सूहब सूहब सूहवी ॥ अपने प्रीतम कै रंगि रती ॥१॥ रहाउ ॥ पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी ॥ जहा पठावहु जाँउ तती री ॥२॥ जप तप संजम देउ जती री ॥ इक निमख मिलावहु मोहि प्रानपती री ॥३॥ माणु ताणु अह्मबुधि हती री ॥ सा नानक सोहागवती री ॥४॥४॥१०॥ सूही महला ५ ॥ तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥ तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥१॥ तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥ चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥१॥ रहाउ ॥ बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥ तूं भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥२॥ कोटि दास जा कै दरबारे ॥ निमख निमख वसै तिन् नाले ॥३॥ हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ एति पोति नानक संगि बसेरा ॥४॥५॥ ११॥ सूही महला ५ ॥ सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥ ता महि वासहि भगत पिआरे ॥१॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥१॥ रहाउ ॥ तह गीत नाद अखारे संगा ॥ ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥२॥ तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥ साच नाम की अंमृत वरखा ॥३॥ गुहज कथा इहु गुर ते जाणी ॥ नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥४॥६॥१२॥ सूही महला ५ ॥ जा कै दरसि पाप कोटि उतारे ॥ भेटत संगि इहु भवजलु तारे ॥१॥ एडि साजन एडि मीत पिआरे ॥ जो हम कउ हरि नामु चितारे ॥१॥ रहाउ ॥ जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ जा की टहल जमदूत बिदारे ॥२॥ जा की धीरक इसु मनहि सधारे ॥ जा कै सिमरणि मुख उजलारे ॥३॥ प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ सरणि

नानक तिन् सद बलिहारे ॥४॥७॥१३॥ सूही महला ५ ॥ रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥ ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥१॥ जीवत पेखे जिन्ी हरि हरि धिआइआ ॥ साधसंगि तिन्ी दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ बादिसाह साह वापारी मरना ॥ जो दीसै सो कालहि खरना ॥२॥ कूड़ै मोहि लपटि लपटाना ॥ छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥३॥ कृपा निधान नानक कउ करहु दाति ॥ नामु तेरा जपी दिनु राति ॥४॥८॥१४॥ सूही महला ५ ॥ घट घट अंतरि तुमहि बसारे ॥ सगल समग्री सूति तुमारे ॥१॥ तूं प्रीतम तूं प्रान अधारे ॥ तुम ही पेखि पेखि मनु बिगसारे ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रमि हारे ॥ एट गही अब साध संगारे ॥२॥ अगम अगोचरु अलख अपारे ॥ नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥३॥९॥१५॥ सूही महला ५ ॥ कवन काज माइआ वडिआई ॥ जा कउ बिनसत बार न काई ॥१॥ इहु सुपना सोवत नही जानै ॥ अचेत बिवसथा महि लपटानै ॥१॥ रहाउ ॥ महा मोहि मोहिए गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठि सिधारा ॥२॥ ऊच ते ऊच ता का दरबारा ॥ कई जंत बिनाहि उपारा ॥३॥ दूसर होआ ना को होई ॥ जपि नानक प्रभ इको सोई ॥४॥१०॥१६॥ सूही महला ५ ॥ सिमरि सिमरि ता कउ हउ जीवा ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा ॥१॥ सो हरि मेरा अंतरजामी ॥ भगत जना कै संगि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि अंमृत नामु धिआवा ॥ आठ पहर तेरे गुण गावा ॥२॥ पेखि पेखि लीला मनि आन्नदा ॥ गुण अपार प्रभ परमान्नदा ॥३॥ जा कै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ सदा सदा नानक हरि जापै ॥४॥११॥१७॥ सूही महला ५ ॥ गुर कै बचनि रिदै धिआनु धारी ॥ रसना जापु जपउ बनवारी ॥१॥ सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ चरण कमल मन प्राण अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि जनम मरण निवारी ॥ अंमृत कथा सुणि करन अधारी ॥२॥ काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ दृड़ु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥३॥ कहु नानक इहु ततु बीचारी ॥ राम नाम जपि पारि उतारी ॥४॥१२॥१८॥ सूही महला ५ ॥ लोभि मोहि मगन अपराधी ॥

करणहार की सेव न साधी ॥१॥ पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥१॥ रहाउ ॥ तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ काची देह मानुख अभिमानी ॥२॥ सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥३॥ दुख भंजन जगजीवन हरि राइआ ॥ सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥४॥१३॥१९॥ सूही महला ५ ॥ पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥ निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥१॥ सो किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ हरि हरि नामु जपि अंमृत बानी ॥१॥ रहाउ ॥ घोर महल सदा रंगि राता ॥ संगि तुम्हारै कछू न जाता ॥२॥ रखहि पोचारि माटी का भाँडा ॥ अति कुचील मिलै जम डाँडा ॥३॥ काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा ॥ महा गरत महि निघरत जाता ॥४॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥ ५॥१४॥२०॥ सूही महला ५ ॥ जीवत मरै बुझै प्रभु सोइ ॥ तिसु जन करमि परापति होइ ॥१॥ सुणि साजन इउ दुतरु तरीऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु उचरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ एक बिना दूजा नही जानै ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥२॥ जो किछु करै सोई भल मानै ॥ आदि अंत की कीमति जानै ॥३॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥४॥१५॥२१॥ सूही महला ५ ॥ गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ सगल सृसटि कउ दे आधारु ॥१॥ गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥२॥ गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ सूख सहज मनि आवै साँति ॥३॥ सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥ नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥४॥१६॥२२॥ सूही महला ५ ॥ गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐ ॥ आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐ ॥१॥ सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ साची पूरन निरमल रीति ॥२॥ संत प्रसादि वसै मन माही ॥ जनम जनम के किलविख जाही ॥३॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानकु मागै

संत रवाला ॥४॥१७॥२३॥ सूही महला ५ ॥ दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ पूरन करमु होइ प्रभ मेरा ॥१॥ इह बेन्नती सुणि प्रभ मेरे ॥ देहि नामु करि अपणे चेरे ॥१॥ रहाउ ॥ अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥२॥ सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥३॥ नानकु इेक करै अरदासि ॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥४॥१८॥२४॥ सूही महला ५ ॥ मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ जत कत पेखउ हरि संगि सहाई ॥१॥ जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ सूख सहज आन्नद बिसराम ॥१॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जपि पहिरि सनाह ॥ कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥२॥ हरि चरन सरण गड़ कोट हमारै ॥ कालु कंटकु जमु तिसु न बिदारै ॥३॥ नानक दास सदा बलिहारी ॥ सेवक संत राजा राम मुरारी ॥४॥१९॥२५॥ सूही महला ५ ॥ गुण गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ अनद बिनोद मंगल सुख ताहा ॥१॥ चलु सखीइे प्रभु रावण जाहा ॥ साध जना की चरणी पाहा ॥१॥ रहाउ ॥ करि बेनती जन धूरि बाछाहा ॥ जनम जनम के किलविख लाहाँ ॥२॥ मनु तनु प्राण जीउ अरपाहा ॥ हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहाँ ॥३॥ दीन दइिआल करहु उतसाहा ॥ नानक दास हरि सरणि समाहा ॥४॥२०॥२६॥ सूही महला ५ ॥ बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ॥ प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥१॥ सुणि मन तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ हरि अनिक बिंजन तुझु भोग भुंचावउ ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु भुंचु मन माही ॥ अचरज साद ता के बरने न जाही ॥२॥ लोभु मूआ तृसना बुझि थाकी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥३॥ जनम जनम के भै मोह निवारे ॥ नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥४॥२१॥२७॥ सूही महला ५ ॥ अनिक बींग दास के परहरिआ ॥ करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥१॥ तुमहि छडाइि लीए जनु अपना ॥ उरझि परिए जालु जगु सुपना ॥१॥ रहाउ ॥ परबत दोख महा बिकराला ॥ खिन महि दूरि कीइे दइिआला ॥२॥ सोग रोग बिपति अति भारी ॥ दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥३॥ दृसटि

धारि लीनो लड़ि लाइि ॥ हरि चरण गहे नानक सरणाइि ॥४॥२२॥२८॥ सूही महला ५ ॥ दीनु छडाइि दुनी जो लाइे ॥ दुही सराई खुनामी कहाइे ॥१॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ आपणी कुदरति आपे जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ सचा धरमु पुन्नु भला कराइे ॥ दीन कै तोसै दुनी न जाइे ॥२॥ सरब निरंतरि इेको जागै ॥ जितु जितु लाइिआ तितु तितु को लागै ॥३॥ अगम अगोचरु सचु साहिबु मेरा ॥ नानकु बोलै बोलाइिआ तेरा ॥४॥२३॥२६॥ सूही महला ५ ॥ प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ ईत ऊत की एट सवारी ॥१॥ सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥ पूरन होवहि मन के काम ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु अबिनासी रैणि दिनु गाउ ॥ जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥२॥ सो साहु सेवि जितु तोटि न आवै ॥ खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥३॥ जगजीवन पुरखु साधसंगि पाइिआ ॥ गुर प्रसादि नानक नामु धिआइिआ ॥४॥२४॥३०॥ सूही महला ५ ॥ गुर पूरे जब भइे दइिआल ॥ दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥१॥ पेखि पेखि जीवा दरसु तुम्हारा ॥ चरण कमल जाई बलिहारा ॥ तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगति सिउ प्रीति बणि आई ॥ पूरब करमि लिखत धुरि पाई ॥२॥ जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ जालि न साकहि तीने ताप ॥३॥ निमख न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ नानकु मागै दानु पिआरे ॥४॥२५॥३१॥ सूही महला ५ ॥ से संजोग करहु मेरे पिआरे ॥ जितु रसना हरि नामु उचारे ॥१॥ सुणि बेनती प्रभ दीन दइिआला ॥ साध गावहि गुण सदा रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ जिसु कृपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥२॥ जन की भूख तेरा नामु अहारु ॥ तूं दाता प्रभ देवणहारु ॥३॥ राम रमत संतन सुखु माना ॥ नानक देवनहार सुजाना ॥४॥२६॥३२॥ सूही महला ५ ॥ बहती जात कदे दृसटि न धारत ॥ मिथिआ मोह बंधहि नित पारच ॥१॥ माधवे भजु दिन नित रैणी ॥ जनमु पदारथु जीति हरि सरणी ॥१॥ रहाउ ॥ करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ राम रतनु रिद तिलु नही धारत ॥२॥ भरण पोखण संगि अउध बिहाणी ॥

जै जगदीस की गति नही जाणी ॥३॥ सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ उधरु नानक प्रभ अंतरजामी ॥४॥२७॥३३॥ सूही महला ५ ॥ साधसंगि तरै भै सागरु ॥ हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥१॥ सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥१॥ रहाउ ॥ जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥२॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआईऐ ॥ पूरबि लिखतु होइ ता पाईऐ ॥३॥ सरणि पए जपि दीन दइआला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥४॥२८॥३४॥ सूही महला ५ ॥ घर का काजु न जाणी रूड़ा ॥ झूठै धंधै रचिए मूड़ा ॥१॥ जितु तूं लावहि तितु तितु लगना ॥ जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के दास हरि सेती राते ॥ राम रसाइणि अनदिनु माते ॥२॥ बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥४॥२९॥३५॥ सूही महला ५ ॥ संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ सरब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥१॥ गुरू धिआइ हरि चरन मनि चीन्हे ॥ ता ते करतै असथिरु कीन्हे ॥१॥ रहाउ ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ ता ते काटी जम की फासी ॥२॥ करि किरपा लीने लड़ि लाइे ॥ सदा अनदु नानक गुण गाइे ॥३॥३०॥३६॥ सूही महला ५ ॥ अंमृत बचन साध की बाणी ॥ जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥१॥ रहाउ ॥ कली काल के मिटे कलेसा ॥ इको नामु मन महि परवेसा ॥१॥ साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥२॥३१॥३७॥ सूही महला ५ घरु ३ ॥ गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ जीउ पिंडु सभु तुमरा माला ॥१॥ अंमृत नामु चलै जपि नाला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥२॥३२॥३८॥ सूही महला ५ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ आपे थंमै सचा सोई ॥१॥ हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ करण कारण समरथु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ नानक रखा

आपे होआ ॥२॥३३॥३६॥ सूही महला ५ ॥ दरसन कउ लोचै सभु कोई ॥ पूरै भागि परापति होई ॥ रहाउ ॥ सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ महा मोहनी दूता लाई ॥१॥ प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ निरदै जंतु तिसु दइिआ न पाई ॥२॥ अनिक जनम बीतीअन भरमाई ॥ घरि वासु न देवै दुतर माई ॥३॥ दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥४॥ सुणि साजन संत जन भाई ॥ चरण सरण नानक गति पाई ॥५॥३४॥४०॥

रागु सूही महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाड़े ॥ कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराड़े ॥१॥ रहाउ ॥ अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आड़े ॥ जलि जाउ एहु बडपना माइिआ लपटाड़े ॥१॥ पीसनु पीसि एढि कामरी सुखु मनु संतोखाड़े ॥ ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह तृपताड़े ॥२॥ नगन फिरत रंगि एक कै एहु सोभा पाड़े ॥ पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाड़े ॥३॥ सभु किछु तुम्रै हाथि प्रभ आपि करे कराड़े ॥ सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाड़े ॥४॥१॥४१॥ सूही महला ५ ॥ हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूं ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥१॥ मिसट बचन बेनती करउ दीन की निआई ॥ तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥२॥ अवलोकन पुनह पुनह करउ जन का दरसारु ॥ अंमृत बचन मन महि सिंचउ बंदउ बार बार ॥३॥ चितवउ मनि आसा करउ जन का संगु मागउ ॥ नानक कउ प्रभ दइिआ करि दास चरणी लागउ ॥४॥२॥४२॥ सूही महला ५ ॥ जिनि मोहे ब्रहमंड खंड ताहू महि पाउ ॥ राखि लेहु इिहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जा ते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ ॥ छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि फिरि लपटाउ ॥१॥ करहु कृपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ नानक की प्रभ

बेनती साधसंगि समाउ ॥२॥३॥४३॥

रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥ जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिन्न भिन्न भिन्न भिन करीआ ॥ विचि मन कोटवरीआ ॥ निज मंदरि पिरीआ ॥ तहा आनद करीआ ॥ नह मरीआ नह जरीआ ॥१॥ किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ॥ बिखना घिरीआ ॥ अब साधू संगि परीआ ॥ हरि दुआरै खरीआ ॥ दरसनु करीआ ॥ नानक गुर मिरीआ ॥ बहुरि न फिरीआ ॥२॥१॥४४॥ सूही महला ५ ॥ रासि मंडलु कीनो आखारा ॥ सगलो साजि रखिए पासारा ॥१॥ रहाउ ॥ बहु बिधि रूप रंग आपारा ॥ पेखै खुसी भोग नही हारा ॥ सभि रस लैत बसत निरारा ॥१॥ बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ॥ कहनु न जाई खेलु तुहारा ॥ नानक रेण संत चरनारा ॥२॥२॥४५॥ सूही महला ५ ॥ तउ मै आइआ सरनी आइआ ॥ भरोसै आइआ किरपा आइआ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ महा दुतरु माइआ ॥ जैसे पवनु झुलाइआ ॥१॥ सुनि सुनि ही डराइआ ॥ कररो ध्रमराइआ ॥२॥ गृह अंध कूपाइआ ॥ पावकु सगराइआ ॥३॥ गही एट साधाइआ ॥ नानक हरि धिआइआ ॥ अब मै पूरा पाइआ ॥४॥३॥४६॥

रागु सूही महला ५ घरु ६　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर पासि बेन्नतीआ मिलै नामु आधारा ॥ तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ॥१॥ भगता की टेक तूं संता की एट तूं सचा सिरजनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥ सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥२॥ तेरा रूपु अगंमु है अनूपु तेरा दरसारा ॥ हउ

कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन् हरि नामु पिआरा ॥३॥ सभे इछा पूरीआ जा पाइआ अगम अपारा ॥ गुरु नानकु मिलिआ पारब्रहमु तेरिआ चरणा कउ बलिहारा ॥४॥१॥४७॥

रागु सूही महला ५ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ साई भगति जो तुधु भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला ॥१॥ मेरे राम राइ संता टेक तुमारी ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ तूं दइआलु कृपालु कृपा निधि मनसा पूरणहारा ॥ भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूं भगतन का पिआरा ॥२॥ तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते ॥ इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥३॥ दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा ॥ नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा ॥४॥१॥४८॥ सूही महला ५ ॥ विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु तेरा केहा ॥ आठ पहर जितु तुधु धिआई निरमल होवै देहा ॥१॥ मेरे राम हउ सो थानु भालण आइआ ॥ खोजत खोजत भइआ साधसंगु तिन् सरणाई पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति पाई ॥ साधिक सिध फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥२॥ दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ तिन् भी अंतु न पाइए तेरा लाइ थके बिभूता ॥३॥ सहज सूख आनन्द नाम रस हरि संती मंगलु गाइआ ॥ सफल दरसनु भेटिए गुर नानक ता मनि तनि हरि हरि धिआइआ ॥४॥२॥४९॥ सूही महला ५ ॥ करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥१॥ संतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ जे को बचनु कमावै संतन का सो गुर परसादी तरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥ साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ॥२॥ बेद कतेब सिमृति सभि सासत इन् पड़िआ मुकति न होई ॥ एकु अखरु जो गुरमुखि जापै तिस की निरमल सोई ॥३॥ खत्री ब्राहमण

सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥४॥३॥५०॥ सूही महला ५ ॥ जो किछु करै सोई प्रभ मानहि एइ राम नाम रंगि राते ॥ तिन् की सोभा सभनी थाई जिन् प्रभ के चरण पराते ॥१॥ मेरे राम हरि संता जेवडु न कोई ॥ भगता बणि आई प्रभ अपने सिउ जलि थलि महीअलि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै जमु ता कै नेड़ि न आवै ॥ जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन् हरि सिउ आणि मिलावै ॥२॥ माइआ मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो आवै ॥ जेहा मनोरथु करि आराधे सो संतन ते पावै ॥३॥ जन की महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ कहु नानक जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥४॥४॥५१॥ सूही महला ५ ॥ महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥१॥ मेरे राम राइ तुधु चिति आइऐ उबरे ॥ तेरी टेक भरवासा तुम्रा जपि नामु तुमारा उधरे ॥१॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते काढि लीए तुम् आपि भए किरपाला ॥ सारि सम्ालि सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥२॥ आपणी नदरि करे परमेसरु बंधन काटि छडाए ॥ आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ॥३॥ भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥ नानक दइआ करी सुखदाते भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥४॥५॥५२॥ सूही महला ५ ॥ जब कछु न सीए तब किआ करता कवन करम करि आइआ ॥ अपना खेलु आपि करि देखै ठाकुरि रचनु रचाइआ ॥१॥ मेरे राम राइ मुझ ते कछू न होई ॥ आपे करता आपि कराए सरब निरंतरि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी ॥ क्रिपा करहु प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥२॥ जीअ जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईऐ ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईऐ ॥३॥ निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी करम धरम नही जाणा ॥ दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥४॥६॥५३॥ सूही महला ५ ॥

भागठड़े हरि संत तुमारे जिन् घरि धनु हरि नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आइे सफल तिना के कामा ॥१॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १॥ रहाउ ॥ जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आइे ॥ जीअ दानु दे भगती लाइिनि हरि सिउ लैनि मिलाइे ॥२॥ सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥३॥ पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि बेन्नती तेरे जन देखणु पावा ॥४॥७॥५४॥ सूही महला ५ ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥१॥ मेरे राम राइि जिउ राखहि तिउ रहीऐ ॥ तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइिहि ॥ तहा बैकुंठु जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइिहि ॥२॥ सिमरि सिमरि सिमरि नामु जीवा तनु मनु होइि निहाला ॥ चरण कमल तेरे धोइि धोइि पीवा मेरे सतिगुर दीन दइिआला ॥३॥ कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु तुमरै दुआरै आइिआ ॥ नानक कउ प्रभ भइे कृपाला सतिगुरु पूरा पाइिआ ॥४॥८॥५५॥ सूही महला ५ ॥ तुधु चिति आइे महा अन्नदा जिसु विसरहि सो मरि जाइे ॥ दइिआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआइे ॥१॥ मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥ अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ अंमृत बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते संगु पाई ॥२॥ अंतर की गति तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ जिस नो लाइि लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥३॥ दुइि कर जोड़ि मागउ इिकु दाना साहिबि तुठै पावा ॥ सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा ॥४॥६॥५६॥ सूही महला ५ ॥ जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ बोलि न जाणै माइिआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥१॥ मेरे राम राइि तूं संता का संत तेरे ॥

तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुखु नासा ॥ तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥२॥ नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि ॥ तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥३॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥ सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥ ४॥१०॥५७॥ सूही महला ५ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥ जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥१॥ मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी ॥ करि किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ गुर प्रसादि भउ तरीऐ ॥ आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीऐ ॥२॥ सफल जनमु तिस का जग भीतरि साधसंगि नाउ जापे ॥ सगल मनोरथ तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥३॥ दीन दइआल कृपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥४॥११॥५८॥

रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ किउ करि कंत मिलावा होई ॥१॥ ना मै रूपु न बंके नैणा ॥ ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥१॥ रहाउ ॥ सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥२॥ ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥३॥ सुरति मति नाही चतुराई ॥ करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥४॥ खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥५॥ हउमै जाई ता कंत समाई ॥ तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥६॥ अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥७॥ भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥८॥१॥

सूही महला १ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कचा रंगु कसुंभ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ ॥१॥ रंगे का किआ रंगीऐ जो रते रंगु लाइ जीउ ॥ रंगण वाला सेवीऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ चारे कुंडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ गुरि राखे से उबरे सबदि रते मन माहि जीउ ॥२॥ चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥ मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥३॥ नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मंगै सुख जीउ ॥ करता चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥४॥ बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे जंदारु जीउ ॥ लेखा मंगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥५॥ अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥६॥ गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ खिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकालि जीउ ॥७॥ जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ आधारु जीउ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥८॥१॥२॥

सूही महला १ काफी घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

माणस जनमु दुलम्भु गुरमुखि पाइआ ॥ मनु तनु होइ चुलम्भु जे सतिगुर भाइआ ॥१॥ चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥ पति पाइे दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥१॥ रहाउ ॥ मनि तनि सचु सलाहि

साचे मनि भाइआ ॥ लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥२॥ हउ जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥३॥ मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ रंगि रंगेतड़ा ॥४॥ नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ जे चलहि गुण नालि नाही दुखु संतापणा ॥५॥ मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रंगु है ॥ मरसी होइ विडाणा मनि तनि भंगु है ॥६॥ गुर की कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥७॥ इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥८॥१॥३॥ सूही महला १ ॥ जिउ आरणि लोहा पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥ तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥१ ॥ बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥१॥ रहाउ ॥ तूं गुरमुखि रखणहारु हरि नामु धिआईऐ ॥ मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कमाईऐ ॥२॥ तूं करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईऐ ॥ तू देखहि थापि उथापि दरि बीनाईऐ ॥३॥ देही होवगि खाकु पवणु उडाईऐ ॥ इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईऐ ॥४॥ दिहु दीवी अंध घोरु घबु मुहाईऐ ॥ गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईऐ ॥५॥ गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईऐ ॥ सबदि निवारी आगि जोति दीपाईऐ ॥६॥ लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईऐ ॥ सदा रहै निहकामु जे गुरमति पाईऐ ॥७॥ राति दिहै हरि नाउ मंनि वसाईऐ ॥ नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईऐ ॥८॥२॥४॥ सूही महला १ ॥ मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईऐ ॥ जिउ राखहि किरपा धारि तिवै सुखु पाईऐ ॥१॥ मै अंधुले हरि नामु लकुटी टोहणी ॥ रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥१॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥२॥ सेवी सतिगुर भाइ नामु निरंजना ॥ तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥३॥ जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै ॥ जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥४॥ हउ नाही तू होवहि तुध ही

साजिआ ॥ आपे थापि उथापि सबदि निवाजिआ ॥५॥ देही भसम रुलाइ न जापी कह गइआ ॥ आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥६॥ तूं नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है ॥७॥ मै दीजै नाम निवासु अंतरि साँति होइ ॥ गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥८॥३॥५॥

रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥१॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥ जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥ माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥२॥ सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥ साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥ सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए ॥ आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥३॥ गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥ सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ जमकालि बाधा तृसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए ॥४॥ सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए ॥ अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए ॥ सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ॥ सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥५॥ तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए ॥ हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥ गुर की साखी सहजे चाखी तृसना अगनि बुझाए ॥ गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए

॥६॥ हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ इेको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे ॥ आपे मेलि लइे ता बखसे सची भगति सवारे ॥७॥ सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥ जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै ॥ नामु धिआइे ता सतिगुरु भाइे जो इिछै सो फलु पाइे ॥ नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाइे ॥८॥१॥ सूही महला ३ ॥ काइिआ कामणि अति सुआलिउ पिरु वसै जिसु नाले ॥ पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले ॥ हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले ॥१॥ वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥ काइिआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ काइिआ कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला ॥२॥ काइिआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि जाई ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाइे सतिगुरि अलखु दिता लखाई ॥३॥ काइिआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥ इिसु काइिआ अंदरि नउखंड पृथमी हाट पटण बाजारा ॥ इिसु काइिआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥४॥ काइिआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा ॥ इिहु मनु रतनु जवाहर माणकु तिस का मोलु अफारा ॥ मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥५॥ गुरमुखि होवै सु काइिआ खोजै होर सभ भरमि भुलाई ॥ जिस नो देइि सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥ काइिआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई ॥६॥ काइिआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ एपति जितु संसारा ॥ सचै आपणा खेलु रचाइिआ आवा गउणु पासारा ॥ पूरै सतिगुरि आपि दिखाइिआ सचि नामि निसतारा ॥७॥ सा काइिआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ॥ विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ नानक सचु वडिआई पाइे जिस नो हरि किरपा धारी ॥८॥२॥

रागु सूही महला ३ घरु १०　　　　ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥ लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥१॥ वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥१॥ रहाउ ॥ दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥२॥ गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥ आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥३॥ गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥ तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥४॥ दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥ आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥५॥ निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥६॥ ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥७॥ महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ ओइ अंमृत भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥८॥ गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥ से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥९॥ देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ एको है दातारु सचा आपि धणी ॥१०॥ सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥ आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥११॥ मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥ प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१२॥ सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥१३॥ सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥१४॥ पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥१५॥ मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥ सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥१६॥ आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसणहारु ॥ गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु

॥१७॥ सचा साहु सचे वणजारे एथै कूड़े न टिकंनि ॥ एना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥१८॥ हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार ॥ पइिऐ किरति कमावणा कोइि न मेटणहार ॥१६॥ संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥२०॥ गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइि ॥ हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइि ॥२१॥ गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइि ॥ तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइि ॥२२॥ खिंचोताणि विगुचीऐ इेकसु सिउ लिव लाइि ॥ हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइि ॥२३॥ सतिगुर नो मिले सि भाइिरा सचै सबदि लगंनि ॥ सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि ॥२४॥ से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि ॥ अवगण विकणि पल्रनि गुण की साझ करंनि् ॥२५॥ गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ॥ सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लइेनि ॥२६॥ सुइिना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि ॥ विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि ॥२७॥ मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्ालि ॥ इेहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥२८॥ इे मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइि ॥ इिहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइि ॥२६॥ हरि की कीमति न पवै हरि जसु लिखणु न जाइि ॥ गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइि ॥३०॥ सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइि ॥ कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइि ॥३१॥ चिरी विछुन्ने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि ॥ अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि ॥३२॥ ना एइि जनमहि ना मरहि ना एइि दुख सह्नि ॥ गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि ॥३३॥ सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रह्नि ॥ इिसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लह्नि ॥३४॥१॥३॥ सूही महला ३ ॥ हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलिआ जाइि ॥ गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु वसै मनि आइि ॥१॥ गुरमुखि हरि हरि

नामु जपंनि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवंनि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी पुरख लहंनि् ॥ सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि ॥२॥ नामु धिआइनि् रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंनि् ॥ धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मंनि लइंनि् ॥३॥ वडभागी घरु खोजिआ पाइआ नामु निधानु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥४॥ सभना का प्रभु इकु है दूजा अवरु न कोइ ॥ गुर परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ ॥५॥ सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ ॥ मंदा किस नो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ ॥६॥ बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ गुरमुखि इको बुझिआ इकसु माहि समाइ ॥७॥ सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥८॥२॥४॥९॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥१॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ कृपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥ जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥३॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥४॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥५॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥६॥ अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥७॥ जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥८॥ जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोडि न जाई ॥९॥ जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऐ मरि जाई ॥१०॥ वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥११॥ नानकु विचारा भइआ दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥१२॥ झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥१३॥ समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥१४॥ जिउ प्राणी

जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥१५॥ जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥१६॥ सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥१७॥ नानक की बेन्नती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥१८॥ तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥१९॥ जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥२०॥ भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥२१॥ जिसु तूं देहि सोई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥२२॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥२३॥ इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥२४॥ जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥२५॥ गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥२६॥ पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥२७॥ सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥२८॥ अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो थाइ पाई ॥२९॥ रैणि दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥३०॥ नानक का जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि तृपति अघाई ॥३१॥ नानक का प्रभु पूरि रहिए है जत कत तत गोसाई ॥३२॥१॥

रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥१॥ मै हरि हरि नामु विसाहु ॥ गुर पूरे ते पाइआ अंमृतु अगम अथाहु ॥१॥ रहाउ ॥ हउ सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ किरपा करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥२॥ सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ जे पूरबि होवै लिखिआ ता अंमृतु सहजि पीइेउ ॥३॥ सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥४॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ

मिलिआ सहजि सुभाइ ॥५॥ सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥ हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥६॥ जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ तिउ हरि बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥७॥ मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ॥८॥ हरि हरि नामु रतन्नु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥९॥ गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ दृड़ाइ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर चरणी लागै आइ ॥१०॥ अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥११॥ सजणु मेरा इेकु तूं करता पुरखु सुजाणु ॥ सतिगुरि मीति मिलाइआ मै सदा सदा तेरा ताणु ॥१२॥ सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै न जाइ ॥ एहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥१३॥ राम नाम धनु संचिआ साबतु पूंजी रासि ॥ नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबासि ॥१४॥१॥२॥११॥

रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उरझि रहिए बिखिआ कै संगा ॥ मनहि बिआपत अनिक तरंगा ॥१॥ मेरे मन अगम अगोचर ॥ कत पाईऐ पूरन परमेसर ॥१॥ रहाउ ॥ मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ अति तृसना कबहू नही ध्रापे ॥२॥ बसइि करोधु सरीरि चंडारा ॥ अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥३॥ भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥४॥ आसा अंदेसा बंधि पराना ॥ महलु न पावै फिरत बिगाना ॥५॥ सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ फिरत पिआस जिउ जल बिनु मीना ॥६॥ कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ इेक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥७॥ करउ बेनती संतन पासे ॥ मेलि लैहु नानक अरदासे ॥८॥ भइिए कृपालु साधसंगु पाइिआ ॥ नानक तृपते पूरा पाइिआ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥

रागु सूही महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ करि किरपा उधरु हरि नागर ॥१॥ चरण कमल सरणाइि नराइिण ॥ दीना नाथ भगत पराइिण ॥१॥ रहाउ ॥ अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ साधसंगि जमदूत न भेटन ॥२॥ जीवन रूप अनूप दइिआला ॥ रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥३॥ अंमृत नामु रसन नित जापै ॥ रोग रूप माइिआ न बिआपै ॥४॥ जपि गोबिंद संगी सभि तारे ॥ पोहत नाही पंच बटवारे ॥५॥ मन बच क्रम प्रभु इेकु धिआइे ॥ सरब फला सोई जनु पाइे ॥६॥ धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ केवल नामु भगति रसु दीना ॥७॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई ॥ नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥८॥१॥२॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन् संगु जीउ ॥ संत सजन मन मित्र से लाइिनि प्रभ सिउ रंगु जीउ ॥ तिन् सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंगु जीउ ॥१॥ पारब्रहम प्रभ करि दइिआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ आइि मिलहु संत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ देखै सुणे न जाणई माइिआ मोहिआ अंधु जीउ ॥ काची देहा विणसणी कूड़ु कमावै धंधु जीउ ॥ नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबंधु जीउ ॥२॥ हुकमे जुग महि आइिआ चलणु हुकमि संजोगि जीउ ॥ हुकमे परपंचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ जिस नो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥३॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइि जीउ ॥ ऐथै सुखु मुखु उजला इिको नामु धिआइि जीउ ॥ आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सत भाइि जीउ ॥४॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ सचु खजाना संचिआ इेकु नामु धनु माल जीउ ॥ मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइि

दइिआल जीउ ॥५॥ आवणु जाणा रहि गइे मनि वुठा निरंकारु जीउ ॥ ता का अंतु न पाईअै ऊचा अगम अपारु जीउ ॥ जिसु प्रभु अपणा विसरै सो मरि जंमै लख वार जीउ ॥६॥ साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ ॥ गुण साझी तिन संगि बसे आठ पहर प्रभ जापि जीउ ॥ रंगि रते परमेसरै बिनसे सगल संताप जीउ ॥७॥ तूं करता तूं करणहारु तूहै इेकु अनेक जीउ ॥ तू समरथु तू सरब मै तूहै बुधि बिबेक जीउ ॥ नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥८॥१॥३॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जे भुली जे चुकी साइीं भी तह्जिजी काढीआ ॥ जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ ॥१॥ हउ ना छोडउ कंत पासरा ॥ सदा रंगीला लालु पिआरा इेहु मह्जिजा आसरा ॥१॥ रहाउ ॥ सजणु तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥ जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ ॥२॥ जे तू तुठा कृपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ इेहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि ॥३॥ पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि ॥ स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥४॥ किती लख करोड़ि पिरीइे रोम न पुजनि तेरिआ ॥ तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥५॥ सहीआ तऊ असंख मंञहु हभि वधाणीआ ॥ हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ ॥६॥ जै डिठे मनु धीरीअै किलविख वंञनि् दूरे ॥ सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥७॥ होइि निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइि ॥ पूरबि लिखिआ पाइिआ नानक संत सहाइि ॥८॥१॥४॥ सूही महला ५ ॥ सिमृति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥ नाम बिना सभि कूड़ु गाली होछीआ ॥१॥ नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि बादि अहंकारि सरपर रुंनिआ ॥ सुखु न पाइिनि् मूलि नाम विछुंनिआ ॥२॥ मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ ॥ नरकि सुरगि अवतार माइिआ धंधिआ ॥३॥ सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ नाम बिना सुखु नाहि सरपर

हारिआ ॥४॥ आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते ॥५॥ जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संगु भइआ ॥ अंमृतु हरि का नामु तिन्ही जनी जपि लइआ ॥६॥ खोजहि कोटि असंख बहुतु अनन्त के ॥ जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥७॥ विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥८॥२॥५॥१६॥

रागु सूही महला १ कुचजी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मंञु कुचजी अंमावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ इक दू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ जिन्ही सखी सहु राविआ से अंबी छावड़ीएहि जीउ ॥ से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ इकतु टोलि न अंबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ ॥ से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ ॥ हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पासि जीउ ॥ अंबरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ सा धन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ ॥ सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूं धरीआसु जीउ ॥ तुधु गुण मै सभि अवगणा इक नानक की अरदासि जीउ ॥ सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥१॥ सूही महला १ सुचजी ॥ जा तू ता मै सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ॥ भाणै तखति वडाईआ भाणै भीख उदासि जीउ ॥ भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ भाणै भवजलु लम्घीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ॥ भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआसि जीउ ॥ तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की

अरदासि जीउ ॥२॥ सूही महला ५ गुणवंती ॥ जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ इहु मनु तै कूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ ॥ हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ मै बहुड़ि न तृसना भुखड़ी हउ रजा तृपति अघाइ जीउ ॥ जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥३॥

रागु सूही छंत महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ भरि जोबनि मै मत पेईअड़ै घरि पाहुणी बलि राम जीउ ॥ मैली अवगणि चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलि राम जीउ ॥ गुण सार न जाणी भरमि भुलाणी जोबनु बादि गवाइआ ॥ वरु घरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ नानक बालतणि राडेपा बिनु पिर धन कुमलाणी ॥१॥ बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिस की बलि राम जीउ ॥ रवि रहिआ जुग चारि तृभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥ तृभवण कंतु रवै सोहागणि अवगणवंती दूरे ॥ जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ हरि की नारि सु सरब सुहागणि राँड न मैलै वेसे ॥ नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥२॥ बाबा लगनु गणाइ ह्मा भी वंञा साहुरै बलि राम जीउ ॥ साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलि राम जीउ ॥ किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ जाञी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ माइ निरासी रोइ विछुन्नी बाली बालै हेते ॥ नानक साच

सबदि सुख महली गुर चरणी प्रभु चेते ॥३॥ बाबुलि दितड़ी दूरि ना आवै घरि पेईऐ बलि राम जीउ ॥ रहसी वेखि हदूरि पिरि रावी घरि सोहीऐ बलि राम जीउ ॥ साचे पिर लोड़ी प्रीतम जोड़ी मति पूरी परधाने ॥ संजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने ॥ सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाइे ॥ नानक विछुड़ि ना दुखु पाइे गुरमति अंकि समाइे ॥४॥१॥

राग सूही महला १ छंतु घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हम घरि साजन आइे ॥ साचै मेलि मिलाइे ॥ सहजि मिलाइे हरि मनि भाइे पंच मिले सुखु पाइिआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइिआ ॥ अनदिनु मेलु भइिआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाइे ॥ पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आइे ॥१॥ आवहु मीत पिआरे ॥ मंगल गावहु नारे ॥ सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे ॥ अपनै घरि आइिआ थानि सुहाइिआ कारज सबदि सवारे ॥ गिआन महा रसु नेत्री अंजनु तृभवण रूपु दिखाइिआ ॥ सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइिआ ॥२॥ मनु तनु अंमृति भिन्ना ॥ अंतरि प्रेमु रतन्ना ॥ अंतरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ जंत भेख तू सफलिए दाता सिरि सिरि देवणहारो ॥ तू जानु गिआनी अंतरजामी आपे कारणु कीना ॥ सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अंमृति भीना ॥३॥ आतम रामु संसारा ॥ साचा खेलु तुमारा ॥ सचु खेलु तुमारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाइे ॥ सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाइे ॥ कालु बिकालु भइे देवाने मनु राखिआ गुरि ठाइे ॥ नानक अवगण सबदि जलाइे गुण संगमि प्रभु पाइे ॥४॥१॥२॥

रागु सूही महला १ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा ॥

सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाइे ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आइे ॥१॥ घरि आइिअड़े साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ हरि मोहिअड़ी साच सबदि ठाकुर देखि रहसी राम ॥ गुण संगि रहसी खरी सरसी जा रावी रंगि रातै ॥ अवगण मारि गुणी घरु छाइिआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ तसकर मारि वसी पंचाइिणि अदलु करे वीचारे ॥ नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥२॥ वरु पाइिअड़ा बालड़ीइे आसा मनसा पूरी राम ॥ पिरि राविअड़ी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ आपे रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाईऐ ॥३॥ पिरु उचड़ीऐ माड़ड़ीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद अगाजा राम ॥ सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ नाम बिना खोटे नही ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ पति मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥४॥१॥३॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला १ घरु ४ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइिआ ॥ दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइिआ ॥ चंदो दीपाइिआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइिआ ॥ गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइिआ ॥ वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइिआ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइिआ ॥१॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मनु लीअड़ा दीता ॥ लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ जिन्ह दिसि आइिआ होहि रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥२॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ जे गुण

होवनि् साजना मिलि साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अंमृतु पीजै ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥३॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ आखण ता कउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीऐ आपि करता किउ भुलै ॥ सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु अणमंगिआ दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥४॥१॥४॥ सूही महला १ ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥ सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ इसनानु दानु सुगिआनु मजनु आपि अछलिए किउ छलै ॥ परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न दोई ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥१॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ मैलु लागी मनि मैलिऐ किनै अंमृतु पीआ ॥ मथि अंमृतु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ आपनड़ा प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि जगतु उपाइआ ॥२॥ आइ गइआ की न आइए किउ आवै जाता ॥ प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ साहिब रंगि राता सच की बाता जिनि बिंब का कोटु उसारिआ ॥ पंच भू नाइको आपि सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ हम अवगणिआरे तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ आवण जाणा ना थीऐ साची मति होई ॥३॥ अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥ समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥ आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवड़े ॥ करम सुकरम कराइे आपे कीमति कउण अभेवड़े ॥ तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥ अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥४॥ साजन होवनि आपणे किउ पर घर जाही ॥ साजन राते सच के संगे मन माही ॥ मन माहि साजन करहि रलीआ करम धरम सबाइआ ॥

अठसठि तीरथ पुन्न पूजा नामु साचा भाइिआ ॥ आपि साजे थापि वेखै तिसै भाणा भाइिआ ॥ साजन राँगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइिआ ॥५॥ अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥ आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥ किउ राहि जावै महलु पावै अंध की मति अंधली ॥ विणु नाम हरि के कछु न सूझै अंधु बूडौ धंधली ॥ दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिन्नती राहु पाधरु गुरु दसै ॥६॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइिआ ॥ किसु पहि खोलउ गंठड़ी दूखी भरि आइिआ ॥ दूखी भरि आइिआ जगतु सबाइिआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ ॥ नाम विहूणे ऊणे झूणे ना गुरि सबदु सुणाइिआ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइिआ ॥७॥ गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ सेवकु सेवा ताँ करे सच सबदि पतीणा ॥ सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे ॥ गुर सबदि मेला ताँ सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥८॥ कीता किआ सालाहीऐ करि वेखै सोई ॥ ता की कीमति न पवै जे लोचै कोई ॥ कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलई ॥ जै जै कारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलई ॥ हीणउ नीचु करउ बेन्नती साचु न छोडउ भाई ॥ नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥९॥२॥५॥

रागु सूही छंत महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ हरि प्रभु कृपा करे हरि जापहु सुख फल हरि जन पावहु ॥ नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥१॥ सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाई ॥ गुरमति सहजे नामु धिआई ॥ जिन कउ धुरि लिखिआ

तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ अंदरहु दुरमति दूजी खोई सो जनु हरि लिव लागा ॥ जिन कउ कृपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिनु हरि गुण गाइे ॥ सुणि मन भीने सहजि सुभाइे ॥२॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ गुर सबदु वीचारा राम नामु पिआरा जिसु किरपा करे सु पाइे ॥ सहजे गुण गावै दिनु राती किलविख सभि गवाइे ॥ सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥३॥ साजन आइि वुठे घर माही ॥ हरि गुण गावहि तृपति अघाही ॥ हरि गुण गाइि सदा तृपतासी फिरि भूख न लागै आइे ॥ दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि हरि नामु धिआइे ॥ नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा नाही ॥ साजन आइि वुठे घर माही ॥४॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥ भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइिआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइिआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइिआ मेरे हरि भाइिआ जिस दी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइिआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइिआ ॥१॥ हरि भगता की जाति पति है भगत हरि कै नामि समाणे राम ॥ हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण अवगण पछाणे राम ॥ गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै भै भगति मीठी लागी ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी ॥ भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥ नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥२॥ मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न होई राम ॥ हउमै माइिआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम ॥ मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइि परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥ भगति विहूणा सभु

जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ॥ कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नामा सचु सोई ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥३॥ भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ भगति खजाना आपे दीआ कालु कंटकु मारि समाणे राम ॥ कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ॥ सदा अखुटु कदे न निखुटै हरि दीआ सहजि सुभाइआ ॥ हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ नानक आपे बखसि मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ ॥४॥१॥२॥ सूही महला ३ ॥ सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ॥ हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ॥ सचु रखिआ उर धारे दुतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ॥ सचा सतिगुरु सची बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै सभु सोई ॥ नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा होई ॥१॥ साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥ सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु होई राम ॥ साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ जोती जोति मिलाई सचि समाई सचि नाइ परगासा ॥ जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ॥ नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु पाइनि ॥२॥ सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ॥ निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥ सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ॥ नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥३॥ सचे भगत सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥ घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ॥ आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ॥ सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ॥ साचि रते भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ॥ नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई ॥४॥२॥३॥ सूही महला ३ ॥ जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर सोहागु न

होई राम ॥ निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि इेको जाणिआ ॥ धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइिआ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिऐ सुखु होई ॥१॥ सतिगुरु सेवि धन बालड़ीइे हरि वरु पावहि सोई राम ॥ सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि इेको जाणिआ ॥ गुरमुखि प्रभु रावे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥२॥ गुर की कार करे धन बालड़ीइे हरि वरु देइि मिलाइे राम ॥ हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाइे राम ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइे सचि समाइे सचु वरतै सभ थाई ॥ सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइिआ कंठि लाइे ॥ नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाइे ॥३॥ सा धन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइिआ ॥ सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु सीगारु बणाइिआ ॥ कामणि निरमल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ नानक आपि मिलाई करतै नामु नवै निधि पाई ॥४॥३॥४॥ सूही महला ३ ॥ हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाइे राम ॥ अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाइे राम ॥ अनहद सबद वजाइे हरि जीउ घरि आइे हरि गुण गावहु नारी ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै सा धन कंत पिआरी ॥ गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाइे ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आइे ॥१॥ भगता मनि आन्नदु भइिआ हरि नामि रहे लिव लाइे राम ॥ गुरमुखे मनु निरमलु होआ निरमल हरि गुण गाइे राम ॥ निरमल गुण गाइे नामु मंनि वसाइे हरि की अंमृत बाणी ॥ जिन् मनि वसिआ सेई जन

निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाइे ॥ नानक सफल जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाइे ॥२॥ संतसंगति सिउ मेलु भइिआ हरि हरि नामि समाइे राम ॥ गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भइे हरि कै नामि लिव लाइे राम ॥ हरि नामि चितु लाइे गुरि मेलि मिलाइे मनूआ रता हरि नाले ॥ सुखदाता पाइिआ मोहु चुकाइिआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाइे ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुर सेवि समाइे ॥३॥ बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइिआ हरि का महलु न पाइिआ राम ॥ गुरमुखे इिकि मेलि मिलाइिआ तिन के दूख गवाइिआ राम ॥ तिन के दूख गवाइिआ जा हरि मनि भाइिआ सदा गावहि रंगि राते ॥ हरि के भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते ॥ साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई ॥ नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥४॥४॥५॥ सूही महला ३ ॥ जे लोड़हि वरु बालड़ीइे ता गुर चरणी चितु लाइे राम ॥ सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाइे राम ॥ हरि जीउ मरै न जाइे गुर कै सहजि सुभाइे सा धन कंत पिआरी ॥ सचि संजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइिआ ॥ नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइिआ ॥१॥ पिरु पाइिअड़ा बालड़ीइे अनदिनु सहजे माती राम ॥ गुरमती मनि अनदु भइिआ तितु तनि मैलु न राती राम ॥ तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती मेरा प्रभु मेलि मिलाइे ॥ अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाइे ॥ गुरमति पाइिआ सहजि मिलाइिआ अपणे प्रीतम राती ॥ नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रंगि राती ॥२॥ पिरु रावे रंगि रातड़ीइे पिर का महलु तिन पाइिआ राम ॥ सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइिआ राम ॥ विचहु मोहु चुकाइिआ जा हरि भाइिआ हरि कामणि मनि भाणी ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ जुग चारे साचा इेको वरतै बिनु गुर किनै न

पाइआ ॥ नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥३॥ कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरि धारे राम ॥ हरि राखिआ उरि धारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥ प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ॥ नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥४॥५॥६॥ सूही महला ३ ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम ॥ हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम ॥ राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ॥ हरि हरि इेको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे ॥१॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाइे राम ॥ गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाइे राम ॥ मिलु सबदि सुभाइे आपु गवाइे रंग सिउ रलीआ माणे ॥ सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ नानक सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाइे ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाइे राम ॥२॥ घटि घटे सभना विचि इेको इेको राम भतारो राम ॥ इिकना प्रभु दूरि वसै इिकना मनि आधारो राम ॥ इिकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ॥ घटि घटि हरि प्रभु इेको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइिआ ॥ सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम बीचारो ॥ घटि घटे सभना विचि इेको इेको राम भतारो राम ॥३॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइिआ राम ॥ हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइिआ राम ॥ पापी मुकतु कराइे आपु गवाइे निज घरि पाइिआ वासा ॥ बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ हरि हरि अनदु भइिआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाइे ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइे ॥४॥६॥७॥५॥७॥१२॥

रागु सूही महला ४ छंत घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुरु पुरखु मिलाइि अवगण विकणा गुण रवा बलि राम जीउ ॥ हरि हरि नामु धिआइि गुरबाणी नित नित चवा बलि राम जीउ ॥ गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइिआ ॥ हउमै रोगु गइिआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइिआ ॥ काइिआ सेज गुर सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ॥ अनदिनु सुखि माणे नित रलीआ नानक धुरि संजोगो ॥१॥ सतु संतोखु करि भाउ कुड़मु कुड़माई आइिआ बलि राम जीउ ॥ संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलि राम जीउ ॥ बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइिआ ॥ गइिआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइिआ ॥ हउमै पीर गई सुखु पाइिआ आरोगत भइे सरीरा ॥ गुर परसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥२॥ मनमुखि विछुड़ी दूरि महलु न पाइे बलि गई बलि राम जीउ ॥ अंतरि ममता कूरि कूड़ु विहाझे कूड़ि लई बलि राम जीउ ॥ कूड़ु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुर मगु न पाइिआ ॥ उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके खाइिआ ॥ आपे दइिआ करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाइे ॥ जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहजि सुभाइे ॥३॥ आइिआ लगनु गणाइि हिरदै धन एमाहीआ बलि राम जीउ ॥ पंडित पाधे आणि पती बहि वाचाईआ बलि राम जीउ ॥ पती वाचाई मनि वजी वधाई जब साजन सुणे घरि आइे ॥ गुणी गिआनी बहि मता पकाइिआ फेरे ततु दिवाइे ॥ वरु पाइिआ पुरखु अगंमु अगोचरु सद नवतनु बाल सखाई ॥ नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥४॥१॥ सूही महला ४ ॥ हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम दृड़ाइिआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु दृड़हु पाप तजाइिआ बलि राम जीउ ॥ धरमु दृड़हु हरि नामु धिआवहु सिमृति नामु दृड़ाइिआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइिआ ॥ सहज अन्नदु

होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥१॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु इको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु सूही छंत महला ४ घरु २ ॥ गुरमुखि हरि गुण गाए ॥ हिरदै रसन रसाए ॥ हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ अनदिनु भोग भोगे सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाईऐ अनदिनु नामु धिआए ॥ सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु नानक सुंनि समाए ॥१॥ संगति संत मिलाए ॥ हरि सरि निरमलि नाए ॥ निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ॥ दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ नदरि प्रभू सतसंगति पाई निज घरि होआ

वासा ॥ हरि मंगल रसि रसन रसाइे नानक नामु प्रगासा ॥२॥ अंतरि रतनु बीचारे ॥ गुरमुखि नामु पिआरे ॥ हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु अधेरु गवाइिआ ॥ गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर मंदर सोहाइिआ ॥ तनु मनु अरपि सीगार बणाइे हरि प्रभ साचे भाइिआ ॥ जो प्रभु कहै सोई परु कीजै नानक अंकि समाइिआ ॥३॥ हरि प्रभि काजु रचाइिआ ॥ गुरमुखि वीआहणि आइिआ ॥ वीआहणि आइिआ गुरमुखि हरि पाइिआ सा धन कंत पिआरी ॥ संत जना मिलि मंगल गाइे हरि जीउ आपि सवारी ॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आइे अपूरब जंञ बणाई ॥ नानक प्रभु पाइिआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥४॥१॥३॥

रागु सूही छंत महला ४ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आवहो संत जनहु गुण गावह गोविंद केरे राम ॥ गुरमुखि मिलि रहीऐ घरि वाजहि सबद घनेरे राम ॥ सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करता सभ थाई ॥ अहिनिसि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ अनदिनु सहजि रहै रंगि राता राम नामु रिद पूजा ॥ नानक गुरमुखि इेकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा ॥१॥ सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अंतरजामी राम ॥ गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ प्रभु मेरा सुआमी अंतरजामी घटि घटि रविआ सोई ॥ गुरमति सचु पाईऐ सहजि समाईऐ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा आपे लइे मिलाइे ॥ नानक सो प्रभु सबदे जापै अहिनिसि नामु धिआइे ॥२॥ इिहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ अंतरे हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ अंतरि चतुराई थाइि न पाई बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइिआ पछुताइिआ ॥ बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटंबु सुतु भाई ॥ नानक माइिआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥३॥ हउ पूछउ अपना सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीऐ राम ॥ सतिगुर भाइि चलहु जीवतिआ इिव मरीऐ राम ॥ जीवतिआ मरीऐ

भउजलु तरीऐ गुरमुखि नामि समावै ॥ पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥ मति परगासु भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ नानक प्रभु पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥४॥१॥४॥

सूही महला ४ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु संत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी तृसना बुझि गईआसे ॥ हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ धनु धन्नु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥१॥ गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पंथु दसाहा ॥ घरि आवहु चिरी विछुंनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥२॥ मनु दह दिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ नित आसा मनि चितवै मन तृसना भुख लगाइआ ॥ अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥३॥ गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥ मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ वडभागी प्रभ आइ मिलु जनु नानकु खिनु खिनु वारिआ ॥४॥१॥५॥ सूही छंत महला ४ ॥ मारेहिसु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ देह कंचन वे वन्नीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनमुखि मूड़ि सजुतीआ ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे गुर सबदी हउमै छुटीआ ॥१॥ वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ गुरु पाइआ वे संत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुखि सउदिआ ॥२॥ सा धन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजड़ीऐ आई ॥ मेरा ठाकुरु

अगम दइिआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥३॥ इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ मै मनि तनि प्रेम बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई ॥ गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥४॥२॥६॥५॥७॥६॥१८॥

राग सूही छंत महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि बावरे तू काइे देखि भुलाना ॥ सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइिए कुसंभ रंगाना ॥ कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ झूठ संगि लपटाना ॥ नानक दीन सरणि किरपा निधि राखु लाज भगताना ॥१॥ सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ सुणि बावरे जो आइिआ तिसु जाणा ॥ निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी संतसंगि मिलि रहीऐ ॥ हरि पाईऐ भागी सुणि बैरागी चरण प्रभू गहि रहीऐ ॥ इेहु मनु दीजै संक न कीजै गुरमुखि तजि बहु माणा ॥ नानक दीन भगत भव तारण तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥२॥ सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥ निहचलु हभ जाणा मिथिआ माणा संत प्रभू होइि दासा ॥ जीवत मरीऐ भउजलु तरीऐ जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ गुरु सेवीजै अंमृतु पीजै जिसु लावहि सहजि धिआनो ॥ नानकु सरणि पइिआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥३॥ सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइिआ ॥ सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइिआ ॥ जिनि प्रभु धिआइिआ तिनि सुखु पाइिआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥ थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ ॥ एहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु वेचाइिआ ॥ नानक दीन सरणि सुख सागर राखु लाज अपनाइिआ ॥४॥१॥ सूही महला ५ ॥ हरि चरण कमल

की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ हरि अंमृति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस कै बलि राम जीउ ॥ बाबुलु मेरा वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ जिसु सिमरत दुखु कोई न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥१॥ हरि आपे लइे मिलाइि किउ वेछोड़ा थीवई बलि राम जीउ ॥ जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ संत जना मिलि मंगलु गाइिआ दिनु रैनि आस तुम्हारी ॥ सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥२॥ संम्लिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइिआ बलि राम जीउ ॥ सतिगुरु मिलिआ दइिआलु गुण अबिनासी गाइिआ बलि राम जीउ ॥ गुण गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ सुभ दिवस आइे गहि कंठि लाइे मिले अंतरजामीआ ॥ सतु संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे ॥३॥ उपजिआ ततु गिआनु साहुरै पेईऐ इकु हरि बलि राम जीउ ॥ ब्रहमै ब्रहमु मिलिआ कोइि न साकै भिन्न करि बलि राम जीउ ॥ बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ बिसमादु नदरी आइिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइिआ ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइिआ कीमति कहणु न जाइे ॥ जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआइे ॥४॥२॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गुण गावण लागे ॥ हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ ॥ गुर चरण लागे भरम भागे काज सगल सवारिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वडभागै ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥१॥ अनहत सबदु सुहावा ॥ सचु मंगलु हरि जसु गावा ॥ गुण गाइि हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ मनु तन्नु निरमलु

देखि दरसनु नामु प्रभ का मुखि भणा ॥ होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ भावा ॥ बिनवंति नानक दइिआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥२॥ गुर मिलि सागरु तरिआ ॥ हरि चरण जपत निसतरिआ ॥ हरि चरण धिआइे सभि फल पाइे मिटे आवण जाणा ॥ भाइि भगति सुभाइि हरि जपि आपणे प्रभ भावा ॥ जपि इेकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ बिनवंति नानक गुरि भरमु खोइिआ जत देखा तत सोई ॥३॥ पतित पावन हरि नामा ॥ पूरन संत जना के कामा ॥ गुरु संतु पाइिआ प्रभु धिआइिआ सगल इिछा पुंनीआ ॥ हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥ बिनवंति नानक सतिगुरि दृड़ाइिआ सदा भजु जगदीसरै ॥४॥१॥३॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥ सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरंमति साँई ॥ किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी ॥ सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥१॥ तुम्ह गउहर अति गहिर गंभीरा तुम पिर हम बहुरीआ राम ॥ तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥ हउ किछु नाही इेको तूहै आपे आपि सुजाना ॥ अंमृत दृसटि निमख प्रभ जीवा सरब रंग रस माना ॥ चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ नानक ठाकुरु सरब समाणा आपन भावन करीआ ॥२॥ तुझु ऊपरि मेरा है माणा तूहै मेरा ताणा राम ॥ सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइिहि जाणा राम ॥ सोई जाणै सोई पछाणै जा कउ नदरि सिरंदे ॥ मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइिआ फंदे ॥ ठाकुर भाणी सा गुणवंती तिन ही सभ रंग माणा ॥ नानक की धर तूहै ठाकुर तू नानक का माणा ॥३॥ हउ वारी वंञा घोली वंञा तू परबतु मेरा एल्हा राम ॥ हउ बलि जाई लख लख लख

बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोल्हा राम ॥ मिटे अंधारे तजे बिकारे ठाकुर सिउ मनु माना ॥ प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ भई अमोली भारा तोली मुकति जुगति दरु खोल्हा ॥ कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा एल्हा ॥४॥१॥४॥ सूही महला ५ ॥ साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ मात पिता भाई सुत बंधप जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का दीआ सरब गुणा भरपूरे ॥ अंतरजामी सो प्रभु मेरा सरब रहिआ भरपूरे ॥ ता की सरणि सरब सुख पाए होए सरब कलिआणा ॥ सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥१॥ ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूड़ी नित नापै राम ॥ हरि धूड़ी नाईऐ प्रभू धिआईऐ बाहुड़ि जोनि न आईऐ ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ हरि गुण नित गाए नामु धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिसु परतापै ॥२॥ हरि हरे हरि गुण निधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥ संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ परम पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन किरपा धारी ॥ सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति समाइआ ॥ नानक नामु निरंजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥३॥ गाउ मंगलो नित हरि जनहु पुंनी इछ सबाई राम ॥ रंगि रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥ सांति सहज आनंद घनेरे गुर चरणी मनु लाए ॥ पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थान थनंतरि साई ॥ कहु नानक कारज सगले पूरे गुर चरणी मनु लाई ॥४॥२॥५॥ सूही महला ५ ॥ करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम ॥ लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ भरम मोह बिकार नाठे प्रभु

नेर हू ते नेरा ॥ नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥१॥ कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ सुणि सुणि इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम ॥ कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥ हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥ कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥२॥ करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम ॥ भव सागर नाव हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम ॥ भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ महा बिकार गइे सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ मन बाँछत फल पाइे सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि ॥३॥ इेहो वरु इेहा वडिआई इहु धनु होइि वडभागा राम ॥ इेहो रंगु इेहो रस भोगा हरि चरणी मनु लागा राम ॥ मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन दइिआला ॥ मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा कीनी चरण कमल मनु लागा ॥४॥ ३॥६॥ सूही महला ५ ॥ हरि जपे हरि मंदरु साजिआ संत भगत गुण गावहि राम ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ हरि गुण गाइि परम पदु पाइिआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी कथी अकथ कहाणी ॥ भला संजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥ जन नानक प्रभ भइे दइिआला सरब कला बणि आई ॥१॥ आन्नदा वजहि नित वाजे पारब्रहमु मनि वूठा राम ॥ गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥ अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥ सरब सुखा तिस ही बणि आइे जो प्रभि अपना करिआ ॥ घर महि नव निधि भरे भंडारा राम नामि रंगु लागा ॥ नानक जन प्रभु कदे न विसरै पूरन जा के भागा ॥२॥ छाइिआ प्रभि छत्रपति कीनी सगली तपति बिनासी राम ॥ दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइिआ रासी राम ॥ हरि

प्रभि फुरमाइिआ मिटी बलाइिआ साचु धरमु पुन्नु फलिआ ॥ सो प्रभु अपुना सदा धिआईऐ सोवत बैसत खलिआ ॥ गुण निधान सुख सागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई ॥ जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥३॥ मेरा घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइिआ राम ॥ मेरा मनु सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हरि गाइिआ राम ॥ गुण गाइि प्रभू धिआइि साचा सगल इिछा पाईआ ॥ गुर चरण लागे सदा जागे मनि वजीआ वाधाईआ ॥ करी नदरि सुआमी सुखह गामी हलतु पलतु सवारिआ ॥ बिनवंति नानक नित नामु जपीऐ जीउ पिंडु जिनि धारिआ ॥४॥४॥७॥

सूही महला ५ ॥ भै सागरो भै सागरु तरिआ हरि हरि नामु धिआइे राम ॥ बोहिथड़ा हरि चरण अराधे मिलि सतिगुर पारि लघाइे राम ॥ गुर सबदी तरीऐ बहुड़ि न मरीऐ चूकै आवण जाणा ॥ जो किछु करै सोई भल मानउ ता मनु सहजि समाणा ॥ दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुख सागर सरणी पाइे ॥ हरि सिमरि सिमरि नानक रंगि राता मन की चिंत मिटाइे ॥१॥ संत जना हरि मंत्रु दृड़ाइिआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ आपनड़ा मनु आगै धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ करि अपुनी दासी मिटी उदासी हरि मंदरि थिति पाई ॥ अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा विछुड़ि कबहू न जाई ॥ सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण चीन्हे ॥ कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रसि भीने ॥२॥ अनद बिनोद भइे नित सखीइे मंगल सदा हमारै राम ॥ आपनड़ै प्रभि आपि सीगारी सोभावंती नारे राम ॥ सहज सुभाइि भइे किरपाला गुण अवगण न बीचारिआ ॥ कंठि लगाइि लीइे जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥ मान मोह मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ कहु नानक भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥३॥ गुण गोपाल गावहु नित सखीहो सगल मनोरथ पाइे राम ॥ सफल जनमु होआ मिलि साधू इेकंकारु धिआइे राम ॥ जपि इेक प्रभू अनेक रविआ सरब मंडलि छाइिआ ॥ ब्रहमो पसारा ब्रहमु पसरिआ सभु ब्रहमु दृसटी आइिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन तिसु बिना नही

जाइे ॥ पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लइे मिलाइे ॥४॥५॥८॥ सूही महला ५ ॥ अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइिआ राम ॥ मन इिछे सेई फल पाइे करतै आपि वसाइिआ राम ॥ करतै आपि वसाइिआ सरब सुख पाइिआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइिआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइिआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि इेहु थानु सुहाइिआ ॥१॥ घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ संत भगत हरि नामु अराधहि कटीअै जम की फासी राम ॥ काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआइे ॥ सगल समग्री पूरन होई मन इिछे फल पाइे ॥ संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥२॥ दाति खसम की पूरी होई नित नित चड़ै सवाई राम ॥ पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा सो प्रभु भइिआ दइिआला ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाइे प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ दह दिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥३॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीअै राम ॥ अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीअै राम ॥ अनहद झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न पाईअै जोनीअै ॥ नानक गुरु परमेसरु पाइिआ जिसु प्रसादि इिछ पुनीअै ॥४॥६॥९॥ सूही महला ५ ॥ संता के कारजि आपि खलोइिआ हरि कंमु करावणि आइिआ राम ॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंमृत जलु छाइिआ राम ॥ अंमृत जलु छाइिआ पूरन साजु कराइिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जै जै कारु भइिआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइिआ ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइिआ ॥१॥ नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि

न आवै काई राम ॥ खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम ॥ दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥ साँति सहज आनन्द घनेरे बिनसी भूख सबाई ॥ नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥२॥ जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे साधसंगति संगि बनी ॥ जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ अठसठि तीरथ पुन्न किरिआ महा निरमल चारा ॥ पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥३॥ गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम ॥ संता की बेन्नती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम ॥ नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो ॥ गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अंमृत भीजै ॥ बिनवंति नानक इछ पुन्नी पेखि दरसनु जीजै ॥४॥७॥१०॥

राgु सूही महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥ हउ संमलि थकी जी एहु कदे न बोलै कउरा ॥ कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥ पतित पावनु हरि बिरदु सदाइे इकु तिलु नही भन्नै घाले ॥ घट घट वासी सरब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥ नानक दासु सदा सरणागति हरि अंमृत सजणु मेरा ॥१॥ हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ मेरा सुंदरु सुआमी जी हउ चरन कमल पग छारा ॥ प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ आदि अंति मधि प्रभु रविआ जलि थलि महीअलि सोई ॥ चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ नानक सरणि पूरन परमेसुर तेरा अंतु न पारावारा ॥२॥ हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ मिलि साधू दीना ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ सहज सूख

आन्नद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ सभ कै मधि सभ हू ते बाहरि राग दोख ते निआरो ॥ नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥३॥ मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइआ ॥ सभि अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाइे ॥ धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाइे ॥ स्रुति सिमृति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइिआ ॥ नानक सरनि कृपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइिआ ॥४॥१॥११॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ वार सूही की सलोका नालि महला ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइि ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइि ॥ मिठा करि कै खाइिआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइि विजोगु ॥ गुरमुखि होवै सु पलटिआ हरि राती साजि सीगारि ॥ सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उर धारि ॥ आगिआकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि ॥ नानक पिरु पाइिआ हरि साचा सदा सोहागणि नारि ॥१॥ मः ३ ॥ सूहवीइे निमाणीइे सो सहु सदा सम्हालि ॥ नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे तखतु रचाइिअनु आकास पताला ॥ हुकमे धरती साजीअनु सची धरम साला ॥ आपि उपाइि खपाइिदा सचे दीन दइिआला ॥ सभना रिजकु संबाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥ आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥१॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहब ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ ॥ सतिगुरु अपणा मनाइि लै रूपु चड़ी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ ऐसा सीगारु बणाइि तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ ॥ नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइि ॥१॥ मः ३ ॥ लोका वे हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइिआ जिनी गुर की सिख सुणी ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ इिन बिधि कंत मिली ॥२॥

पउड़ी ॥ हुकमी सृसटि साजीअनु बहु भिति संसारा ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ सचि रते से निरमले हउमै तजि विकारा ॥ जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा ॥२॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहवीइे सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति दूजा भाउ ॥ खिन महि झूठु सभु बिनसि जाइि जिउ टिकै न बिरख की छाउ ॥ गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ ॥ उलटी सकति सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अंमृत नाउ ॥ नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिअै हरि गुण गाउ ॥१॥ मः ३ ॥ सूहा रंगु विकारु है कंतु न पाइिआ जाइि ॥ इिसु लहदे बिलम न होवई रंड बैठी दूजै भाइि ॥ मुंध इिआणी दुंमणी सूहै वेसि लोभाइि ॥ सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइि सीगारु बणाइि ॥ नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे आपि उपाइिअनु आपि कीमति पाई ॥ तिस दा अंतु न जापई गुर सबदि बुझाई ॥ माइिआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई ॥ मनमुख ठउर न पाइिन्ी फिरि आवै जाई ॥ जो तिसु भावै सो थीअै सभ चलै रजाई ॥३॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहै वेसि कामणि कुलखणी जो प्रभ छोडि पर पुरख धरे पिआरु ॥ एसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥ सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ पेईअै साहुरै बहु सोभा पाइे तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ एह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥ नानक गुरमुखि सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥१॥ मः १ ॥ सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रहम बीचारु ॥ नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥२॥ पउड़ी ॥ इिहु जगु आपि उपाइिएनु करि चोज विडानु ॥ पंच धातु विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ आवै जाइि भवाईअै मनमुखु अगिआनु ॥ इिकना आपि बुझाइिएनु गुरमुखि हरि गिआनु ॥ भगति खजाना बखसिएनु हरि नामु निधानु ॥४॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहवीइे

सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ॥ सूहै वेसि पिरु किनै न पाइिए मनमुखि दझि मुई गावारि ॥ सतिगुरि मिलिअै सूहा वेसु गइिआ हउमै विचहु मारि ॥ मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइि करे सीगारु ॥ नानक करमी महलु पाइिआ पिरु राखिआ उर धारि ॥१॥ मः ३ ॥ मुंधे सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु ॥ आवण जाणा वीसरै गुर सबदी वीचारु ॥ मुंध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ नानक सा धन रावीअै रावे रावणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ मोहु कूड़ु कुटंबु है मनमुखु मुगधु रता ॥ हउमै मेरा करि मुइे किछु साथि न लिता ॥ सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ जेहा धुरि लिखि पाइिएनु से करम कमिता ॥५॥ सलोकु मः ३ ॥ सतीआ इेहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलम्नि् ॥ नानक सतीआ जाणीअनि् जि बिरहे चोट मरंनि् ॥१॥ मः ३ ॥ भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रह्मनि् ॥ सेवनि साई आपणा नित उठि संम्ालम्नि् ॥२॥ मः ३ ॥ कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥ नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ तुधु दुखु सुखु नालि उपाइिआ लेखु करतै लिखिआ ॥ नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥ करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ सेवक भाइि से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥६॥ सलोकु मः २ ॥ जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥१॥ मः २ ॥ राति कारणि धनु संचीअै भलके चलणु होइि ॥ नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइि ॥२॥ मः २ ॥ बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥ सेती खुसी सवारीअै नानक कारजु सारु ॥३॥ मः २ ॥ मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥४॥ पउड़ी ॥ करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥ आपे सृसटि उपाईअनु

आपे फुनि गोई ॥ जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ सतिगुरि इेकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥७॥ सलोक महला २ ॥ जिना भउ तिन् नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥ नानक इेहु पटंतरा तितु दीबाणि गइिआह ॥१॥ मः २ ॥ तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ जीवते कउ जीवता मिलै मूइे कउ मूआ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु धिआइिनि से सचे गुर सबदि वीचारी ॥ हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरि धारी ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लगि पइे गावारी ॥ जिन्हि कीइे तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ जिसु बुझाइिहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलाँ कंतु मनाइि ॥ मतु सेजै कंतु न आवई इेवै बिरथा जाइि ॥ कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइि ॥ तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइि ॥१॥ मः ३ ॥ काजल फूल तंबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ सेजै कंतु न आइिए इेवै भइिआ विकारु ॥२॥ मः ३ ॥ धन पिरु इेहि न आखीअनि बहनि इिकठे होइि ॥ इेक जोति दुइि मूरती धन पिरु कहीऐ सोइि ॥३॥ पउड़ी ॥ भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइि रंगु सवारि ॥ तनु मनु रता रंग सिउ हउमै तृसना मारि ॥ मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ कृसन मुरारि ॥ भउ भाउ सभु तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥९॥ सलोक मः १ ॥ वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीइे ॥ सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ गुरमुखि सेवा थाइि पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥ नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥१॥ महला १ ॥ उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़ंनि ॥ तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइि मरंनि ॥

२॥ पउड़ी ॥ हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गंभीरु ॥ मनि तनि हिरदै रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥१०॥ सलोक मः १ ॥ नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अंबड़ै तितु निवंधै तालि ॥१॥ मः १ ॥ नानक मन के कंम फिटिआ गणत न आवही ॥ किती लहा सह्मम जा बखसे ता धका नही ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ गुर परसादी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु ॥ पूरा थाटु बणाइआ रंगु गुरमति माणु ॥ अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु ॥११॥ सलोक मः १ ॥ नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि ॥१॥ मः १ ॥ नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥ इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ दह दिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥ नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ ॥ धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥१२॥ सलोक मः १ ॥ दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ जेते जीअ तेते वणजारे ॥ खुल्हे हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहारु ॥ धरमु दलालु पाइे नीसाणु ॥ नानक नामु लाहा परवाणु ॥ घरि आइे वजी वाधाई ॥ सच नाम की मिली वडिआई ॥१॥ मः १ ॥ राती होवनि कालीआ सुपेदा से वन्न ॥ दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वन्न ॥ अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥ नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥२॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ इकि दूजै भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ इहु मानस जनमु दुलम्भु सा मनमुख संतापे ॥ जिसु आपि बुझाइे सो बुझसी जिसु सतिगुरु थापे ॥ सभु जगु खेलु

रचाइएनु सभ वरतै आपे ॥१३॥ सलोक मः १ ॥ चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥ वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥ सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥ गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥ नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा तणीऐ ताणु ॥ कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥१॥ मः १ ॥ बाँगा बुरगू सिंडीआ नाले मिली कलाण ॥ इकि दाते इकि मंगते नामु तेरा परवाणु ॥ नानक जिन्ही सुणि कै मंनिआ हउ तिना विटहु कुरबाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु सभु कूड़ु है कूड़ो होइ गइआ ॥ हउमै झगड़ा पाइएनु झगड़ै जगु मुइआ ॥ गुरमुखि झगड़ु चुकाइएनु इको रवि रहिआ ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ॥ जोति समाणी जोति विचि हरि नामि समइआ ॥१४॥ सलोक मः १ ॥ सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं संम्रथु दातारु ॥ हउमै गरबु निवारीऐ कामु क्रोधु अहंकारु ॥ लबु लोभु परजालीऐ नामु मिलै आधारु ॥ अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहूं न होइ ॥ नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुखु होइ ॥१॥ मः १ ॥ इको कंतु सबाईआ जिती दरि खड़ीआह ॥ नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥२॥ मः १ ॥ सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ मै तनि अवगण इेतड़े खसमु न फेरे चितु ॥३॥ मः १ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥ सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥४॥ पउड़ी ॥ दरि मंगतु जाचै दानु हरि दीजै कृपा करि ॥ गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ॥ अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ॥ हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि ॥१५॥ सलोक मः १ ॥ जिनी न पाइए प्रेम रसु कंत न पाइए साउ ॥ सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥१॥ मः १ ॥ सउ एलाम्हे दिनै के राती मिलन्हि सहंस ॥ सिफति सलाहणु छडि कै करंगी लगा हंसु ॥ फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥ नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥२॥ पउड़ी ॥ ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ गुरमुखि सेवि सलाहि

सचा उर धारिआ ॥ घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ तू आपि सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥१६॥ सलोक मः १ ॥ दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ बेद पाठ मति पापा खाइ ॥ उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ बेद पाठ संसार की कार ॥ पड़ि पड़ि पंडित करहि बीचार ॥ बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥१॥ मः १ ॥ सबदै सादु न आइए नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाइे ॥ हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाइे ॥ सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाइे ॥ मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ गुर पुरखि मिलाइे ॥ मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआइे ॥१७॥ सलोक मः १ ॥ काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ इेनी फुली रउ करे अवर कि चुणीअहि डाल ॥१॥ महला २ ॥ नानक तिना बसंतु है जिन् घरि वसिआ कंतु ॥ जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलम्त ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ अनदिनु सेवी गुण रवा मनु सचै रचनी ॥ प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ सतिगुर चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ॥ जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥१८॥ सलोक मः १ ॥ पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिए सोइ ॥ जितु मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु कोइ ॥१॥ मः २ ॥ पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥२॥ मः २ ॥ मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥३॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु कार कमावै ॥ दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ॥ नामि रतिआ नामु पाईऐ नामे गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ॥ सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥१९॥ सलोक मः २ ॥ किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी

इकु तू ॥ किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥१॥ मः २ ॥ जाँ सुखु ता सहु राविए दुखि भी संम्ालिएइ ॥ नानकु कहै सिआणीइे इउ कंत मिलावा होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ किआ सालाही किरम जंतु वडी तेरी वडिआई ॥ तू अगम दइआलु अगंमु है आपि लैहि मिलाई ॥ मै तुझ बिनु बेली को नही तू अंति सखाई ॥ जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई ॥ नानक वेपरवाहु है तिसु तिलु न तमाई ॥२०॥१॥

राागु सूही बाणी स्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ कबीर के ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ राम को नामु न कबहू लीना ॥१॥ राम न जपहु कवन मति लागे ॥ मरि जइबे कउ किआ करहु अभागे ॥१॥ रहाउ ॥ दुख सुख करि कै कुटंबु जीवाइआ ॥ मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥२॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कहि कबीर आगे ते न संम्ारा ॥३॥१॥ सूही कबीर जी ॥ थरहर कंपै बाला जीउ ॥ ना जानउ किआ करसी पीउ ॥१॥ रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥ भवर गइे बग बैठे आइ ॥१॥ रहाउ ॥ काचै करवै रहै न पानी ॥ हंसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥२॥ कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा ॥ किउ रलीआ मानै बाझु भतारा ॥३॥ काग उडावत भुजा पिरानी ॥ कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥४॥२॥ सूही कबीर जीउ ॥ अमलु सिरानो लेखा देना ॥ आइे कठिन दूत जम लेना ॥ किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ ॥१॥ चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ करउ अरदासि गाव किछु बाकी ॥ लेउ निबेरि आजु की राती ॥ किछु भी खरचु तुम्ारा सारउ ॥ सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥२॥ साधसंगि जा कउ हरि रंगु लागा ॥ धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जनमु पदारथु जीति अमोले ॥३॥ जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसमु बिसारि माटी

संगि रूले ॥४॥३॥ सूही कबीर जीउ ललित ॥ थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥ जरा हाक दी सभ मति थाकी इेक न थाकसि माइआ ॥१॥ बावरे तै गिआन बीचारु न पाइआ ॥ बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ जे घटु जाइि त भाउ न जासी हरि के चरन निवासा ॥२॥ जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनु जिणि ढाले पासा ॥३॥ जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछू न नासा ॥ कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि ढालि जु जानहि पासा ॥४॥४॥ सूही ललित कबीर जीउ ॥ इेकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥ जिमी नाही मै किसी की बोई अैसा देनु दुखाला ॥१॥ हरि के लोगा मो कउ नीति डसै पटवारी ॥ ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही ॥ डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही ॥२॥ बहतरि घर इकु पुरखु समाइिआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ धरम राइि का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥३॥ संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है इेको ॥ कहु कबीर मै सो गुरु पाइिआ जा का नाउ बिबेको ॥४॥५॥

राग़ु सूही बाणी स्री रविदास जीउ की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ तनु मनु देइि न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ दुखी दुहागनि दुइि पख हीनी ॥ जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुर सलात का पंथु दुहेला ॥ संगि न साथी गवनु इकेला ॥२॥ दुखीआ दरदवंदु दरि आइिआ ॥ बहुतु पिआस जबाबु न पाइिआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३॥१॥ सूही ॥ जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ संगु चलत है हम भी चलना ॥ दूरि गवनु सिर ऊपरि

मरना ॥१॥ किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥ जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ साँझ परी दह दिस अंधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥३॥२॥ सूही ॥ ऊचे मंदर साल रसोई ॥ इेक घरी फुनि रहनु न होई ॥१॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ जलि गइिए घासु रलि गइिए माटी ॥१॥ रहाउ ॥ भाई बंध कुटंब सहेरा ॥ एइि भी लागे काढु सवेरा ॥२॥ घर की नारि उरहि तन लागी ॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥३॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ हम तउ इेक रामु कहि छूटिआ ॥४॥३॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥ तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ ॥ तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥१॥ तै साहिब की मै सार न जानी ॥ जोबनु खोइि पाछै पछुतानी ॥१॥ रहाउ ॥ काली कोइिल तू कित गुन काली ॥ अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ पिरहि बिहून कतहि सुखु पाइे ॥ जा होइि कृपालु ता प्रभू मिलाइे ॥२॥ विधण खूही मुंध इिकेली ॥ ना को साथी ना को बेली ॥ करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥३॥ वाट हमारी खरी उडीणी ॥ खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥ उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥४॥१॥ सूही ललित ॥ बेड़ा बंधि न सकिए बंधन की वेला ॥ भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥१॥ हथु न लाइि कसुंभड़ै जलि जासी ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ इिक आपीनै् पतली सह केरे बोला ॥ दुधा थणी न आवई फिरि होइि न मेला ॥२॥ कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाइेसी ॥ हंसु चलसी डुंमणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥३॥२॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥ बिलावलु महला १ ॥ मनु मंदरु तनु वेस कलन्दरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ॥१॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥ जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥ बिलावलु महला १ ॥ आपे सबदु आपे नीसानु ॥ आपे सुरता आपे जानु ॥ आपे करि करि वेखै ताणु ॥ तू दाता

नामु परवाणु ॥१॥ ऐसा नामु निरंजन देउ ॥ हउ जाचिकु तू अलख अभेउ ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ भूंडी कामणि कामणिआरि ॥ राजु रूपु झूठा दिन चारि ॥ नामु मिलै चानणु अंधिआरि ॥२॥ चखि छोडी सहसा नही कोइ ॥ बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ इेके कउ नाही भउ कोइ ॥ करता करे करावै सोइ ॥३॥ सबदि मुइे मनु मन ते मारिआ ॥ ठाकि रहे मनु साचै धारिआ ॥ अवरु न सूझै गुर कउ वारिआ ॥ नानक नामि रते निसतारिआ ॥४॥३॥ बिलावलु महला १ ॥ गुर बचनी मनु सहज धिआने ॥ हरि कै रंगि रता मनु माने ॥ मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ गुर सबदि पछाने ॥१॥ बिनु दरसन कैसे जीवउ मेरी माई ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ दुखाली ॥ सासि गिरासि जपउ अपुने हरि भाली ॥ सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ अब जाने गुरमुखि हरि नाली ॥२॥ अकथ कथा कहीऐ गुर भाइि ॥ प्रभु अगम अगोचरु देइि दिखाइि ॥ बिनु गुर करणी किआ कार कमाइि ॥ हउमै मेटि चलै गुर सबदि समाइि ॥३॥ मनमुखु विछुड़ै खोटी रासि ॥ गुरमुखि नामि मिलै साबासि ॥ हरि किरपा धारी दासनि दास ॥ जन नानक हरि नाम धनु रासि ॥४॥४॥

बिलावलु महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ध्रिगु ध्रिगु खाइिआ ध्रिगु ध्रिगु सोइिआ ध्रिगु ध्रिगु कापड़ु अंगि चड़ाइिआ ॥ ध्रिगु सरीरु कुटंब सहित सिउ जितु हुणि खसमु न पाइिआ ॥ पउड़ी छुड़की फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइिआ ॥१॥ दूजा भाउ न देई लिव लागणि जिनि हरि के चरण विसारे ॥ जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ तू दइिआलु दइिआपति दाता किआ इेहि जंत विचारे ॥ मुकत बंध सभि तुझ ते होइे ऐसा आखि वखाणे ॥ गुरमुखि होवै सो मुकतु कहीऐ मनमुख बंध विचारे ॥२॥ सो जनु मुकतु जिसु इेक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ तिन की गहण गति कही न जाई सचै आपि

सवारे ॥ भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥३॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु पाइे गुर का सबदु समाले ॥ हरि जन माइिआ माहि निसतारे ॥ नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥४॥१॥ बिलावलु महला ३ ॥ अतुलु किउ तोलिआ जाइि ॥ दूजा होइि त सोझी पाइि ॥ तिस ते दूजा नाही कोइि ॥ तिस दी कीमति किकू होइि ॥१॥ गुर परसादि वसै मनि आइि ॥ ता को जाणै दुबिधा जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ आपि सराफु कसवटी लाइे ॥ आपे परखे आपि चलाइे ॥ आपे तोले पूरा होइि ॥ आपे जाणै इेको सोइि ॥२॥ माइिआ का रूपु सभु तिस ते होइि ॥ जिस नो मेले सु निरमलु होइि ॥ जिस नो लाइे लगै तिसु आइि ॥ सभु सचु दिखाले ता सचि समाइि ॥३॥ आपे लिव धातु है आपे ॥ आपि बुझाइे आपे जापे ॥ आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ नानक आखि सुणाइे आपे ॥४॥२॥ बिलावलु महला ३ ॥ साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ ऐसा इिकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि इेकु समाना ॥१॥ सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाइे अनदिनु लागै सहज धिआना ॥१॥ रहाउ ॥ किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥ जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥२॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ जिउ आपि चलाइे तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥३॥ कहत नानकु तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामाँ ॥ इिकना घर महि दे वडिआई इिकि भरमि भवहि अभिमाना ॥४॥३॥ बिलावलु महला ३ ॥ पूरा थाटु बणाइिआ पूरै वेखहु इेक समाना ॥ इिसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥१॥ सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ इिह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥१॥ रहाउ ॥ चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुखा नो इेकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ एना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा ॥२॥ जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ गुरमुखि जिनी धिआइिआ हरि हरि

जगि ते पूरे परवाना ॥३॥ कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाइे चूकै मनि अभिमाना ॥ कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥४॥४॥ बिलावलु महला ३ ॥ गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाइे ॥ तितु घरि बिलावलु गुर सबदि सुहाइे ॥ मंगलु नारी गावहि आइे ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पाइे ॥१॥ हउ तिन बलिहारै जिन्ह हरि मंनि वसाइे ॥ हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाइे ॥१॥ रहाउ ॥ सदा रंगि राते तेरै चाइे ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइे ॥ आपे सोभा सद ही पाइे ॥ गुरमुखि मेलै मेलि मिलाइे ॥२॥ गुरमुखि राते सबदि रंगाइे ॥ निज घरि वासा हरि गुण गाइे ॥ रंगि चलूलै हरि रसि भाइे ॥ इहु रंगु कदे न उतरै साचि समाइे ॥३॥ अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ जो सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा ॥ नानक नामु दृड़ाइे पूरा गुरु मेरा ॥४॥५॥ बिलावलु महला ३ ॥ पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ हउमै माइिआ सबदि जलाई ॥ दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥१॥ जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ मन की परतीति मन ते पाई ॥ पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥ बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥२॥ घर ही महि सभि कोट निधान ॥ सतिगुरि दिखाइे गइिआ अभिमानु ॥ सद ही लागा सहजि धिआन ॥ अनदिनु गावै इेको नाम ॥३॥ इिसु जुग महि वडिआई पाई ॥ पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ सदा सुखदाता कीमति नही पाई ॥४॥ पूरै भागि गुरु पूरा पाइिआ ॥ अंतरि नामु निधानु दिखाइिआ ॥ गुर का सबदु अति मीठा लाइिआ ॥ नानक तृसन बुझी मनि तनि सुखु पाइिआ ॥५॥६॥४॥६॥१०॥

रागु बिलावलु महला ४ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ जिउ नटूआ तंतु वजाइे तंती तिउ वाजहि जंत

जना ॥१॥ जपि मन राम नामु रसना ॥ मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रसिए हरि राखिए हरि सरना ॥२॥ कवन कवन की गति मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवंना ॥ एहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधरिए परिए सरना ॥३॥ प्रभ दीन दइआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास दासंना ॥४॥१॥ बिलावलु महला ४ ॥ हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥ करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥१॥ मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ गुरमति हरि रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीऐ वडे करंमा ॥२॥ नामहीन ध्रिगु जीवते तिन वड दूख सहमा ॥ एइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूड़ अकरमा ॥३॥ हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ जन नानक सफलु जनमा ॥४॥२॥ बिलावलु महला ४ ॥ हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु भरा ॥ तुम्री सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥१॥ मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ जन ऊपरि किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥१॥ रहाउ ॥ हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ तुम्रै संगि लगे से उधरे जिउ संगि कासट लोह तरा ॥२॥ साकत नर होछी मति मधिम जिन्ह हरि हरि सेव न करा ॥ ते नर भागहीन दुहचारी एइ जनमि मुए फिरि मरा ॥३॥ जिन कउ तुम्ह हरि मेलहु सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा ॥ दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥४॥३॥ बिलावलु महला ४ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥१॥ मेरे मन हरि गुण हरि उचरहु ॥ मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि

संगति पारि परहु ॥१॥ रहाउ ॥ काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अंमृतु हरि रसु पीअहु ॥२॥ हरि हरि नामु अंमृतु हरि मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु ॥ गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥३॥ राम नामु रसु राम रसाइणु हरि सेवहु संत जनहु ॥ चारि पदारथ चारे पाइे गुरमति नानक हरि भजहु ॥४॥४॥ बिलावलु महला ४ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ गुरु सतिगुरु पारब्रहमु करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥१॥ हरि जन देखहु सतिगुरु नैनी ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमति बैनी ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा होवै जि बात होवैनी ॥ अपना भला सभु कोई बाछै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी ॥२॥ मन की मति तिआगहु हरि जन इेहा बात कठैनी ॥ अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥३॥ मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥ जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥४॥५॥ बिलावलु महला ४ ॥ अनद मूलु धिआइिए पुरखोतमु अनदिनु अनद अनन्दे ॥ धरम राइि की काणि चुकाई सभि चूके जम के छंदे ॥१॥ जपि मन हरि हरि नामु गोबिंदे ॥ वडभागी गुरु सतिगुरु पाइिआ गुण गाइे परमान्नदे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत मूड़ माइिआ के बधिक विचि माइिआ फिरहि फिरंदे ॥ तृसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवंदे ॥२॥ गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करंदे ॥ जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइिआ सभि तूटे माइिआ फंदे ॥३॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रह्मदे ॥४॥६॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥ बोलहु भईआ राम नामु पतित पावनो ॥ हरि संत भगत

तारनो ॥ हरि भरिपुरे रहिआ ॥ जलि थले राम नामु ॥ नित गाईऐ हरि दूख बिसारनो ॥१॥ रहाउ ॥ हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ गुरु भेटिआ है मुकति दाता ॥ हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ मिलि संगती गुन गावनो ॥१॥ मन राम नाम करि आसा ॥ भाउ दूजा बिनसि बिनासा ॥ विचि आसा होइ निरासी ॥ सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ कोई राम नाम गुन गावनो ॥ जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥२॥१॥७॥४॥६॥७॥१७॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोहि ॥ करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ साधसंगति कै अंचलि लावहु ॥१॥ किउ तरीऐ बिखिआ संसारु ॥ सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥१॥ रहाउ ॥ पवन झुलारे माइआ देइ ॥ हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥२॥ पाइआ वेड़ु माइआ सरब भुइअंगा ॥ हउमै पचे दीपक देखि पतंगा ॥ सगल सीगार करे नही पावै ॥ जा होइ कृपालु ता गुरू मिलावै ॥३॥ हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ हरि का मंदरु तिसु महि लालु ॥ गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥४॥ जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ जिउ गूंगा मन महि बिसमादु ॥ आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ जन नानक हरि गुण आखि समाइआ ॥५॥१॥ बिलावलु महला ५ ॥ सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥१॥ धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥१॥ रहाउ ॥ सभनी थाँई रविआ आपि ॥ आदि जुगादि जा का वड परतापु ॥ गुर परसादि न होइ संतापु ॥२॥ गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ निरबिघन होइ सभ थाँई वूठे ॥ सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥३॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवाले ॥ जिथै किथै दीसहि नाले ॥ नानक दास खसमि प्रतिपाले ॥४॥२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुख निधान

प्रीतम प्रभ मेरे ॥ अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥ मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ करि किरपा हरि चरन धिआई ॥१॥ दइिआ करहु बसहु मनि आइि ॥ मोहि निरगुन लीजै लड़ि लाइि ॥ रहाउ ॥ प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ सरब दूख हरि सिमरत नसे ॥ जा कै संगि सदा प्रभु बसै ॥२॥ प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ प्रभ चिति आइे पूरन सभ काज ॥ हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥३॥ चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥ बिसरि गई सभ दुरमति रीति ॥ मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥ नानक भगतन कै घरि सदा अन्नद ॥४॥३॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु २ यानड़ीइे कै घरि गावणा ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम इेक ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइि दइिआला ॥ सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रहमु परमेसरु सदा सदा हजूरे ॥१॥ सुणि सुणि जीवा सोइि तिना की जिन्ह अपुना प्रभु जाता ॥ हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ सेवकु जन की सेवा मागै पूरै करमि कमावा ॥ नानक की बेन्नती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥२॥ वडभागी से काढीअहि पिआरे संतसंगति जिना वासो ॥ अंमृत नामु अराधीऐ निरमलु मनै होवै परगासो ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे ॥ तिना परापति दरसनु नानक जो प्रभ अपणे भाणे ॥३॥ ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा बलिहारै ॥४॥१॥४॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिखै बनु फीका तिआगि री सखीइे नामु महा रसु पीए ॥ बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीए ॥ मानु महतु न सकति ही

काई साधा दासी थीए ॥ नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीए ॥१॥ हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीहे मृग तृसना द्रुम छाइआ ॥ चंचलि संगि न चालती सखीहे अंति तजि जावत माइआ ॥ रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सूखु न पाइआ ॥ धंनि धंनि हरि साध जन सखीहे नानक जिनी नामु धिआइआ ॥२॥ जाइ बसहु वडभागणी सखीहे संता संगि समाईऐ ॥ तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ ॥ प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ ॥३॥ द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाए ॥ सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए ॥ सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए ॥४॥२॥५॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एक रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनजु आपि बिउहारा ॥१॥ ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ जत जत जाईऐ तत द्रिसटाए ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक रंग निरगुन इक रंगा ॥ आपे जलु आप ही तरंगा ॥२॥ आप ही मंदरु आपहि सेवा ॥ आप ही पूजारी आप ही देवा ॥३॥ आपहि जोग आप ही जुगता ॥ नानक के प्रभ सद ही मुकता ॥४॥१॥६॥ बिलावलु महला ५ ॥ आपि उपावन आपि सधरना ॥ आपि करावन दोसु न लैना ॥१॥ आपन बचनु आप ही करना ॥ आपन बिभउ आप ही जरना ॥१॥ रहाउ ॥ आप ही मसटि आप ही बुलना ॥ आप ही अछलु न जाई छलना ॥२॥ आप ही गुपत आपि परगटना ॥ आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥३॥ आपे अविगतु आप संगि रचना ॥ कहु नानक प्रभ के सभि जचना ॥४॥२॥७॥ बिलावलु महला ५ ॥ भूले मारगु जिनहि बताइआ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥१॥ सिमरि मना राम नामु चितारे ॥ बसि रहे हिरदै

गुर चरन पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीना ॥ बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥२॥ दुख सुख करत जनमि फुनि मूआ ॥ चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥३॥ अगनि सागर बूडत संसारा ॥ नानक बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥४॥३॥८॥ बिलावलु महला ५ ॥ तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ कवन सु मति जितु हरि हरि जपना ॥१॥ करि आसा आइए प्रभ मागनि ॥ तुम् पेखत सोभा मेरै आगनि ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥ साधसंगि इसु मनहि उधारउ ॥२॥ मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥३॥ नैन संतोखे प्रभ दरसनु पाइआ ॥ कहु नानक सफलु सो आइआ ॥४॥४॥९॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत साथि न माइआ ॥ साधसंगि सभु दूखु मिटाइआ ॥१॥ रवि रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥१॥ रहाउ ॥ तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ सीतल भए हरि हरि जसु जापिआ ॥२॥ कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ मनु तृपताना हरि गुण गाइआ ॥३॥ देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ नानक की बेन्नती सुआमी ॥४॥५॥१०॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा वडभागी पाईऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआईऐ ॥१॥ पारब्रहम प्रभ तेरी सरना ॥ किलबिख काटै भजु गुर के चरना ॥१॥ रहाउ ॥ अवरि करम सभि लोकाचार ॥ मिलि साधू संगि होइ उधार ॥२॥ सिंमृति सासत बेद बीचारे ॥ जपीऐ नामु जितु पारि उतारे ॥३॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ ॥ साधू धूरि मिलै निसतरीऐ ॥४॥६॥११॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुर का सबदु रिदे महि चीना ॥ सगल मनोरथ पूरन आसीना ॥१॥ संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ करि किरपा अपुना नामु दीना ॥१॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते करु गहि लीना ॥ जै जै कारु जगति प्रगटीना ॥२॥ नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ अंमृत नामु महा रसु लीना ॥३॥ मन तन निरमल पाप जलि खीना ॥ कहु नानक प्रभ भए प्रसीना ॥४॥७॥१२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सगल मनोरथ पाईअहि मीता ॥

चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥१॥ हउ बलिहारी जो प्रभू धिआवत ॥ जलनि बुझै हरि हरि गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ सफल जनमु होवत वडभागी ॥ साधसंगि रामहि लिव लागी ॥२॥ मति पति धनु सुख सहज अन्नदा ॥ इिक निमख न विसरहु परमान्नदा ॥३॥ हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ भनति नानक सरणि प्रभ तेरी ॥४॥८॥१३॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोहि निरगुन सभ गुणह बिहूना ॥ दइिआ धारि अपुना करि लीना ॥१॥ मेरा मनु तनु हरि गोपालि सुहाइिआ ॥ करि किरपा प्रभु घर महि आइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ भगति वछल भै काटनहारे ॥ संसार सागर अब उतरे पारे ॥२॥ पतित पावन प्रभ बिरदु बेदि लेखिआ ॥ पारब्रहमु सो नैनहु पेखिआ ॥३॥ साधसंगि प्रगटे नाराइिण ॥ नानक दास सभि दूख पलाइिण ॥४॥६॥१४॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु जानै प्रभ तुम्री सेवा ॥ प्रभ अविनासी अलख अभेवा ॥१॥ गुण बेअंत प्रभ गहिर गंभीरे ॥ ऊच महल सुआमी प्रभ मेरे ॥ तू अपरंपर ठाकुर मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ इेकस बिनु नाही को दूजा ॥ तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥२॥ आपहु कछू न होवत भाई ॥ जिसु प्रभु देवै सो नामु पाई ॥३॥ कहु नानक जो जनु प्रभ भाइिआ ॥ गुण निधान प्रभु तिन ही पाइिआ ॥४॥१०॥१५॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ हरि रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥१॥ भजु गोबिद सभ छोडि जंजाल ॥ जब जमु आइि संघारै मूड़े तब तनु बिनसि जाइि बेहाल ॥१॥ रहाउ ॥ तनु मनु धनु अपना करि थापिआ ॥ करनहारु इिक निमख न जापिआ ॥२॥ महा मोह अंध कूप परिआ ॥ पारब्रहमु माइिआ पटलि बिसरिआ ॥३॥ वडै भागि प्रभ कीरतनु गाइिआ ॥ संतसंगि नानक प्रभु पाइिआ ॥४॥ ११॥१६॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत बंधप भाई ॥ नानक होआ पारब्रहमु सहाई ॥१॥ सूख सहज आन्नद घणे ॥ गुरु पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहि न गणे ॥१॥ रहाउ ॥ सगल सरंजाम करे प्रभु आपे ॥ भइे मनोरथ सो प्रभु जापे ॥२॥ अरथ धरम काम मोख का

दाता ॥ पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥३॥ साधसंगि नानकि रंगु माणिआ ॥ घरि आइआ पूरै गुरि आणिआ ॥४॥१२॥१७॥ बिलावलु महला ५ ॥ स्रब निधान पूरन गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥ मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥१॥ राम नामु होआ रखवारा ॥ झख मारउ साकतु वेचारा ॥२॥ निंदा करि करि पचहि घनेरे ॥ मिरतक फास गलै सिरि पैरे ॥३॥ कहु नानक जपहि जन नाम ॥ ता के निकटि न आवै जाम ॥४॥१३॥१८॥

राग़ु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥ पलु पलु निमख सदा हरि जपने ॥१॥ चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ ॥ कवन सु मति जितु प्रीतमु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसी कृपा करहु प्रभ मेरे ॥ हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥२॥१॥१९॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ हिरदै धिआइे ॥ रोग गइे सगले सुख पाइे ॥१॥ गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु ॥ सफल जनमु जीवन परवानु ॥१॥ रहाउ ॥ अकथ कथा अंमृत प्रभ बानी ॥ कहु नानक जपि जीवे गिआनी ॥२॥२॥२०॥ बिलावलु महला ५ ॥ साँति पाई गुरि सतिगुरि पूरे ॥ सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥१॥ रहाउ ॥ ताप पाप संताप बिनासे ॥ हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥१॥ अनदु करहु मिलि सुंदर नारी ॥ गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥२॥३॥२१॥ बिलावलु महला ५ ॥ ममता मोह ध्रोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति बिकराल ॥ दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा जम कै जाल ॥१॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइिआला ॥ महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु साधू संगि रवाला ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरा माल ॥ भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा कृपाल ॥२॥४॥२२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सगल अन्नदु कीआ परमेसरि अपणा बिरदु सम्हारिआ ॥ साध जना होइे किरपाला बिगसे सभि परवारिआ ॥१॥ कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ

॥ वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ वण तृण तृभवण हरिआ होइे सगले जीअ साधारिआ ॥ मन इिछे नानक फल पाइे पूरन इिछ पुजारिआ ॥२॥५॥२३॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिसु ऊपरि होवत दइिआलु ॥ हरि सिमरत काटै सो कालु ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि भजीअै गोपालु ॥ गुन गावत तूटै जम जालु ॥१॥ आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ नानकु जाचै साध रवाल ॥२॥६॥२४॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥१॥ अैसी प्रीति करहु मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के निरमल भाग ॥ हरि चरनी ता का मनु लाग ॥२॥७॥२५॥ बिलावलु महला ५ ॥ रोगु गइिआ प्रभि आपि गवाइिआ ॥ नीद पई सुख सहज घरु आइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ अंमृत नामु रिद माहि धिआई ॥१॥ नानक गुर पूरे सरनाई ॥ जिनि अपने नाम की पैज रखाई ॥२॥८॥२६॥ बिलावलु महला ५ ॥ सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ जो जो निंद करै इिन गृहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥१॥ नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥२॥९॥२७॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप संताप सगले गइे बिनसे ते रोग ॥ पारब्रहमि तू बखसिआ संतन रस भोग ॥ रहाउ ॥ सरब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ गुन गावहु नित राम के इिह अवखद जोग ॥१॥ आइि बसहु घर देस महि इिह भले संजोग ॥ नानक प्रभ सुप्रसन्न भइे लहि गइे बिएग ॥२॥१०॥२८॥ बिलावलु महला ५ ॥ काहू संगि न चालही माइिआ जंजाल ॥ ऊठि सिधारे छत्रपति संतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि कउ बिनसना इिह धुर की ढाल ॥ बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥१॥ सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ सिमरि सिमरि नानक तरे हरि के रंग लाल ॥२॥११॥२९॥ बिलावलु महला ५ ॥ सहज समाधि अन्नद सूख पूरे गुरि दीन ॥ सदा सहाई संगि प्रभ अंमृत गुण चीन ॥ रहाउ ॥

जै जै कारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ सुप्रसन्न भइे सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥१॥ जा का अंगु दइिआल प्रभ ता के सभ दास ॥ सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥२॥१२॥३०॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मृत मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥१॥ सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ सिध साधिक गिरही जोगी तजि गइे घर बार ॥१॥ रहाउ ॥ जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ दृसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥२॥ कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ इिकि चाले इिकि चालसहि सभि अपनी वार ॥३॥ जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥४॥१॥३१॥ बिलावलु महला ५ ॥ लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ ॥१॥ जउ प्रभ जीउ दइिआल होइि तउ भगती लागउ ॥ लपटि रहिए मनु बासना गुर मिलि इिह तिआगउ ॥१॥ रहाउ ॥ करउ बेनती अति घनी इिहु जीउ होमागउ ॥ अरथ आन सभि वारिआ पृअ निमख सोहागउ ॥२॥ पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ रिदै प्रगासु प्रगट भइिआ निसि बासुर जागउ ॥३॥ सरणि सोहागनि आइिआ जिसु मसतकि भागउ ॥ कहु नानक तिनि पाइिआ तनु मनु सीतलागउ ॥४॥२॥३२॥ बिलावलु महला ५ ॥ लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥१॥ प्रभु पाइिआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइि ॥ सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइिआ ॥ पी अंमृतु आघानिआ गुरि अमरु कराइिआ ॥२॥ सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईऐ किआ कहि मुखि बोला ॥३॥ सफल दरसु तेरा पारब्रहम

गुण निधि तेरी बाणी ॥ पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥४॥३॥३३॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥१॥ मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥ हम अपराधी सद भूलते तुम् बखसनहारे ॥१॥ रहाउ ॥ हम अवगन करह असंख नीति तुम् निरगुन दातारे ॥ दासी संगति प्रभू तिआगि इे करम हमारे ॥२॥ तुम् देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥३॥ तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥४॥४॥३४॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥१॥ कहीऐ काहि पिआरे तुझु बिना ॥ तुम् दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ तुम् राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥२॥ जो तुम् करहु सोई भला मनि लेता मुकता ॥ सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥३॥ चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ होहु कृपाल दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥४॥५॥३५॥ बिलावलु महला ५ ॥ मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नही बूझै ॥ बाद साद अहंकार महि मरणा नही सूझै ॥१॥ सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ देखि कसुंभा रंगुला काहे भूलि लागे ॥१॥ रहाउ ॥ करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥२॥ जा कै कीऐ स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ अंत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥३॥ दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमा ॥ कहु नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥४॥६॥३६॥ बिलावलु महला ५ ॥ पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ अंधुले तृभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥१॥ महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भइे चीता ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥२॥ सिंघु बिलाई

होइि गइिए तृणु मेरु दिखीता ॥ स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥३॥ कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥ करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता ॥४॥७॥३७॥ बिलावलु महला ५ ॥ अह्मबुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि ॥ लपटि कपटि गृहि बेधिआ मिथिआ बिखिआदि ॥१॥ अैसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥ राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥१॥ रहाउ ॥ रूप धूप सोगंधता कापर भोगादि ॥ मिलत संगि पापिसट तन होइे दुरगादि ॥२॥ फिरत फिरत मानुखु भइिआ खिन भंगन देहादि ॥ इिह अउसर ते चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥३॥ प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ सूख सहज नानक अन्नद ता कै पूरन नाद ॥४॥८॥३८॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन भइे संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ मारग पाइे उदिआन महि गुरि दसे भेत ॥१॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥१॥ रहाउ ॥ पंच चोर आगै भगे जब साधसंगेत ॥ पूंजी साबतु घणो लाभु गृहि सोभा सेत ॥२॥ निहचल आसणु मिटी चिंत नाही डोलेत ॥ भरमु भुलावा मिटि गइिआ प्रभ पेखत नेत ॥३॥ गुण गभीर गुन नाइिका गुण कहीअहि केत ॥ नानक पाइिआ साधसंगि हरि हरि अंम्रेत ॥४॥९॥३९॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥१॥ जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि हउ वारी ॥१॥ रहाउ ॥ इेत छडाई मोहि ते इितनी दृड़तारी ॥ सगल रेन इिहु मनु भइिआ बिनसी अपधारी ॥२॥ निंद चिंद पर दूखना इे खिन महि जारी ॥ दइिआ मइिआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥३॥ तन मन सीतल भइे अब मुकते संसारी ॥ हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥४॥१०॥४०॥ बिलावलु महला ५ ॥ टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥ मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥१॥ तुम् मिलते मेरा मनु जीए तुम् मिलहु दइिआल ॥ निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत

किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ जगत उधारन साध प्रभ तिन् लागहु पाल ॥ मो कउ दीजै दानु प्रभ संतन पग राल ॥२॥ उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ॥ भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल ॥३॥ बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल ॥ गुण गावउ तेरे साधसंगि नानक सुख साल ॥४॥११॥ ४१॥ बिलावलु महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ॥ परतापु तुमारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ॥१॥ तुमरी कृपा ते छूटीऐ बिनसै अहमेव ॥ सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कूरु ॥ जीवन सुखु सभु साधसंगि प्रभ मनसा पूरु ॥२॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ॥ जत कत तुम् भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ॥३॥ सभु किछु तुम ते मागना वडभागी पाइे ॥ नानक की अरदासि प्रभ जीवा गुन गाइे ॥४॥१२॥४२॥ बिलावलु महला ५ ॥ साधसंगति कै बासबै कलमल सभि नसना ॥ प्रभ सेती रंगि रातिआ ता ते गरभि न ग्रसना ॥१॥ नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ॥ मन तन निरमल होई है गुर का जपु जपना ॥१॥ रहाउ ॥ हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ॥ बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥२॥ सीतल साँति संतोखु होइि सभ बूझी तृसना ॥ दह दिस धावत मिटि गइे निरमल थानि बसना ॥३॥ राखनहारै राखिआ भइे भ्रम भसना ॥ नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ॥४॥१३॥४३॥ बिलावलु महला ५ ॥ पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ॥ राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥१॥ संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥ माइिआधारी छत्रपति तिन् छोडउ तिआगि ॥१॥ रहाउ ॥ संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥ गृहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥२॥ भगत जना का लूगरा एढि नगन न होई ॥ साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥३॥ साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ॥ हरि जन की सेवा जो करे इित ऊतहि छूटै ॥४॥ सभ किछु तुम् ही ते होआ आपि बणत बणाई ॥ दरसनु भेटत साध का नानक

गुण गाई ॥५॥१४॥४४॥ बिलावलु महला ५ ॥ स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर जसु गावउ ॥ संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥१॥ करि किरपा दइिआल प्रभ इिह निधि सिधि पावउ ॥ संत जना की रेणुका लै माथै लावउ ॥१॥ रहाउ ॥ नीच ते नीचु अति नीचु होइि करि बिनउ बुलावउ ॥ पाव मलोवा आपु तिआगि संतसंगि समावउ ॥२॥ सासि सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ सफल दरसन गुरु भेटीऔ मानु मोहु मिटावउ ॥३॥ सतु संतोखु दइिआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥४॥१५॥४५॥ बिलावलु महला ५ ॥ अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइिआ ॥ जिसु जन होआ साधसंगु तिसु भेटै हरि राइिआ ॥१॥ इिह परतीति गोविंद की जपि हरि सुखु पाइिआ ॥ अनिक बाता सभि करि रहे गुरु घरि लै आइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सरणि परे की राखता नाही सहसाइिआ ॥ करम भूमि हरि नामु बोइि अउसरु दुलभाइिआ ॥२॥ अंतरजामी आपि प्रभु सभ करे कराइिआ ॥ पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइिआ ॥३॥ मत भूलहु मानुख जन माइिआ भरमाइिआ ॥ नानक तिसु पति राखसी जो प्रभि पहिराइिआ ॥४॥१६॥४६॥ बिलावलु महला ५ ॥ माटी ते जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ अनिक छिद्र मन महि ढके निरमल द्रिसटेह ॥१॥ किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस के गुण इेह ॥ प्रभ तजि रचे जि आन सिउ सो रलीऔ खेह ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरहु सिमरहु सासि सासि मत बिलम करेह ॥ छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु तजि कूड़े नेह ॥२॥ जिनि अनिक इेक बहु रंग कीइे है होसी इेह ॥ करि सेवा तिसु पारब्रहम गुर ते मति लेह ॥३॥ ऊचे ते ऊचा वडा सभ संगि बरनेह ॥ दास दास को दासरा नानक करि लेह ॥४॥१७॥४७॥ बिलावलु महला ५ ॥ इेक टेक गोविंद की तिआगी अन आस ॥ सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुणतास ॥१॥ जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ परमेसर का आसरा संतन मन माहि ॥१॥ रहाउ ॥ आपि रखै आपि देवसी

आपे प्रतिपारै ॥ दीन दइआल कृपा निधे सासि सासि सम्गरै ॥२॥ करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥३॥ चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥ नह बिनसै नह छोडि जाइि नानक रंगि राता ॥४॥१८॥४८॥ बिलावलु महला ५ ॥ महा तपति ते भई साँति परसत पाप नाठे ॥ अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥१॥ एहि हमारे साजना हम उन की रेन ॥ जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥१॥ रहाउ ॥ परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइि ॥ बसत संगि हरि साध कै पूरन आसाइि ॥२॥ भै बिनसे तिहु लोक के पाइे सुख थान ॥ दइिआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥३॥ नानक की तू टेक प्रभ तेरा आधार ॥ करण कारण समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥४॥१६॥४६॥ बिलावलु महला ५ ॥ सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु बिसराना ॥ करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥१॥ दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आइे ॥ संतन कै आन्नदु इेहु नित हरि गुण गाइे ॥१॥ रहाउ ॥ ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥ कीमति कही न जाईअै ठाकुर परतापै ॥२॥ पेखत लीला रंग रूप चलनै दिनु आइिआ ॥ सुपने का सुपना भइिआ संगि चलिआ कमाइिआ ॥३॥ करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥ हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥४॥२०॥५०॥ बिलावलु महला ५ ॥ जलु ढोवउ इिह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥१॥ करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ ते पावउ ॥ देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ उआ रस महि साँति तृपति होइि बिखै जलनि बुझावउ ॥२॥ जब भगति करहि संत मंडली तिन्‍ मिलि हरि गावउ ॥ करउ नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ ॥३॥ ऊठत बैठत जपउ नामु इिहु करमु कमावउ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि सरनि समावउ ॥ ४॥२१॥५१॥ बिलावलु महला ५ ॥ इिहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाइे ॥ साधसंगति कै संगि

वसै वडभागी पाइे ॥१॥ सुणि सुणि जीवै दासु तुम् बाणी जन आखी ॥ प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ अंमृत नामु जलु संचिआ गुर भइे सहाई ॥२॥ जनम मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइिआ ॥ काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइिआ ॥३॥ मत कोई जाणहु अवरु कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ सरब सूख नानक पाइे संगि संतन साथि ॥४॥२२॥५२॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटे आपि प्रभि होआ किरपाल ॥ दीन दइिआल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥१॥ गुरि पूरै किरपा करी काटिआ दुखु रोगु ॥ मनु तनु सीतलु सुखी भइिआ प्रभ धिआवन जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न विआपै ॥ साधसंगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥२॥ हरि हरि हरि हरि जापीऐ अंतरि लिव लाई ॥ किलविख उतरहि सुधु होइि साधू सरणाई ॥३॥ सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥४॥२३॥५३॥ बिलावलु महला ५ ॥ भै ते उपजै भगति प्रभ अंतरि होइि साँति ॥ नामु जपत गोविंद का बिनसै भ्रम भ्राँति ॥१॥ गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ मन की मति तिआगीऐ सुणीऐ उपदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥ मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥२॥ चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥ जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥३॥ निधि निधान अंमृतु पीआ मनि तनि आन्नद ॥ नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमान्नद ॥४॥२४॥५४॥ बिलावलु महला ५ ॥ तृसन बुझी ममता गई नाठे भै भरमा ॥ थिति पाई आनदु भइिआ गुरि कीने धरमा ॥१॥ गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ तनु मनु सभु सीतलु भइिआ पाइिआ सुखु बीर ॥१॥ रहाउ ॥ सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ पी अंमृतु तृपतासिआ ता का अचरज सुआदु ॥२॥ आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटंब उधारे ॥ सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे ॥३॥ नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु

गुणहीनु ॥ नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥४॥२५॥५५॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥१॥ करि किरपा प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ निंदक निंदा करि पचे जमकालि ग्रसीए ॥१॥ रहाउ ॥ संता एकु धिआवना दूसर को नाहि ॥ एकसु आगै बेनती रविआ स्रब थाइ ॥२॥ कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ सगल दुसट खंड खंड कीए जन लीए मानी ॥३॥ सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ प्रभ के सेवक सरणि प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥४॥२६॥५६॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥ अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥१॥ तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ आसा भरम बिकार मोह इन महि लोभाना ॥ झूठु समग्री मनि वसी पारब्रहमु न जाना ॥२॥ परम जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥३॥ करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ नानक तरीऐ साधसंगि हरि हरि गुण गाउ ॥४॥२७॥५७॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ महा मोहनी मोहिआ नरक की रीति ॥१॥ मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा ॥ खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥१॥ रहाउ ॥ जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डांड ॥ सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भांड ॥२॥ हरि संगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥३॥ नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीना ॥ तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥४॥२८॥५८॥ बिलावलु महला ५ ॥ उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥१॥ चरन कमल गुर के जपत हरि जपि हउ जीवा ॥ पारब्रहमु आराधते मुखि अम्रितु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥ परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥२॥

धन्नु सु थानु बसंत धन्नु जह जपीऐ नामु ॥ कथा कीरतनु हरि अति घना सुख सहज बिस्रामु ॥३॥ मन ते कदे न वीसरै अनाथ को नाथ ॥ नानक प्रभ सरणागती जा कै सभु किछु हाथ ॥४॥२९॥५९॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिनि तू बंधि करि छोडिआ फुनि सुख महि पाइआ ॥ सदा सिमरि चरणारबिंद सीतल होताइआ ॥१॥ जीवतिआ अथवा मुइआ किछु कामि न आवै ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ कोऊ तिस सिउ रंगु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ रे प्राणी उसन सीत करता करै घाम ते काढै ॥ कीरी ते हसती करै टूटा ले गाढै ॥२॥ अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥ किरत कमावन सरब फल रवीऐ हरि निरति ॥३॥ हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध ॥ मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥४॥३०॥६०॥ बिलावलु महला ५ ॥ खोजत खोजत मै फिरा खोजउ बन थान ॥ अछल अछेद अभेद प्रभ ऐसे भगवान ॥१॥ कब देखउ प्रभु आपना आतम कै रंगि ॥ जागन ते सुपना भला बसीऐ प्रभ संगि ॥१॥ रहाउ ॥ बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस ॥ रूपु न रेख न पंच तत ठाकुर अबिनास ॥२॥ एहु सरूपु संतन कहहि विरले जोगीसुर ॥ करि किरपा जा कउ मिले धनि धनि ते ईसुर ॥३॥ सो अंतरि सो बाहरे बिनसे तह भरमा ॥ नानक तिसु प्रभु भेटिआ जा के पूरन करमा ॥४॥३१॥६१॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जंत सुप्रसन्न भए देखि प्रभ परताप ॥ करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥१॥ खात खरचत निबहत रहै गुर सबदु अखूट ॥ पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि आराधना हरि निधि आपार ॥ धरम अरथ अरु काम मोख देते नही बार ॥२॥ भगत अराधहि इक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ राम नाम धनु संचिआ जा का नही सुमारु ॥३॥ सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ नानक अंतु न पाईऐ बेअंत गुसाई ॥४॥३२॥६२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि पूरन प्रभू कारज भए रासि ॥ करतार पुरि करता वसै संतन कै पासि ॥१॥ रहाउ ॥ बिघनु न कोऊ लागता गुर पहि अरदासि ॥ रखवाला

गोबिंद राइि भगतन की रासि ॥१॥ तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥२॥ बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥३॥ जै जै कारु सभै करहि सचु थानु सुहाइिआ ॥ जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइिआ ॥४॥३३॥६३॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥ रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ॥ साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥१॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ बिनसै बिएगु ॥ नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥२॥३४॥६४॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइिआ ॥ ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइिआ ॥१॥ गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइिआ ॥ राखनहारै राखिआ अपनी करि मइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइिआ ॥ सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइिआ ॥२॥१॥६५॥ बिलावलु महला ५ ॥ करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥ सफल सेवा पारब्रहम की ता की नही हानि ॥१॥ आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥१॥ रहाउ ॥ सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ सहजि सुभाइि नानक मिले जोती जोति समान ॥२॥२॥६६॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥१॥ राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव ॥ राम राज रामदास पुरि कीन्हे गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ किछु बिघनु न लागै ॥ नानक नामु सलाहीऐ भइि दुसमन भागै ॥२॥३॥६७॥ बिलावलु महला ५ ॥ मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ॥ उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥१॥ राम

नामु जो जनु जपै अनदिनु सद जागै ॥ तंतु मंतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥ आन्नद मगन रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥२॥४॥६८॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जुगति वसि प्रभू कै जो कहै सु करना ॥ भइे प्रसन्न गोपाल राइि भउ किछु नही करना ॥१॥ दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रहमु चितारे ॥ जमकंकरु नेड़ि न आवई गुरसिख पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ नानक प्रभ सरणागती साचा मनि जोरु ॥ २॥५॥६९॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु आपना नाठा दुख ठाउ ॥ बिस्राम पाइे मिलि साधसंगि ता ते बहुड़ि न धाउ ॥१॥ बलिहारी गुर आपने चरनन् बलि जाउ ॥ अनद सूख मंगल बने पेखत गुन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ कथा कीरतनु राग नाद धुनि इिहु बनिए सुआउ ॥ नानक प्रभ सुप्रसन्न भइे बाँछत फल पाउ ॥२॥६॥७०॥ बिलावलु महला ५ ॥ दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥ तुम्री कृपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥१॥ चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप तूहै तू सरब निवासु ॥ नानक प्रभ सरणागती जा को निरमल जासु ॥२॥७॥७१॥ बिलावलु महला ५ ॥ सरब सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ साधु साधु मुख ते कहहि सुणि दास मिलावहि ॥१॥ सूख सहज कलिआण रस पूरै गुरि कीन् ॥ जीअ सगल दइिआल भइे हरि हरि नामु चीन् ॥१॥ रहाउ ॥ पूरि रहिए सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥ नानक भगत आन्नद मै पेखि प्रभ की धीर ॥२॥८॥७२॥ बिलावलु महला ५ ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि होइे किरपाल ॥ राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक छारु ॥१॥ तुझहि न जोहै को मीत जन तूं गुर का दास ॥ पारब्रहमि तू राखिआ दे अपने हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ जीअन का दाता इेकु है बीआ नही होरु ॥ नानक की बेन्नतीआ मै तेरा जोरु ॥२॥९॥७३॥ बिलावलु महला ५ ॥ मीत हमारे साजना राखे गोविंद ॥ निंदक मिरतक होइि गइे तुम् होहु निचिंद ॥१॥ रहाउ ॥ सगल

मनोरथ प्रभि कीइे भेटे गुरदेव ॥ जै जै कारु जगत महि सफल जा की सेव ॥१॥ ऊच अपार अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ नानक प्रभ सरणागती जत कत मेरै साथि ॥२॥१०॥७४॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा आराधिआ होइे किरपाल ॥ मारगु संति बताइिआ तूटे जम जाल ॥१॥ दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ नाम ॥ सहज सूख आन्नद रस पूरन सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ जलनि बुझी सीतल भइे राखे प्रभि आप ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप ॥२॥११॥७५॥ बिलावलु महला ५ ॥ धरति सुहावी सफल थानु पूरन भइे काम ॥ भउ नाठा भ्रमु मिटि गइिआ रविआ नित राम ॥१॥ साध जना कै संगि बसत सुख सहज बिस्राम ॥ साई घड़ी सुलखणी सिमरत हरि नाम ॥१॥ रहाउ ॥ प्रगट भइे संसार महि फिरते पहनाम ॥ नानक तिसु सरणागती घट घट सभ जान ॥२॥१२॥७६॥ बिलावलु महला ५ ॥ रोगु मिटाइिआ आपि प्रभि उपजिआ सुखु साँति ॥ वड परतापु अचरज रूपु हरि कीन्ही दाति ॥१॥ गुरि गोविंदि कृपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ हम तिस की सरणागती जो सदा सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥ नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥२॥१३॥७७॥ बिलावलु महला ५ ॥ मरि मरि जनमे जिन बिसरिआ जीवन का दाता ॥ पारब्रहमु जनि सेविआ अनदिनु रंगि राता ॥१॥ साँति सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥ सुखु पाइिआ हरि साधसंगि सिमरत गुणतास ॥१॥ रहाउ ॥ सुणि सुआमी अरदासि जन तुम् अंतरजामी ॥ थान थन्नतरि रवि रहे नानक के सुआमी ॥२॥१४॥७८॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥१॥ सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम नामु अउखधु दीआ इेका लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ राखि लीइे तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भइे सहाई ॥ २॥१५॥७९॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपणे बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥ सुख साँति

सहज आनद भइे पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग मिटाइि जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥१॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ मन बाँछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥२॥१६॥८०॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मोहन स्रवनी इिह न सुनाइे ॥ साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाइे ॥१॥ रहाउ ॥ सेवत सेवि सेवि साध सेवउ सदा करउ किरताइे ॥ अभै दानु पावउ पुरख दाते मिलि संगति हरि गुण गाइे ॥१॥ रसना अगह अगह गुन राती नैन दरस रंगु लाइे ॥ होहु कृपाल दीन दुख भंजन मोहि चरण रिदै वसाइे ॥२॥ सभहू तलै तलै सभ ऊपरि इेह दृसटि दृसटाइे ॥ अभिमानु खोइि खोइि खोइि खोई हउ मो कउ सतिगुर मंत्र दृड़ाइे ॥३॥ अतुलु अतुलु अतुलु नह तुलीऐ भगति वछलु किरपाइे ॥ जो जो सरणि परिए गुर नानक अभै दानु सुख पाइे ॥४॥१॥८१॥ बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ॥ नमसकार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै ॥१॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत इिहु मनु तुझहि चितारै ॥ सूख दूख इिसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥१॥ तू मेरी एट बल बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ जो तुम करहु सोई भल हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥२॥२॥८२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ मोह मगन पतित संगि प्रानी ऐसे मनहि बिसारन ॥१॥ रहाउ ॥ संचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी अंमृतु मन ते डारन ॥ काम क्रोध लोभ रतु निंदा सतु संतोखु बिदारन ॥१॥ इिन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम् सारन ॥ नानक की बेन्नती प्रभ पहि साधसंगि रंक तारन ॥२॥३॥८३॥ बिलावलु महला ५ ॥ संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ कथा कीरतनु आन्नद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपुने की कीनी दाति ॥ आठ पहर गुन गावत प्रभ के काम क्रोध

इसु तन ते जात ॥१॥ तृपति अघाइे पेखि प्रभ दरसनु अंमृत हरि रसु भोजनु खात ॥ चरन सरन नानक प्रभ तेरी करि किरपा संतसंगि मिलात ॥२॥४॥८४॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीइे अपने जन आप ॥ करि किरपा हरि हरि नामु दीनो बिनसि गइे सभ सोग संताप ॥१॥ रहाउ ॥ गुण गोविंद गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप ॥ कोटि जनम की तृसना निवरी राम रसाइिणि आतम ध्राप ॥१॥ चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥ सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥२॥५॥८५॥ बिलावलु महला ५ ॥ तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥ सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥१॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ प्रभि अंमृत नामु महा रसु दीनो ॥१॥ दास की लाज रखै मिहरवानु ॥ गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥२॥६॥८६॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥ बिनसिए अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा ॥१॥ रहाउ ॥ बिसमन बिसम भइे जउ पेखिए कहनु न जाइि वडिआई ॥ मगन भइे ऊहा संगि माते एति पोति लपटाई ॥१॥ आल जाल नही कछू जंजारा अह्मबुधि नही भोरा ॥ ऊचन ऊचा बीचु न खीचा हउ तेरा तूं मोरा ॥२॥ इेकंकारु इेकु पासारा इेकै अपर अपारा ॥ इेकु बिसथीरनु इेकु संपूरनु इेकै प्रान अधारा ॥३॥ निरमल निरमल सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ अंत न अंता सदा बेअंता कहु नानक ऊचो ऊचा ॥४॥१॥८७॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु हरि कामि न आवत हे ॥ जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे एह मोहनी मोहावत हे ॥१॥ रहाउ ॥ कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ॥ उरझि रहिए इंद्री रस प्रेरिए बिखै ठगउरी खावत हे ॥१॥ तृण को मंदरु साजि सवारिए पावकु तलै जरावत हे ॥ अैसे गड़ महि अैठि हठीलो फूलि फूलि किआ पावत हे ॥२॥ पंच दूत मूड परि ठाढे केस

गहे फेरावत हे ॥ दृसटि न आवहि अंध अगिआनी सोइि रहिए मद मावत हे ॥३॥ जालु पसारि चोग बिसथारी पंखी जिउ फाहावत हे ॥ कहु नानक बंधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु धिआवत हे ॥४॥२॥८८॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोली ॥ प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितवउ जैसे पान तंबोली ॥१॥ रहाउ ॥ सहजि समाइिए गुरहि बताइिए रंगि रंगी मेरे तन की चोली ॥ पृअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु हमारो कतहु न डोली ॥१॥ रूप न धूप न गंध न दीपा एति पोति अंग अंग संगि मउली ॥ कहु नानक पृअ रवी सुहागनि अति नीकी मेरी बनी खटोली ॥२॥३॥८९॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद मई ॥ जब ते भेटे साध दइिआरा तब ते दुरमति दूरि भई ॥१॥ रहाउ ॥ पूरन पूरि रहिए संपूरन सीतल सांति दइिआल दई ॥ काम क्रोध तृसना अहंकारा तन ते होइे सगल खई ॥१॥ सतु संतोखु दइिआ धरमु सुचि संतन ते इिहु मंतु लई ॥ कहु नानक जिनि मनहु पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥२॥४॥९०॥ बिलावलु महला ५ ॥ किआ हम जीअ जंत बेचारे बरनि न साकह इेक रोमाई ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इिंद्रा बेअंत ठाकुर तेरी गति नही पाई ॥१॥ किआ कथीऐ किछु कथनु न जाई ॥ जह जह देखा तह रहिआ समाई ॥१॥ रहाउ ॥ जह महा भइिआन दूख जम सुनीऐ तह मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ सरनि परिए हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ बूझ बुझाई ॥२॥५॥९१॥ बिलावलु महला ५ ॥ अगम रूप अबिनासी करता पतित पवित इिक निमख जपाईऐ ॥ अचरजु सुनिए परापति भेटुले संत चरन चरन मनु लाईऐ ॥१॥ कितु बिधीऐ कितु संजमि पाईऐ ॥ कहु सुरजन कितु जुगती धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ जो मानुखु मानुख की सेवा एहु तिस की लई लई फुनि जाईऐ ॥ नानक सरनि सरणि सुख सागर मोहि टेक तेरो इिक नाईऐ ॥२॥६॥९२॥ बिलावलु महला ५ ॥ संत सरणि संत टहल करी ॥ धंधु बंधु अरु सगल जंजारो अवर काज ते छूटि परी ॥१॥ रहाउ ॥ सूख सहज अरु घनो अन्नदा गुर ते पाइिए

नामु हरी ॥ ऐसो हरि रसु बरनि न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥१॥ पेखिए मोहनु सभ कै संगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ पूरन पूरि रहिए किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥२॥७॥६३॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥१॥ रहाउ ॥ अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ रे मन काइि कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही संगि सुनता ॥१॥ ऐसो जानि भइे मनि आनद आन न बीए करता ॥ कहु नानक गुर भइे दइिआरा हरि रंगु न कबहू लहता ॥२॥८॥६४॥ बिलावलु महला ५ ॥ निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥ इिह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीऐ ॥ आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥१॥ निंदकु प्रभू भुलाइिआ कालु नेरै आइिआ हरि जन सिउ बादु उठरीऐ ॥ नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ ॥२॥९॥६५॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसे काहे भूलि परे ॥ करहि करावहि मूकरि पावहि पेखत सुनत सदा संगि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ काच बिहाझन कंचन छाडन बैरी संगि हेतु साजन तिआगि खरे ॥ होवनु कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइि जरे ॥१॥ अंध कूप महि परिए परानी भरम गुबार मोह बंधि परे ॥ कहु नानक प्रभ होत दइिआरा गुरु भेटै काढै बाह फरे ॥२॥१०॥६६॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन रसना हरि चीन्हा ॥ भइे अन्नदा मिटे अंदेसे सरब सूख मो कउ गुरि दीन्हा ॥१॥ रहाउ ॥ इिआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ हाथ देइि राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥१॥ बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु लीना ॥ कहु नानक ठाकुर भारोसै कहू न मानिए मनि छीना ॥२॥११॥६७॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥ अंमृत नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥१॥ रहाउ ॥ निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ

जापु ॥ कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥१॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥ ता की सरनि परिए नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥२॥१२॥९८॥ बिलावलु महला ५ ॥ सदा सदा जपीऐ प्रभ नाम ॥ जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ इहु निधानु ॥ जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥१॥ जो तुम् करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥२॥१३॥९९॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥१॥ रहाउ ॥ कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥१॥ चरन प्रभू के बोहिथु पाइे भव सागरु पारि पराही ॥ संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥२॥१४॥१००॥ बिलावलु महला ५ ॥ धीरउ देखि तुम्रै रंगा ॥ तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥१॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥१॥ कबहू न बिसरै हीइे मोरे ते नानक दास इही दानु मंगा ॥२॥१५॥१०१॥ बिलावलु महला ५ ॥ अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ मनु तनु अरपि रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ सरनि सम्रथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो दइआल ॥ कंठि लाइि राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥१॥ दामोदर दइआल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥ नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै रवाल ॥२॥१६॥१०२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरत नामु कोटि जतन भइे ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाइे जमदूतन कउ त्रास अहे ॥१॥ रहाउ ॥ जेते पुनहचरन से कीन्े मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ आवण जाणु भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥१॥ निरभउ होइि भजहु जगदीसै इहु पदारथु वडभागि लहे

॥ करि किरपा पूरन प्रभ दाते निरमल जसु नानक दास कहे ॥२॥१७॥१०३॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुलही ते नाराइणि राखु ॥ सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥१॥ रहाउ ॥ काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥१॥ पुत्र मीत धनु किछू न रहिए सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥२॥१८॥१०४॥ बिलावलु महला ५ ॥ पूरे गुर की पूरी सेव ॥ आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ आदि मधि प्रभु अंति सुआमी अपना थाटु बनाइए आपि ॥ अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परतापु ॥१॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर वसि कीन्हे जिनि सगले जंत ॥ चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि निरमल मंत ॥२॥१९॥१०५॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप पाप ते राखे आप ॥ सीतल भइे गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥ दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा त्रिसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥१॥ अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल स्रिसटि को माई बापु ॥ भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥२॥२०॥१०६॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु ॥ पारब्रहमु परमेसरु धिआइिआ कुसल खेम होइे कलिआन ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिए बड भागी अंतरजामी सुघड़ु सुजानु ॥ हाथ देइि राखे करि अपने बड समरथु निमाणिआ को मानु ॥१॥ भ्रम भै बिनसि गइे खिन भीतरि अंधकार प्रगटे चानाणु ॥ सासि सासि आराधै नानकु सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥२॥२१॥१०७॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥ हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होइे सगले पूरे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु होवत साधू धूरे ॥ आवण जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥१॥ भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घटि घटि

इेकु रहिआ भरपूरे ॥ नानक सरणि परिए दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥२॥२२॥१०८॥ बिलावलु महला ५ ॥ दरसनु देखत दोख नसे ॥ कबहु न होवहु दृसटि अगोचर जीअ कै संगि बसे ॥१॥ रहाउ ॥ प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥१॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हारी ॥ सासि सासि प्रभ तुझहि चितारी ॥२॥ किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥३॥ आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥४॥२३॥१०६॥ बिलावलु महला ५ ॥ तनु धनु जोबनु चलत गइआ ॥ राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंता घसि खीन खइआ ॥ मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥१॥ महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी गलतु पइआ ॥ सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काढि लइआ ॥२॥२४॥११०॥ बिलावलु महला ५ ॥ आपना प्रभु आइआ चीति ॥ दुसमन दुसट रहे झख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥१॥ रहाउ ॥ गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीए करतारि ॥ साँति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥१॥ जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥२॥२५॥१११॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥१॥ भई मित्राई मिटी बुराई दुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ सूख सहज आनन्द घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥२॥२६॥११२॥ बिलावलु महला ५ ॥ पारब्रहम प्रभ भए कृपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ कंठि लाइि

राखे जन अपने उधरि लीइे लाइि अपनै पाल ॥१॥ सही सलामति मिलि घरि आइे निंदक के मुख होइे काल ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुर प्रसादि प्रभ भइे निहाल ॥२॥२७॥११३॥ बिलावलु महला ५ ॥ मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥ तोरी न तूटै छोरी न छूटै अैसी माधो खिंच तनी ॥१॥ दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥२॥ बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥३॥ जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु कृपा ठाकुर अपुनी ॥४॥२८॥११४॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि के चरन जपि जाँउ कुरबानु ॥ गुरु मेरा पारब्रहम परमेसुरु ता का हिरदै धरि मन धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहानु ॥ रसना रवहु इेकु नाराइिणु साची दरगह पावहु मानु ॥१॥ साधू संगु परापति जा कउ तिन ही पाइिआ इेहु निधानु ॥ गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि किरपा नानक दीजै दानु ॥२॥२९॥११५॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीइे सतिगुर की सरण ॥ जै जै कारु होआ जग अंतरि पारब्रहमु मेरो तारण तरण ॥१॥ रहाउ ॥ बिस्वंभर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण ॥ थान थन्नतरि सरब निरंतरि बलि बलि जाँई हरि के चरण ॥१॥ जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सरब सिधि तुम कारण करण ॥ आदि जुगादि प्रभु रखदा आइिआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥२॥३०॥११६॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ ईधै निरगुन ऊधै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा ॥ आपे ही राजनु आपे ही राइिआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥१॥ का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ साध मूरति गुरु भेटिए नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा ॥२॥१॥११७॥ बिलावलु महला ५ ॥

तुम् समरथा कारन करन ॥ ढाकन ढाकि गोबिद् गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो कीनो सो तुम् जानिए पेखिए ठउर नाही कछु ढीठ मुकरन ॥ बड परतापु सुनिए प्रभ तुम्रो कोटि अघा तेरो नाम हरन ॥१॥ हमरो सहाउ सदा सद भूलन तुम्रो बिरदु पतित उधरन ॥ करुणा मै किरपाल कृपा निधि जीवन पद नानक हरि दरसन ॥२॥२॥११८॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी किरपा मोहि करहु ॥ संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु ॥१॥ रहाउ ॥ गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु ॥ तसकर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥१॥ जो तुम् करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंगि ले मोहि उधरहु ॥२॥३॥११९॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ तुम्रो धिआनु तुमारो रंगा ॥ तुम्री सेवा तुमारे अंगा ॥१॥ रहाउ ॥ जन की टहल संभाखनु जन सिउ ऊठनु बैठनु जन कै संगा ॥ जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अन्नत तरंगा ॥१॥ जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ कोटि गंगा ॥ जन की धूरि कीए मजनु नानक जनम जनम के हरे कलंगा ॥२॥४॥१२०॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम् पिता किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुण गुणु नाही कोई पहुचि न साकउ तुम्री घाल ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानहु जीउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥१॥ अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहु हाल ॥ तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥ २॥५॥१२१॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥१॥ रहाउ ॥ रंक ते राउ करत खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ जलत अगनि महि जन आपि उधारे करि अपुने दे राखे हाथ ॥१॥ सीतल सुखु पाइए मन तृपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ निधि निधान नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥

॥२॥६॥१२२॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु ॥ उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥१॥ रहाउ ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु ॥ जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु कृपा करि जारहु ॥१॥ जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥ जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥२॥७॥१२३॥ बिलावलु महला ५ ॥ आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी पारब्रहमि प्रभि कीनी मइआ ॥१॥ रहाउ ॥ मनि तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ साँति सहज आनद गुण गाइे दूत दुसट सभि होइे खइआ ॥१॥ गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिए करि किरपा अपुना करि लइआ ॥ अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु उचरै हरि की जइआ ॥२॥८॥१२४॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु भै भगती तरनु कैसे ॥ करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी आप भरोसे ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ राता सुआन जैसे ॥ अउध बिहावत अधिक मोहावत पाप कमावत बुडे अैसे ॥१॥ सरनि दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगति रवणु जैसे ॥ केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥२॥६॥१२५॥

राग़ु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आपहि मेलि लइे ॥ जब ते सरनि तुमारी आइे तब ते दोख गइे ॥१॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु अरु चिंत बिरानी साधह सरन पइे ॥ जपि जपि नामु तुम्हारो प्रीतम तन ते रोग खइे ॥१॥ महा मुगध अजान अगिआनी राखे धारि दइे ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिए आवन जान रहे ॥२॥१॥१२६॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीवउ नामु सुनी ॥ जउ सुप्रसन्न भइे गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥१॥ रहाउ ॥ पीर गई बाधी मनि धीरा मोहिए अनद धुनी ॥ उपजिए चाउ मिलन प्रभ प्रीतम रहनु न जाइि

खिनी ॥१॥ अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ अंधुले टिक निरधन धनु पाइिए प्रभ नानक अनिक गुनी ॥२॥२॥१२७॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ उडीनी उडीनी उडीनी ॥ कब घरि आवै री ॥१॥ रहाउ ॥ सरनि सुहागनि चरन सीसु धरि ॥ लालनु मोहि मिलावहु ॥ कब घरि आवै री ॥१॥ सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अह्म मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ तब रस मंगल गुन गावहु ॥ आनद रूप धिआवहु ॥ नानकु दुआरै आइिए ॥ तउ मै लालनु पाइिए री ॥२॥ मोहन रूपु दिखावै ॥ अब मोहि नीद सुहावै ॥ सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ अब मै सहजि समानी ॥ मीठी पिरहि कहानी ॥ मोहनु लालनु पाइिए री ॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२८॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोरी अह्म जाइि दरसन पावत हे ॥ राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ अब चरन गहे ॥१॥ रहाउ ॥ आहे मन अवरु न भावै चरनावै चरनावै उलझिए अलि मकरंद कमल जिउ ॥ अन रस नही चाहै इेकै हरि लाहै ॥१॥ अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ मन हरि रस घूटीऐ संगि साधू उलटीऐ ॥ अन नाही नाही रे ॥ नानक प्रीति चरन चरन हे ॥२॥२॥१२९॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥ अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भइे जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥ गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥ अचल अमर निरभै पदु पाइिए जगत जाहि हैरानो ॥ नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥१॥ बिलावलु महला ९ ॥ हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥ भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इिहु भेदु बतावै ॥१॥ रहाउ ॥ कहा भइिए तीरथ ब्रत कीइे राम सरनि नही

आवै ॥ जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥ मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥ बिलावलु महला ६ ॥ जा मै भजनु राम को नाही ॥ तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥ जैसे पाहनु जल महि राखिए भेदै नाहि तिह पानी ॥ तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥ कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥

बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ विणु भै पइऐ भगति न होई ॥ सबदि रते सदा सुखु होई ॥१॥ ऐसा गिआनु पदारथु नामु ॥ गुरमुखि पावसि रसि रसि मानु ॥१॥ रहाउ ॥ गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ कथि कथि बादु करे दुखु होई ॥ कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ बिनु रस राते मुकति न होई ॥२॥ गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ साची रहत साचा मनि सोई ॥ मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ नावहु भूले थाउ न कोई ॥३॥ मनु माइआ बंधिए सर जालि ॥ घटि घटि बिआपि रहिए बिखु नालि ॥ जो आँजै सो दीसै कालि ॥ कारजु सीधो रिदै समालि ॥४॥ सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई ॥ मनमुखि हउमै पति गवाई ॥ आपे करतै भगति कराई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥५॥ रैणि अंधारी निरमल जोति ॥ नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥ बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥६॥ सासत्र सिमृति नामु दृड़ामं ॥ गुरमुखि साँति ऊतम करामं ॥ मनमुखि जोनी दूख सहामं ॥ बंधन तूटे इकु नामु वसामं ॥७॥ मन्ने नामु सची पति पूजा ॥ किसु वेखा नाही को दूजा ॥ देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ नानकु कहै

अवरु नही कोइि ॥८॥१॥ बिलावलु महला १ ॥ मन का कहिआ मनसा करै ॥ इहु मनु पुन्नु पापु उचरै ॥ माइिआ मदि माते तृपति न आवै ॥ तृपति मुकति मनि साचा भावै ॥१॥ तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ बिनु नावै किछु संगि न जाना ॥१॥ रहाउ ॥ कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ धनु लोकाँ तनु भसमै ढेरी ॥ खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥ बिनु सबदै नही उतरै मैलु ॥२॥ गीत राग घन ताल सि कूरे ॥ तृहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ दूजी दुरमति दरदु न जाइि ॥ छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइि ॥३॥ धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ अंतरि क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ नामु विसारि माइिआ मदु पीआ ॥ बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥४॥ सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥ पसू मलेछ नीच चंडाला ॥ गुर ते मुहु फेरे तिन् जोनि भवाईऐ ॥ बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥५॥ गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ साची दरगह पूछ न होइि ॥ माने हुकमु सीझै दरि सोइि ॥६॥ सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ काल बिकाल सबदि भइे नासु ॥७॥ रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ तनु मनु अरपै है इहु जिस का ॥ ना एहु आवै ना एहु जाइि ॥ नानक साचे साचि समाइि ॥८॥२॥

बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥ अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥१॥ सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति ॥ गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥१॥ रहाउ ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ साचै नाइि वडाई पावहु ॥२॥ आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ मन का अंधा अंधु कमावै ॥ दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥३॥ हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ॥ घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ तिसु नालि किआ चलै

पहनामी ॥४॥ साचा नामु साचै सबदि जानै ॥ आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ गुरमुखि नामु सदा सदा वखानै ॥५॥ सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥ अउगण काटि पापा मति खाई ॥ कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥६॥ सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई ॥ दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥७॥ गुरमति मानिआ करणी सारु ॥ गुरमति मानिआ मोख दुआरु ॥ नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु ॥८॥१॥३॥

बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि रस गीत गवईआ ॥ गुरमुखि परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोति मिलईआ ॥१॥ मै हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पड़ईआ ॥१॥ रहाउ ॥ इेकु गिरहु दस दुआर है जा के अहिनिसि तसकर पंच चोर लगईआ ॥ धरमु अरथु सभु हिरि ले जावहि मनमुख अंधुले खबरि न पईआ ॥२॥ कंचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥ तसकर हेरू आइ लुकाने गुर कै सबदि पकड़ि बंधि पईआ ॥३॥ हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लम्घईआ ॥ जमु जागाती नेड़ि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ ॥४॥ हरि गुण गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अंतु न लहीआ ॥ गुरमुखि मनूआ इकतु घरि आवै मिलउ गोपाल नीसानु बजईआ ॥५॥ नैनी देखि दरसु मनु तृपतै स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ सुनि सुनि आतम देव है भीने रसि रसि राम गोपाल रवईआ ॥६॥ त्रै गुण माइआ मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ इेक दृसटि सभ सम करि जाणै नदरी आवै सभु ब्रहमु पसरईआ ॥७॥ राम नामु है जोति सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ नानक दीन दइआल भए है भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥८॥१॥४॥

बिलावलु महला ४ ॥ हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि चंदन वासु सुगंध गंधईआ ॥

मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥१॥ जपि जगन्नाथ जगदीस गुसईआ ॥ सरणि परे सेई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥१॥ रहाउ ॥ भार अठारह महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ साकत कूड़े ऊभ सुक हूडे मनि अभिमानु विछुड़ि दूरि गईआ ॥२॥ हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ जिसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥३॥ रतन पदारथ गुरमति पावै सागर भगति भंडार खुल्हईआ ॥ गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते तृपति न भईआ ॥४॥ परम बैरागु नित नित हरि धिआइे मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ बार बार खिनु खिनु पलु कहीऐ हरि पारु न पावै परै परईआ ॥५॥ सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम दृड़ईआ ॥ मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुडईआ ॥६॥ नामु जपहु नामे गति पावहु सिमृति सासत्र नामु दृड़ईआ ॥ हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै परम पदु पईआ ॥७॥ इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कमईआ ॥ नानक जंत वजाइे वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥८॥२॥५॥ बिलावलु महला ४ ॥ गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ राम नामु मेरै प्राणि वसाइे सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥१॥ जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ सतिगुर की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥१॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥ लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भाँडै भाउ पवै तितु अईआ ॥२॥ दासनि दास दास होइि रहीऐ जो जन राम भगत निज भईआ ॥ मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥३॥ मनमुख माइिआ मोहि विआपे इहु मनु तृसना जलत तिखईआ ॥ गुरमति नामु अंमृत जलु पाइिआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥४॥ इहु मनु नाचै सतिगुर आगै

अनहद सबद धुनि तूर वजईआ ॥ हरि हरि उसतति करै दिनु राती रखि रखि चरण हरि ताल पूरईआ ॥५॥ हरि कै रंगि रता मनु गावै रसि रसाल रसि सबदु रवईआ ॥ निज घरि धार चुऐ अति निरमल जिनि पीआ तिन ही सुखु लहीआ ॥६॥ मनहठि करम करै अभिमानी जिउ बालक बालू घर उसरईआ ॥ आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिन्न भिन्न ढहि पईआ ॥७॥ हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥ जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आपि रमईआ ॥८॥३॥६॥ बिलावलु महला ४ ॥ सतिगुरु परचै मनि मुंद्रा पाई गुर का सबदु तनि भसम दृड़ईआ ॥ अमर पिंड भइे साधू संगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥१॥ मेरे मन साधसंगति मिलि रहीआ ॥ कृपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखईआ ॥१॥ रहाउ ॥ तजै गिरसतु भइिआ बन वासी इकु खिनु मनूआ टिकै न टिकईआ ॥ धावतु धाइि तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥२॥ धीआ पूत छोडि संनिआसी आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥ आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥३॥ उपजी तरक दिगंबरु होआ मनु दह दिस चलि चलि गवनु करईआ ॥ प्रभवनु करै बूझै नही तृसना मिलि संगि साध दइिआ घरु लहीआ ॥४॥ आसण सिध सिखहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि सिधि चेटक चेटकईआ ॥ तृपति संतोखु मनि साँति न आवै मिलि साधू तृपति हरि नामि सिधि पईआ ॥५॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥ साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चंडालु चंडईआ ॥६॥ नामा जैदेउ कंबीरु तृलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥ जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धन्ना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥७॥ संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥ नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥८॥४॥७॥ बिलावलु महला ४ ॥ अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ

॥ मन की बिरथा मन ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर पराईआ ॥१॥ राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ मनु तनु काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखईआ ॥२॥ कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥३॥ चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥४॥ खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥५॥ हरि हरि हारु कंठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥६॥ कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ कीए सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीए सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥७॥ हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥८॥५॥८॥ बिलावलु महला ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चातृक प्रिउ प्रिउ बूंद मुखि पईआ ॥१॥ मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥२॥ हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥३॥ कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ अनेक

जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥४॥ सेज इक इको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ ॥ गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ ॥५॥ करि करि किरिआचार वधाइे मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥६॥ पूरब जनमि भगति करि आइे गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥ भगति भगति करते हरि पाइिआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥७॥ प्रभि आणि आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी बाह पकरि नानक कढि लईआ ॥८॥६॥२॥१॥६॥९॥

रागु बिलावलु महला ५ असटपदी घरु १२ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ तजि आन सरणि गही ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ चरन कमल अपार ॥ हउ जाउ सद बलिहार ॥ मनि प्रीति लागी ताहि ॥ तजि आन कतहि न जाहि ॥१॥ हरि नाम रसना कहन ॥ मल पाप कलमल दहन ॥ चड़ि नाव संत उधारि ॥ भै तरे सागर पारि ॥२॥ मनि डोरि प्रेम परीति ॥ इिह संत निरमल रीति ॥ तजि गइे पाप बिकार ॥ हरि मिले प्रभ निरंकार ॥३॥ प्रभ पेखीऔ बिसमाद ॥ चखि अनद पूरन साद ॥ नह डोलीऔ इित ऊत ॥ प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥४॥ तिन् नाहि नरक निवासु ॥ नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ ते जमु न पेखहि नैन ॥ सुनि मोहे अनहत बैन ॥५॥ हरि सरणि सूर गुपाल ॥ प्रभ भगत वसि दइिआल ॥ हरि निगम लहहि न भेव ॥ नित करहि मुनि जन सेव ॥६॥ दुख दीन दरद निवार ॥ जा की महा बिखड़ी कार ॥ ता की मिति न जानै कोइि ॥ जलि थलि महीअलि सोइि ॥७॥ करि बंदना लख बार ॥ थकि परिए प्रभ दरबार ॥ प्रभ करहु साधू धूरि ॥ नानक मनसा पूरि ॥८॥१॥ बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जनम मरन निवारि ॥ हारि परिए दुआरि ॥ गहि चरन साधू संग ॥ मन मिसट हरि हरि रंग ॥

करि दइिआ लेहु लड़ि लाइि ॥ नानका नामु धिआइि ॥१॥ दीना नाथ दइिआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइिआल ॥ जाचउ संत रवाल ॥१॥ रहाउ ॥ संसारु बिखिआ कूप ॥ तम अगिआन मोहत घूप ॥ गहि भुजा प्रभ जी लेहु ॥ हरि नामु अपुना देहु ॥ प्रभ तुझ बिना नही ठाउ ॥ नानका बलि बलि जाउ ॥२॥ लोभि मोहि बाधी देह ॥ बिनु भजन होवत खेह ॥ जमदूत महा भइिआन ॥ चित गुपत करमहि जान ॥ दिनु रैनि साखि सुनाइि ॥ नानका हरि सरनाइि ॥३॥ भै भंजना मुरारि ॥ करि दइिआ पतित उधारि ॥ मेरे दोख गने न जाहि ॥ हरि बिना कतहि समाहि ॥ गहि एट चितवी नाथ ॥ नानका दे रखु हाथ ॥४॥ हरि गुण निधे गोपाल ॥ सरब घट प्रतिपाल ॥ मनि प्रीति दरसन पिआस ॥ गोबिंद पूरन आस ॥ इिक निमख रहनु न जाइि ॥ वड भागि नानक पाइि ॥५॥ प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ मनि प्रीति चंद चकोर ॥ जिउ मीन जल सिउ हेतु ॥ अलि कमल भिन्नु न भेतु ॥ जिउ चकवी सूरज आस ॥ नानक चरन पिआस ॥६॥ जिउ तरुनि भरत परान ॥ जिउ लोभीऐ धनु दानु ॥ जिउ दूध जलहि संजोगु ॥ जिउ महा खुधिआरथ भोगु ॥ जिउ मात पूतहि हेतु ॥ हरि सिमरि नानक नेत ॥७॥ जिउ दीप पतन पतंग ॥ जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ मैगलहि कामै बंधु ॥ जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ जिउ जूआर बिसनु न जाइि ॥ हरि नानक इिहु मनु लाइि ॥८॥ कुरंक नादै नेहु ॥ चातृकु चाहत मेहु ॥ जन जीवना सतसंगि ॥ गोबिदु भजना रंगि ॥ रसना बखानै नामु ॥ नानक दरसन दानु ॥९॥ गुन गाइि सुनि लिखि देइि ॥ सो सरब फल हरि लेइि ॥ कुल समूह करत उधारु ॥ संसारु उतरसि पारि ॥ हरि चरन बोहिथ ताहि ॥ मिलि साधसंगि जसु गाहि ॥ हरि पैज रखै मुरारि ॥ हरि नानक सरनि दुआरि ॥१०॥२॥

बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इेकम इेकंकारु निराला ॥ अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ खोजत खोजत

घटि घटि देखिआ ॥ जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ गुर परसादि परम पदु पाई ॥१॥ किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ गुर कै सबदि महलु घरु दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ दूजै भाइ लगे पछुताणे ॥ जम दरि बाधे आवण जाणे ॥ किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ सिरि जमकालु सि चोटा खाहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ पाखंडि कीनै मुकति न होइ ॥२॥ आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥ धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥ जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ अवरु न दूजा सिरजणहारा ॥३॥ त्रितीआ ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ देवी देव उपाए वेसा ॥ जोती जाती गणत न आवै ॥ जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥४॥ चउथि उपाए चारे बेदा ॥ खाणी चारे बाणी भेदा ॥ असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ तीनि समावै चउथै वासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥५॥ पंचमी पंच भूत बेताला ॥ आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ इकि भ्रमि भूखे मोह पिआसे ॥ इकि रसु चाखि सबदि त्रिपतासे ॥ इकि रंगि राते इकि मरि धूरि ॥ इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥६॥ झूठे कउ नाही पति नाउ ॥ कबहु न सूचा काला काउ ॥ पिंजरि पंखी बंधिआ कोइ ॥ छेरीं भरमै मुकति न होइ ॥ तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥ गुरमति मेले भगति द्रिड़ाए ॥७॥ खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ अनहद सबदु निराला वाजे ॥ जे प्रभ भावै ता महलि बुलावै ॥ सबदे भेदे तउ पति पावै ॥ करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ साचै साचे साचि समावहि ॥८॥ सपतमी सतु संतोखु सरीरि ॥ सात समुंद भरे निरमल नीरि ॥ मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ गुर कै सबदि पावै सभि पारि ॥ मनि साचा मुखि साचउ भाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥९॥ असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ सचु निहकेवलु करमि अराधै ॥ पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ तही निरंजनु साचो नाउ ॥ तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥१०॥ नाउ नउमी नवे नाथ नव खंडा ॥ घटि घटि नाथु

महा बलवंडा ॥ आई पूता इहु जगु सारा ॥ प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ आदि जुगादी है भी होगु ॥ एहु अपरंपरु करणै जोगु ॥११॥ दसमी नामु दानु इसनानु ॥ अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ जिउ तागा जगु इेवै जाणहु ॥ असथिरु चीतु साचि रंगु माणहु ॥१२॥ इेकादसी इकु रिदै वसावै ॥ ह्मिसा ममता मोहु चुकावै ॥ फलु पावै ब्रतु आतम चीनै ॥ पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ सूचै साचे ना लागै मलु ॥१३॥ जह देखउ तह इेको इेका ॥ होरि जीअ उपाइे वेको वेका ॥ फलोहार कीइे फलु जाइि ॥ रस कस खाइे सादु गवाइि ॥ कूड़ै लालचि लपटै लपटाइि ॥ छूटै गुरमुखि साचु कमाइि ॥१४॥ दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ जागतु जागि रहै लिव लाइि ॥ गुर परचै तिसु कालु न खाइि ॥ अतीत भइे मारे बैराई ॥ प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥१५॥ दुआदसी दइिआ दानु करि जाणै ॥ बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ बरती बरत रहै निहकाम ॥ अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ तीनि भवण महि इेको जाणै ॥ सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥१६॥ तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ अंमृतु मूलु सिखरि लिव तारै ॥ डर डरि मरै न बूडै कोइि ॥ निडरु बूडि मरै पति खोइि ॥ डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥१७॥ चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस सत काल समावै ॥ ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ चउदसि भवन पाताल समाइे ॥ खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाइे ॥१८॥ अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ बूझहु गिआनी सबदु बीचारि ॥ ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ करि करि वेखै करता सोई ॥ गुर ते दीसै सो तिस ही माहि ॥ मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥१९॥ घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ ममता जाल ते रहै उदासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥२०॥१॥

बिलावलु महला ३ वार सत घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ आपे वरतै अवरु न कोई ॥ एति पोति जगु रहिआ परोई ॥ आपे करता करै सु होई ॥ नामि रते सदा सुखु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥१॥ हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ हरि अगम अगोचरु अपरंपर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥१॥ रहाउ ॥ सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ तिस की कीमति कही न जाइ ॥ आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥२॥ मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ हउमै ममता सबदि जलाइ ॥३॥ बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ दरि सचै सद सोभा पाए ॥ नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥४॥ लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ आपे देवै देवणहारु ॥ जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ॥ गुर परसादी आपु गवाईऐ ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥५॥ वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ सभना करते तेरी टेका ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥६॥ सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ सचु संजमु करणी है कार ॥ वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥७॥ छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥ सचु करणी साचि लिव लाए ॥८॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ

॥ तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ इेकस ते दूजा नाही कोइ ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होइ ॥६॥ पंद्रह थितंी तै सत वार ॥ माहा रुती आवहि वार वार ॥ दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥ आवा गउणु कीआ करतारि ॥ निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥ नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥१०॥१॥ बिलावलु महला ३ ॥ आदि पुरखु आपे सृसटि साजे ॥ जीअ जंत माइिआ मोहि पाजे ॥ दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ आवहि जावहि मरहि अभागे ॥ सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ परपंचु चूकै सचि समाइ ॥१॥ जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ ता कै मनि वसिआ प्रभु इेकु ॥१॥ रहाउ ॥ सृसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥ सिध साधिक जे को कहै कहाइे ॥ भरमे भूला आवै जाइे ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ हउमै मारे ता दरु सूझै ॥२॥ इेकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ इेको वरतै अवरु न बीआ ॥ दूजे ते जे इेको जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ सतिगुरु भेटे ता इेको पाइे ॥ विचहु दूजा ठाकि रहाइे ॥३॥ जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ कउणु डरै डरु किस का होइ ॥४॥ गुरमती साँति वसै सरीर ॥ सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर ॥ आवै न जाइ ना दुखु पाइे ॥ नामे राते सहजि समाइे ॥ नानक गुरमुखि वेखै हदूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥५॥ इिकि सेवक इिकि भरमि भुलाइे ॥ आपे करे हरि आपि कराइे ॥ इेको वरतै अवरु न कोइ ॥ मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ दरि साचै साचे वीचारी ॥६॥ थिती वार सभि सबदि सुहाइे ॥ सतिगुरु सेवे ता फलु पाइे ॥ थिती वार सभि आवहि जाहि ॥ गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ थिती वार ता जा सचि राते ॥ बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥७॥ मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ इेकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ अचेत पिंडी अगिआन अंधारु ॥ बिनु सबदै किउ पाइे पारु ॥ आपि उपाइे उपावणहारु ॥ आपे कीतोनु गुर वीचारु ॥८॥ बहुते भेख करहि भेखधारी ॥ भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ अैथै

सुखु न आगै होइ ॥ मनमुख मुहे अपणा जनमु खोइ ॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाइे ॥ घर ही अंदरि सचु महलु पाइे ॥६॥ आपे पूरा करे सु होइ ॥ इेहि थिती वार दूजा दोइ ॥ सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥ थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥१०॥२॥

बिलावलु महला १ छंत दखणी

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुंध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि सीगारीआ ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिन्नती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ ॥ नानक मुंध नवेल सुंदरि देखि पिरु साधारिआ ॥१॥ सचि नवेलड़ीइे जोबनि बाली राम ॥ आउ न जाउ कही अपने सह नाली राम ॥ नाह अपने संगि दासी मै भगति हरि की भावइे ॥ अगाधि बोधि अकथु कथीऐ सहजि प्रभ गुण गावइे ॥ राम नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ गुरि सबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥२॥ स्रीधर मोहिअड़ी पिर संगि सूती राम ॥ गुर कै भाइ चलो साचि संगूती राम ॥ धन साचि संगूती हरि संगि सूती संगि सखी सहेलीआ ॥ इक भाइ इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरंजनो ॥ सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥३॥ जोति सबाइड़ीइे तृभवण सारे राम ॥ घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ अलख अपार अपारु साचा आपु मारि मिलाईऐ ॥ हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईऐ ॥ दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि तारणहारिआ ॥ हरि नामु अंमृतु चाखि तृपती नानका उर धारिआ ॥४॥१॥ बिलावलु महला १ ॥ मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥ मोही प्रेम पिरे प्रभि अबिनासी राम ॥ अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ ॥ किरपालु सदा दइआलु दाता

जीआ अंदरि तूं जीऔ ॥ मै अवरु गिआनु न धिआनु पूजा हरि नामु अंतरि वसि रहे ॥ भेखु भवनी हठु न जाना नानका सचु गहि रहे ॥१॥ भिन्नड़ी रैणि भली दिनस सुहाइे राम ॥ निज घरि सूतड़ीइे पिरमु जगाइे राम ॥ नव हाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ ॥ तजि कूड़ु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी लोकाणीआ ॥ मै नामु हरि का हारु कंठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु भाणिआ ॥२॥ जागु सलोनड़ीइे बोलै गुरबाणी राम ॥ जिनि सुणि मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ अकथ कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझइे ॥ एहु सबदि समाइे आपु गवाइे तृभवण सोझी सूझइे ॥ रहै अतीतु अपरंपरि राता साचु मनि गुण सारिआ ॥ एहु पूरि रहिआ सरब ठाई नानका उरि धारिआ ॥३॥ महलि बुलाइड़ीइे भगति सनेही राम ॥ गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रै लोक नाथु पछाणइे ॥ मनु डीगि डोलि न जाइि कत ही आपणा पिरु जाणइे ॥ मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरए ॥ साचि सूचा सदा नानक गुर सबदि झगरु निबेरए ॥४॥२॥

छंत बिलावलु महला ४ मंगल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरा हरि प्रभु सेजै आइिआ मनु सुखि समाणा राम ॥ गुरि तुठै हरि प्रभु पाइिआ रंगि रलीआ माणा राम ॥ वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥१॥ निंमाणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ गुरमुखि आपु गवाइिआ नित हरि हरि जापै राम ॥ मेरे हरि प्रभ भावै सो करै हरि रंगि हरि रापै राम ॥ जनु नानकु सहजि मिलाइिआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥२॥ माणस जनमि हरि पाईऔ हरि रावण वेरा राम ॥ गुरमुखि मिलु सोहागणी रंगु होइि घणेरा राम ॥ जिन माणस जनमि न पाइिआ तिन्ह भागु मंदेरा राम ॥ हरि हरि हरि हरि राखु प्रभ नानकु जनु तेरा राम ॥३॥ गुरि हरि प्रभु अगमु दृड़ाइिआ मनु तनु रंगि भीना राम ॥

भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ बिनु हरि नाम न जीवदे जिउ जल बिनु मीना राम ॥ सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥४॥१॥३॥ बिलावलु महला ४ सलोकु ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु मनि वसै वडभागु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥१॥ छंत ॥ मेरा हरि प्रभु रावणि आईआ हउमै बिखु झागे राम ॥ गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम ॥ अंतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥१॥ हरि प्रभु हरि मनि भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ जोति परगटिआई राम ॥ जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥२॥ धन हरि प्रभि पिआरै रावीआ जाँ हरि प्रभ भाई राम ॥ अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम ॥ जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥३॥ हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम ॥ धनु धन्नु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ जिन्‍ वडभागीआ वडभागु है हरि हरि उर धारी राम ॥ जन नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥४॥२॥४॥

बिलावलु महला ५ छंत   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मंगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरन पते ॥ सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥१॥ भइआ समाहड़ा हरि रतनु विसाहा राम ॥ खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ बीचारो ॥ इकि चिति इकि मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ कर जोड़ि प्रभ पहि करि बिन्नती मिलै हरि जसु लाहा ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा

मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥२॥ साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥ सुखह समूह भइिआ गइिआ विजोगो राम ॥ मिलि संत आइे प्रभ धिआइे बणे अचरज जाञीआँ ॥ मिलि इिकत्र होइे सहजि ढोइे मनि प्रीति उपजी माञीआ ॥ मिलि जोति जोती एति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ बिनवंति नानक सभ संति मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥३॥ भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ प्रभु घरि आइिअड़ा गुर चरणी लागी राम ॥ गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इिछा पुन्नीआ ॥ मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले कंत विछुंनिआ ॥ आन्नद अनदिनु वजहि वाजे अहं मति मन की तिआगी ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी संतसंगि लिव लागी ॥४॥१॥ बिलावलु महला ५ ॥ भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥ अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ आन्नद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ रिधि सिधि सुधा रसु अंमृतु भगति भरे भंडारा ॥ बिनवंति नानक बलिहारि वंञा पारब्रहम प्रान अधारा ॥१॥ सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु गावह राम ॥ मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ करि प्रेमु रावह तिसै भावह इिक निमख पलक न तिआगीऐ ॥ गहि कंठि लाईऐ नह लजाईऐ चरन रज मनु पागीऐ ॥ भगति ठगउरी पाइि मोहह अनत कतहू न धावह ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥२॥ बिसमन बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ गहि भुजा लीन्ी दासि कीन्ी अंकुरि उदोतु जणाइिआ ॥ मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आइिआ ॥ दृसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ बिनवंति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी ॥३॥ सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥ ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ इेकु इेकु वखाणीऐ ॥ आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ बिनवंति नानक सेई जाणहि जिन्ी हरि रसु पीआ ॥४॥२॥

बिलावलु महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मंगलु गावह ॥ तजि मानु सखी तजि मानु सखी मतु आपणे प्रीतम भावह ॥ तजि मानु मोहु बिकारु दूजा सेवि इकु निरंजनो ॥ लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो ॥ होइ दास दासी तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ नानकु पइअंपै करहु किरपा तामि मंगलु गावा ॥१॥ अंमृतु प्रिअ का नामु मै अंधुले टोहनी ॥ एह जोहै बहु परकार सुंदरि मोहनी ॥ मोहनी महा बचित्र चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥ होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ गृह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ नानकु पइअंपै दइआ धारहु मै नामु अंधुले टोहनी ॥२॥ मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तिउ रखहु ॥ चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ नह चतुरि सुघरि सुजान बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ नह रूप धूप न नैण बंके जह भावै तह रखु तुही ॥ जै जै जइअंपहि सगल जा कउ करुणापति गति किनि लखहु ॥ नानकु पइअंपै सेव सेवकु जिउ जानहु तिउ मोहि रखहु ॥३॥ मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै ॥ मोहि चातृक तुम् बूंद तृपतउ मुखि परै ॥ मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपते ॥ लाडिले लाड लडाइ सभ महि मिलु हमारी होइ गते ॥ चीति चितवउ मिटु अंधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ नानकु पइअंपै प्रिअ संगि मेली मछुली नीरु न वीसरै ॥४॥ धनि धंनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥ हर हरा सुआमी सुखह गामी अनद मंगल रसु घणा ॥ नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुन भणा ॥ मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा ॥ नानकु पइअंपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरंपरा ॥५॥१॥३॥

बिलावलु महला ५ छंत मंगल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ सुंदर साँति

दइिआल प्रभ सरब सुखा निधि पीउ ॥ सुख सागर प्रभ भेटिऐ नानक सुखी होत इहु जीउ ॥१॥ छंत ॥ सुख सागर प्रभु पाईऐ जब होवै भागो राम ॥ माननि मानु वञाईऐ हरि चरणी लागो राम ॥ छोडि सिआनप चातुरी दुरमति बुधि तिआगो राम ॥ नानक पउ सरणाई राम राइ थिरु होइि सुहागो राम ॥१॥ सो प्रभु तजि कत लागीऐ जिसु बिनु मरि जाईऐ राम ॥ लाज न आवै अगिआन मती दुरजन बिरमाईऐ राम ॥ पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईऐ राम ॥ नानक भगति भाउ करि दइिआल की जीवन पदु पाईऐ राम ॥२॥ स्री गोपालु न उचरहि बलि गईइे दुहचारणि रसना राम ॥ प्रभु भगति वछलु नह सेवही काइिआ काक ग्रसना राम ॥ भ्रमि मोही दूख न जाणही कोटि जोनी बसना राम ॥ नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा क्रिम भसमा राम ॥३॥ लाइि बिरहु भगवंत संगे होइि मिलु बैरागनि राम ॥ चंदन चीर सुगंध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ ईत ऊत नह डोलीऐ हरि सेवा जागनि राम ॥ नानक जिनि प्रभु पाइिआ आपणा सा अटल सुहागनि राम ॥४॥१॥४॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ॥ गुन गोविद सद गाईअहि पारब्रहम कै रंगे राम ॥ सो प्रभु सद ही सेवीऐ पाईअहि फल मंगे राम ॥ नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरंगे राम ॥१॥ इकु तिलु प्रभू न वीसरै जिनि सभु किछु दीना राम ॥ वडभागी मेलावड़ा गुरमुखि पिरु चीन्हा राम ॥ बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥ नामु जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥२॥ किआ गुण तेरे कहि सकउ प्रभ अंतरजामी राम ॥ सिमरि सिमरि नाराइिणै भइे पारगरामी राम ॥ गुन गावत गोविंद के सभ इिछ पुजामी राम ॥ नानक उधरे जपि हरे सभहू का सुआमी राम ॥३॥ रस भिंनिअड़े अपुने राम संगे से लोइिण नीके राम ॥ प्रभ पेखत इिछा पुन्नीआ मिलि साजन जी के राम ॥ अंम्रित रसु हरि पाइिआ बिखिआ रस फीके राम ॥ नानक जलु जलहि समाइिआ जोती जोति मीके राम ॥४॥२॥५॥६॥

बिलावलु की वार महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ उपदेसु गुरू सुणि मंनिआ धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरि उरि लिव लागु ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु ॥ अगिआनु अंधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥१॥ मः ३ ॥ बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥२॥ पउड़ी ॥ तू हरि प्रभु आपि अगंमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ तुधु आपे ताड़ी लाईऐ आपे गुण गाइआ ॥ हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥ जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥१॥ सलोक मः ३ ॥ दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ॥ मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥ आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥१॥ मः ३ ॥ बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ सदा बिलावलु अनन्दु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सभना जीआ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अनन्दु घरि ॥ हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टंग धरि ॥ हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ

झखि झखि पवै झड़ि ॥२॥ सलोक मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदहि ते ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ गुण रवहि गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहमु बिंदहि चितु लाइ ॥ नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥ मनहठि करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ गुरमुखि जनमु सफलु है जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ नानक नदरी नदरि करे ता नाम धनु पलै पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईऐ ॥ जि वसतु मंगीऐ साई पाईऐ जे नामि चितु लाईऐ ॥ गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरू पासि ता सरब सुखु पाईऐ ॥ गुरु पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईऐ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ॥३॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ गुर का सबदु अंमृतु है सभ तृसना भुख गवाए ॥ हरि रसु पी संतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ सचु धिआइ अमरा पदु पाइआ अनहद सबद वजाए ॥ सचो दह दिसि पसरिआ गुर कै सहजि सुभाए ॥ नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥१॥ मः ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥२॥ पउड़ी ॥ गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥ सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अंदरि हिरदै भाई ॥ निंदक दुसट वडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ भला न सुखाई ॥ किआ होवै किस ही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ जि गल करते भावै सा नित नित चड़ै सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥४॥ सलोक मः ३ ॥ ध्रिगु इहु आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥ हरि सुखु

पलरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाइे ॥ मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाइे ॥ कारज सिधि न होवनी अंति गइिआ पछुताइे ॥ जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआइे ॥ नामि रते जन सदा सुखु पाइिन्हि जन नानक तिन बलि जाइे ॥१॥ मः ३ ॥ आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु ॥ नानक गुर परसादी इेहु मनु ताँ तरै जा छोडै अहंकारु ॥ आसा मनसा मारे निरासु होइि गुर सबदी वीचारु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिथै जाईअै जगत महि तिथै हरि साई ॥ अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई ॥ कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई ॥ सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाईअै जे हरि प्रभु बखस करेइि ॥ एपावा सिरि एपाउ है नाउ परापति होइि ॥ अंदरु सीतलु साँति है हिरदै सदा सुखु होइि ॥ अंमृतु खाणा पैन्हणा नानक नाइि वडिआई होइि ॥१॥ मः ३ ॥ इे मन गुर की सिख सुणि पाइिहि गुणी निधानु ॥ सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै जाइि अभिमानु ॥ नानक नदरी पाईअै अंमृतु गुणी निधानु ॥२॥ पउड़ी ॥ जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीइे ॥ जो किछु हरि करावै सु एइि करहि सभि हरि के अरथीइे ॥ सो अैसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ सृसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीइे ॥ हरि सेवे की अैसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइिआ नगरी दुसमन दूत सभि मारि कढीइे ॥ हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीइे ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ अंदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥ करमी सतिगुरु भेटीअै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक सहजे सुखु होइि अंदरहु भ्रमु भउ भागै ॥१॥ मः ३ ॥ गुरमुखि सदा

हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु जपत सुखु पाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अंधेरु चुकाइआ ॥२॥ मः ३ ॥ मनमुख मैले मरहि गवार ॥ गुरमुखि निरमल हरि राखिआ उर धारि ॥ भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ॥ दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का बीचार ॥ हरि नामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥३॥ पउड़ी ॥ जिस नो हरि भगति सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ तिस की मुहताजी लोकु कढदा होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ भगत जना कउ सनमुखु होवै सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेड़ि न जाहु ॥ जन नानकि हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ गुर परसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल उधरे धंनु जणेदी माइआ ॥ सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ॥ मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नानक नामि रते सेई जन समधे जि आपे बखसि मिलाइआ ॥१॥ मः ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिनी गुरमुखि हरि नाम धनु न खटिए से देवालीए जुग माहि ॥ एइ मंगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ पराई बखीली करहि आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ जिसु धन कारणि चुगली करहि सो धनु

चुगली हथि न आवै एहि भावै तिथै जाहि ॥ गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु करमहीण लै न सकहि होर थै देस दिसंतरि हरि धनु नाहि ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि संसा मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पन्नै पाइ ॥१॥ मः ३ ॥ कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ ॥ अनदिनु जागै कदे न सोवै सहजे अंमृतु पिआउ ॥ मीठा बोले अंमृत बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥ निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि धनु रतन जवेहरी सो गुरि हरि धनु हरि पासहु देवाइआ ॥ जे किसै किहु दिसि आवै ता कोई किहु मंगि लइे अकै कोई किहु देवाइे इेहु हरि धनु जोरि कीतै किसै नालि न जाइ वंडाइआ ॥ जिस नो सतिगुर नालि हरि सरधा लाइे तिसु हरि धन की वंड हथि आवै जिस नो करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ इिसु हरि धन का कोई सरीकु नाही किसै का खतु नाही किसै कै सीव बन्नै रोलु नाही जे को हरि धन की बखीली करे तिस का मुहु हरि चहु कुंडा विचि काला कराइआ ॥ हरि के दिते नालि किसै जोरु बखीली न चलई दिहु दिहु नित नित चड़ै सवाइआ ॥९॥ सलोक मः ३ ॥ जगतु जलम्दा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥ जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥ नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥१॥ मः ३ ॥ हउमै माइिआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ ना इिह मारी न मरै ना इिह हटि विकाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीऐ ता इिह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइिआ का मारणु सबदु है गुरमुखि पाइिआ जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुर की वडिआई सतिगुरि दिती धुरहु हुकमु बुझि नीसाणु ॥ पुती भातीई जावाई सकी अगहु पिछहु टोलि डिठा लाहिएनु सभना का अभिमानु ॥ जिथै को वेखै तिथै मेरा सतिगुरू हरि बखसिएसु सभु जहानु ॥ जि सतिगुर नो मिलि मन्ने सु हलति पलति सिझै जि वेमुखु होवै सु फिरै भरिसट थानु ॥

जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ पउदी भिति देखि कै सभि आइ पड़े सतिगुर की पैरी लाहिएनु सभना किअहु मनहु गुमानु ॥१०॥ सलोक मः १ ॥ कोई वाहे को लुणै को पाइे खलिहानि ॥ नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥१॥ मः १ ॥ जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ नानक जो भावै सो होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ ॥ काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ अंमृत नामु निधानु कंठि उरि धारिआ ॥ नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥११॥ सलोक मः ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ कूड़े कहण कहन्हि ॥ पंच चोर तिना घरु मुहन्हि हउमै अंदरि संन्हि ॥ साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्हि ॥ जिन्ही अंमृतु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंन्हि ॥ दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करंन्हि ॥ नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहन्हि ॥ पइऐ किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहन्हि ॥१॥ मः ३ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ सासि गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु तिसु ॥ नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ जिन्ह कउ पूरबि लिखिआ रसु संत जना सिउ तिसु ॥२॥ पउड़ी ॥ जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥ सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ सचु सहजु अनदु सतिगुरू पासि सची गुर मणीआ ॥ नानक संत सवारे पारब्रहमि सचे जिउ बणिआ ॥१२॥ सलोक मः ३ ॥ अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ गुर की सेवा विसरी किउ मनु रहै हजूरि ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥१॥ मः ३ ॥ हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरनु परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥२॥

पउड़ी ॥ कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥ पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लइे सतसंगति नालि रलावै ॥ जिउ मीहि वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जलु जाइि पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवितु पावनु होइि जावै ॥ इेह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि जितु मिलिअै तिसना भुख उतरै हरि साँति तड़ आवै ॥ नानक इिहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जि सतिगुरू नो मन्नै सु सभनाँ भावै ॥१३॥१॥ सुधु ॥

बिलावलु बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ की ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

अैसो इिहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥१॥ रहाउ ॥ बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥१॥ धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम करि मारै अैसो कालु बडानी रे ॥२॥ हरि के सेवक जो हरि भाइे तिन्ह की कथा निरारी रे ॥ आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥३॥ पुत्र कलत्र लछिमी माइिआ इिहै तजहु जीअ जानी रे ॥ कहत कबीरु सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥४॥१॥ बिलावलु ॥ बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ हरि गुन कथत सुनत बउरानो ॥१॥ मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मै बउरा ॥ मै बिगरिए बिगरै मति अउरा ॥१॥ रहाउ ॥ आपि न बउरा राम कीए बउरा ॥ सतिगुरु जारि गइिए भ्रमु मोरा ॥२॥ मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भरमि भूलउ मति कोई ॥३॥ सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ आपु पछानै त इेकै जानै ॥४॥ अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ कहि कबीर रामै रंगि राता ॥५॥२॥ बिलावलु ॥ गृहु तजि बन खंड जाईअै चुनि खाईअै कंदा ॥ अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥१॥ किउ छूटउ कैसे तरउ भवजल निधि भारी ॥ राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुमारी ॥१॥ रहाउ ॥ बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ अनिक जतन करि

राखीऔ फिरि फिरि लपटाई ॥२॥ जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका ॥ इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका ॥३॥ कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥४॥३॥ बिलावलु ॥ नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ गइए ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिए ॥१॥ हमारे कुल कउने रामु कहिए ॥ जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइए ॥१॥ रहाउ ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु इेकु भइए ॥ सात सूत इिनि मुडींइे खोइे इिहु मुडीआ किउ न मुइिए ॥२॥ सरब सुखा का इेकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइिए ॥ संत प्रहलाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिए ॥३॥ घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइिए ॥ कहत कबीरु सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिए ॥४॥४॥ बिलावलु ॥ कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ इे भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरो जनु होइि सोइि कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न अंदाजा ॥१॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ कहि कबीर संसा भ्रमु चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा ॥२॥५॥ बिलावलु ॥ राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥१॥ रहाउ ॥ अमर जानि संची इिह काइिआ इिह मिथिआ काची गगरी ॥ जिनहि निवाजि साजि हम कीइे तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥१॥ संधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ कहि कबीर इिह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥२॥६॥ बिलावलु ॥ दरमादे ठाढे दरबारि ॥ तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोल्हि किवार ॥१॥ रहाउ ॥ तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन्ह सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ मागउ काहि रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतारु ॥१॥ जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ कृपा भई है अपार ॥ कहि कबीर तुम संम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥२॥७॥ बिलावलु ॥ डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ भ्रम कै

भाइि भवै भेखधारी ॥१॥ आसनु पवन दूरि करि बवरे ॥ छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे ॥१॥ रहाउ ॥ जिह तू जाचहि सो तृभवन भोगी ॥ कहि कबीर केसौ जगि जोगी ॥२॥८॥ बिलावलु ॥ इनि् माइिआ जगदीस गुसाई तुम्रे चरन बिसारे ॥ किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु ध्रिगु इिह माइिआ ध्रिगु ध्रिगु मति बुधि फन्नी ॥ इिस माइिआ कउ दृड़ु करि राखहु बाँधे आप बचन्नी ॥१॥ किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना ॥ कहि कबीर ते अंति बिगूते आइिआ कालु निदाना ॥२॥६॥ बिलावलु ॥ सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप ॥ परम जोति पुरखोतमो जा कै रेख न रूप ॥१॥ रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥१॥ रहाउ ॥ आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥ जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥२॥ मिथिआ करि माइिआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥३॥१०॥ बिलावलु ॥ जनम मरन का भ्रमु गइिआ गोबिद लिव लागी ॥ जीवत सुंनि समानिआ गुर साखी जागी ॥१॥ रहाउ ॥ कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ कासी फूटी पंडिता धुनि कहाँ समाई ॥१॥ तृकुटी संधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ अैसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥२॥ आपु आप ते जानिआ तेज तेजु समाना ॥ कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥३॥११॥ बिलावलु ॥ चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥ मानौ सभ सुख नउ निधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ तब इिह मति जउ सभ महि पेखै कुटिल गाँठि जब खोलै देव ॥ बारं बार माइिआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥१॥ जह उहु जाइि तही सुखु पावै माइिआ तासु न झोलै देव ॥ कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीए लै देव ॥२॥१२॥

बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥

दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥१॥ गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥ राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥१॥ रहाउ ॥ नामदेइ सिमरनु करि जानाँ ॥ जगजीवन सिउ जीउ समानाँ ॥२॥१॥

बिलावलु बाणी रविदास भगत की ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असट दसा सिधि कर तलै सभ कृपा तुमारी ॥१॥ तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥१॥ बिलावलु ॥ जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१॥ धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२॥ पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि एइ ॥३॥२॥

बाणी सधने की रागु बिलावलु ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

नृप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥१॥ तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै ॥१॥ रहाउ ॥ इेक बूंद जल कारने चातृकु दुखु पावै ॥ प्रान गइे सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥ प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥ बूडि मूइे नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥३॥ मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥ अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥४॥१॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥

जे मनि चिति आस रखहि हरि ऊपरि ता मन चिंदे अनेक अनेक फल पाई ॥ हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ हरि तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥१॥ मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो दीसै माइिआ मोह कुटंबु सभु मत तिस की आस लगि जनमु गवाई ॥ इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुड़े इन्ह का वाहिआ कछु न वसाई ॥ मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की जो तुझु तारै तेरा कुटंबु सभु छडाई ॥२॥ जे किछु आस अवर करहि परमित्री मत तूं जाणहि तेरै कितै कंमि आई ॥ इह आस परमित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई ॥३॥ आसा मनसा सभ तेरी

मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि तृपताई ॥४॥१॥ गोंड महला ४ ॥ ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥१॥ मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥१॥ रहाउ ॥ जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने सुआमी पहि जो तुम्रे दूख ततकाल कटासा ॥ सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥२॥ जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ जितु दिनि उन्ह का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा ॥ मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥३॥ तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन्ह अंति छडाइे जिन्ह हरि प्रीति चितासा ॥ जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥४॥२॥ गोंड महला ४ ॥ हरि सिमरत सदा होइ अन्नदु सुखु अंतरि साँति सीतल मनु अपना ॥ जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥१॥ मेरे मन अनदिनु धिआइि नामु हरि जपना ॥ जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥१॥ रहाउ ॥ जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ जिन हरि धिआइिआ तिन हरि पाइिआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥२॥ सबदु पछाणि राम रसु पावहु एहु ऊतमु संतु भइिए बड बडना ॥ तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई एहु

घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना ॥३॥ जिस ते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुरना ॥ जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि रिदै हरी मोहि चरना ॥ ४॥३॥ गोंड महला ४ ॥ जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु ॥ हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥१॥ मेरे मन नामु हरी भजु सदा दीबाणु ॥ जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥१॥ रहाउ ॥ जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रंगु कसुंभ कचाणु ॥ हरि सति निरंजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि दरगह पावहि तू माणु ॥२॥ ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥३॥ एहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥ जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥४॥४॥ गोंड महला ४ ॥ हरि अंतरजामी सभतै वरतै जेहा हरि कराइे तेहा को करईऐ ॥ सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभ दू रखि लईऐ ॥१॥ मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईऐ ॥ हरि बिनु को मारि जीवालि न साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईऐ ॥ हरि इेको बोलै हरि इेकु बुलाइे गुरि पूरै हरि इेकु दिखईऐ ॥२॥ हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईऐ ॥ निहकपट सेवा कीजै हरि केरी ताँ मेरे मन सरब सुख पईऐ ॥३॥ जिस दै वसि सभु किछु सो सभ दू वडा सो मेरे मन सदा धिअईऐ ॥ जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि सदा धिआइ तू तुधु लइे छडईऐ ॥४॥५॥ गोंड महला ४ ॥ हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ तृखावंतु बिनु नीर ॥१॥ मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥१॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रीतम

की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥२॥ मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥३॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि साँति सरीर ॥४॥६॥ छका १॥

राग़ु गोंड महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु करता सभु भुगता ॥१॥ रहाउ ॥ सुनतो करता पेखत करता ॥ अदृसटो करता दृसटो करता ॥ एपति करता परलउ करता ॥ बिआपत करता अलिपतो करता ॥१॥ बकतो करता बूझत करता ॥ आवतु करता जातु भी करता ॥ निरगुन करता सरगुन करता ॥ गुर प्रसादि नानक समदृसटा ॥२॥१॥ गोंड महला ५ ॥ फाकिए मीन कपिक की निआई तू उरझि रहिए कसुंभाइिले ॥ पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइिले ॥१॥ मन समझु छोडि आवाइिले ॥ अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काइे पर कै जाइिले ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ मैगलु इंद्री रसि प्रेरिए तू लागि परिए कुटंबाइिले ॥ जिउ पंखी इकत्र होइि फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि धिआइिले ॥२॥ जैसे मीनु रसन सादि बिनसिए एहु मूठौ मूड़ लोभाइिले ॥ तू होआ पंच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइिले ॥३॥ होहु कृपाल दीन दुख भंजन सभि तुम्‍रे जीअ जंताइिले ॥ पावउ दानु सदा दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइिले ॥४॥२॥

राग़ु गोंड महला ५ चउपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जीअ प्रान कीइे जिनि साजि ॥ माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ बरतन कउ सभु किछु भोजन भोगाइि ॥ सो प्रभु तजि मूड़े कत जाइि ॥१॥ पारब्रहम की लागउ सेव ॥ गुर ते सुझै निरंजन देव ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि कीइे रंग अनिक परकार ॥ एपति परलउ निमख मझार ॥ जा की गति मिति कही न जाइि ॥ सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइि ॥२॥ आइि न जावै निहचलु धनी ॥ बेअंत गुना ता के केतक

गनी ॥ लाल नाम जा कै भरे भंडार ॥ सगल घटा देवै आधार ॥३॥ सति पुरखु जा को है नाउ ॥ मिटहि कोटि अघ निमख जसु गाउ ॥ बाल सखाई भगतन को मीत ॥ प्रान अधार नानक हित चीत ॥४॥१॥३॥ गोंड महला ५ ॥ नाम संगि कीनो बिउहारु ॥ नामो ही इसु मन का अधारु ॥ नामो ही चिति कीनी एट ॥ नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥१॥ रासि दीई हरि इेको नामु ॥ मन का इसटु गुर संगि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ नामु हमारे जीअ की रासि ॥ नामो संगी जत कत जात ॥ नामो ही मनि लागा मीठा ॥ जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥२॥ नामे दरगह मुख उजले ॥ नामे सगले कुल उधरे ॥ नामि हमारे कारज सीध ॥ नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥३॥ नामे ही हम निरभउ भइे ॥ नामे आवन जावन रहे ॥ गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥४॥२॥४॥ गोंड महला ५ ॥ निमाने कउ जो देतो मानु ॥ सगल भूखे कउ करता दानु ॥ गरभ घोर महि राखनहारु ॥ तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥१॥ अैसो प्रभु मन माहि धिआइि ॥ घटि अवघटि जत कतहि सहाइि ॥१॥ रहाउ ॥ रंकु राउ जा कै इेक समानि ॥ कीट हसति सगल पूरान ॥ बीए पूछि न मसलति धरै ॥ जो किछु करै सु आपहि करै ॥२॥ जा का अंतु न जानसि कोइि ॥ आपे आपि निरंजनु सोइि ॥ आपि अकारु आपि निरंकारु ॥ घट घट घटि सभ घट आधारु ॥३॥ नाम रंगि भगत भइे लाल ॥ जसु करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंगि जन रहे अघाइि ॥ नानक तिन जन लागै पाइि ॥४॥३॥५॥ गोंड महला ५ ॥ जा कै संगि इहु मनु निरमलु ॥ जा कै संगि हरि हरि सिमरनु ॥ जा कै संगि किलबिख होहि नास ॥ जा कै संगि रिदै परगास ॥१॥ से संतन हरि के मेरे मीत ॥ केवल नामु गाईअै जा कै नीत ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै मंतृ हरि हरि मनि वसै ॥ जा कै उपदेसि भरमु भउ नसै ॥ जा कै कीरति निरमल सार ॥ जा की रेनु बाँछै संसार ॥२॥ कोटि पतित जा कै संगि उधार ॥ इेकु निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ सरब जीआँ का जानै भेउ ॥ कृपा निधान निरंजन देउ ॥३॥ पारब्रहम जब भइे कृपाल ॥ तब भेटे

गुर साध दइिआल ॥ दिनु रैणि नानकु नामु धिआइे ॥ सूख सहज आनन्द हरि नाइे ॥४॥४॥६॥ गोंड महला ५ ॥ गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥१॥ मत को भरमि भुलै संसारि ॥ गुर बिनु कोइि न उतरसि पारि ॥१॥ रहाउ ॥ भूले कउ गुरि मारगि पाइिआ ॥ अवर तिआगि हरि भगती लाइिआ ॥ जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥२॥ गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ अंधकार महि भइिआ प्रगास ॥ जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ गुर किरपा ते मुगध मनु मानिआ ॥३॥ गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ गुरु परमेसरु है भी होगु ॥ कहु नानक प्रभि इिहै जनाई ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥४॥५॥७॥ गोंड महला ५ ॥ गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ गुरू बिना मै नाही होर ॥ गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ जा की कोइि न मेटै दाति ॥१॥ गुरु परमेसरु इेको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥ रहाउ ॥ गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ गुर की सेवा पाइे मानु ॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥२॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ गुर का सेवकु दह दिसि जापै ॥३॥ गुर की महिमा कथनु न जाइि ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइि ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ गुर चरणी ता का मनु लाग ॥४॥६॥८॥ गोंड महला ५ ॥ गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु ॥ गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु ॥ गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥ सरब पूज चरन गुर सेउ ॥१॥ गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ अनदिनु जपउ गुरू गुर नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥ गुर की सरणि रहउ कर जोरि ॥ गुरू बिना मै नाही होरु ॥२॥ गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ अंधकार महि गुर मंत्रु उजारा ॥ गुर कै संगि सगल निसतारा ॥३॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी ॥ गुर की सेवा दूखु न लागी ॥ गुर का सबदु न मेटै कोइि ॥ गुरु

नानकु नानकु हरि सोइि ॥४॥७॥६॥ गोंड महला ५ ॥ राम राम संगि करि बिउहार ॥ राम राम राम प्रान अधार ॥ राम राम राम कीरतनु गाइि ॥ रमत रामु सभ रहिए समाइि ॥१॥ संत जना मिलि बोलहु राम ॥ सभ ते निरमल पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ राम राम धनु संचि भंडार ॥ राम राम राम करि आहार ॥ राम राम वीसरि नही जाइि ॥ करि किरपा गुरि दीआ बताइि ॥२॥ राम राम राम सदा सहाइि ॥ राम राम राम लिव लाइि ॥ राम राम जपि निरमल भइे ॥ जनम जनम के किलबिख गइे ॥३॥ रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ उचरत राम भै पारि उतारै ॥ सभ ते ऊच राम परगास ॥ निसि बासुर जपि नानक दास ॥४॥८॥१०॥ गोंड महला ५ ॥ उन कउ खसमि कीनी ठाकहारे ॥ दास संग ते मारि बिदारे ॥ गोबिंद भगत का महलु न पाइिआ ॥ राम जना मिलि मंगलु गाइिआ ॥१॥ सगल सृसटि के पंच सिकदार ॥ राम भगत के पानीहार ॥१॥ रहाउ ॥ जगत पास ते लेते दानु ॥ गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥ लूटि लेहि साकत पति खोवहि ॥ साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥२॥ पंच पूत जणे इिक माइि ॥ उतभुज खेलु करि जगत विआइि ॥ तीनि गुणा कै संगि रचि रसे ॥ इिन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥३॥ करि किरपा जन लीइे छडाइि ॥ जिस के से तिनि रखे हटाइि ॥ कहु नानक भगति प्रभ सारु ॥ बिनु भगती सभ होइि खुआरु ॥४॥६॥११॥ गोंड महला ५ ॥ कलि कलेस मिटे हरि नाइि ॥ दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ ॥ जपि जपि अंमृत नामु अघाइे ॥ संत प्रसादि सगल फल पाइे ॥१॥ राम जपत जन पारि परे ॥ जनम जनम के पाप हरे ॥१॥ रहाउ ॥ गुर के चरन रिदै उरि धारे ॥ अगनि सागर ते उतरे पारे ॥ जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥२॥ थान थन्नतरि इेको सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ करि किरपा जा कउ मति देइि ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइि ॥३॥ जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि ॥ ता कै हिरदै होइि प्रगासु ॥ भगति भाइि हरि कीरतनु करीअै ॥ जपि पारब्रहमु नानक निसतरीअै ॥४॥१०॥१२॥ गोंड

महला ५ ॥ गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ होइ रहीऐ सगल की रीना ॥ घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥१॥ इन बिधि रमहु गोपाल गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥१॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ तजि अभिमानु जानु प्रभु संगि ॥ साध प्रसादि हरि सिउ मनु रंगि ॥२॥ जिनि तूं कीआ तिस कउ जानु ॥ आगै दरगह पावै मानु ॥ मनु तनु निरमल होइ निहालु ॥ रसना नामु जपत गोपाल ॥३॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ साधू की मनु मंगै रवाला ॥ होहु दइआल देहु प्रभ दानु ॥ नानकु जपि जीवै प्रभ नामु ॥४॥११॥१३॥ गोंड महला ५ ॥ धूप दीप सेवा गोपाल ॥ अनिक बार बंदन करतार ॥ प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ गुर सुप्रसन्न भए वड भागि ॥१॥ आठ पहर गाईऐ गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुण रमत भए आनन्द ॥ पारब्रहम पूरन बखसंद ॥ करि किरपा जन सेवा लाए ॥ जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥२॥ करम धरम इहु ततु गिआनु ॥ साधसंगि जपीऐ हरि नामु ॥ सागर तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥३॥ राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ पंच दूत भागे बिकराल ॥ जूऐ जनमु न कबहू हारि ॥ नानक का अंगु कीआ करतारि ॥४॥१२॥१४॥ गोंड महला ५ ॥ करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ प्रभ किरपाल दइआल गोबिंद ॥ जीअ जंत सगले बखसिंद ॥१॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ पारब्रहम जपि सदा निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ घट घट अंतरि सरब समाही ॥ अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुमारै ॥२॥ अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ मन बाँछत पूरन फल पाए ॥३॥ करन कारन समरथ दइआर ॥ सरब निधान महा बीचार ॥ नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ सदा सदा एको हरि जापि ॥४॥१३॥१५॥ गोंड महला ५ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे

मीत ॥ निरमल होइ तुमारा चीत ॥ मन तन की सभ मिटै बलाइ ॥ दूखु अंधेरा सगला जाइ ॥१॥ हरि गुण गावत तरीऐ संसारु ॥ वड भागी पाईऐ पुरखु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ गुरमुखि अपना खसमु पछाणु ॥२॥ हरि गुण गावै संत प्रसादि ॥ काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ सदा हजूरि जाणु भगवंत ॥ पूरे गुर का पूरन मंत ॥३॥ हरि धनु खाटि कीइे भंडार ॥ मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ हरि के नाम रंग संगि जागा ॥ हरि चरणी नानक मनु लागा ॥४॥१४॥१६॥ गोंड महला ५ ॥ भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥ सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥ हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥ महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥१॥ तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ जंत अपने कउ दीजहि हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ सिमृति सासत्र बेद पुराण ॥ पारब्रहम का करहि वखिआण ॥ जोगी जती बैसनो रामदास ॥ मिति नाही ब्रहम अबिनास ॥२॥ करण पलाह करहि सिव देव ॥ तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ प्रेम भगति जिसु आपे देइ ॥ जग महि विरले केई केइ ॥३॥ मोहि निरगुण गुणु किछहू नाहि ॥ सरब निधान तेरी दृसटी माहि ॥ नानकु दीनु जाचै तेरी सेव ॥ करि किरपा दीजै गुरदेव ॥४॥१५॥१७॥ गोंड महला ५ ॥ संत का लीआ धरति बिदारउ ॥ संत का निंदकु अकास ते टारउ ॥ संत कउ राखउ अपने जीअ नालि ॥ संत उधारउ ततखिण तालि ॥१॥ सोई संतु जि भावै राम ॥ संत गोबिंद कै इकै काम ॥१॥ रहाउ ॥ संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ सासि सासि संतह प्रतिपालि ॥ संत का दोखी राज ते टालि ॥२॥ संत की निंदा करहु न कोइ ॥ जो निंदै तिस का पतनु होइ ॥ जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ झख मारउ सगल संसारु ॥३॥ प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ जीउ पिंडु सभु तिस की रासि ॥ नानक कउ उपजी परतीति ॥ मनमुख हार गुरमुख सद जीति ॥४॥१६॥१८॥ गोंड महला ५ ॥ नामु निरंजनु नीरि नराइिण ॥ रसना सिमरत पाप बिलाइिण

॥१॥ रहाउ ॥ नाराइिण सभ माहि निवास ॥ नाराइिण घटि घटि परगास ॥ नाराइिण कहते नरकि न जाहि ॥ नाराइिण सेवि सगल फल पाहि ॥१॥ नाराइिण मन माहि अधार ॥ नाराइिण बोहिथ संसार ॥ नाराइिण कहत जमु भागि पलाइिण ॥ नाराइिण दंत भाने डाइिण ॥२॥ नाराइिण सद सद बखसिंद ॥ नाराइिण कीने सूख अन्नद ॥ नाराइिण प्रगट कीनो परताप ॥ नाराइिण संत को माई बाप ॥३॥ नाराइिण साधसंगि नराइिण ॥ बारं बार नराइिण गाइिण ॥ बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ नाराइिण एट नानक दास गही ॥४॥१७॥१९॥ गोंड महला ५ ॥ जा कउ राखै राखणहारु ॥ तिस का अंगु करे निरंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ मात गरभ महि अगनि न जोहै ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ साधसंगि जपै निरंकारु ॥ निंदक कै मुहि लागै छारु ॥१॥ राम कवचु दास का सन्नाहु ॥ दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ जो जो गरबु करे सो जाइि ॥ गरीब दास की प्रभु सरणाइि ॥२॥ जो जो सरणि पइिआ हरि राइि ॥ सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइि ॥ जे को बहुतु करे अह्मकारु ॥ एहु खिन महि रुलता खाकू नालि ॥३॥ है भी साचा होवणहारु ॥ सदा सदा जाइीं बलिहार ॥ अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ नानक के प्रभ प्राण अधार ॥४॥१८॥२०॥ गोंड महला ५ ॥ अचरज कथा महा अनूप ॥ प्रातमा पारब्रहम का रूपु ॥ रहाउ ॥ ना इिहु बूढा ना इिहु बाला ॥ ना इिसु दूखु नही जम जाला ॥ ना इिहु बिनसै ना इिहु जाइि ॥ आदि जुगादी रहिआ समाइि ॥१॥ ना इिसु उसनु नही इिसु सीतु ॥ ना इिसु दुसमनु ना इिसु मीतु ॥ ना इिसु हरखु नही इिसु सोगु ॥ सभु किछु इिस का इिहु करनै जोगु ॥२॥ ना इिसु बापु नही इिसु माइिआ ॥ इिहु अपरंपरु होता आइिआ ॥ पाप पुन्न का इिसु लेपु न लागै ॥ घट घट अंतरि सद ही जागै ॥३॥ तीनि गुणा इिक सकति उपाइिआ ॥ महा माइिआ ता की है छाइिआ ॥ अछल अछेद अभेद दइिआल ॥ दीन दइिआल सदा किरपाल ॥ ता की गति मिति कछू न पाइि ॥ नानक ता कै बलि बलि जाइि ॥४॥१९॥२१॥

गोंड महला ५ ॥ संतन कै बलिहारै जाउ ॥ संतन कै संगि राम गुन गाउ ॥ संत प्रसादि किलविख सभि गइे ॥ संत सरणि वडभागी पइे ॥१॥ रामु जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ गुर प्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥१॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जब होइि दइिआल ॥ साधू जन की करै रवाल ॥ कामु क्रोधु इिसु तन ते जाइि ॥ राम रतनु वसै मनि आइि ॥२॥ सफलु जनमु ताँ का परवाणु ॥ पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ भाइि भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ जनम जनम का सोइिआ जागै ॥३॥ चरन कमल जन का आधारु ॥ गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ दास जना की मनसा पूरि ॥ नानक सुखु पावै जन धूरि ॥४॥२०॥२२॥६॥२८॥

रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करि नमसकार पूरे गुरदेव ॥ सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ आठ पहर नाम रंगि राता ॥१॥ गुरु गोबिंद गुरू गोपाल ॥ अपने दास कउ राखनहार ॥१॥ रहाउ ॥ पातिसाह साह उमराउ पतीआइे ॥ दुसट अह्मकारी मारि पचाइे ॥ निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ जै जै कारु करै सभु लोगु ॥२॥ संतन कै मनि महा अन्नदु ॥ संत जपहि गुरदेउ भगवंतु ॥ संगति के मुख ऊजल भइे ॥ सगल थान निंदक के गइे ॥३॥ सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे ॥ सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ निंदक मारि पाइे सभि धरनि ॥४॥ जन की निंदा करै न कोइि ॥ जो करै सो दुखीआ होइि ॥ आठ पहर जनु इेकु धिआइे ॥ जमूआ ता कै निकटि न जाइे ॥५॥ जन निरवैर निंदक अह्मकारी ॥ जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइिआ ॥ जन उबरे निंदक नरकि पाइिआ ॥६॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ सति बचन वरतहि हरि दुआरे ॥ जैसा करे सु तैसा पाइे ॥ अभिमानी की जड़ सरपर जाइे ॥७॥ नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ करि किरपा राखहु जन केरी ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥८॥१॥२९॥

रागु गोंड बाणी भगता की ॥ कबीर जी घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥१॥ बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ संतन सिउ बोले उपकारी ॥ मूरख सिउ बोले झख मारी ॥२॥ बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥ बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥३॥ कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥४॥१॥ गोंड ॥ नरू मरै नरु कामि न आवै ॥ पसू मरै दस काज सवारै ॥१॥ अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ मै किआ जानउ बाबा रे ॥१॥ रहाउ ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केस जले जैसे घास का पूला ॥२॥ कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै ॥३॥२॥ गोंड ॥ आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाइले ॥ आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥१॥ मोहि बैरागु भइए ॥ इहु जीउ आइ कहा गइए ॥१॥ रहाउ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीन्ी ततु कहा ते कीनु रे ॥ करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥२॥ हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे ॥ कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे ॥३॥३॥

रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भुजा बाँधि भिला करि डारिए ॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिए ॥ हसति भागि कै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥१॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ काजी बकिबो हसती तोरु ॥१॥ रहाउ ॥ रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वा कै रिदै बसै भगवानु ॥२॥ किआ अपराधु संत है कीन्ा ॥ बाँधि पोट कुंचर कउ दीन्ा ॥ कुंचरु पोट लै लै नमसकारै ॥ बूझी नही काजी अंधिआरै ॥३॥ तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥

मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥४॥१॥४॥
गोंड ॥ ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ ना इहु जती कहावै सेउ ॥ ना इहु जोगी ना अवधूता ॥
ना इसु माइ न काहू पूता ॥१॥ इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ ता का अंतु न कोऊ पाई ॥१॥
रहाउ ॥ ना इहु गिरही ना एदासी ॥ ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ ना इसु पिंडु न रकतू राती ॥
ना इहु ब्रहमनु ना इहु खाती ॥२॥ ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ इसु
मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥३॥ गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ जीवन मरनु
दोऊ मिटवाइआ ॥ कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ जस कागद पर मिटै न मंसु ॥४॥२॥५॥
गोंड ॥ तूटे तागे निखुटी पानि ॥ दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ कूच बिचारे फूए फाल ॥ इआ
मुंडीआ सिरि चढिबो काल ॥१॥ इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ॥ आवत जात नाक सर होई ॥१॥
रहाउ ॥ तुरी नारि की छोडी बाता ॥ राम नाम वा का मनु राता ॥ लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥
मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥२॥ इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ हम कउ साथरु उन कउ खाट
॥ मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ॥३॥ मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ ए
मुंडीआ बूडत की टेक ॥ सुनि अंधली लोई बेपीरि ॥ इन् मुंडीअन भजि सरनि कबीर ॥४॥३॥६॥
गोंड ॥ खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ उसु रखवारा अउरो होवै ॥ रखवारे का होइ बिनास ॥ आगै
नरकु ईहा भोग बिलास ॥१॥ एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ सगले जीअ जंत की नारी ॥१॥
रहाउ ॥ सोहागनि गलि सोहै हारु ॥ संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ करि सीगारु बहै पखिआरी ॥
संत की ठिठकी फिरै बिचारी ॥२॥ संत भागि एह पाछै परै ॥ गुर परसादी मारहु डरै ॥ साकत की
एह पिंड पराइणि ॥ हम कउ दृसटि परै त्रखि डाइणि ॥३॥ हम तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ जब
हूए कृपाल मिले गुरदेउ ॥ कहु कबीर अब बाहरि परी ॥ संसारै कै अंचलि लरी ॥४॥४॥७॥

गोंड ॥ गृहि सोभा जा कै रे नाहि ॥ आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ वा कै अंतरि नही संतोखु ॥ बिनु सोहागनि लागै दोखु ॥१॥ धनु सोहागनि महा पवीत ॥ तपे तपीसर डोलै चीत ॥१॥ रहाउ ॥ सोहागनि किरपन की पूती ॥ सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ साधू कै ठाढी दरबारि ॥ सरनि तेरी मो कउ निसतारि ॥२॥ सोहागनि है अति सुंदरी ॥ पग नेवर छनक छनहरी ॥ जउ लगु प्रान तऊ लगु संगे ॥ नाहि त चली बेगि उठि न्नगे ॥३॥ सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥ दस अठ पुराण तीरथ रस कीआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे ॥ बडे भूपति राजे है छेधे ॥४॥ सोहागनि उरवारि न पारि ॥ पाँच नारद कै संगि बिधवारि ॥ पाँच नारद के मिटवे फूटे ॥ कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥५॥५॥८॥ गोंड ॥ जैसे मंदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ कुंभ बिना जलु ना टीकावै ॥ साधू बिनु ऐसे अबगतु जावै ॥१॥ जारउ तिसै जु रामु न चेतै ॥ तन मन रमत रहै महि खेतै ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे हलहर बिना जिमी नही बोईऐ ॥ सूत बिना कैसे मणी परोईऐ ॥ घुंडी बिनु किआ गंठि चड़्हाईऐ ॥ साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥२॥ जैसे मात पिता बिनु बालु न होई ॥ बिंब बिना कैसे कपरे धोई ॥ घोर बिना कैसे असवार ॥ साधू बिनु नाही दरवार ॥३॥ जैसे बाजे बिनु नही लीजै फेरी ॥ खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ कहै कबीरु इेकै करि करना ॥ गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना ॥४॥६॥९॥ गोंड ॥ कूटनु सोइ जु मन कउ कूटै ॥ मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥ कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ सो कूटनु मुकति बहु पावै ॥१॥ कूटनु किसै कहहु संसार ॥ सगल बोलन के माहि बीचार ॥१॥ रहाउ ॥ नाचनु सोइ जु मन सिउ नाचै ॥ झूठि न पतीऐ परचै साचै ॥ इसु मन आगे पूरै ताल ॥ इसु नाचन के मन रखवाल ॥२॥ बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ पाँच पलीतह कउ परबोधै ॥ नउ नाइक की भगति पछानै ॥ सो बाजारी हम गुर माने ॥३॥ तसकरु सोइ जि ताति न करै ॥ इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ धन्नु गुरदेव अति

रूप बिचखन ॥४॥७॥१०॥ गोंड ॥ धन्नु गुपाल धन्नु गुरदेव ॥ धन्नु अनादि भूखे कवलु टहकेव ॥ धनु एइि संत जिन ऐसी जानी ॥ तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥१॥ आदि पुरख ते होइि अनादि ॥ जपीऐ नामु अन्न कै सादि ॥१॥ रहाउ ॥ जपीऐ नामु जपीऐ अन्नु ॥ अंभै कै संगि नीका वन्नु ॥ अन्नै बाहरि जो नर होवहि ॥ तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥२॥ छोडहि अन्नु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना एहि रंड ॥ जग महि बकते दूधाधारी ॥ गुपती खावहि वटिका सारी ॥३॥ अन्नै बिना न होइि सुकालु ॥ तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धन्नु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥४॥८॥११॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

असुमेध जगने ॥ तुला पुरख दाने ॥ प्राग इसनाने ॥१॥ तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥१॥ रहाउ ॥ गइिआ पिंडु भरता ॥ बनारसि असि बसता ॥ मुखि बेद चतुर पड़ता ॥२॥ सगल धरम अछिता ॥ गुर गिआन इंद्री दृड़ता ॥ खटु करम सहित रहता ॥३॥ सिवा सकति संबादं ॥ मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥४॥१॥ गोंड ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाइे ॥ प्रान तजे वा को धिआनु न जाइे ॥१॥ ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ सोना गढते हिरै सुनारा ॥२॥ जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ कउडा डारत हिरै जुआरी ॥३॥ जह जह देखउ तह तह रामा ॥ हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥४॥२॥ गोंड ॥ मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥ मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥१॥ रहाउ ॥ नर ते सुर होइि जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ नर ते उपजि सुरग कउ जीतिए सो अवखध मै पाई ॥१॥ जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ तेरे नाम अविलमबि बहुतु जन उधरे नामे की निज

मति इेह ॥२॥३॥ गोंड ॥ मोहि लागती तालाबेली ॥ बछरे बिनु गाइि अकेली ॥१॥ पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ अैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे गाइि का बाछा छूटला ॥ थन चोखता माखनु घूटला ॥२॥ नामदेउ नाराइिनु पाइिआ ॥ गुरु भेटत अलखु लखाइिआ ॥३॥ जैसे बिखै हेत पर नारी ॥ अैसे नामे प्रीति मुरारी ॥४॥ जैसे तापते निरमल घामा ॥ तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥५॥४॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥ हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरि अंधुले की लाकरी ॥१॥ हरइे नमसते हरइे नमह ॥ हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरनाखस हरे परान ॥ अजैमल कीए बैकुंठहि थान ॥ सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनहु की पूतरी ॥२॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल घातनी कपटहि भरी ॥ सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥ गऊतम सती सिला निसतरी ॥३॥ केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥ जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ प्रणवै नामा अैसो हरी ॥ जासु जपत भै अपदा टरी ॥४॥१॥५॥ गोंड ॥ भैरउ भूत सीतला धावै ॥ खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥ हउ तउ इेकु रमईआ लैहउ ॥ आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥ सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥ महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि होइि अउतरै ॥३॥ तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥ गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ प्रणवै नामा इिउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥ बिलावलु गोंड ॥ आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥ पाँडे तुमरी गाइित्री लोधे का खेतु खाती थी ॥ लै करि ठेगा टगरी तोरी लाँगत लाँगत जाती थी ॥१॥ पाँडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ मोदी के घर

खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥२॥ पाँडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥ रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥३॥ ह्मिदू अन्ना तुरकू काणा ॥ दुहाँ ते गिआनी सिआणा ॥ ह्मिदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥७॥

राग़ु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अन्नदे ॥१॥ रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२॥ इेकु मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै संसारु ॥ मेटी जाति हूए दरबारि ॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३॥ उपजिए गिआनु हूआ परगास ॥ करि किरपा लीने कीट दास ॥ कहु रविदास अब तृसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥ गोंड ॥ जे एहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥ जे एहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे एहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥ साध का निंदकु कैसे तरै ॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥ जे एहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥ सगली सिंमृति स्रवनी सुनै ॥ करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥ जे एहु अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥ अपना बिगारि बिराँना साँढै ॥ करै निंद बहु जोनी हाँढै ॥३॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का परगटि पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ ४॥२॥११॥७॥२॥४६॥ जोड़ु ॥

रामकली महला १ घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै धिआना ॥ अब ही कब ही किछू न जाना तेरा ऐको नामु पछाना ॥१॥ न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ हम मूरख अगिआन सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥१॥ रहाउ ॥ कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥२॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ एकि चले हम देखह सुआमी भाहि बलम्ती आई ॥३॥ न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ प्रणवति नानक जे तू देवहि अंते होइ सखाई ॥४॥१॥ रामकली महला १ ॥ सरब जोति तेरी पसरि रही ॥ जह जह देखा तह नरहरी ॥१॥ जीवन तलब निवारि सुआमी ॥ अंध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउ करि उतरउ पारि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ जह भीतरि घट भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ॥ तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिंत मन माही ॥२॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ आपे सरब रहिआ भरपूरि ॥ सतगुरु मिलै

अंधेरा जाइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥३॥ अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि बाणी ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥४॥२॥ रामकली महला १ ॥ जितु दरि वसहि कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु कोई आइ कहै ॥१॥ किन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ नह मरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ माइआ जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥२॥ किंते नामा अंतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥३॥ जब आसा अंदेसा तब ही किउ करि इेकु कहै ॥ आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक इेकु मिलै ॥४॥ इन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ इउ मरीऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३॥ रामकली महला १ ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ॥ पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥१॥ बाबा गोरखु जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ पाणी प्राण पवणि बंधि राखे चंदु सूरजु मुखि दीइे ॥ मरण जीवण कउ धरती दीनी इेते गुण विसरे ॥२॥ सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥३॥ कागदु लूणु रहै घ्रित संगे पाणी कमलु रहै ॥ अैसे भगत मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥४॥४॥ रामकली महला १ ॥ सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै ॥ वसगति पंच करे नह डोलै ॥ अैसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरै सगले कुल तारे ॥१॥ सो अउधूतु अैसी मति पावै ॥ अहिनिसि सुंनि समाधि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ भिखिआ भाइ भगति भै चलै ॥ होवै सु तृपति संतोखि अमुलै ॥ धिआन रूपि होइ आसणु पावै ॥ सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥२॥ नानकु बोलै अंमृत बाणी ॥ सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥ आसा माहि निरासु वलाइे ॥ निहचउ नानक करते पाइे ॥३॥ प्रणवति नानकु अगमु सुणाइे ॥ गुर चेले की संधि मिलाइे ॥ दीखिआ दारू

भोजनु खाइ ॥ छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥४॥५॥ रामकली महला १ ॥ हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवणु लगै मतु जाई ॥ सनमुख सिध भेटण कउ आइे निहचउ देहि वडिआई ॥१॥ गुर तारि तारणहारिआ ॥ देहि भगति पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सिध साधिक जोगी अरु जंगम इेकु सिधु जिनी धिआइिआ ॥ परसत पैर सिझत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइिआ ॥२॥ जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेरा ॥ गुरु परमेसरु नानक भेटिए साचै सबदि निबेरा ॥३॥६॥ रामकली महला १ ॥ सुरती सुरति रलाईऐ इेतु ॥ तनु करि तुलहा लम्घहि जेतु ॥ अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥१॥ ऐसा दीवा नीरि तराइि ॥ जितु दीवै सभ सोझी पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ हछी मिटी सोझी होइि ॥ ता का कीआ मानै सोइि ॥ करणी ते करि चकहु ढालि ॥ ऐथै एथै निबही नालि ॥२॥ आपे नदरि करे जा सोइि ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोइि ॥ तितु घटि दीवा निहचलु होइि ॥ पाणी मरै न बुझाइिआ जाइि ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइि ॥३॥ डोलै वाउ न वडा होइि ॥ जापै जिउ सिंघासणि लोइि ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ निरति न पाईआ गणी सहंस ॥ ऐसा दीवा बाले कोइि ॥ नानक सो पारंगति होइि ॥४॥७॥ रामकली महला १ ॥ तुधनो निवणु मन्नणु तेरा नाउ ॥ साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ ता सुणि सदि बहाले पासि ॥१॥ नानक बिरथा कोइि न होइि ॥ ऐसी दरगह साचा सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ तू देवहि मंगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइि ॥ धुरि तै छोडी कीमति पाइि ॥२॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ अपनी कीमति आपे धरै ॥ गुरमुखि परगटु होआ हरि राइि ॥ ना को आवै ना को जाइि ॥३॥ लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पाइिआ ॥ सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइिआ ॥४॥८॥ रामकली महला १ ॥ सागर महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै

॥१॥ अैसा गिआनु बीचारै कोई ॥ तिस ते मुकति परम गति होई ॥१॥ रहाउ ॥ दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन सीत बिधि सोई ॥ ता की गति मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥२॥ पुरख महि नारि नारि महि पुरखा बूझहु ब्रहम गिआनी ॥ धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥३॥ मन महि जोति जोति महि मनूआ पंच मिले गुर भाई ॥ नानक तिन कै सद बलिहारी जिन इेक सबदि लिव लाई ॥४॥९॥ रामकली महला १ ॥ जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ ता हउमै विचहु मारी ॥ सो सेवकि राम पिआरी ॥ जो गुर सबदी बीचारी ॥१॥ सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ अहिनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥१॥ रहाउ ॥ धुनि वाजे अनहद घोरा ॥ मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ गुर पूरै सचु समाइिआ ॥ गुरु आदि पुरखु हरि पाइिआ ॥२॥ सभि नाद बेद गुरबाणी ॥ मनु राता सारिगपाणी ॥ तह तीरथ वरत तप सारे ॥ गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥३॥ जह आपु गइिआ भउ भागा ॥ गुर चरणी सेवकु लागा ॥ गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइिआ ॥ कहु नानक सबदि मिलाइिआ ॥४॥१०॥ रामकली महला १ ॥ छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ खुधिआ दुसट जलै दुखु आगै ॥ गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोई ॥ गुरमति भगति पावै जनु कोई ॥१॥ जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ इेक दृसटि इेको करि देखिआ भीखिआ भाइि सबदि तृपतासै ॥१॥ रहाउ ॥ पंच बैल गडीआ देह धारी ॥ राम कला निबहै पति सारी ॥ धर तूटी गाडो सिर भारि ॥ लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥२॥ गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥ दुखु सुखु सम करणा सोग बिएगी ॥ भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ असथिरु कंधु जपै निरंकारी ॥३॥ सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥ कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ मन महि मुंद्रा हरि गुर सरणा ॥ नानक राम भगति जन तरणा ॥४॥११॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रामकली महला ३ घरु १ ॥ सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥ सतजुगि धरमु पैर है चारि ॥ गुरमुखि बूझै को बीचारि ॥१॥ जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ त्रेतै इक कल कीनी दूरि ॥ पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होई ॥ अंतरि नामु वसै सुखु होई ॥२॥ दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ ॥ भरमि भुलाने जाणहि दोइ ॥ दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाइे ॥ गुरमुखि होवै त नामु दृड़ाइे ॥३॥ कलजुगि धरम कला इक रहाइे ॥ इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाइे ॥ माइआ मोहु अति गुबारु ॥ सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥४॥ सभ जुग महि साचा इेको सोई ॥ सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥ साची कीरति सचु सुखु होई ॥ गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥५॥ सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ हरि नामु धिआइे भगतु जनु सोई ॥ नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥६॥१॥

रामकली महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जे वड भाग होवहि वडभागी ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि समावै ॥१॥ गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ जिसु वड भागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥२॥ रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि काढि तली दिखलाइिआ ॥ भागहीण मनमुखि नही लीआ तृण ओलै लाखु छपाइिआ ॥३॥ मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतगुरु सेवा लाइे ॥ नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाइे ॥४॥१॥ रामकली महला ४ ॥ राम जना मिलि भइिआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइि ॥ दुरमति मैलु गई

सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइि ॥१॥ राम जन गुरमति रामु बोलाइि ॥ जो जो सुणै कहै सो मुकता राम जपत सोहाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइि ॥ दरसनु संत देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइि ॥२॥ हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइि ॥ जिउ जिउ राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइि ॥३॥ ध्रिगु ध्रिगु नर निंदक जिन जन नही भाइे हरि के सखा सखाइि ॥ से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइि ॥४॥ दइिआ दइिआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइि ॥ हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइि ॥५॥२॥ रामकली महला ४ ॥ हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु वतावै ॥ गुरमुखि साध सेई प्रभ भाइे करि किरपा आपि मिलावै ॥१॥ राम मो कउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥ अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥२॥ सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ु बोलि कूड़ो फलु पावै ॥३॥ मो कउ धारि कृपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ हउ काटउ काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥४॥३॥ रामकली महला ४ ॥ जे वड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ ॥ हरि जन अंमृत कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ॥१॥ राम मो कउ हरि जन कारै लाईऐ ॥ हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि लाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईऐ ॥ सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईऐ ॥२॥ सतगुर सरणि परे तिन पाइिआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ ॥ इिकि अपणै सुआइि आइि बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईऐ ॥३॥ बगुला काग नीच की संगति जाइि करंग बिखू मुखि लाईऐ ॥ नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु कराईऐ

॥४॥४॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुर दइिआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइिआ ॥ हम चेरी होइि लगह गुर चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखाइिआ ॥१॥ राम मै हरि हरि नामु मनि भाइिआ ॥ मै हरि बिनु अवरु न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मेरे इिकु खिनु प्रान न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि मेरी माइिआ ॥ धनु धनु वड भाग गुर सरणी आइे हरि गुर मिलि दरसनु पाइिआ ॥२॥ मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि हरि जपु जपउ जपाइिआ ॥ नामहीण फिरहि से नकटे तिन घसि घसि नक वढाइिआ ॥३॥ मो कउ जगजीवन जीवालि लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइिआ ॥ नानक गुरू गुरू है पूरा मिलि सतिगुर नामु धिआइिआ ॥४॥५॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिऐ हरि उर धारे ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अंमृत नामु समारे ॥१॥ राम गुरि हरि हरि नामु कंठि धारे ॥ गुरमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वड भाग हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे ॥ हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि हाथु पसारे ॥२॥ हरि जसु जपि जपु वडा वडेरा गुरमुखि रखउ उरि धारे ॥ जे वड भाग होवहि ता जपीऐ हरि भउजलु पारि उतारे ॥३॥ हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कंठि जन धारे ॥ नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥४॥६॥१८॥

रागु रामकली महला ५ घरु १   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥ माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति इेही ॥१॥ मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ जो इिछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥ जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥२॥ मनु तनु थापि कीआ सभु अपना इेहो आवण जाणा ॥ जिनि दीआ सो

चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥३॥ जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥४॥१॥ रामकली महला ५ ॥ पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥१॥ संतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ परपंचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥२॥ भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥३॥ सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥४॥२॥ रामकली महला ५ ॥ आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ सदा अनन्दु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिएगनी ॥१॥ इह बिधि है मनु जोगनी ॥ मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥१॥ रहाउ ॥ सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल पवित्र अलोगनी ॥ आगिआकारी सदा सुखु भुंचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥२॥ नह सिव सकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥३॥ तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अंभै अंभु मिलोगनी ॥४॥३॥ रामकली महला ५ ॥ त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ रतन कोठड़ी अंमृत संपूरन सतिगुर कै खजानै ॥१॥ अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ बसतु अगोचर भाई ॥१॥ रहाउ ॥ मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥२॥ सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ आपणी गति मिति आपे जाणै हरि आपे पूर भंडारा ॥३॥ ऐसा रसु अंमृतु मनि चाखिआ तृपति रहे आघाई ॥ कहु नानक मेरी आसा पूरी

सतिगुर की सरणाई ॥४॥४॥ रामकली महला ५ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै बैरी सगले साधे ॥ जिनि बैरी है इहु जगु लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥१॥ सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥२॥ पूरन होइ मिलिए सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥३॥ बरनि न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥४॥५॥ रामकली महला ५ ॥ तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥१॥ इकै इकै इक तूही ॥ इकै इकै तू राइआ ॥ तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ तू सागरु हम हंस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह सदा निहाला ॥२॥ हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ हम खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥३॥ तुम पूरन पूरि रहे संपूरन हम भी संगि अघाइे ॥ मिलत मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाइे ॥४॥६॥ रामकली महला ५ ॥ कर करि ताल पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥१॥ राम को निरतिकारी ॥ पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥१॥ रहाउ ॥ आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ पवनु विचोला करत इकेला जल ते एपति होआ ॥ पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥२॥ चंदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ दस पातउ पंच संगीता इकै भीतरि साथे ॥ भिन्न भिन्न होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥३॥ घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ इकि नचावहि इकि भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु

भेटै पूरा ॥४॥७॥ रामकली महला ५ ॥ एअंकारि इेक धुनि इेकै इेकै रागु अलापै ॥ इेका देसी इेकु दिखावै इेको रहिआ बिआपै ॥ इेका सुरति इेका ही सेवा इेको गुर ते जापै ॥१॥ भलो भलो रे कीरतनीआ ॥ राम रमा रामा गुन गाउ ॥ छोडि माइिआ के धंध सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ फेरी फेरु न होवै कब ही इेकु सबदु बंधि पालै ॥२॥ नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ सहज अन्नद दिखावै भावै ॥ इेहु निरतिकारी जनमि न आवै ॥३॥ जे को अपने ठाकुर भावै ॥ कोटि मधि इेहु कीरतनु गावै ॥ साधसंगति की जावउ टेक ॥ कहु नानक तिसु कीरतनु इेक ॥४॥८॥ रामकली महला ५ ॥ कोई बोलै राम राम कोई खुदाइि ॥ कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥१॥ कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥१॥ रहाउ ॥ कोई नावै तीरथि कोई हज जाइि ॥ कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइि ॥२॥ कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ कोई एढै नील कोई सुपेद ॥३॥ कोई कहै तुरकु कोई कहै ह्मिदू ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥४॥ कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥५॥९॥ रामकली महला ५ ॥ पवनै महि पवनु समाइिआ ॥ जोती महि जोति रलि जाइिआ ॥ माटी माटी होई इेक ॥ रोवनहारे की कवन टेक ॥१॥ कउनु मूआ रे कउनु मूआ ॥ ब्रहम गिआनी मिलि करहु बीचारा इिहु तउ चलतु भइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अगली किछु खबरि न पाई ॥ रोवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ भरम मोह के बाँधे बंध ॥ सुपनु भइिआ भखलाइे अंध ॥२॥ इिहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ आवत जावत हुकमि अपारि ॥ नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ नह बिनसै अबिनासी होगु ॥३॥ जो इिहु जाणहु सो इिहु नाहि ॥ जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइिआ ॥ ना कोई मरै न आवै जाइिआ ॥४॥१०॥ रामकली महला ५ ॥ जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ राम नाम सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा कालु ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि

भ्रमि भ्रमि आइिए ॥ बडै भागि साधसंगु पाइिए ॥१॥ बिनु गुर पूरे नाही उधारु ॥ बाबा नानकु आखै इेहु बीचारु ॥२॥११॥

राగु रामकली महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ खटु भी इेका बात वखानहि ॥ दस असटी मिलि इेको कहिआ ॥ ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥१॥ किंकुरी अनूप वाजै ॥ जोगीआ मतवारो रे ॥१॥ रहाउ ॥ प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ तृतीइे महि किछु भइिआ दुतेड़ा ॥ दुतीआ अरधो अरधि समाइिआ ॥ इेकु रहिआ ता इेकु दिखाइिआ ॥२॥ इेकै सूति परोइे मणीइे ॥ गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीइे ॥ फिरती माला बहु बिधि भाइि ॥ खिंचिआ सूतु त आई थाइि ॥३॥ चहु महि इेकै मटु है कीआ ॥ तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ ॥ खोजत खोजत दुआरे आइिआ ॥ ता नानक जोगी महलु घरु पाइिआ ॥४॥ इिउ किंकुरी आनूप वाजै ॥ सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२॥ रामकली महला ५ ॥ तागा करि कै लाई थिगली ॥ लउ नाड़ी सूआ है असती ॥ अंभै का करि डंडा धरिआ ॥ किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥१॥ जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ तेरी खिंथा दो दिहाई ॥१॥ रहाउ ॥ गहरी बिभूत लाइि बैठा ताड़ी ॥ मेरी तेरी मुंद्रा धारी ॥ मागहि टूका तृपति न पावै ॥ नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥२॥ चल चित जोगी आसणु तेरा ॥ सिंङी वाजै नित उदासेरा ॥ गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥३॥ जिस नो होआ नाथु कृपाला ॥ रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ नामै खिंथा नामै बसतरु ॥ जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥४॥ इिउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ हुणि पाइिआ गुरु गोसाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥१३॥ रामकली महला ५ ॥ करन करावन सोई ॥ आन न दीसै कोई ॥ ठाकुरु मेरा सुघड़ु सुजाना ॥ गुरमुखि मिलिआ रंगु माना ॥१॥ अैसो रे हरि रसु मीठा ॥ गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ निरमल जोति अंमृतु हरि नाम

॥ पीवत अमर भइे निहकाम ॥ तनु मनु सीतलु अगनि निवारी ॥ अनद रूप प्रगटे संसारी ॥२॥ किआ देवउ जा सभु किछु तेरा ॥ सद बलिहारि जाउ लख बेरा ॥ तनु मनु जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ गुर किरपा ते नीचु निवाजिआ ॥३॥ खोलि किवारा महलि बुलाइिआ ॥ जैसा सा तैसा दिखलाइिआ ॥ कहु नानक सभु पड़दा तूटा ॥ हउ तेरा तू मै मनि वूठा ॥४॥३॥१४॥ रामकली महला ५ ॥ सेवकु लाइिए अपुनी सेव ॥ अंमृतु नामु दीए मुखि देव ॥ सगली चिंता आपि निवारी ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥१॥ काज हमारे पूरे सतगुर ॥ बाजे अनहद तूरे सतगुर ॥१॥ रहाउ ॥ महिमा जा की गहिर गंभीर ॥ होइि निहालु देइि जिसु धीर ॥ जा के बंधन काटे राइि ॥ सो नरु बहुरि न जोनी पाइि ॥२॥ जा कै अंतरि प्रगटिए आप ॥ ता कउ नाही दूख संताप ॥ लालु रतनु तिसु पालै परिआ ॥ सगल कुटंब एहु जनु लै तरिआ ॥३॥ ना किछु भरमु न दुबिधा दूजा ॥ इेको इेकु निरंजन पूजा ॥ जत कत देखउ आपि दइिआल ॥ कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥४॥४॥१५॥ रामकली महला ५ ॥ तन ते छुटकी अपनी धारी ॥ प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ जो किछु करै सु मनि मेरै मीठा ॥ ता इिहु अचरजु नैनहु डीठा ॥१॥ अब मोहि जानी रे मेरी गई बलाइि ॥ बुझि गई तृसन निवारी ममता गुरि पूरै लीए समझाइि ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा राखिए गुरि सरना ॥ गुरि पकराइे हरि के चरना ॥ बीस बिसुइे जा मन ठहराने ॥ गुर पारब्रहम इेकै ही जाने ॥२॥ जो जो कीनो हम तिस के दास ॥ प्रभ मेरे को सगल निवास ॥ ना को दूतु नही बैराई ॥ गलि मिलि चाले इेकै भाई ॥३॥ जा कउ गुरि हरि दीइे सूखा ॥ ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ आपे आपि सरब प्रतिपाल ॥ नानक रातउ रंगि गोपाल ॥४॥५॥१६॥ रामकली महला ५ ॥ मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ हिरदै रामु नही पूरन रहत ॥ उपदेसु करे करि लोक दृड़ावै ॥ अपना कहिआ आपि न कमावै ॥१॥ पंडित बेदु बीचारि पंडित ॥ मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥१॥ रहाउ ॥ आगै

राखिए साल गिरामु ॥ मनु कीनो दह दिस बिस्रामु ॥ तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ लोक पचारा अंधु कमाइ ॥२॥ खटु करमा अरु आसणु धोती ॥ भागठि गृहि पड़ै नित पोथी ॥ माला फेरै मंगै बिभूत ॥ इह बिधि कोइ न तरिए मीत ॥३॥ सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ त्रै गुण की एसु उतरी माइ ॥ चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ नानक तिस की सरणी पाइ ॥४॥६॥१७॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि बिघन नही आवहि नेरि ॥ अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ अनिक पाप ता के पानीहार ॥ जा कउ मइआ भई करतार ॥१॥ जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ अनिक जतन उआ कै सरंजाम ॥१॥ रहाउ ॥ करता राखै कीता कउनु ॥ कीरी जीतो सगला भवनु ॥ बेअंत महिमा ता की केतक बरन ॥ बलि बलि जाईऐ ता के चरन ॥२॥ तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ भगतु सोई कलि महि परवानु ॥ जा कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥३॥ साधसंगि मिलि भइे प्रगास ॥ सहज सूख आस निवास ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥ नानक होइे दासनि दास ॥४॥७॥१८॥ रामकली महला ५ ॥ दोसु न दीजै काहू लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥ आपन करम आपे ही बंध ॥ आवनु जावनु माइआ धंध ॥१॥ ऐसी जानी संत जनी ॥ परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥१॥ रहाउ ॥ तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ हैवर गैवर चालनहार ॥ राज रंग रूप सभि कूर ॥ नाम बिना होइ जासी धूर ॥२॥ भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ संगि नाही रे सगल पसारी ॥ सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव ही करत बिहानी ॥३॥ हरि का नामु अंमृतु कलि माहि ॥ इेहु निधाना साधू पाहि ॥ नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥४॥८॥१९॥ रामकली महला ५ ॥ पंच सबद तह पूरन नाद ॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ केल करहि संत हरि लोग ॥ पारब्रहम पूरन निरजोग ॥१॥ सूख सहज आन्नद भवन ॥ साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही जनम मरन ॥१॥ रहाउ ॥ ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ बिरले पावहि एहु बिस्रामु ॥ भोजनु भाउ

कीरतन आधारु ॥ निहचल आसनु बेसुमारु ॥२॥ डिगि न डोलै कतहू न धावै ॥ गुर प्रसादि को इहु महलु पावै ॥ भ्रम भै मोह न माइआ जाल ॥ सुन्न समाधि प्रभू किरपाल ॥३॥ ता का अंतु न पारावारु ॥ आपे गुपतु आपे पासारु ॥ जा कै अंतरि हरि हरि सुआदु ॥ कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥४॥६॥२०॥ रामकली महला ५ ॥ भेटत संगि पारब्रहमु चिति आइआ ॥ संगति करत संतोखु मनि पाइआ ॥ संतह चरन माथा मेरो पउत ॥ अनिक बार संतह डंडउत ॥१॥ इहु मनु संतन कै बलिहारी ॥ जा की एट गही सुखु पाइआ राखे किरपा धारी ॥१॥ रहाउ ॥ संतह चरण धोइ धोइ पीवा ॥ संतह दरसु पेखि पेखि जीवा ॥ संतह की मेरै मनि आस ॥ संत हमारी निरमल रासि ॥२॥ संत हमारा राखिआ पड़दा ॥ संत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ संतह संगु दीआ किरपाल ॥ संत सहाई भड़े दइिआल ॥३॥ सुरति मति बुधि परगासु ॥ गहिर गंभीर अपार गुणतासु ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ नानक संतह देखि निहाल ॥४॥१०॥२१॥ रामकली महला ५ ॥ तेरै काजि न गृहु राजु मालु ॥ तेरै काजि न बिखै जंजालु ॥ इसट मीत जाणु सभ छलै ॥ हरि हरि नामु संगि तेरै चलै ॥१॥ राम नाम गुण गाइि ले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ हरि सिमरत जमु कछु न कहै ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु हरि सगल निरारथ काम ॥ सुइना रुपा माटी दाम ॥ गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ ईहा ऊहा तेरो ऊजल मुखा ॥२॥ करि करि थाके वडे वडेरे ॥ किन ही न कीड़े काज माइिआ पूरे ॥ हरि हरि नामु जपै जनु कोइि ॥ ता की आसा पूरन होइि ॥३॥ हरि भगतन को नामु अधारु ॥ संती जीता जनमु अपारु ॥ हरि संतु करे सोई परवाणु ॥ नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥४॥११॥२२॥ रामकली महला ५ ॥ सिंचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ तेरै काजि न अवरा जोग ॥ करि अह्मकारु होइि वरतहि अंध ॥ जम की जेवड़ी तू आगै बंध ॥१॥ छाडि विडाणी ताति मूड़े ॥ ईहा बसना राति मूड़े ॥ माइिआ के माते तै उठि चलना ॥ राचि रहिए तू संगि सुपना ॥१॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा बारिकु अंध ॥ भरि जोबनि लागा

दुरगंध ॥ तृतीअ बिवसथा सिंचे माइ ॥ बिरधि भइआ छोडि चलिए पछुताइ ॥२॥ चिरंकाल पाई दुलभ देह ॥ नाम बिहूणी होई खेह ॥ पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ तिसहि न बूझै जिनि इेह सिरी ॥३॥ सुणि करतार गोविंद गोपाल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ बखसि मिलावहु नानक जग अंध ॥४॥१२॥२३॥ रामकली महला ५ ॥ करि संजोगु बनाई काछि ॥ तिसु संगि रहिए इिआना राचि ॥ प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ अंत की बार ऊठि सिधारै ॥१॥ नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ गोविद भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइआ मूठु परानी ॥१॥ रहाउ ॥ तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥ करम धरम सभि हउमै फैलु ॥ लोक पचारै गति नही होइि ॥ नाम बिहूणे चलसहि रोइि ॥२॥ बिनु हरि नाम न टूटसि पटल ॥ सोधे सासत्र सिमृति सगल ॥ सो नामु जपै जिसु आपि जपाइे ॥ सगल फला से सूखि समाइे ॥३॥ राखनहारे राखहु आपि ॥ सगल सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥ जितु लावहि तितु लागह सुआमी ॥ नानक साहिबु अंतरजामी ॥४॥१३॥२४॥ रामकली महला ५ ॥ जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥ मनु असमझु साधसंगि पतीआना ॥ डोलन ते चूका ठहराइिआ ॥ सति माहि ले सति समाइिआ ॥१॥ दूखु गइिआ सभु रोगु गइिआ ॥ प्रभ की आगिआ मन महि मानी महा पुरख का संगु भइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सगल पवित्र सरब निरमला ॥ जो वरताइे सोई भला ॥ जह राखै सोई मुकति थानु ॥ जो जपाइे सोई नामु ॥२॥ अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि ॥ तह बैकुंठु जह नामु उचरहि ॥ सरब अन्नद जब दरसनु पाईऐ ॥ राम गुणा नित नित हरि गाईऐ ॥३॥ आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ दइिआल पुरख परगट परताप ॥ कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ नानक कउ गुर भेटे पूरे ॥४॥१४॥२५॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जाप ताप बिस्राम ॥ रिधि बुधि सिधि सुर गिआन ॥ अनिक रूप रंग भोग रसै ॥ गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥१॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ कीमति कहणु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ सूरबीर धीरज

मति पूरा ॥ सहज समाधि धुनि गहिर गंभीरा ॥ सदा मुकतु ता के पूरे काम ॥ जा कै रिदै वसै हरि नाम ॥२॥ सगल सूख आन्नद अरोग ॥ समदरसी पूरन निरजोग ॥ आइि न जाइि डोलै कत नाही ॥ जा कै नामु बसै मन माही ॥३॥ दीन दइिआल गोपाल गोविंद ॥ गुरमुखि जपीऐ उतरै चिंद ॥ नानक कउ गुरि दीआ नामु ॥ संतन की टहल संत का कामु ॥४॥१५॥२६॥ रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ आगै मिली निथावे थाउ ॥ गुर पूरे की चरणी लागु ॥ जनम जनम का सोइिआ जागु ॥१॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुर किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥१॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआइि मन अटल ॥ ता छूटहि माइिआ के पटल ॥ गुर का सबदु अंमृत रसु पीउ ॥ ता तेरा होइि निरमल जीउ ॥२॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भगति नही छुटकारा ॥ सो हरि भजनु साध कै संगि ॥ मनु तनु रापै हरि कै रंगि ॥३॥ छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ मन बिनु हरि नावै जाइि न काई ॥ दइिआ धारी गोविद गोसाई ॥ हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥४॥१६॥२७॥ रामकली महला ५ ॥ संत कै संगि राम रंग केल ॥ आगै जम सिउ होइि न मेल ॥ अह्मबुधि का भइिआ बिनास ॥ दुरमति होई सगली नास ॥१॥ राम नाम गुण गाइि पंडित ॥ करम काँड अह्मकारु न काजै कुसल सेती घरि जाहि पंडित ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का जसु निधि लीआ लाभ ॥ पूरन भइे मनोरथ साभ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि आइिआ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसाइिआ ॥२॥ नाम रतनु जिनि पाइिआ दानु ॥ तिसु जन होइे सगल निधान ॥ संतोखु आइिआ मनि पूरा पाइि ॥ फिरि फिरि मागन काहे जाइि ॥३॥ हरि की कथा सुनत पवित ॥ जिहवा बकत पाई गति मति ॥ सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ नानक ते जन ऊतम भाई ॥४॥१७॥२८॥ रामकली महला ५ ॥ गहु करि पकरी न आई हाथि ॥ प्रीति करी चाली नही साथि ॥ कहु नानक जउ तिआगि दई ॥ तब एह चरणी आइि पई ॥१॥ सुणि संतहु निरमल बीचार ॥ राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥१॥

रहाउ ॥ जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ तब आपस ऊपरि रखै गुमानु ॥ जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ तब एह सेवकि सेवा करै ॥२॥ मुखि बेरावै अंति ठगावै ॥ इकतु ठउर एह कही न समावै ॥ उनि मोहे बहुते ब्रहमंड ॥ राम जनी कीनी खंड खंड ॥३॥ जो मागै सो भूखा रहै ॥ इसु संगि राचै सु कछू न लहै ॥ इसहि तिआगि सतसंगति करै ॥ वडभागी नानक एहु तरै ॥४॥१८॥२९॥ रामकली महला ५ ॥ आतम रामु सरब महि पेखु ॥ पूरन पूरि रहिआ प्रभ एकु ॥ रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥१॥ पी अंमृतु संतन परसादि ॥ वडे भाग होवहि तउ पाईऐ बिनु जिहवा किआ जाणै सुआदु ॥१॥ रहाउ ॥ अठ दस बेद सुने कह डोरा ॥ कोटि प्रगास न दिसै अंधेरा ॥ पसू परीति घास संगि रचै ॥ जिसु नही बुझावै सो कितु बिधि बुझै ॥२॥ जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ एति पोति भगतन संगानि ॥ बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ नानक तिन जम नेड़ि न आवहि ॥३॥१९॥३०॥ रामकली महला ५ ॥ दीनो नामु कीए पवितु ॥ हरि धनु रासि निरास इहु बितु ॥ काटी बंधि हरि सेवा लाए ॥ हरि हरि भगति राम गुण गाए ॥१॥ बाजे अनहद बाजा ॥ रसकि रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ आइ बनिए पूरबला भागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ गई गिलानि साध कै संगि ॥ मनु तनु रातो हरि कै रंगि ॥२॥ राखे राखनहार दइआल ॥ ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ करि किरपा प्रभि कीनी दइआ ॥ बूडत दुख महि काढि लइआ ॥३॥ सुणि सुणि उपजिए मन महि चाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ गावत गावत परम गति पाई ॥ गुर प्रसादि नानक लिव लाई ॥४॥२०॥३१॥ रामकली महला ५ ॥ कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥ छोडि जाइ ताहू का जतनु ॥ सो संचै जो होछी बात ॥ माइआ मोहिआ टेढउ जात ॥१॥ अभागे तै लाज नाही ॥ सुख सागर पूरन परमेसरु हरि न चेतिए मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृतु कउरा बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥ कूड़ि कपटि अहंकारि

रीझाना ॥ नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥२॥ माइिआ कारणि सद ही झूरै ॥ मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥ निरभउ निरंकार दातारु ॥ तिसु सिउ प्रीति न करै गवारु ॥३॥ सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ मोह मगन लपटिए भ्रम गिरह ॥ नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥४॥२१॥३२॥ रामकली महला ५ ॥ रैणि दिनसु जपउ हरि नाउ ॥ आगै दरगह पावउ थाउ ॥ सदा अन्नदु न होवी सोगु ॥ कबहू न बिआपै हउमै रोगु ॥१॥ खोजहु संतहु हरि ब्रहम गिआनी ॥ बिसमन बिसम भइे बिसमादा परम गति पावहि हरि सिमरि परानी ॥१॥ रहाउ ॥ गनि मिनि देखहु सगल बीचारि ॥ नाम बिना को सकै न तारि ॥ सगल उपाव न चालहि संगि ॥ भवजलु तरीऐ प्रभ कै रंगि ॥२॥ देही धोइि न उतरै मैलु ॥ हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ हरि हरि अउखधु जो जनु खाइि ॥ ता का रोगु सगल मिटि जाइि ॥३॥ करि किरपा पारब्रहम दइिआल ॥ मन ते कबहु न बिसरु गोपाल ॥ तेरे दास की होवा धूरि ॥ नानक की प्रभ सरधा पूरि ॥४॥२२॥३३॥ रामकली महला ५ ॥ तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइि ॥ तू समरथु पूरन पारब्रहमु ॥ सो धिआइे पूरा जिसु करमु ॥१॥ तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ इेका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही ठाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा तेरा नाउ ॥ आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ दूखु अंधेरा मन ते जाइि ॥ दुरमति बिनसै राचै हरि नाइि ॥२॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गुर पूरे की निरमल रीति ॥ भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ अंमृत नामु रसना नित जपै ॥३॥ कोटि जनम के काटे फाहे ॥ पाइिआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ तोटि न आवै अखुट भंडार ॥ नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥४॥२३॥३४॥ रामकली महला ५ ॥ रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोखु गिआन ॥ सूख सहज दइिआ का पोता ॥ हरि भगता हवालै होता ॥१॥ मेरे राम को भंडारु ॥ खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नही हरि पारावारु ॥१॥ रहाउ ॥ कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ आन्नद गुणी गहीरा ॥ अनहद बाणी पूंजी ॥ संतन हथि राखी कूंजी

॥२॥ सुन्न समाधि गुफा तह आसनु ॥ केवल ब्रहम पूरन तह बासनु ॥ भगत संगि प्रभु गोसटि करत ॥ तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥३॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ साधसंगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥ दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥४॥२४॥३५॥ रामकली महला ५ ॥ महिमा न जानहि बेद ॥ ब्रहमे नही जानहि भेद ॥ अवतार न जानहि अंतु ॥ परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥१॥ अपनी गति आपि जानै ॥ सुणि सुणि अवर वखानै ॥१॥ रहाउ ॥ संकरा नही जानहि भेव ॥ खोजत हारे देव ॥ देवीआ नही जानै मरम ॥ सभ ऊपरि अलख पारब्रहम ॥२॥ अपनै रंगि करता केल ॥ आपि बिछोरै आपे मेल ॥ इकि भरमे इकि भगती लाइे ॥ अपणा कीआ आपि जणाइे ॥३॥ संतन की सुणि साची साखी ॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥ नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ नानक का प्रभु आपे आपि ॥४॥२५॥३६॥ रामकली महला ५ ॥ किछहू काजु न कीए जानि ॥ सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥ जाप ताप सील नही धरम ॥ किछू न जानउ कैसा करम ॥१॥ ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥ बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥ करणहार मेरे प्रभ इेक ॥ नाम तेरे की मन महि टेक ॥२॥ सुणि सुणि जीवउ मनि इहु बिस्रामु ॥ पाप खंडन प्रभ तेरो नामु ॥ तू अगनतु जीअ का दाता ॥ जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥३॥ जो उपाइिए तिसु तेरी आस ॥ सगल अराधहि प्रभ गुणतास ॥ नानक दास तेरै कुरबाणु ॥ बेअंत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥४॥२६॥३७॥ रामकली महला ५ ॥ राखनहार दइआल ॥ कोटि भव खंडे निमख खिआल ॥ सगल अराधहि जंत ॥ मिलीऐ प्रभ गुर मिलि मंत ॥१॥ जीअन को दाता मेरा प्रभु ॥ पूरन परमेसुर सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥१॥ रहाउ ॥ ता की गही मन एट ॥ बंधन ते होई छोट ॥ हिरदै जपि परमान्नद ॥ मन माहि भइे अन्नद ॥२॥ तारण तरण हरि सरण ॥ जीवन

रूप हरि चरण ॥ संतन के प्राण अधार ॥ ऊचे ते ऊच अपार ॥३॥ सु मति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥ करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ सूख सहज आन्नद हरि नाउ ॥ नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥४॥२७॥३८॥ रामकली महला ५ ॥ सगल सिआनप छाडि ॥ करि सेवा सेवक साजि ॥ अपना आपु सगल मिटाइ ॥ मन चिंदे सेई फल पाइ ॥१॥ होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ दूजा नही जानै कोइ ॥ सतगुरु निरंजनु सोइ ॥ मानुख का करि रूपु न जानु ॥ मिली निमाने मानु ॥२॥ गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ अवर आसा सभ लाहि ॥ हरि का नामु मागु निधानु ॥ ता दरगह पावहि मानु ॥३॥ गुर का बचनु जपि मंतु ॥ इेहा भगति सार ततु ॥ सतिगुर भइे दइिआल ॥ नानक दास निहाल ॥४॥२८॥३९॥ रामकली महला ५ ॥ होवै सोई भल मानु ॥ आपना तजि अभिमानु ॥ दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ पूरन इेही सुआउ ॥१॥ आन्नद करि संत हरि जपि ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मंतु निरमल ॥१॥ रहाउ ॥ इेक की करि आस भीतरि ॥ निरमल जपि नामु हरि हरि ॥ गुर के चरन नमसकारि ॥ भवजलु उतरहि पारि ॥२॥ देवनहार दातार ॥ अंतु न पारावार ॥ जा कै घरि सरब निधान ॥ राखनहार निदान ॥३॥ नानक पाइिआ इेहु निधान ॥ हरे हरि निरमल नाम ॥ जो जपै तिस की गति होइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥४॥२९॥४०॥ रामकली महला ५ ॥ दुलभ देह सवारि ॥ जाहि न दरगह हारि ॥ हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ अंत की बेला लइे छडाई ॥१॥ राम के गुन गाउ ॥ हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ ॥१॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत हरि जापु ॥ बिनसै सगल संतापु ॥ बैरी सभि होवहि मीत ॥ निरमलु तेरा होवै चीत ॥२॥ सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ सगल धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ जनम जनम का उतरै भारु ॥३॥ पूरन तेरी होवै आस ॥ जम की कटीऐ तेरी फास ॥ गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ नानक

सुखि सहजि समीजै ॥४॥३०॥४१॥ रामकली महला ५ ॥ जिस की तिस की करि मानु ॥ आपन लाहि गुमानु ॥ जिस का तू तिस का सभु कोइि ॥ तिसहि अराधि सदा सुखु होइि ॥१॥ काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ नाम बिना किछु कामि न आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो करै सोई मानि लेहु ॥ बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ तिस का भाणा लागै मीठा ॥ गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥२॥ वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ जिसु चिति आइे बिनसहि दुखा ॥ हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥३॥ कउन कउन उधरे गुन गाइि ॥ गनणु न जाई कीम न पाइि ॥ बूडत लोह साधसंगि तरै ॥ नानक जिसहि परापति करै ॥४॥३१॥४२॥ रामकली महला ५ ॥ मन माहि जापि भगवंतु ॥ गुरि पूरै इिहु दीनो मंतु ॥ मिटे सगल भै त्रास ॥ पूरन होई आस ॥१॥ सफल सेवा गुरदेवा ॥ कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥१॥ रहाउ ॥ करन करावन आपि ॥ तिस कउ सदा मन जापि ॥ तिस की सेवा करि नीत ॥ सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥२॥ साहिबु मेरा अति भारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जन का राखा सोई ॥३॥ करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ नानक जापी जपु जापु ॥ सभ ते ऊच जा का परतापु ॥४॥३२॥४३॥ रामकली महला ५ ॥ बिरथा भरवासा लोक ॥ ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ अवर छूटी सभ आस ॥ अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥१॥ इेको नामु धिआइि मन मेरे ॥ कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण गाइि मन मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ तुम ही कारन करन ॥ चरन कमल हरि सरन ॥ मनि तनि हरि एही धिआइिआ ॥ आन्नद हरि रूप दिखाइिआ ॥२॥ तिस ही की एट सदीव ॥ जा के कीने है जीव ॥ सिमरत हरि करत निधान ॥ राखनहार निदान ॥३॥ सरब की रेण होवीजै ॥ आपु मिटाइि मिलीजै ॥ अनदिनु धिआईअै नामु ॥ सफल नानक इिहु कामु ॥४॥३३॥४४॥ रामकली महला ५ ॥ कारन करन करीम ॥ सरब प्रतिपाल रहीम ॥ अलह अलख अपार ॥ खुदि

खुदाइ वड बेसुमार ॥१॥ एं नमो भगवंत गुसाई ॥ खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ जगन्नाथ जगजीवन माधो ॥ भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥ रिखीकेस गोपाल गोुविंद ॥ पूरन सरबत्र मुकंद ॥२॥ मिहरवान मउला तूही इेक ॥ पीर पैकाँबर सेख ॥ दिला का मालकु करे हाकु ॥ कुरान कतेब ते पाकु ॥३॥ नाराइिण नरहर दइिआल ॥ रमत राम घट घट आधार ॥ बासुदेव बसत सभ ठाइि ॥ लीला किछु लखी न जाइि ॥४॥ मिहर दइिआ करि करनैहार ॥ भगति बंदगी देहि सिरजणहार ॥ कहु नानक गुरि खोइे भरम ॥ इेको अलहु पारब्रहम ॥५॥३४॥४५॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ हरि हरि जपत नाही संताप ॥ गुर के चरन कमल मनि वसे ॥ महा बिकार तन ते सभि नसे ॥१॥ गोपाल को जसु गाउ प्राणी ॥ अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ तृसना भूख सभ नासी ॥ संत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥ रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ हरि मिलणै की इेह नीसानी ॥२॥ मिटे जंजाल होइे प्रभ दइिआल ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ परा पूरबला करमु बणि आइिआ ॥ हरि के गुण नित रसना गाइिआ ॥३॥ हरि के संत सदा परवाणु ॥ संत जना मसतकि नीसाणु ॥ दास की रेणु पाइे जे कोइि ॥ नानक तिस की परम गति होइि ॥४॥३५॥४६॥ रामकली महला ५ ॥ दरसन कउ जाईऐ कुरबानु ॥ चरन कमल हिरदै धरि धिआनु ॥ धूरि संतन की मसतकि लाइि ॥ जनम जनम की दुरमति मलु जाइि ॥१॥ जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥ पारब्रहमु सभु नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥१॥ रहाउ ॥ गुर की कीरति जपीऐ हरि नाउ ॥ गुर की भगति सदा गुण गाउ ॥ गुर की सुरति निकटि करि जानु ॥ गुर का सबदु सति करि मानु ॥२॥ गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ कदे न बिआपै तृसना भूख ॥ मनि संतोखु सबदि गुर राजे ॥ जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥३॥ गुरु परमेसरु गुरु गोविंदु ॥ गुरु दाता दइिआल बखसिंदु ॥ गुर चरनी जा का मनु लागा ॥ नानक दास तिसु पूरन भागा ॥४॥३६॥४७॥

रामकली महला ५ ॥ किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ मूड़ मुगध तेरा संगी कवन ॥ रामु संगी तिसु गति नही जानहि ॥ पंच बटवारे से मीत करि मानहि ॥१॥ सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती साधसंगि करि मन की प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ जनमु बिहानो अहंकारि अरु वादि ॥ तृपति न आवै बिखिआ सादि ॥ भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ तरी न जाई दुतर माइआ ॥२॥ कामि न आवै सु कार कमावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥३॥ पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ अपने दास कउ कीजै दानु ॥ करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥४॥३७॥४८॥ रामकली महला ५ ॥ इह लोके सुखु पाइआ ॥ नही भेटत धरम राइआ ॥ हरि दरगह सोभावंत ॥ फुनि गरभि नाही बसंत ॥१॥ जानी संत की मित्राई ॥ करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि संजोगि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ गुर कै चरणि चितु लागा ॥ धंनि धंनि संजोगु सभागा ॥ संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ किलविख दुख सगले मेरे लाथे ॥२॥ साध की सचु टहल कमानी ॥ तब होए मन सुध परानी ॥ जन का सफल दरसु डीठा ॥ नामु प्रभू का घटि घटि वूठा ॥३॥ मिटाने सभि कलि कलेस ॥ जिस ते उपजे तिसु महि परवेस ॥ प्रगटे आनूप गोविंद ॥ प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥४॥३८॥४९॥ रामकली महला ५ ॥ गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ कउडी का लख हूआ मूलु ॥ बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदरि निहाले ॥१॥ कृपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ दीसत मासु न खाइ बिलाई ॥ महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ फाथी मछुली का जाला तूटा ॥२॥ सूके कासट हरे चलूल ॥ ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥३॥ अकिरतघणा का करे उधारु ॥ प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥ संत जना का सदा सहाई ॥ चरन कमल नानक सरणाई ॥४॥३९॥५०॥ रामकली महला ५ ॥

पंच सिंघ राखे प्रभि मारि ॥ दस बिघिआड़ी लई निवारि ॥ तीनि आवरत की चूकी घेर ॥ साधसंगि चूके भै फेर ॥१॥ सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ करि किरपा राखिए दासु अपना सदा सदा साचा बखसिंद ॥१॥ रहाउ ॥ दाझि गइे तृण पाप सुमेर ॥ जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ अनद रूप प्रगटिए सभ थानि ॥ प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥२॥ सागरु तरिए बाछर खोज ॥ खेदु न पाइिए नह फुनि रोज ॥ सिंधु समाइिए घटुके माहि ॥ करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥३॥ जउ छूटउ तउ जाइि पइिआल ॥ जउ काढिए तउ नदरि निहाल ॥ पाप पुन्न हमरै वसि नाहि ॥ रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥४॥४०॥५१॥ रामकली महला ५ ॥ ना तनु तेरा ना मनु तोहि ॥ माइिआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ अचिंतु जालु कालु चक्रु पेल ॥१॥ हरि चरन कमल सरनाइि मना ॥ राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥१॥ रहाउ ॥ ऊने काज न होवत पूरे ॥ कामि क्रोधि मदि सद ही झूरे ॥ करै बिकार जीअरे कै ताई ॥ गाफल संगि न तसूआ जाई ॥२॥ धरत धोह अनिक छल जानै ॥ कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ मिथिआ लोभु न उतरै सूलु ॥३॥ पारब्रहम जब भइे दइिआल ॥ इिहु मनु होआ साध रवाल ॥ हसत कमल लड़ि लीनो लाइि ॥ नानक साचै साचि समाइि ॥४॥४१॥५२॥ रामकली महला ५ ॥ राजा राम की सरणाइि ॥ निरभउ भइे गोबिंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै रामु बसै मन माही ॥ सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ सगले काज सवारे अपने ॥ हरि हरि नामु रसन नित जपने ॥१॥ जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ सो दासु अदेसा काहे करै ॥ जनम मरण की चूकी काणि ॥ पूरे गुर ऊपरि कुरबाण ॥२॥ गुरु परमेसरु भेटि निहाल ॥ सो दरसनु पाइे जिसु होइि दइिआलु ॥ पारब्रहमु जिसु किरपा करै ॥ साधसंगि सो भवजलु तरै ॥३॥ अंमृतु पीवहु साध पिआरे ॥ मुख ऊजल साचै दरबारे ॥ अनद करहु तजि सगल बिकार ॥ नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥४॥४२॥५३॥

रामकली महला ५ ॥ इंधन ते बैसंतरु भागै ॥ माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ घट महि सिंधु कीए परगासु ॥१॥ ऐसा संम्रथु हरि जीउ आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥१॥ रहाउ ॥ प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ मैलू कीनो साबुनु सूधु ॥ भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥२॥ देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले साजि करत जगदीसै ॥ ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥३॥ संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ सिंमृति सासत बेद पुराण ॥ ब्रहम बीचारु बीचारे कोइि ॥ नानक ता की परम गति होइि ॥४॥४३॥५४॥ रामकली महला ५ ॥ जो तिसु भावै सो थीआ ॥ सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥१॥ रहाउ ॥ पुतु कलत्र लखिमी दीसै इिन महि किछू न संगि लीआ ॥ बिखै ठगउरी खाइि भुलाना माइिआ मंदरु तिआगि गइिआ ॥१॥ निंदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइिआ ॥ पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिए महा भइिआ ॥२॥ बोलै झूठु कमावै अवरा तृसन न बूझै बहुतु हइिआ ॥ असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइिआ ॥३॥ जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइिआ ॥ नानक दास कंठि लाइि राखे करि किरपा पारब्रहम मइिआ ॥४॥४४॥५५॥ रामकली महला ५ ॥ ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखत होइि निहालु ॥ जा की धूरि काटै जम जालु ॥ चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ कारज सवारे सगले तन के ॥१॥ जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ पतित उधारणु कृपा निधानु ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबानु ॥२॥ निरमल मंतु देइि जिसु दानु ॥ तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ इेकु धिआईऐ साध कै संगि ॥ पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥३॥ गुर परमेसुर सगल निवास ॥ घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ नित नानकु चितवै सचु अरदासि ॥४॥४५॥५६॥

रागु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गावहु राम के गुण गीत ॥ नामु जपत परम सुखु पाईऐ आवा गउणु मिटै मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥ गुण गावत होवत परगासु ॥ चरन कमल महि होइ निवासु ॥१॥ संतसंगति महि होइ उधारु ॥ नानक भवजलु उतरसि पारि ॥२॥१॥५७॥ रामकली महला ५ ॥ गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ राम नामु जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥१॥ रहाउ ॥ एकु अराधहु साचा सोइ ॥ जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥१॥ नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥२॥ सहजि अनन्द करहु मेरे भाई ॥ गुरि पूरै सभ चिंत मिटाई ॥३॥ आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ नानक राखा होआ आपि ॥४॥२॥५८॥

रागु रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
नरनरह नमसकारं ॥ जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं ॥१॥ रहाउ ॥ हरन धरन पुन पुनह करन ॥ नह गिरह निरंहारं ॥१॥ गंभीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारं ॥ करन केल गुण अमोल नानक बलिहारं ॥२॥१॥५९॥ रामकली महला ५ ॥ रूप रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥१॥ रहाउ ॥ भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै ॥ नह संगि गामनी ॥१॥ सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिए भरमि मोहिए इह बिरख छामनी ॥ चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥२॥२॥६०॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥ रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ ॥ बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥ जनम जनम के पाप

खोइि कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥ अजामल कउ अंत काल महि नाराइिन सुधि आई ॥ जाँ गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥ रामकली महला ९ ॥ साधो कउन जुगति अब कीजै ॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मनु माइिआ महि उरझि रहिए है बूझै नह कछु गिआना ॥ कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥ भइे दइिआल कृपाल संत जन तब इिह बात बताई ॥ सरब धरम मानो तिह कीइे जिह प्रभ कीरति गाई ॥२॥ राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख इेक उरि धारै ॥ जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥ रामकली महला ९ ॥ प्रानी नाराइिन सुधि लेहि ॥ छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर बृथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोइिए बालपनु अगिआना ॥ बिरधि भइिए अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥ मानस जनमु दीए जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइिए ॥ मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइिए ॥२॥ माइिआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइि है अंति सहाई ॥ ३॥३॥८१॥

रामकली महला १ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे ॥१॥ जीवन तलब निवारि ॥ होवै परवाणा करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ किते देसि न आइिआ सुणीअै तीरथ पासि न बैठा ॥ दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥२॥ जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ जे को नाउ लइे बदनावी कलि के लखण इेई ॥३॥ जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु

मरणा ॥४॥ आखु गुणा कलि आईऐ ॥ तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी कृसना होआ ॥ बाणी ब्रहमा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥५॥ पति विणु पूजा सत विणु संजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई ॥६॥ कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ पोथी पंडित रहे पुराण ॥ नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ करि करता तू इको जाणु ॥७॥ नानक नामु मिलै वडिआई इदू उपरि करमु नही ॥ जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि एलामा मिलै तही ॥८॥१॥ रामकली महला १ ॥ जगु परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ ममता मोहु कामणि हितकारी ॥ ना अउधूती ना संसारी ॥१॥ जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ घरि घरि मागत लाज न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ गावहि गीत न चीनहि आपु ॥ किउ लागी निवरै परतापु ॥ गुर कै सबदि रचै मन भाइ ॥ भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥२॥ भसम चड़ाइ करहि पाखंडु ॥ माइिआ मोहि सहहि जम डंडु ॥ फूटै खापरु भीख न भाइ ॥ बंधनि बाधिआ आवै जाइ ॥३॥ बिंदु न राखहि जती कहावहि ॥ माई मागत त्रै लोभावहि ॥ निरदइिआ नही जोति उजाला ॥ बूडत बूडे सरब जंजाला ॥४॥ भेख करहि खिंथा बहु थटूआ ॥ झूठो खेलु खेलै बहु नटूआ ॥ अंतरि अगनि चिंता बहु जारे ॥ विणु करमा कैसे उतरसि पारे ॥५॥ मुंद्रा फटक बनाई कानि ॥ मुकति नही बिदिआ बिगिआनि ॥ जिहवा इंद्री सादि लुोभाना ॥ पसू भए नही मिटै नीसाना ॥६॥ तृबिधि लोगा तृबिधि जोगा ॥ सबदु वीचारै चूकसि सोगा ॥ ऊजलु साचु सु सबदु होइ ॥ जोगी जुगति वीचारे सोइ ॥७॥ तुझ पहि नउ निधि तू करणै जोगु ॥ थापि उथापे करे सु होगु ॥ जतु सतु संजमु सचु सुचीतु ॥ नानक जोगी तृभवण मीतु ॥८॥२॥ रामकली महला १ ॥ खटु मटु देही मनु बैरागी ॥ सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ गुर बचनी सचि नामि पतीणा ॥१॥ प्राणी राम भगति सुखु पाईऐ ॥ गुरमुखि हरि हरि मीठा लागै

हरि हरि नामि समाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु बिवरजि समाए ॥ सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥ नामु रतनु निरमोलकु हीरा ॥ तितु राता मेरा मनु धीरा ॥२॥ हउमै ममता रोगु न लागै ॥ राम भगति जम का भउ भागै ॥ जमु जंदारु न लागै मोहि ॥ निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥३॥ सबदु बीचारि भए निरंकारी ॥ गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥ अनदिनु जागि रहे लिव लाई ॥ जीवन मुकति गति अंतरि पाई ॥४॥ अलिपत गुफा महि रहहि निरारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ पर घर जाइ न मनु डोलाए ॥ सहज निरंतरि रहउ समाए ॥५॥ गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ सद बैरागी ततु परोता ॥ जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥६॥ अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥ अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ एको रवि रहिआ निरबानी ॥७॥ सुन्न समाधि सहजि मनु राता ॥ तजि हउ लोभा एको जाता ॥ गुर चेले अपना मनु मानिआ ॥ नानक दूजा मेटि समानिआ ॥८॥३॥ रामकली महला १ ॥ साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ साहे ऊपरि एकंकारु ॥ जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ॥ गुरमति होइ त हुकमु पछाणै ॥१॥ झूठु न बोलि पाडे सचु कहीऐ ॥ हउमै जाइ सबदि घरु लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ गणि गणि जोतकु काँडी कीनी ॥ पड़ै सुणावै ततु न चीनी ॥ सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥२॥ नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ मुकति प्रान जपि हरि किरतारथि ॥३॥ वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ आपि डुबै किउ पितरा तारै ॥ घटि घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥४॥ गणत गणीऐ सहसा दुखु जीऐ ॥ गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ ॥ करि अपराध सरणि हम आइआ ॥ गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥५॥ गुर सरणि न आईऐ ब्रहमु न पाईऐ ॥ भरमि भुलाईऐ जनमि मरि आईऐ ॥ जम दरि बाधउ मरै बिकारु ॥ ना रिदै नामु न सबदु अचारु ॥६॥ इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि ॥ दुबिधा राते

महलु न पावहि ॥ जिसु गुर परसादी नामु अधारु ॥ कोटि मधे को जनु आपारु ॥७॥ इेकु बुरा भला सचु इेकै ॥ बूझु गिआनी सतगुर की टेकै ॥ गुरमुखि विरली इेको जाणिआ ॥ आवणु जाणा मेटि समाणिआ ॥८॥ जिन कै हिरदै इेकंकारु ॥ सरब गुणी साचा बीचारु ॥ गुर कै भाणै करम कमावै ॥ नानक साचे साचि समावै ॥९॥४॥ रामकली महला १ ॥ हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥ राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥१॥ गुरु सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ वादु पड़ै रागी जगु भीजै ॥ त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥२॥ चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै ॥ निउली करम खटु करम करीजै ॥ राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥३॥ अंतरि पंच अगनि किउ धीरजु धीजै ॥ अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ गुरमुखि होइि काइिआ गड़ु लीजै ॥४॥ अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥ मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥ किरतु पइिआ दोसु का कउ दीजै ॥५॥ अन्नु न खाहि देही दुखु दीजै ॥ बिनु गुर गिआन तृपति नही थीजै ॥ मनमुखि जनमै जनमि मरीजै ॥६॥ सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ मनु हरि राचै नही जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥७॥ ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ नानक नामु मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥८॥५॥ रामकली महला १ ॥ अंतरि उतभुजु अवरु न कोई ॥ जो कहीअै सो प्रभ ते होई ॥ जुगह जुगंतरि साहिबु सचु सोई ॥ उतपति परलउ अवरु न कोई ॥१॥ अैसा मेरा ठाकुरु गहिर गंभीरु ॥ जिनि जपिआ तिन ही सुखु पाइिआ हरि कै नामि न लगै जम तीरु ॥१॥ रहाउ ॥ नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥ साचा साहिबु अमरु अतोलु ॥ जिहवा सूची साचा बोलु ॥ घरि दरि साचा नाही रोलु ॥२॥ इिकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥ नामु बिसारि पचहि अभिमानु ॥ नाम बिना किआ गिआन धिआनु ॥ गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥३॥ हठु अह्मकारु करै नही पावै ॥ पाठ पड़ै ले

लोक सुणावै ॥ तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥ नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥४॥ जतन करै बिंदु किवै न रहाई ॥ मनूआ डोलै नरके पाई ॥ जम पुरि बाधो लहै सजाई ॥ बिनु नावै जीउ जलि बलि जाई ॥५॥ सिध साधिक केते मुनि देवा ॥ हठि निग्रहि न तृपतावहि भेवा ॥ सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा ॥ मनि तनि निरमल अभिमान अभेवा ॥६॥ करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ तुम सरणागति रहउ सुभाउ ॥ तुम ते उपजिए भगती भाउ ॥ जपु जापउ गुरमुखि हरि नाउ ॥७॥ हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥ बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥ नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥८॥६॥ रामकली महला १ ॥ जिउ आइआ तिउ जावहि बउरे जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥ जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥१॥ तनु धनु देखत गरबि गइआ ॥ कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ प्रेत पिंजर महि कासटु भइआ ॥ पुंनु दानु इसनानु न संजमु साधसंगति बिनु बादि जइआ ॥२॥ लालचि लागै नामु बिसारिए आवत जावत जनमु गइआ ॥ जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि काल गइआ ॥३॥ अहिनिसि निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सरब दइआ ॥ बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥४॥ खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥ इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ ॥५॥ करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥ हउमै रोगु महा दुखु लागा गुरमति लेवहु रोगु गइआ ॥६॥ सुख संपति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ जिस का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा दूखु पइआ ॥७॥ अंति कालि किछु साथि न चालै जो दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु सो प्रभु हरि नामु रिदै लै पारि पइआ ॥८॥ मूड़े कउ रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ देखि

कुटंबु माइिआ गृह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइिआ ॥९॥ जा आइे ता तिनहि पठाइे चाले तिनै बुलाइि लइिआ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ बखसणहारै बखसि लइिआ ॥१०॥ जिनि इेहु चाखिआ राम रसाइिणु तिन की संगति खोजु भइिआ ॥ रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू ते पाइिआ मुकति पदारथु सरणि पइिआ ॥११॥ दुखु सुखु गुरमुखि सम करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइिआ ॥ आपु मारि गुरमुखि हरि पाइे नानक सहजि समाइि लइिआ ॥१२॥७॥ रामकली दखणी महला १ ॥ जतु सतु संजमु साचु दृड़ाइिआ साच सबदि रसि लीणा ॥१॥ मेरा गुरु दइिआलु सदा रंगि लीणा ॥ अहिनिसि रहै इेक लिव लागी साचे देखि पतीणा ॥१॥ रहाउ ॥ रहै गगन पुरि दृसटि समैसरि अनहत सबदि रंगीणा ॥२॥ सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा ॥३॥ मिलै गुर साचे जिनि रचु राचे किरतु वीचारि पतीणा ॥४॥ इेक महि सरब सरब महि इेका इेह सतिगुरि देखि दिखाई ॥५॥ जिनि कीइे खंड मंडल ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥६॥ दीपक ते दीपकु परगासिआ तृभवण जोति दिखाई ॥७॥ सचै तखति सच महली बैठे निरभउ ताड़ी लाई ॥८॥ मोहि गइिआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी वाई ॥९॥ नानक सरणि प्रभू की छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥१०॥८॥ रामकली महला १ ॥ अउहठि हसत मड़ी घरु छाइिआ धरणि गगन कल धारी ॥१॥ गुरमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥१॥ रहाउ ॥ ममता मारि हउमै सोखै तृभवणि जोति तुमारी ॥२॥ मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥३॥ सिंङी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥४॥ परपंच बेणु तही मनु राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ॥५॥ पंच ततु मिलि अहिनिसि दीपकु निरमल जोति अपारी ॥६॥ रवि ससि लउके इिहु तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥७॥ सिव नगरी महि आसणु अउधू अलखु अगंमु अपारी ॥८॥ काइिआ नगरी इिहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥९॥ सबदि रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥१०॥ कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ

मनु मारी ॥११॥ ब्रहमा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥१२॥ काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥१३॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥१४॥ आपे मेलि लए गुणदाता हउमै तृसना मारी ॥१५॥ त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥१६॥ गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥१७॥ मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥१८॥ बेदु बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥१९॥ गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥२०॥ सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥२१॥ माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥२२॥ सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥२३॥ एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥२४॥ आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥२५॥९॥

रामकली महला ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सरमै दीआ मुंद्रा कन्नी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥ आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥१॥ ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अंमृत नामु भुगति पाई ॥ धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥२॥ मनु दृड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥३॥ इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ इतु किंगुरी सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥४॥ भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥ गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि तृसना खंडी ॥५॥ हुकमु बुझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ॥ सहसा तूटै निरमलु होवै जोग जुगति इव पाए ॥६॥ नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ सतिगुर नालि

तेरी भावनी लागै ता इिह सोझी पाइि ॥७॥ इेहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु करहि ॥ गृह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥८॥ इिहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इिसु महि रोगु वडा तृसना माइिआ ॥ अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइि गवाइिआ ॥६॥ हरि का नामु अउखधु है जोगी जिस नो मंनि वसाइे ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाइे ॥१०॥ जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिस नो नदरि करे सो पाइे ॥ अंतरि बाहरि इेको वेखै विचहु भरमु चुकाइे ॥११॥ विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइि ॥ कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइि ॥१२॥१॥१०॥ रामकली महला ३ ॥ भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई ॥१॥ संतहु गुरमुखि देइि वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु जाई ॥२॥ आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥३॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई ॥४॥ सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥५॥ सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥६॥ सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइिआ जाई ॥७॥ भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इिक ठाई ॥८॥ बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥६॥ जोगी जुगति गवाई ह्मढै पाखंडि जोगु न पाई ॥१०॥ सिव नगरी महि आसणि बैसै गुर सबदी जोगु पाई ॥११॥ धातुर बाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥१२॥ इेहु सरीरु सरवरु है संतहु इिसनानु करे लिव लाई ॥१३॥ नामि इिसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥१४॥ त्रै गुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥१५॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति तृगुणि भरमि भुलाई ॥१६॥ गुर परसादी तृकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥१७॥ पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिन्ना बूझ न पाई ॥१८॥ बिखिआ माते भरमि भुलाइे उपदेसु कहहि किसु भाई ॥१६॥ भगत जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई ॥२०॥ बाणी लागै सो

गति पाइे सबदे सचि समाई ॥२१॥ काइिआ नगरी सबदे खोजे नामु नवं निधि पाई ॥२२॥ मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई ॥२३॥ लोइिण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई ॥२४॥ अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई ॥२५॥ हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥२६॥ नानकु इेक कहै बेन्नती नावहु गति पति पाई ॥२७॥२॥ ११॥ रामकली महला ३ ॥ हरि की पूजा दुलम्भ है संतहु कहणा कछू न जाई ॥१॥ संतहु गुरमुखि पूरा पाई ॥ नामो पूज कराई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥२॥ हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥३॥ पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइि न पाई ॥४॥ सबदि मरै मनु निरमलु संतहु इेह पूजा थाइि पाई ॥५॥ पवित पावन से जन साचे इेक सबदि लिव लाई ॥६॥ बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥७॥ गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥८॥ आपे निरमलु पूज कराइे गुर सबदी थाइि पाई ॥९॥ पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइि मलु लाई ॥१०॥ गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै भाणा मनि वसाई ॥११॥ भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु सखाई ॥१२॥ अपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई ॥१३॥ पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥१४॥ जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥१५॥ इेहु मनूआ सुन्न समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥१६॥ सुणि सुणि गुरमुखि नामु वखाणहि सतसंगति मेलाई ॥१७॥ गुरमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥१८॥ साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई ॥१९॥ भै भंजनु अति पाप निखंजनु मेरा प्रभु अंति सखाई ॥२०॥ सभु किछु आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई ॥२१॥३॥१२॥ रामकली महला ३ ॥ हम कुचल कुचील अति अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी ॥१॥ संतहु गुरमुखि नामि निसतारी ॥ सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी

॥१॥ रहाउ ॥ पारस परसे फिरि पारसु होइे हरि जीउ अपणी किरपा धारी ॥२॥ इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी ॥३॥ इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरि धारी ॥४॥ अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै मारी ॥५॥ भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइि भगति सवारी ॥६॥ माइिआ मोहु सबदि जलाइिआ गिआनि तति बीचारी ॥७॥ आपे आपि कराइे करता आपे बखसि भंडारी ॥८॥ तिस किआ गुणा का अंतु न पाइिआ हउ गावा सबदि वीचारी ॥९॥ हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी ॥१०॥ नामु पदारथु गुर ते पाइिआ अखुट सचे भंडारी ॥११॥ अपणिआ भगता नो आपे तुठा अपणी किरपा करि कल धारी ॥१२॥ तिन साचे नाम की सदा भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥१३॥ जीउ पिंडु सभु किछु है तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥१४॥ सबदि लगे सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी ॥१५॥ बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को वीचारी ॥१६॥ जो धुरि लिखिआ सोई पाइिआ मिलि हरि सबदि सवारी ॥१७॥ काइिआ कंचनु सबदे राती साचै नाइि पिआरी ॥१८॥ काइिआ अंमृति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारी ॥१९॥ जो प्रभु खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूझे अहंकारी ॥२०॥ बादी बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥२१॥ सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै तृसना मारी ॥२२॥ सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिस नो कृपा तुमारी ॥२३॥ सतिगुरु न सेवहि माइिआ लागे डूबि मूझे अहंकारी ॥२४॥ जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइि मिलीऐ राम मुरारी ॥२५॥ अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने पृअ प्रीति पिआरी ॥२६॥ तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु बलिहारी ॥२७॥ माइिआ मोहु बिनसि जाइिगा उबरे सबदि वीचारी ॥२८॥ आपि जगाइे सेई जागे गुर कै सबदि वीचारी ॥२९॥ नानक सेई मूझे जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी ॥३०॥४॥१३॥ रामकली महला ३ ॥ नामु खजाना गुर ते पाइिआ तृपति रहे आघाई ॥१॥ संतहु गुरमुखि

मुकति गति पाई ॥ इेकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥२॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥३॥ आपे साजे सृसटि उपाइे सिरि सिरि धंधै लाई ॥४॥ तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥५॥ आपणा आपु आपि उपाइे अलखु न लखणा जाई ॥६॥ आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न तमाई ॥७॥ इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई ॥८॥ से वडभागी जिनी इेको जाता सचे रहे समाई ॥९॥ आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥१०॥ आपे दुखु सुखु पाइे अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥११॥ वडा दाता गुरमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥१२॥ जिनी चाखिआ तिना सादु आइिआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥१३॥ इिकना नावहु आपि भुलाइे इिकना गुरमुखि देइि बुझाई ॥१४॥ सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई ॥१५॥ तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु बणत बणाई ॥१६॥ निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मनाई ॥१७॥ तिस नो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई ॥१८॥ सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिसु हिरदै नामु वसाई ॥१९॥ सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥२०॥ नानक सुणि वेखि रहिआ विसमादु मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई ॥२१॥५॥१४॥

रामकली महला ५ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किनही कीआ परविरति पसारा ॥ किनही कीआ पूजा बिसथारा ॥ किनही निवल भुइिअंगम साधे ॥ मोहि दीन हरि हरि आराधे ॥१॥ तेरा भरोसा पिआरे ॥ आन न जाना वेसा ॥१॥ रहाउ ॥ किनही गृहु तजि वण खंडि पाइिआ ॥ किनही मोनि अउधूतु सदाइिआ ॥ कोई कहतउ अन्ननि भगउती ॥ मोहि दीन हरि हरि एट लीती ॥२॥ किनही कहिआ हउ तीरथ वासी ॥ कोई अन्नु तजि भइिआ उदासी ॥ किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ मोहि दीन हरि हरि दरि परिआ ॥३॥ किनही

कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ मोहि दीन हरि हरि आधारा ॥४॥ किनही घूघर निरति कराई ॥ किनहू वरत नेम माला पाई ॥ किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि धिआइआ ॥५॥ किनही सिध बहु चेटक लाइे ॥ किनही भेख बहु थाट बनाइे ॥ किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सेवा ॥६॥ कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ को खटु करम सहित सिउ मंडित ॥ कोई करै आचार सुकरणी ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी ॥७॥ सगले करम धरम जुग सोधे ॥ बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ बूझी तृसना महा सीतलाइआ ॥८॥१॥ रामकली महला ५ ॥ इसु पानी ते जिनि तू घरिआ ॥ माटी का ले देहुरा करिआ ॥ उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ मात गरभ महि जिनि तू राखिआ ॥१॥ राखनहारु सम्हारि जना ॥ सगले छोडि बीचार मना ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि दीइे तुधु बाप महतारी ॥ जिनि दीइे भ्रात पुत हारी ॥ जिनि दीइे तुधु बनिता अरु मीता ॥ तिसु ठाकुर कउ रखि लेहु चीता ॥२॥ जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥३॥ छतीह अंमृत जिनि भोजन दीइे ॥ अंतरि थान ठहरावन कउ कीइे ॥ बसुधा दीए बरतनि बलना ॥ तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना ॥४॥ पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ हसत कमावन बासन रसना ॥ चरन चलन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ मन तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥५॥ अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥ कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥६॥ ईहा ऊहा इेकै एही ॥ जत कत देखीऔ तत तत तोही ॥ तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ जिसु विसरिऔ इिक निमख न सरै ॥७॥ हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ ना किछु सेवा ना करमारे ॥ गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ नानक दास संगि पाथर तरिआ ॥८॥२॥ रामकली महला ५ ॥ काहू बिहावै रंग रस रूप ॥

काहू बिहावै माइि बाप पूत ॥ काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥१॥ रचना साचु बनी ॥ सभ का इेकु धनी ॥१॥ रहाउ ॥ काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ काहू बिहावै रसना सादि ॥ काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ संत रचे केवल नाम मुरारी ॥२॥ काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ काहू बिहावै अमली हूआ ॥ काहू बिहावै पर दरब चोराइे ॥ हरि जन बिहावै नाम धिआइे ॥३॥ काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ काहू रोग सोग भरमीजा ॥ काहू पवन धार जात बिहाइे ॥ संत बिहावै कीरतनु गाइे ॥४॥ काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ काहू बिहावै सो पिड़ु मालत ॥ काहू बिहावै बाल पड़ावत ॥ संत बिहावै हरि जसु गावत ॥५॥ काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ काहू बिहावै जीआइिह हिरते ॥ काहू बिहावै राज महि डरते ॥ संत बिहावै हरि जसु करते ॥६॥ काहू बिहावै मता मसूरति ॥ काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥७॥ जितु को लाइिआ तित ही लगाना ॥ ना को मूड़ु नही को सिआना ॥ करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥८॥३॥ रामकली महला ५ ॥ दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ मात गरभ संकट ते छूट ॥ जा का नामु सिमरत भउ जाइि ॥ तैसे संत जना राखै हरि राइि ॥१॥ अैसे राखनहार दइिआल ॥ जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ जलु पीवत जिउ तिखा मिटंत ॥ धन बिगसै गृहि आवत कंत ॥ लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥२॥ किरसानी जिउ राखै रखवाला ॥ मात पिता दइिआ जिउ बाला ॥ प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइि ॥ तिउ हरि जन राखै कंठि लाइि ॥३॥ जिउ अंधुले पेखत होइि अन्नद ॥ गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ पिंगुल परबत परते पारि ॥ हरि कै नामि सगल उधारि ॥४॥ जिउ पावक संगि सीत को नास ॥ अैसे प्राछत संतसंगि बिनास ॥ जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥ नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥५॥ जिउ चकवी सूरज की आस ॥ जिउ चातृक बूंद की पिआस ॥ जिउ कुरंक नाद करन समाने ॥ तिउ

हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥६॥ तुमरी कृपा ते लागी प्रीति ॥ दइआल भइे ता आइे चीति ॥ दइआ धारी तिनि धारणहार ॥ बंधन ते होई छुटकार ॥७॥ सभि थान देखे नैण अलोइि ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइि ॥ भ्रम भै छूटे गुर परसाद ॥ नानक पेखिए सभु बिसमाद ॥८॥४॥ रामकली महला ५ ॥ जीअ जंत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी धारना ॥१॥ इिहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥१॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥२॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ॥३॥ नामु जपत मनु निरमल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥४॥ भगत सरणि जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥५॥ सूख दूख इिसु मन की बिरथा तुम ही आगै सारना ॥६॥ तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥७॥ अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकु वंञै वारना ॥८॥५॥

रामकली महला ५ असटपदी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइि मिलाई ॥१॥ मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ पारब्रहम का नामु दृड़ाइे अंते होइि सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ सगल दूख का डेरा भन्ना संत धूरि मुखि लाई ॥२॥ पतित पुनीत कीइे खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥३॥ करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥४॥ बंधन तोड़ि चरन कमल दृड़ाइे इेक सबदि लिव लाई ॥५॥ अंध कूप बिखिआ ते काढिए साच सबदि बणि आई ॥६॥ जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई ॥७॥ नाम रसाइिणि इिहु मनु राता अंमृतु पी तृपताई ॥८॥ संतसंगि मिलि कीरतनु गाइिआ निहचल वसिआ जाई ॥९॥ पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥१०॥ नामु निधानु पाइिआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥११॥ घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥१२॥ जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥१३॥ पुत्र

कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइि तराई ॥१४॥ अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीइे लड़ि लाई ॥१५॥ साच धरम का बेड़ा बाँधिआ भवजलु पारि पवाई ॥१६॥ बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥१७॥ अकाल मूरति अजूनी संभउ कलि अंधकार दीपाई ॥१८॥ अंतरजामी जीअन का दाता देखत तृपति अघाई ॥१९॥ इेकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥२०॥ भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥२१॥१॥६॥ रामकली महला ५ ॥ सलोकु ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक सिमरत इेक ॥१॥ मनु तनु राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई संतहु ॥१॥ सतिगुरि खेप निबाही संतहु ॥ हरि नामु लाहा दास कउ दीआ सगली तृसन उलाही संतहु ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत लालु इिकु पाइिआ हरि कीमति कहणु न जाई संतहु ॥२॥ चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरसि समाई संतहु ॥३॥ गुण गावत गावत भइे निहाला हरि सिमरत तृपति अघाई संतहु ॥४॥ आतम रामु रविआ सभ अंतरि कत आवै कत जाई संतहु ॥५॥ आदि जुगादी है भी होसी सभ जीआ का सुखदाई संतहु ॥६॥ आपि बेअंतु अंतु नही पाईअै पूरि रहिआ सभ ठाई संतहु ॥७॥ मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु मेरी माई संतहु ॥८॥२॥७॥ रामकली महला ५ ॥ मन बच क्रमि राम नामु चितारी ॥ घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि जपि मलन भइे दुसटारी ॥१॥ जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपणी किरपा धारी ॥२॥ उधरे संत परे हरि सरनी पचि बिनसे महा अह्मकारी ॥३॥ साधू संगति इिहु फलु पाइिआ इिकु केवल नामु अधारी ॥४॥ न कोई सूरु न कोई हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हारी ॥५॥ तुम् समरथ अकथ अगोचर रविआ इेकु मुरारी ॥६॥ कीमति कउणु करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥७॥ नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी ॥८॥३॥८॥२२॥

रामकली महला ३ अन्नदु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अन्नदु भइआ मेरी माइे सतिगुरू मै पाइिआ ॥ सतिगुरु त पाइिआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइिआ ॥ कहै नानकु अन्नदु होआ सतिगुरू मै पाइिआ ॥१॥ इे मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु एहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावइे ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावइे ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि साँति सुख मनि आइि वसिआ जिनि इिछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ इेहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइिआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइि नाही कृपा करि बनवारीआ ॥ इेस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥ आन्नदु आन्नदु सभु को कहै आन्नदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आन्नदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै

नानकु इेहु अन्नदु है आन्नदु गुर ते जाणिआ ॥७॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इिकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इिकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइिआ निरमलु जिना भाणा भावइे ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावइे ॥८॥ आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईअै ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिअै पाईअै ॥ हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥ इे मन चंचला चतुराई किनै न पाइिआ ॥ चतुराई न पाइिआ किनै तू सुणि मन्न मेरिआ ॥ इेह माइिआ मोहणी जिनि इेतु भरमि भुलाइिआ ॥ माइिआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइिआ ॥ कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइिआ ॥१०॥ इे मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ इेहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईअै ॥ अैसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईअै ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥ अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइिआ ॥ अंतो न पाइिआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणइे ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइिआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइिआ ॥१२॥ सुरि नर मुनि जन अंमृतु खोजदे सु अंमृतु गुर ते पाइिआ ॥ पाइिआ अंमृतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइिआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाइे इिकि वेखि परसणि आइिआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइिआ ॥ कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंमृतु गुर ते पाइिआ ॥१३॥ भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी इेतु मारगि जाणा ॥

गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥ एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥ पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥ करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥१८॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा

रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोइे ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होइे ॥२१॥ जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाइे ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाइे ॥ फिरि मुकति पाइे लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाइे ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाइे ॥२२॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु इेह सची बाणी ॥२३॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥ गुर का सबदु रतन्नु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मन्नु लागा इेहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइि बुझाइि ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥ सिव सकति आपि उपाइि कै करता आपे हुकमु वरताइे ॥ हुकमु वरताइे आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाइे ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाइे ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै इेकस सिउ लिव लाइे ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाइे ॥२६॥ सिमृति सासत्र पुन्न पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाइे जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥ माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ इेवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावइे ॥ एस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी

लिव लावढे ॥ आपणी लिव आपे लाइे गुरमुखि सदा समालीऔ ॥ कहै नानकु इेवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऔ ॥२८॥ जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइिआ ॥ माइिआ अगनि सभ इिको जेही करतै खेलु रचाइिआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइिआ ॥ लिव छुड़की लगी तृसना माइिआ अमरु वरताइिआ ॥ इेह माइिआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइिआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइिआ पाइिआ ॥२९॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइिआ जाइि ॥ मुलि न पाइिआ जाइि किसै विटहु रहे लोक विललाइि ॥ अैसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऔ विचहु आपु जाइि ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइि ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइि ॥३०॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ इेहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥ इे रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइि ॥ पिआस न जाइि होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइि ॥ हरि रसु पाइि पलै पीऔ हरि रसु बहुड़ि न तृसना लागै आइि ॥ इेहु हरि रसु करमी पाईऔ सतिगुरु मिलै जिसु आइि ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइि ॥३२॥ इे सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइिआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइिआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइि जगतु दिखाइिआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइिआ ॥ कहै नानकु सृसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइिआ ॥३३॥ मनि चाउ भइिआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीइे सोगु दूखु न विआपइे ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापइे ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु

भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥ इे सरीरा मेरिआ इिसु जग महि आइि कै किआ तुधु करम कमाइिआ ॥ कि करम कमाइिआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइिआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइिआ ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइिआ ॥ कहै नानकु इेहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइिआ ॥३५॥ इे नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ इेहु विसु संसारु तुम देखदे इेहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइिआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इिकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु इेहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब दृसटि होई ॥३६॥ इे स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाइे ॥ साचै सुनणै नो पठाइे सरीरि लाइे सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाइे ॥ कहै नानकु अंमृत नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाइे ॥३७॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइिआ ॥ वजाइिआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीइे दसवा गुपतु रखाइिआ ॥ गुरदुआरै लाइि भावनी इिकना दसवा दुआरु दिखाइिआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइिआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइिआ ॥३८॥ इेहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इिहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइिआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भइे सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

रामकली सदु   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगि दाता सोइि भगति वछलु तिहु लोइि जीउ ॥ गुर सबदि समावइे अवरु न जाणै कोइि जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै इेकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ आइिआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइिआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइिआ ॥१॥ हरि भाणा गुर भाइिआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ अंति चलदिआ होइि बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइिआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥२॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइिआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावइे ॥ आन्नद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावइे ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइि हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइिआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइिआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावइे ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावइे ॥ सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइिआ ॥ सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइिआ ॥४॥ अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीअै हरि नामु सुणीअै बेबाणु हरि रंगु गुर भावइे ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावइे ॥ हरि भाइिआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदासु सोढी तिलकु

दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥५॥ सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ ॥ कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥६॥१॥

रामकली महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा ॥ नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अंमृत प्रिअ गूड़ा ॥ नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥ माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा ॥१॥ गोबिंदा मेरे गोबिंदा प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ॥ किरपाला मेरे किरपाला दान दातारा मेरे किरपाला ॥ दान दातारा अपर अपारा घट घट अंतरि सोहनिआ ॥ इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जंत लै मोहनिआ ॥ जिस नो राखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ कहु नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभु पिआरा ॥२॥ माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का माणो ॥ जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघड़ु सुजाणो ॥ सुघड़ सुजाना सद परधाना अंमृतु हरि का नामा ॥ चाखि अघाणे सारिगपाणे जिन कै भाग मथाना ॥ तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ सगल तिसै का माणो ॥ कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै दीबाणो ॥३॥ मंगला हरि मंगला मेरे प्रभ कै सुणीऐ मंगला ॥ सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा ॥ अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई ॥ सो प्रभु धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवै जाई ॥ चूकी पिआसा पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ ॥ कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै नित नित मंगलु

सुनीऐ ॥४॥१॥ रामकली महला ५ ॥ हरि हरि धिआइ मना खिनु न विसारीऐ ॥ राम रामा राम रमा कंठि उर धारीऐ ॥ उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रहमु निरंजनो ॥ भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ जगदीस ईस गोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीऐ ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीऐ ॥१॥ चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ मालु मिलख भंडार नामु अनन्त धरा ॥ नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग इेक नराइणा ॥ रस रूप रंग अनन्त बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥२॥ गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई ॥ देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरखपति परमेसरा ॥ सरब जाचिक इेकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ साधू संतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥३॥ मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु दृड़ाइआ ॥ गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सरब इछा पुन्नीआ ॥ जलने बुझाई साँति आई मिले चिरी विछुंनिआ ॥ आन्नद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥४॥२॥ रामकली महला ५ ॥ रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ॥ किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ॥ हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीऐ ॥ जोग दान अनेक किरिआ लगि चरण कमलह साधीऐ ॥ भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ बिनवंति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥१॥ सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ अनद मंगल गुर चरणी लागे पाइे सूख घनेरे राम ॥ सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ कृपा करि प्रभि राखिआ ॥ हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ हरि इेकु चितवै प्रभु

इेकु गावै हरि इेकु दृसटी आइिआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइिआ ॥२॥ मिलि रहीऐ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऐ राम ॥ दइिआल प्रभू दामोदर माधो अंतु न पाईऐ गुनीऐ राम ॥ दइिआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम उधारणो ॥ सभि जीअ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ बिनवंति नानक प्रभ मइिआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥३॥ राखि लीइे प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाइे राम ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरह इेको नामु धिआइे राम ॥ धिआइि सो प्रभु तरे भवजल रहे आवण जाणा ॥ सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ सभ इिछ पुन्नी आस पूरी मिले सतिगुर पूरिआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥४॥३॥ रामकली महला ५ छंत ॥ सलोकु ॥ चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥ नानक प्रभु आराधीऐ बिपति निवारण राम ॥१॥ छंतु ॥ प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइि जीउ ॥ सदा सदा हरि सिमरीऐ जलि थलि महीअलि सोइि जीउ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ इिक निमख मनहु न वीसरै ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे सरब गुण जगदीसरै ॥ करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै सो होइि जीउ ॥ बलि जाइि नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइि जीउ ॥१॥ सलोकु ॥ हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ नानक टेक गोपाल की गोविंद संकट मोच ॥१॥ छंतु ॥ भै संकट काटे नाराइिण दइिआल जीउ ॥ हरि गुण आन्नद गाइे प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ प्रतिपाल अचुत पुरखु इेको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥ कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ जीउ पिंडु गृहु थानु तिस का तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ सद सदा बलि जाइि नानकु सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥२॥ सलोकु ॥ रसना उचरै हरि हरे गुण गोविंद वखिआन ॥ नानक पकड़ी टेक इेक परमेसरु रखै निदान ॥१॥ छंतु ॥ सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ भजु साधू संगि

दइिआल देव मन की मति तिआगु जीउ ॥ इिक एट कीजै जीउ दीजै आस इिक धरणीधरै ॥ साधसंगे हरि नाम रंगे संसारु सागरु सभु तरै ॥ जनम मरण बिकार छूटे फिरि न लागै दागु जीउ ॥ बलि जाइि नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥३॥ सलोकु ॥ धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ ॥ सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥१॥ छंतु ॥ सगल इिछ मेरी पुन्नीआ मिलिआ निरंजन राइि जीउ ॥ अनदु भइिआ वडभागीहो गृहि प्रगटे प्रभ आइि जीउ ॥ गृहि लाल आइे पुरबि कमाइे ता की उपमा किआ गणा ॥ बेअंत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ आपे मिलाइे गहि कंठि लाइे तिसु बिना नही जाइि जीउ ॥ बलि जाइि नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइि जीउ ॥४॥४॥ रागु रामकली महला ५ ॥ रण झुंझनड़ा गाउ सखी हरि इेकु धिआवहु ॥ सतिगुरु तुम सेवि सखी मनि चिंदिअड़ा फलु पावहु ॥

रामकली महला ५ रुती सलोकु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करि बंदन प्रभ पारब्रहम बाछउ साधह धूरि ॥ आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥१॥ किलविख काटण भै हरण सुख सागर हरि राइि ॥ दीन दइिआल दुख भंजनो नानक नीत धिआइि ॥२॥ छंतु ॥ जसु गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवंत जीउ ॥ रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावंत जीउ ॥ गुण रंगि राते धंनि ते जन जिनी इिक मनि धिआइिआ ॥ सफल जनमु भइिआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइिआ ॥ पुन्न दान न तुलि किरिआ हरि सरब पापा ह्नत जीउ ॥ बिनवंति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रह्नत जीउ ॥१॥ सलोक ॥ उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमसकार ॥ कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥१॥ संत सरणि साजन परहु सुआमी सिमरि अन्नत ॥ सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवंत ॥२॥ छंतु ॥ रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥ घरि नाहु निहचलु अनदु सखीइे

चरन कमल प्रफुलिआ ॥ सुंदरु सुघड़ु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥२॥ सलोक ॥ साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ॥ कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥१॥ जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आपि ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥२॥ छंतु ॥ ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़ै घाम जीउ ॥ प्रेम बिछोहु दुहागणी दृसटि न करी राम जीउ ॥ नह दृसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ जल बाझु मछुली तड़फड़ावै संगि माइआ रुठीआ ॥ करि पाप जोनी भै भीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ बिनवंति नानक एट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥३॥ सलोक ॥ सरधा लागी संगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ मन तन अंतरि रवि रहे नानक सहजि सुभाइ ॥१॥ करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ चरनह दासी करि लई नानक प्रभ हित चीत ॥२॥ छंतु ॥ रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आन्नद जीउ ॥ घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ मकरंद जीउ ॥ प्रभु पूरि रहिआ सरब ठाई हरि नाम नव निधि गृह भरे ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे ॥ पृअ रंगि जागे नह छिद्र लागे कृपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ ॥४॥ सलोक ॥ आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥१॥ बिनु मिलबे साँति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥२॥ छंतु ॥ रुति सरद अडंबरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ खोजंती दरसनु फिरत कब मिलीऐ गुणतास जीउ ॥ बिनु कंत पिआरे नह सूख सारे हार कंङण ध्रिगु बना ॥ सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ ईत उत दह दिस अलोकन मनि मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥५॥ सलोक ॥ जलणि बुझी सीतल भइे मनि तनि उपजी साँति ॥ नानक प्रभ पूरन

मिले दुतीआ बिनसी भ्राँति ॥१॥ साध पठाइे आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ नानक भ्रम भै मिटि गइे रमण राम भरपूरि ॥२॥ छंतु ॥ रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ ॥ जलनि बुझी दरसु पाइिआ बिनसे माइिआ ध्रोह जीउ ॥ सभि काम पूरे मिलि हजूरे हरि चरण सेवकि सेविआ ॥ हार डोर सीगार सभि रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ भाउ भगति गोविंद बाँछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥६॥ सलोक ॥ हरि धनु पाइिआ सोहागणी डोलत नाही चीत ॥ संत संजोगी नानका गृहि प्रगटे प्रभ मीत ॥१॥ नाद बिनोद अन्नद कोड पृअ प्रीतम संगि बने ॥ मन बाँछत फल पाइिआ हरि नानक नाम भने ॥२॥ छंतु ॥ हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ ॥ सखी सहेली गाउ मंगलो गृहि आइे हरि कंत जीउ ॥ गृहि लाल आइे मनि धिआइे सेज सुंदरि सोहीआ ॥ वणु तृणु तृभवण भइे हरिआ देखि दरसन मोहीआ ॥ मिले सुआमी इछ पुन्नी मनि जपिआ निरमल मंत जीउ ॥ बिनवंति नानक नित करहु रलीआ हरि मिले स्रीधर कंत जीउ ॥७॥ सलोक ॥ संत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम पिआर ॥१॥ जिन जानिआ सेई तरे से सूरे से बीर ॥ नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥२॥ छंतु ॥ चरण बिराजित सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ हरि रंगि राते सहजि माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ तजि आपु सरणी परे चरनी सरब गुण जगदीसरै ॥ गोविंद गुण निधि स्रीरंग सुआमी आदि कउ आदेसु जीउ ॥ बिनवंति नानक मइिआ धारहु जुगु जुगो इिक वेसु जीउ ॥८॥१॥६॥८॥

रामकली महला १ दखणी एअंकारु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एअंकारि ब्रहमा उतपति ॥ एअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ एअंकारि सैल जुग भइे ॥ एअंकारि बेद

निरमइे ॥ एअंकारि सबदि उधरे ॥ एअंकारि गुरमुखि तरे ॥ एनम अखर सुणहु बीचारु ॥ एनम अखरु तृभवण सारु ॥१॥ सुणि पाडे किआ लिखहु जंजाला ॥ लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥ ससै सभु जगु सहजि उपाइिआ तीनि भवन इिक जोती ॥ गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक मोती ॥ समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै अंति निरंतरि साचा ॥ गुरमुखि देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥२॥ धधै धरमु धरे धरमा पुरि गुणकारी मनु धीरा ॥ धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कंचन भइे मनूरा ॥ धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥३॥ ङिआनु गवाइिआ दूजा भाइिआ गरबि गले बिखु खाइिआ ॥ गुर रसु गीत बाद नही भावै सुणीऐ गहिर गंभीरु गवाइिआ ॥ गुरि सचु कहिआ अंमृतु लहिआ मनि तनि साचु सुखाइिआ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे अंमृतु पीआइिआ ॥४॥ इेको इेकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥ अंतरि बाहरि इेकु पछाणै इिउ घरु महलु सिञापै ॥ प्रभु नेड़ै हरि दूरि न जाणहु इेको सृसटि सबाई ॥ इेकंकारु अवरु नही दूजा नानक इेकु समाई ॥५॥ इिसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिए तुलिए न जाई ॥ माइिआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ लबि लोभि मुहताजि विगूते इिब तब फिरि पछुताई ॥ इेकु सरेवै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई ॥६॥ इेकु अचारु रंगु इिकु रूपु ॥ पउण पाणी अगनी असरूपु ॥ इेको भवरु भवै तिहु लोइि ॥ इेको बूझै सूझै पति होइि ॥ गिआनु धिआनु ले समसरि रहै ॥ गुरमुखि इेकु विरला को लहै ॥ जिस नो देइि किरपा ते सुखु पाइे ॥ गुरू दुआरै आखि सुणाइे ॥७॥ ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥ ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ करि किरपा अपुनै घरि आवै ॥ ऊनवि बरसै नीझर धारा ॥ ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ इिसु इेके का जाणै भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥८॥ उगवै सूरु असुर संघारै ॥ ऊचउ देखि सबदि बीचारै ॥ ऊपरि आदि अंति तिहु लोइि ॥ आपे करै कथै सुणै

सोइि ॥ एहु बिधाता मनु तनु देइि ॥ एहु बिधाता मनि मुखि सोइि ॥ प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइि ॥ नानक नामि रते पति होइि ॥९॥ राजन राम रवै हितकारि ॥ रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ राति दिन्नति रहै रंगि राता ॥ तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ अति निरमाइिलु सीझसि देहा ॥ रहसी रामु रिदै इिक भाइि ॥ अंतरि सबदु साचि लिव लाइि ॥१०॥ रोसु न कीजै अंमृतु पीजै रहणु नही संसारे ॥ राजे राइि रंक नही रहणा आइि जाइि जुग चारे ॥ रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिन्नती ॥ इेकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥११॥ लाज मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु अन्नदु ॥ लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥१२॥ लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ लबु लोभु बुरा अह्मकारु ॥ लाड़ी चाड़ी लाइितबारु ॥ मनमुखु अंधा मुगधु गवारु ॥ लाहे कारणि आइिआ जगि ॥ होइि मजूरु गइिआ ठगाइि ठगि ॥ लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥१३॥ आइि विगूता जगु जम पंथु ॥ आई न मेटण को समरथु ॥ आथि सैल नीच घरि होइि ॥ आथि देखि निवै जिसु दोइि ॥ आथि होइि ता मुगधु सिआना ॥ भगति बिहूना जगु बउराना ॥ सभ महि वरतै इेको सोइि ॥ जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइि ॥१४॥ जुगि जुगि थापि सदा निरवैरु ॥ जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ जो दीसै सो आपे आपि ॥ आपि उपाइि आपे घट थापि ॥ आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ करि आचारु सचु सुखु होई ॥ नाम विहूणा मुकति किव होई ॥१५॥ विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ वाट वटाऊ आवै जाइि ॥ किआ ले आइिआ किआ पलै पाइि ॥ विणु नावै तोटा सभ थाइि ॥ लाहा मिलै जा देइि बुझाइि ॥ वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी ॥१६॥ गुण वीचारे गिआनी सोइि ॥ गुण महि गिआनु परापति होइि ॥ गुणदाता विरला संसारि ॥ साची करणी गुर वीचारि ॥ अगम

अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ ता मिलीऐ जा लइे मिलाइ ॥ गुणवंती गुण सारे नीत ॥ नानक गुरमति मिलीऐ मीत ॥१७॥ कामु क्रोधु काइिआ कउ गालै ॥ जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ कसि कसवटी सहै सु ताउ ॥ नदरि सराफ वन्नी सचड़ाउ ॥ जगतु पसू अहं कालु कसाई ॥ करि करतै करणी करि पाई ॥ जिनि कीती तिनि कीमति पाई ॥ होर किआ कहीऐ किछु कहणु न जाई ॥१८॥ खोजत खोजत अंमृतु पीआ ॥ खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइि ॥ खरा रतनु जुग चारे होइि ॥ खात पीअंत मूइे नही जानिआ ॥ खिन महि मूइे जा सबदु पछानिआ ॥ असथिरु चीतु मरनि मनु मानिआ ॥ गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥१९॥ गगन गंभीरु गगन्नतरि वासु ॥ गुण गावै सुख सहजि निवासु ॥ गइिआ न आवै आइि न जाइि ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइि ॥ गगनु अगंमु अनाथु अजोनी ॥ असथिरु चीतु समाधि सगोनी ॥ हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी ॥ गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥२०॥ घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥ जाति असंख अंत नही मेरे ॥ केते मात पिता सुत धीआ ॥ केते गुर चेले फुनि हूआ ॥ काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ केती नारि वरु इेकु समालि ॥ गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ दह दिस ढूढि घरै महि पाइिआ ॥ मेलु भइिआ सतिगुरू मिलाइिआ ॥२१॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बोलै ॥ गुरमुखि तोलि तुोलावै तोलै ॥ गुरमुखि आवै जाइि निसंगु ॥ परहरि मैलु जलाइि कलम्कु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ गुरमुखि सबदु अंमृतु है सारु ॥ नानक गुरमुखि पावै पारु ॥२२॥ चंचलु चीतु न रहई ठाइि ॥ चोरी मिरगु अंगूरी खाइि ॥ चरन कमल उर धारे चीत ॥ चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ॥ चिंतत ही दीसै सभु कोइि ॥ चेतहि इेकु तही सुखु होइि ॥ चिति वसै राचै हरि नाइि ॥ मुकति भइिआ पति सिउ घरि जाइि ॥२३॥ छीजै देह खुलै इिक गंढि ॥ छेआ नित देखहु जगि हढि ॥ धूप छाव जे सम करि जाणै ॥ बंधन काटि मुकति घरि आणै ॥ छाइिआ छूछी जगतु भुलाना ॥ लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ छीजै जोबनु जरूआ

सिरि कालु ॥ काइआ छीजै भई सिबालु ॥२४॥ जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥ जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखहि राखु ॥ जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥ जै जै कारु जपउ जगदीस ॥ गुरमति मिलीऐ बीस इकीस ॥२५॥ झखि बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ झूरि मरै देखै परमादु ॥ जनमि मूए नही जीवण आसा ॥ आइ चले भए आस निरासा ॥ झुरि झुरि झखि माटी रलि जाइ ॥ कालु न चाँपै हरि गुण गाइ ॥ पाई नव निधि हरि कै नाइ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥२६॥ ञिआनो बोलै आपे बूझै ॥ आपे समझै आपे सूझै ॥ गुर का कहिआ अंकि समावै ॥ निरमल सूचे साचो भावै ॥ गुरु सागरु रतनी नही तोट ॥ लाल पदारथ साचु अखोट ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ गुर की करणी काहे धावहु ॥ नानक गुरमति साचि समावहु ॥२७॥ टूटै नेहु कि बोलहि सही ॥ टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ टूटि परीति गई बुर बोलि ॥ दुरमति परहरि छाडी ढोलि ॥ टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ गुर सबदी घरि कारजु सारि ॥ लाहा साचु न आवै तोटा ॥ तृभवण ठाकुरु प्रीतमु मोटा ॥२८॥ ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥ ठाकुरु इकु सबाई नारि ॥ बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥ महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ साई सोहागणि ठाकुरि धारी ॥२९॥ डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ डाहपणि तनि सुखु नही बिनु डर बिणठी डार ॥ डरपि मुई घरि आपणै डीठी कंति सुजाणि ॥ डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ डूगरि वासु तिखा घणी जब देखा नही दूरि ॥ तिखा निवारी सबदु मंनि अंमृतु पीआ भरपूरि ॥ देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ गुरू दुआरै देवसी तिखा निवारै सोइ ॥३०॥ ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि करारि ॥ भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥ अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलि जाउ ॥ तिन की धूड़ि अघुलीऐ संगति मेलि मिलाउ ॥ मनु दीआ गुरि आपणै पाइआ निरमल नाउ ॥

जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहारै जाउ ॥ जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइि ॥ गुर परसादी तिसु संम्ला ता तनि दूखु न होइि ॥३१॥ णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ आवणि जाणि विगुचीऐ दुबिधा विआपै रोगु ॥ णाम विहूणे आदमी कलर कंध गिरंति ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ जाइि रसातलि अंति ॥ गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइि ॥ अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइि ॥ तूटी तंतु रबाब की वाजै नही विजोगि ॥ विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि संजोग ॥३२॥ तरवरु काइिआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥ ततु चुगहि मिलि इेकसे तिन कउ फास न रंच ॥ उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥ बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥ आपि छडाइे छूटीऐ वडा आपि धणी ॥ गुर परसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइि ॥ अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइि ॥३३॥ थर थर कंपै जीअड़ा थान विहूणा होइि ॥ थानि मानि सचु इेकु है काजु न फीटै कोइि ॥ थिरु नाराइिणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥ सरबे थान थन्नतरी तू दाता दातारु ॥ जह देखा तह इेकु तू अंतु न पारावारु ॥ थान थन्नतरि रवि रहिआ गुर सबदी वीचारि ॥ अणमंगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥३४॥ दइिआ दानु दइिआलु तू करि करि देखणहारु ॥ दइिआ करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ दालद भंजन दुख दलण गुरमुखि गिआनु धिआनु ॥३५॥ धनि गइिऐ बहि झूरीऐ धन महि चीतु गवार ॥ धनु विरली सचु संचिआ निरमलु नामु पिआरि ॥ धनु गइिआ ता जाण देहि जे राचहि रंगि इेक ॥ मनु दीजै सिरु सउपीऐ भी करते की टेक ॥ धंधा धावत रहि गइे मन महि सबदु अन्नदु ॥ दुरजन ते साजन भइे भेटे गुर गोविंद ॥ बनु बनु फिरती ढूढती बसतु रही घरि बारि ॥ सतिगुरि मेली मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥३६॥ नाना करत न छूटीऐ विणु गुण जम पुरि जाहि ॥ ना तिसु इेहु

न एहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ ना साजन से रंगुले किसु पहि करी पुकार ॥ नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥३७॥ पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ पापि लदे पापे पासारा ॥ परहरि पापु पछाणै आपु ॥ ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जमकालु ॥ किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खै कालु ॥ मनु जंजाली वेड़िआ भी जंजाला माहि ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ पापे पचहि पचाहि ॥३८॥ फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ फाथा चोग चुगै नही बूझै ॥ सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥३९॥ बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥४०॥ भनि भनि घड़ीऐ घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढाहै ॥ सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवाहै ॥ भरमि भुलाने भए दिवाने विणु भागा किआ पाईऐ ॥ गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥ हरि गुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईऐ ॥ भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईऐ ॥ भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीऐ ॥ गुर परसादी आपो चीन्है जीवतिआ इव मरीऐ ॥४१॥ माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि ॥ हंसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥ मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ मन महि मनु उलटो मरै

जे गुण होवहि नालि ॥ मेरी मेरी करि मुइे विणु नावै दुखु भालि ॥ गड़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ नानक सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥४२॥ जो आवहि से जाहि फुनि आइि गइे पछुताहि ॥ लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ से जन उबरे जिन हरि भाइिआ ॥ धंधा मुआ विगूती माइिआ ॥ जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ असथिरु करता तू धणी तिस ही की मै एट ॥ गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥४३॥ राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु ॥ वारी आपो आपणी कोइि न बंधै धीर ॥ राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ मै तनि अवगण झुरि मुई विणु गुण किउ घरि जाह ॥ गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ तिन ही जैसी थी रहाँ जपि जपि रिदै मुरारि ॥ अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥ विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥४४॥ लसकरीआ घर संमले आइे वजहु लिखाइि ॥ कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइि ॥ लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ चाकरु कहीऔ खसम का सउहे उतर देइि ॥ वजहु गवाइे आपणा तखति न बैसहि सेइि ॥ प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइि ॥ आपि करे किसु आखीऔ अवरु न कोइि करेइि ॥४५॥ बीजउ सूझै को नही बहै दुलीचा पाइि ॥ नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइि ॥ वणु तृणु ढूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥ लाल रतन बहु माणकी सतिगुर हाथि भंडारु ॥ ऊतमु होवा प्रभु मिलै इिक मनि इेकै भाइि ॥ नानक प्रीतम रसि मिले लाहा लै परथाइि ॥ रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ गुरमुखि बेअंतु धिआईऔ अंतु न पारावारु ॥४६॥ ड़ाड़ै रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ ड़ाड़ै गारुड़ु तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ गुर परसादी हरि पाईऔ मतु को भरमि भुलाहि ॥ सो साहु साचा जिसु हरि धनु रासि ॥ गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ रूड़ी बाणी

हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥४७॥ सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥ साहु सदाइे संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ सचिआरी सचु संचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ साजनु मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हंसु ॥ साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥ माइिआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ बिखिआ अंमृतु इेकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥४८॥ खिमा विहूणे खपि गइे खूहणि लख असंख ॥ गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुइे बिसंख ॥ खसमु पछाणै आपणा खूलै बंधु न पाइि ॥ सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइि ॥ खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ मनि तनि मुखि जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ हउमै खपै खपाइिसी बीजउ वथु विकारु ॥ जंत उपाइि विचि पाइिअनु करता अलगु अपारु ॥४९॥ सृसटे भेउ न जाणै कोइि ॥ सृसटा करै सु निहचउ होइि ॥ संपै कउ ईसरु धिआईऐ ॥ संपै पुरबि लिखे की पाईऐ ॥ संपै कारणि चाकर चोर ॥ संपै साथि न चालै होर ॥ बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥५०॥ हेरत हेरत हे सखी होइि रही हैरानु ॥ हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ हार डोर कंकन घणे करि थाकी सीगारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइिआ सगल गुणा गलि हारु ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ हरि बिनु किनि सुखु पाइिआ देखहु मनि बीचारि ॥ हरि पड़णा हरि बुझणा हरि सिउ रखहु पिआरु ॥ हरि जपीऐ हरि धिआईऐ हरि का नामु अधारु ॥५१॥ लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर बीचारि ॥ लिखिआ फेरि न सकीऐ जिउ भावी तिउ सारि ॥ नदरि तेरी सुखु पाइिआ नानक सबदु वीचारि ॥ मनमुख भूले पचि मुइे उबरे गुर बीचारि ॥ जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ करि कहिआ जाइि ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइि ॥५२॥ पाधा पड़िआ आखीऐ बिदिआ

बिचरै सहजि सुभाइ ॥ बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ मूरखु सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ॥५३॥ पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥५४॥१॥

रामकली महला १ सिध गोसटि ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥ तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥१॥ किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥ साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआए ॥ साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाए ॥ कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥ नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥२॥ घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाइे ॥ सहजे आइे हुकमि सिधाइे नानक सदा रजाइे ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइिणु ऐसी गुरमति पाइे ॥ गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाइे ॥३॥ दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥ चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥४॥ जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ रहहि इकाँति इेको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥ अगमु अगोचरु देखि दिखाइे नानकु ता का दासो ॥५॥ सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥ रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥ इिहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो ॥ आपे मेलि मिलाइे करता लागै साचि पिआरो ॥६॥ हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥ कंद मूलु अहारो

खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥ तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥ गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥७॥ हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डुोलाई ॥ बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥ हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥ खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥८॥ दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥ बारह अंतरि इेकु सरेवहु खटु दरसन इिक पंथा ॥ इिन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥ नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इिव पाईऐ ॥९॥ अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै इेकु हरी ॥ साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥१०॥ ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥ काँइिआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥ सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ नानक गुरमुखि नामु समालि ॥११॥ कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥ कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ कवनु सु आवै कवनु सु जाइि ॥ कवनु सु तृभवणि रहिआ समाइि ॥१२॥ घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥ अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ मनमुखि बिनसै आवै जाइि ॥ नानक गुरमुखि साचि समाइि ॥१३॥ किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥ किउ करि खोइिआ किउ करि लाधा ॥ किउ करि निरमलु किउ करि अंधिआरा ॥ इिहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥१४॥ दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥ मनमुखि खोइिआ गुरमुखि लाधा ॥ सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइि ॥ नानक हउमै मेटि समाइि ॥१५॥ सुन्न निरंतरि दीजै बंधु ॥ उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥ सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥ नानक साचे भावै साचा ॥१६॥ किसु कारणि गृहु तजिए उदासी ॥ किसु कारणि इिहु भेखु निवासी ॥ किसु वखर के तुम वणजारे ॥ किउ करि साथु लम्घावहु पारे ॥१७॥ गुरमुखि खोजत भइे उदासी ॥ दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ साच वखर के हम वणजारे ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥१८॥ कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइिआ ॥ काहे कउ तुझु

इहु मनु लाइआ ॥ कितु बिधि आसा मनसा खाई ॥ कितु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ बिनु दंता किउ खाईऐ सारु ॥ नानक साचा करहु बीचारु ॥१९॥ सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ ॥ मनसा आसा सबदि जलाई ॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ त्रै गुण मेटे खाईऐ सारु ॥ नानक तारे तारणहारु ॥२०॥ आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुन्न कहा घर वासो ॥ गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासो ॥ काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥२१॥ कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥ किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥ पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥२२॥ आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुन्न निरंतरि वासु लीआ ॥ अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥ गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥ नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥ आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥२३॥ अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥ सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ॥ सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥२४॥ साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥ झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥ आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥ एका

बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाइे गुर कै सबदि सु मुकतु भइिआ ॥ नानक तारे तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥२५॥ मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥ मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥ वेमारगि मूसै मंतृ मसाणि ॥ सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ नानक साचि रते सुखु जाणि ॥२६॥ गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥ गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥ गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥ गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥२७॥ गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥ गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥ गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ गुरमुखि पाईऐ अलख अपारु ॥ नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥२८॥ गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥ गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥ गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥ नानक हउमै जालि समाई ॥२९॥ गुरमुखि धरती साचै साजी ॥ तिस महि एपति खपति सु बाजी ॥ गुर कै सबदि रपै रंगु लाइि ॥ साचि रतउ पति सिउ घरि जाइि ॥ साच सबद बिनु पति नही पावै ॥ नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥३०॥ गुरमुखि असट सिधी सभि बुधी ॥ गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥ गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥ गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥ नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥३१॥ नामे राते हउमै जाइि ॥ नामि रते सचि रहे समाइि ॥ नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥ नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ नामि रते तृभवण सोझी होइि ॥ नानक नामि रते सदा सुखु होइि ॥३२॥ नामि रते सिध गोसटि होइि ॥ नामि रते सदा तपु होइि ॥ नामि रते सचु करणी सारु ॥ नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥३३॥ पूरे गुर ते नामु पाइिआ जाइि ॥ जोग जुगति सचि रहै समाइि ॥ बारह महि जोगी भरमाइे संनिआसी छिअ चारि ॥ गुर कै सबदि जो

मरि जीवै सो पाइे मोख दुआरु ॥ बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ उर धारि ॥३४॥ गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइि ॥ गुरमुखि परखै रतनु सुभाइि ॥ गुरमुखि साची कार कमाइि ॥ गुरमुखि साचे मनु पतीआइि ॥ गुरमुखि अलखु लखाइे तिसु भावै ॥ नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥३५॥ गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ गुरमुखि भउ भंजनु परधानु ॥ गुरमुखि करणी कार कराइे ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाइे ॥३६॥ गुरमुखि सासत्र सिमृति बेद ॥ गुरमुखि पावै घटि घटि भेद ॥ गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥ गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ गुरमुखि राम नाम रंगि राता ॥ नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥३७॥ बिनु गुर भरमै आवै जाइि ॥ बिनु गुर घाल न पवई थाइि ॥ बिनु गुर मनूआ अति डोलाइि ॥ बिनु गुर तृपति नही बिखु खाइि ॥ बिनु गुर बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ नानक गुर बिनु घाटे घाट ॥३८॥ जिसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥ नानक सहजे सचु वापारा ॥३९॥ गुरमुखि बाँधिए सेतु बिधातै ॥ लम्का लूटी दैत संतापै ॥ रामचंदि मारिए अहि रावणु ॥ भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइिणु ॥ गुरमुखि साइिरि पाहण तारे ॥ गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥४०॥ गुरमुखि चूकै आवण जाणु ॥ गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥ गुरमुखि खोटे खरे पछाणु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि दरगह सिफति समाइि ॥ नानक गुरमुखि बंधु न पाइि ॥४१॥ गुरमुखि नामु निरंजन पाइे ॥ गुरमुखि हउमै सबदि जलाइे ॥ गुरमुखि साचे के गुण गाइे ॥ गुरमुखि साचै रहै समाइे ॥ गुरमुखि साचि नामि पति ऊतम होइि ॥ नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइि ॥४२॥ कवण मूलु कवण मति वेला ॥ तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ कवण कथा ले रहहु निराले ॥ बोलै नानकु सुणहु तुम बाले ॥ इेसु कथा का देइि बीचारु ॥ भवजलु

सबदि लम्घावणहारु ॥४३॥ पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥ सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ इेकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥४४॥ मैण के दंत किउ खाईअै सारु ॥ जितु गरबु जाइि सु कवणु आहारु ॥ हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ इित उत किस कउ जाणि समावै ॥ कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥४५॥ हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ दूजा मेटै इेको होवै ॥ जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ सबदु कमाईअै खाईअै सारु ॥ अंतरि बाहरि इेको जाणै ॥ नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥४६॥ सच भै राता गरबु निवारै ॥ इेको जाता सबदु वीचारै ॥ सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥ तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ नानक नदरी नदरि पिआरे ॥४७॥ कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइिआ ॥ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइिआ ॥ कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥ कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥ बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥४८॥ सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ आपे पारि उतारणहारा ॥ गुर परचै मनु साचि समाइि ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइि ॥४९॥ नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ दूजा जाइि इिकतु घरि आनै ॥ बोलै पवना गगनु गरजै ॥ नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥५०॥ अंतरि सुन्नं बाहरि सुन्नं तृभवण सुन्न मसुन्नं ॥ चउथे सुन्नै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुन्नं ॥ घटि घटि सुन्न का जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ जो जनु नाम निरंजन राता ॥ नानक सोई पुरखु बिधाता ॥५१॥ सुन्नो सुन्नु कहै सभु कोई ॥ अनहत सुन्नु कहा ते होई ॥ अनहत सुंनि रते से कैसे ॥ जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ एइि जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥५२॥ नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ तह अनहत सुन्न वजावहि तूरे ॥ साचै राचे देखि हजूरे ॥ घटि

घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ गुपती बाणी परगटु होइ ॥ नानक परखि लइे सचु सोइ ॥५३॥ सहज भाइ मिलीऐ सुखु होवै ॥ गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ सुन्न सबदु अपरंपरि धारै ॥ कहते मुकतु सबदि निसतारै ॥ गुर की दीखिआ से सचि राते ॥ नानक आपु गवाइ मिलण नही भ्राते ॥५४॥ कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ किउ ततु न बूझै चोटा खाइ ॥ जम दरि बाधे कोइ न राखै ॥ बिनु सबदै नाही पति साखै ॥ किउ करि बूझै पावै पारु ॥ नानक मनमुखि न बुझै गवारु ॥५५॥ कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ ततु न चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥ दुरमति विछुड़ि चोटा खाइ ॥ मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥ नानक दरगह पावै मानु ॥५६॥ साचु वखरु धनु पलै होइ ॥ आपि तरै तारे भी सोइ ॥ सहजि रता बूझै पति होइ ॥ ता की कीमति करै न कोइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ नानक पारि परै सच भाइ ॥५७॥ सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥ त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥ बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाइे ॥ सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाइे ॥ गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाइे ॥ आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाइे ॥५८॥ सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥ पवन का वासा सुन्न निवासा अकल कला धर सोई ॥ नदरि करे सबदु घट महि वसै विचहु भरमु गवाइे ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी नामो मंनि वसाइे ॥ सबदि गुरू भवसागरु तरीऐ इत उत इेको जाणै ॥ चिहनु वरनु नही छाइिआ माइिआ नानक सबदु पछाणै ॥५९॥ त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुन्न सचु आहारो ॥ गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥ त्रै गुण मेटै सबदु वसाइे ता मनि चूकै अहंकारो ॥ अंतरि बाहरि इेको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाइे ॥ नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर सबदि समाइे ॥६०॥ मन का जीउ पवनु कथीअले पवनु कहा रसु खाई ॥ गिआन की मुद्रा कवन अउधू

सिध की कवन कमाई ॥ बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ सबदि रते अंमृत रसु पाइिआ साचे रहे अघाई ॥ कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ कितु भोजनि तृपतासै ॥ नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥६१॥ रंगि न राता रसि नही माता ॥ बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥६२॥ गुर परसादी रंगे राता ॥ अंमृतु पीआ साचे माता ॥ गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ अपिउ पीए आतम सुखु धारी ॥ सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥ नानक बूझै को वीचारी ॥६३॥ इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाइे ॥ आपै आपु खाइि ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाइे ॥ किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै ॥६४॥ इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ नाभि पवनु घरि आसणि बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै तृभवण जोति सु सबदि लहै ॥ खावै दूख भूख साचे की साचे ही तृपतासि रहै ॥ अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥६५॥ जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ नाभि कमल असथंभु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ वरनु भेखु असरूपु न जापी किउ करि जापसि साचा ॥ नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥६६॥ हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥ नाभि कमलु असथंभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ गउनु गगनु जब तबहि न

होतउ तृभवण जोति आपे निरंकारु ॥ वरनु भेखु असरूपु सु इेको इेको सबदु विडाणी ॥ साच बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥६७॥ कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिअै दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाइे ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाइे ॥ नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥६८॥ गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइि ॥ गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइि ॥ गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइि ॥ गुरमुखि निज घरि वासा होइि ॥ गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ गुरमुखि नानक इेको जाणै ॥६९॥ बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइिआ न जाइि ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइि ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥ नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥७०॥ गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि ॥ गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥ गुरमुखि मेलि मिलाइे सो जाणै ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥७१॥ सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥ नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥ सतिगुर ते नामु पाईअै अउधू जोग जुगति ता होई ॥ करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥७२॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥ साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ मागहि नामु पाइि इिह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥ अबिनासी प्रभि खेलु रचाइिआ गुरमुखि सोझी होई ॥ नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥७३॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली की वार महला ३ ॥ जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाइे भाउ ॥ नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइि ॥ हउमै इेहो बीजु है सहसा गइिआ विलाइि ॥ ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइि ॥ अंभै सेती अंभु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइि ॥ नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु लोका आइि ॥ लोकु कि वेखै बपुड़ा जिस नो सोझी नाहि ॥ जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइि ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै हउमै करत विहाइि ॥ आवणु जाणु न सुझई अंधा अंधु कमाइि ॥ जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइि ॥२॥ मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिस नो आपे मेले सोइि ॥ सुखै इेहु बिबेकु है अंतरु निरमलु होइि ॥ अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइि ॥ नानक इेको नदरी आइिआ जह देखा तह सोइि ॥३॥ पउड़ी ॥ सचै तखतु रचाइिआ बैसण कउ जाँई ॥ सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ चंदु सूरजु दुइि चानणे पूरी बणत बणाई ॥ आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥१॥ वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥१॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ कबीर महिदी करि कै घालिआ आपु पीसाइि पीसाइि ॥ तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइि ॥१॥ मः ३ ॥ नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइि ॥ आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइि लइेइि ॥ इिहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइि ॥२॥ पउड़ी ॥ वेकी सृसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइि समाही ॥ आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ॥ तुधु जेवड मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥२॥ सलोकु मः ३ ॥ भरमि

भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ सो सहु साँति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ गुर परसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उर धारि ॥ नानक घरि बैठिआ सहु पाइिआ जा किरपा कीती करतारि ॥१॥ मः ३ ॥ धंधा धावत दिनु गइिआ रैणि गवाई सोइि ॥ कूड़ु बोलि बिखु खाइिआ मनमुखि चलिआ रोइि ॥ सिरै उपरि जम डंडु है दूजै भाइि पति खोइि ॥ हरि नामु कदे न चेतिए फिरि आवण जाणा होइि ॥ गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइि ॥ नानक सहजे मिलि रहै करमि परापति होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ इिकि आपणी सिफती लाइिअनु दे सतिगुर मती ॥ इिकना नो नाउ बखसिएनु असथिरु हरि सती ॥ पउणु पाणी बैसंतरो हुकमि करहि भगती ॥ ड़ेना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥ सभु इिको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई ॥३॥ सलोकु ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइि ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइि ॥१॥ मः ३ ॥ किउ करि इिहु मनु मारीऐ किउ करि मिरतकु होइि ॥ कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै न कोइि ॥ गुर परसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइि ॥ नानक जिस नो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइि ॥२॥ मः ३ ॥ जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइि ॥ भै का संजमु जे करे दारू भाउ लाइेइि ॥ अनदिनु गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइि ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइि ॥३॥ पउड़ी ॥ दूजा भाउ रचाइिएनु त्रै गुण वरतारा ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइिअनु हुकमि कमावनि कारा ॥ पंडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा ॥ सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥४॥ सलोकु मः ३ ॥ मन का झूठा झूठु कमावै ॥ माइिआ नो फिरै तपा सदावै ॥ भरमे भूला सभि तीरथ गहै ॥ एहु तपा कैसे परम गति लहै ॥ गुर परसादी को सचु कमावै ॥ नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥१॥ मः ३ ॥ सो तपा जि इिहु तपु घाले ॥ सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ॥ सतिगुर की सेवा इिहु तपु परवाणु ॥ नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥२॥ पउड़ी ॥ राति दिनसु उपाइिअनु संसार

की वरतणि ॥ गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि तृणि ॥ सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ अभिआगत ऐहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ तिस दै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ अभै निरंजनु परम पदु ता का भूखा होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाइ कोइ ॥१॥ मः ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ उदरै कारणि आपणे बहले भेखि करेनि ॥ अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥२॥ पउड़ी ॥ अंबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ घरु दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ॥ सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥६॥ सलोकु मः ३ ॥ रैणाइर माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ नानक नउ निधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ ॥१॥ मः ३ ॥ सहजे सतिगुरु न सेविए विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ रसना हरि रसु न चखिए कमलु न होइए परगासु ॥ बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ इकसु हरि के नाम विणु ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ जा आपे नदरि करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरू की कबहि न छोडै पासु ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु ॥२॥ पउड़ी ॥ छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ आपे सृसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ सिमृति सासत साजिअनु पाप पुन्न गणत गणीनी ॥ जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तन्नु न होइ ॥ जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ भै पइऐ

तनु खीणु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रंगु लाइ ॥१॥ मः ३ ॥ रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥ गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अंधारु ॥ तिस नो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि पिआरु ॥ सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ॥ मनमुखि सीगारु न जाणनी जासनि जनमु सभु हारि ॥ बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जंमहि होइ खुआरु ॥ सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै जि करे सु जाणै करतारु ॥ नानक सचा इकु है दुहु विचि है संसारु ॥ चंगै मंदै आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए करतारु ॥२॥ मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ तिन जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिनी सतिगुर सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ॥ आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ गुरमुखि सुखु पावहि ॥ निज घरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ॥ सचा गहिर गंभीरु है गुर सबदि बुझाई ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ सचा नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ नानक हरि का भाणा मंने सो भगतु होइ विणु मंने कचु निकचु ॥१॥ मः ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ ओइ थाउ कुथाउ न जाणनी उन अंतरि लोभु विकारु ॥ ओइ आपणै सुआइ आइ बहि गला करहि ओना मारे जमु जंदारु ॥ अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि खुआरु कीचहि कूड़िआर ॥ एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढहु इहु वीचारु ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख कटणहारु ॥ नामु जपे नामो आराधे

तिसु जन कउ करहु सभि नमसकारु ॥ मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु ॥ जन नानक जिस दे इहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु जेवडु दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ ॥ गुर परसादी पाइ जिथहु हउमै जाईऐ ॥ रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ ॥ जिस नो बखसे तिसु देइ आपि लइे मिलाईऐ ॥ घट अंतरि अंमृतु रखिएनु गुरमुखि किसै पिआई ॥९॥ सलोक मः ३ ॥ बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥ जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई करम करेनि ॥ जाहि पुछहु सिमृति सासत बिआस सुक नारद बचन सभ सृसटि करेनि ॥ सचै लाइे सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥ नानक आइे से परवाणु भइे जि सगले कुल तारेनि ॥१॥ मः ३ ॥ गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ एइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ कूड़ु कुसतु कमावदे पर निंदा सदा करेनि ॥ एइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ॥ नानक जितु एइ लाइे तितु लगे उइ बपुड़े किआ करेनि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ इकि कूड़ि कुसति लाइअनु मनमुख विगूती ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती ॥ जिन कउ पोतै पुन्नु है तिन्ह वाति सिपीती ॥ नानक नामु धिआईऐ सचु सिफति सनाई ॥१०॥ सलोकु मः १ ॥ सती पापु करि सतु कमाहि ॥ गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥ इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ ॥ भावै आवउ भावै जाउ ॥ सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ आपो आपै पूजा होइ ॥ काजी होइ कै बहै निआइ ॥ फेरे तसबी करे खुदाइ ॥ वढी लै कै हकु गवाइे ॥ जे को पुछै ता पड़ि सुणाइे ॥ तुरक मंत्रु कनि रिदै समाहि ॥ लोक मुहावहि चाड़ी खाहि ॥ चउका दे कै सुचा होइ ॥ ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ आगै पाछै रोवहि पूत ॥ जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ कितु कारणि सिरि छाई पाई ॥ नानक कलि का इेहु परवाणु ॥ आपे आखणु आपे जाणु ॥१॥ मः १ ॥ हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै ॥ सूतु पाइ करे बुरिआई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ मुसलमानु

करे वडिआई ॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ राहु दसाइ एथै को जाइ ॥ करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ मुंद्रा पाइ फिरै संसारि ॥ जिथै किथै सिरजणहारु ॥ जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥ इेथै जाणै सु जाइ सिञाणै ॥ होरु फकड़ु ह्मिदू मुसलमाणै ॥ सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ सचो सचु वखाणै कोइ ॥ नानक अगै पुछ न होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़ु ॥ अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥ मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कड़ु ॥ सभना साहिबु इेकु है पूरै भागि पाइआ जाई ॥११॥ सलोक मः १ ॥ ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥ ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु आइ मिलै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ सभि घट मेरे हउ सभना अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ जिसहि भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥१॥ मः १ ॥ सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥ पुन्न दान का करे सरीरु ॥ सो गिरही गंगा का नीरु ॥ बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥२॥ मः १ ॥ सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ अउहठ पटण महि भीखिआ करै ॥ सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥३॥ मः १ ॥ सो उदासी जि पाले उदासु ॥ अरध उरध करे निरंजन वासु ॥ चंद सूरज की पाइे गंढि ॥ तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ बोलै गोपी चंदु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥४॥ मः १ ॥ सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजाले ॥ सुपनै बिंदु न देई

झरणा ॥ तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥५॥ मः १ ॥ सो बैरागी जि उलटे ब्रहमु ॥ गगन मंडल महि रोपै थंमु ॥ अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥ ते बैरागी सत समानि ॥ बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥६॥ मः १ ॥ किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगति ॥ कन्न पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ आसति नासति इेको नाउ ॥ कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ धूप छाव जे सम करि सहै ॥ ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ ना संसारी ना अउधूत ॥ निरंकारि जो रहै समाइ ॥ काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥७॥ पउड़ी ॥ हरि मंदरु सोई आखीअै जिथहु हरि जाता ॥ मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥ बाहरि मूलि न खोजीअै घर माहि बिधाता ॥ मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥१२॥ सलोक मः ३ ॥ मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ॥ मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ मूरखु एहु जि मुगधु है अह्मकारे मरणा ॥ इेतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ गुरमुखि होइ सु करे वीचारु एसु अलिपतो रहणा ॥ हरि नामु जपै आपि उधरै एसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥१॥ मः १ ॥ नानकु आखै रे मना सुणीअै सिख सही ॥ लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥ तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ कूड़ निखुटे नानका एड़कि सचि रही ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ हरि की कीमति न पवै किछु कहणु न जापै ॥ गुर परसादी सालाहीअै हरि भगती रापै ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ अह्मकारु गवापै ॥ सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥ सह्मसर दान दे इंद्रु रोआइआ ॥ परस रामु रोवै घरि आइआ ॥ अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ अैसी दरगह मिलै सजाइ ॥ रोवै रामु

निकाला भइआ ॥ सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥ रोवै दहसिरु लम्क गवाइ ॥ जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ रोवहि पाँडव भए मजूर ॥ जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥ रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥ एकी कारणि पापी भइआ ॥ रोवहि सेख मसाइक पीर ॥ अंति कालि मतु लागै भीड़ ॥ रोवहि राजे कंन पड़ाइ ॥ घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥ रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥ पंडित रोवहि गिआनु गवाइ ॥ बाली रोवै नाहि भतारु ॥ नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ अउरी करम न लेखै लाइ ॥१॥ मः २ ॥ जपु तपु सभु किछु मंनिऐ अवरि कारा सभि बादि ॥ नानक मंनिआ मंनीऐ बुझीऐ गुर परसादि ॥२॥ पउड़ी ॥ काइआ हंस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ सभ महि गुपतु वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ ॥ सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ सभु किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई ॥१४॥ सलोक मः २ ॥ नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥१॥ मः २ ॥ रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥ रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥ अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥ सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥१५॥ सलोक मः २ ॥ अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाइ ॥ होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥ अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥१॥ मः २ ॥ साहिबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होइ ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ ॥ जिथै सु वसतु न जापई आपे वरतउ जाणि ॥ नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥२॥ मः २ ॥ सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥ नानक हुकमु न बुझई

अंधा कहीऐ सोइ ॥३॥ पउड़ी ॥ काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि दिसंतर देसा ॥ आपे ताड़ी लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ आपे सृसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीऐसा ॥ सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥१६॥ सलोक मः १ ॥ सावणु राति अहाड़ु दिहु कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ नानक लेखै मंगिऐ अउतु जणेदा जाइ ॥१॥ मः १ ॥ भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥२॥ पउड़ी ॥ मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै ॥ अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥१७॥ सलोक मः २ ॥ नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥१॥ मः १ ॥ नानक इहु जीउ मछुली झीवरु तृसना कालु ॥ मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता जालु ॥ नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥ सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ अंतरि तृसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥१८॥ सलोक मः १ ॥ वेलि पिंञाइआ कति वुणाइआ ॥ कटि कुटि करि खुंबि चड़ाइआ ॥ लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंढै ॥ माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु

ह्मढै ॥ सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥ नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥१॥ मः १ ॥ सच की काती सचु सभु सारु ॥ घाड़त तिस की अपर अपार ॥ सबदे साण रखाई लाइ ॥ गुण की थेकै विचि समाइ ॥ तिस दा कुठा होवै सेखु ॥ लोहू लबु निकथा वेखु ॥ होइ हलालु लगै हकि जाइ ॥ नानक दरि दीदारि समाइ ॥२॥ मः १ ॥ कमरि कटारा बंकुड़ा बंके का असवारु ॥ गरबु न कीजै नानका मतु सिरि आवै भारु ॥३॥ पउड़ी ॥ सो सतसंगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै ॥ सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ॥ भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै ॥ रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई ॥१९॥ सलोक मः ३ ॥ आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ मः ३ ॥ ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ किआ करे इह बपुड़ी जाँ भोुलाइे सोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ प्रभु दाता दातार निहचलु इहु धनु ॥ सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥ अंतरजामी अगमु रसना इकु भनु ॥ रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥२०॥ सलोकु मः १ ॥ सरवर ह्मस धुरे ही मेला खसमै इवै भाणा ॥ सरवर अंदरि हीरा मोती सो ह्मसा का खाणा ॥ बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥ एना रिजकु न पइए एथै एन्हा होरो खाणा ॥ सचि कमाणै सचो पाईऐ कूड़ै कूड़ा माणा ॥ नानक तिन कौ सतिगुरु मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥१॥ मः १ ॥ साहिबु मेरा उजला जे को चिति करेइ ॥ नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ ॥ नानक सोई सेवीऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ ॥ अवगुण वंञनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ आपे ही उपदेसदा गुरमुखि पतीआईअनु ॥ इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती लाइअनु ॥ जिसु आपि बुझाइे सो बुझसी आपे नाइ लाईअनु ॥ नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥२१॥१॥ सुधु ॥

रामकली की वार महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ५ ॥ जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्रु दृड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥१॥ मः ५ ॥ इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥ जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥२॥ पउड़ी ॥ थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥१॥ सलोकु मः ५ ॥ सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ इकसु सतिगुर बाहरा ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइएनु जिन सद ही वरतै नालि ॥१॥ मः ५ ॥ मेरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीऐ ॥ जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीऐ ॥ कोइ न किस ही वसि सभना इक धर ॥ पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ करदा अनद बिनोद किछू न जाणीऐ ॥ सरब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीऐ ॥ गाईऐ राति दिन्नतु गावण जोगिआ ॥ जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥२॥ सलोक मः ५ ॥ भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुटंबै नालि ॥ कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ दइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि

नानक नदरि निहाल ॥१॥ मः ५ ॥ विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥ देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ नानक किआ मनुख ॥२॥ पउड़ी ॥ सो अैसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ घड़ी न मुहतु चसा तिसु बिनु ना सरै ॥ अंतरि बाहरि संगि किआ को लुकि करै ॥ जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ भगतु गिआनी तपा जिसु किरपा करै ॥ सो पूरा परधानु जिस नो बलु धरै ॥ जिसहि जराइे आपि सोई अजरु जरै ॥ तिस ही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥३॥ सलोकु मः ५ ॥ धन्नु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइि ॥ धन्नु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ जिनी इिक मनि इिकु अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी पलै पाइि ॥ जो रते रंगि गोविद कै हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ आखा बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइि ॥ गुरि पूरै मेलाइिआ जनम मरण दुखु जाइि ॥ जन नानक पाइिआ अगम रूपु अनत न काहू जाइि ॥१॥ मः ५ ॥ धन्नु सु वेला घड़ी धन्नु धनु मूरतु पलु सारु ॥ धन्नु सु दिनसु संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ मन कीआ इिछा पूरीआ हरि पाइिआ अगम अपारु ॥ हउमै तुटा मोहड़ा इिकु सचु नामु आधारु ॥ जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥२॥ पउड़ी ॥ सिफति सलाहणु भगति विरले दितीअनु ॥ सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु ॥ जिस नो लगा रंगु से रंगि रतिआ ॥ एना इिको नामु अधारु इिका उन भतिआ ॥ एना पिछै जगु भुंचै भोगई ॥ एना पिआरा रबु एनाहा जोगई ॥ जिसु मिलिआ गुरु आइि तिनि प्रभु जाणिआ ॥ हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥४॥ सलोक मः ५ ॥ हरि इिकसै नालि मै दोसती हरि इिकसै नालि मै रंगु ॥ हरि इिको मेरा सजणो हरि इिकसै नालि मै संगु ॥ हरि इिकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भंगु ॥ जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु ॥ हरि इिको मेरा मसलती भन्नण घड़न समरथु ॥ हरि इिको मेरा दातारु है सिरि दातिआ जग हथु ॥ हरि इिकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु ॥ सतिगुरि संतु मिलाइिआ

मसतकि धरि कै हथु ॥ वडा साहिबु गुरू मिलाइआ जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ पाइआ धुरि संजोग ॥ नानक पाइआ सचु नामु सद ही भोगे भोग ॥१॥ मः ५ ॥ मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ वेखदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु ॥ जिचरु पैननि खावन्हे तिचरु रखनि गंढु ॥ जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु ॥ जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु ॥ कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥ अंधे आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु ॥ झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ करत बिहाधु ॥ कृपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ जन नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे ॥२॥ पउड़ी ॥ जो रते दीदार सेई सचु हाकु ॥ जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥ मनु मैला वेकारु होवै संगि पाकु ॥ दिसै सचा महलु खुलै भरम ताकु ॥ जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ मनु तनु होइ निहालु बिंदक नदरि झाकु ॥ नउ निधि नामु निधानु गुर कै सबदि लागु ॥ तिसै मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥५॥ सलोक मः ५ ॥ हरणाखी कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ सुंदर बचन तुम सुणहु छबीली पिरु तैडा मन साधारणु ॥ दुरजन सेती नेहु रचाइए दसि विखा मै कारणु ॥ ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ पिरु छैलु छबीला छडि गवाइए दुरमति करमि विहूणी ॥ ना हउ भुली ना हउ चुकी ना मै नाही दोसा ॥ जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु संदेसा ॥ साई सोहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ पिरि अउगण तिस के सभि गवाइे गल सेती लाइि सवारी ॥ करमहीण धन करै बिन्नती कदि नानक आवै वारी ॥ सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥१॥ मः ५ ॥ काहे मन तू डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥ सतिगुरु पुरखु धिआइि तू सभि दुख विसारणहारु ॥ हरि नामा आराधि मन सभि किलविख जाहि विकार ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन रंगु लगा निरंकार ॥ एनी छडिआ माइआ सुआवड़ा धनु संचिआ नामु अपारु ॥ अठे पहर इकतै लिवै मन्नेनि

हुकमु अपारु ॥ जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पिआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु तू आवहि चिति तिस नो सदा सुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु कि काड़िआ ॥ जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति तिनि कुल उधारिआ ॥६॥ सलोक मः ५ ॥ अंदरहु अन्ना बाहरहु अन्ना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ देही धोवै चक्र बणाइे माइिआ नो बहु धावै ॥ अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ नींद विआपिआ कामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ बैसनो नामु करम हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ ह्मसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ जा ह्मस सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि जोड़ु कदे न आवै ॥ ह्मसा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै ॥ जितु को लाइिआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि इेवै भावै ॥ सतिगुरु सरवरु रतनी भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ सिख ह्मस सरवरि इकठे होइे सतिगुर कै हुकमावै ॥ रतन पदारथ माणक सरवरि भरपूरे खाइि खरचि रहे तोटि न आवै ॥ सरवर ह्मसु दूरि न होई करते इेवै भावै ॥ जन नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरू पहि आवै ॥ आपि तरिआ कुटंब सभि तारे सभा सृसटि छडावै ॥१॥ मः ५ ॥ पंडितु आखाइे बहुती राही कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ अंदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइिआ की नित जोहा ॥ सचु कहै ता छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ ठगै सेती ठगु रलि आइिआ साथु भि इिको जेहा ॥ सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै ताँ उघड़ि आइिआ लोहा ॥ बहुतेरी थाई रलाइि रलाइि दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइि खलोहा ॥ सतिगुर की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ नानक

जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि सनेहा ॥ अंमृत बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥२॥ पउड़ी ॥ जो तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई ॥ जिस नो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ जिस नो तू संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ जिस कै सुआमी वलि निरभउ सो भई ॥ जिस नो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ जिस नो तेरी मइिआ न पोहै अगनई ॥ तिस नो सदा दइिआलु जिनि गुर ते मति लई ॥७॥ सलोक मः ५ ॥ करि किरपा किरपाल आपे बखसि लै ॥ सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइि पै ॥ मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइि ॥ हथ देइि आपि रखु विआपै भउ न कोइि ॥ गुण गावा दिनु रैणि इेतै कंमि लाइि ॥ संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइि ॥ सरब निरंतरि खसमु इेको रवि रहिआ ॥ गुर परसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ दइिआ करहु दइिआल अपणी सिफति देहु ॥ दरसनु देखि निहाल नानक प्रीति इेह ॥१॥ मः ५ ॥ इेको जपीऐ मनै माहि इिकस की सरणाइि ॥ इिकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइि ॥ इिको दाता मंगीऐ सभु किछु पलै पाइि ॥ मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इिको इिकु धिआइि ॥ अंमृतु नामु निधानु सचु गुरमुखि पाइिआ जाइि ॥ वडभागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइि ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥ नामु धिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस नो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ जिस नो तू रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ जिस नो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ जिस नो तेरा अंगु सु निरमली हूं निरमला ॥ जिस नो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ ॥ जिस नो तेरी खुसी तिनि नउ निधि भुंचीऐ ॥ जिस नो तू प्रभ वलि तिसु किआ मुहछंदगी ॥ जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥८॥ सलोक महला ५ ॥ होहु कृपाल सुआमी मेरे संतांँ संगि विहावे ॥ तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥१॥ मः ५ ॥ सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कोइि न बंधै वाट ॥२॥ पउड़ी ॥

तिथै तू समरथु जिथै कोइि नाहि ॥ एथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइि तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंमृतु सेइि खाहि ॥ कलि महि इेहो पुन्नु गुण गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइि न जाइि जि आवै तुधु आहि ॥९॥ सलोक मः ५ ॥ दूजा तिसु न बुझाइिहु पारब्रहम नामु देहु आधारु ॥ अगमु अगोचरु साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ तू निहचलु निरवैरु सचु सचा तुधु दरबारु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ अंतु न पारावारु ॥ प्रभु छोडि होरु जि मंगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ से सुखीइे सचु साह से जिन सचा बिउहारु ॥ जिना लगी प्रीति प्रभ नाम सहज सुख सारु ॥ नानक इकु आराधे संतन रेणारु ॥१॥ मः ५ ॥ अनद सूख बिस्राम नित हरि का कीरतनु गाइि ॥ अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि नाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥ ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥ तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥१०॥ सलोक मः ५ ॥ आपे वैदु आपि नाराइिणु ॥ इेहि वैद जीअ का दुखु लाइिण ॥ गुर का सबदु अंमृत रसु खाइिण ॥ नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइिण ॥१॥ मः ५ ॥ हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ हुकमे दुखु सुखु सम करि सहै ॥ हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ नानक जिस नो होवै दाति ॥ हुकमि मरै हुकमे ही जीवै ॥ हुकमे नान्हा वडा थीवै ॥ हुकमे सोग हरख आनन्द ॥ हुकमे जपै निरोधर गुरमंत ॥ हुकमे आवणु जाणु रहाइे ॥ नानक जा कउ भगती लाइे ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥ हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥ सो ढाढी धनु धन्नु जिसु लोड़े निरंकारु ॥ सो ढाढी भागठु जिसु सचा दुआर बारु ॥ एहु ढाढी तुधु धिआइि कलाणे दिनु रैणार ॥ मंगै अंमृत नामु न आवै कदे हारि ॥ कपड़ु भोजनु सचु रहदा लिवै धार ॥ सो ढाढी

गुणवंतु जिस नो प्रभ पिआरु ॥११॥ सलोक मः ५ ॥ अंमृत बाणी अमिउ रसु अंमृतु हरि का नाउ ॥ मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ उपदेसु सुणहु तुम गुरसिखहु सचा इहै सुआउ ॥ जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ ॥ सूख सहज आनदु घणा प्रभ जपतिआ दुखु जाइ ॥ नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईऐ थाउ ॥१॥ मः ५ ॥ नानक नामु धिआईऐ गुरु पूरा मति देइ ॥ भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करेइ ॥ भाणै दुखु सुखु भोगीऐ भाणै करम करेइ ॥ भाणै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ ॥ भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि परेइ ॥ भाणै ही जिसु भगती लाइे नानक विरले हे ॥२॥ पउड़ी ॥ वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ पसू परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीऐ ॥ तृसना भुख विकराल नाइ तेरै ध्रापीऐ ॥ रोगु सोगु दुखु वंञै जिसु नाउ मनि वसै ॥ तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ खंड ब्रहमंड बेअंत उधारणहारिआ ॥ तेरी सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥१२॥ सलोक मः ५ ॥ मित्रु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रंगि कसुंभै भुली ॥ तउ सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥१॥ मः ५ ॥ ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठो पउ पउ लूहै ॥ हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तूहै ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु दरदु निवारणो ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु कदे न हारणो ॥ जिसु मिलिआ पूरा गुरू सु सरपर तारणो ॥ जिस नो लाइे सचि तिसु सचु सम्हालणो ॥ जिसु आइआ हथि निधानु सु रहिआ भालणो ॥ जिस नो इको रंगु भगतु सो जानणो ॥ एहु सभना की रेणु बिरही चारणो ॥ सभि तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥१३॥ सलोक मः ५ ॥ उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥ हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥१॥ मः ५ ॥ फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु दिसावर पंधा ॥ ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर

मिलि सजणु मै लधा ॥२॥ पउड़ी ॥ सभे दुख संताप जाँ तुधहु भुलीऐ ॥ जे कीचनि लख उपाव ताँ कही न घुलीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु निरधनु काँढीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सो जोनी हाँढीऐ ॥ जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डंडु दे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति सु खरो अहंकारीआ ॥ सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ॥१४॥ सलोक मः ५ ॥ तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥ घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥१॥ मः ५ ॥ पाव सुहावे जाँ तउ धिरि जुलदे सीसु सुहावा चरणी ॥ मुखु सुहावा जाँ तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी ॥२॥ पउड़ी ॥ मिलि नारी सतसंगि मंगलु गावीआ ॥ घर का होआ बंधानु बहुड़ि न धावीआ ॥ बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ सीलवंति परधानि रिदै सचावीआ ॥ अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥ मनि दरसन की पिआस चरण दासावीआ ॥ सोभा बणी सीगारु खसमि जाँ रावीआ ॥ मिलीआ आइ संजोगि जाँ तिसु भावीआ ॥१५॥ सलोक मः ५ ॥ हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै निरगुण ते किआ होवै ॥ तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥१॥ मः ५ ॥ देह छिजंदड़ी ऊण मझूणा गुरि सजणि जीउ धराइआ ॥ हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥२॥ पउड़ी ॥ वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु ॥ सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ जो भावै पारब्रहम सोई सचु निआउ ॥ जे भावै पारब्रहम निथावे मिलै थाउ ॥ जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ कारण करण करीम कुदरति तेरीऐ ॥१६॥ सलोक मः ५ ॥ सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली ॥ पंधि जुलम्दड़ी मेरा अंदरु ठंढा गुर दरसनु देखि निहाली ॥१॥ मः ५ ॥ हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥ मुलि न घिधा मै कू सतिगुरि दिता ॥ ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥ जनमु पदारथु नानक जिता ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ जिसु गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ लगा रंगु

चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ आतमु जिता गुरमती आगंजत पागा ॥ जिसहि धिआइिआ पारब्रहमु सो कलि महि तागा ॥ साधू संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ जिसु प्रभु मिलिआ आपणा सो पुरखु सभागा ॥ नानक तिसु बलिहारणै जिसु इेवड भागा ॥१७॥ सलोक मः ५ ॥ जाँ पिरु अंदरि ताँ धन बाहरि ॥ जाँ पिरु बाहरि ताँ धन माहरि ॥ बिनु नावै बहु फेरु फिराहरि ॥ सतिगुरि संगि दिखाइिआ जाहरि ॥ जन नानक सचे सचि समाहरि ॥१॥ मः ५ ॥ आहर सभि करदा फिरै आहरु इिकु न होइि ॥ नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा ॥ रंग परंग अनेक न जापन्हि करतबा ॥ जीआ अंदरि जीउ सभु किछु जाणला ॥ सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ तेरै घरि आन्नदु वधाई तुधु घरि ॥ माणु महता तेजु आपणा आपि जरि ॥ सरब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ नानक दासनि दासु तुधु आगै बिनवता ॥१८॥ सलोक मः ५ ॥ छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीइे ॥ वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥१॥ महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इिहु रचनु रचाइिआ तिस ही माहि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ सफलिउ बिरखु सुहावड़ा हरि सफल अंमृता ॥ मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वंञै घिता ॥ वरना चिहना बाहरा एहु अगमु अजिता ॥ एहु पिआरा जीअ का जो खोल्है भिता ॥ सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ कुरबाणी वंञा वारणै बले बलि किता ॥ दसनि संत पिआरिआ सुणहु लाइि चिता ॥ जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अंमृतु सतिगुरि दिता ॥१९॥ सलोक महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥१॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारणे तुख कउ मुहली लाइि ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछे धरम राइि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे ही वड परवारु आपि इिकातीआ ॥ आपणी कीमति आपि आपे ही जातीआ ॥ सभु किछु आपे आपि आपि उपंनिआ ॥ आपणा कीता आपि आपि वरंनिआ ॥ धन्नु सु तेरा थानु जिथै तू वुठा ॥

धन्नु सु तेरे भगत जिन्ी सचु तूं डिठा ॥ जिस नो तेरी दइिआ सलाहे सोइि तुधु ॥ जिसु गुर भेटे नानक निरमल सोई सुधु ॥२०॥ सलोक मः ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बागु ॥ जो नर पीरि निवाजिआ तिन्ा अंच न लाग ॥१॥ मः ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवन्नड़ी देह ॥ विरले केई पाईअनि् जिन्ा पिआरे नेह ॥२॥ पउड़ी ॥ जपु तपु संजमु दइिआ धरमु जिसु देहि सु पाइे ॥ जिसु बुझाइिहि अगनि आपि सो नामु धिआइे ॥ अंतरजामी अगम पुरखु इिक दृसटि दिखाइे ॥ साधसंगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाइे ॥ अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराइे ॥ जनम मरण भउ कटिएनु फिरि जोनि न पाइे ॥ अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाइे ॥ नानक बखसि मिलाइिअनु रखे गलि लाइे ॥२१॥ सलोक मः ५ ॥ मुहबति जिसु खुदाइि दी रता रंगि चलूलि ॥ नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलि ॥१॥ मः ५ ॥ अंदरु विधा सचि नाइि बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ नानक रविआ हभ थाइि वणि तृणि तृभवणि रोमि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे कीतो रचनु आपे ही रतिआ ॥ आपे होइिए इिकु आपे बहु भतिआ ॥ आपे सभना मंझि आपे बाहरा ॥ आपे जाणहि दूरि आपे ही जाहरा ॥ आपे होवहि गुपतु आपे परगटीऐ ॥ कीमति किसै न पाइि तेरी थटीऐ ॥ गहिर गंभीरु अथाहु अपारु अगणतु तूं ॥ नानक वरतै इिकु इिको इिकु तूं ॥२२॥१॥२॥ सुधु ॥

रामकली की वार राइि बलवंडि तथा सतै डूमि आखी   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइिआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिएनु छतु सिरि करि सिफती अंमृतु पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइि जीअ दै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥ लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति एहा जुगति साइि सहि काइिआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि

जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिए करि पीरहु कन्न् मुरटीऐ ॥ दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥२॥ जिनि कीती सो मन्नणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसंम नालि जाँ घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥३॥ होरिंए गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखाँ पुत्राँ घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ जाँ सुधोसु ताँ लहणा टिकिओनु ॥४॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वरि्हऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथ न लभई तूं एहु ठरूरु ॥ नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो करे सो वंञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ

फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥५॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीए पलाणु ॥ धणखु चड़ाइिए सत दा जस ह्मदा बाणु ॥ कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ सतहु खेतु जमाइिए सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुंडाँ सुझीएसु मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिए करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जाँ तू सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक ह्मदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥ धन्नु धन्नु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥ जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ धन्नु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा ताँ मनु साधारिआ ॥७॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइिणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु साजिएनु आपे ही थंमि्ह खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥ उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरू न सेविए मनमुखा पइिआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइिणु आपे होआ ॥८॥१॥

रामकली बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काइिआ कलालनि लाहनि

मेलउ गुर का सबदु गुड़ु कीनु रे ॥ तृसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥१॥ कोई है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ इेक बूंद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइि कलाली रे ॥१॥ रहाउ ॥ भवन चतुर दस भाठी कीन्ी ब्रहम अगनि तनि जारी रे ॥ मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥२॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि गहनै देउ रे ॥ सुरति पिआल सुधा रसु अंमृतु इेहु महा रसु पेउ रे ॥३॥ निझर धार चुअै अति निरमल इिह रस मनूआ रातो रे ॥ कहि कबीर सगले मद छूछे इिहै महा रसु साचो रे ॥४॥१॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥१॥ अउधू मेरा मनु मतवारा ॥ उनमद चढा मदन रसु चाखिआ तृभवन भइिआ उजिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ दुइि पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ कामु क्रोधु दुइि कीइे जलेता छूटि गई संसारी ॥२॥ प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न कबहू जाई ॥३॥२॥ तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी एट गही मै तेरी ॥ ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥१॥ अब तब जब कब तुही तुही ॥ हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥१॥ रहाउ ॥ तोरे भरोसे मगहर बसिए मेरे तन की तपति बुझाई ॥ पहिले दरसनु मगहर पाइिए फुनि कासी बसे आई ॥२॥ जैसा मगहरु तैसी कासी हम इेकै करि जानी ॥ हम निरधन जिउ इिहु धनु पाइिआ मरते फूटि गुमानी ॥३॥ करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ अजै सु चोभ कउ बिलल बिलाते नरके घोर पचाही ॥४॥ कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥५॥ अब तउ जाइि चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥ राम कबीरा इेक भइे है कोइि न सकै पछानी ॥६॥३॥ संता मानउ दूता डानउ इिह कुटवारी मेरी ॥ दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥१॥ हम कूकर तेरे दरबारि ॥ भउकहि

आगै बदनु पसारि ॥१॥ रहाउ ॥ पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई ॥ तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥२॥ दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई ॥ साधू होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥३॥ कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि ॥ गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि ॥४॥ कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु ॥ अंमृत रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥५॥४॥ जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥ जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥१॥ काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥ रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥१॥ रहाउ ॥ आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे करम करि उदरु भरहि ॥ चउदस अमावस रचि रचि माँगहि कर दीपकु लै कूपि परहि ॥२॥ तूं ब्रहमनु मै कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पाँडे डूबि मरहि ॥३॥५॥ तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ इह अंमृत की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै करीआ ॥१॥ जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥१॥ रहाउ ॥ भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ॥२॥ सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥ कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥३॥६॥ मुंद्रा मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ॥ खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥१॥ ऐसा जोगु कमावहु जोगी ॥ जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥१॥ रहाउ ॥ बुधि बिभूति चढावउ अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ॥ करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥२॥ पंच ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥३॥७॥ कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ भव निधि तरन तारन चिंतामनि इक

निमख न इहु मनु लाइआ ॥१॥ गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ तिस की भाउ भगति नही साधी ॥१॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥ आवा गवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥२॥ जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न कीन्हो मै फेरा ॥ लम्पट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥३॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर इे संपै मो माही ॥ दइिआ धरमु अरु गुर की सेवा इे सुपन्नतरि नाही ॥४॥ दीन दइिआल कृपाल दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुम्हारी ॥५॥८॥ जिह सिमरनि होइि मुकति दुआरु ॥ जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ अनहद बजहि सदा भरपूर ॥१॥ ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥२॥ जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ दीपकु बाँधि धरिए बिनु तेल ॥ सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥३॥ जिह सिमरनि तेरी गति होइि ॥ सो सिमरनु रखु कंठि परोइि ॥ सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ गुर परसादी उतरहि पारि ॥४॥ जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ मंदरि सोवहि पटंबर तानि ॥ सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥५॥ जिह सिमरनि तेरी जाइि बलाइि ॥ जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइि ॥ सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईऐ ॥ इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईऐ ॥६॥ सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ जागु सोइि सिमरन रस भोग ॥ हरि सिमरनु पाईऐ संजोग ॥७॥ जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ तिस के आगे तंतु न मंतु ॥८॥९॥

रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बंधचि बंधनु पाइिआ ॥ मुकतै

गुरि अनलु बुझाइआ ॥ जब नख सिख इहु मनु चीन्हा ॥ तब अंतरि मजनु कीन्हा ॥१॥ पवनपति उनमनि रहनु खरा ॥ नही मिरतु न जनमु जरा ॥१॥ रहाउ ॥ उलटी ले सकति सहारं ॥ पैसीले गगन मझारं ॥ बेधीअले चक्र भुअंगा ॥ भेटीअले राइ निसंगा ॥२॥ चूकीअले मोह मइआसा ॥ ससि कीनो सूर गिरासा ॥ जब कुंभकु भरिपुरि लीणा ॥ तह बाजे अनहद बीणा ॥३॥ बकतै बकि सबदु सुनाइआ ॥ सुनतै सुनि मंनि बसाइआ ॥ करि करता उतरसि पारं ॥ कहै कबीरा सारं ॥४॥१॥१०॥ चंदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ जोती अंतरि ब्रहमु अनूपु ॥१॥ करु रे गिआनी ब्रहम बीचारु ॥ जोती अंतरि धरिआ पसारु ॥१॥ रहाउ ॥ हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ कहै कबीरु निरंजन अलेखु ॥२॥२॥११॥ दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥ निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥१॥ रहाउ ॥ न्नीबु भइए आँबु आँबु भइए न्नीबा केला पाका झारि ॥ नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुगध गवार ॥१॥ हरि भइए खाँडु रेतु महि बिखरिए हसतीं चुनिए न जाई ॥ कहि कमीर कुल जाति पाँति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥२॥३॥१२॥

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥ पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥१॥ मनु राम नामा बेधीअले ॥ जैसे कनिक कला चितु माँडीअले ॥१॥ रहाउ ॥ आनीले कुंभु भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरीए ॥ हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअले ॥२॥ मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाडीअले ॥ पाँच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥३॥ कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु पालन पउढीअले ॥ अंतरि बाहरि काज बिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले ॥४॥१॥ बेद पुरान सासत्र आन्नता गीत कबित न गावउगो ॥

अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥१॥ बैरागी रामहि गावउगो ॥ सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥१॥ रहाउ ॥ इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥२॥ तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ अठसठि तीरथ गुरू दिखाइे घट ही भीतरि न्हाउगो ॥३॥ पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो ॥ नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुन्न समाधि समाउगो ॥४॥२॥ माइि न होती बापु न होता करमु न होती काइिआ ॥ हम नही होते तुम नही होते कवनु कहाँ ते आइिआ ॥१॥ राम कोइि न किस ही केरा ॥ जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइिआ ॥ सासतु न होता बेदु न होता करमु कहाँ ते आइिआ ॥२॥ खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइिआ ॥ नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइि लखाइिआ ॥३॥३॥ रामकली घरु २ ॥ बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइिआ कलपु कीजै ॥ असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१॥ छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥ हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ गंगा जउ गोदावरि जाईअै कुंभि जउ केदार न्हाईअै गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥२॥ असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान अैसो दानु नित नितहि कीजै ॥ आतम जउ निरमाइिलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥३॥ मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ जसरथ राइि नन्दु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंमृतु पीजै ॥४॥४॥

रामकली बाणी रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पड़ीअै गुनीअै नामु सभु सुनीअै अनभउ भाउ न दरसै ॥ लोहा कंचनु हिरन होइि कैसे जउ पारसहि न

परसै ॥१॥ देव संसै गाँठि न छूटै ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥१॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इहि बुधि कबहि न नासी ॥२॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥३॥१॥

रामकली बाणी बेणी जीउ की ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥ बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥१॥ संतहु तहा निरंजन रामु है ॥ गुर गमि चीनै बिरला कोइ ॥ तहाँ निरंजनु रमईआ होइ ॥१॥ रहाउ ॥ देव सथानै किआ नीसाणी ॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ तह चंदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥२॥ उपजै गिआनु दुरमति छीजै ॥ अंमृत रसि गगन्नतरि भीजै ॥ इसु कला जो जाणै भेउ ॥ भेटै तासु परम गुरदेउ ॥३॥ दसम दुआरा अगम अपारा परम पुरख की घाटी ॥ ऊपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥४॥ जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ मनूआ उलटि सुन्न महि गहै ॥५॥ जागतु रहै न अलीआ भाखै ॥ पाचउ इंद्री बसि करि राखै ॥ गुर की साखी राखै चीति ॥ मनु तनु अरपै कृसन परीति ॥६॥ कर पलव साखा बीचारे ॥ अपना जनमु न जूऐ हारे ॥ असुर नदी का बंधै मूलु ॥ पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ अजरु जरै सु निझरु झरै ॥ जगन्नाथ सिउ गोसटि करै ॥७॥ चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ सरब कला ले आपे रहै ॥ मनु माणकु रतना महि गुहै ॥८॥ मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ माहि निरंजनु तृभवण धणी ॥ पंच सबद निरमाइल बाजे ॥ ढुलके चवर संख घन गाजे ॥ दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ बेणी जाचै तेरा नामु ॥९॥१॥

रागु नट नाराइन महला ४

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥१॥ खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ पंच दोख असाध नगर महि इकु खिनु पलु दूरि करे ॥२॥ वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे ॥ तिन की संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड़ मुगध निसतरे ॥३॥ क्रिपा क्रिपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे ॥ नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥४॥१॥ नट महला ४ ॥ राम जपि जन रामै नामि रले ॥ राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि क्रिपले ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले ॥१॥ पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥ विचि देही दोख असाध पंच धातू हरि कीए खिन परले ॥२॥ हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ उनवै घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥३॥ हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवहि देखि हरि मिले ॥ जन नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥४॥२॥ नट महला ४ ॥ मेरे

मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ गुर परसादी हरि नामु धिआइए हम सतिगुर चरन पखे ॥१॥ रहाउ ॥ ऊतम जगन्नाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ तुम वड पुरख दीन दुख भंजन हरि दीए नामु मुखे ॥१॥ हरि गुन ऊच नीच हम गाइे गुर सतिगुर संगि सखे ॥ जिउ चंदन संगि बसै निंमु बिरखा गुन चंदन के बसखे ॥२॥ हमरे अवगन बिखिआ बिखै के बहु बार बार निमखे ॥ अवगनिआरे पाथर भारे हरि तारे संगि जनखे ॥३॥ जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप कृखे ॥ जन नानक के दइिआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥४॥३॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि राम रंगे ॥ हरि हरि कृपा करी जगदीसुरि हरि धिआइए जन पगि लगे ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के भूल चूक हम अब आइे प्रभ सरनगे ॥ तुम सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥१॥ तुमरी संगति हरि को को न उधरिए प्रभ कीइे पतित पवगे ॥ गुन गावत छीपा दुसटारिए प्रभि राखी पैज जनगे ॥२॥ जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे ॥ भवन भवन पवित्र सभि कीइे जह धूरि परी जन पगे ॥३॥ तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे ॥ जन नानक कउ दइिआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥४॥४॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने ॥ जगन्नाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइिए उपदेसि गुरू गुर सुने ॥ किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत कृसानि लुने ॥१॥ तुमरी उपमा तुम ही प्रभ जानहु हम कहि न सकहि हरि गुने ॥ जैसे तुम तैसे प्रभ तुम ही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥२॥ माइिआ फास बंध बहु बंधे हरि जपिए खुल खुलने ॥ जिउ जल कुंचरु तदूऐ बाँधिए हरि चेतिए मोख मुखने ॥३॥ सुआमी पारब्रहम परमेसरु तुम खोजहु जुग जुगने ॥ तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥४॥५॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन कलि कीरति हरि प्रवणे ॥ हरि हरि

दइिआलि दइिआ प्रभ धारी लगि सतिगुर हरि जपणे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभि धिआवहि हरि रुड़णे ॥ जिन कउ तुम्रे वड कटाख है ते गुरमुखि हरि सिमरणे ॥१॥ इहु परपंचु कीआ प्रभ सुआमी सभु जगजीवनु जुगणे ॥ जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलि सललै सलल समणे ॥२॥ जो प्रभ कीआ सु तुम ही जानहु हम नह जाणी हरि गहणे ॥ हम बारिक कउ रिद उसतति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥३॥ तुम जल निधि हरि मान सरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बाँछै हरि देवहु करि कृपणे ॥४॥६॥

नट नाराइन महला ४ पड़ताल   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ ले गुर पग रेन रवाल ॥ सभि दलिद भंजि दुख दाल ॥ हरि हो हो हो नदरि निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का गृहु हरि आपि सवारिए हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥ हरि आपनी कृपा करी आपि गृहि आइए हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आन्नद भइे हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ जनु नानकु हरि हरि मिले भइे गलतान हाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ नट महला ४ ॥ मन मिलु संतसंगति सुभवंती ॥ सुनि अकथ कथा सुखवंती ॥ सभ किलविख पाप लह्मती ॥ हरि हो हो हो लिखतु लिखंती ॥१॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति गुरमति कथा भजंती ॥ जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबान्नती ॥१॥ हरि अकथ कथा का जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लह्मती ॥ नानक जन हरि कथा सुणि तृपते जपि हरि हरि हरि होवंती ॥२॥२॥८॥ नट महला ४ ॥ कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ तिस कउ हउ बलि बलि बाल ॥ सो हरि जनु है भल

भाल ॥ हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का मारगु गुर संति बताइिए गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाइे जिना हरि प्रभु जानिए मेरा नालि ॥ जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥२॥३॥६॥

रागु नट नाराइिन महला ५ ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥१॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ कृपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥१॥ कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रंगु लावै ॥२॥ साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ संतसंगि लगि इेहु सुखु पाइिए हरि गुन सद ही गावै ॥३॥ देखिए अचरजु महा मंगल रूप किछु आन नही दिसटावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरि लाहिए तह गरभ जोनि कह आवै ॥४॥१॥

नट नाराइिन महला ५ दुपदे ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

उलाहनो मै काहू न दीए ॥ मन मीठ तुहारो कीए ॥१॥ रहाउ ॥ आगिआ मानि जानि सुखु पाइिआ सुनि सुनि नामु तुहारो जीए ॥ ईहाँ ऊहा हरि तुम ही तुम ही इिहु गुर ते मंत्रु दृड़ीए ॥१॥ जब ते जानि पाई इेह बाता तब कुसल खेम सभ थीए ॥ साधसंगि नानक परगासिए आन नाही रे बीए ॥ २॥१॥२॥ नट महला ५ ॥ जा कउ भई तुमारी धीर ॥ जम की त्रास मिटी सुखु पाइिआ निकसी हउमै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ तपति बुझानी अंमृत बानी तृपते जिउ बारिक खीर ॥ मात पिता साजन संत

मेरे संत सहाई बीर ॥१॥ खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ बिसम भइे नानक जसु गावत ठाकुर गुनी गहीर ॥२॥२॥३॥ नट महला ५ ॥ अपना जनु आपहि आपि उधारिए ॥ आठ पहर जन कै संगि बसिए मन ते नाहि बिसारिए ॥१॥ रहाउ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु पेखिए दास का कुलु न बिचारिए ॥ करि किरपा नामु हरि दीए सहजि सुभाइि सवारिए ॥१॥ महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिए ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिए ॥२॥३॥४॥ नट महला ५ ॥ हरि हरि मन महि नामु कहिए ॥ कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न रहिए ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइिए बैरागी साधू संगि लहिए ॥ सगल तिआगि इेक लिव लागी हरि हरि चरन गहिए ॥१॥ कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पइिए ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनदु भइिए ॥२॥४॥५॥ नट महला ५ ॥ चरन कमल संगि लागी डोरी ॥ सुख सागर करि परम गति मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ अंचला गहाइिए जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ जसु गावत भगति रसु उपजिए माइिआ की जाली तोरी ॥१॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ नानक मेलि लीए दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी ॥२॥५॥६॥ नट महला ५ ॥ मेरे मन जपु जपि हरि नाराइिण ॥ कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइिण ॥१॥ रहाउ ॥ साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइिण ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि घटि घटि दिसटि समाइिणु ॥१॥ जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइिण ॥ दुइि कर जोड़ि नानकु दानु माँगै तेरे दासनि दास दसाइिणु ॥२॥६॥७॥ नट महला ५ ॥ मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ करि किरपा साधू संगि मिलिए सतिगुरि दीनो दानु ॥१॥ रहाउ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतनु पूरन गिआनु ॥ कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीन्े बिनसिए मूड़ अभिमानु ॥१॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ चरन कमल सरनि सुख सागर नानकु सद कुरबानु ॥२॥७॥८॥

नट महला ५ ॥ हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुन तुम पूरन दाते दीना नाथ दइआल ॥१॥ ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥२॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै नानक दरस निहाल ॥३॥८॥९॥

नट पड़ताल महला ५ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ हरि नामु सुनावै नीत ॥ बिनसै दुखु बिपरीति ॥ सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ कोई विरला आपन कीत ॥ संगि चरन कमल मनु सीत ॥ करि किरपा हरि जसु दीत ॥१॥ हरि भजि जनमु पदारथु जीत ॥ कोटि पतित होहि पुनीत ॥ नानक दास बलि बलि कीत ॥२॥१॥१०॥१९॥

नट असटपदीआ महला ४ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राम मेरे मनि तनि नामु अधारे ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु सम्हारे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि मनि धिआवहु मै हरि हरि नामु पिआरे ॥ दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ मधसूदन जगजीवन माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ इक बिनउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥२॥ सहस नेत्र नेत्र है प्रभ कउ प्रभ इको पुरखु निरारे ॥ सहस मूरति इको प्रभु ठाकुरु प्रभु इको गुरमति तारे ॥३॥ गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरि हरि नामु उरि धारे ॥ हरि हरि कथा बनी अति मीठी जिउ गूंगा गटक सम्हारे ॥४॥ रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥ जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥५॥ गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणि कहतिआ पाप निवारे ॥ धरम राइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥६॥ सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ सासु सासु जाइ नामै बिनु सो बिरथा सासु बिकारे ॥७॥ कृपा कृपा करि दीन प्रभ सरनी मो कउ

हरि जन मेलि पिआरे ॥ नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥८॥१॥ नट महला ४ ॥ राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ कृपा कृपा करि गुरू मिलाइे हम पाहन सबदि गुर तारे ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर नामु दृड़ाइे अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ नामै सुरति वजी है दह दिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥१॥ तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ गावत गावत हरि गुन गाइे गुन गावत गुरि निसतारे ॥२॥ बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलीऐ संक उतारे ॥ सतिगुर मिलिऐ परम पदु पाइिआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ हलति पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥४॥ उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइिआ के बिसथारे ॥ आई रैनि भइिआ सुपन्नतरु बिखु सुपनै भी दुख सारे ॥५॥ कलरु खेतु लै कूड़ु जमाइिआ सभ कूड़ै के खलवारे ॥ साकत नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जंदारे ॥६॥ मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदु वीचारे ॥ जितने करज करज के मंगीइे करि सेवक पगि लगि वारे ॥७॥ जगन्नाथ सभि जंत्र उपाइे नकि खीनी सभ नथहारे ॥ नानक प्रभु खिंचै तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥८॥२॥ नट महला ४ ॥ राम हरि अंमृत सरि नावारे ॥ सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥१॥ रहाउ ॥ संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ परस नपरस भइे कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥१॥ अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइिण बोलारे ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइि भावनी जमकंकर मारि बिदारे ॥२॥ मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥३॥ जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ जब घर मंदरि आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे ॥४॥ साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै परारे

॥५॥ लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि सवारे ॥ गुर के बचन सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे ॥६॥ पूरबि जनमि परचून कमाइे हरि हरि हरि नामि पिआरे ॥ गुर प्रसादि अंमृत रसु पाइिआ रसु गावै रसु वीचारे ॥७॥ हरि हरि रूप रंगि सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ जैसा रंगु देहि सो होवै किआ नानक जंत विचारे ॥८॥३॥ नट महला ४ ॥ राम गुर सरनि प्रभू रखवारे ॥ जिउ कुंचरु तदूऐ पकरि चलाइिए करि ऊपरु कढि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥ मेरे प्रभि सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥१॥ हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥ इेकु पुरखु इिकु नदरी आवै सभ इेका नदरि निहारे ॥२॥ हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु चेरी जगतु समारे ॥ आपि दइिआलु दइिआ दानु देवै विचि पाथर कीरे कारे ॥३॥ अंतरि वासु बहुतु मुसकाई भ्रमि भूला मिरगु सिंङ्हारे ॥ बनु बनु ढूढि ढूढि फिरि थाकी गुरि पूरै घरि निसतारे ॥४॥ बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंमृतु सारे ॥ गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥५॥ सभु है ब्रहमु ब्रहमु है पसरिआ मनि बीजिआ खावारे ॥ जिउ जन चंद्रहाँसु दुखिआ ध्रिसटबुधी अपुना घरु लूकी जारे ॥६॥ प्रभ कउ जनु अंतरि रिद लोचै प्रभ जन के सास निहारे ॥ कृपा कृपा करि भगति दृड़ाइे जन पीछै जगु निसतारे ॥७॥ आपन आपि आपि प्रभु ठाकुरु प्रभु आपे सृसटि सवारे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै करि कृपा आपि निसतारे ॥८॥४॥ नट महला ४ ॥ राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ जिउ पकरि द्रोपती दुसटाँ आनी हरि हरि लाज निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा जाचिक जन तेरे इिकु मागउ दानु पिआरे ॥ सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ हरि गुरु मेलि सवारे ॥१॥ साकत करम पाणी जिउ मथीऐ नित पाणी झोल झुलारे ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइिआ कढि माखन के गटकारे ॥२॥ नित नित काइिआ मजनु कीआ नित मलि मलि

देह सवारे ॥ मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाइे सभ फोकट चार सीगारे ॥३॥ मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे ॥४॥ नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु इेको पुरखु मुरारे ॥ संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि जन हरि निसतारे ॥५॥ ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ सरधा सरधा उपाइि मिलाइे मो कउ हरि गुर गुरि निसतारे ॥६॥ पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ निज घरि जाइि अंमृत रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥७॥ तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ नानक कृपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत मनु धीरे ॥८॥५॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ साधू पुरख साध जन पाइे इिक बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥१॥ पचै पतंगु मृग भ्रिंग कुंचर मीन इिक इिंद्री पकरि सघारे ॥ पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥२॥ सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ राम नामु पड़हु गति पावहु सतसंगति गुरि निसतारे ॥३॥ प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥४॥ साकत कउ अंमृत बहु सिंचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कढै बिखु खारे ॥५॥ संतन संत साध मिलि रहीअै गुण बोलहि परउपकारे ॥ संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे ॥६॥ लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिए सभहि बिगारे ॥ मेरे ठाकुर कै दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥७॥ राखु राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु किरपा धारे ॥ नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥८॥६॥ छका १ ॥

रागु माली गउड़ा महला ४

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अनिक जतन करि रहे हरि अंतु नाही पाइआ ॥ हरि अगम अगम अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ हम राखु राखु दीन तेरे हरि सरनि हरि प्रभ आइआ ॥१॥ सरणागती प्रभ पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ प्रहिलादु जनु हरनाखि पकरिआ हरि राखि लीए तराइआ ॥२॥ हरि चेति रे मन महलु पावण सभ दूख भंजनु राइआ ॥ भउ जनम मरन निवारि ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥३॥ हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भंजनु गाइआ ॥ हरि हारु हरि उरि धारिए जन नानक नामि समाइआ ॥४॥१॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ सतसंगति मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रहमु पछाता ॥१॥ रहाउ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिऐ हरि प्रभु जाता ॥ दुरमति मैलु गई सभ नीकरि हरि अंमृति हरि सरि नाता ॥१॥ धनु धनु साधु जिन्ी हरि प्रभु पाइआ तिन् पूछउ हरि की बाता ॥ पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥२॥ लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ हरि प्रभ आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥३॥ राम रसाइणु जिन् गुरमति पाइआ तिन् की ऊतम बाता ॥ तिन की पंक पाईऐ वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥४॥२॥

माली गउड़ा महला ४ ॥ सभि सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइए ॥ अपरंपरो पारब्रहमु सुआमी हरि अलखु गुरू लखाइए ॥१॥ रहाउ ॥ हम नीच मधिम करम कीड़े नही चेतिए हरि राइए ॥ हरि आनि मेलिए सतिगुरू खिनु बंध मुकति कराइए ॥१॥ प्रभि मसतके धुरि लीखिआ गुरमती हरि लिव लाइए ॥ पंच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिए मंगलु गाइए ॥२॥ पतित पावनु नामु नरहरि मंदभागीआँ नही भाइए ॥ ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि गलाइए ॥३॥ मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुर चरन मनु मै लाइए ॥ हरि राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि समाइए ॥४॥३॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि जपिए भ्रमु भउ भागा ॥१॥ रहाउ ॥ भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइए गुरमति जागा ॥ किलबिख खीन भइे सॉंति आई हरि उर धारिए वडभागा ॥१॥ मनमुखु रंगु कसुंभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ खिन महि बिनसि जाइ परतापै डंडु धरम राइ का लागा ॥२॥ सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥ काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रंगु न लहै सभागा ॥३॥ हरि चाह्रिए रंगु मिलै गुरु सोभा हरि रंगि चलूलै राँगा ॥ जन नानकु तिन के चरन पखारै जो हरि चरनी जनु लागा ॥४॥४॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन भजु हरि हरि नामु गुपाला ॥ मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम नामै मति गुरमति राम रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमति नामु धिआईऐ हरि हरि मनि जपीऐ हरि जपमाला ॥ जिन् कै मसतकि लीखिआ हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥१॥ जिन् हरि नामु धिआइआ तिन् चूके सरब जंजाला ॥ तिन् जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि रखवाला ॥२॥ हम बारिक किछू न जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला ॥ करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥३॥ बहु मैले निरमल होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ मनि अनदु भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥४॥५॥ माली गउड़ा महला ४ ॥

मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ हरि हरि उर धारिए गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥१॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रभ की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट ॥ हरि साजनु मेलिए गुरि पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥१॥ मकर प्रागि दानु बहु कीआ सरीरु दीए अध काटि ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावै बहु कंचनु दीजै कटि काट ॥२॥ हरि कीरति गुरमति जसु गाइए मनि उघरे कपट कपाट ॥ तृकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥३॥ कलजुगि गुरु पूरा तिन पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट ॥ जन नानक रसु अंमृतु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥४॥६॥ छका १ ॥

माली गउड़ा महला ५

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रे मन टहल हरि सुख सार ॥ अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥१॥ रहाउ ॥ जिना मसतकि लीखिआ ते मिले संगार ॥ संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख अपार ॥१॥ नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ सभ तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरंकार ॥२॥ इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अंध अंधार ॥ धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥३॥ अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ धनु धन्नु ते जन नानका जिन हरि नामा उरि धार ॥४॥१॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ राम नाम कउ नमसकार ॥ जासु जपत होवत उधार ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि मिटहि धंध ॥ जा कै सिमरनि छूटहि बंध ॥ जा कै सिमरनि मूरख चतुर ॥ जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥१॥ जा कै सिमरनि भउ दुख हरै ॥ जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ जा कै सिमरनि मुचत पाप ॥ जा कै सिमरनि नही संताप ॥२॥ जा कै सिमरनि रिद बिगास ॥ जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ जा कै सिमरनि निधि निधान ॥ जा कै सिमरनि तरे निदान ॥३॥ पतित पावनु नामु हरी ॥ कोटि भगत उधारु करी ॥ हरि दास दासा दीनु सरन ॥ नानक माथा संत चरन ॥४॥२॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ ऐसो सहाई हरि को नाम ॥ साधसंगति भजु पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ बूडत कउ जैसे बेड़ी

मिलत ॥ बूझत दीपक मिलत तिलत ॥ जलत अगनी मिलत नीर ॥ जैसे बारिक मुखहि खीर ॥१॥ जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ जैसे भूखे भोजन मात ॥ जैसे किरखहि बरस मेघ ॥ जैसे पालन सरनि सेंघ ॥२॥ गरुड़ मुखि नही सरप त्रास ॥ सूआ पिंजरि नही खाइ बिलासु ॥ जैसो आँडो हिरदे माहि ॥ जैसो दानो चकी दराहि ॥३॥ बहुतु एपमा थोर कही ॥ हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ ऊच मूचौ बहु अपार ॥ सिमरत नानक तरे सार ॥४॥३॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ इही हमारै सफल काज ॥ अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥१॥ रहाउ ॥ चरन संतह माथ मोर ॥ नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ हसत हमरे संत टहल ॥ प्रान मनु धनु संत बहल ॥१॥ संतसंगि मेरे मन की प्रीति ॥ संत गुन बसहि मेरै चीति ॥ संत आगिआ मनहि मीठ ॥ मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥२॥ संतसंगि मेरा होइ निवासु ॥ संतन की मोहि बहुतु पिआस ॥ संत बचन मेरे मनहि मंत ॥ संत प्रसादि मेरे बिखै हंत ॥३॥ मुकति जुगति एहा निधान ॥ प्रभ दइआल मोहि देवहु दान ॥ नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ चरन संतन के मेरे रिदे मझारि ॥४॥४॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ सभ कै संगी नाही दूरि ॥ करन करावन हाजरा हजूरि ॥१॥ रहाउ ॥ सुनत जीए जासु नामु ॥ दुख बिनसे सुख कीए बिस्रामु ॥ सगल निधि हरि हरि हरे ॥ मुनि जन ता की सेव करे ॥१॥ जा कै घरि सगले समाहि ॥ जिस ते बिरथा कोइ नाहि ॥ जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ॥ सदा सदा सेवहु किरपाल ॥२॥ सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ बेमुहताज नही किछु काणि ॥ सभ किछु करना आपन आपि ॥ रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥३॥ साधसंगति कउ हउ बलिहार ॥ जासु मिलि होवै उधारु ॥ नाम संगि मन तनहि रात ॥ नानक कउ प्रभि करी दाति ॥४॥५॥

माली गउड़ा महला ५ दुपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ हरि समरथ की सरना ॥ जीउ पिंडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारन करना ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईऐ जीवणै का मूलु ॥ रवि रहिआ सरबत ठाई सूखमो असथूल

॥१॥ आल जाल बिकार तजि सभि हरि गुना निति गाउ ॥ कर जोड़ि नानकु दानु माँगै देहु अपना नाउ ॥२॥१॥६॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ प्रभ समरथ देव अपार ॥ कउनु जानै चलित तेरे किछु अंतु नाही पार ॥१॥ रहाउ ॥ इक खिनहि थापि उथापदा घड़ि भंनि करनैहारु ॥ जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ दातार ॥१॥ हरि सरनि आइिए दासु तेरा प्रभ ऊच अगम मुरार ॥ कढि लेहु भउजल बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥२॥२॥७॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे गोपाल ॥ दीन बाँधव भगति वछल सदा सदा कृपाल ॥१॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि तूहै प्रभ बिना नाही कोइि ॥ पूरि रहिआ सगल मंडल इेकु सुआमी सोइि ॥१॥ करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥ बलिहारि जाइे सदा नानकु देहु अपणा नाउ ॥२॥३॥८॥६॥१४॥

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

धनि धंनि ए राम बेनु बाजै ॥ मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥१॥ रहाउ ॥ धनि धनि मेघा रोमावली ॥ धनि धनि कृसन एढै काँबली ॥१॥ धनि धनि तू माता देवकी ॥ जिह गृह रमईआ कवलापती ॥२॥ धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥ जह खेलै स्री नाराइिना ॥३॥ बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ नामे का सुआमी आनद करै ॥४॥१॥ मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ साँवलीए बीठुलाइि ॥१॥ रहाउ ॥ कर धरे चक्र बैकुंठ ते आइे गज हसती के प्रान उधारीअले ॥ दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले ॥१॥ गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ अैसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥२॥२॥ सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥ इेकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥ असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥१॥ इेकल चिंता राखु अन्नता अउर तजहु सभ आसा रे ॥ प्रणवै नामा भइे निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥२॥३॥

रागु मारू महला १ घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥ सबद ॥ पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥१॥ बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ नामु न पाइआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि विहाइ ॥२॥ विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥३॥ संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥४॥१॥ मारू महला १ ॥ मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥ तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ लिखु दाति जोति वडिआई ॥ मिलि माइआ सुरति गवाई ॥१॥ मूरख मन काहे करसहि माणा ॥ उठि चलणा खसमै भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ तजि साद सहज सुखु होई ॥ घर छडणे रहै न कोई ॥ किछु खाजै किछु धरि जाईऐ ॥ जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ ॥२॥ सजु काइआ पटु हढाइे ॥ फुरमाइिसि बहुतु चलाइे ॥ करि सेज सुखाली सोवै ॥ हथी पउदी काहे रोवै ॥३॥ घर

घुंमणवाणी भाई ॥ पाप पथर तरणु न जाई ॥ भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ कहु नानक देवै काहू ॥४॥२॥ मारू महला १ घरु १ ॥ करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥१॥ चित चेतसि की नही बावरिआ ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥ रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥२॥ काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥ कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥३॥ भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ एकु नामु अंमृतु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥४॥३॥ मारू महला १ ॥ बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे ॥ पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे ॥१॥ दादर तू कबहि न जानसि रे ॥ भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंमृतु न लखसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे ॥ चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥२॥ अंमृत खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥३॥ पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥४॥ इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे ॥ पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे ॥५॥४॥ मारू महला १ ॥ सलोकु ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरनी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥१॥ सबदु ॥ सखी सहेली गरबि गहेली ॥ सुणि सह की इक बात सुहेली ॥१॥ जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥१॥ रहाउ ॥ हउ दोहागणि खरी रंञाणी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥२॥ तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ खिजमति करी जनु बंदा तेरा ॥३॥ भणति नानकु अंदेसा एही ॥ बिनु दरसन कैसे रवउ सनेही ॥४॥५॥

मारू महला १ ॥ मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥१॥ तेरे लाले किआ चतुराई ॥ साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥१॥ रहाउ ॥ मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ ॥ लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ ॥२॥ पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥ पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥३॥ लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई ॥४॥६॥ मारू महला १ ॥ कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥ कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥१॥ भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥ हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥१॥ रहाउ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥२॥ तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ ॥३॥ तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु ॥ मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु ॥४॥७॥ मारू महला १ ॥ इहु धनु सरब रहिआ भरपूरि ॥ मनमुख फिरहि सि जाणहि दूरि ॥१॥ सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ जिसु तू देहि तिसै निसतारै ॥१॥ रहाउ ॥ न इहु धनु जलै न तसकरु लै जाइ ॥ न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥२॥ इसु धन की देखहु वडिआई ॥ सहजे माते अनदिनु जाई ॥३॥ इक बात अनूप सुनहु नर भाई ॥ इसु धन बिनु कहहु किनै परम गति पाई ॥४॥ भणति नानकु अकथ की कथा सुणाए ॥ सतिगुरु मिलै त इहु धनु पाए ॥५॥८॥ मारू महला १ ॥ सूर सरु सोसि लै सोम सरु पोखि लै जुगति करि मरतु सु सनबंधु कीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥१॥ मूड़े काइचे भरमि भुला ॥ नह चीनिआ परमानंदु बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ अजर गहु जारि लै अमर गहु मारि लै भ्राति तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति

मनु राखीऐ उडै नह ह्मसु नह कंधु छीजै ॥२॥ भणति नानकु जनो रवै जे हरि मनो मन पवन सिउ अंमृतु पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह ह्मसु नह कंधु छीजै ॥३॥६॥ मारू महला १ ॥ माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ माणकु मन महि मनु मारसी सचि न लागै कतु ॥ राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥१॥ बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ सरब जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु रिखी मुनी संकरु इंदु तपै भेखारी ॥ मानै हुकमु सोहै दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ जंगम जोध जती संनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि सेवा करणी सारी ॥२॥ निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निंमाणिआ तू माणु ॥ अंधुलै माणकु गुरु पकड़िआ निताणिआ तू ताणु ॥ होम जपा नही जाणिआ गुरमती साचु पछाणु ॥ नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥३॥ साचा नामु सलाहीऐ साचे ते तृपति होइ ॥ गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ जब लगु साहिबु मनि वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥४॥१०॥ मारू महला १ ॥ जोगी जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती ॥१॥ गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती ॥ जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमणु ब्रहम गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती ॥ इको नामु इकु नाराइणु तृभवण इका जोती ॥२॥ जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥ इको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥३॥ दोवै सिरे सतिगुरू निबेड़े सो बूझै जिसु इक लिव लागी जीअहु रहै निभराती ॥ सबदु वसाइ भरमु चुकाइे सदा सेवकु दिनु राती ॥४॥ ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ॥ गुर बचनी बाहरि घरि इको नानकु भइआ उदासी ॥५॥११॥

रागु मारू महला १ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥ सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥१॥ जिस नो साचा सिफती लाइे ॥ गुरमुखि विरले किसै बुझाइे ॥ अंमृत की सार सोई जाणै जि अंमृत का वापारी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ पिर सेती धन प्रेमु रचाइे ॥ गुर कै सबदि तथा चितु लाइे ॥ सहज सेती धन खरी सुहेली तृसना तिखा निवारी जीउ ॥२॥ सहसा तोड़े भरमु चुकाइे ॥ सहजे सिफती धणखु चड़ाइे ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे सुंदरि जोगाधारी जीउ ॥३॥ हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥ जम पुरि वजहि खड़ग करारे ॥ अब कै कहिअै नामु न मिलई तू सहु जीअड़े भारी जीउ ॥४॥ माइिआ ममता पवहि खिआली ॥ जम पुरि फासहिगा जम जाली ॥ हेत के बंधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे खुआरी जीउ ॥५॥ ना हउ करता ना मै कीआ ॥ अंमृतु नामु सतिगुरि दीआ ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ ॥६॥१॥१२॥

मारू महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥ सभ नगरी महि इेको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥१॥ बाबा देहि वसा सच गावा ॥ जा ते सहजे सहजि समावा ॥१॥ रहाउ ॥ बुरा भला किछु आपस ते जानिआ इेई सगल विकारा ॥ इिहु फुरमाइिआ खसम का होआ वरतै इिहु संसारा ॥२॥ इिंद्री धातु सबल कहीअत है इिंद्री किस ते होई ॥ आपे खेल करै सभि करता अैसा बूझै कोई ॥३॥ गुर परसादी इेक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ जो तिसु भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥४॥ भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥ तासु तासु धरम राइि जपतु है पड़े सचे की सरना ॥५॥१॥ मारू महला ३ ॥ आवण जाणा ना थीअै निज घरि वासा होइि ॥ सचु

खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥१॥ इे मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥ गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ जोनी सभि भवाईअनि बिसटा माहि समाइ ॥२॥ वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ अनदिनु सची भगति करि सचा लइे मिलाइ ॥३॥ आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥ नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥४॥२॥ मारू महला ३ ॥ पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ हरि की चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥१॥ मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ॥ सदा हरि चरणी लागि रहा इिक मनि इेकै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ ना मै जाति न पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥२॥ इिहु मनु लालच करदा फिरै लालचि लागा जाइ ॥ धंधै कूड़ि विआपिआ जम पुरि चोटा खाइ ॥३॥ नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा नाही कोइ ॥ भगति खजाना बखसिएनु गुरमुखा सुखु होइ ॥४॥३॥ मारू महला ३ ॥ सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि ॥ तिन मिलिआ मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥१॥ बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ सतिगुरु अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि ॥१॥ रहाउ ॥ इिकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि मिलावा होइ ॥ गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ ॥२॥ इिकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ एना विचि आपि वरतदा करणा किछू न जाइ ॥३॥ जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥ नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥४॥४॥ मारू महला ३ ॥ मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ ॥ सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥१॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ सतिगुर कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि इेको जाणीऐ जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू इेह सोझी पाइ ॥२॥ सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि अगै जाइ ॥ जम पुरि बधे मारीअहि बहुती

मिलै सजाइ ॥३॥ मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ नानक तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥४॥५॥

मारू महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपिए नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥ दालदु भंजि सुदामे मिलिए भगती भाइ तरे ॥ भगति वछलु हरि नामु कृतारथु गुरमुखि कृपा करे ॥१॥ मेरे मन नामु जपत उधरे ॥ ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥१॥ रहाउ ॥ कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ नामा जैदेउ कबीरु तृलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ गुरमुखि नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥२॥ जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥ बेसुआ रवत अजामलु उधरिए मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥ नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे ॥३॥ जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥ सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥ जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिए नामु हरे ॥४॥१॥ मारू महला ४ ॥ सिध समाधि जपिए लिव लाई साधिक मुनि जपिआ ॥ जती सती संतोखी धिआइआ मुखि इंद्रादिक रविआ ॥ सरणि परे जपिए ते भाइ गुरमुखि पारि पइआ ॥१॥ मेरे मन नामु जपत तरिआ ॥ धन्ना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ ॥१॥ रहाउ ॥ सुरि नर गण गंधरबे जपिए रिखि बपुरै हरि गाइआ ॥ संकरि ब्रहमै देवी जपिए मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥ हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥२॥ कोटि कोटि तेतीस धिआइए हरि जपतिआ अंतु न पाइआ ॥ बेद पुराण सिमृति हरि जपिआ मुखि पंडित हरि गाइआ ॥ नामु रसालु जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पइआ ॥३॥ अनत तरंगी नामु जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ ॥ गोबिदु कृपा करे थाइ पाइे जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ गुरि धारि कृपा हरि नामु दृड़ाइए जन नानक नामु लइआ ॥४॥२॥

मारू महला ४ घरु ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि पति पाइ ॥ हलति पलति नालि चलदा हरि अंते लइे छडाइ ॥ जिथै अवघट गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥१॥ मेरे सतिगुरा मै हरि हरि नामु दृड़ाइ ॥ मेरा मात पिता सुत बंधपो मै हरि बिनु अवरु न माइ ॥१॥ रहाउ ॥ मै हरि बिरही हरि नामु है कोई आणि मिलावै माइ ॥ तिसु आगै मै जोदड़ी मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥२॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिए से भागहीण मरि जाइ ॥ एइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मरि जंमहि आवै जाइ ॥ एइ जम दरि बधे मारीअहि हरि दरगह मिलै सजाइ ॥३॥ तू प्रभु हम सरणागती मो कउ मेलि लैहु हरि राइ ॥ हरि धारि कृपा जगजीवना गुर सतिगुर की सरणाइ ॥ हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥४॥१॥३॥ मारू महला ४ ॥ हउ पूंजी नामु दसाइदा को दसे हरि धनु रासि ॥ हउ तिसु विटहु खन खन्नीऐ मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ मै अंतरि प्रेमु पिरंम का किउ सजणु मिलै मिलासि ॥१॥ मन पिआरिआ मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि धीरक हरि साबासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि आपि मिलाइ गुरु मै दसे हरि धनु रासि ॥ बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥ हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ सागर भगति भंडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुरु तुठा खोलि देइ मुखि गुरमुखि हरि परगासि ॥ मनमुखि भाग विहूणिआ तिख मुईआ कंधी पासि ॥३॥ गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥ चिरी विछुन्ना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की अरदासि ॥४॥२॥४॥ मारू महला ४ ॥ हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥ जपि हरि हरि कथा वडभागीआ हरि उतम पदु

निरबाणी ॥ गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥१॥ मन मेरे मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ हरि हरि कथा नित सदा करि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥१॥ रहाउ ॥ मै मनु तनु खोजि ढंढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ मेरै मनि तनि नामु अधारु हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥२॥ गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ वडभागी गुरु सेविआ हरि पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥३॥ हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अंमृत बाणी ॥ सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी ॥४॥३॥५॥ मारू महला ४ ॥ हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥१॥ मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम रसु चाखु ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरमुखि चाखु ॥ तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु ॥ अंमृतु हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥२॥ मनमुख तृसना भरि रहे मनि आसा दह दिस बहु लाखु ॥ बिनु नावै ध्रिगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ एइ आवहि जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगंध भाखु ॥३॥ त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ संतसंगति मेलापु करि हरि नामु मिलै पति साखु ॥ हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरमति भाखु ॥४॥४॥६॥

मारू महला ४ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि भगति भरे भंडारा ॥ गुरमुखि रामु करे निसतारा ॥ जिस नो कृपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥१॥ हरि हरि कृपा करे बनवाली ॥ हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ हरि हरि नामु

जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ सुख सागरु अंमृतु हरि नाउ ॥ मंगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ हरि सति सति सदा हरि सति हरि सति मेरै मनि भावै जीउ ॥२॥ नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ बोलि हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ जे हरि सुप्रसन्नु होवै मेरा सुआमी हरि सिमरत मलु लहि जावै जीउ ॥३॥ माइआ मोहु बिखमु है भारी ॥ किउ तरीऐ दुतरु संसारी ॥ सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि हरि पारि लम्घावै जीउ ॥४॥ तू सरबत्र तेरा सभु कोई ॥ जो तू करहि सोई प्रभ होई ॥ जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै हरि थाइ पावै जीउ ॥५॥१॥७॥ मारू महला ४ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ सभि किलविख काटै हरि तेरे ॥ हरि धनु राखहु हरि धनु संचहु हरि चलदिआ नालि सखाई जीउ ॥१॥ जिस नो कृपा करे सो धिआवै ॥ नित हरि जपु जापै जपि हरि सुखु पावै ॥ गुर परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि लम्घाई जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ निरभउ निरंकारु सति नामु ॥ जग महि स्रेसटु ऊतम कामु ॥ दुसमन दूत जमकालु ठेह मारउ हरि सेवक नेड़ि न जाई जीउ ॥२॥ जिसु उपरि हरि का मनु मानिआ ॥ सो सेवकु चहु जुग चहु कुंट जानिआ ॥ जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जमकंकरु खाई जीउ ॥३॥ सभ महि इेकु निरंजन करता ॥ सभि करि करि वेखै अपणे चलता ॥ जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई जीउ ॥४॥ हउ अनदिनु नामु लई करतारे ॥ जिनि सेवक भगत सभे निसतारे ॥ दस अठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक नामु छडाई जीउ ॥५॥२॥८॥

मारू महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा ॥१॥ इेका निरभउ बात सुनी ॥ सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिलि गाइ गुनी ॥१॥ रहाउ ॥ देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि मुइआ ॥ लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि

जोनी जोइिआ ॥२॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाइिआ ॥ छल बपुरी इिह कउला डरपै अति डरपै धरम राइिआ ॥३॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा ॥४॥१॥ मारू महला ५ ॥ पाँच बरख को अनाथु ध्रू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥ पुत्र हेति नाराइिणु कहिए जमकंकर मारि बिदारे ॥१॥ मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ मोहि दीन अलप मति निरगुण परिए सरणि दुआरे ॥१॥ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिए बधिक तरे बिचारे ॥ इेक निमख मन माहि अराधिए गजपति पारि उतारे ॥२॥ कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदरु दासी सुतु भइिए पुनीता सगले कुल उजारे ॥३॥ कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ आइिए साम नानक एट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥४॥२॥ मारू महला ५ ॥ वित नवित भ्रमिए बहु भाती अनिक जतन करि धाइे ॥ जो जो करम कीइे हउ हउमै ते ते भइे अजाइे ॥१॥ अवर दिन काहू काज न लाइे ॥ सो दिनु मो कउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन हरि जसु गाइे ॥१॥ रहाउ ॥ पुत्र कलत्र गृह देखि पसारा इिस ही महि उरझाइे ॥ माइिआ मद चाखि भइे उदमाते हरि हरि कबहु न गाइे ॥२॥ इिह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाइे ॥ तुम दातार वडे प्रभ संम्रथ मागन कउ दानु आइे ॥३॥ तिआगिए सगला मानु महता दास रेण सरणाइे ॥ कहु नानक हरि मिलि भइे इेकै महा अन्नद सुख पाइे ॥४॥३॥ मारू महला ५ ॥ कवन थान धीरिए है नामा कवन बसतु अह्मकारा ॥ कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिए मुख ते सुनि करि गारा ॥१॥ सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइिए ॥ इेती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ पंच तत मिलि भइिए संजोगा इिन महि कवन दुराते ॥२॥ जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ जनम मरणु उस ही कउ है रे एहा आवै जाई ॥३॥ बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ भणति नानकु जब खेलु

उझारै तब इेकै इेकंकारा ॥४॥४॥ मारू महला ५ ॥ मान मोह अरु लोभ विकारा बीए चीति न घालिए ॥ नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिए ॥१॥ सेवक की एड़कि निबही प्रीति ॥ जीवत साहिबु सेविए अपना चलते राखिए चीति ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिए ॥ सहजु अन्नदु रखिए गृह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिए ॥२॥ आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिए ॥ जो जो हुकमु भइिए साहिब का सो माथै ले मानिए ॥३॥ भइिए कृपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ धन्नु सेवकु सफलु एहु आइिआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥४॥५॥ मारू महला ५ ॥ खुलिआ करमु कृपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥ स्रमु थाका पाइे बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥१॥ अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ चीति आइिए मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥ सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइिए दूराई ॥२॥ सुख सीतल सरधा सभ पूरी होइे संत सहाई ॥ पावन पतित कीइे खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥३॥ निरभउ भइे सगल भै खोइे गोबिद चरण एटाई ॥ नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥४॥६॥ मारू महला ५ ॥ जो समरथु सरब गुण नाइिकु तिस कउ कबहु न गावसि रे ॥ छोडि जाइि खिन भीतरि ता कउ उआ कउ फिरि फिरि धावसि रे ॥१॥ अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ बैरी संगि रंग रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जारसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै नामि सुनिअै जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ काढि देइि सिआल बपुरे कउ ता की एट टिकावसि रे ॥२॥ जिस का जासु सुनत भव तरीअै ता सिउ रंगु न लावसि रे ॥ थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसि रे ॥३॥ भइिए प्रसादु कृपा निधि ठाकुर संतसंगि पति पाई ॥ कहु नानक त्रै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भइे सहाई ॥४॥७॥ मारू महला ५ ॥ अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिए ॥ हसत पाव झरे खिन भीतरि

अगनि संगि लै जारिए ॥१॥ मूड़े तै मन ते रामु बिसारिए ॥ लूणु खाइि करहि हरामखोरी पेखत नैन बिदारिए ॥१॥ रहाउ ॥ असाध रोगु उपजिए तन भीतरि टरत न काहू टारिए ॥ प्रभ बिसरत महा दुखु पाइिए इिहु नानक ततु बीचारिए ॥२॥८॥ मारू महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ हरि गुण गावह नीता नीत ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥ आदि मधि अंति है सोऊ ॥१॥ संतन की एट आपे आपि ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै वसि है सगल संसारु ॥ आपे आपि आपि निरंकारु ॥ नानक गहिए साचा सोइि ॥ सुखु पाइिआ फिरि दूखु न होइि ॥२॥६॥

मारू महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रान सुखदाता जीअ सुखदाता तुम काहे बिसारिए अगिआनथ ॥ होछा मदु चाखि होइे तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ ॥१॥ रे नर अैसी करहि इिआनथ ॥ तजि सारंगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिए दासी संगि सानथ ॥१॥ रहाउ ॥ धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ फोकट करम करहि अगिआनी मनमुखि अंध कहावथ ॥२॥ सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ ॥ पर की कउ अपनी करि पकरी अैसे भूल भुलानथ ॥३॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस सभ इेकै नामि तरानथ ॥ गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो पारि परानथ ॥४॥१॥१०॥ मारू महला ५ ॥ गुपतु करता संगि सो प्रभु डहकावइे मनुखाइि ॥ बिसारि हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थंम गलि लाइि ॥१॥ रे नर काइि पर गृहि जाइि ॥ कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नही सुनिए धरम राइि ॥१॥ रहाउ ॥ बिकार पाथर गलहि बाधे निंद पोट सिराइि ॥ महा सागरु समुदु लम्घना पारि न परना जाइि ॥२॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिए नेत्र रखे फिराइि ॥ सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतर माइि ॥३॥ सूरु मुकता ससी मुकता ब्रहम गिआनी अलिपाइि ॥ सुभावत जैसे बैसंतर अलिपत सदा निरमलाइि ॥४॥ जिसु करमु खुलिआ तिसु लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मंनिआ

सुभाइ ॥ गुरि मंत्रु अवखधु नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥५॥२॥ रे नर इन बिधि पारि पराइ ॥ धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥ रहाउ दूजा ॥२॥११॥ मारू महला ५ ॥ बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥१॥ मानकु पाइए रे पाइए हरि पूरा पाइआ था ॥ मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरू दिवाइआ था ॥१॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिए तह अंमृत नामु चुआइआ था ॥२॥ तोटि नाही मनि तृसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था ॥ चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िए रसु पाइआ था ॥३॥ सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥४॥३॥१२॥ मारू महला ५ ॥ जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ आन रूती आन बोईऔ फलु न फूलै ताहि ॥१॥ रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ ॥ करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥२॥ भाउ लागा गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ खेति मेरै जंमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥३॥ पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ कहु नानक सुखु पाइआ तृपति रहे आघाइ ॥४॥४॥१३॥ मारू महला ५ ॥ फूटो आँडा भरम का मनहि भइए परगासु ॥ काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥१॥ आवण जाणु रहिए ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीए ॥१॥ रहाउ ॥ जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गइे निगहार ॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार ॥२॥ चूका भारा करम का होइे निहकरमा ॥ सागर ते कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥३॥ सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥ सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥४॥५॥१४॥ मारू महला ५ ॥

बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ मोनी होइ बैठा इकाँती हिरदै कलपन गाठा ॥ होइ उदासी गृहु तजि चलिए छुटकै नाही नाठा ॥१॥ जीअ की कै पहि बात कहा ॥ आपि मुकतु मो कउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥१॥ रहाउ ॥ तपसी करि कै देही साधी मनूआ दह दिस धाना ॥ ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना ॥ संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिए उसु महि क्रोधु बिगाना ॥२॥ घूंघर बाधि भइे रामदासा रोटीअन के एपावा ॥ बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥३॥ हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के संता ॥ तिन की धूड़ि पाइे मनु मेरा जा दइिआ करे भगवंता ॥ कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ ताँ उतरी मन की चिंता ॥४॥ मेरा अंतरजामी हरि राइिआ ॥ सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि गइे बकबाइिआ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥६॥१५॥ मारू महला ५ ॥ कोटि लाख सरब को राजा जिसु हिरदै नामु तुमारा ॥ जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥१॥ मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥१॥ रहाउ ॥ रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥२॥ माइिआ रंग बिरंग खिनै महि जिउ बादर की छाइिआ ॥ से लाल भइे गूड़ै रंगि राते जिन गुर मिलि हरि हरि गाइिआ ॥३॥ ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥४॥७॥१६॥

मारू महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एअंकारि उतपाती ॥ कीआ दिनसु सभ राती ॥ वणु तृणु तृभवण पाणी ॥ चारि बेद चारे खाणी ॥ खंड दीप सभि लोआ ॥ इेक कवावै ते सभि होआ ॥१॥ करणैहारा बूझहु रे ॥ सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥ हउमै आवै जाई ॥ मनु टिकणु न

पावै राई ॥ बाझु गुरू गुबारा ॥ मिलि सतिगुर निसतारा ॥२॥ हउ हउ करम कमाणे ॥ ते ते बंध गलाणे ॥ मेरी मेरी धारी ॥ एहा पैरि लोहारी ॥ सो गुर मिलि इेकु पछाणै ॥ जिसु होवै भागु मथाणै ॥३॥ सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ सो भूला जि प्रभू भुलाइआ ॥ नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ जि करावै सु नामु वखानी ॥ तेरा अंतु न पारावारा ॥ जन नानक सद बलिहारा ॥४॥१॥१७॥ मारू महला ५ ॥ मोहनी मोहि लीइे त्रै गुनीआ ॥ लोभि विआपी झूठी दुनीआ ॥ मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ ॥१॥ निरभउ निरंकारु दइिअलीआ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ इेकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ इेकहि सुपनै दामु न छडहै ॥ राजु कमाइि करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ ॥२॥ इेकहि प्राण पिंड ते पिआरी ॥ इेक संची तजि बाप महतारी ॥ सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ ॥३॥ होइि अउधूत बैठे लाइि तारी ॥ जोगी जती पंडित बीचारी ॥ गृहि मड़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ ॥४॥ काटे बंधन ठाकुरि जा के ॥ हरि हरि नामु बसिए जीअ ता कै ॥ साधसंगि भइे जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ ॥५॥२॥१८॥ मारू महला ५ ॥ सिमरहु इेकु निरंजन सोऊ ॥ जा ते बिरथा जात न कोऊ ॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥ सोई बिधाता खिनु खिनु जपीअै ॥ जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीअै ॥ चरण कमल उर अंतरि धारहु ॥ बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ करण पलाह मिटहि बिललाटा ॥ जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ साधसंगि विरला को पाइे ॥ नानकु ता कै बलि बलि जाइे ॥१॥ राम नामु मनि तनि आधारा ॥ जो सिमरै तिस का निसतारा ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥ हितु लाइिए सठ मूड़ अगिआनी ॥ काम क्रोध लोभ मद माता ॥ कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ अपना छोडि पराइिअै राता ॥ माइिआ मद मन तन संगि जाता ॥ तृसन न बूझै करत कलोला ॥ ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ आवत इिकेला जात इिकेला ॥

हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइए ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइए ॥२॥ पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ जह जानो तह रहनु न पावै ॥ थान बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ अहमेव मूठो बेचारा ॥ अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ तह मात न बंधु न मीत न जाइआ ॥ जिस कउ होत क्रिपाल सुआमी ॥ सो जनु नानक पारगरामी ॥३॥ भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ प्रभ दइआल दुख दरद बिदारण ॥ जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ अंध कूप ते काढनहारा ॥ प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ साध रूप अपना तनु धारिआ ॥ महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ जप तप संजम इस ते किछु नाही ॥ आदि अंति प्रभ अगम अगाही ॥ नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥४॥३॥१९॥ मारू महला ५ ॥ कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥१॥ ऐसी जानि पाई ॥ सरणि सूरो गुर दाता राखै आपि वडाई ॥१॥ रहाउ ॥ भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥२॥ अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥३॥ नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई ॥४॥४॥२०॥ मारू महला ५ ॥ मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ मोहि सेवकु बेचारा ॥१॥ मोहनु लालु मेरा प्रीतम मन प्राना ॥ मो कउ देहु दाना ॥१॥ रहाउ ॥ सगले मै देखे जोई ॥ बीजउ अवरु न कोई ॥२॥ जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ है होसी आहे ॥३॥ दइआ मोहि कीजै देवा ॥ नानक लागो सेवा ॥४॥५॥२१॥ मारू महला ५ ॥ पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईऐ ॥ ऐसा कोई भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईऐ ॥१॥ मो कउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ एहा ओट आधारा ॥१॥ रहाउ ॥ सरब धारन प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम जल हम मीना ॥२॥ पूरन बिसथीरन सुआमी आहि आइए पाछै ॥ सगलो भू मंडल खंडल प्रभ

तुम ही आछै ॥३॥ अटल अखइिए देवा मोहन अलख अपारा ॥ दानु पावउ संता संगु नानक रेनु दासारा ॥४॥६॥२२॥ मारू महला ५ ॥ तृपति आघाइे संता ॥ गुर जाने जिन मंता ॥ ता की किछु कहनु न जाई ॥ जा कउ नाम बडाई ॥१॥ लालु अमोला लालो ॥ अगह अतोला नामो ॥१॥ रहाउ ॥ अविगत सिउ मानिआ मानो ॥ गुरमुखि ततु गिआनो ॥ पेखत सगल धिआनो ॥ तजिए मन ते अभिमानो ॥२॥ निहचलु तिन का ठाणा ॥ गुर ते महलु पछाणा ॥ अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ हरि की सेवा लागे ॥३॥ पूरन तृपति अघाइे ॥ सहज समाधि सुभाइे ॥ हरि भंडारु हाथि आइिआ ॥ नानक गुर ते पाइिआ ॥४॥७॥२३॥

मारू महला ५ घरु ६ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

छोडि सगल सिआणपा मिलि साध तिआगि गुमानु ॥ अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम वखानु ॥१॥ मेरे मन करन सुणि हरि नामु ॥ मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु ॥१॥ रहाउ ॥ दूख दीन न भउ बिआपै मिलै सुख बिस्रामु ॥ गुर प्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥२॥१॥२४॥ मारू महला ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से होत देखे खेह ॥ पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते इे नेह ॥१॥ मेरे मन नामु नित नित लेह ॥ जलत नाही अगनि सागर सूखु मनि तनि देह ॥१॥ रहाउ ॥ बिरख छाइिआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ हरि भगति दृड़ु मिलु साध नानक तेरै कामि आवत इेह ॥२॥२॥२५॥ मारू महला ५ ॥ पुरखु पूरन सुखह दाता संगि बसतो नीत ॥ मरै न आवै न जाइि बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥१॥ मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ चेति मन महि हरि हरि निधाना इेह निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ कृपाल दइिआल गोपाल गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ॥२॥३॥२६॥ मारू महला ५ ॥ चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥ चरण सरण भजु संगि साधू

भव सागर उतरहि पारि ॥१॥ मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल विसारि ॥१॥ रहाउ ॥ जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥२॥४॥२७॥ मारू महला ५ ॥ तजि आपु बिनसी तापु रेण साधू थीउ ॥ तिसहि परापति नामु तेरा करि कृपा जिसु दीउ ॥१॥ मेरे मन नामु अंमृतु पीउ ॥ आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ नामु इक रस रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥२॥५॥२८॥ मारू महला ५ ॥ प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥१॥ मेरे मन नाम की करि टेक ॥ तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक ॥१॥ रहाउ ॥ चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे कई अनेक ॥२॥६॥२९॥ मारू महला ५ ॥ पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ महा भउजल माहि तुलहो जा को लिखिए माथ ॥१॥ डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ करण कारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अंमृत पाथ ॥ करहु कृपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥२॥७॥३०॥

मारू अंजुली महला ५ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ पंच धातु करि पुतला कीआ ॥ साहै कै फुरमाइअड़ै जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥१॥ जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ ऊरध मुख महा गुबारे ॥ सासि सासि समाले सोई एथै खसमि छडाइ लइआ ॥२॥ विचहु गरभै निकलि आइआ ॥ खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ आवै जाइ भवाईऐ जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥३॥ मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक आइआ सो

परवाणु थिआ ॥४॥१॥३१॥ मारू महला ५ ॥ वैदो न वाई भैणो न भाई इेको सहाई रामु हे ॥१॥ कीता जिसो होवै पापाँ मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥२॥ घटि घटे वासी सरब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥३॥ आवै न जावै संगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥४॥ भगत जना का राखणहारा ॥ संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥५॥२॥३२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ मारू महला ९ ॥ हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ जा कउ सिमरि अजामलु उधरिए गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥ ता को दूखु हरिए करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥१॥ जिह नर जसु किरपा निधि गाइिए ता कउ भइिए सहाई ॥ कहु नानक मै इिही भरोसै गही आनि सरनाई ॥२॥१॥ मारू महला ९ ॥ अब मै कहा करउ री माई ॥ सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइिआ सिमरिए नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ ॥ काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥१॥ जो संपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥ मारू महला ९ ॥ माई मै मन को मानु न तिआगिए ॥ माइिआ के मदि जनमु सिराइिए राम भजनि नही लागिए ॥१॥ रहाउ ॥ जम को डंडु परिए सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिए ॥ कहा होत अब कै पछुताडे छूटत नाहिन भागिए ॥१॥ इिह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिए ॥ सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिए ॥२॥३॥

मारू असटपदीआ महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ अठसठि तीरथ बहु घणा भ्रमि थाके भेखा ॥ साचो साहिबु निरमलो मनि मानै इेका ॥१॥ तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ नामु रसाइिणु भाइि लै

परहरि दुखु भारी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥२॥ जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोड़ै अंधु अगिआना ॥ गुरमती दधि मथीऐ अंमृतु पाईऐ नामु निधाना ॥ मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥३॥ हउमै मेरा मरी मरु मरि जंमै वारो वार ॥ गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार ॥ गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥४॥ सचा वखरु नामु है सचा वापारा ॥ लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥५॥ साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु वीचारा ॥६॥ रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥७॥ अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ गुर सबदी दरु जोईऐ मुकते भंडारा ॥ नानक मेलु न चूकई साचे वापारा ॥८॥१॥ मारू महला १ ॥ बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ कंधी दिसि न आवई ना उरवारु न पारु ॥ वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥१॥ बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ गुर परसादी उबरे सचा नामु समालि ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरू है बोहिथा सबदि लम्घावणहारु ॥ तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥ तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥२॥ गुरमुखि लम्घे से पारि पड़े सचे सिउ लिव लाइ ॥ आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ ॥ गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥३॥ सपु पिड़ाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ पूरबि लिखिआ पाईऐ किस नो दीजै दोसु ॥ गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मन्ने नाउ संतोसु ॥४॥ मागरमछु फहाईऐ कुंडी जालु वताइ ॥ दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ जंमण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ ॥५॥ हउमै बिखु पाइ जगतु उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ जीवन

मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥६॥ धंधै धावत जगु बाधिआ ना बूझै वीचारु ॥ जंमण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ गुरि राखे से उबरे सचा सबदु वीचारि ॥७॥ सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ सचु चुगै अंमृतु पीऐ उडै त इेका वार ॥ गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥८॥२॥ मारू महला १ ॥ सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ जिस कै डरि भै भागीऐ अंमृतु ता को नाउ ॥ मारहि राखहि इेकु तू बीजउ नाही थाउ ॥१॥ बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ नाम बिना को कछु नही गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥१॥ रहाउ ॥ अवगणि सुभर गुण नही बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ सहजि सबदि सुखु ऊपजै बिनु भागा धनु नाहि ॥ जिन कै नामु न मनि वसै से बाधे दूख सहाहि ॥२॥ जिनी नामु विसारिआ से कितु आइे संसारि ॥ आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥ विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ॥३॥ अगै किआ जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ भूले मारगु जो दसे तिस कै लागउ पाइ ॥ गुर बिनु दाता को नही कीमति कहणु न जाइ ॥४॥ साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइिए लेखु ॥ मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ तुधु भावै तू मनि वसहि नदरी करमि विसेखु ॥५॥ भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ बीजउ सूझै को नही मनि तनि पूरनु देइ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥६॥ नगरी नाइिकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ नारि न पुरखु न पंखणू साचउ चतुरु सरूपु ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ तू दीपकु तू धूपु ॥७॥ गीत साद चाखे सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥८॥३॥ मारू महला १ ॥ साची कार कमावणी होरि लालच बादि ॥ इिहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ बिनु नावै को रसु नही होरि चलहि बिखु लादि ॥१॥ ऐसा लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ जिउ फुरमावहि तिउ चला सचु लाल पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु लाले चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु

धीरा ॥ गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥२॥ लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ विछुड़िआ कउ मेलि लइ गुर कउ बलि जाईऐ ॥३॥ लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु धीरक धुर की ॥४॥ साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥५॥ मनमुख कउ आलसु घणो फाथे एजाड़ी ॥ फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगाड़ी ॥ गुर परसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥६॥ अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥७॥ जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ लालै लालचु तिआगिआ पाइिआ हरि नाउ ॥ तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥८॥४॥ मारू महला १ ॥ लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ खसमि मिलिऐ सुखु पाइिआ कीमति कहणु न जाई ॥१॥ लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ गुर परसादी उबरे हरि की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ लालै हुकमु पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ आपे मीरा बखसि लइे वडी वडिआई ॥२॥ आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि बुझाई ॥ तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ बिनु सेवा किनै न पाइिआ दूजै भरमि खुआई ॥३॥ सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चड़ै सवाइिआ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि पाइिआ ॥ जा कृपा करे ता सेवीऐ सेवि सचि समाइिआ ॥४॥ लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाइे ॥ बंधन तूटहि मुकति होइि तृसना अगनि बुझाइे ॥ सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाइे ॥५॥ लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥ तेरा हुकमु लाला मन्ने इेह करणी सारु ॥६॥ गुरु सागरु अंमृत सरु जो इिछे सो फलु पाइे ॥ नामु

पदारथु अमरु है हिरदै मंनि वसाइे ॥ गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु मनाइे ॥७॥ सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ नानक नामि रते से निरमले साचै रहे समाई ॥८॥५॥ मारू महला १ ॥ हुकमु भइिआ रहणा नही धुरि फाटे चीरै ॥ इेहु मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥१॥ किउ रहीअै उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ ॥ जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अंमृत नाउ ॥ मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥२॥ कीता किआ सालाहीअै करि देखै सोई ॥ जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ सो साचा सालाहीअै साची पति होई ॥३॥ पंडितु पड़ि न पहुचई बहु आल जंजाला ॥ पाप पुन्न दुइि संगमे खुधिआ जमकाला ॥ विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥४॥ जिन की लेखै पति पवै से पूरे भाई ॥ पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥५॥ खार समुद्रु ढंढोलीअै इिकु मणीआ पावै ॥ दुइि दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ गुरु सागरु सति सेवीअै दे तोटि न आवै ॥६॥ मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ मैला ऊजलु ता थीअै पारस संगि भीजै ॥ वन्नी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥७॥ भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥८॥६॥ मारू महला १ ॥ मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ गृह धरमु गवाइे सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका तृसना होइि वधेरै ॥ काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढोरै ॥१॥ बाबा अैसी रवत रवै संनिआसी ॥ गुर कै सबदि इेक लिव लागी तेरै नामि रते तृपतासी ॥१॥ रहाउ ॥ घोली गेरू रंगु चड़ाइिआ वसत्र भेख भेखारी ॥ कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइिआधारी ॥ घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ भरमि भुलाणा सबदु न चीनै

जूऐ बाजी हारी ॥२॥ अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि पूअर तापै ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥ निंदा करि करि नरक निवासी अंतरि आतम जापै ॥ अठसठि तीरथ भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥३॥ छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥ अंतरि बाहरि इेकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥ पाठु पड़ै मुखि झूठो बोलै निगुरे की मति एहै ॥ नामु न जपई किउ सुखु पावै बिनु नावै किउ सोहै ॥४॥ मूंडु मुडाइि जटा सिख बाधी मोनि रहै अभिमाना ॥ मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम गिआना ॥ अंमृतु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का देवाना ॥ किरतु न मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥५॥ हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि तृसना उपजी भारी ॥ इिसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइिआ पर नारी ॥ सिख करे करि सबदु न चीनै लम्पटु है बाजारी ॥ अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥६॥ सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाइे ॥ छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाइे ॥ बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि जलाइे ॥ धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाइे ॥७॥ आस निरास रहै संनिआसी इेकसु सिउ लिव लाइे ॥ हरि रसु पीवै ता साति आवै निज घरि ताड़ी लाइे ॥ मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु वरजि रहाइे ॥ गृहु सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाइे ॥८॥ ब्रहमा बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी ॥ खाणी बाणी गगन पताली जंता जोति तुमारी ॥ सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उर धारी ॥ नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥९॥७॥ मारू महला १ ॥ मात पिता संजोगि उपाइे रकतु बिंदु मिलि पिंडु करे ॥ अंतरि गरभ उरधि लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥१॥ संसारु भवजलु किउ तरै ॥ गुरमुखि नामु निरंजनु पाईऐ अफरिए भारु अफारु टरै ॥१॥ रहाउ ॥ ते गुण विसरि गइे अपराधी मै बउरा किआ करउ हरे ॥ तू दाता दइिआलु सभै सिरि अहिनिसि दाति समारि करे ॥२॥ चारि पदारथ लै जगि जनमिआ

सिव सकती घरि वासु धरे ॥ लागी भूख माइिआ मगु जोहै मुकति पदारथु मोहि खरे ॥३॥ करण पलाव करे नही पावै इित उत ढूढत थाकि परे ॥ कामि क्रोधि अह्मकारि विआपे कूड़ कुटंब सिउ प्रीति करे ॥४॥ खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि दिखावै काल घरे ॥ बिनु गुर सबद न आपु पछाणै बिनु हरि नाम न कालु टरे ॥५॥ जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥ तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥६॥ बिरधि भइिआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कंठु बिरूधो नैनहु नीरु ढरे ॥ चरण रहे कर कंपण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥७॥ सुरति गई काली हू धउले किसै न भावै रखिए घरे ॥ बिसरत नाम अैसे दोख लागहि जमु मारि समारे नरकि खरे ॥८॥ पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै का कउ दोसु धरे ॥ बिनु गुर बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै जनमु जरे ॥९॥ खुसी खुआर भइे रस भोगण फोकट करम विकार करे ॥ नामु बिसारि लोभि मूलु खोइिए सिरि धरम राइि का डंडु परे ॥१०॥ गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे ॥ ते निरमल पुरख अपरंपर पूरे ते जग महि गुर गोविंद हरे ॥११॥ हरि सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन भाउ करे ॥ हरि जन गुरु परधानु दुआरै नानक तिन जन की रेणु हरे ॥१२॥८॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मारू काफी महला १ घरु २ ॥ आवउ वंञउ डुंमणी किती मित्र करेउ ॥ सा धन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥१॥ मैडा मनु रता आपनड़े पिर नालि ॥ हउ घोलि घुमाई खन्नीअै कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥ पेईअड़ै डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ ॥ मै गलि अउगण मुठड़ी बिनु पिर झूरि मराउ ॥२॥ पेईअड़ै पिरु संमला साहुरड़ै घरि वासु ॥ सुखि सवंधि सोहागणी पिरु पाइिआ गुणतासु ॥३॥ लेफु निहाली पट की कापड़ु अंगि बणाइि ॥ पिरु मुती डोहागणी तिन डुखी रैणि

विहाइ ॥४॥ किती चखउ साडड़े किती वेस करेउ ॥ पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढी झूरेदी झूरेउ ॥५॥ सचे संदा सदड़ा सुणीअै गुर वीचारि ॥ सचे सचा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥६॥ गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु ॥ गुरमुखि बूझै जाणीअै हउमै गरबु निवारि ॥७॥ तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ नानक नाहु न वीछुड़ै तिन सचै रतड़ीआह ॥८॥१॥९॥ मारू महला १ ॥ ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥ सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥१॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ गुर बिनु इेता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥ आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥२॥ मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥३॥ साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥ सचि विछोड़ा ना थीअै सो सहु रंगि रवंतु ॥४॥ सभे रुती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥५॥ पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि ॥ पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि ॥६॥ हिकनी लदिआ हिकि लदि गड़े हिकि भारे भर नालि ॥ जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि ॥७॥ ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ नानक हउमै मारीअै सचे जेहड़ा सोइ ॥८॥२॥१०॥ मारू महला १ ॥ ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥१॥ बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥ तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥१॥ रहाउ ॥ मूरखु सिआणा इेकु है इेक जोति दुइ नाउ ॥ मूरखा सिरि मूरखु है जि मन्ने नाही नाउ ॥२॥ गुर दुआरै नाउ पाईअै बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ सतिगुर कै भाणै मनि वसै ता अहिनिसि रहै लिव लाइ ॥३॥ राजं रंगं रूपं मालं जोबनु ते जूआरी ॥ हुकमी बाधे पासै खेलहि चउपड़ि इेका सारी ॥४॥ जगि चतुरु सिआणा भरमि भुलाणा नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ नाउ विसारहि

बेदु समालहि बिखु भूले लेखारी ॥५॥ कलर खेती तरवर कंठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥ इेहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो गरबि जरै ॥६॥ रयति राजे कहा सबाइे दुहु अंतरि सो जासी ॥ कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी अलखु निवासी ॥७॥३॥११॥

मारू महला ३ घरु ५ असटपदी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिस नो प्रेमु मंनि वसाइे ॥ साचै सबदि सहजि सुभाइे ॥ इेहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ ॥१॥ आपे मेले आपि मिलाइे ॥ आपणा पिआरु आपे लाइे ॥ प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि तुमारी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ दिब दृसटि जागै भरमु चुकाइे ॥ गुर परसादि परम पदु पाइे ॥ सो जोगी इिह जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ ॥२॥ संजोगी धन पिर मेला होवै ॥ गुरमति विचहु दुरमति खोवै ॥ रंग सिउ नित रलीआ माणै अपणे कंत पिआरी जीउ ॥३॥ सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा होवै गिआन बीचारी जीउ ॥४॥ इेहु सबदु सारु जिस नो लाइे ॥ गुरमुखि तृसना भुख गवाइे ॥ आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥५॥ अगम निगमु सतिगुरू दिखाइिआ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइिआ ॥ अंजन माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥६॥ गुरमुखि होवै सो ततु पाइे ॥ आपणा आपु विचहु गवाइे ॥ सतिगुर बाझहु सभु धंधु कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥७॥ इिकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी ॥ इिकना गुरमुखि हउमै मारी ॥ सचै सबदि रते बैरागी होरि भरमि भुले गावारी जीउ ॥८॥ गुरमुखि जिनी नामु न पाइिआ ॥ मनमुखि बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी जीउ ॥९॥ अंमृत नामु सदा सुखदाता ॥ गुरि पूरै जुग चारे जाता ॥ जिसु तू देवहि सोई पाइे नानक ततु बीचारी जीउ ॥१०॥१॥

मारू महला ५ घरु ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइिए ॥१॥ रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइिए ॥ अंमृतु संगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ रतन जवेहर बनजनि आइिए कालरु लादि चलाइिए ॥२॥ जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइिए ॥३॥ अटल अखंड प्राण सुखदाई इिक निमख नही तुझु गाइिए ॥४॥ जहा जाणा सो थानु विसारिए इिक निमख नही मनु लाइिए ॥५॥ पुत्र कलत्र गृह देखि समग्री इिस ही महि उरझाइिए ॥६॥ जितु को लाइिए तित ही लागा तैसे करम कमाइिए ॥७॥ जउ भइिए कृपालु ता साधसंगु पाइिआ जन नानक ब्रहमु धिआइिए ॥८॥१॥ मारू महला ५ ॥ करि अनुग्रहु राखि लीनो भइिए साधू संगु ॥ हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूड़ा रंगु ॥१॥ मेरे मान को असथानु ॥ मीत साजन सखा बंधपु अंतरजामी जानु ॥१॥ रहाउ ॥ संसार सागरु जिनि उपाइिए सरणि प्रभ की गही ॥ गुर प्रसादी प्रभु अराधे जमकंकरु किछु न कही ॥२॥ मोख मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भंडारु ॥ जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥३॥ दूख दरद कलेस बिनसहि जिसु बसै मन माहि ॥ मिरतु नरकु असथान बिखड़े बिखु न पोहै ताहि ॥४॥ रिधि सिधि नव निधि जा कै अंमृता परवाह ॥ आदि अंते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥५॥ सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ सिमरि सुआमी सुख सहजि भुंचहि नही अंतु पारावारु ॥६॥ अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ पावना ते महा पावन कोटि दान इिसनान ॥७॥ बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि ॥ बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥८॥२॥ मारू महला ५ ॥ ससतृ तीखणि काटि डारिए मनि न कीनो रोसु ॥ काजु उआ को ले सवारिए तिलु न दीनो दोसु ॥१॥ मन मेरे राम रउ नित नीति ॥ दइिआल देव कृपाल गोबिंद सुनि संतना

की रीति ॥१॥ रहाउ ॥ चरण तलै उगाहि बैसिए स्रमु न रहिए सरीरि ॥ महा सागरु नह विआपै खिनहि उतरिए तीरि ॥२॥ चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥३॥ ऊच नीच बिकार सुकृत संलगन सभ सुख छत्र ॥ मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत ॥४॥ करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिए अंधकार बिनास ॥ पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइए बिखादु ॥५॥ सीत मंद सुगंध चलिए सरब थान समान ॥ जहा सा किछु तहा लागिए तिलु न संका मान ॥६॥ सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥७॥ चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥ गोपाल गुण नित गाउ नानक भइे प्रभ किरपाल ॥८॥३॥

मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चादना चादनु आँगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥१॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥२॥ तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥३॥ मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥४॥ जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥५॥ लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥६॥ इहि बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥७॥ कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥८॥१॥४॥ मारू महला ५ ॥ आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥१॥ रहाउ ॥ तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥१॥ संत कृपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥२॥ भगत दइिआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना ॥३॥ दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥४॥ नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥५॥ संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥६॥ मोहि निरगुन कउ कोइि न राखै संता संगि समावना ॥७॥ कहु नानक गुरि चलतु दिखाइिआ मन मधे हरि हरि रावना ॥८॥२॥५॥

मारू महला ५ ॥ जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद जीवना ॥१॥ रहाउ ॥ पीवना जितु मनु आघावै नामु अंमृत रसु पीवना ॥१॥ खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा तृपतीवना ॥२॥ पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥३॥ भोगना मन मधे हरि रसु संतसंगति महि लीवना ॥४॥ बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥५॥ मातिआ हरि रस महि राते तिसु बहुड़ि न कबहू अउखीवना ॥६॥ मिलिए तिसु सरब निधाना प्रभि कृपालि जिसु दीवना ॥७॥ सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोइि पीवना ॥८॥३॥६॥

मारू महला ५ घरु ८ अंजुलीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु गृहि बहुतु तिसै गृहि चिंता ॥ जिसु गृहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऔ ॥१॥ गृह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऔ ॥२॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति न होईऔ मीता ॥ साधसंगि तुटहि हउ बंधन इेको इेकु निहालीऔ ॥३॥ करम करै त बंधा नह करै त निंदा ॥ मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऔ ॥४॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाइे सोई बूझै एहु बालक वागी पालीऔ ॥५॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ इिस ही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऔ ॥६॥ जो सूरा तिस ही होइि मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ जो वरताइे सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऔ ॥७॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ करि करि वेखै अपणे जचना ॥ नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऔ ॥८॥१॥७॥

मारू महला ५ ॥ बिरखै हेठि सभि जंत इिकठे ॥ इिकि तते इिकि बोलनि मिठे ॥ असतु उदोतु भइिआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥१॥ पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥ अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥

दोजकि पाइे सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ ॥२॥ संगि न कोई भईआ बेबा ॥ मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा ॥ करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ ॥३॥ खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥ वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ दुनीआ लबि पइिआ खात अंदरि अगली गल न जाणीआ ॥४॥ जमि जमि मरै मरै फिरि जंमै ॥ बहुतु सजाइि पइिआ देसि लम्मै ॥ जिनि कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥५॥ खालक थावहु भुला मुठा ॥ दुनीआ खेलु बुरा रुठ तुठा ॥ सिदकु सबूरी संतु न मिलिए वतै आपण भाणीआ ॥६॥ मउला खेल करे सभि आपे ॥ इिकि कढे इिकि लहरि विआपे ॥ जिउ नचाइे तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत विहाणीआ ॥ ७॥ मिहर करे ता खसमु धिआई ॥ संता संगति नरकि न पाई ॥ अंमृत नाम दानु नानक कउ गुण गीता नित वखाणीआ ॥८॥२॥८॥१२॥२०॥

मारू सोलहे महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥ जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥१॥ आपि उपाइे आपि खपाइे ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइे ॥ आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि लाई हे ॥२॥ आपे दाना आपे बीना ॥ आपे आपु उपाइि पतीना ॥ आपे पउणु पाणी बैसंतरु आपे मेलि मिलाई हे ॥३॥ आपे ससि सूरा पूरो पूरा ॥ आपे गिआनि धिआनि गुरु सूरा ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचे सिउ लिव लाई हे ॥४॥ आपे पुरखु आपे ही नारी ॥ आपे पासा आपे सारी ॥ आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे कीमति पाई हे ॥५॥ आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ आपे जलु थलु सागरु सरवरु ॥ आपे मछु कछु करणीकरु तेरा रूपु न लखणा जाई हे ॥६॥ आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ आपि पतीजै गुर की बैणी ॥ आदि जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजाई हे ॥७॥ आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ आपे परखे पूरा तोलो ॥

आपे किस ही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥८॥ आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ आपे सुघड़ु सरूपु सिआणा ॥ कहता बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥६॥ पउणु गुरू पाणी पित जाता ॥ उदर संजोगी धरती माता ॥ रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥१०॥ आपे मछुली आपे जाला ॥ आपे गऊ आपे रखवाला ॥ सरब जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥११॥ आपे जोगी आपे भोगी ॥ आपे रसीआ परम संजोगी ॥ आपे वेबाणी निरंकारी निरभउ ताड़ी लाई हे ॥१२॥ खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई हे ॥१३॥ सबदु बुझाइे सतिगुरु पूरा ॥ सरब कला साचे भरपूरा ॥ अफरिए वेपरवाहु सदा तू ना तिसु तिलु न तमाई हे ॥१४॥ कालु बिकालु भइे देवाने ॥ सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ आपे मुकति तृपति वरदाता भगति भाइ मनि भाई हे ॥१५॥ आपि निरालमु गुर गम गिआना ॥ जो दीसै तुझ माहि समाना ॥ नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥१६॥१॥ मारू महला १ ॥ आपे धरती धउलु अकासं ॥ आपे साचे गुण परगासं ॥ जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे ॥१॥ जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ कोइि न मेटै साचे लेखै ॥ आपे करे कराइे आपे आपे दे वडिआई हे ॥२॥ पंच चोर चंचल चितु चालहि ॥ पर घर जोहहि घरु नही भालहि ॥ काइिआ नगरु ढहै ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥३॥ गुर ते बूझै तृभवणु सूझै ॥ मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥४॥ आपे सुरगु मछु पइिआला ॥ आपे जोति सरूपी बाला ॥ जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥५॥ बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ सगले सैल उपाइि समाइे अलखु न लखणा जाई हे ॥६॥ करि करि थाकी मीत घनेरे ॥ कोइि न काटै अवगुण मेरे ॥ सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइि मिलै भउ जाई हे ॥७॥ भूले चूके मारगि पावहि ॥ आपि भुलाइि तूहै समझावहि ॥ बिनु नावै मै अवरु न दीसै

नावहु गति मिति पाई हे ॥८॥ गंगा जमुना केल केदारा ॥ कासी काँती पुरी दुआरा ॥ गंगा सागरु बेणी संगमु अठसठि अंकि समाई हे ॥९॥ आपे सिध साधिकु वीचारी ॥ आपे राजनु पंचा कारी ॥ तखति बहै अदली प्रभु आपे भरमु भेदु भउ जाई हे ॥१०॥ आपे काजी आपे मुला ॥ आपि अभुलु न कबहू भुला ॥ आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को बैराई हे ॥११॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ सभसै दाता तिलु न तमाई ॥ भरपुरि धारि रहिआ निहकेवलु गुपतु प्रगटु सभ ठाई हे ॥१२॥ किआ सालाही अगम अपारै ॥ साचे सिरजणहार मुरारै ॥ जिस नो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥१३॥ ब्रहमा बिसनु महेसु दुआरै ॥ ऊभे सेवहि अलख अपारै ॥ होर केती दरि दीसै बिललादी मै गणत न आवै काई हे ॥१४॥ साची कीरति साची बाणी ॥ होर न दीसै बेद पुराणी ॥ पूंजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥१५॥ जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥ कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥ नानकु नीचु कहै बेन्नती दरि देखहु लिव लाई हे ॥१६॥२॥ मारू महला १ ॥ दूजी दुरमति अन्नी बोली ॥ काम क्रोध की कची चोली ॥ घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद न पाई हे ॥१॥ अंतरि अगनि जलै भड़कारे ॥ मनमुखु तके कुंडा चारे ॥ बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईऐ साचे हाथि वडाई हे ॥२॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ गिआन खड़गु लै मन सिउ लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥३॥ मा की रकतु पिता बिदु धारा ॥ मूरति सूरति करि आपारा ॥ जोति दाति जेती सभ तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥४॥ तुझ ही कीआ जंमण मरणा ॥ गुर ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ तू दइआलु दइआ करि देखहि दुखु दरदु सरीरहु जाई हे ॥५॥ निज घरि बैसि रहे भउ खाइिआ ॥ धावत राखे ठाकि रहाइिआ ॥ कमल बिगास हरे सर सुभर आतम रामु सखाई हे ॥६॥ मरणु लिखाइि मंडल महि आइे ॥ किउ रहीऐ चलणा परथाइे ॥ सचा अमरु सचे अमरा पुरि सो सचु मिलै वडाई हे ॥७॥ आपि उपाइिआ जगतु सबाइिआ ॥ जिनि सिरिआ

तिनि धंधै लाइिआ ॥ सचै ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई हे ॥८॥ ऐथै गोइिलड़ा दिन चारे ॥ खेलु तमासा धुंधूकारे ॥ बाजी खेलि गइे बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥९॥ तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥ निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥ खंडी ब्रहमंडी पाताली पुरीई तृभवण ताड़ी लाई हे ॥१०॥ साची नगरी तखतु सचावा ॥ गुरमुखि साचु मिलै सुखु पावा ॥ साचे साचै तखति वडाई हउमै गणत गवाई हे ॥११॥ गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ किउ सुखु पावै दूऐ तीऐ ॥ निरमलु इेकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥१२॥ जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ साचा रवि रहिआ मनु राता ॥ तिस की एट गही सुखु पाइिआ मनि तनि मैलु न काई हे ॥१३॥ जीभ रसाइिणि साचै राती ॥ हरि प्रभु संगी भउ न भराती ॥ स्रवण स्रोत रजे गुरबाणी जोती जोति मिलाई हे ॥१४॥ रखि रखि पैर धरे पउ धरणा ॥ जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ दुखु सुखु देहि तूहै मनि भावहि तुझ ही सिउ बणि आई हे ॥१५॥ अंत कालि को बेली नाही ॥ गुरमुखि जाता तुधु सालाही ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥१६॥३॥ मारू महला १ ॥ आदि जुगादी अपर अपारे ॥ आदि निरंजन खसम हमारे ॥ साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताड़ी लाई हे ॥१॥ केतड़िआ जुग धुंधूकारै ॥ ताड़ी लाई सिरजणहारै ॥ सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥२॥ सतजुगि सतु संतोखु सरीरा ॥ सति सति वरतै गहिर गंभीरा ॥ सचा साहिबु सचु परखै साचै हुकमि चलाई हे ॥३॥ सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥ गुर का सबदु मने सो सूरा ॥ साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥४॥ सतजुगि साचु कहै सभु कोई ॥ सचि वरतै साचा सोई ॥ मनि मुखि साचु भरम भउ भंजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥५॥ त्रेतै धरम कला इिक चूकी ॥ तीनि चरण इिक दुबिधा सूकी ॥ गुरमुखि होवै सु साचु वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥६॥ मनमुखि कदे न दरगह सीझै ॥ बिनु सबदै किउ अंतरु रीझै ॥ बाधे आवहि बाधे जावहि सोझी बूझ न काई हे ॥७॥ दइिआ दुआपुरि अधी होई ॥

गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु तिथाई हे ॥८॥ राजे धरमु करहि परथाइे ॥ आसा बंधे दानु कराइे ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई थाके करम कमाई हे ॥९॥ करम धरम करि मुकति मंगाही ॥ मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥ बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥१०॥ माइिआ ममता छोडी न जाई ॥ से छूटे सचु कार कमाई ॥ अहिनिसि भगति रते वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥११॥ इिकि जप तप करि करि तीरथ नावहि ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि ॥ हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥१२॥ कली काल महि इिक कल राखी ॥ बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा बिनु सतिगुर भरमु न जाई हे ॥१३॥ सतिगुरु वेपरवाहु सिरंदा ॥ ना जम काणि न छंदा बंदा ॥ जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु संताई हे ॥१४॥ गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ गुरमुखि कोटि असंख उधारे ॥ सरब जीआ जगजीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे ॥१५॥ सगले जाचहि गुर भंडारी ॥ आपि निरंजनु अलख अपारी ॥ नानकु साचु कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥१६॥ ४॥ मारू महला १ ॥ साचै मेले सबदि मिलाइे ॥ जा तिसु भाणा सहजि समाइे ॥ त्रिभवण जोति धरी परमेसरि अवरु न दूजा भाई हे ॥१॥ जिस के चाकर तिस की सेवा ॥ सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ भगता का गुणकारी करता बखसि लइे वडिआई हे ॥२॥ देदे तोटि न आवै साचे ॥ लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै भरमि भुलाई हे ॥३॥ गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ साचे की लिव गुरमति जाती ॥ मनमुख सोइि रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे ॥४॥ कूड़े आवै कूड़े जावै ॥ कूड़े राती कूड़ु कमावै ॥ सबदि मिले से दरगह पैधे गुरमुखि सुरति समाई हे ॥५॥ कूड़ि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ जिउ वाड़ी एजाड़ि उजाड़ी ॥ नाम बिना किछु सादि न लागै हरि बिसरिऐ दुखु पाई हे ॥६॥ भोजनु साचु मिलै आघाई ॥ नाम रतनु साची वडिआई ॥ चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति

मिलाई हे ॥७॥ नावहु भुली चोटा खाइे ॥ बहुतु सिआणप भरमु न जाइे ॥ पचि पचि मुइे अचेत न चेतहि अजगरि भारि लदाई हे ॥८॥ बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ मै देखालिहु तिसु सालाही ॥ मनु तनु अरपि मिलै जगजीवनु हरि सिउ बणत बणाई हे ॥९॥ प्रभ की गति मिति कोइि न पावै ॥ जे को वडा कहाइि वडाई खावै ॥ साचे साहिब तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥१०॥ वडी वडिआई वेपरवाहे ॥ आपि उपाइे दानु समाहे ॥ आपि दइिआलु दूरि नही दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥११॥ इिकि सोगी इिकि रोगि विआपे ॥ जो किछु करे सु आपे आपे ॥ भगति भाउ गुर की मति पूरी अनहदि सबदि लखाई हे ॥१२॥ इिकि नागे भूखे भवहि भवाइे ॥ इिकि हठु करि मरहि न कीमति पाइे ॥ गति अविगत की सार न जाणै बूझै सबदु कमाई हे ॥१३॥ इिकि तीरथि नावहि अन्नु न खावहि ॥ इिकि अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई कितु बिधि पारि लम्घाई हे ॥१४॥ गुरमति छोडहि उझड़ि जाई ॥ मनमुखि रामु न जपै अवाई ॥ पचि पचि बूडहि कूड़ु कमावहि कूड़ि कालु बैराई हे ॥१५॥ हुकमे आवै हुकमे जावै ॥ बूझै हुकमु सो साचि समावै ॥ नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥१६॥५॥ मारू महला १ ॥ आपे करता पुरखु बिधाता ॥ जिनि आपे आपि उपाइि पछाता ॥ आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे सृसटि उपाई हे ॥१॥ आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ तिन की संगति अहिनिसि लाहा गुर संगति इेह वडाई हे ॥२॥ जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ उसतति करहि परहरि दुखु दालदु जिन नाही चिंत पराई हे ॥३॥ एइि जागत रहहि न सूते दीसहि ॥ संगति कुल तारे साचु परीसहि ॥ कलिमल मैलु नाही ते निरमल एइि रहहि भगति लिव लाई हे ॥४॥ बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ॥ इेहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥ आजु कालि मरि जाईऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥५॥ छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥ कूड़ु मारे कालु उछाहाड़ा ॥ साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै

दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥६॥ छोडिहु निंदा ताति पराई ॥ पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥ मिलि सतसंगति नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे ॥७॥ छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥ हउमै धंधु छोडहु लम्पटाई ॥ सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥८॥ आगै बिमल नदी अगनि बिखु झेला ॥ तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ भड़ भड़ अगनि सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुख ताई हे ॥६॥ गुर पहि मुकति दानु दे भाणै ॥ जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ जिन पाइआ तिन पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे ॥१०॥ गुर बिनु उरझि मरहि बेकारा ॥ जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ बाधे मुकति नाही नर निंदक डूबहि निंद पराई हे ॥११॥ बोलहु साचु पछाणहु अंदरि ॥ दूरि नाही देखहु करि न्नदरि ॥ बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ भवजलु पारि लम्घाई हे ॥ १२॥ देही अंदरि नामु निवासी ॥ आपे करता है अबिनासी ॥ ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै सबदि रजाई हे ॥१३॥ एहु निरमलु है नाही अंधिआरा ॥ एहु आपे तखति बहै सचिआरा ॥ साकत कूड़े बंधि भवाईअहि मरि जनमहि आई जाई हे ॥१४॥ गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥ एइि बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ॥ ततु लहहि अंतरगति जाणहि सतसंगति साचु वडाई हे ॥१५॥ आपि तरै जनु पितरा तारे ॥ संगति मुकति सु पारि उतारे ॥ नानकु तिस का लाला गोला जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥१६॥६॥ मारू महला १ ॥ केते जुग वरते गुबारै ॥ ताड़ी लाई अपर अपारै ॥ धुंधूकारि निरालमु बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥१॥ जुग छतीह तिनै वरताइे ॥ जिउ तिसु भाणा तिवै चलाइे ॥ तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥२॥ गुपते बूझहु जुग चतुआरे ॥ घटि घटि वरतै उदर मझारे ॥ जुगु जुगु इेका इेकी वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥३॥ बिंदु रकतु मिलि पिंडु सरीआ ॥ पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ आपे चोज करे रंग महली होर माइिआ मोह पसारा हे ॥४॥ गरभ कुंडल महि उरध धिआनी ॥ आपे जाणै अंतरजामी ॥ सासि

सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥५॥ चारि पदारथ लै जगि आइआ ॥ सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ इेकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥६॥ बालकु मरै बालक की लीला ॥ कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥७॥ भरि जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ माइिआ कारणि रोइि विगूचहि ध्रिगु जीवणु संसारा हे ॥८॥ काली हू फुनि धउले आइे ॥ विणु नावै गथु गइिआ गवाइे ॥ दुरमति अंधुला बिनसि बिनासै मूठे रोइि पूकारा हे ॥९॥ आपु वीचारि न रोवै कोई ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥१०॥ बिरधि भइिआ तनु छीजै देही ॥ रामु न जपई अंति सनेही ॥ नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥११॥ नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ साहुरड़ै घरि वासु न पाइे पेईअड़ै सिरि मारा हे ॥१२॥ खाजै पैझै रली करीजै ॥ बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥१३॥ परविरती नरविरति पछाणै ॥ गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ किस ही मंदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥१४॥ साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ साच सबदि पैझै पति होई ॥ आपे बखसि लइे तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥१५॥ गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥ नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥१६॥१॥७॥ मारू महला १ ॥ हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ सरब जीआ प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥१॥ गुरु सरवरु हम ह्मस पिआरे ॥ सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥ मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥२॥ हरि अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ हरि अंतु न पाईऐ गुर गोपाला ॥ सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लइे रंगि लीना हे ॥३॥ सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ एहु आदि जुगादी राम सनेही ॥ दरगह मुकति करे

करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥४॥ सतिगुरु दाता मुकति कराइे ॥ सभि रोग गवाइे अंमृत रसु पाइे ॥ जमु जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥५॥ काइआ हंस प्रीति बहु धारी ॥ एहु जोगी पुरखु एह सुंदरि नारी ॥ अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥६॥ सृसटि उपाइि रहे प्रभ छाजै ॥ पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ मनूआ डोलै दूत संगति मिलि सो पाइे जो किछु कीना हे ॥७॥ नामु विसारि दोख दुख सहीऐ ॥ हुकमु भइिआ चलणा किउ रहीऐ ॥ नरक कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥८॥ चउरासीह नरक साकतु भोगाईऐ ॥ जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥९॥ खंडे धार गली अति भीड़ी ॥ लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ॥१०॥ मीत सखे केते जग माही ॥ बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइिणि अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥११॥ कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥ जो इिछहु सोई फलु पावहु ॥ साच वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना हे ॥१२॥ हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ दरसनु पावहु सहजि महलहु ॥ गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे इिउ समदरसी चीना हे ॥१३॥ प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥ गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु इिउ आतम रामै लीना हे ॥१४॥ नारद सारद सेवक तेरे ॥ तृभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ सभ तेरी कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥१५॥ इिकि दरि सेवहि दरदु वञाइे ॥ एइि दरगह पैधे सतिगुरू छडाइे ॥ हउमै बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥१६॥ सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ हउमै मारि करहु गुर सेवा जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥१७॥२॥८॥ मारू महला १ ॥ असुर सघारण रामु हमारा ॥ घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ नाले अलखु न लखीऐ मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥१॥ गुरमुखि

साधू सरणि तुमारी ॥ करि किरपा प्रभि पारि उतारी ॥ अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारि उतारा हे ॥२॥ मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ आवहि जाहि मरहि मरि जाही ॥ पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई जम दरि अंधु खुआरा हे ॥३॥ इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ किरत के बाधे पाप कमावहि ॥ अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे ॥४॥ पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ पर पिर राती खसमु विसारा ॥ जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा हे ॥५॥ प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ नरकि पचहि अगिआन अंधेरे ॥ धरम राइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥६॥ सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ अपतु पसू मनमुखु बेताला ॥ आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥७॥ मसतकि भारु कलर सिरि भारा ॥ किउ करि भवजलु लम्घसि पारा ॥ सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥८॥ पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा ॥ माइिआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ जम के फाहे सतिगुरि तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे ॥९॥ कूड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ अंमृत नामु गुरू वड दाणा नामु जपहु सुख सारा हे ॥१०॥ सतिगुरु तुठा सचु दृड़ाइे ॥ सभि दुख मेटे मारगि पाइे ॥ कंडा पाइि न गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥११॥ खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥१२॥ माइिआ बिखु भुइिअंगम नाले ॥ इिनि दुबिधा घर बहुते गाले ॥ सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥१३॥ साकत माइिआ कउ बहु धावहि ॥ नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥ तृहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे ॥१४॥ कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥ मनि तनि झूठे कूड़ु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥१५॥ सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ राम नामु दे सरणि परेकै ॥ हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥१६॥

राम नामु साधू सरणाई ॥ सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥१७॥३॥६॥ मारू महला १ ॥ घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ रामु जपहु अंतरगति धिआने ॥ लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥१॥ जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े इहु परम ततु वीचारा हे ॥२॥ हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ अहिनिसि राम रहहु रंगि राते इहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥३॥ राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥ गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥४॥ सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥ ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥ अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥५॥ सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा ॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाइे तिसु चूका जम भै भारा हे ॥६॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥७॥ सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥८॥ साकत कूड़ कपट महि टेका ॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका ॥ बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥९॥ साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डंडु न कबहू मूकै ॥ बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिए भारु अफारा हे ॥१०॥ बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥ बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥११॥ गुर की दाति न मेटै कोई ॥ जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥१२॥ गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे ॥१३॥ सुखु दुखु पुरब जनम के कीइे ॥ सो जाणै जिनि दातै दीइे ॥ किस कउ दोसु देहि तू प्राणी

सहु अपणा कीआ करारा हे ॥१४॥ हउमै ममता करदा आइआ ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥ मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥१५॥ हरि की भगति करहु जन भाई ॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥१६॥ हरि गुर पूरे की एट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥१७॥४॥१०॥ मारू महला १ ॥ सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥ तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥१॥ तू आदि जुगादि करहि प्रतिपाला ॥ घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥२॥ अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥३॥ जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥४॥ चारि नदी अगनी असराला ॥ कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ साकत दुरमति डूबहि दाझहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥५॥ अपु तेजु वाइ पृथमी आकासा ॥ तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि माइआ हउमै भ्राता हे ॥६॥ इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ अंतरि चोरु मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥७॥ दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ खिंचोताणि करहि बेताले ॥ सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥८॥ कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥९॥ जम दरि बाधे मिलहि सजाई ॥ तिसु अपराधी गति नही काई ॥ करण पलाव करे बिललावै जिउ कुंडी मीनु पराता हे ॥१०॥ साकतु फासी पड़ै इकेला ॥ जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता हे ॥११॥ सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ ऐथै एथै राखा प्रभु सोई ॥ राम नामु देवै करि किरपा

इउ सललै सलल मिलाता हे ॥१२॥ भूले सिख गुरू समझाइे ॥ उझड़ि जादे मारगि पाइे ॥ तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती दुख भंजन संगि सखाता हे ॥१३॥ गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ ब्रहमै इंदृ महेसि न जाणी ॥ सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥१४॥ अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ अहिनिसि निरमल जोति सबाई घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥१५॥ भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ जिनि चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥ दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥१६॥ सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ तिन घट घट अंतरि ब्रहमु पछाना ॥ नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥१७॥५॥११॥ मारू महला १ ॥ साचे साहिब सिरजणहारे ॥ जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ आपे करता करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥१॥ वेकी वेकी जंत उपाइे ॥ दुइि पंदी दुइि राह चलाइे ॥ गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे ॥२॥ पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ लै कै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥३॥ सिमृति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ विणु गुर पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु राहा हे ॥४॥ सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ आपे दाना सचु पराखै ॥ जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥५॥ सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ जा कउ अलखु लखाइे आपे अकथ कथा बुधि ताहा हे ॥६॥ जनमे कउ वाजहि वाधाइे ॥ सोहिलड़े अगिआनी गाइे ॥ जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पइिआ सिरि साहा हे ॥७॥ संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीइे ॥ सृसटि उपाइि दुखा सुख दीइे ॥ दुख सुख ही ते भइे निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥८॥ नीके साचे के वापारी ॥ सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि सचै एमाहा हे ॥९॥ काची सउदी तोटा आवै ॥ गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ पूंजी साबतु रासि सलामति

चूका जम का फाहा हे ॥१०॥ सभु को बोलै आपण भाणै ॥ मनमुखु दूजै बोलि न जाणै ॥ अंधुले की मति अंधली बोली आइि गइिआ दुखु ताहा हे ॥११॥ दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ दूखु न मिटै बिनु गुर की सरणा ॥ दूखी उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइिआ किआ लै जाहा हे ॥१२॥ सची करणी गुर की सिरकारा ॥ आवणु जाणु नही जम धारा ॥ डाल छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा एमाहा हे ॥१३॥ हरि के लोग नही जमु मारै ॥ ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥ राम नामु घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा काहा हे ॥१४॥ एड़ु न कथनै सिफति सजाई ॥ जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ दरगह पैधे जानि सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥१५॥ किआ कहीऐ गुण कथहि घनेरे ॥ अंतु न पावहि वडे वडेरे ॥ नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा पातिसाहा हे ॥१६॥६॥१२॥ मारू महला १ दखणी ॥ काइिआ नगरु नगर गड़ अंदरि ॥ साचा वासा पुरि गगन्नदरि ॥ असथिरु थानु सदा निरमाइिलु आपे आपु उपाइिदा ॥१॥ अंदरि कोट छजे हटनाले ॥ आपे लेवै वसतु समाले ॥ बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै गुर सबदी खोलाइिदा ॥२॥ भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥ नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइिदा ॥३॥ पउण पाणी अगनी इिक वासा ॥ आपे कीतो खेलु तमासा ॥ बलदी जलि निवरै किरपा ते आपे जल निधि पाइिदा ॥४॥ धरति उपाइि धरी धरम साला ॥ उतपति परलउ आपि निराला ॥ पवणै खेलु कीआ सभ थाई कला खिंचि ढाहाइिदा ॥५॥ भार अठारह मालणि तेरी ॥ चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ चंदु सूरजु दुइि दीपक राखे ससि घरि सूरु समाइिदा ॥६॥ पंखी पंच उडरि नही धावहि ॥ सफलिए बिरखु अंमृत फलु पावहि ॥ गुरमुखि सहजि रवै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइिदा ॥७॥ झिलमिलि झिलकै चंदु न तारा ॥ सूरज किरणि न बिजुलि गैणारा ॥ अकथी कथउ चिहनु नही कोई पूरि रहिआ मनि भाइिदा ॥८॥ पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ करि करि देखै आपि दइिआला ॥ अनहद रुण झुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि

वाइिदा ॥९॥ अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजै ॥ सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण गाइिदा ॥१०॥ आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ इेकंकारु वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइिदा ॥११॥ अंमृतु पीआ सतिगुरि दीआ ॥ अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ इेको इेकु सु अपर परंपरु परखि खजानै पाइिदा ॥१२॥ गिआनु धिआनु सचु गहिर गंभीरा ॥ कोइि न जाणै तेरा चीरा ॥ जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइिदा ॥१३॥ करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ तू दइिआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइिदा ॥१४॥ आपे देखि दिखावै आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि जीवाइिदा ॥१५॥ जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ देखहि आपि बैसि बिज मंदरि ॥ नानकु साचु कहै बेन्नती हरि दरसनि सुखु पाइिदा ॥१६॥१॥१३॥ मारू महला १ ॥ दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ भाइि भगति साचे गुण गावा ॥ तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन रसाइिदा ॥१॥ सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ मुकतु भइे हरि दास तुमारे ॥ आपु गवाइि तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइिदा ॥२॥ ईसरु ब्रहमा देवी देवा ॥ इिंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ जती सती केते बनवासी अंतु न कोई पाइिदा ॥३॥ विणु जाणाइे कोइि न जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ लख चउरासीह जीअ उपाइे भाणै साह लवाइिदा ॥४॥ जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ मनमुखु आपु गणाइे रोवै ॥ नावहु भुला ठउर न पाइे आइि जाइि दुखु पाइिदा ॥५॥ निरमल काइिआ ऊजल हसा ॥ तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥ सगले दूख अंमृतु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइिदा ॥६॥ बहु सादहु दूखु परापति होवै ॥ भोगहु रोग सु अंति विगोवै ॥ हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइिदा ॥७॥ गिआन विहूणी भवै सबाई ॥ साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती जोति मिलाइिदा ॥८॥ अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ खिन महि ढाहि फेरि उसारे ॥ रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि

भेदि पतीआइदा ॥९॥ हम दासन के दास पिआरे ॥ साधिक साच भले वीचारे ॥ मन्ने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु दृड़ाइदा ॥१०॥ पलै साचु सचे सचिआरा ॥ साचे भावै सबदु पिआरा ॥ तृभवणि साचु कला धरि थापी साचे ही पतीआइदा ॥११॥ वडा वडा आखै सभु कोई ॥ गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ साचि मिलै सो साचे भाइे ना वीछुड़ि दुखु पाइदा ॥१२॥ धुरहु विछुन्ने धाही रुन्ने ॥ मरि मरि जनमहि मुहलति पुन्ने ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न पछोताइदा ॥१३॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे तृपता आपे मुकता ॥ आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥१४॥ दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ करण कारण समरथु अपारा ॥ करि करि वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥१५॥ से गुण गावहि साचे भावहि ॥ तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ नानकु साचु कहै बेन्नती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१६॥२॥१४॥ मारू महला १ ॥ अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुन्न समाधि लगाइदा ॥१॥ खाणी न बाणी पउण न पाणी ॥ एपति खपति न आवण जाणी ॥ खंड पताल सपत नही सागर नदी न नीरु वहाइदा ॥२॥ ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ नरकु सुरगु नही जंमणु मरणा ना को आइि न जाइदा ॥३॥ ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ॥ अवरु न दीसै इेको सोई ॥ नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥४॥ ना तदि जती सती बनवासी ॥ ना तदि सिध साधिक सुखवासी ॥ जोगी जंगम भेखु न कोई ना को नाथु कहाइदा ॥५॥ जप तप संजम ना ब्रत पूजा ॥ ना को आखि वखाणै दूजा ॥ आपे आपि उपाइि विगसै आपे कीमति पाइदा ॥६॥ ना सुचि संजमु तुलसी माला ॥ गोपी कानु न गऊ गोआला ॥ तंतु मंतु पाखंडु न कोई ना को वंसु वजाइदा ॥७॥ करम धरम नही माइिआ माखी ॥ जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ ममता जालु कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा ॥८॥ निंदु बिंदु नही जीउ न जिंदो ॥ ना तदि गोरखु ना माछिंदो ॥ ना तदि

गिआनु धिआनु कुल एपति ना को गणत गणाइदा ॥९॥ वरन भेख नही ब्रहमण खत्री ॥ देउ न देहुरा गऊ गाइत्री ॥ होम जग नही तीरथि नावणु ना को पूजा लाइदा ॥१०॥ ना को मुला ना को काजी ॥ ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥ रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना को कहणु कहाइदा ॥११॥ भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ आपे साहु आपे वणजारा साचे इेहो भाइदा ॥१२॥ बेद कतेब न सिंमृति सासत ॥ पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ कहता बकता आपि अगोचरु आपे अलखु लखाइदा ॥१३॥ जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइे माइआ मोहु वधाइदा ॥१४॥ विरले कउ गुरि सबदु सुणाइआ ॥ करि करि देखै हुकमु सबाइआ ॥ खंड ब्रहमंड पाताल अरंभे गुपतहु परगटी आइदा ॥१५॥ ता का अंतु न जाणै कोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ नानक साचि रते बिसमादी बिसम भइे गुण गाइदा ॥१६॥३॥१५॥ मारू महला १ ॥ आपे आपु उपाइि निराला ॥ साचा थानु कीए दइिआला ॥ पउण पाणी अगनी का बंधनु काइिआ कोटु रचाइदा ॥१॥ नउ घर थापे थापणहारै ॥ दसवै वासा अलख अपारै ॥ साइिर सपत भरे जलि निरमलि गुरमुखि मैलु न लाइदा ॥२॥ रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ आपे करि वेखै वडिआई ॥ जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥३॥ गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥ आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥४॥ कीमति पाई पावणहारै ॥ वेपरवाह पूरे भंडारै ॥ सरब कला ले आपे रहिआ गुरमुखि किसै बुझाइदा ॥५॥ नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ जम जंदारु न मारै फेटै ॥ जिउ जल अंतरि कमलु बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥६॥ आपे वरखै अंमृत धारा ॥ रतन जवेहर लाल अपारा ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ प्रेम पदारथु पाइदा ॥७॥ प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ कब ही न घाटसि पूरा तोलो ॥ सचे का वापारी होवै सचो सउदा पाइदा ॥८॥ सचा सउदा विरला को पाइे ॥ पूरा सतिगुरु

मिलै मिलाइे ॥ गुरमुखि होइि सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु समाइिदा ॥९॥ हुकमे आइिआ हुकमि समाइिआ ॥ हुकमे दीसै जगतु उपाइिआ ॥ हुकमे सुरगु मछु पइिआला हुकमे कला रहाइिदा ॥१०॥ हुकमे धरती धउल सिरि भारं ॥ हुकमे पउण पाणी गैणारं ॥ हुकमे सिव सकती घरि वासा हुकमे खेल खेलाइिदा ॥११॥ हुकमे आडाणे आगासी ॥ हुकमे जल थल तृभवण वासी ॥ हुकमे सास गिरास सदा फुनि हुकमे देखि दिखाइिदा ॥१२॥ हुकमि उपाइे दस अउतारा ॥ देव दानव अगणत अपारा ॥ मानै हुकमु सु दरगह पैझै साचि मिलाइि समाइिदा ॥१३॥ हुकमे जुग छतीह गुदारे ॥ हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ आपि नाथु नथीं सभ जा की बखसे मुकति कराइिदा ॥१४॥ काइिआ कोटु गड़ै महि राजा ॥ नेब खवास भला दरवाजा ॥ मिथिआ लोभु नाही घरि वासा लबि पापि पछुताइिदा ॥१५॥ सतु संतोखु नगर महि कारी ॥ जतु सतु संजमु सरणि मुरारी ॥ नानक सहजि मिलै जगजीवनु गुर सबदी पति पाइिदा ॥१६॥४॥१६॥ मारू महला १ ॥ सुन्न कला अपरंपरि धारी ॥ आपि निरालमु अपर अपारी ॥ आपे कुदरति करि करि देखै सुन्नहु सुन्नु उपाइिदा ॥१॥ पउणु पाणी सुन्नै ते साजे ॥ सृसटि उपाइि काइिआ गड़ राजे ॥ अगनि पाणी जीउ जोति तुमारी सुन्ने कला रहाइिदा ॥२॥ सुन्नहु ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइे ॥ सुन्ने वरते जुग सबाइे ॥ इिसु पद वीचारे सो जनु पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइिदा ॥३॥ सुन्नहु सपत सरोवर थापे ॥ जिनि साजे वीचारे आपे ॥ तितु सत सरि मनूआ गुरमुखि नावै फिरि बाहुड़ि जोनि न पाइिदा ॥४॥ सुन्नहु चंदु सूरजु गैणारे ॥ तिस की जोति तृभवण सारे ॥ सुन्ने अलख अपार निरालमु सुन्ने ताड़ी लाइिदा ॥५॥ सुन्नहु धरति अकासु उपाइे ॥ बिनु थंमा राखे सचु कल पाइे ॥ तृभवण साजि मेखुली माइिआ आपि उपाइि खपाइिदा ॥६॥ सुन्नहु खाणी सुन्नहु बाणी ॥ सुन्नहु उपजी सुंनि समाणी ॥ उतभुजु चलतु कीआ सिरि करतै बिसमादु सबदि देखाइिदा ॥७॥ सुन्नहु राति दिनसु दुइि कीइे ॥ एपति खपति सुखा दुख दीइे ॥ सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखि

निज घरु पाइदा ॥८॥ साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु ॥ ब्रहमे मुखि माइआ है त्रै गुण ॥ ता की कीमति कहि न सकै को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ॥९॥ सुन्नहु सपत पाताल उपाइे ॥ सुन्नहु भवण रखे लिव लाइे ॥ आपे कारणु कीआ अपरंपरि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥१०॥ रज तम सत कल तेरी छाइआ ॥ जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ जिस नो कृपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै मुकति कराइदा ॥११॥ सुन्नहु उपजे दस अवतारा ॥ सृसटि उपाइि कीआ पासारा ॥ देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ करम कमाइदा ॥१२॥ गुरमुखि समझै रोगु न होई ॥ इहि गुर की पउड़ी जाणै जनु कोई ॥ जुगह जुगंतरि मुकति पराइिण सो मुकति भइिआ पति पाइदा ॥१३॥ पंच ततु सुन्नहु परगासा ॥ देह संजोगी करम अभिआसा ॥ बुरा भला दुइि मसतकि लीखे पापु पुन्नु बीजाइदा ॥१४॥ ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥१५॥ इिसु मन माइिआ कउ नेहु घनेरा ॥ कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा ॥ आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥१६॥ सतिगुर ते पाइे वीचारा ॥ सुन्न समाधि सचे घर बारा ॥ नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥१७॥५॥१७॥ मारू महला १ ॥ जह देखा तह दीन दइिआला ॥ आइि न जाई प्रभु किरपाला ॥ जीआ अंदरि जुगति समाई रहिए निरालमु राइिआ ॥१॥ जगु तिस की छाइिआ जिसु बापु न माइिआ ॥ ना तिसु भैण न भराउ कमाइिआ ॥ ना तिसु एपति खपति कुल जाती एहु अजरावरु मनि भाइिआ ॥२॥ तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ तू पुरखु अलेख अगंम निराला ॥ सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइि लिव लाइिआ ॥३॥ त्रै वरताइि चउथै घरि वासा ॥ काल बिकाल कीइे इिक ग्रासा ॥ निरमल जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइिआ ॥४॥ ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥ हरि रस माते पारि उतारे ॥ नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइिआ ॥५॥ तू अंतरजामी

जीअ सभि तेरे ॥ तू दाता हम सेवक तेरे ॥ अंमृत नामु कृपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइिआ ॥६॥ पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ ॥ आतम राम पाइे सुखु थीआ ॥ करम करतूति अंमृत फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइिआ ॥७॥ ना तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥ सरब निरंजनु घटि घटि जानिआ ॥ अंमृत रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइि सुभाइिआ ॥८॥ अधिआतम करम करे दिनु राती ॥ निरमल जोति निरंतरि जाती ॥ सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइिआ ॥९॥ बेणु रसाल वजावै सोई ॥ जा की तृभवण सोझी होई ॥ नानक बूझहु इह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइिआ ॥१०॥ अैसे जन विरले संसारे ॥ गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइिआ ॥११॥ घरु दरु मंदरु जाणै सोई ॥ जिसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ काइिआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइिआ ॥१२॥ चतुर दस हाट दीवे दुइि साखी ॥ सेवक पंच नाही बिखु चाखी ॥ अंतरि वसतु अनूप निरमोलक गुरि मिलिअै हरि धनु पाइिआ ॥१३॥ तखति बहै तखतै की लाइिक ॥ पंच समाइे गुरमति पाइिक ॥ आदि जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइिआ ॥१४॥ तखति सलामु होवै दिनु राती ॥ इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती ॥ नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइिआ ॥१५॥१॥१८॥ मारू महला १ ॥ हरि धनु संचहु रे जन भाई ॥ सतिगुर सेवि रहहु सरणाई ॥ तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि जगाइिआ ॥१॥ तू इेकंकारु निरालमु राजा ॥ तू आपि सवारहि जन के काजा ॥ अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरि असथिर थानि सुहाइिआ ॥२॥ देही नगरी ऊतम थाना ॥ पंच लोक वसहि परधाना ॥ ऊपरि इेकंकारु निरालमु सुन्न समाधि लगाइिआ ॥३॥ देही नगरी नउ दरवाजे ॥ सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥ दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइिआ ॥४॥ पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ हुकमि चलाइे सचु नीसाना ॥ नानक खोजि लहहु घरु अपना हरि

आतम राम नामु पाइआ ॥५॥ सरब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ अदलु करे गुर गिआन समाना ॥ कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ ॥६॥ सचै थानि वसै निरंकारा ॥ आपि पछाणै सबदु वीचारा ॥ सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ ॥७॥ ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ॥८॥ भउ बैरागा सहजि समाता ॥ हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ अंजनु सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ ॥९॥ दुख भै भंजनु प्रभु अबिनासी ॥ रोग कटे काटी जम फासी ॥ नानक हरि प्रभु सो भउ भंजनु गुरि मिलिऐ हरि प्रभु पाइआ ॥१०॥ कालै कवलु निरंजनु जाणै ॥ बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ आपे जाणै आपि पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥११॥ आपे साहु आपे वणजारा ॥ आपे परखे परखणहारा ॥ आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥१२॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ ॥१३॥ प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ आसा माहि निरालमु जोनी अकुल निरंजनु गाइआ ॥१४॥ हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ नानक हरि जसु हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥१५॥२॥१९॥ मारू महला १ ॥ सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥ जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लम्घाइआ ॥१॥ हउमै ममता लोभ बिनासनु ॥ नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ ऊपरि परै परै अपरंपरु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥२॥ गुरमति लेवहु हरि लिव तरीऐ ॥ अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥३॥ सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥ सचु गुर सबदु जितै लगि तरणा ॥ अकथु कथै देखै अपरंपरु फुनि गरभि न जोनी जाइआ ॥४॥ सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ मूल मंत्र हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा

पाइिआ ॥५॥ सच बिनु भवजलु जाइि न तरिआ ॥ इेहु समुंदु अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ कै घरि पाइिआ ॥६॥ झूठी जग हित की चतुराई ॥ बिलम न लागै आवै जाई ॥ नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै बिनसि खपाइिआ ॥७॥ उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ हउमै माइिआ के गलि फंधे ॥ जिसु राम नामु नाही मति गुरमति सो जम पुरि बंधि चलाइिआ ॥८॥ गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईअै ॥ बिनु गुर राम नामु किउ धिआईअै ॥ गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भइे सुखु पाइिआ ॥९॥ गुरमति कृसनि गोवरधन धारे ॥ गुरमति साइिरि पाहण तारे ॥ गुरमति लेहु परम पदु पाईअै नानक गुरि भरमु चुकाइिआ ॥१०॥ गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ जम के फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरंजनु पाइिआ ॥११॥ गुरमति पंच सखे गुर भाई ॥ गुरमति अगनि निवारि समाई ॥ मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइिआ ॥१२॥ गुरमुखि बूझै सबदि पतीजै ॥ उसतति निंदा किस की कीजै ॥ चीनहु आपु जपहु जगदीसरु हरि जगन्नाथु मनि भाइिआ ॥१३॥ जो ब्रहमंडि खंडि सो जाणहु ॥ गुरमुखि बूझहु सबदि पछाणहु ॥ घटि घटि भोगे भोगणहारा रहै अतीतु सबाइिआ ॥१४॥ गुरमति बोलहु हरि जसु सूचा ॥ गुरमति आखी देखहु ऊचा ॥ स्रवणी नामु सुणै हरि बाणी नानक हरि रंगि रंगाइिआ ॥१५॥३॥२०॥ मारू महला १ ॥ कामु क्रोधु परहरु पर निंदा ॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥ भ्रम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइिआ ॥१॥ निसि दामनि जिउ चमकि चंदाइिणु देखै ॥ अहिनिसि जोति निरंतरि पेखै ॥ आन्नद रूपु अनूपु सरूपा गुरि पूरै देखाइिआ ॥२॥ सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ ससि घरि सूरु दीपकु गैणारे ॥ देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु तृभवणि ब्रहमु सबाइिआ ॥३॥ अंमृत रसु पाइे तृसना भउ जाइे ॥ अनभउ पदु पावै आपु गवाइे ॥ ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल सबदु कमाइिआ ॥४॥ अदृसट अगोचरु नामु अपारा ॥

अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ नानक कउ जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऔ अंतु न पाइआ ॥५॥ अंतरि नामु परापति हीरा ॥ हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ दुघट घट भउ भंजनु पाईऔ बाहुड़ि जनमि न जाइआ ॥६॥ भगति हेति गुर सबदि तरंगा ॥ हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ हरि भावै गुर मेलि मिलाइे हरि तारे जगतु सबाइआ ॥७॥ जिनि जपु जपिए सतिगुर मति वा के ॥ जमकंकर कालु सेवक पग ता के ॥ ऊतम संगति गति मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥८॥ इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऔ ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि जरीऔ ॥ पंच बाण ले जम कउ मारै गगन्नतरि धणखु चड़ाइआ ॥९॥ साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऔ ॥ सबदु सुरति बिनु आईऔ जाईऔ ॥ नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥१०॥ निरभउ सतिगुरु है रखवाला ॥ भगति परापति गुर गोपाला ॥ धुनि अन्नद अनाहदु वाजै गुर सबदि निरंजनु पाइआ ॥११॥ निरभउ सो सिरि नाही लेखा ॥ आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ आपि अतीतु अजोनी संभउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥१२॥ अंतर की गति सतिगुरु जाणै ॥ सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ अंतरु देखि निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥१३॥ निरभउ सो अभ अंतरि वसिआ ॥ अहिनिसि नामि निरंजन रसिआ ॥ नानक हरि जसु संगति पाईऔ हरि सहजे सहजि मिलाइआ ॥१४॥ अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै ॥ रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अंमृत रसु पाइआ ॥१५॥४॥२१॥ मारू महला १ ॥ कुदरति करनैहार अपारा ॥ कीते का नाही किहु चारा ॥ जीअ उपाइि रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥१॥ हुकमु चलाइि रहिआ भरपूरे ॥ किसु नेड़ै किसु आखाँ दूरे ॥ गुपत प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥२॥ जिस कउ मेले सुरति समाइे ॥ गुर सबदी हरि नामु धिआइे ॥ आनद रूप अनूप अगोचर गुर मिलिऔ भरमु जाइआ ॥३॥ मन तन धन ते नामु पिआरा ॥ अंति सखाई चलणवारा ॥

मोह पसार नही संगि बेली बिनु हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥४॥ जिस कउ नदरि करे गुरु पूरा ॥ सबदि मिलाइे गुरमति सूरा ॥ नानक गुर के चरन सरेवहु जिनि भूला मारगि पाइआ ॥५॥ संत जनाँ हरि धनु जसु पिआरा ॥ गुरमति पाइआ नामु तुमारा ॥ जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु गाइआ ॥६॥ सतिगुरु मिलै त महलि बुलाइे ॥ साची दरगह गति पति पाइे ॥ साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥७॥ सेवहु सतिगुर समुंदु अथाहा ॥ पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ बिखिआ मलु जाइि अंमृत सरि नावहु गुर सर संतोखु पाइआ ॥८॥ सतिगुर सेवहु संक न कीजै ॥ आसा माहि निरासु रहीजै ॥ संसा दूख बिनासनु सेवहु फिरि बाहुड़ि रोगु न लाइिआ ॥९॥ साचे भावै तिसु वडीआइे ॥ कउनु सु दूजा तिसु समझाइे ॥ हरि गुर मूरति इेका वरतै नानक हरि गुर भाइिआ ॥१०॥ वाचहि पुसतक वेद पुरानाँ ॥ इिक बहि सुनहि सुनावहि कानाँ ॥ अजगर कपटु कहहु किउ खुलै बिनु सतिगुर ततु न पाइिआ ॥११॥ करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ अंतरि क्रोधु चंडालु सु हउमै ॥ पाखंड कीने जोगु न पाईअै बिनु सतिगुर अलखु न पाइिआ ॥१२॥ तीरथ वरत नेम करहि उदिआना ॥ जतु सतु संजमु कथहि गिआना ॥ राम नाम बिनु किउ सुखु पाईअै बिनु सतिगुर भरमु न जाइिआ ॥१३॥ निउली करम भुइिअंगम भाठी ॥ रेचक कुंभक पूरक मन हाठी ॥ पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइिआ ॥१४॥ कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ गुर सबदी सभु ब्रहमु पछानिआ ॥ नानक आतम रामु सबाइिआ गुर सतिगुर अलखु लखाइिआ ॥१५॥५॥२२॥

मारू सोलहे महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हुकमी सहजे सृसटि उपाई ॥ करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ आपे करे कराइे आपे हुकमे रहिआ समाई हे ॥१॥ माइिआ मोहु जगतु गुबारा ॥ गुरमुखि बूझै को वीचारा ॥ आपे नदरि करे

सो पाइे आपे मेलि मिलाई हे ॥२॥ आपे मेले दे वडिआई ॥ गुर परसादी कीमति पाई ॥ मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइि खुआई हे ॥३॥ हउमै माइिआ विचे पाई ॥ मनमुख भूले पति गवाई ॥ गुरमुखि होवै सो नाइि राचै साचै रहिआ समाई हे ॥४॥ गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइिआ ॥ मनसा मारि मन माहि समाइिआ ॥ आपे खेल करे सभि करता आपे देइि बुझाई हे ॥५॥ सतिगुरु सेवे आपु गवाइे ॥ मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाइे ॥ अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते बणि आई हे ॥६॥ दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ जिस नो लाइे सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥७॥ आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ जरा जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥८॥ तृसना अगनि जलै संसारा ॥ जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ मनमुखु ठउर न पाइे कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥९॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ साचै नामि सदा लिव लागी ॥ अंतरि नामु रविआ निहकेवलु तृसना सबदि बुझाई हे ॥१०॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ सचे सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे ॥११॥ सबदु बुझै सो मैलु चुकाइे ॥ निरमल नामु वसै मनि आइे ॥ सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥१२॥ गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ सतिगुर सेवे की वडिआई तृसना भूख गवाई हे ॥१३॥ आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥१४॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइिआ ॥ कोइि न मेटै धुरि फुरमाइिआ ॥ सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ॥१५॥ अपणी नदरि करे सो पाइे ॥ सचै सबदि ताड़ी चितु लाइे ॥ नानक दासु कहै बेन्नती भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥१६॥१॥ मारू महला ३ ॥ इेको इेकु वरतै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ इेको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥१॥ लख चउरासीह

जीअ उपाइे ॥ गिआनी धिआनी आखि सुणाइे ॥ सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥२॥ माइिआ मोहु अंधु अंधारा ॥ हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु साँति न होई हे ॥३॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥४॥ आपे लाइि लइे सो लागै ॥ गुर परसादी जम का भउ भागै ॥ अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥५॥ आपे मेले मेलि मिलाइे ॥ पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाइे ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥६॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता ॥ आपे आइि मिलिआ सभना का दाता ॥ हउमै मारि तृसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥७॥ काइिआ कुटंबु मोहु न बूझै ॥ गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥८॥ मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ जनमत की न मूए आभागा ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइिआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥९॥ काइिआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥१०॥ पंच दूत काइिआ संघारहि ॥ मरि मरि जंमहि सबदु न वीचारहि ॥ अंतरि माइिआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे ॥११॥ इिकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ सतिगुरु आइि मिलिआ वडभागे ॥ अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥१२॥ गुर की चाल गुरू ते जापै ॥ पूरा सेवकु सबदि सिञापै ॥ सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥१३॥ हउमै मारे सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उरि धारे ॥ इेकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइि सु होई हे ॥१४॥ बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइिआ ॥ गुरमुखि बूझै सचि समाइिआ ॥ सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे ॥१५॥ आपे गुणदाता बीचारी ॥ गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ नानक नामि समावहि साचै साचे ते पति होई हे ॥१६॥२॥ मारू महला ३ ॥ जगजीवनु साचा इेको दाता ॥ गुर

सेवा ते सबदि पछाता ॥ इेको अमरु इेका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥१॥ सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥ आपे आइि मिलिआ सुखदाता ॥ रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति पाई हे ॥२॥ गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ मनमुखि निंदकि पति गवाई ॥ नामि रते परम ह्मस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥३॥ सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ सतिगुरु आखि सुणाइे सूरा ॥ काइिआ अंदरि अंमृत सरु साचा मनु पीवै भाइि सुभाई हे ॥४॥ पड़ि पंडितु अवरा समझाइे ॥ घर जलते की खबरि न पाइे ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईअै पड़ि थाके साँति न आई हे ॥५॥ इिकि भसम लगाइि फिरहि भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥६॥ इिकि गृह कुटंब महि सदा उदासी ॥ सबदि मुइे हरि नामि निवासी ॥ अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइि भगति चितु लाई हे ॥७॥ मनमुखु निंदा करि करि विगुता ॥ अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ जमकालु तिसु कदे न छोडै अंति गइिआ पछुताई हे ॥८॥ सचै सबदि सची पति होई ॥ बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ बिनु सतिगुर को नाउ न पाइे प्रभि अैसी बणत बणाई हे ॥९॥ इिकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ इिकि अहिनिसि नामि रते निरंकारी ॥ जिस नो आपि मिलाइे सो बूझै भगति भाइि भउ जाई हे ॥१०॥ इिसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ इिकि मनूआ मारि मनै सिउ लूझहि ॥ साचै सबदि रते इिक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥११॥ आपे सिरजे दे वडिआई ॥ आपे भाणै देइि मिलाई ॥ आपे नदरि करे मनि वसिआ मेरै प्रभि इिउ फुरमाई हे ॥१२॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ आपे करता करि करि वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥१३॥ जुगि जुगि साचा इेको दाता ॥ पूरै भागि गुर सबदु पछाता ॥ सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥१४॥ हउमै माइिआ मैलु कमाइिआ ॥ मरि मरि जंमहि दूजा भाइिआ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥१५॥

जो तिसु भावै सोई करसी ॥ आपहु होआ ना किछु होसी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति पाई हे ॥१६॥३॥ मारू महला ३ ॥ जो आइआ सो सभु को जासी ॥ दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे ॥१॥ आपे करता करि करि वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अंधु कमाई हे ॥२॥ मनमुख सहसा बूझ न पाई ॥ मरि मरि जंमै जनमु गवाई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥३॥ धंधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ॥ आपे बखसि लइे सुखु पाइे पूरै सबदि मिलाई हे ॥४॥ दुरमति झूठी बुरी बुरिआरि ॥ अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥५॥ अउगणिआरी कंत न भावै ॥ मन की जूठी जूठु कमावै ॥ पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे ॥६॥ दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ सीगारु करे पिर खसम न भावै ॥ गुणवंती सदा पिरु रावै सतिगुरि मेलि मिलाई हे ॥७॥ आपे हुकमु करे सभु वेखै ॥ इकना बखसि लइे धुरि लेखै ॥ अनदिनु नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥८॥ हउमै धातु मोह रसि लाई ॥ गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥९॥ इकि सबदु वीचारि सदा जन जागे ॥ इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ आपे करे कराइे आपे होरु करणा किछू न जाई हे ॥१०॥ कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उर धारे ॥ सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि समाई हे ॥११॥ दूजै भाइ फिरै देवानी ॥ माइआ मोहि दुख माहि समानी ॥ बहुते भेख करै नह पाइे बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे ॥१२॥ किस नो कहीऐ जा आपि कराइे ॥ जितु भावै तितु राहि चलाइे ॥ आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे ॥१३॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे संजमु आपे जुगता ॥ आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिस दा हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥१४॥ से वडभागी जिनी इेको जाता

॥ घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ॥ इक थै गुपतु परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥१५॥ गुरमुखि हरि जीउ इेको जाता ॥ अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ जिसु तू देहि सोई जनु पाइे नानक नामि वडाई हे ॥१६॥४॥ मारू महला ३ ॥ सचु सालाही गहिर गंभीरै ॥ सभु जगु है तिस ही कै चीरै ॥ सभि घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥१॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ आपे आइि वसिआ घट अंतरि तूटी जम की फासी हे ॥२॥ किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ सतिगुरु सेवी सबदि सालाही ॥ सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे ॥३॥ देही काची कागद मिकदारा ॥ बूंद पवै बिनसै ढहत न लागै बारा ॥ कंचन काइिआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥४॥ सचा चउका सुरति की कारा ॥ हरि नामु भोजनु सचु आधारा ॥ सदा तृपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥५॥ हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे ॥ हरि गुण गावहि अनदिनु जागे ॥ साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥६॥ हरि नामु चेता अवरु न पूजा ॥ इेको सेवी अवरु न दूजा ॥ पूरै गुरि सभु सचु दिखाइिआ सचै नामि निवासी हे ॥७॥ भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि आइिआ ॥ आपि भूला जा खसमि भुलाइिआ ॥ हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे ॥८॥ कामि क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ॥ डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु अबिनासी हे ॥९॥ ना कोई करे न करणै जोगा ॥ आपे करहि करावहि सु होइिगा ॥ आपे बखसि लैहि सुखु पाइे सद ही नामि निवासी हे ॥१०॥ इिहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥ सचु धनु जंमिआ तोटि न आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥११॥ हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥ गुरमुखि होवै सो पति पाइे इिकतु नामि निवासी हे ॥१२॥ अंतरि हरि धनु समझ न होई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाइे सद ही नामि निवासी हे ॥१३॥ अनल वाउ भरमि

भुलाई ॥ माइआ मोहि सुधि न काई ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥१४॥ मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ पर निंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥१५॥ आपे करतै कार कराई ॥ आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥१६॥५॥ मारू महला ३ ॥ इेको सेवी सदा थिरु साचा ॥ दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥१॥ तेरे गुण बहुते मै इेकु न जाता ॥ आपे लाइि लइे जगजीवनु दाता ॥ आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इिहु मनु भीजै हे ॥२॥ माइिआ लहरि सबदि निवारी ॥ इिहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥३॥ मेरी मेरी करत विहाणी ॥ मनमुखि न बूझै फिरै इिआणी ॥ जमकालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥४॥ अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ सिर ऊपरि जमकालु न सूझै ॥ अैथै कमाणा सु अगै आइिआ अंतकालि किआ कीजै हे ॥५॥ जो सचि लागे तिन साची सोइि ॥ दूजै लागे मनमुखि रोइि ॥ दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥६॥ गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥ नाम रसाइिणि इिहु मनु मोहै ॥ माइिआ मोह मैलु पतंगु न लागै गुरमती हरि नामि भीजै हे ॥७॥ सभना विचि वरतै इिकु सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइिआ नाइि साचै अंमृतु पीजै हे ॥८॥ किलबिख दूख निवारणहारा ॥ गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥९॥ माइिआ अगनि जलै संसारे ॥ गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ अंतरि सांँति सदा सुखु पाइिआ गुरमती नामु लीजै हे ॥१०॥ इिंद्र इिंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईअै हरि हरि रसना पीजै हे ॥११॥ मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ गुरमुखि भगति सांँति सुखु होई ॥ पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे ॥१२॥ ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी ॥ त्रै गुण

बधक मुकति निरारी ॥ गुरमुखि गिआनु इको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥१३॥ बेद पड़हि हरि नामु न बूझहि ॥ माइिआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि ॥ अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउ करि दुतरु तरीजै हे ॥१४॥ बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ पुन्नु पापु सभु बेदि दृड़ाइिआ गुरमुखि अंमृतु पीजै हे ॥१५॥ आपे साचा इको सोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥१६॥६॥ मारू महला ३ ॥ सचै सचा तखतु रचाइिआ ॥ निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइिआ ॥ सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥१॥ सचा सउदा सचु वापारा ॥ न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥२॥ सचै लाइे से जन लागे ॥ अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥३॥ सचो सचा सचु सालाही ॥ इको वेखा दूजा नाही ॥ गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥४॥ माइिआ मोहु सबदि जलाइिआ ॥ सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइिआ ॥ सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥५॥ माइिआ मोहु सभु आपे कीना ॥ गुरमुखि विरलै किन ही चीना ॥ गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥६॥ कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥ हउमै तृसना सबदि बुझाई ॥ गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे ॥७॥ सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ सचै सबदे सचि सुहावै ॥ ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥८॥ बिनु साचे जो दूजै लाइिआ ॥ माइिआ मोह दुख सबाइिआ ॥ बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइिआ मोह दुखु भारी हे ॥९॥ साचा सबदु जिना मनि भाइिआ ॥ पूरबि लिखिआ तिनी कमाइिआ ॥ सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥१०॥ गुर की सेवा मीठी लागी ॥ अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥११॥ से जन सुखीइे सतिगुरि सचे लाइे ॥ आपे भाणे आपि मिलाइे ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे

होर माइिआ मोह खुआरी हे ॥१२॥ गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥ ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ॥ इेको इेकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥१३॥ हउमै मेरा दूजा भाइिआ ॥ किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइिआ ॥ गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥१४॥ जा तू देहि सदा सुखु पाइे ॥ साचै सबदे साचु कमाइे ॥ अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥१५॥ आपे वेखै हुकमि चलाइे ॥ अपणा भाणा आपि कराइे ॥ नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥१६॥७॥ मारू महला ३ ॥ आपे आपु उपाइि उपन्ना ॥ सभ महि वरतै इेकु परछन्ना ॥ सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥१॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइे ॥ सिरि सिरि धंधै आपे लाइे ॥ जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि इेको जाता हे ॥२॥ आवा गउणु है संसारा ॥ माइिआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का सबदु पछाता हे ॥३॥ इिकि मूलि लगे एनी सुखु पाइिआ ॥ डाली लागे तिनी जनमु गवाइिआ ॥ अंमृत फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अंमृत बाता हे ॥४॥ हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ जिउ भावै तिउ राखहि रहणा गुरमुखि इेको जाता हे ॥५॥ जा तुधु भाणा ता सची कारै लाइे ॥ अवगण छोडि गुण माहि समाइे ॥ गुण महि इेको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥६॥ जह देखा तह इेको सोई ॥ दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ इेकसु महि प्रभु इेकु समाणा अपणै रंगि सद राता हे ॥७॥ काइिआ कमलु है कुमलाणा ॥ मनमुखु सबदु न बुझै इिआणा ॥ गुर परसादी काइिआ खोजे पाइे जगजीवनु दाता हे ॥८॥ कोट गही के पाप निवारे ॥ सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ जो इिछे सोई फलु पाइे जिउ रंगु मजीठै राता हे ॥९॥ मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि इेको जाता हे ॥१०॥ मनमुखु कार करे सभि दुख सबाइे ॥ अंतरि सबदु नाही किउ दरि जाइे ॥ गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे

॥११॥ जह देखा तू सभनी थाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥१२॥ नामे राता पवितु सरीरा ॥ बिनु नावै डूबि मुइे बिनु नीरा ॥ आवहि जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥१३॥ पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ विणु नावै मुकति किनै न पाई ॥ नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥१४॥ काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी ॥ बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि इेको जाता हे ॥१५॥ जिस नो नदरि करे सो पाइे ॥ साचा सबदु वसै मनि आइे ॥ नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु पछाता हे ॥१६॥८॥ मारू सोलहे ३ ॥ आपे करता सभु जिसु करणा ॥ जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥ आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥१॥ हरि के भगति भरे भंडारा ॥ आपे बखसे सबदि वीचारा ॥ जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥२॥ आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ आपे नदरी तोले तोलो ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥३॥ जिस नो नदरि होवै धुरि तेरी ॥ मरै न जंमै चूकै फेरी ॥ साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि इेको जाता हे ॥४॥ माइिआ मोहि सभु जगतु उपाइिआ ॥ ब्रहमा बिसनु देव सबाइिआ ॥ जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता हे ॥५॥ पाप पुन्न वरतै संसारा ॥ हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥ गुरमुखि होवै सो सुखु पाइे जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥६॥ किरतु न कोई मेटणहारा ॥ गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥ पूरबि लिखिआ सो फलु पाइिआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥७॥ माइिआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥ दूजै भाइि घणा दुखु आगै ॥ मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंत कालि पछुताता हे ॥८॥ हरि कै भाणै हरि गुण गाइे ॥ सभि किलबिख काटे दूख सबाइे ॥ हरि निरमलु निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे ॥९॥ जिस नो नदरि करे सो गुण निधि पाइे ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइे ॥ गुण अवगण का इेको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥१०॥ मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा ॥ आपे मेलै गुर सबदि

वीचारा ॥ आपे बखसे सचु दृड़ाइे मनु तनु साचै राता हे ॥११॥ मनु तनु मैला विचि जोति अपारा ॥ गुरमति बूझै करि वीचारा ॥ हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥१२॥ गड़ काइिआ अंदरि बहु हट बाजारा ॥ तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥१३॥ रतनु अमोलकु अगम अपारा ॥ कीमति कवणु करे वेचारा ॥ गुर कै सबदे तोलि तोलाइे अंतरि सबदि पछाता हे ॥१४॥ सिमृति सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ माइिआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥१५॥ आपे करता करे कराइे ॥ सची बाणी सचु दृड़ाइे ॥ नानक नामु मिलै वडिआई जुगि जुगि इेको जाता हे ॥१६॥६॥ मारू महला ३ ॥ सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ सबदे दूख निवारणहारा ॥ अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा हे ॥१॥ आपे सचा सचु वरताइे ॥ इिकि जन साचै आपे लाइे ॥ साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे ॥२॥ धुरि भगता मेले आपि मिलाइे ॥ सची भगती आपे लाइे ॥ साची बाणी सदा गुण गावै इिसु जनमै का लाहा हे ॥३॥ गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ इेकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥४॥ आपे साजे सृसटि उपाइे ॥ विरले कउ गुर सबदु बुझाइे ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा हे ॥५॥ भन्नै घड़े सवारे साजे ॥ माइिआ मोहि दूजै जंत पाजे ॥ मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा गलि फाहा हे ॥६॥ आपे बखसे गुर सेवा लाइे ॥ गुरमती नामु मंनि वसाइे ॥ अनदिनु नामु धिआइे साचा इिसु जग महि नामो लाहा हे ॥७॥ आपे सचा सची नाई ॥ गुरमुखि देवै मंनि वसाई ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा हे ॥८॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ सदा सबदि सालाही गुणदाता लेखा कोइि न मंगै ताहा हे ॥९॥ ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा ॥ अंतु न पावहि अलख अभेवा ॥ जिन कउ नदरि करहि तू अपणी गुरमुखि

अलखु लखाहा हे ॥१०॥ पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ इको नामु मंनि वसाई ॥ नामु जपी तै नामु धिआई महलु पाइि गुण गाहा हे ॥११॥ सेवक सेवहि मंनि हुकमु अपारा ॥ मनमुख हुकमु न जाणहि सारा ॥ हुकमे मन्ने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥१२॥ गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ नामे राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा हे ॥१३॥ सभ जग महि वरतै इको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥१४॥ सदा भगत तेरी सरणाई ॥ अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥१५॥ सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ सचे साहिब तेरै मनि भावा ॥ नानकु साचु कहै बेन्नती सचु देवहु सचि समाहा हे ॥१६॥१॥१०॥ मारू महला ३ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै एमाहा हे ॥१॥ नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि एमाहा हे ॥२॥ कृपा करे ता मेलि मिलाए ॥ हउमै ममता सबदि जलाए ॥ सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि काहा हे ॥३॥ बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥४॥ दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ दूजा भाउ आपि वरताइआ ॥ गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥५॥ से मनमुख जो सबदु न पछाणहि ॥ गुर के भै की सार न जाणहि ॥ भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लइगा साहा हे ॥६॥ अफरिए जमु मारिआ न जाई ॥ गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥७॥ हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ एहु जमु किआ करे विचारा ॥ हुकमी बंदा हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा हे ॥८॥ गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥९॥ गुरमुखि जाता

करमि बिधाता ॥ जुग चारे गुर सबदि पछाता ॥ गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे ॥१०॥ गुरमुखि नामि सबदि सालाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ इेक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा हे ॥११॥ गुरमुखि साँति सदा सुखु पाइे ॥ गुरमुखि हिरदै नामु वसाइे ॥ गुरमुखि होवै सो नामु बूझै काटे दुरमति फाहा हे ॥१२॥ गुरमुखि उपजै साचि समावै ॥ ना मरि जंमै न जूनी पावै ॥ गुरमुखि सदा रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा हे ॥१३॥ गुरमुखि भगत सोहहि दरबारे ॥ सची बाणी सबदि सवारे ॥ अनदिनु गुण गावै दिनु राती सहज सेती घरि जाहा हे ॥१४॥ सतिगुरु पूरा सबदु सुणाइे ॥ अनदिनु भगति करहु लिव लाइे ॥ हरि गुण गावहि सद ही निरमल निरमल गुण पातिसाहा हे ॥१५॥ गुण का दाता सचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥१६॥२॥११॥ मारू महला ३ ॥ हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ तिस दा अंतु न पाईऐ पारावारा ॥ गुर परसादि रविआ घट अंतरि तितु घटि मति अगाहा हे ॥१॥ सभ महि वरतै इेको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु संबाहा हे ॥२॥ पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइिआ ॥ हुकमे ही सभु जगतु उपाइिआ ॥ हुकमु मन्ने सोई सुखु पाइे हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥३॥ सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ तिस दै सबदि निसतरै संसारा ॥ आपे करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे ॥४॥ कोटि मधे किसहि बुझाइे ॥ गुर कै सबदि रते रंगु लाइे ॥ हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा हे ॥५॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ जो मरि जंमहि काचनि काचे ॥ अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा हे ॥६॥ सतिगुरु पूरा साचु दृड़ाइे ॥ सचै सबदि सदा गुण गाइे ॥ गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ॥७॥ सदा हदूरि गुरमुखि जापै ॥ सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै एमाहा हे ॥८॥ अगिआनी अंधा बहु करम दृड़ाइे ॥ मनहठि करम फिरि जोनी

पाइे ॥ बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥९॥ पूरा सतिगुरु भगति दृड़ाइे ॥ गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाइे ॥ मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा हे ॥१०॥ मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥११॥ से भगत सचे तेरै मनि भाइे ॥ दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाइे ॥ साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥१२॥ जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना सिरि तू इेको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥१३॥ बिनु सबदै तुधुनो कोई न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु जपि संबाहा हे ॥१४॥ तू आपे करता सिरजणहारा ॥ तेरा लिखिआ कोइि न मेटणहारा ॥ गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥१५॥ भगत सचे तेरै दरवारे ॥ सबदे सेवनि भाइि पिआरे ॥ नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥१६॥३॥१२॥ मारू महला ३ ॥ मेरै प्रभि साचै इिकु खेलु रचाइिआ ॥ कोइि न किस ही जेहा उपाइिआ ॥ आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥१॥ वाजै पउणु तै आपि वजाइे ॥ सिव सकती देही महि पाइे ॥ गुर परसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥२॥ अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ इेको वरतै अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥३॥ अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥४॥ देही अंदरि वसतु अपारा ॥ आपे कपट खुलावणहारा ॥ गुरमुखि सहजे अंमृतु पीवै तृसना अगनि बुझाहा हे ॥५॥ सभि रस देही अंदरि पाइे ॥ विरले कउ गुरु सबदु बुझाइे ॥ अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥६॥ विणु चाखे सादु किसै न आइिआ ॥ गुर कै सबदि अंमृतु पीआइिआ ॥ अंमृतु पी अमरा पदु होइे गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥७॥ आपु पछाणै सो सभि

गुण जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ अनदिनु नामि रता दिनु राती माइिआ मोहु चुकाहा हे ॥८॥ गुर सेवा ते सभु किछु पाइे ॥ हउमै मेरा आपु गवाइे ॥ आपे कृपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥९॥ गुर का सबदु अंमृत है बाणी ॥ अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ हरि हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥१०॥ सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ सदा रंगि राते हरि गुण गावहि ॥ आपे बखसे सबदि मिलाइे परमल वासु मनि ताहा हे ॥११॥ सबदे अकथु कथे सालाहे ॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ आपे गुणदाता सबदि मिलाइे सबदै का रसु ताहा हे ॥१२॥ मनमुखु भूला ठउर न पाइे ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइे ॥ बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे ॥१३॥ आपे आपि आपि सालाहे ॥ तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे ॥ तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे अलखु अथाहा हे ॥१४॥ बिनु गुर दाते कोइि न पाइे ॥ लख कोटी जे करम कमाइे ॥ गुर किरपा ते घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥१५॥ से जन मिले धुरि आपि मिलाइे ॥ साची बाणी सबदि सुहाइे ॥ नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥१६॥४॥१३॥ मारू महला ३ ॥ निहचलु इेकु सदा सचु सोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ हरि रसि भीने सदा धिआइिनि गुरमति सीलु सन्नाहा हे ॥१॥ अंदरि रंगु सदा सचिआरा ॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइिआ का लाहा हे ॥२॥ रईअति राजे दुरमति दोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे इेकु न होई ॥ इेकु धिआइिनि सदा सुखु पाइिनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥३॥ आवणु जाणा रखै न कोई ॥ जंमणु मरणु तिसै ते होई ॥ गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥४॥ सचु संजमु सतिगुरू दुआरै ॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईअै सीलु संतोखु सभु ताहा हे ॥५॥ हउमै मोहु उपजै संसारा ॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईअै नामु सचा जगि लाहा हे ॥६॥ सचा अमरु सबदि सुहाइिआ ॥ पंच सबद मिलि

वाजा वाइिआ ॥ सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥७॥ खिन महि हसै खिन महि रोवै ॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ संजोगु विजोगु करतै लिखि पाइे किरतु न चलै चलाहा हे ॥८॥ जीवन मुकति गुर सबदु कमाइे ॥ हरि सिउ सद ही रहै समाइे ॥ गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥९॥ रस कस खाइे पिंडु वधाइे ॥ भेख करै गुर सबदु न कमाइे ॥ अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे ॥१०॥ बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि ॥ गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे ॥११॥ घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ मनमुख अंधे सादु न पावहि ॥ अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे ॥१२॥ मनमुख देही भरमु भतारो ॥ दुरमति मरै नित होइि खुआरो ॥ कामि क्रोधि मनु दूजै लाइिआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥१३॥ कंचन देही सबदु भतारो ॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ महला अंदरि गैर महलु पाइे भाणा बुझि समाहा हे ॥१४॥ आपे देवै देवणहारा ॥ तिसु आगै नही किसै का चारा ॥ आपे बखसे सबदि मिलाइे तिस दा सबदु अथाहा हे ॥१५॥ जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥ नानक गुरबाणी हरि पाइिआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥१६॥५॥ १४॥ मारू महला ३ ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ॥ गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइिदा ॥१॥ गुरमुखि मनूआ उलटि परावै ॥ गुरमुखि बाणी नादु वजावै ॥ गुरमुखि सचि रते बैरागी निज घरि वासा पाइिदा ॥२॥ गुर की साखी अंमृत भाखी ॥ सचै सबदे सचु सुभाखी ॥ सदा सचि रंगि राता मनु मेरा सचे सचि समाइिदा ॥३॥ गुरमुखि मनु निरमलु सत सरि नावै ॥ मैलु न लागै सचि समावै ॥ सचो सचु कमावै सद ही सची भगति दृड़ाइिदा ॥४॥ गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥ सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइिदा ॥५॥ गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥ गुरमुखि सद सेवहि

सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥६॥ गुरमुखि होवै सु सोझी पाइे ॥ हउमै माइआ भरमु गवाइे ॥ गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥७॥ गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ गुरमुखि पाइे मोख दुआरु ॥ भाइि भगति सदा रंगि राता आपु गवाइि समाइदा ॥८॥ गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाइे ॥ सचै नामि सदा लिव लाइे ॥ जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥९॥ जा तिसु भावै सतिगुरू मिलाइे ॥ जा तिसु भावै ता मंनि वसाइे ॥ आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि वसाइदा ॥१०॥ मनहठि करम करे सो छीजै ॥ बहुते भेख करे नही भीजै ॥ बिखिआ राते दुखु कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥११॥ गुरमुखि होवै सु सुखु कमाइे ॥ मरण जीवण की सोझी पाइे ॥ मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥१२॥ गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ मरै न जंमै ना दुखु पाइे मन ही मनहि समाइदा ॥१३॥ से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ ॥ हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ आपे करे कराइे आपे ॥ आपे वेखै थापि उथापे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥१५॥ गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥१६॥१॥१५॥ मारू महला ३ ॥ आपे सृसटि हुकमि सभ साजी ॥ आपे थापि उथापि निवाजी ॥ आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥१॥ काइआ कोटु है आकारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥२॥ काइआ कंचन कोटु अपारा ॥ जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥३॥ काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥४॥ सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ सबदे बूझै आपु सवारे ॥ आपे करे कराइे करता आपे मंनि वसाइदा ॥५॥ निरमल भगति है निराली ॥ मनु तनु धोवहि

सबदि वीचारी ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ॥६॥ इसु मन मंदर महि मनूआ धावै ॥ सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु कराइदा ॥७॥ आपि अपरंपरु आपि वीचारी ॥ आपे मेले करणी सारी ॥ किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥८॥ आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ सचै सबदि महाबल सूरा ॥ आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा ॥९॥ घर ही अंदरि साचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥१०॥ दिसंतरु भवै अंतरु नही भाले ॥ माइिआ मोहि बधा जमकाले ॥ जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥११॥ जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥ जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइिआ सचे सचि समाइदा ॥१२॥ काम करोधु सबल संसारा ॥ बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ पउणु पाणी है बैसंतरु ॥ माइिआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइिआ मोहु चुकाइदा ॥१४॥ इकि माइिआ मोहि गरबि विआपे ॥ हउमै होइ रहे है आपे ॥ जमकालै की खबरि न पाई अंति गइिआ पछुताइदा ॥१५॥ जिनि उपाइे सो बिधि जाणै ॥ गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ नानक दासु कहै बेन्नती सचि नामि चितु लाइदा ॥१६॥२॥१६॥ मारू महला ३ ॥ आदि जुगादि दइिआपति दाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥२॥ है भी साचा होसी सोई ॥ आपे साजे अवरु न कोई ॥ सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥३॥ अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ कोइि न जाणै तेरा परवारा ॥ आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥४॥ पाताल पुरीआ लोअ

आकारा ॥ तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥५॥ हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥६॥ अनदिनु आरजा छिजदी जाइे ॥ रैणि दिनसु दुइि साखी आइे ॥ मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥७॥ मनु तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ अंतरि भरमु गइिआ भउ भागा ॥ सदा अन्नदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥८॥ जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ पूरै भागि गुर सबदि पछाता ॥ जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥९॥ मनु कठोरु दूजै भाइि लागा ॥ भरमे भूला फिरै अभागा ॥ करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइिदा ॥१०॥ लख चउरासीह आपि उपाइे ॥ मानस जनमि गुर भगति दृड़ाइे ॥ बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि पाइिदा ॥११॥ करमु होवै गुरु भगति दृड़ाइे ॥ विणु करमा किउ पाइिआ जाइे ॥ आपे करे कराइे करता जिउ भावै तिवै चलाइिदा ॥१२॥ सिमृति सासत अंतु न जाणै ॥ मूरखु अंधा ततु न पछाणै ॥ आपे करे कराइे करता आपे भरमि भुलाइिदा ॥१३॥ सभु किछु आपे आपि कराइे ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइे ॥ आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइिदा ॥१४॥ सचा साहिबु गहिर गंभीरा ॥ सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइिदा ॥१५॥ आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमती मेलि मिलाइिदा ॥१६॥३॥१७॥ मारू महला ३ ॥ जुग छतीह कीए गुबारा ॥ तू आपे जाणहि सिरजणहारा ॥ होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइिदा ॥१॥ एअंकारि सभ सृसटि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ आपे वेक करे सभि साचा आपे भंनि घड़ाइिदा ॥२॥ बाजीगरि इिक बाजी पाई ॥ पूरे गुर ते नदरी आई ॥ सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइिदा ॥३॥ बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ आपि वजाइे वजावणहारा ॥ घटि घटि पउणु वहै

इकि रंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥४॥ करता करे सु निहचउ होवै ॥ गुर कै सबदे हउमै खोवै ॥ गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥५॥ गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ नामु मंनि वसै नामो सालाही ॥ नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥६॥ बिनु नावै सभ दुखु संसारा ॥ बहु करम कमावहि वधहि विकारा ॥ नामु न सेवहि किउ सुखु पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा ॥७॥ आपि करे तै आपि कराइे ॥ गुर परसादी किसै बुझाइे ॥ गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि मुकती कै घरि पाइदा ॥८॥ गणत गणै सो जलै संसारा ॥ सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ गुरमुखि होवै सु गणत चुकाइे सचे सचि समाइदा ॥९॥ जे सचु देइ त पाइे कोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सचु नामु सालाहे रंगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥१०॥ जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥ किलविख काटे काटणहारा ॥ हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥११॥ अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाइे ॥ मैले करम करे दुखु पाइे ॥ कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि दुखु पाइदा ॥१२॥ निरमल बाणी को मंनि वसाइे ॥ गुर परसादी सहसा जाइे ॥ गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥१३॥ आपि सिरंदा सचा सोई ॥ आपि उपाइि खपाइे सोई ॥ गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१४॥ अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ कामि करोधि जलै सभु कोई ॥ सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥१५॥ मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥ नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा ॥१६॥४॥१८॥ मारू महला ३ ॥ हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ एसु तिलु न तमाइि वेपरवाहा ॥ तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ॥ जिस नो नाम दानु करे सो पाइे गुर सबदी मेलाइदा ॥२॥ चउदह भवण तेरे हटनाले ॥ सतिगुरि दिखाइे अंतरि नाले ॥ नावै का वापारी होवै गुर सबदी को

पाइदा ॥३॥ सतिगुरि सेविऐ सहज अनन्दा ॥ हिरदै आइ वुठा गोविंदा ॥ सहजे भगति करे दिनु राती आपे भगति कराइदा ॥४॥ सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ ॥ अनदिनु मारीअहि दुखु सबाइआ ॥ मथे काले महलु न पावहि दुख ही विचि दुखु पाइदा ॥५॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ सहज भाइ सची लिव लागी ॥ सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा ॥६॥ जिस नो सचा देइ सु पाइे ॥ अंतरि साचु भरमु चुकाइे ॥ सचु सचै का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा ॥७॥ आपे करता सभना का सोई ॥ जिस नो आपि बुझाइे बूझै कोई ॥ आपे बखसे दे वडिआई आपे मेलि मिलाइदा ॥८॥ हउमै करदिआ जनमु गवाइआ ॥ आगै मोहु न चूकै माइआ ॥ अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा ॥९॥ पूरै भागि गुर सेवा होई ॥ नदरि करे ता सेवे कोई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै महलि सचै सुखु पाइदा ॥१०॥ तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाइे ॥ पूरै भागि गुर सेवा लाइे ॥ तेरै हथि है सभ वडिआई जिसु देवहि सो पाइदा ॥११॥ अंदरि परगासु गुरू ते पाइे ॥ नामु पदारथु मंनि वसाइे ॥ गिआन रतनु सदा घटि चानणु अगिआन अंधेरु गवाइदा ॥१२॥ अगिआनी अंधे दूजै लागे ॥ बिनु पाणी डुबि मूए अभागे ॥ चलदिआ घरु दरु नदरि न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा ॥१३॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गिआनी धिआनी पूछहु कोई ॥ सतिगुरु सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाइे ॥ ममता काटि सचि लिव लाइे ॥ सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥१५॥ आपे करे कराइे करता ॥ सबदि मरै सोई जनु मुकता ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१६॥५॥१९॥ मारू महला ३ ॥ जो तुधु करणा सो करि पाइआ ॥ भाणे विचि को विरला आइआ ॥ भाणा मन्ने सो सुखु पाइे भाणे विचि सुखु पाइदा ॥१॥ गुरमुखि तेरा भाणा भावै ॥ सहजे ही सुखु सचु कमावै ॥ भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ॥२॥ तेरा भाणा मन्ने सु मिलै तुधु

आइे ॥ जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाइे ॥ भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा ॥३॥ जा तिसु भावै ता गुरू मिलाइे ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पाइे ॥ तुधु आपणै भाणै सभ सृसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा ॥४॥ मनमुखु अंधु करे चतुराई ॥ भाणा न मन्ने बहुतु दुखु पाई ॥ भरमे भूला आवै जाइे घरु महलु न कबहू पाइदा ॥५॥ सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ सतिगुर की सेवा धुरि फुरमाई ॥ सतिगुर सेवे ता नामु पाइे नामे ही सुखु पाइदा ॥६॥ सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ गुर किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ रसना नामु धिआइे रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा ॥७॥ महलै अंदरि महलु को पाइे ॥ गुर कै सबदि सचि चितु लाइे ॥ जिस नो सचु देइि सोई सचु पाइे सचे सचि मिलाइदा ॥८॥ नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइिआ ॥ माइिआ मोहु सभु रोगु कमाइिआ ॥ बिनु नावै मनु तनु है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥९॥ नामि रते तिन निरमल देहा ॥ निरमल ह्मसा सदा सुखु नेहा ॥ नामु सलाहि सदा सुखु पाइिआ निज घरि वासा पाइदा ॥१०॥ सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ नागो आइिआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥११॥ जिस नो नामु देइि सो पाइे ॥ गुर कै सबदि हरि मंनि वसाइे ॥ गुर किरपा ते नामु वसिआ घट अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१२॥ नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ नाउ तिना मिलै धुरि पुरबि कमाई ॥ जिनी नाउ पाइिआ से वडभागी गुर कै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ काइिआ कोटु अति अपारा ॥ तिसु विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥१४॥ अंतर घर बंके थानु सुहाइिआ ॥ गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइिआ ॥ इितु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा ॥१५॥ मेरै करतै इिक बणत बणाई ॥ इिसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि को नामु पाइदा ॥१६॥६॥२०॥ मारू महला ३ ॥ काइिआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥ अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ

सबदि मिलाइदा ॥१॥ हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥ तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥२॥ हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥ गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा ॥३॥ सो जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥ गिआन अंजनु पाइे गुर सबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥४॥ वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ बिनु सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥५॥ इकि कितु आइे जनमु गवाइे ॥ मनमुख लागे दूजै भाइे ॥ इेह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिऐ पछुताइदा ॥६॥ गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा ॥ तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मंनि वसाइदा ॥७॥ हउमै गणत गुर सबदि निवारे ॥ हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥८॥ सो चेते जिसु आपि चेताइे ॥ गुर कै सबदि वसै मनि आइे ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपै आपु समाइदा ॥९॥ जिनि मन विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥१०॥ इेह काइआ पवितु है सरीरु ॥ गुर सबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥११॥ इेहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ हरि न चेतै सदा दुखु पाइे बिनु हरि चेते दुखु पाइदा ॥१२॥ जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ काइआ हंसु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ हरि सेवे हरि मंनि वसाइे सोहै हरि गुण गाइदा ॥१३॥ बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइि ॥ मनमुख भूले मुइे बिललाइि ॥ जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥१४॥ काइआ कोटु पके हटनाले ॥ गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ हरि का नामु धिआइि दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥१५॥ आपे सचा है सुखदाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा

॥१६॥७॥२१॥ मारू महला ३ ॥ निरंकारि आकारु उपाइआ ॥ माइआ मोहु हुकमि बणाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मंनि वसाइदा ॥१॥ माइआ माई त्रै गुण परसूति जमाइआ ॥ चारे बेद ब्रहमे नो फुरमाइआ ॥ वर्हे माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥२॥ गुर सेवा ते करणी सार ॥ राम नामु राखहु उरि धार ॥ गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥३॥ वेदु पड़ै अनदिनु वाद समाले ॥ नामु न चेतै बधा जमकाले ॥ दूजै भाइ सदा दुखु पाइे त्रै गुण भरमि भुलाइदा ॥४॥ गुरमुखि इकसु सिउ लिव लाइे ॥ त्रिबिधि मनसा मनहि समाइे ॥ साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥५॥ जो धुरि राते से हुणि राते ॥ गुर परसादी सहजे माते ॥ सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥६॥ माइआ मोहि भरमि न पाइे ॥ दूजै भाइ लगा दुखु पाइे ॥ सूहा रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥७॥ एहु मनु भै भाइ रंगाइे ॥ इतु रंगि साचे माहि समाइे ॥ पूरै भागि को इहु रंगु पाइे गुरमती रंगु चड़ाइदा ॥८॥ मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ दरगह कब ही न पावै मानु ॥ दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा ॥९॥ मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर परसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥१०॥ इसु काइआ की कीमति किनै न पाई ॥ मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥११॥ काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा ॥ गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाइे सहजे सहजि मिलाइदा ॥१२॥ सचा महलु सचे भंडारा ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा ॥१३॥ काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा ॥१४॥ हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ गुर परसादी पाइआ जाई ॥ आपे मेलि मिलाइे आपे सबदे सहजि समाइदा ॥१५॥

आपे सचा सबदि मिलाइे ॥ सबदे विचहु भरमु चुकाइे ॥ नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु पाइिदा ॥१६॥८॥२२॥ मारू महला ३ ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥ अपड़ि कोइि न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइिआ ॥१॥ तुधुनो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ गुर कै सबदे सचि समावहि ॥ अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइिआ ॥२॥ सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ हरि के गुण हिरदै उर धारहि ॥ जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइिआ ॥३॥ हरि जीउ मेले आपि मिलाइे ॥ गुर कै सबदे आपु गवाइे ॥ अनदिनु सदा हरि भगती राते इिसु जग महि लाहा पाइिआ ॥४॥ तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ अंतु न पारा कीमति नही पाई ॥ आपे दइिआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइिआ ॥५॥ इिसु जग महि मोहु है पासारा ॥ मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ॥ धंधै धावतु जनमु गवाइिआ बिनु नावै दुखु पाइिआ ॥६॥ करमु होवै ता सतिगुरु पाइे ॥ हउमै मैलु सबदि जलाइे ॥ मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइिआ ॥७॥ तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइिआ ॥८॥ नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ ना को होआ तोलणहारा ॥ आपे तोले तोलि तोलाइे गुर सबदी मेलि तोलाइिआ ॥९॥ सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ तू आपे मेलि बहालहि पासि ॥ सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइिआ ॥१०॥ जतु सतु संजमु जि सचु कमावै ॥ इिहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ इिसु बिखु महि अंमृतु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइिआ ॥११॥ जिस नो बुझाइे सोई बूझै ॥ हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइे सहजे ही सचु पाइिआ ॥१२॥ बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ मरि मरि जंमै चुकै न फेरी ॥ बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइिआ ॥१३॥ बहुते भेख करे भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥ जीवतु मरै ता मुकति पाइे सचै नाइि समाइिआ ॥१४॥ अगिआनु तृसना इिसु तनहि जलाइे ॥

तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाइे ॥ तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइिआ ॥१५॥ सचा साहिबु सची वडिआई ॥ गुर परसादी विरलै पाई ॥ नानकु इेक कहै बेन्नती नामे नामि समाइिआ ॥१६॥१॥२३॥ मारू महला ३ ॥ नदरी भगता लैहु मिलाइे ॥ भगत सलाहनि सदा लिव लाइे ॥ तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइिआ ॥१॥ पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइिआ ॥२॥ हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥ अंतरि अगिआनु सबदि बुझाइे सतिगुर ते सुखु पाइिआ ॥३॥ मनमुखु अंधा अंधु कमाइे ॥ बहु संकट जोनी भरमाइे ॥ जम का जेवड़ा कदे न काटै अंते बहु दुखु पाइिआ ॥४॥ आवण जाणा सबदि निवारे ॥ सचु नामु रखै उर धारे ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइि समाइिआ ॥५॥ आवण जाणै परज विगोई ॥ बिनु सतिगुर थिरु कोइि न होई ॥ अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइिआ ॥६॥ पंच दूत चितवहि विकारा ॥ माइिआ मोह का इेहु पसारा ॥ सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइिआ ॥७॥ बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥ फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ सतिगुर भेटे सचु दृड़ाइे सचु नामु मनि भाइिआ ॥८॥ साचा दरु साचा दरवारा ॥ सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइिआ ॥९॥ घरै अंदरि को घरु पाइे ॥ गुर कै सबदे सहजि सुभाइे ॥ इेथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइिआ ॥१०॥ दूजै भाइि दुसटा का वासा ॥ भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइिआ ॥११॥ सतिगुर बाझहु संगति न होई ॥ बिनु सबदे पारु न पाइे कोई ॥ सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइिआ ॥१२॥ काइिआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥ अंमृतु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइिआ ॥१३॥ काइिआ सोधहि सबदु वीचारहि ॥ मोह ठगउरी भरमु निवारहि ॥ आपे कृपा करे सुखदाता आपे मेलि

मिलाइआ ॥१४॥ सद ही नेड़ै दूरि न जाणहु ॥ गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि देखाइआ ॥१५॥ आपे करता सचा सोई ॥ आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ सुखु पाइआ ॥१६॥२॥२४॥

मारू सोलहे महला ४ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सचा आपि सवारणहारा ॥ अवर न सूझसि बीजी कारा ॥ गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि समाई हे ॥१॥ सभना सचु वसै मन माही ॥ गुर परसादी सहजि समाही ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥२॥ सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ सतिगुरु सेवी अवरु न दूजा ॥ सतिगुर ते नामु रतन धनु पाइआ सतिगुर की सेवा भाई हे ॥३॥ बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥ नानक तिन की फिरि गति होवै जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥४॥ गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥ होहु दइआलु कृपा करि हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥५॥ अंमृत रसु सतिगुरू चुआइआ ॥ दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ ॥ तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि समाई हे ॥६॥ जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ अनदिनु गुरु गुरु करत विहाई ॥ बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई हे ॥७॥ जिसु भावै तिसु आपे देइ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लेइ ॥ आपे कृपा करे नामु देवै नानक नामि समाई हे ॥८॥ गिआन रतनु मनि परगटु भइआ ॥ नामु पदारथु सहजे लइआ ॥ इेह वडिआई गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥९॥ प्रगटिआ सूरु निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ अगिआनु मिटिआ गुर रतनि अपारा ॥ सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥१०॥ गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ चहु जुगि निरमलु हछा लोइ ॥ नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥११॥ गुरमुखि नामु परापति होवै ॥ सहजे जागै सहजे

सोवै ॥ गुरमुखि नामि समाइि समावै नानक नामु धिआई हे ॥१२॥ भगता मुखि अंमृत है बाणी ॥ गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥१३॥ हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ सतिगुर ते समझ पड़ी मन माही ॥ होहु दइिआलु कृपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥१४॥ जिनि सतिगुरु जाता तिनि इेकु पछाता ॥ सरबे रवि रहिआ सुखदाता ॥ आतमु चीनि परम पदु पाइिआ सेवा सुरति समाई हे ॥१५॥ जिन कउ आदि मिली वडिआई ॥ सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि समाई हे ॥१६॥१॥ मारू महला ४ ॥ हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ सरबे रवि रहिआ घट वासी ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥१॥ जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ ता कउ कोइि न साकसि मारा ॥ सो अैसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥२॥ जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ ता करता भरपूरि समाही ॥ सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥३॥ जो जीआ की वेदन जाणै ॥ तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ तिसु आगै जन करि बेन्नती जो सरब सुखा का दाणी हे ॥४॥ जो जीअै की सार न जाणै ॥ तिसु सिउ किछु न कहीअै अजाणै ॥ मूरख सिउ नह लूझु पराणी हरि जपीअै पदु निरबाणी हे ॥५॥ ना करि चिंत चिंता है करते ॥ हरि देवै जलि थलि जंता सभतै ॥ अचिंत दानु देइि प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥६॥ ना करि आस मीत सुत भाई ॥ ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीअै सारंगपाणी हे ॥७॥ अनदिनु नामु जपहु बनवारी ॥ सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ जन नानक नामु जपहु भव खंडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥८॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइिआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइिआ ॥ जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइि पूछहु वेद पुराणी हे ॥९॥ जिसु हरि सेवा लाइे सोई जनु लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ विचे गृह सदा रहै उदासी जिउ कमलु

रहै विचि पाणी हे ॥१०॥ विचि हउमै सेवा थाइ न पाइे ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाइे ॥ सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी हे ॥११॥ हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ तू सरब जीआ का अंतरजामी ॥ हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥१२॥ किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ किस ही जोरु दीबान माइिआ का ॥ मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥१३॥ निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥१४॥ हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइिआ ॥ तिनी गुर परसादि परम पदु पाइिआ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइिआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥१५॥ तू सभ महि वरतहि हरि जगन्नाथु ॥ सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ हरि की सरणि पइिआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥१६॥२॥

मारू सोलहे महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कला उपाइि धरी जिनि धरणा ॥ गगनु रहाइिआ हुकमे चरणा ॥ अगनि उपाइि ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे ॥१॥ जीअ जंत कउ रिजकु संबाहे ॥ करण कारण समरथ आपाहे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥२॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ सासि ग्रासि होइि संगि समालिआ ॥ सदा सदा जपीऐ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥३॥ सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥४॥ सो पतिवंता सो धनवंता ॥ जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इिह सृसटि उपाई हे ॥५॥ प्रभ आइे सरणा भउ नही करणा ॥ साधसंगति निहचउ है तरणा ॥ मन बच करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥६॥ गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा तृपति रहे आघाई हे ॥७॥ मीतु हमारा सोई

सुआमी ॥ थान थन्नतरि अंतरजामी ॥ सिमरि सिमरि पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥८॥ हरि का नामु कोटि लख बाहा ॥ हरि जसु कीरतनु संगि धनु ताहा ॥ गिआन खड़गु करि किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥९॥ हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥ जीति आवहु वसहु घरि अपने ॥ लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥१०॥ खंड ब्रहमंड उधारणहारा ॥ ऊच अथाह अगंम अपारा ॥ जिस नो कृपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥११॥ बंधन तोड़ि लीडे प्रभि मोले ॥ करि किरपा कीने घर गोले ॥ अनहद रुण झुणकारु सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥१२॥ मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥ बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि सोभ सुहाई हे ॥१३॥ जै जै कारु जपहु जगदीसै ॥ बलि बलि जाई प्रभ अपुने ईसै ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै इेका जगति सबाई हे ॥१४॥ सति सति सति प्रभु जाता ॥ गुर परसादि सदा मनु राता ॥ सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे इेकंकारि समाई हे ॥१५॥ भगत जना का प्रीतमु पिआरा ॥ सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ सिमरि नामु पुन्नी सभ इिछा जन नानक पैज रखाई हे ॥१६॥१॥

मारू सोलहे महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

संगी जोगी नारि लपटाणी ॥ उरझि रही रंग रस माणी ॥ किरत संजोगी भइे इिकत्रा करते भोग बिलासा हे ॥१॥ जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ पिरु धनहि सीगारि रखै संगानै ॥ मिलि इेकत्र वसहि दिनु राती पृउ दे धनहि दिलासा हे ॥२॥ धन मागै पृउ बहु बिधि धावै ॥ जो पावै सो आणि दिखावै ॥ इेक वसतु कउ पहुचि न साकै धन रहती भूख पिआसा हे ॥३॥ धन करै बिनउ दोऊ कर जोरै ॥ पृअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ अैसा बणजु करहु गृह भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥४॥ सगले करम धरम जुग साधा ॥ बिनु हरि रस सुखु तिलु नही लाधा ॥ भई कृपा नानक सतसंगे तउ

धन पिर अन्नद उलासा हे ॥५॥ धन अंधी पिरु चपलु सिआना ॥ पंच ततु का रचनु रचाना ॥ जिसु वखर कउ तुम आइे हहु सो पाइिए सतिगुर पासा हे ॥६॥ धन कहै तू वसु मै नाले ॥ पृअ सुखवासी बाल गुपाले ॥ तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥७॥ पिरि कहिआ हउ हुकमी बंदा ॥ एहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छंदा ॥ जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे ॥८॥ जउ पृअ बचन कहे धन साचे ॥ धन कछू न समझै चंचलि काचे ॥ बहुरि बहुरि पिर ही संगु मागै एहु बात जानै करि हासा हे ॥९॥ आई आगिआ पिरहु बुलाइिआ ॥ ना धन पुछी न मता पकाइिआ ॥ ऊठि सिधाइिए छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे ॥१०॥ रे मन लोभी सुणि मन मेरे ॥ सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ बिनु सतिगुर पचि मूइे साकत निगुरे गलि जम फासा हे ॥११॥ मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ जितने नरक से मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥१२॥ गुरमुखि सोइि जि हरि जीउ भाइिआ ॥ तिसु कउणु मिटावै जि प्रभि पहिराइिआ ॥ सदा अन्नदु करे आन्नदी जिसु सिरपाउ पइिआ गलि खासा हे ॥१३॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ अैसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुड़ि न कत ही जासा हे ॥१४॥ गुण निधान किछु कीम न पाई ॥ घटि घटि पूरि रहिए सभ ठाई ॥ नानक सरणि दीन दुख भंजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥१५॥१॥२॥

मारू सोलहे महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करै अन्नदु अन्नदी मेरा ॥ घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही को दूजा हे ॥१॥ हरखवंत आन्नत दइिआला ॥ प्रगटि रहिए प्रभु सरब उजाला ॥ रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥२॥ आपे कुदरति करे वीचारा ॥ आपे ही सचु करे पसारा ॥ आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥३॥ साचा तखतु सची पातिसाही ॥ सचु खजीना

साचा साही ॥ आपे सचु धारिए सभु साचा सचे सचि वरतीजा हे ॥४॥ सचु तपावसु सचे केरा ॥ साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे ॥५॥ इेको आपि तूहै वड राजा ॥ हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥६॥ तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ तू निरबाणु तूहै ही जोगी ॥ सरब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी दृसटीजा हे ॥७॥ तेरी दाति तुझै ते होवै ॥ देहि दानु सभसै जंत लोऐ ॥ तोटि न आवै पूर भंडारै तृपति रहे आघीजा हे ॥८॥ जाचहि सिध साधिक बनवासी ॥ जाचहि जती सती सुखवासी ॥ इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु सृसटीजा हे ॥९॥ करहि भगति अरु रंग अपारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मंनि भगतीजा हे ॥१०॥ जिसु देहि दरसु सोई तुधु जाणै ॥ एहु गुर कै सबदि सदा रंग माणै ॥ चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥११॥ जिसु चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ जिसु चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा हे ॥१२॥ तृसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ गुरि पूरै लै तूटा गंढा ॥ सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥१३॥ मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ अमरु भइिआ अबिनासी थीवै ॥ ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥१४॥ पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ पूरै लागा पूरे माहि समाणी ॥ चड़ै सवाइिआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे ॥१५॥ बारहा कंचनु सुधु कराइिआ ॥ नदरि सराफ वन्नी सचड़ाइिआ ॥ परखि खजानै पाइिआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥१६॥ अंमृत नामु तुमारा सुआमी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ संतसंगि महा सुखु पाइिआ देखि दरसनु इहु मनु भीजा हे ॥१७॥१॥३॥

मारू महला ५ सोलहे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ गुरु दइिआलु सदा बखसिंदा ॥ गुरु सासत सिमृति खटु करमा गुरु पवित्र

असथाना हे ॥१॥ गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ गुरु सिमरत जम संगि न फासहि ॥ गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥२॥ गुर का सेवकु नरकि न जाइे ॥ गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआइे ॥ गुर का सेवकु साधसंगु पाइे गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥३॥ गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ कलि कलेस मिटाइे सतिगुरु हरि दरगह देवै मानाँ हे ॥४॥ अगमु अगोचरु गुरू दिखाइिआ ॥ भूला मारगि सतिगुरि पाइिआ ॥ गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर दृड़ाइिआ गिआनाँ हे ॥५॥ गुरि दृसटाइिआ सभनी ठाँई ॥ जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ ऊच ऊन सभ इेक समानाँ मनि लागा सहजि धिआना हे ॥६॥ गुरि मिलिऐ सभ तृसन बुझाई ॥ गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥ सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अंमृतु पी पानाँ हे ॥७॥ गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइिआ निहचल थानाँ हे ॥८॥ सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानाँ हे ॥९॥१॥४॥

मारू सोलहे महला ५ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे सृसटि उपाइिदा ॥१॥ लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ इिसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइि जाइि दुखु पाइिदा ॥२॥ कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ जिसु आपि भुलाइे सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइिदा ॥३॥ हरख सोग का नगरु इिहु कीआ ॥ से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ तृहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइिदा ॥४॥ अनिक करम कीइे बहुतेरे ॥ जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ कुरुता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइिदा ॥५॥ कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीऐ लाइि धिआना ॥

आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥६॥ खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ निहचलु इेकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥७॥ हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥८॥ इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ देहु दरसु जितु मनु तृपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥९॥ रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा ॥१०॥ जिथै अउघटु आइि बनतु है प्राणी ॥ तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी ॥ जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥११॥ वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ काटि सिलक जिसु मारगि पाइे सो विचि संगति वासा पाइदा ॥१२॥ हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ बुरा भला दुइि समसरि सहीऐ ॥ हउमै जाइि त इेको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥१३॥ हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइि अतीत उदासी ॥ अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥१४॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ ता मिलीऐ जा लइे मिलाई ॥ गुरमुखि प्रगटु भइिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥१५॥ तू आपे करता कारण करणा ॥ सृसटि उपाइि धरी सभ धरणा ॥ जन नानकु सरणि पइिआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥१६॥१॥५॥

मारू सोलहे महला ५ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो दीसै सो इेको तूहै ॥ बाणी तेरी स्रवणि सुणीऐ ॥ दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥१॥ आपि चितारे अपणा कीआ ॥ आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ आपि उपाइि रचिएनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥२॥ इिकि उपाइे वड दरवारी ॥ इिकि उदासी इिकि घर बारी ॥

इकि भूखे इकि तृपति अघाइे सभसै तेरा पारणा ॥३॥ आपे सति सति सति साचा ॥ एति पोति भगतन संगि राचा ॥ आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥४॥ सदा सदा सद होवणहारा ॥ ऊचा अगमु अथाहु अपारा ॥ ऊणे भरे भरे भरि ऊणे इेहि चलत सुआमी के कारणा ॥५॥ मुखि सालाही सचे साहा ॥ नैणी पेखा अगम अथाहा ॥ करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥६॥ करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ जीअ जंत सोई है जपणा ॥ अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥७॥ संत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ अन्नद मंगल हरि चलत तमासे ॥ गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥८॥ आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥ करि करि देखै खेलु अपारा ॥ आपि उपाइे उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥९॥ सुणि सुणि जीवा सोइि तुमारी ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ दुइि कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥१०॥ तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥ इेको इेकु जपी मन माही ॥ हुकमु बूझि जन भइे निहाला इिह भगता की घालणा ॥११॥ गुर उपदेसि जपीअै मनि साचा ॥ गुर उपदेसि राम रंगि राचा ॥ गुर उपदेसि तुटहि सभि बंधन इिहु भरमु मोहु परजालणा ॥१२॥ जह राखै सोई सुख थाना ॥ सहजे होइि सोई भल माना ॥ बिनसे बैर नाही को बैरी सभु इेको है भालणा ॥१३॥ डर चूके बिनसे अंधिआरे ॥ प्रगट भइे प्रभ पुरख निरारे ॥ आपु छोडि पइे सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥१४॥ अैसा को वडभागी आइिआ ॥ आठ पहर जिनि खसमु धिआइिआ ॥ तिसु जन कै संगि तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥१५॥ इिह बखसीस खसम ते पावा ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥१६॥१॥६॥ मारू महला ५ ॥ सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ जग महि कोई रहणु न पाइे निहचलु इेकु नाराइिणा ॥१॥ गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ इेको मंत्र दृड़ाइे अउखधु सचु नामु रिद

गाइिणा ॥२॥ जिसु नामै कउ तरसहि बहु देवा ॥ सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजनु सो गुर पूरे ते पाइिणा ॥३॥ होरु दुआरा कोइि न सूझै ॥ तृभवण धावै ता किछू न बूझै ॥ सतिगुरु साहु भंडारु नामु जिसु इिहु रतनु तिसै ते पाइिणा ॥४॥ जा की धूरि करे पुनीता ॥ सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ सति पुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेटत पारि पराइिणा ॥५॥ पारजातु लोड़हि मन पिआरे ॥ कामधेनु सोही दरबारे ॥ तृपति संतोखु सेवा गुर पूरे नामु कमाइि रसाइिणा ॥६॥ गुर कै सबदि मरहि पंच धातू ॥ भै पारब्रहम होवहि निरमला तू ॥ पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता पारसु परसि दिखाइिणा ॥७॥ कई बैकुंठ नाही लवै लागे ॥ मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ॥ इेकंकारु सतिगुर ते पाईअै हउ बलि बलि गुर दरसाइिणा ॥८॥ गुर की सेव न जाणै कोई ॥ गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥ जिस नो लाइि लइे सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइिणा ॥९॥ गुर की महिमा बेद न जाणहि ॥ तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ पारब्रहम अपरंपर सतिगुर जिसु सिमरत मनु सीतलाइिणा ॥१०॥ जा की सोइि सुणी मनु जीवै ॥ रिदै वसै ता ठंढा थीवै ॥ गुरु मुखहु अलाइे ता सोभा पाइे तिसु जम कै पंथि न पाइिणा ॥११॥ संतन की सरणाई पड़िआ ॥ जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइिआ किरमाइिणा ॥१२॥ निरगुण कउ संगि लेहु रलाइे ॥ करि किरपा मोहि टहलै लाइे ॥ पखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण धोइि सुखु पाइिणा ॥१३॥ बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइिआ ॥ तुमरी कृपा ते तुम सरणाइिआ ॥ सदा सदा संतह संगि राखहु इेहु नाम दानु देवाइिणा ॥१४॥ भइे कृपाल गुसाई मेरे ॥ दरसनु पाइिआ सतिगुर पूरे ॥ सूख सहज सदा आन्नदा नानक दास दसाइिणा ॥१५॥२॥७॥

मारू सोलहे महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरै धरती अरु आकासा ॥ सिमरहि चंद सूरज गुणतासा ॥ पउण पाणी बैसंतर सिमरहि सिमरै

सगल उपारजना ॥१॥ सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥ सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥२॥ सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ सिमरहि देवते कोड़ि तेतीसा ॥ सिमरहि जख्यि दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥३॥ सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ सिमरहि बन परबत अउधूता ॥ लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥४॥ सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ गुपत प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥५॥ सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥६॥ सिमरहि घड़ी मूरत पल निमखा ॥ सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ सिमरहि सउण सासत्र संजोगा अलखु न लखीऐ इकु खिना ॥७॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥८॥ जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥९॥ गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ सूख सहज आनन्द नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना ॥१०॥ सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ पारब्रहमु जा कै मनि वूठा सो पूर करंमा ना छिना ॥११॥ जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ अवरु न कहीऐ दूजा कोई ॥ गुर गिआन अंजनि काटिए भ्रमु सगला अवरु न दीसै इेक बिना ॥१२॥ ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥ कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ गहिर गंभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥१३॥ तू करता तेरा सभु कीआ ॥ तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ आदि मधि अंति प्रभु तूहै सगल पसारा तुम तना ॥१४॥ जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गावै ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन जो स्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥१५॥ तू सभना का सभु को तेरा ॥ साचे साहिब गहिर गंभीरा

॥ कहु नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना ॥१६॥१॥८॥ मारू महला ५ ॥ प्रभ समरथ सरब सुख दाना ॥ सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥ हरि दाता जीअ जंत भेखारी जनु बाँछै जाचंगना ॥१॥ मागउ जन धूरि परम गति पावउ ॥ जनम जनम की मैलु मिटावउ ॥ दीरघ रोग मिटहि हरि अउखधि हरि निरमलि रापै मंगना ॥२॥ स्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥ इेका एट तजउ बिखु कामी ॥ निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे करि सुकृतु नाही संगना ॥३॥ रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥ सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै पंच दूत तजि तंगना ॥४॥ चरन कमल जपि बोहिथि चरीऐ ॥ संतसंगि मिलि सागरु तरीऐ ॥ अरचा बंदन हरि समत निवासी बाहुड़ि जोनि न न्नगना ॥५॥ दास दासन को करि लेहु गोपाला ॥ कृपा निधान दीन दइआला ॥ सखा सहाई पूरन परमेसुर मिलु कदे न होवी भंगना ॥६॥ मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥ जनम जनम का सोइिआ जागै ॥ जिस का सा सोई प्रतिपालकु हति तिआगी हउमै ह्मतना ॥७॥ जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥ भरम भीति खोई गुरि पूरै इेकु रविआ सरबंगना ॥८॥ जत कत पेखउ प्रभ सुख सागर ॥ हरि तोटि भंडार नाही रतनागर ॥ अगह अगाह किछु मिति नही पाईऐ सो बूझै जिसु किरपंगना ॥९॥ छाती सीतल मनु तनु ठंढा ॥ जनम मरण की मिटवी डंझा ॥ करु गहि काढि लीइे प्रभि अपुनै अमिए धारि दृसटंगना ॥१०॥ इेको इेकु रविआ सभ ठाई ॥ तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥ आदि मधि अंति प्रभु रविआ तृसन बुझी भरमंगना ॥११॥ गुरु परमेसरु गुरु गोबिंदु ॥ गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥ गुर जपु जापि जपत फलु पाइिआ गिआन दीपकु संत संगना ॥१२॥ जो पेखा सो सभु किछु सुआमी ॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी ॥ जो कीनो सो तुमहि कराइिए सरणि सहाई संतह तना ॥१३॥ जाचकु जाचै तुमहि अराधै ॥ पतित पावन पूरन प्रभ साधै ॥ इेको दानु सरब सुख गुण निधि आन मंगन निहकिंचना ॥१४॥

काइआ पातु प्रभु करणैहारा ॥ लगी लागि संत संगारा ॥ निरमल सोइि बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रंगना ॥१५॥ सोलह कला संपूरन फलिआ ॥ अनत कला होइि ठाकुरु चड़िआ ॥ अनद बिनोद हरि नामि सुख नानक अंमृत रसु हरि भुंचना ॥१६॥२॥९॥

मारू सोलहे महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तू साहिबु हउ सेवकु कीता ॥ जीउ पिंडु सभु तेरा दीता ॥ करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ॥१॥ तुमहि पठाइे ता जग महि आइे ॥ जो तुधु भाणा से करम कमाइे ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ॥२॥ ऊहा हुकमु तुमारा सुणीऐ ॥ ईहा हरि जसु तेरा भणीऐ ॥ आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ॥३॥ तू पिता सभि बारिक थारे ॥ जिउ खेलावहि तिउ खेलणहारे ॥ उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ॥४॥ इिकि बैसाइि रखे गृह अंतरि ॥ इिकि पठाइे देस दिसंतरि ॥ इिक ही कउ घासु इिक ही कउ राजा इिन महि कहीऐ किआ कूड़ा ॥५॥ कवन सु मुकती कवन सु नरका ॥ कवनु सैसारी कवनु सु भगता ॥ कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ॥६॥ हुकमे मुकती हुकमे नरका ॥ हुकमि सैसारी हुकमे भगता ॥ हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ॥७॥ सागरु कीना अति तुम भारा ॥ इिकि खड़े रसातलि करि मनमुख गावारा ॥ इिकना पारि लम्घावहि आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ॥८॥ कउतकु कालु इिहु हुकमि पठाइिआ ॥ जीअ जंत एपाइि समाइिआ ॥ वेखै विगसै सभि रंग माणे रचनु कीना इिकु आखाड़ा ॥९॥ वडा साहिबु वडी नाई ॥ वड दातारु वडी जिसु जाई ॥ अगम अगोचरु बेअंत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ॥१०॥ कीमति कोइि न जाणै दूजा ॥ आपे आपि निरंजन पूजा ॥ आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवंता अति गाड़ा ॥११॥ केतड़िआ दिन गुपतु कहाइिआ ॥ केतड़िआ दिन सुंनि समाइिआ ॥ केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥१२॥ आपे सकती सबलु

कहाइआ ॥ आपे सूरा अमरु चलाइआ ॥ आपे सिव वरताईअनु अंतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा ॥१३॥ जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥ तिस ही सुखु तिस ही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥१४॥ कीमति कागद कही न जाई ॥ कहु नानक बेअंत गुसाई ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥१५॥ तिसहि सरीकु नाही रे कोई ॥ किस ही बुतै जबाबु न होई ॥ नानक का प्रभु आपे आपे करि करि वेखै चोज खड़ा ॥१६॥१॥१०॥ मारू महला ५ ॥ अचुत पारब्रहम परमेसुर अंतरजामी ॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ रिखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥१॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ जगजीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥२॥ धरणीधर ईस नरसिंघ नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे पृथमि धराइण ॥ बावन रूपु कीआ तुधु करते सभ ही सेती है चंगा ॥३॥ स्री रामचंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥४॥ भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपी नाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥५॥ मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ कमलाकंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी निहसंगा ॥६॥ अमोघ दरसन आजूनी संभउ ॥ अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥ अबिनासी अबिगत अगोचर सभु किछु तुझ ही है लगा ॥७॥ स्रीरंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ केसव चलत करहि निराले कीता लोड़हि सो होइगा ॥८॥ निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि खेलु चतुरभुजु कहाइआ ॥ सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत सभ मोहैगा ॥९॥ बनमाला बिभूखन कमल नैन ॥ सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥ संख चक्र गदा है धारी महा सारथी सतसंगा ॥१०॥ पीत पीतंबर तृभवण धणी ॥ जगन्नाथु गोपालु मुखि भणी ॥ सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥११॥ निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ धन्नजै जलि थलि है

महीऐ ॥ मिरत लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥१२॥ पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ अह्मकार निवारणु है भव खंडनु ॥ भगती तोखित दीन कृपाला गुणे न कित ही है भिगा ॥१३॥ निरंकारु अछल अडोलो ॥ जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि मिलाइे आपहु कोइि न पावैगा ॥१४॥ आपे गोपी आपे काना ॥ आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा ॥१५॥ इेक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि संगा ॥१६॥ एट गही जगत पित सरणाइिआ ॥ भै भइिआनक जमदूत दुतर है माइिआ ॥ होहु कृपाल इिछा करि राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥१७॥ दृसटिमान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु गोबिद संत रेना ॥ मसतकि लाइि परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥१८॥ जिन कउ कृपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइिआ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥१९॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ कहु नानक भगत पइे सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥२०॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥२१॥२॥११॥ मारू महला ५ ॥ अलह अगम खुदाई बंदे ॥ छोडि खिआल दुनीआ के धंधे ॥ होइि पै खाक फकीर मुसाफरु इिहु दरवेसु कबूलु दरा ॥१॥ सचु निवाज यकीन मुसला ॥ मनसा मारि निवारिहु आसा ॥ देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥२॥ सरा सरीअति ले कंमावहु ॥ तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥३॥ कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बद राही ॥ पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥४॥ मका मिहर रोजा पै खाका ॥ भिसतु पीर लफज कमाइि अंदाजा ॥ हूर नूर मुसकु खुदाइिआ बंदगी अलह आला हुजरा ॥५॥

सचु कमावै सोई काजी ॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥६॥ सभे वखत सभे करि वेला ॥ खालकु यादि दिलै महि मउला ॥ तसबी यादि करहु दस मरदनु सुन्नति सीलु बंधानि बरा ॥७॥ दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ खिलखाना बिरादर हमू जंजाला ॥ मीर मलक उमरे फानाइआ इेक मुकाम खुदाइ दरा ॥८॥ अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥ पंजवै पंजे इकतु मुकामै इेहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥९॥ सगली जानि करहु मउदीफा ॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ खुदाइ इेकु बुझि देवहु बाँगाँ बुरगू बरखुरदार खरा ॥१०॥ हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा ॥११॥ काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रंग तमासे माणि हकीना ॥ नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥१२॥ मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥ दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥१३॥ जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥१४॥ कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥१५॥३॥१२॥ मारू महला ५ ॥ पारब्रहम सभ ऊच बिराजे ॥ आपे थापि उथापे साजे ॥ प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥१॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ रकत किरम महि नही संघारिआ ॥ अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ एहु सगल घटा का मालका ॥२॥ चरण कमल सरणाई आइआ ॥ साधसंगि है हरि जसु गाइआ ॥ जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि हरि भउ नही काल का ॥३॥ समरथ अकथ अगोचर देवा ॥ जीअ जंत सभि ता की सेवा ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज बहु परकारी पालका ॥४॥ तिसहि परापति होइ निधाना ॥ राम नाम रसु अंतरि माना ॥ करु गहि लीने अंध कूप

ते विरले केई सालका ॥५॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई घालका ॥६॥ ऊतम बाणी गाउ गोपाला ॥ साधसंगति की मंगहु रवाला ॥ बासन मेटि निबासन होईऐ कलमल सगले जालका ॥७॥ संता की इहि रीति निराली ॥ पारब्रहमु करि देखहि नाली ॥ सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत कीजै आलका ॥८॥ जह देखा तह अंतरजामी ॥ निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ सिमरि सिमरि जीवहि तेरे दासा बनि जलि पूरन थालका ॥९॥ तती वाउ न ता कउ लागै ॥ सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ अनद बिनोद करे हरि सिमरनु तिसु माइआ संगि न तालका ॥१०॥ रोग सोग दूख तिसु नाही ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाही ॥ आपणा नामु देहि प्रभ प्रीतम सुणि बेन्नती खालका ॥११॥ नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ रंगि रते तेरै दास अपारे ॥ तेरै रंगि रते तुधु जेहे विरले केई भालका ॥१२॥ तिन की धूड़ि माँगै मनु मेरा ॥ जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ तिन कै संगि परम पदु पाई सदा संगी हरि नालका ॥१३॥ साजनु मीतु पिआरा सोई ॥ एकु दृड़ाए दुरमति खोई ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजाए तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥१४॥ तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥ गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे जिनि खंडिआ भरमु अनालका ॥१५॥ सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ आठ पहर हरि हरि कउ धिआई ॥ नानक संत तेरै रंगि राते तू समरथु वडालका ॥१६॥४॥१३॥

मारू महला ५   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चरन कमल हिरदै नित धारी ॥ गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ तनु मनु अरपि धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा ॥१॥ सो ठाकुरु किउ मनहु विसारे ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारे ॥ सासि गरासि समाले करता कीता अपणा पावणा ॥२॥ जा ते बिरथा कोऊ नाही ॥ आठ पहर हरि रखु मन माही ॥

साधसंगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥३॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि ॥ नामु निधानु सहज सुख नउ निधि ॥ सरब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधू सुआमी रावणा ॥४॥ सासत सिंमृति बेद वखाणी ॥ जनमु पदारथु जीतु पराणी ॥ कामु क्रोधु निंदा परहरीऐ हरि रसना नानक गावणा ॥५॥ जिसु रूपु न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ जो जो जपै सोई वडभागी बहुड़ि न जोनी पावणा ॥६॥ जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ जलता फिरै रहै नित ताता ॥ अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥७॥ जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥८॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ घटि घटि वसहि सभन कै नेरे ॥ हाथि हमारै कछूऐ नाही जिसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥९॥ जा कै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ तिस ही पुरख न विआपै माइआ ॥ नानक दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥१०॥ आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ अंमृत नामु बिरलै ही चीने ॥ ता की कीमति कहणु न जाई जत कत एही समावणा ॥११॥ सोई भगतु सोई वड दाता ॥ सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ बाल सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥१२॥ मिरतु दूख सूख लिखि पाइे ॥ तिलु नही बधहि घटहि न घटाइे ॥ सोई होइ जि करते भावै कहि कै आपु वञावणा ॥१३॥ अंध कूप ते सेई काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाँढे ॥ किरपा धारि रखे करि अपुने मिलि साधू गोबिंदु धिआवणा ॥१४॥ तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ अचरज रूपु वडी वडिआई ॥ भगति दानु मंगै जनु तेरा नानक बलि बलि जावणा ॥१५॥१॥ १४॥२२॥२४॥२॥१४॥६२॥

मारू वार महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु मः १ ॥

विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥ गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥

गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ मोलि अमोलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥
नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥१॥ मः ४ ॥ नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥
इकि बाँधे इकि ढीलिआ इकि सुखीड़े हरि प्रीति ॥ नानक सचा मंनि लै सचु करणी सचु रीति ॥२॥
पउड़ी ॥ गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥ दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥
हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ सभु
सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥१॥ सलोकु मः ३ ॥ केदारा रागा विचि जाणीऐ भाई सबदे
करे पिआरु ॥ सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ विचहु मलु कटे आपणी कुला का करे
उधारु ॥ गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरू न छोडै आपणा
दूजै न धरे पिआरु ॥१॥ मः ४ ॥ सागरु देखउ डरि मरउ भै तेरै डरु नाहि ॥ गुर कै सबदि संतोखीआ
नानक बिगसा नाइ ॥२॥ मः ४ ॥ चड़ि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ ठाक न सचै बोहिथै
जे गुरु धीरक देइ ॥ तितु दरि जाइ उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ नानक नदरी पाईऐ दरगह
चलै मानु ॥३॥ पउड़ी ॥ निहकंटक राजु भुंचि तू गुरमुखि सचु कमाई ॥ सचै तखति बैठा निआउ
करि सतसंगति मेलि मिलाई ॥ सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥ ऐथै सुखदाता
मनि वसै अंति होइ सखाई ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥२॥ सलोकु मः १ ॥ भूली भूली
मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइ ॥ सतिगुरु साचा मनि वसै
साजनु उत ही ठाइ ॥ नानक मनु तृपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥१॥ मः ३ ॥ आपे करणी कार
आपि आपे करे रजाइ ॥ आपे किस ही बखसि लइे आपे कार कमाइ ॥ नानक चानणु गुर मिले दुख
बिखु जाली नाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥ चलदिआ नालि न चलई
सभु झूठु दरबु लखा ॥ अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु कलखा ॥ गुर परसादी उबरे

जिन हरि रसु चखा ॥ आपि कराइे करे आपि आपे हरि रखा ॥३॥ सलोकु मः ३ ॥ जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥ नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥१॥ मः ३ ॥ तृभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि आपे बखसिएनु हरि नामि समाणे ॥ आपे भगती लाइिएनु गुर सबदि नीसाणे ॥ सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ ओथै एथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ धन्नु धन्नु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥४॥ सलोकु मः १ ॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुंध ॥१॥ मः १ ॥ साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइिआ ॥ किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइिआ ॥ गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइिआ ॥ हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइिआ ॥ हरि रसु पी सदा तृपति भइे फिरि तृसना भुख गवाइिआ ॥५॥ सलोकु मः ३ ॥ पिर खुसीइे धन रावीइे धन उरि नामु सीगारु ॥ नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥१॥ मः १ ॥ ससुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक धन्नु सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥२॥ पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइिक होई ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥ इेहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइि दुखु होई ॥ कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥ निहचलु सचा इेकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥६॥ सलोकु मः ३ ॥ सभना का पिरु इेकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥१॥ मः ३ ॥ मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ॥ जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार कै ॥ नानक गुर परसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु अमोलु है

किउ कीमति कीजै ॥ आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ गुर सबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥७॥ सलोकु मः १ ॥ ना मैला ना धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥१॥ मः ३ ॥ सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि ॥ नानक तरवरु इेकु है इेको फुलु भिरंगु ॥२॥ पउड़ी ॥ जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥ हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ गिआनीआ का इिहु महतु है मन माहि समाना ॥ हरि जीउ का महलु पाइिआ सचु लाइि धिआना ॥ जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥८॥ सलोकु मः ३ ॥ जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥ दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ भिखिआ नामु संतोखु मड़ी सदा सचु है नालि ॥ भेखी हाथ न लधीआ सभ बधी जमकालि ॥ नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥१॥ मः ३ ॥ जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइि ॥ ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइि ॥ तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइि ॥ सचु दृड़ाइे सचु दृड़ु सचा एहु सबदु देइि ॥ हिरदै जिस दै सचु है तनु मनु भी सचा होइि ॥ नानक सचै हुकमि मंनिऐ सची वडिआई देइि ॥ सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सूरे इेहि न आखीअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ॥ अहंकारि मुइे से विगती गइे मरि जनमहि फिरि आवहि ॥९॥ सलोकु मः ३ ॥ कागउ होइि न ऊजला लोहे नाव न पारु ॥ पिरम पदारथु मंनि लै धन्नु सवारणहारु ॥ हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पारि ॥ तृसना छोडै भै वसै नानक करणी सारु ॥१॥ मः ३ ॥ मारू मारण जो गइे मारि न सकहि गवार ॥ नानक जे इिहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ॥ इेहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइि ॥ नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै

सोहि ॥२॥ पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाईएनु विचि सकति सिव वासा ॥ सकती किनै न पाइिए फिरि जनमि बिनासा ॥ गुरि सेविऔ साति पाईऔ जपि सास गिरासा ॥ सिमृति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥१०॥ सलोकु मः ३ ॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ मतु सचा अखरु भुलि जाइि चउकै भिटै न कोइि ॥ झूठे चउके नानका सचा इेको सोइि ॥१॥ मः ३ ॥ आपि उपाइे करे आपि आपे नदरि करेइि ॥ आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ कंटकु कालु इेकु है होरु कंटकु न सूझै ॥ अफरिए जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ गुर सबदी हरि भेदीऔ हरि जपि हरि बूझै ॥ सो हरि सरणाई छुटीऔ जो मन सिउ जूझै ॥ मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥११॥ सलोकु मः १ ॥ हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ इिसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥१॥ मः १ ॥ अलगउ जोइि मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइि ॥ हीरै हीरा बेधिआ नानक कंठि सुभाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ मनमुख कालु विआपदा मोहि माइिआ लागे ॥ खिन महि मारि पछाड़सी भाइि दूजै ठागे ॥ फिरि वेला हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥१२॥ सलोकु मः १ ॥ सरबे जोइि अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ कालरु लादसि सरु लाघणउ लाभु न पूंजी साथि ॥१॥ मः १ ॥ पूंजी साचउ नामु तू अखुटउ दरबु अपारु ॥ नानक वखरु निरमलउ धन्नु साहु वापारु ॥२॥ मः १ ॥ पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ माथै ऊभै जमु मारसी नानक मेलणु नामि ॥३॥ पउड़ी ॥ आपे पिंडु सवारिएनु विचि नव निधि नामु ॥ इिकि आपे भरमि भुलाइिअनु तिन निहफल कामु ॥ इिकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतम रामु ॥ इिकनी सुणि कै मंनिआ हरि ऊतम कामु ॥ अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइिआ हरि गुण नामु ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥

भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु ॥ अति डाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥१॥ मः १ ॥ माँदलु बेदि सि बाजणो घणो धड़ीऐ जोइ ॥ नानक नामु समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥२॥ मः १ ॥ सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ वडा वेपरवाहु सतिगुरु मिलै त पारि पवा ॥ मझ भरि दुख बदुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥३॥ पउड़ी ॥ जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥ जिस नो कृपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै ॥ धरम राइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ हरि नामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥१४॥ सलोकु मः १ ॥ सुणीऐ इेकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ कउणु मूआ कउणु मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥१॥ मः १ ॥ हउ मुआ मै मारिआ पउणु वहै दरीआउ ॥ तृसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ लोइण रते लोइणी कन्नी सुरति समाइ ॥ जीभ रसाइणि चूनड़ी रती लाल लवाइ ॥ अंदरु मुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥ इेहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥ से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥१५॥ सलोकु मः ३ ॥ मनमुख वापारै सार न जाणनी बिखु विहाझहि बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु ॥ बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ हरि सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ वादा कीआ करनि कहाणीआ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ जग महि राम नामु हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥१॥ मः ३ ॥ दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु मन्ने दुखु जाइ ॥ आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ नानक इेवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि नाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै तृपति नाही ॥ दूजै भरमि भुलाइआ

हउमै दुखु पाही ॥ बिनु करमा किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ॥ आवै जाइ जंमै मरै गुर सबदि छुटाही ॥ आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही ॥१६॥ सलोकु मः ३ ॥ इसु जग महि संती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ सतिगुरि सचु दृड़ाइआ इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥ इतु धनि पाइऐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ जिन्हा कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ आइ ॥ मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ सांँति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥ सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥ सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥१॥ मः ३ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ इको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा तृपति होइ ॥ पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा एहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥ सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जिस नो आपि विखाले सोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ अंदरु अंमृति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ॥ हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥१७॥ सलोकु मः ३ ॥ लोकु अवगणा की बन्है गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ॥ गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ गुर परसादी गुण पाईअन्हि जिस नो नदरि करेइ ॥१॥ मः ३ ॥ गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ सुखु पाईऐ गुर सबदी वीचारि ॥२॥ पउड़ी ॥ अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥ खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥ अंमृत का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥१८॥ सलोक मः १ ॥ हउ मै करी

ताँ तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ बूझहु गिआनी बूझणा इेह अकथ कथा मन माहि ॥ बिनु गुर ततु न पाईऐ अलखु वसै सभ माहि ॥ सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जाँ सबदु वसै मन माहि ॥ आपु गइिआ भ्रमु भउ गइिआ जनम मरन दुख जाहि ॥ गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥ नानक सोह्ं ह्सा जपु जापहु तृभवण तिसै समाहि ॥१॥ मः ३ ॥ मनु माणकु जिनि परखिआ गुर सबदी वीचारि ॥ से जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥ आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ नानक नामि रते दुतरु तरे भउजलु बिखमु संसारु ॥२॥ पउड़ी ॥ मनमुख अंदरु न भालनी मुठे अह्मते ॥ चारे कुंडाँ भवि थके अंदरि तिख तते ॥ सिंमृति सासत न सोधनी मनमुख विगुते ॥ बिनु गुर किनै न पाइिए हरि नामु हरि सते ॥ ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते ॥१९॥ सलोक मः २ ॥ आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ तिसै अगै नानका खलिइि कीचै अरदासि ॥१॥ मः १ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे जाणै सोइि ॥ किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सभे थोक विसारि इिको मितु करि ॥ मनु तनु होइि निहालु पापा दहै हरि ॥ आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि ॥२०॥ सलोक मः ५ ॥ माइिआ मनहु न वीसरै माँगै दंमा दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंम ॥१॥ मः ५ ॥ माइिआ साथि न चलई किआ लपटावहि अंध ॥ गुर के चरण धिआइि तू तूटहि माइिआ बंध ॥२॥ पउड़ी ॥ भाणै हुकमु मनाइिएनु भाणै सुखु पाइिआ ॥ भाणै सतिगुरु मेलिएनु भाणै सचु धिआइिआ ॥ भाणे जेवड होर दाति नाही सचु आखि सुणाइिआ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु कमाइिआ ॥ नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइिआ ॥२१॥ सलोक मः ३ ॥ जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिंद ॥ नानक मुइिआ का किआ मारणा जि आपि मारे गोविंद ॥१॥ मः ३ ॥ मन की पत्री वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥ सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रहमु बीचारु ॥ हरि सालाहे

हरि पड़ै गुर कै सबदि वीचारि ॥ आइआ एहु परवाणु है जि कुल का करे उधारु ॥ अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि पिआरु ॥ अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥ जो हुकमु न बूझै खसम का सोई नरु कचा ॥ जितु भावै तितु लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ सभना का साहिबु इकु है गुर सबदी रचा ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिस दे जचा ॥ जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥२२॥१॥ सुधु ॥

मारू वार महला ५ डखणे मः ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥ नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥१॥ मः ५ ॥ नीहु महिजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावे डेखु ॥ कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥२॥ मः ५ ॥ उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥ काजलु हार तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥३॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ गुरमुखि कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ हरि आगिआ होए बेद पापु पुंनु वीचारिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण बिसथारिआ ॥ नव खंड प्रिथमी साजि हरि रंग सवारिआ ॥ वेकी जंत उपाइ अंतरि कल धारिआ ॥ तेरा अंतु न जाणै कोइ सचु सिरजणहारिआ ॥ तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥१॥ डखणे मः ५ ॥ जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥ जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥१॥ मः ५ ॥ दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोड़े मरि जाहि ॥ कंता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥२॥ मः ५ ॥ दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ सजणु सचा पातिसाहु जिसु मिलि कीचै भोगु ॥३॥ पउड़ी ॥ तू अगम दइआलु बेअंतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ तुधु सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउण ॥ तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै तू अबिनासी जग

उधरण ॥ तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै तृण ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी सृसटि करण ॥२॥ डखणे मः ५ ॥ जे तू वतहि अंङणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥१॥ मः ५ ॥ हभे टोल सुहावणे सहु बैठा अंङणु मलि ॥ पही न वंञै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥२॥ मः ५ ॥ सेज विछाई कंत कू कीआ हभु सीगारु ॥ इती मंझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥३॥ पउड़ी ॥ तू पारब्रहमु परमेसरु जोनि न आवही ॥ तू हुकमी साजहि सृसटि साजि समावही ॥ तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ तू सभ महि वरतहि आपि कुदरति देखावही ॥ तेरी भगति भरे भंडार तोटि न आवही ॥ एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥३॥ डखणे मः ५ ॥ जा मू पसी हठ मै पिरी महिजै नालि ॥ हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥१॥ मः ५ ॥ नानक बैठा भखे वाउ लम्मे सेवहि दरु खड़ा ॥ पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥२॥ मः ५ ॥ किआ गालाइए भूछ पर वेलि न जोहे कंत तू ॥ नानक फुला संदी वाड़ि खिड़िआ हभु संसारु जिउ ॥३॥ पउड़ी ॥ सुघड़ु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतंता ॥ तू आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजंता ॥ दाना बीना आपि तू आपे सतवंता ॥ जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवंता ॥ सभु ब्रहम पसारु पसारिए आपे खेलम्ता ॥ इहु आवा गवणु रचाइए करि चोज देखंता ॥ तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु देवहि गुर मंता ॥ जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जंता ॥४॥ डखणे मः ५ ॥ कुरीए कुरीए वैदिआ तलि गाड़ा महरेरु ॥ वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसंदो पेरु ॥१॥ मः ५ ॥ सचु जाणै कचु वैदिए तू आघू आघे सलवे ॥ नानक आतसड़ी मंझि नैणू बिआ ढलि पबणि जिउ जुंमिए ॥२॥ मः ५ ॥ भोरे भोरे रूहड़े सेवेदे आलकु ॥ मुदति पई चिराणीआ फिरि कडू आवै

रुति ॥३॥ पउड़ी ॥ तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ इे माणस जाणहि दूरि तू वरतहि जाहरा ॥ तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ तू पुरखु अन्नदी अन्नत सभ जोति समाहरा ॥ तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ किआ आराधे जिहवा इिक तू अबिनासी अपरपरा ॥ जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥५॥ डखणे मः ५ ॥ गहडड़ड़ा तृणि छाइिआ गाफल जलिएहु भाहि ॥ जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद पनाहि ॥१॥ मः ५ ॥ नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥२॥ मः ५ ॥ नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ जिनी गुरू मनाइिआ रजि रजि सेई खाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ तुधु जग महि खेलु रचाइिआ विचि हउमै पाईआ ॥ इेकु मंदरु पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ दस नारी इिकु पुरखु करि दसे सादि लुोभाईआ ॥ इेनि माइिआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ हाठा दोवै कीतीए सिव सकति वरताईआ ॥ सिव अगै सकती हारिआ इेवै हरि भाईआ ॥ इिकि विचहु ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ जल विचहु बिंबु उठालिए जल माहि समाईआ ॥६॥ डखणे मः ५ ॥ आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ नानक सिझि इिवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥१॥ मः ५ ॥ सजणु मैडा चाईआ हभ कही दा मितु ॥ हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥२॥ मः ५ ॥ गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ ॥ सोई सुहावा थानु जिथै पिरीइे नानक जी तू वुठिआ ॥३॥ पउड़ी ॥ जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥ तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइि खरचि रहंदा ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ इेह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ लेखा कोइि न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ अन्नदु भइिआ सुखु पाइिआ मिलि गुर गोविंदा ॥ सभे काज सवारिअै जा तुधु भावंदा ॥७॥ डखणे मः ५ ॥ डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ फिरदा

कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥१॥ मः ५ ॥ दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ जाणा लख भवे पिरी डिखंदो ता जीवसा ॥२॥ मः ५ ॥ ढहदी जाइ करारि वहणि वह्मदे मै डिठिआ ॥ सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥३॥ पउड़ी ॥ जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ जिनि जनि गुरमुखि बुझिआ सु चहु कुंडी जापै ॥ जो नरु उस की सरणी परै तिसु कंबहि पापै ॥ जनम जनम की मलु उतरै गुर धूड़ी नापै ॥ जिनि हरि भाणा मंनिआ तिसु सोगु न संतापै ॥ हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ ऐसी सोभा जनै की जेवडु हरि परतापै ॥ सभ अंतरि जन वरताइआ हरि जन ते जापै ॥८॥ डखणे मः ५ ॥ जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु ॥ जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस ॥१॥ मः ५ ॥ गिली गिली रोडड़ी भउदी भवि भवि आइ ॥ जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥२॥ मः ५ ॥ डिठा हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीऐ ॥ तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥३॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी दरि गुण गावदा जे हरि प्रभ भावै ॥ प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै ॥ सो मंगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ प्रभ जीउ देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी तृपतावै ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥ प्रभ देखदिआ दुख भुख गई ढाढी कउ मंगणु चिति न आवै ॥ सभे इछा पूरीआ लगि प्रभ कै पावै ॥ हउ निरगुणु ढाढी बखसिएनु प्रभि पुरखि वेदावै ॥९॥ डखणे मः ५ ॥ जा छुटे ता खाकु तू सुंञी कंतु न जाणही ॥ दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रंगु माणही ॥१॥ मः ५ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ मः ५ ॥ रते रंगि पारब्रहम कै मनु तनु अति गुलालु ॥ नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥३॥ पवड़ी ॥ हरि जीउ जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ गुरि भउजलु पारि लम्घाइआ जिता पावाड़ा ॥ गुरमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा ॥ सभि इंद्रीआ वसि करि दितीए सतवंता साड़ा ॥

जितु लाईअनि तितै लगदीआ नह खिंजोताड़ा ॥ जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥१०॥ डखणे मः ५ ॥ जा मूं आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ नानक मन ही मंझि रंगावला पिरी तहिजा नाउ ॥१॥ मः ५ ॥ कपड़ भोग विकार इे हभे ही छार ॥ खाकु लोड़ेदा तंनि खे जो रते दीदार ॥२॥ मः ५ ॥ किआ तकहि बिआ पास करि हीअड़े हिकु अधारु ॥ थीउ संतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥३॥ पउड़ी ॥ विणु करमा हरि जीउ न पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाइे इक घड़ी मुहतु न लगै ॥ चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहंकारु न भगै ॥ हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥ तिचरु थाह न पावई जिचरु साहिब सिउ मन भंगै ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ हरि किरपा ते सुखु पाइआ गुर सतिगुर चरणी लगै ॥११॥ डखणे मः ५ ॥ लोड़ीदो हभ जाइि सो मीरा मीरन्न सिरि ॥ हठ मंझाहू सो धणी चउदो मुखि अलाइि ॥१॥ मः ५ ॥ माणिकू मोहि माउ डिन्ना धणी अपाहि ॥ हिआउ महिजा ठंढड़ा मुखहु सचु अलाइि ॥२॥ मः ५ ॥ मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे ॥३॥ पउड़ी ॥ मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ ॥ मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ॥ मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ॥ मनु अरपिहु हउमै तजहु इितु पंथि जुलाईआ ॥ नित सेविहु साहिबु आपणा सतसंगि मिलाईआ ॥ सभे आसा पूरीआ गुर महलि बुलाईआ ॥ तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥१२॥ डखणे मः ५ ॥ मू थीआऊ तखतु पिरी मह्मिजे पातिसाह ॥ पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥१॥ मः ५ ॥ पिरीआ संदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ जाणु मिठाई इिख बेई पीड़े ना हुटै ॥२॥ मः ५ ॥ ठगा नीहु मत्रोड़ि जाणु गंध्रबा नगरी ॥ सुख घटाऊ डूइि इिसु पंधाणू घर घणे ॥३॥ पउड़ी ॥ अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख अलेखं ॥

खटु दरसन भ्रमते फिरहि नह मिलीऐ भेखं ॥ वरत करहि चंद्राइणा से कितै न लेखं ॥ बेद पड़हि संपूरना ततु सार न पेखं ॥ तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखं ॥ भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखं ॥ भूला मारगि सो पवै जिसु धुरि मसतकि लेखं ॥ तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखं ॥१३॥ डखणे मः ५ ॥ सो निवाहू गडि जो चलाऊ न थीऐ ॥ कार कूड़ावी छडि संमलु सचु धणी ॥१॥ मः ५ ॥ हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ परगटु थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥२॥ मः ५ ॥ मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ नानक दरगह मन्नीअहि मिली निथावे थाउ ॥३॥ पउड़ी ॥ बाहर भेखि न पाईऐ प्रभु अंतरजामी ॥ इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै निकामी ॥ मनु रता कुटंब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ चलदिआ नालि न चलई खिन जाइ बिलामी ॥ बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी ॥ करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥ जो जनु हरि का सेवको हरि तिस की कामी ॥१४॥ डखणे मः ५ ॥ मुखहु अलाइे हभ मरणु पछाणंदो कोइि ॥ नानक तिना खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥१॥ मः ५ ॥ जाणु वसंदो मंझि पछाणू को हेकड़ो ॥ तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु भेटिआ ॥२॥ मः ५ ॥ मतड़ी काँढकु आह पाव धोवंदो पीवसा ॥ मू तनि प्रेमु अथाह पसण कू सचा धणी ॥३॥ पउड़ी ॥ निरभउ नामु विसारिआ नालि माइिआ रचा ॥ आवै जाइि भवाईऐ बहु जोनी नचा ॥ बचनु करे तै खिसकि जाइि बोले सभु कचा ॥ अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ वैरु करे निरवैर नालि झूठे लालचा ॥ मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि करमचा ॥ जमदूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ होआ तपावसु धरम का नानक दरि सचा ॥१५॥ डखणे मः ५ ॥ परभाते प्रभ नामु जपि गुर के चरण धिआइि ॥ जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइि ॥१॥ मः ५ ॥ देह अंधारी अंधु सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जन्नमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥२॥ मः ५ ॥ लोइिण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥

नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥३॥ पउड़ी ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥ एहु आपि तरिआ कुटंब सिउ सभु जगतु तराई ॥ एनि हरि नामा धनु संचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ एनि छडे लालच दुनी के अंतरि लिव लाई ॥ एसु सदा सदा घरि अन्नदु है हरि सखा सहाई ॥ एनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥ होआ एही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥१६॥ डखणे मः ५ ॥ सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै कूड़ी सोइ ॥ नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥१॥ मः ५ ॥ सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा ॥ सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपने हउ खन्नीऐ ॥२॥ मः ५ ॥ सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ मन्न मझाहू लखि तुधहु दूरि न सु पिरी ॥३॥ पउड़ी ॥ धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥ बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ निहचलु सचु खुदाइ इेकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥१७॥ डखणे मः ५ ॥ डिठी हभ ढंढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंढा होइ ॥१॥ मः ५ ॥ आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि बलि गईआस ॥२॥ मः ५ ॥ विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिएदि ॥ बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरेदि ॥३॥ पउड़ी ॥ तट तीरथ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी ॥ कोटि तेतीसा देवते सणु इंद्रै जासी ॥ सिमृति सासत्र बेद चारि खटु दरस समासी ॥ पोथी पंडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ जती सती संनिआसीआ सभि कालै वासी ॥ मुनि जोगी दिगंबरा जमै सणु जासी ॥ जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि बिनासी ॥ थिरु पारब्रहमु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥१८॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ सै न्नगे नह न्नग भुखे लख न भुखिआ ॥ डुखे कोड़ि न डुख नानक पिरी पिखंदो सुभ दिसटि

॥१॥ मः ५ ॥ सुख समूहा भोग भूमि सबाई को धणी ॥ नानक हभो रोगु मिरतक नाम विहूणिआ ॥२॥ मः ५ ॥ हिकस कूं तू आहि पछाणू भी हिकु करि ॥ नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥३॥ पउड़ी ॥ निहचलु इेकु नराइणो हरि अगम अगाधा ॥ निहचलु नामु निधानु है जिसु सिमरत हरि लाधा ॥ निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद गुरमुखि गावाधा ॥ सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि अराधा ॥ दइिआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाधा ॥ निहचलु मसतकि लेखु लिखिआ सो टलै न टलाधा ॥ निहचल संगति साध जन बचन निहचलु गुर साधा ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सदा सदा आराधा ॥१९॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ जो डुबंदो आपि सो तराइे किन्ह खे ॥ तारेदड़ो भी तारि नानक पिर सिउ रतिआ ॥१॥ मः ५ ॥ जिथै कोइि कथंनि नाउ सुणंदो मा पिरी ॥ मूं जुलाऊं तथि नानक पिरी पसंदो हरिए थीएसि ॥२॥ मः ५ ॥ मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह ॥ नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह ॥३॥ पउड़ी ॥ नैनी देखउ गुर दरसनो गुर चरणी मथा ॥ पैरी मारगि गुर चलदा पखा फेरी हथा ॥ अकाल मूरति रिदै धिआइिदा दिनु रैनि जपंथा ॥ मै छडिआ सगल अपाइिणो भरवासै गुर समरथा ॥ गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ भोगहु भुंचहु भाईहो पलै नामु अगथा ॥ नामु दानु इिसनानु दिड़ु सदा करहु गुर कथा ॥ सहजु भइिआ प्रभु पाइिआ जम का भउ लथा ॥२०॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ लगड़ीआ पिरीअंनि पेखंदीआ ना तिपीआ ॥ हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठो कोइि ॥१॥ मः ५ ॥ कथड़ीआ संताह ते सुखाऊ पंधीआ ॥ नानक लधड़ीआ तिन्हाह जिना भागु मथाहड़ै ॥२॥ मः ५ ॥ डूंगरि जला थला भूमि बना फल कंदरा ॥ पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ नानक पेखि जीए इिकतु सूति परोतीआ ॥३॥ पउड़ी ॥ हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥ हरि जी मेरी सार करे हम हरि के बालक ॥ सहजे सहजि खिलाइिदा नही करदा आलक ॥ अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइिक ॥ मुहि मंगाँ सोई देवदा हरि पिता

सुखदाइक ॥ गिआनु रासि नामु धनु सउपिएनु इसु सउदे लाइक ॥ साझी गुर नालि बहालिआ सरब सुख पाइक ॥ मै नालहु कदे न विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥२१॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ॥ एइ जीवंदे विछुड़हि एइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥१॥ मः ५ ॥ नानक बिजुलीआ चमकंनि घुरनि् घटा अति कालीआ ॥ बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहावीआ ॥२॥ मः ५ ॥ जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥ सेजड़ीआ सोइन्न हीरे लाल जड़ंदीआ ॥ सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ॥३॥ पउड़ी ॥ कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥ जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ बिनु करमा किछू न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ गुर मिलि भउ गोविंद का भै डरु दूरि करणा ॥ भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि जनमि न मरणा ॥ हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ बोहिथु नानक देउ गुरु जिसु हरि चड़ाइे तिसु भउजलु तरणा ॥२२॥ सलोक मः ५ ॥ पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥१॥ मः ५ ॥ मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥ जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥२॥ मः ५ ॥ जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥ भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥३॥ पउड़ी ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥ सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥ भन्नण घड़ण समरथु है एपति सभ परलै ॥ करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ गहिर गभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥ सोई कंमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥२३॥१॥२॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ बूडहुगे परवार सकल सिउ रामु न जपहु अभागे ॥१॥ रहाउ ॥ बेद

पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥१॥ जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥२॥ मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ माइिआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥३॥ नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥४॥१॥ बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥१॥ सार सुखु पाईऐ रामा ॥ रंगि रवहु आतमै राम ॥१॥ रहाउ ॥ जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ मनु जीते जगु जीतिआ जाँ ते बिखिआ ते होइि उदासु ॥२॥ अंजनु देइि सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ गिआन अंजनु जिह पाइिआ ते लोइिन परवानु ॥३॥ कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइि ॥ अंतरगति हरि भेटिआ अब मेरा मनु कतहू न जाइि ॥४॥२॥ रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ तेरे कहने की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥१॥ रामु जिह पाइिआ राम ॥ ते भवहि न बारै बार ॥१॥ रहाउ ॥ झूठा जगु डहकै घना दिन दुइि बरतन की आस ॥ राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥२॥ गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइिआ निरासु ॥ सभु सचु नदरी आइिआ जउ आतम भइिआ उदासु ॥३॥ राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ कहु कबीर कंचनु भइिआ भ्रमु गइिआ समुद्रै पारि ॥४॥३॥ उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ सुन्नहि सुन्नु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइि जावहिगे ॥१॥ बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ आवन जाना हुकमु तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥ दरसनु छोडि भइे समदरसी इेको नामु धिआवहिगे ॥२॥ जित हम लाइे तित ही लागे तैसे करम कमावहिगे ॥ हरि जी कृपा करे जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥३॥ जीवत मरहु मरहु

फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ॥ कहु कबीर जो नामि समाने सुन्न रहिआ लिव सोई ॥४॥४॥ जउ तुम् मो कउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति बतावहु ॥ इेक अनेक होइि रहिए सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥१॥ राम मो कउ तारि कहाँ लै जई है ॥ सोधउ मुकति कहा देउ कैसी करि प्रसादु मोहि पाई है ॥१॥ रहाउ ॥ तारन तरनु तबै लगु कहीअै जब लगु ततु न जानिआ ॥ अब तउ बिमल भइे घट ही महि कहि कबीर मनु मानिआ ॥२॥५॥ जिनि गड़ कोट कीइे कंचन के छोडि गइिआ सो रावनु ॥१॥ काहे कीजतु है मनि भावनु ॥ जब जमु आइि केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावन ॥१॥ रहाउ ॥ कालु अकालु खसम का कीन्ा इिहु परपंचु बधावनु ॥ कहि कबीर ते अंते मुकते जिन् हिरदै राम रसाइिनु ॥२॥६॥ देही गावा जीउ धर महतउ बसहि पंच किरसाना ॥ नैनू नकटू स्रवनू रसपति इिंद्री कहिआ न माना ॥१॥ बाबा अब न बसउ इिह गाउ ॥ घरी घरी का लेखा मागै काइिथु चेतू नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ धरम राइि जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥ पंच कृसानवा भागि गइे लै बाधिए जीउ दरबारी ॥२॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ अब की बार बखसि बंदे कउ बहुरि न भउजलि फेरा ॥३॥७॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअड़े ॥ बिनु भै अनभउ होइि वणाह्मबै ॥१॥ सहु हदूरि देखै ताँ भउ पवै बैरागीअड़े ॥ हुकमै बूझै त निरभउ होइि वणाह्मबै ॥२॥ हरि पाखंडु न कीजई बैरागीअड़े ॥ पाखंडि रता सभु लोकु वणाह्मबै ॥३॥ तृसना पासु न छोडई बैरागीअड़े ॥ ममता जालिआ पिंडु वणाह्मबै ॥४॥ चिंता जालि तनु जालिआ बैरागीअड़े ॥ जे मनु मिरतकु होइि वणाह्मबै ॥५॥ सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअड़े ॥ जे लोचै सभु कोइि वणाह्मबै ॥६॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअड़े ॥ सहजे पावै सोइि वणाह्मबै ॥७॥ कहु कबीर इिक बेनती बैरागीअड़े ॥ मो कउ भउजलु पारि

उतारि वणाह्मबै ॥८॥१॥८॥ राजन कउनु तुमारै आवै ॥ ऐसो भाउ बिदर को देखिए एहु गरीबु मोहि भावै ॥१॥ रहाउ ॥ हसती देखि भरम ते भूला स्री भगवानु न जानिआ ॥ तुमरो दूधु बिदर को पानो अंमृतु करि मै मानिआ ॥१॥ खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥२॥६॥ सलोक कबीर ॥ गगन दमामा बाजिए परिए नीसानै घाउ ॥ खेतु जु माँडिए सूरमा अब जूझन को दाउ ॥१॥ सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥ पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥२॥२॥

कबीर का सबदु रागु मारू बाणी नामदेउ जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिए ॥ मुकति भइिए चउहूं जुग जानिए जसु कीरति माथै छत्रु धरिए ॥१॥ राजा राम जपत को को न तरिए ॥ गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिए ॥१॥ रहाउ ॥ संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिए ॥ निरभउ भइे राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिए ॥२॥ अंबरीक कउ दीए अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिए ॥ नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिए ॥३॥ भगत हेति मारिए हरनाखसु नरसिंघ रूप होइि देह धरिए ॥ नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो ॥४॥१॥ मारू कबीर जीउ ॥ दीनु बिसारिए रे दिवाने दीनु बिसारिए रे ॥ पेटु भरिए पसूआ जिउ सोइिए मनुखु जनमु है हारिए ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगति कबहू नही कीनी रचिए धंधै झूठ ॥ सुआन सूकर बाइिस जिवै भटकतु चालिए ऊठि ॥१॥ आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥२॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिए रामु ॥३॥ कहि कबीर चेतै नही मूरखु मुगधु गवारु ॥ रामु नामु जानिए नही कैसे उतरसि पारि ॥४॥१॥

रागु मारू बाणी जैदेउ जीउ की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥१॥ मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ तेरी दुबिधा दृसटि संमानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि संमानि आइआ ॥ बदति जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रहमु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥२॥१॥ कबीरु ॥ मारू ॥ रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥१॥ रहाउ ॥ लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥१॥ जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा ॥ सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा ॥२॥ धरम राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जाँहिगा ॥३॥१॥

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥ मारू ॥ सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥१॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिए परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥३॥२॥१५॥

तुखारी छंत महला १ बारह माहा

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ॥ सिरि सिरि सुख सहमा देहि सु तू भला ॥ हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अंमृतु पीवाँ ॥ रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि करम सुकरमा ॥ नानक पंथु निहाले सा धन तू सुणि आतम रामा ॥१॥ बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ सा धन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ नव घर थापि महल घरु ऊचउ निज घरि वासु मुरारे ॥ सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रंगि रावै ॥ नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥२॥ तू सुणि हरि रस भिन्ने प्रीतम आपणे ॥ मनि तनि रवत रवन्ने घड़ी न बीसरै ॥ किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥३॥ बरसै अंमृत धार बूंद सुहावणी ॥ साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥ उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥ नानक वरसै अंमृत बाणी करि किरपा घरि आवै ॥४॥ चेतु बसंतु भला भवर

सुहावड़े ॥ बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥ पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माइे ॥ नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाइे ॥५॥ वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ धन देखै हरि दुआरि आवहु दइिआ करे ॥ घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ कीमति कउण करे तुधु भावाँ देखि दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥६॥ माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥ साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥७॥ आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥ धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ रथु फिरै छाइिआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥ अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥८॥ सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आइे ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाइे ॥ पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराइे ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइिआ दुखु माइे ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावइे ॥ नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावइे ॥९॥ भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥ प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइिअंगम फिरहि डसंते ॥ मछर डंग साइिर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥१०॥ असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइि खुई ॥ झूठि विगुती ता पिर मुती

कुकह काह सि फुले ॥ आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ दह दिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा ॥ नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥११॥ कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥ दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥ दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन एमाहै सरसी ॥ अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥ नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥ नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥१२॥ मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥ गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥ गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥ नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥१३॥ पोखि तुखारु पड़ै वणु तृणु रसु सोखै ॥ आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥ दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥ नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥१४॥ माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥ साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥ प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥ गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ पुन्न दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥१५॥ फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥ अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आए ॥ बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाए ॥ हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥१६॥ बे दस माह रुती थिती वार भले ॥ घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥ जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥ घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी

गुरमुखि मसतकि भागो ॥ नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥१७॥१॥ तुखारी महला १ ॥ पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीऐ रैणि अंधिआरी राम ॥ वखरु राखु मुईऐ आवै वारी राम ॥ वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए ॥ रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए ॥ राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥ नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥१॥ दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ वखरु राखु मुईऐ खाजै खेती राम ॥ राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥२॥ तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम ॥ माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥ नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ जंमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी ॥३॥ चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ तिन घरु राखिअड़ा जुो अनदिनु जागै राम ॥ गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ कर कंपि चरण सरीरु कंपै नैण अंधुले तनु भसम से ॥ नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥४॥ खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम ॥ रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम ॥ बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ ॥ आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ ॥ घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥५॥२॥ तुखारी महला १ ॥ तारा चड़िआ लमा किउ नदरि निहालिआ राम ॥ सेवक पूर करमा सतिगुरि सबदि दिखालिआ राम ॥ गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिसि देखि बीचारिआ ॥ धावत पंच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ अंतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करमा ॥

नानक हउमै मारि पतीणे तारा चड़िआ लम्मा ॥१॥ गुरमुखि जागि रहे चूकी अभिमानी राम ॥ अनदिनु भोरु भइिआ साचि समानी राम ॥ साचि समानी गुरमुखि मनि भानी गुरमुखि साबतु जागे ॥ साचु नामु अंमृतु गुरि दीआ हरि चरनी लिव लागे ॥ प्रगटी जोति जोति महि जाता मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ नानक भोरु भइिआ मनु मानिआ जागत रैणि विहाणी ॥२॥ अउगण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ इेको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ रवि रहिआ सोई अवरु न कोई मन ही ते मनु मानिआ ॥ जिनि जल थल तृभवण घटु घटु थापिआ सो प्रभु गुरमुखि जानिआ ॥ करण कारण समरथ अपारा तृबिधि मेटि समाई ॥ नानक अवगण गुणह समाणे असी गुरमति पाई ॥३॥ आवण जाण रहे चूका भोला राम ॥ हउमै मारि मिले साचा चोला राम ॥ हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग संतापै ॥ जोती अंदरि जोति समाणी आपु पछाता आपै ॥ पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर भाणी ॥ नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥४॥३॥ तुखारी महला १ ॥ भोलावड़ै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ पिरि छोडिअड़ी सुती पिर की सार न जाणी ॥ पिरि छोडी सुती अवगणि मुती तिसु धन विधण राते ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगुती हउमै लगी ताते ॥ उडरि हंसु चलिआ फुरमाइिआ भसमै भसम समाणी ॥ नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥१॥ सुणि नाह पिआरे इिक बेन्नती मेरी ॥ तू निज घरि वसिअड़ा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ बिनु अपने नाहै कोइि न चाहै किआ कहीअै किआ कीजै ॥ अंमृत नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥ विणु नावै को संगि न साथी आवै जाइि घनेरी ॥ नानक लाहा लै घरि जाईअै साची सचु मति तेरी ॥२॥ साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ॥ सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी ॥ मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ मारगु पंथु न जाणउ विखड़ा किउ पाईअै पिरु पारे ॥ सतिगुर सबदी मिलै विछुन्नी तनु मनु आगै राखै ॥ नानक अंमृत बिरखु महा रस फलिआ मिलि प्रीतम रसु चाखै ॥३॥ महलि

बुलाइड़ीऐ बिलमु न कीजै ॥ अनदिनु रतड़ीऐ सहजि मिलीजै ॥ सुखि सहजि मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारि समाणी ॥ साचै राती मिलै मिलाई मनमुखि आवण जाणी ॥ जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥ नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि ततु बीचारी ॥४॥४॥ तुखारी महला १ ॥ मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले ॥ गुरि अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले ॥ गुरि अलखु लखाइआ जा तिसु भाइआ जा प्रभि किरपा धारी ॥ जगजीवनु दाता पुरखु बिधाता सहजि मिले बनवारी ॥ नदरि करहि तू तारहि तरीऐ सचु देवहु दीन दइआला ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा तू सरब जीआ प्रतिपाला ॥१॥ भरिपुरि धारि रहे अति पिआरे ॥ सबदे रवि रहिआ गुर रूपि मुरारे ॥ गुर रूप मुरारे तृभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ रंगी जिनसी जंत उपाइे नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ अपरंपरु आपे थापि उथापे तिसु भावै सो होवै ॥ नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥२॥ गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणो ॥ सचु साचि समाइआ चूका आवण जाणो ॥ सचु साचि पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥ साचे ऊपरि अवरु न दीसै साचे साचि समावै ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मेरा बंधन खोलि निरारे ॥ नानक जोती जोति समाणी जा मिलिआ अति पिआरे ॥३॥ सच घरु खोजि लहे साचा गुर थानो ॥ मनमुखि नह पाईऐ गुरमुखि गिआनो ॥ देवै सचु दानो सो परवानो सद दाता वड दाणा ॥ अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा ॥ दोति उचापति लेखु न लिखीऐ प्रगटी जोति मुरारी ॥ नानक साचा साचै राचा गुरमुखि तरीऐ तारी ॥४॥५॥ तुखारी महला १ ॥ ए मन मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम ॥ ए मन मेरिआ छडि अवगण गुणी समाणिआ राम ॥ बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ नही मेला ॥ किउ दुतरु तरीऐ जम डरि मरीऐ जम का पंथु दुहेला ॥ मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटि रुधा किआ करे ॥ बंधनि बाधिआ इन बिधि छूटै गुरमुखि सेवै नरहरे ॥१॥ ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम ॥ ए मन

मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ हरि सिमरि इेकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइिआ ॥ पउणु पाणी अगनि बाधे गुरि खेलु जगति दिखाइिआ ॥ आचारि तू वीचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥ सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥२॥ इे मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ इे मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ गुण गाइि राम रसाइि रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिअै कारज सारइे ॥ रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारइे ॥३॥ इे मन मेरिआ तू किआ लै आइिआ किआ लै जाइिसी राम ॥ इे मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइिसी राम ॥ धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि भाउ पछाणहे ॥ मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अंमृत पी रसो ॥ हरि नामु धिआईअै सबदि रसु पाईअै वडभागि जपीअै हरि जसो ॥४॥ इे मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ॥ इे मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अंबड़ै राम ॥ पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लम्घावइे ॥ मिलि साधसंगति करहि रलीआ फिरि न पछोतावइे ॥ करि दइिआ दानु दइिआल साचा हरि नाम संगति पावए ॥ नानकु पइिअंपै सुणहु प्रीतम गुर सबदि मनु समझावए ॥५॥६॥

तुखारी छंत महला ४   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीअै राम ॥ जब लगु दरसु न होइि किउ अंमृतु पीवीअै राम ॥ किउ अंमृतु पीवीअै हरि बिनु जीवीअै तिसु बिनु रहनु न जाइे ॥ अनदिनु पृउ पृउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाइे ॥ अपणी कृपा करहु हरि पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ गुर कै सबदि मिलिआ मै प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥१॥ जब देखाँ पिरु पिआरा हरि गुण

रसि रवा राम ॥ मेरै अंतरि होइ विगासु पृउ पृउ सचु नित चवा राम ॥ पृउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे तृपति न आवइे ॥ सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवइे ॥ दइिआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाइे ॥ अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाइे ॥२॥ हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीअै राम ॥ गुर देवहु सबदु सुभाइि मै मूड़ निसतारीअै राम ॥ हम मूड़ मुगध किछु मिति नही पाई तू अगंमु वड जाणिआ ॥ तू आपि दइिआलु दइिआ करि मेलहि हम निरगुणी निमाणिआ ॥ अनेक जनम पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति आइे ॥ दइिआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाइे ॥३॥ गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइिआ राम ॥ जोती जोति मिलाइि काइिआ गड़ु सोहिआ राम ॥ काइिआ गड़ु सोहिआ मेरै प्रभि मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीअै ॥ अदृसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीअै ॥ सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ आपे दइिआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥४॥१॥ तुखारी महला ४ ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइिआ ॥ गुर वाकि सतिगुर जो भाइि चले तिन हरि हरि आपि मिलाइिआ ॥ जोती जोति मिलि जोति समाणी हरि कृपा करि धरणीधरा ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥१॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ तू अलख अभेउ अगंमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ धनु धन्नु ते जन पुरख पूरे जिन गुर संतसंगति मिलि गुण रवे ॥ बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥२॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन

मनि चिति इकु अराधिआ ॥ तिन का जनमु सफलिए सभु कीआ करतै जिन गुर बचनी सचु भाखिआ ॥ ते धन्नु जन वड पुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥३॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ हमरै हाथि किछु नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ॥ जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ नानक दइआलु होआ तिन ऊपरि जिन गुर का भाणा मंनिआ भला ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥४॥२॥ तुखारी महला ४ ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता सृसटि नाथु ॥ तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि नामु अराधिआ ॥ तिन के पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ धनु धन्नु ते जन जिन हरि नामु जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता सृसटि नाथु ॥१॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ जिन जपिआ हरि ते मुकत प्राणी तिन के ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ एइि हलति पलति जन भइे सुहेले हरि राखि लीइे रखनहारि ॥ हरि संतसंगति जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बणी ॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥२॥ तू थान थन्नतरि हरि इेकु हरि इेको इेकु रविआ ॥ वणि तृणि तृभवणि सभ सृसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ सभि चवहि हरि हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवइे ॥ सो धन्नु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावइे ॥ सो सफलु दरसनु देहु करते जिसु हरि हिरदै नामु सद चविआ ॥ तू थान थन्नतरि हरि इेकु हरि इेको इेकु रविआ ॥३॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण टिकहि ॥ हरि गुण हिरदै

टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥४॥३॥ तुखारी महला ४ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ दुरमति मैलु हरी अगिआनु अंधेरु गइआ ॥ गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ जनम मरण दुख खिन महि बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥१॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥२॥ प्रथम आइे कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ खबरि भई संसारि आइे त्रै लोआ ॥ देखणि आइे तीनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ जिन परसिआ गुरु सतिगुरू पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥ जोगी दिगंबर संनिआसी खटु दरसन करि गइे गोसटि ढोआ ॥ प्रथम आइे कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥३॥ दुतीआ जमुन गइे गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लम्घाइि दीआ ॥ सभ छुटी सतिगुरू पिछै जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर बचनि मारगि जो पंथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ सभ गुरू गुरू जगतु बोलै गुर कै नाइि लइिऐ सभि छुटकि गइआ ॥ दुतीआ जमुन गइे गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥४॥ तृतीआ आइे सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥ आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ भाई हम करह किआ किसु पासि माँगह सभ

भागि सतिगुर पिछै पई ॥ जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भंनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ तृतीआ आइे सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥५॥ मिलि आइे नगर महा जना गुर सतिगुर एट गही ॥ गुरु सतिगुरु गुरु गोविदु पुछि सिमृति कीता सही ॥ सिमृति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि स्रीरामि करि गुर गोविदु धिआइिआ ॥ देही नगरि कोटि पंच चोर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइिआ ॥ कीरतन पुराण नित पुन्न होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥ मिलि आइे नगर महा जना गुर सतिगुर एट गही ॥६॥४॥१०॥

तुखारी छंत महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥ सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ इिहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥ कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इिक दीना ॥ देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥१॥ इिहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ खन्नीऐ वंञा दरसन तेरे ॥ दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख दृसटि पेखि जीवा ॥ अंमृत नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ आस पिआसी पिर कै ताई जिउ चातृकु बूंदेरे ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥२॥ तू साचा साहिबु साहु अमिता ॥ तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रंग बनि आइे ॥ सोई करमु कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाइे ॥ जा कउ कृपा करी जगदीसुरि तिनि साधसंगि मनु जिता ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी जीउ पिंडु तउ दिता ॥३॥ निरगुणु राखि लीआ संतन का सदका ॥ सतिगुरि ढाकि लीआ मोहि पापी पड़दा ॥ ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ उसतति कहनु न जाइि तुमारी कउणु कहै तू कद का ॥ नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥४॥१॥११॥

केदारा महला ४ घरु १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ अगम अगोचरु न जाई हरि लखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥१॥ हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ जिस नो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥२॥ हरि नामु अराधहि से धन्नु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥३॥ हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मो कउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तिउ नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥४॥१॥

केदारा महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ सतिगुरू के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तू रहु रे ॥ मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणु राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥१॥

अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥२॥१॥२॥

केदारा महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

माई संतसंगि जागी ॥ प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥ बिसरी तिआस बिडानी ॥१॥ अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ नानक प्रिअ अंम्रित बानी ॥२॥१॥

केदारा महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन गवनु करउ ॥ खटु करम जुगति धिआनु धरउ ॥ उपाव सगल करि हारिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥१॥ सरणि बंदन करुणा पते ॥ भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ एक तूही दीन दइआल ॥ प्रभ चरन नानक आसरो ॥ उधरे भ्रम मोह सागर ॥ लगि संतना पग पाल ॥२॥१॥२॥

केदारा महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सरनी आइओ नाथ निधान ॥ नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥१॥ रहाउ ॥ सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥ देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥१॥ गोपाल दइआल गोबिद दमोदर निरमल कथा गिआन ॥ नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥२॥१॥३॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के दरसन को मनि चाउ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ करउ सेवा सत पुरख पिआरे

जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥१॥ सरब प्रतिपालहि सगल समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥२॥२॥४॥ केदारा महला ५ ॥ प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ खूले कपट धपट बुझि त्रिसना जीवउ पेखि दरसारी ॥१॥ कउनु सु जतनु उपाउ किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ मानु अभिमानु मोहु तजि नानक संतह संगि उधारी ॥२॥३॥५॥ केदारा महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ करहु क्रिपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ काढि लीए प्रभ आन बिखै ते साधसंगि मनु लावहु ॥ भ्रमु भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥१॥ सभ की रेन होइ मनु मेरा अहंबुधि तजावहु ॥ अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥२॥४॥६॥ केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ तजि गोपाल आन रंगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ धनु जोबनु स्मपै सुख भोगवै संगि न निबहत मात ॥ म्रिग त्रिसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रंगि रात ॥१॥ मान मोह महा मद मोहत काम क्रोध कै खात ॥ करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥२॥५॥७॥ केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ दीना नाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ सुत स्मपति बिखिआ रस भोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ नामु निधानु गाउ गुन गोबिंद उधरु सागर के खात ॥१॥ सरनि समरथ अकथ अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ नानक दीन धूरि जन बांछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥२॥६॥८॥

केदारा महला ५ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बिसरत नाहि मन ते हरी ॥ अब इहि प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ बूंद कहा

तिआगि चातृक मीन रहत न घरी ॥ गुन गोपाल उचारु रसना टेव इेह परी ॥१॥ महा नाद कुरंक मोहिए बेधि तीखन सरी ॥ प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥२॥१॥६॥ केदारा महला ५ ॥ प्रीतम बसत रिद महि खोर ॥ भरम भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु अपनी एर ॥ १॥ रहाउ ॥ अधिक गरत संसार सागर करि दइिआ चारहु धोर ॥ संतसंगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ॥१॥ गरभ कुंट महि जिनहि धारिए नही बिखै बन महि होर ॥ हरि सकत सरन समरथ नानक आन नही निहोर ॥२॥२॥१०॥ केदारा महला ५ ॥ रसना राम राम बखानु ॥ गुन गोपाल उचारु दिनु रैनि भइे कलमल हान ॥ रहाउ ॥ तिआगि चलना सगल संपत कालु सिर परि जानु ॥ मिथन मोह दुरंत आसा झूठु सरपर मानु ॥१॥ सति पुरख अकाल मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ नामु निधानु लाभु नानक बसतु इिह परवानु ॥२॥३॥११॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम को आधारु ॥ कलि कलेस न कछु बिआपै संतसंगि बिउहारु ॥ रहाउ ॥ करि अनुग्रहु आपि राखिए नह उपजतउ बेकारु ॥ जिसु परापति होइि सिमरै तिसु दहत नह संसारु ॥१॥ सुख मंगल आन्नद हरि हरि प्रभ चरन अंमृत सारु ॥ नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥२॥४॥१२॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम बिनु ध्रिगु स्रोत ॥ जीवन रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन होत ॥ रहाउ ॥ खात पीत अनेक बिंजन जैसे भार बाहक खोत ॥ आठ पहर महा स्रमु पाइिआ जैसे बिरख जंती जोत ॥१॥ तजि गोपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी रोत ॥ कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कंठि परोत ॥२॥५॥१३॥ केदारा महला ५ ॥ संतह धूरि ले मुखि मली ॥ गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपहि कली ॥ रहाउ ॥ गुर बचनि कारज सरब पूरन ईत ऊत न हली ॥ प्रभ इेक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥१॥ गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ प्रभ चरन सरन अनाथु आइिए नानक हरि संगि चली ॥२॥६॥१४॥ केदारा महला ५ ॥

हरि के नाम की मन रुचै ॥ कोटि साँति अन्नद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ संत मारगि चलत प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥१॥ चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥२॥७॥१५॥

केदारा छंत महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ॥ संतन संगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भन्नै घालिआ ॥ हरि गुण निधि गाइे सहज सुभाइे प्रेम महा रस माता ॥ नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दूख किनि सहीऐ चातृक बूंद पिआसिआ ॥ कब रैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ हरि दरसि मनु लागा दिनसु सभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ नानक दासु कहै बेन्नती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥२॥ सास बिना जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन कमल मनु बेधिआ ॥ हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ हरि सिउ जाइ मिलणा साधसंगि रहणा सो सुखु अंकि न मावै ॥ होहु कृपाल नानक के सुआमी हरि चरनह संगि समावै ॥३॥ खोजत खोजत प्रभ मिले हरि करुणा धारे ॥ निरगुणु नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु बखानिआ ॥ भगति वछलु सुनि अंचलुो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ सुख सागरुो पाइिआ सहज सुभाइिआ जनम मरन दुख हारे ॥ करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥४॥१॥

राागु केदारा बाणी कबीर जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥१॥ तेरा जनु इेकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीनै सोई ॥१॥ रहाउ ॥ रज गुण तम गुण सत गुण कहीअै इिह तेरी सभ माइिआ ॥ चउथे पद कउ जो नरु चीनै तिन् ही परम पदु पाइिआ ॥२॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ तृसना अरु माइिआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥३॥ जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥ निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥४॥१॥ किनही बनजिआ काँसी ताँबा किनही लउग सुपारी ॥ संतहु बनजिआ नामु गोबिद का अैसी खेप हमारी ॥१॥ हरि के नाम के बिआपारी ॥ हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ साचे लाइे तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ साची बसतु के भार चलाइे पहुचे जाइि भंडारी ॥२॥ आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥३॥ मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥४॥२॥ री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ मनु मतवार मेर सर भाठी अंमृत धार चुआवउ ॥१॥ बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ भै बिचि भाउ भाइि कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ जेते घट अंमृतु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥२॥ नगरी इेकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ तृकुटी छूटै दसवा दरु खूलै ता मनु खीवा भाई ॥३॥ अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ उबट चलन्ते इिहु मदु पाइिआ जैसे खोंद खुमारी ॥४॥३॥ काम क्रोध तृसना के लीने गति नही इेकै जानी ॥ फूटी आखै

कछू न सूझै बूडि मूडे बिनु पानी ॥१॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥१॥ रहाउ ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम ते कालु न दूरे ॥ अनिक जतन करि इहु तनु राखहु रहै अवसथा पूरे ॥२॥ आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥ जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै इेको नामु बखानी ॥३॥ बलूआ के घरूआ महि बसते फुलवत देह अइिआने ॥ कहु कबीर जिह रामु न चेतिए बूडे बहुतु सिआने ॥४॥४॥ टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाउ भगति सिउ काजु न कछूअै मेरो कामु दीवान ॥१॥ रामु बिसारिए है अभिमानि ॥ कनिक कामनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥१॥ रहाउ ॥ लालच झूठ बिकार महा मद इिह बिधि अउध बिहानि ॥ कहि कबीर अंत की बेर आइि लागो कालु निदानि ॥२॥५॥ चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइि ॥ इितनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु लै जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै दुआरै लउ संगि माइि ॥ मरहट लगि सभु लोगु कुटंबु मिलि हंसु इिकेला जाइि ॥१॥ वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइि ॥ कहतु कबीरु रामु की न सिमरहु जनमु अकारथु जाइि ॥२॥६॥

राग़ु केदारा बाणी रविदास जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥१॥ रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥ किसु जाति ते किह पदहि अमरिए राम भगति बिसेख ॥१॥ रहाउ ॥ सुआन सत्रु अजातु सभ ते कृस्न लावै हेतु ॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥२॥ अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गइे हरि कै पासि ॥ अैसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥३॥१॥

रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥ तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥१॥ किआ कहीऐ किछु कही न जाइ ॥ जो किछु अहै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ किसु आगै कीचै अरदासि ॥२॥ आखणु सुनणा तेरी बाणी ॥ तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥३॥ करे कराइे जाणै आपि ॥ नानक देखै थापि उथापि ॥४॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु भैरउ महला १ घरु २ ॥ गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥ सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥१॥ भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥ नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरु देवा गुरु अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥२॥ मनु राजा मनु मन ते मानिआ मनसा मनहि समाई ॥ मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥३॥ गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले संसारा ॥ नानक साहिबु भरिपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥४॥१॥२॥ भैरउ महला १ ॥ नैनी द्रिसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥ रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥१॥ प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥

साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइिए ॥१॥ रहाउ ॥ तन महि कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥ गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इिन बिधि तरु तू तारी ॥२॥ बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥ जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ ॥३॥ रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ प्रणवति नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥३॥ भैरउ महला १ ॥ भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥ नेत्री धुंधि करन भइे बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥१॥ अंधुले किआ पाइिआ जगि आइि ॥ रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु गवाइि ॥१॥ रहाउ ॥ जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥ संत जना की निंदा विआपसि पसू भइे कदे होहि न नीके ॥२॥ अंमृत का रसु विरली पाइिआ सतिगुर मेलि मिलाइे ॥ जब लगु सबद भेदु नही आइिआ तब लगु कालु संताइे ॥३॥ अन को दरु घरु कबहू न जानसि इेको दरु सचिआरा ॥ गुर परसादि परम पदु पाइिआ नानकु कहै विचारा ॥४॥३॥४॥ भैरउ महला १ ॥ सगली रैणि सोवत गलि फाही दिनसु जंजालि गवाइिआ ॥ खिनु पलु घड़ी नही प्रभु जानिआ जिनि इिहु जगतु उपाइिआ ॥१॥ मन रे किउ छूटसि दुखु भारी ॥ किआ ले आवसि किआ ले जावसि राम जपहु गुणकारी ॥१॥ रहाउ ॥ ऊंधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अंधै सिरि धंधा ॥ कालु बिकालु सदा सिरि तेरै बिनु नावै गलि फंधा ॥२॥ डगरी चाल नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई ॥ सासत्र बेद त्रै गुण है माइिआ अंधुलउ धंधु कमाई ॥३॥ खोइिए मूलु लाभु कह पावसि दुरमति गिआन विहूणे ॥ सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे ॥४॥४॥५॥ भैरउ महला १ ॥ गुर कै संगि रहै दिनु राती रामु रसनि रंगि राता ॥ अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि अंतरि जाणि पछाता ॥१॥ सो जनु अैसा मै मनि भावै ॥ आपु मारि अपरंपरि राता गुर की कार कमावै ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरखु आदेसो ॥ घट घट

अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥२॥ साचि रते सचु अंमृतु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ निरमल नामु अंमृत रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥३॥ गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु सखाई ॥४॥५॥६॥ भैरउ महला १ ॥ हिरदै नामु सरब धनु धारणु गुर परसादी पाईऐ ॥ अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ॥१॥ मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावसि डूबि मुडे बिनु पानी ॥२॥ धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि गवारा ॥ बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥३॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ अंतरि बाहरि इको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥४॥६॥७॥ भैरउ महला १ ॥ जगन होम पुन्न तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥१॥ राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥१॥ रहाउ ॥ पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै ॥ बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥२॥ डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥ राम नाम बिनु साँति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥३॥ जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत्र छोडि तनि नगनु भइआ ॥ राम नाम बिनु तृपति न आवै किरत कै बाँधै भेखु भइआ ॥४॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ ॥ गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥५॥७॥८॥

रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥ जाति का गरबु न करि मूरख

गवारा ॥ इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥१॥ रहाउ ॥ चारे वरन आखै सभु कोई ॥ ब्रहमु बिंद ते सभ एपति होई ॥२॥ माटी इेक सगल संसारा ॥ बहु बिधि भाँडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥ पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥ घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥ कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥५॥१॥ भैरउ महला ३ ॥ जोगी गृही पंडित भेखधारी ॥ इे सूते अपणै अह्मकारी ॥१॥ माइिआ मदि माता रहिआ सोइि ॥ जागतु रहै न मूसै कोइि ॥१॥ रहाउ ॥ सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ॥ पंच दूत एहु वसगति करै ॥२॥ सो जागै जो ततु बीचारै ॥ आपि मरै अवरा नह मारै ॥३॥ सो जागै जो इेको जाणै ॥ परकिरति छोडै ततु पछाणै ॥४॥ चहु वरना विचि जागै कोइि ॥ जमै कालै ते छूटै सोइि ॥५॥ कहत नानक जनु जागै सोइि ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री होइि ॥६॥२॥ भैरउ महला ३ ॥ जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ साचे लागै साचा फलु पाई ॥१॥ रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥१॥ रहाउ ॥ इेहु आकारु तेरा है धारा ॥ खिन महि बिनसै करत न लागै बारा ॥२॥ करि प्रसादु इिकु खेलु दिखाइिआ ॥ गुर किरपा ते परम पदु पाइिआ ॥३॥ कहत नानकु मारि जीवाले सोइि ॥ अैसा बूझहु भरमि न भूलहु कोइि ॥४॥३॥ भैरउ महला ३ ॥ मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ जेहा कराइे तेहा करी सीगारु ॥१॥ जाँ तिसु भावै ताँ करे भोगु ॥ तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ उसतति निंदा करे किआ कोई ॥ जाँ आपे वरतै इेको सोई ॥२॥ गुर परसादी पिरम कसाई ॥ मिलउगी दइिआल पंच सबद वजाई ॥३॥ भनति नानकु करे किआ कोइि ॥ जिस नो आपि मिलावै सोइि ॥४॥४॥ भैरउ महला ३ ॥ सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥ दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥१॥ इिसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइिआ ॥ ममता लाइि भरमि भोलाइिआ ॥२॥ इिसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥ मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥३॥

करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥४॥ मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥५॥ कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥६॥५॥ भैरउ महला ३ ॥ राम नामु जगत निसतारा ॥ भवजलु पारि उतारणहारा ॥१॥ गुर परसादी हरि नामु सम्हालि ॥ सद ही निबहै तेरै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ नामु न चेतहि मनमुख गावारा ॥ बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥२॥ आपे दाति करे दातारु ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥३॥ नदरि करे सतिगुरू मिलाए ॥ नानक हिरदै नामु वसाए ॥४॥६॥ भैरउ महला ३ ॥ नामे उधरे सभि जितने लोअ ॥ गुरमुखि जिना परापति होइ ॥१॥ हरि जीउ अपणी कृपा करेइ ॥ गुरमुखि नामु वडिआई देइ ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु ॥२॥ बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥ अउखे होवहि चोटा खाहि ॥३॥ आपे करता देवै सोइ ॥ नानक नामु परापति होइ ॥४॥७॥ भैरउ महला ३ ॥ गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ राम नाम सबदि बीचारे ॥१॥ हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ गुरमुखि नामे लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ पूरै गुरि मेलावा होइ ॥२॥ निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥ गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥३॥ आपे वेखै वेखणहारु ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥४॥८॥ भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥ बिनु नावै माथै पावै छारु ॥१॥ राम नामु दुलभु है भाई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु जन भालहि सोइ ॥ पूरे गुर ते प्रापति होइ ॥२॥ हरि का भाणा मन्नहि से जन परवाणु ॥ गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥३॥ सो सेवहु जो कल रहिआ धारि ॥ नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥४॥९॥ भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि बहु करम कमाहि ॥ ना रुति न करम थाइ पाहि ॥१॥ कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ

॥२॥ गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ॥ राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥३॥ कलिजुग महि हरि जीउ इेकु होर रुति न काई ॥ नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥४॥१०॥

भैरउ महला ३ घरु २

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ दुबिधा मनमुख रोगि विआपे तृसना जलहि अधिकाई ॥ मरि मरि जंमहि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥१॥ मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ सिंमृति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥२॥ इिकि आपे काढि लइे प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाइे ॥ हरि का नामु निधानो पाइिआ सुखु वसिआ मनि आइि ॥३॥ चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निज घरि वासा पाइिआ ॥ पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइिआ ॥४॥ इेकसु की सिरि कार इेक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइिआ ॥ नानक निहचलु साचा इेको ना एहु मरै न जाइिआ ॥५॥१॥११॥ भैरउ महला ३ ॥ मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥१॥ हरि जीउ सतसंगति मेलाइि ॥ नानक तिस नो देइि वडिआई जो राम नामि चितु लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरि कारा ॥ गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि न आवै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥२॥ जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइिआ ॥ गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइिआ ॥३॥ नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाइे ॥ जो इिछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाइे ॥४॥२॥१२॥ भैरउ महला ३ ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै दुख विचि कार कमाइि ॥ गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसटा माहि समाइि ॥१॥ ध्रिगु ध्रिगु मनमुखि जनमु गवाइिआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर का सबदु सभि रोग गवाइे जिस नो हरि जीउ

लाइे ॥ नामे नामि मिलै वडिआई जिस नो मंनि वसाइे ॥२॥ सतिगुरु भेटै ता फलु पाइे सचु करणी सुख सारु ॥ से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु ॥३॥ तिन की रेणु मिलै ताँ मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा धिआइिआ ॥ नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइिआ ॥४॥३॥१३॥ भैरउ महला ३ ॥ सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ साची भगति करहि दिनु राती ताँ तनि दूखु न होई ॥१॥ भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइि पति खोई ॥२॥ बहले भेख भवहि दिनु राती हउमै रोगु न जाई ॥ पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइिआ सुरति गवाई ॥३॥ सतिगुरु सेवहि परम गति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥४॥४॥१४॥ भैरउ महला ३ ॥ मनमुख आसा नही उतरै दूजै भाइि खुआइे ॥ उदरु नै साणु न भरीऐ कबहू तृसना अगनि पचाइे ॥१॥ सदा अन्नदु राम रसि राते ॥ हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अंमृतु पी तृपताते ॥१॥ रहाउ ॥ आपे पारब्रहमु सृसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाइे ॥ माइिआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाइे ॥२॥ तिस नो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाइे ॥ गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाइे ॥३॥ सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥४॥५॥१५॥ भैरउ महला ३ ॥ कलि महि प्रेत जिन्ी रामु न पछाता सतजुगि परम ह्मस बीचारी ॥ दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥१॥ कलि महि राम नामि वडिआई ॥ जुगि जुगि गुरमुखि इेको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ॥ आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई ॥२॥ मेरा प्रभु है गुण का

दाता अवगण सबदि जलाइे ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाइे ॥३॥ घरु दरु महलु सतिगुरू दिखाइिआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ जो किछु कहै सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै ॥४॥६॥१६॥ भैरउ महला ३ ॥ मनसा मनहि समाइि लै गुर सबदी वीचार ॥ गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारो वार ॥१॥ मन मेरे राम नामु आधारु ॥ गुर परसादि परम पदु पाइिआ सभ इछ पुजावणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ सभ महि इेको रवि रहिआ गुर बिनु बूझ न पाइि ॥ गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइि ॥२॥ सुखदाता हरि इेकु है होर थै सुखु न पाहि ॥ सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गइे पछुताहि ॥३॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइिआ फिरि दुखु न लागै धाइि ॥ नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइि ॥४॥७॥१७॥ भैरउ महला ३ ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ मरि मरि जंमै सदा दुखु पाइे दर की खबरि न पाई ॥१॥ मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ॥ हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥२॥ गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ॥ अंतरि साँति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥३॥ जिउ तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ॥ नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई ॥४॥८॥१८॥ भैरउ महला ३ ॥ हउमै माइिआ मोहि खुआइिआ दुखु खटे दुख खाइि ॥ अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइि ॥१॥ मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि ॥ राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ पसूआ करम करै नही बूझै कूड़ु कमावै कूड़ो होइि ॥ सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइि ॥२॥ हरि हरि नामु रिदै सद वसिआ पाइिआ गुणी निधानु ॥ गुर परसादी पूरा पाइिआ चूका मन अभिमानु ॥३॥ आपे करता करे कराइे आपे मारगि पाइे ॥

आपे गुरमुखि दे वडिआई नानक नामि समाइे ॥४॥६॥१६॥ भैरउ महला ३ ॥ मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजै भाइि फाथे जम जाला ॥ सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरै नाला ॥१॥ गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ॥ सासना ते बालकु गमु न करै ॥१॥ रहाउ ॥ माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइि ॥ राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइि ॥२॥ संडा मरका सभि जाइि पुकारे ॥ प्रहिलादु आपि विगड़िआ सभि चाटड़े विगाड़े ॥ दुसट सभा महि मंत्रु पकाइिआ ॥ प्रहलाद का राखा होइि रघुराइिआ ॥३॥ हाथि खड़गु करि धाइिआ अति अहंकारि ॥ हरि तेरा कहा तुझु लइे उबारि ॥ खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थंम्ह उपाड़ि ॥ हरणाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥४॥ संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ प्रहलाद जन के इिकीह कुल उधारे ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ नानक राम नामि संत निसतारे ॥५॥१०॥२०॥ भैरउ महला ३ ॥ आपे दैत लाइि दिते संत जना कउ आपे राखा सोई ॥ जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥१॥ जुगि जुगि भगता की रखदा आइिआ ॥ दैत पुत्रु प्रहलादु गाइित्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ सदा निरमल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥२॥ मूरख दुबिधा पड़्हहि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ संत जना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइिआ ॥३॥ प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइिआ ॥ संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइिआ ॥४॥ आपणी पैज आपे राखै भगताँ देइि वडिआई ॥ नानक हरणाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई ॥५॥११॥२१॥

रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ हरि जन संत करि किरपा पगि

लाइिणु ॥ गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइिणु ॥१॥ मेरे मन हरि भजु नामु नराइिणु ॥ हरि हरि कृपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि नामि तराइिणु ॥१॥ रहाउ ॥ संगति साध मेलि हरि गाइिणु ॥ गुरमती ले राम रसाइिणु ॥२॥ गुर साधू अंमृत गिआन सरि नाइिणु ॥ सभि किलविख पाप गड़े गावाइिणु ॥३॥ तू आपे करता सृसटि धराइिणु ॥ जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइिणु ॥४॥१॥ भैरउ महला ४ ॥ बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ गुर उपदेसि सभि दुख परहरी ॥१॥ मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति संगि सिंधु भउ तरी ॥१॥ रहाउ ॥ जगजीवनु धिआइि मनि हरि सिमरी ॥ कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥२॥ सतसंगति साध धूरि मुखि परी ॥ इिसनानु कीए अठसठि सुरसरी ॥३॥ हम मूरख कउ हरि किरपा करी ॥ जनु नानकु तारिए तारण हरी ॥४॥२॥ भैरउ महला ४ ॥ सुकृतु करणी सारु जपमाली ॥ हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥१॥ हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥ करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइिआ जम जाली ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सेवा घालि जिनि घाली ॥ तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥२॥ हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ विचि काइिआ नगर लधा हरि भाली ॥३॥ हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥४॥३॥ भैरउ महला ४ ॥ सभि घट तेरे तू सभना माहि ॥ तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥१॥ हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥ हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥१॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइि ॥ सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइि ॥२॥ जिस कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ तिस कै नेड़ै कोइि न जावै ॥३॥ तू जलि थलि महीअलि सभ तै भरपूरि ॥ जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ॥४॥४॥

भैरउ महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का संतु हरि की हरि मूरति जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ

सो गुरमति हिरदै हरि नामु समारि ॥१॥ मधुसूदनु जपीऐ उर धारि ॥ देही नगरि तसकर पंच धातू गुर सबदी हरि काढे मारि ॥१॥ रहाउ ॥ जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥२॥ मता मसूरति ताँ किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ जो किछु करै सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥३॥ हरि जो किछु करे सु आपे आपे एहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ नानक सो प्रभु सदा धिआईऐ जिनि मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥४॥१॥५॥ भैरउ महला ४ ॥ ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥ तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥१॥ हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ कृपा कृपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥२॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥ ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥३॥ हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ इहि जंत विचारी ॥४॥२॥६॥ भैरउ महला ४ ॥ सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति हरि सुनणे ॥ जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे ॥१॥ जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥१॥ रहाउ ॥ गुरसिख हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे ॥२॥ धन्नु सु वंसु धन्नु सु पिता धन्नु सु माता जिनि जन जणे ॥ जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥३॥ हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥४॥३॥७॥

भैरउ महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सगली थीति पासि डारि राखी ॥ असटम थीति गोविंद जनमा सी ॥१॥ भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ जनम मरण ते रहत नाराइण ॥१॥ रहाउ ॥ करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥२॥ सगल पराध देहि लोरोनी ॥ सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥३॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥४॥१॥ भैरउ महला ५ ॥ ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ भउ नही लागै जाँ ऐसे बुझीआ ॥१॥ राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहा कहाँ प्रभु तूं वरतंता ॥२॥ घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥३॥२॥ भैरउ महला ५ ॥ वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥१॥ एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहाँ नेबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥२॥ पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥३॥ ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंडु परान ॥४॥ कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ गुर पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥५॥३॥ भैरउ महला ५ ॥ दस मिरगी सहजे बंधि आनी ॥ पाँच मिरग बेधे सिव की बानी ॥१॥ संतसंगि ले चड़िओ सिकार ॥ मृग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥१॥ रहाउ ॥ आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ अहेरा पाइओ घर कै गाँइ ॥२॥ मृग पकरे घरि आणे हाटि ॥ चुख चुख ले गए बाँढे बाटि ॥३॥ एहु अहेरा कीनो दानु ॥ नानक कै घरि केवल नामु ॥४॥४॥ भैरउ महला ५ ॥ जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥१॥ संत जना की लेहु मते ॥ साधसंगि पावहु परम गते ॥१॥ रहाउ ॥ पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ नह

भीगै अधिक सूकाइआ ॥२॥ खटु सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ जैसे दह दिस पवनु झुलाइआ ॥३॥ बिनु कण खलहानु जैसे गाहन पाइआ ॥ तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥४॥ तित ही लागा जितु को लाइआ ॥ कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ ॥५॥५॥ भैरउ महला ५ ॥ जीउ प्राण जिनि रचिए सरीर ॥ जिनहि उपाइे तिस कउ पीर ॥१॥ गुरु गोबिंदु जीअ कै काम ॥ हलति पलति जा की सद छाम ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु आराधन निरमल रीति ॥ साधसंगि बिनसी बिपरीति ॥२॥ मीत हीत धनु नह पारणा ॥ धंनि धंनि मेरे नाराइणा ॥३॥ नानकु बोलै अंमृत बाणी ॥ इेक बिना दूजा नही जाणी ॥४॥६॥ भैरउ महला ५ ॥ आगै दयु पाछै नाराइण ॥ मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥१॥ प्रभू हमारै सासत्र सउण ॥ सूख सहज आन्नद गृह भउण ॥१॥ रहाउ ॥ रसना नामु करन सुणि जीवे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि अमर थिरु थीवे ॥२॥ जनम जनम के दूख निवारे ॥ अनहद सबद वजे दरबारे ॥३॥ करि किरपा प्रभि लीइे मिलाइे ॥ नानक प्रभ सरणागति आइे ॥४॥७॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ जम मारग कै संगी पाँथ ॥१॥ गंगा जलु गुर गोबिंद नाम ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा जाप ताप इिसनान ॥ सिमरत नाम भइे निहकाम ॥२॥ राज माल सादन दरबार ॥ सिमरत नाम पूरन आचार ॥३॥ नानक दास इिहु कीआ बीचारु ॥ बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥४॥८॥ भैरउ महला ५ ॥ लेपु न लागो तिल का मूलि ॥ दुसटु ब्राहमणु मूआ होइि कै सूल ॥१॥ हरि जन राखे पारब्रहमि आपि ॥ पापी मूआ गुर परतापि ॥१॥ रहाउ ॥ अपणा खसमु जनि आपि धिआइिआ ॥ इिआणा पापी एहु आपि पचाइिआ ॥२॥ प्रभ मात पिता अपणे दास का रखवाला ॥ निंदक का माथा ईहाँ ऊहा काला ॥३॥ जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ मलेछु पापी पचिआ भइिआ निरासु ॥४॥९॥ भैरउ महला ५ ॥ खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ नगज

तेरे बंदे दीदारु अपारु ॥ नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥१॥ अचरजु तेरी कुदरति तेरे कदम सलाह ॥ गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥२॥ नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ गरीब निवाजु दिनु रैणि धिआइ ॥३॥ नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ अलहु न विसरै दिल जीअ परान ॥४॥१०॥ भैरउ महला ५ ॥ साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥ प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥१॥ जीवत जीवत जीवत रहहु ॥ राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥ हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥१॥ रहाउ ॥ कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥२॥११॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु सेवि सरब फल पाइे ॥ जनम जनम की मैलु मिटाइे ॥१॥ पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥ पूरबि करम लिखे गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ साधू संगि होवै उधारु ॥ सोभा पावै प्रभ कै दुआर ॥२॥ सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा ॥ धूरि बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥३॥ नानक पाइिआ नाम निधानु ॥ हरि जपि जपि उधरिआ सगल जहानु ॥४॥१२॥ भैरउ महला ५ ॥ अपणे दास कउ कंठि लगावै ॥ निंदक कउ अगनि महि पावै ॥१॥ पापी ते राखे नाराइिण ॥ पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप कमाइिण ॥१॥ रहाउ ॥ दास राम जीउ लागी प्रीति ॥ निंदक की होई बिपरीति ॥२॥ पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइिआ ॥ दोखी अपणा कीता पाइिआ ॥३॥ आइि न जाई रहिआ समाई ॥ नानक दास हरि की सरणाई ॥४॥१३॥

राग‍ु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

स्रीधर मोहन सगल उपावन निरंकार सुखदाता ॥ अैसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा कवन बिखिआ रस माता ॥१॥ रे मन मेरे तू गोविद भाजु ॥ अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीअै तितु बिगरसि काजु ॥१॥ रहाउ ॥ ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ॥ हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना ॥२॥ जीउ पिंडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा ॥

अह्मबुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥३॥ होम जग जप तप सभि संजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥ मिटिआ आपु पड़े सरणाई गुरमुखि नानक जगतु तराइआ ॥४॥१॥१४॥ भैरउ महला ५ ॥ बन महि पेखिए तृण महि पेखिए गृहि पेखिए उदासाइे ॥ दंडधार जटधारै पेखिए वरत नेम तीरथाइे ॥१॥ संतसंगि पेखिए मन माइें ॥ ऊभ पइआल सरब महि पूरन रसि मंगल गुण गाइे ॥१॥ रहाउ ॥ जोग भेख संनिआसै पेखिए जति जंगम कापड़ाइे ॥ तपी तपीसुर मुनि महि पेखिए नट नाटिक निरताइे ॥२॥ चहु महि पेखिए खट महि पेखिए दस असटी सिंमृताइे ॥ सभ मिलि इेको इेकु वखानहि तउ किस ते कहउ दुराइे ॥३॥ अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाइे ॥ जन नानक तिन कै बलि बलि जाईऐ जिह घटि परगटीआइे ॥४॥२॥१५॥ भैरउ महला ५ ॥ निकटि बुझै सो बुरा किउ करै ॥ बिखु संचै नित डरता फिरै ॥ है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ बिनु सतिगुर सभ मोही माइिआ ॥१॥ नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥ गुरमुखि भेदु विरला को लहै ॥१॥ रहाउ ॥ निकटि न देखै पर गृहि जाइि ॥ दरबु हिरै मिथिआ करि खाइि ॥ पई ठगउरी हरि संगि न जानिआ ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलानिआ ॥२॥ निकटि न जानै बोलै कूड़ु ॥ माइिआ मोहि मूठा है मूड़ु ॥ अंतरि वसतु दिसंतरि जाइि ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलाइि ॥३॥ जिसु मसतकि करमु लिखिआ लिलाट ॥ सतिगुरु सेवे खुल्हे कपाट ॥ अंतरि बाहरि निकटे सोइि ॥ जन नानक आवै न जावै कोइि ॥४॥३॥१६॥ भैरउ महला ५ ॥ जिसु तू राखहि तिसु कउनु मारै ॥ सभ तुझ ही अंतरि सगल संसारै ॥ कोटि उपाव चितवत है प्राणी ॥ सो होवै जि करै चोज विडाणी ॥१॥ राखहु राखहु किरपा धारि ॥ तेरी सरणि तेरै दरवारि ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि सेविआ निरभउ सुखदाता ॥ तिनि भउ दूरि कीआ इेकु पराता ॥ जो तू करहि सोई फुनि होइि ॥ मारै न राखै दूजा कोइि ॥२॥ किआ तू सोचहि माणस बाणि ॥ अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ इेक टेक इेको आधारु ॥ सभ किछु जाणै सिरजणहारु ॥३॥ जिसु ऊपरि

नदरि करे करतारु ॥ तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ तिस का राखा इेको सोइि ॥ जन नानक अपड़ि न साकै कोइि ॥४॥४॥१७॥ भैरउ महला ५ ॥ तउ कड़ीअै जे होवै बाहरि ॥ तउ कड़ीअै जे विसरै नरहरि ॥ तउ कड़ीअै जे दूजा भाइे ॥ किआ कड़ीअै जाँ रहिआ समाइे ॥१॥ माइिआ मोहि कड़े कड़ि पचिआ ॥ बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तउ कड़ीअै जे दूजा करता ॥ तउ कड़ीअै जे अनिआइि को मरता ॥ तउ कड़ीअै जे किछु जाणै नाही ॥ किआ कड़ीअै जाँ भरपूरि समाही ॥२॥ तउ कड़ीअै जे किछु होइि धिङाणै ॥ तउ कड़ीअै जे भूलि रंञाणै ॥ गुरि कहिआ जो होइि सभु प्रभ ते ॥ तब काड़ा छोडि अचिंत हम सोते ॥३॥ प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥ दुतीआ नासति इिकु रहिआ समाइि ॥ राखहु पैज नानक सरणाइि ॥४॥५॥१८॥ भैरउ महला ५ ॥ बिनु बाजे कैसो निरतिकारी ॥ बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ नाम बिना बिरथे सभि काज ॥१॥ नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ बिनु स्रवना कहा को सुनता ॥ बिनु नेत्रा कहा को पेखै ॥ नाम बिना नरु कही न लेखै ॥२॥ बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना ॥३॥ बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ नाम बिना सद सद ही झूरे ॥४॥ बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ बिनु भै कथनी सरब बिकार ॥ कहु नानक दर का बीचार ॥५॥६॥१९॥ भैरउ महला ५ ॥ हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ काम रोगि मैगलु बसि लीना ॥ द्रिसटि रोगि पचि मुइे पतंगा ॥ नाद रोगि खपि गइे कुरंगा ॥१॥ जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥१॥ रहाउ ॥ जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ हेत रोग का सगल संसारा ॥ त्रिबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥२॥ रोगे मरता रोगे जनमै ॥ रोगे

फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ रोग बंध रहनु रती न पावै ॥ बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥३॥ पारब्रहमि जिसु कीनी दइिआ ॥ बाह पकड़ि रोगहु कढि लइिआ ॥ तूटे बंधन साधसंगु पाइिआ ॥ कहु नानक गुरि रोगु मिटाइिआ ॥४॥७॥२०॥ भैरउ महला ५ ॥ चीति आवै ताँ महा अन्नद ॥ चीति आवै ताँ सभि दुख भंज ॥ चीति आवै ताँ सरधा पूरी ॥ चीति आवै ताँ कबहि न झूरी ॥१॥ अंतरि राम राइि प्रगटे आइि ॥ गुरि पूरै दीए रंगु लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ चीति आवै ताँ सरब को राजा ॥ चीति आवै ताँ पूरे काजा ॥ चीति आवै ताँ रंगि गुलाल ॥ चीति आवै ताँ सदा निहाल ॥२॥ चीति आवै ताँ सद धनवंता ॥ चीति आवै ताँ सद निभरंता ॥ चीति आवै ताँ सभि रंग माणे ॥ चीति आवै ताँ चूकी काणे ॥३॥ चीति आवै ताँ सहज घरु पाइिआ ॥ चीति आवै ताँ सुंनि समाइिआ ॥ चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ मनु मानिआ नानक भगवंता ॥४॥८॥२१॥ भैरउ महला ५ ॥ बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ भाई हमारे सद ही जीवी ॥ मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ कुटंबु हमारा निज घरि वासी ॥१॥ हम सुखु पाइिआ ताँ सभहि सुहेले ॥ गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥१॥ रहाउ ॥ मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ देस मेरे बेअंत अपूछे ॥ राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥२॥ सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ बाज हमारी थान थन्नतरि ॥ कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ भगति हमारी सभनी लोई ॥३॥ पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ पिता पूत रलि कीनी साँझ ॥ कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ पिता पूत इेकै रंगि लीने ॥४॥९॥२२॥ भैरउ महला ५ ॥ निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ दाते ॥ हम अपराधी तुम् बखसाते ॥ जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ सरणि आवै ताँ निरमलु होई ॥१॥ सुखु पाइिआ सतिगुरू मनाइि ॥ सभ फल पाइे गुरू धिआइि ॥१॥ रहाउ ॥ पारब्रहम सतिगुर आदेसु ॥ मनु तनु तेरा सभु तेरा देसु ॥ चूका पड़दा ताँ नदरी आइिआ ॥ खसमु तूहै सभना के राइिआ ॥२॥ तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ तिसु भाणा ताँ थल सिरि सरिआ ॥ तिसु भाणा ताँ सभि फल पाइे ॥ चिंत गई

लगि सतिगुर पाइे ॥३॥ हरामखोर निरगुण कउ तूठा ॥ मनु तनु सीतलु मनि अंमृतु वूठा ॥ पारब्रहम गुर भइे दइिआला ॥ नानक दास देखि भइे निहाला ॥४॥१०॥२३॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥१॥ गुर जैसा नाही को देव ॥ जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मेरा सरब प्रतिपालै ॥ सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ सतिगुर मेरे की वडिआई ॥ प्रगटु भई है सभनी थाई ॥२॥ सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥ सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥ सतिगुर कै हउ सद बलि जाइिआ ॥ प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइिआ ॥३॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ नानक सोधे सिंमृति बेद ॥ पारब्रहम गुर नाही भेद ॥४॥११॥२४॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत मनु परगटु भइिआ ॥ नामु लैत पापु तन ते गइिआ ॥ नामु लैत सगल पुरबाइिआ ॥ नामु लैत अठसठि मजनाइिआ ॥१॥ तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ नामु लैत अति मूड़ सुगिआना ॥ नामु लैत परगटि उजीआरा ॥ नामु लैत छुटे जंजारा ॥२॥ नामु लैत जमु नेड़ि न आवै ॥ नामु लैत दरगह सुखु पावै ॥ नामु लैत प्रभु कहै साबासि ॥ नामु हमारी साची रासि ॥३॥ गुरि उपदेसु कहिए इहु सारु ॥ हरि कीरति मन नामु अधारु ॥ नानक उधरे नाम पुनहचार ॥ अवरि करम लोकह पतीआर ॥४॥१२॥२५॥ भैरउ महला ५ ॥ नमसकार ता कउ लख बार ॥ इहु मनु दीजै ता कउ वारि ॥ सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ होइि अन्नदु न विआपहि ताप ॥१॥ ऐसो हीरा निरमल नाम ॥ जासु जपत पूरन सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ जा की दृसटि दुख डेरा ढहै ॥ अंमृत नामु सीतलु मनि गहै ॥ अनिक भगत जा के चरन पूजारी ॥ सगल मनोरथ पूरनहारी ॥२॥ खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ खिन महि सूके कीने हरिआ ॥ खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ खिन

महि निमाणे कउ दीनो मानु ॥३॥ सभ महि इेकु रहिआ भरपूरा ॥ सो जापै जिसु सतिगुरु पूरा ॥ हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ कहु नानक जिसु आपि दइिआरु ॥४॥१३॥२६॥ भैरउ महला ५ ॥ मोहि दुहागनि आपि सीगारी ॥ रूप रंग दे नामि सवारी ॥ मिटिए दुखु अरु सगल संताप ॥ गुर होइे मेरे माई बाप ॥१॥ सखी सहेरी मेरै ग्रसति अन्नद ॥ करि किरपा भेटे मोहि कंत ॥१॥ रहाउ ॥ तपति बुझी पूरन सभ आसा ॥ मिटे अंधेर भइे परगासा ॥ अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ गुरु पूरा पूरा परसाद ॥२॥ जा कउ प्रगट भइे गोपाल ॥ ता कै दरसनि सदा निहाल ॥ सरब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ जा कउ सतिगुरि दीए नामु ॥३॥ जा कउ भेटिए ठाकुरु अपना ॥ मनु तनु सीतलु हरि हरि जपना ॥ कहु नानक जो जन प्रभ भाइे ॥ ता की रेनु बिरला को पाइे ॥४॥१४॥२७॥ भैरउ महला ५ ॥ चितवत पाप न आलकु आवै ॥ बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ सारो दिनसु मजूरी करै ॥ हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥१॥ माइिआ लगि भूलो संसारु ॥ आपि भुलाइिआ भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥१॥ रहाउ ॥ पेखत माइिआ रंग बिहाइि ॥ गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइि ॥ अंध बिउहार बंध मनु धावै ॥ करणैहारु न जीअ महि आवै ॥२॥ करत करत इिव ही दुखु पाइिआ ॥ पूरन होत न कारज माइिआ ॥ कामि क्रोधि लोभि मनु लीना ॥ तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥३॥ जिस के राखे होइि हरि आपि ॥ हरि हरि नामु सदा जपु जापि ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइिआ ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइिआ ॥४॥१५॥२८॥ भैरउ महला ५ ॥ अपणी दइिआ करे सो पाइे ॥ हरि का नामु मंनि वसाइे ॥ साच सबदु हिरदे मन माहि ॥ जनम जनम के किलविख जाहि ॥१॥ राम नामु जीअ को आधारु ॥ गुर परसादि जपहु नित भाई तारि लइे सागर संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कउ लिखिआ हरि इेहु निधानु ॥ से जन दरगह पावहि मानु ॥ सूख सहज आन्नद गुण गाउ ॥ आगै मिलै निथावे थाउ ॥२॥ जुगह जुगंतरि इिहु ततु सारु ॥ हरि सिमरणु

साचा बीचारु ॥ जिसु लड़ि लाइि लइे सो लागै ॥ जनम जनम का सोइिआ जागै ॥३॥ तेरे भगत भगतन का आपि ॥ अपणी महिमा आपे जापि ॥ जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ नानक के प्रभ सद ही साथि ॥४॥१६॥२९॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै अंतरजामी ॥ नामु हमारै आवै कामी ॥ रोमि रोमि रविआ हरि नामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥१॥ नामु रतनु मेरै भंडार ॥ अगम अमोला अपर अपार ॥१॥ रहाउ ॥ नामु हमारै निहचल धनी ॥ नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ नामु हमारै पूरा साहु ॥ नामु हमारै बेपरवाहु ॥२॥ नामु हमारै भोजन भाउ ॥ नामु हमारै मन का सुआउ ॥ नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥३॥ प्रभ किरपा ते नामु नउ निधि पाई ॥ गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ धनवंते सेई परधान ॥ नानक जा कै नामु निधान ॥४॥१७॥३०॥ भैरउ महला ५ ॥ तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥१॥ करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ तुम्री उसतति करउ दिन राति ॥१॥ रहाउ ॥ हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ तउ परसादि रंग रस माणे ॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥२॥ तुम्री कृपा ते जपीऐ नाउ ॥ साधसंगि तुमरे गुण गाउ ॥ तुम्री दइिआ ते होइि दरद बिनासु ॥ तुमरी मइिआ ते कमल बिगासु ॥३॥ हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ दइिआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ गुण गावै नानकु नित तेरे ॥४॥१८॥३१॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सदा सदा ता कउ जोहारु ॥ ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥१॥ तिसु सरणाई सदा सुखु होइि ॥ करि किरपा जा कउ मेलै सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ जा के करतब लखे न जाहि ॥ जा का भरवासा सभ घट माहि ॥ प्रगट भइिआ साधू कै संगि ॥ भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥२॥ देदे तोटि नही भंडार ॥ खिन महि थापि उथापनहार ॥ जा का हुकमु न मेटै कोइि ॥ सिरि पातिसाहा साचा सोइि ॥३॥ जिस

की एट तिसै की आसा ॥ दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ नानकु तिस की उसतति करदा ॥४॥१९॥३२॥ भैरउ महला ५ ॥ रोवनहारी रोजु बनाइआ ॥ बलन बरतन कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥१॥ बिखिआ का सभु धंधु पसारु ॥ विरलै कीनो नाम अधारु ॥१॥ रहाउ ॥ तृबिधि माइआ रही बिआपि ॥ जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ सुखु नाही बिनु नाम धिआइे ॥ नाम निधानु बडभागी पाइे ॥२॥ स्वाँगी सिउ जो मनु रीझावै ॥ स्वागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ तैसो परपंचु मोह बिकार ॥३॥ इेक वसतु जे पावै कोइि ॥ पूरन काजु ताही का होइि ॥ गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥ नानक आइिआ सो परवानु ॥४॥२०॥३३॥ भैरउ महला ५ ॥ संत की निंदा जोनी भवना ॥ संत की निंदा रोगी करना ॥ संत की निंदा दूख सहाम ॥ डानु दैत निंदक कउ जाम ॥१॥ संतसंगि करहि जो बादु ॥ तिन निंदक नाही किछु सादु ॥१॥ रहाउ ॥ भगत की निंदा कंधु छेदावै ॥ भगत की निंदा नरकु भुंचावै ॥ भगत की निंदा गरभ महि गलै ॥ भगत की निंदा राज ते टलै ॥२॥ निंदक की गति कतहू नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ चोर जार जूआर ते बुरा ॥ अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा ॥३॥ पारब्रहम के भगत निरवैर ॥ सो निसतरै जो पूजै पैर ॥ आदि पुरखि निंदकु भोलाइिआ ॥ नानक किरतु न जाइि मिटाइिआ ॥४॥२१॥३४॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ नामु हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु हमारै गुर की सेव ॥१॥ गुरि पूरै दृड़िए हरि नामु ॥ सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥१॥ रहाउ ॥ नामु हमारै मजन इिसनानु ॥ नामु हमारै पूरन दानु ॥ नामु लैत ते सगल पवीत ॥ नामु जपत मेरे भाई मीत ॥२॥ नामु हमारै सउण संजोग ॥ नामु हमारै तृपति सुभोग ॥ नामु हमारै सगल आचार ॥ नामु हमारै निरमल बिउहार ॥३॥ जा कै मनि वसिआ प्रभु इेकु ॥ सगल जना की हरि हरि टेक ॥ मनि तनि नानक हरि गुण गाउ ॥ साधसंगि

जिसु देवै नाउ ॥४॥२२॥३५॥ भैरउ महला ५ ॥ निरधन कउ तुम देवहु धना ॥ अनिक पाप जाहि निरमल मना ॥ सगल मनोरथ पूरन काम ॥ भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥१॥ सफल सेवा गोपाल राइ ॥ करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइि न जाइि ॥१॥ रहाउ ॥ रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥ दुखीइे का मिटावहु प्रभ सोगु ॥ निथावे कउ तुम् थानि बैठावहु ॥ दास अपने कउ भगती लावहु ॥२॥ निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ मूड़ मुगधु होइि चतुर सुगिआनु ॥ सगल भइिआन का भउ नसै ॥ जन अपने कै हरि मनि बसै ॥३॥ पारब्रहम प्रभ सूख निधान ॥ ततु गिआनु हरि अंमृत नाम ॥ करि किरपा संत टहलै लाइे ॥ नानक साधू संगि समाइे ॥४॥२३॥३६॥ भैरउ महला ५ ॥ संत मंडल महि हरि मनि वसै ॥ संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ॥ संत मंडल महि निरमल रीति ॥ संतसंगि होइि इेक परीति ॥१॥ संत मंडलु तहा का नाउ ॥ पारब्रहम केवल गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ संत मंडल महि जनम मरणु रहै ॥ संत मंडल महि जमु किछू न कहै ॥ संतसंगि होइि निरमल बाणी ॥ संत मंडल महि नामु वखाणी ॥२॥ संत मंडल का निहचल आसनु ॥ संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥ संत मंडल महि निरमल कथा ॥ संतसंगि हउमै दुख नसा ॥३॥ संत मंडल का नही बिनासु ॥ संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥ संत मंडल ठाकुर बिस्रामु ॥ नानक एति पोति भगवानु ॥४॥२४॥३७॥ भैरउ महला ५ ॥ रोगु कवनु जाँ राखै आपि ॥ तिसु जन होइि न दूखु संतापु ॥ जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥ तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥१॥ सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ जिसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता कै जामु ॥१॥ रहाउ ॥ जब इहु न सो तब किनहि उपाइिआ ॥ कवन मूल ते किआ प्रगटाइिआ ॥ आपहि मारि आपि जीवालै ॥ अपने भगत कउ सदा प्रतिपालै ॥२॥ सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ दुख भंजनु ता का है नाउ ॥ सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥३॥ सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ जीउ प्रान धनु तुम्रै पासि ॥ इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआइे

॥ करि किरपा नानक सुखु पाइे ॥४॥२५॥३८॥ भैरउ महला ५ ॥ तेरी टेक रहा कलि माहि ॥ तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ तेरी टेक न पोहै कालु ॥ तेरी टेक बिनसै जंजालु ॥१॥ दीन दुनीआ तेरी टेक ॥ सभ महि रविआ साहिबु इेक ॥१॥ रहाउ ॥ तेरी टेक करउ आन्नद ॥ तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥ तेरी टेक तरीअै भउ सागरु ॥ राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥२॥ तेरी टेक नाही भउ कोइि ॥ अंतरजामी साचा सोइि ॥ तेरी टेक तेरा मनि ताणु ॥ ईहाँ ऊहाँ तू दीबाणु ॥३॥ तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ सगल धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ सिमरि नानक साचे गुणतासा ॥४॥२६॥३९॥ भैरउ महला ५ ॥ प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥ परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥१॥ अैसो तिआगी विरला कोइि ॥ हरि हरि नामु जपै जनु सोइि ॥१॥ रहाउ ॥ अह्मबुधि का छोडिआ संगु ॥ काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ नाम धिआइे हरि हरि हरे ॥ साध जना कै संगि निसतरे ॥२॥ बैरी मीत होइे संमान ॥ सरब महि पूरन भगवान ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइिआ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइिआ ॥३॥ करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ सोई भगतु जपै नाम जाप ॥ मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ कहु नानक ता की पूरी पई ॥४॥२७॥४०॥ भैरउ महला ५ ॥ सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ सुखु नाही बहु देस कमाइे ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाइे ॥१॥ सूख सहज आन्नद लहहु ॥ साधसंगति पाईअै वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥१॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ बंधन करम धरम हउ करता ॥ बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥२॥ सभि जाचिक प्रभ देवनहार ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नामु तिनै जनि जपना ॥३॥ गुर अपने आगै अरदासि ॥ करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ रखहु गुसाई ॥४॥२८॥४१॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर मिलि तिआगिए

दूजा भाउ ॥ गुरमुखि जपिए हरि का नाउ ॥ बिसरी चिंत नामि रंगु लागा ॥ जनम जनम का सोइिआ जागा ॥१॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइे ॥ साधू संगि सरब सुख पाइे ॥१॥ रहाउ ॥ रोग दोख गुर सबदि निवारे ॥ नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ गुर भेटत मनि भइिआ अन्नद ॥ सरब निधान नाम भगवंत ॥२॥ जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ साधसंगति ऊंध कमल बिगास ॥ गुण गावत निहचलु बिस्राम ॥ पूरन होइे सगले काम ॥३॥ दुलभ देह आई परवानु ॥ सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥ कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥४॥२९॥४२॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊचा जा का नाउ ॥ सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ जिसु सिमरत सगला दुखु जाइि ॥ सरब सूख वसहि मनि आइि ॥१॥ सिमरि मना तू साचा सोइि ॥ हलति पलति तुमरी गति होइि ॥१॥ रहाउ ॥ पुरख निरंजन सिरजनहार ॥ जीअ जंत देवै आहार ॥ कोटि खते खिन बखसनहार ॥ भगति भाइि सदा निसतार ॥२॥ साचा धनु साची वडिआई ॥ गुर पूरे ते निहचल मति पाई ॥ करि किरपा जिसु राखनहारा ॥ ता का सगल मिटै अंधिआरा ॥३॥ पारब्रहम सिउ लागो धिआन ॥ पूरन पूरि रहिए निरबान ॥ भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ नानक कउ गुर भइे दइिआल ॥४॥३०॥४३॥ भैरउ महला ५ ॥ जिसु सिमरत मनि होइि प्रगासु ॥ मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ तिसहि परापति जिसु प्रभु देइि ॥ पूरे गुर की पाइे सेव ॥१॥ सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ आठ पहर मेरे मन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जो इिछै सोई फलु पाइे ॥ हरि का नामु मंनि वसाइे ॥ आवण जाण रहे हरि धिआइि ॥ भगति भाइि प्रभ की लिव लाइि ॥२॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ तूटे माइिआ मोह पिआर ॥ प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ पारब्रहमु करे जिसु दाति ॥३॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइि ॥ नानक दास तेरी सरणाइि ॥४॥३१॥४४॥ भैरउ महला ५ ॥ लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ हरि

सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ मूल बिना साखा कत आहै ॥१॥ गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि संगि मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ तीरथि नाइ कहा सुचि सैलु ॥ मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ कोटि करम बंधन का मूलु ॥ हरि के भजन बिनु बिरथा पूलु ॥२॥ बिनु खाडे बूझै नही भूख ॥ रोगु जाइ ताँ उतरहि दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ जिनि प्रभि कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥३॥ धनु धनु साध धन्नु हरि नाउ ॥ आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ धनु हरि भगति धनु करणैहार ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख अपार ॥४॥३२॥४५॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर सुप्रसन्न होए भउ गए ॥ नाम निरंजन मन महि लए ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ बिनसि गए सगले जंजाल ॥१॥ सूख सहज आन्नद घने ॥ साधसंगि मिटे भै भरमा अंमृतु हरि हरि रसन भने ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ खिन महि बिनसिए महा परेतु ॥ आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ राखनहार गोविद गुर आपि ॥२॥ अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ भगत जना के सास निहारै ॥ मानस की कहु केतक बात ॥ जम ते राखै दे करि हाथ ॥३॥ निरमल सोभा निरमल रीति ॥ पारब्रहमु आइआ मनि चीति ॥ करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ नानक पाइआ नामु निधानु ॥४॥३३॥४६॥ भैरउ महला ५ ॥ करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥ भै भंजन अबिनासी राइ ॥ दरसनि देखिऐ सभु दुखु जाइ ॥१॥ जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ बलि बलि जाई सतिगुर चरणा ॥१॥ रहाउ ॥ पूरन काम मिले गुरदेव ॥ सभि फलदाता निरमल सेव ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ राम नामु रिद दीए निवास ॥२॥ सदा अन्नदु नाही किछु सोगु ॥ दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ पारब्रहम गुर अगम अपार ॥३॥ निरमल सोभा अचरज बाणी ॥ पारब्रहम पूरन मनि भाणी ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सोइ ॥ नानक सभु किछु प्रभ ते होइ ॥४॥३४॥४७॥ भैरउ महला ५ ॥ मनु तनु राता राम रंगि चरणे ॥

सरब मनोरथ पूरन करणे ॥ आठ पहर गावत भगवंतु ॥ सतिगुरि दीनो पूरा मंतु ॥१॥ सो वडभागी जिसु नामि पिआरु ॥ तिस कै संगि तरै संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी जि सिमरै इेक ॥ सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥ सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥२॥ गुर परसादि परम पदु पाइिआ ॥ गुण गोपाल दिनु रैनि धिआइिआ ॥ तूटे बंधन पूरन आसा ॥ हरि के चरण रिद माहि निवासा ॥३॥ कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ सो जनु आइिआ प्रभ की सरना ॥ आपि पवितु पावन सभि कीने ॥ राम रसाइिणु रसना चीन्हे ॥४॥३५॥४८॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत किछु बिघनु न लागै ॥ नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ नामु लैत सभ दूखह नासु ॥ नामु जपत हरि चरण निवासु ॥१॥ निरबिघन भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥२॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरनु बहु माहि इिकेला ॥ जाति अजाति जपै जनु कोइि ॥ जो जापै तिस की गति होइि ॥३॥ हरि का नामु जपीऐ साधसंगि ॥ हरि के नाम का पूरन रंगु ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ सासि सासि हरि देहु चितारि ॥४॥३६॥४९॥ भैरउ महला ५ ॥ आपे सासतु आपे बेदु ॥ आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ करण कारण पूरन समरथु ॥१॥ प्रभ की एट गहहु मन मेरे ॥ चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन दूखु न आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ आपे वणु तृणु तृभवण सारु ॥ जा कै सूति परोइिआ संसारु ॥ आपे सिव सकती संजोगी ॥ आपि निरबाणी आपे भोगी ॥२॥ जत कत पेखउ तत तत सोइि ॥ तिसु बिनु दूजा नाही कोइि ॥ सागरु तरीऐ नाम कै रंगि ॥ गुण गावै नानकु साधसंगि ॥३॥ मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥ ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ करि किरपा जिसु होइि सुप्रसन्न ॥ नानक दास सेई जन धन्न ॥४॥३७॥५०॥ भैरउ महला ५ ॥ भगता मनि आन्नदु गोबिंद ॥ असथिति भइे बिनसी

सभ चिंद ॥ भै भ्रम बिनसि गइे खिन माहि ॥ पारब्रहमु वसिआ मनि आइि ॥१॥ राम राम संत सदा सहाइि ॥ घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइि ॥१॥ रहाउ ॥ धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ जीअ प्राण नित सुख प्रतिपाल ॥ अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ निमख न छोडै सद ही साथ ॥२॥ हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइि ॥ सारि सम्हाले साचा सोइि ॥ मात पिता सुत बंधु नराइिणु ॥ आदि जुगादि भगत गुण गाइिणु ॥३॥ तिस की धर प्रभ का मनि जोरु ॥ इेक बिना दूजा नही होरु ॥ नानक कै मनि इिहु पुरखारथु ॥ प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥४॥३८॥५१॥ भैरउ महला ५ ॥ भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ सगल बिआधि मिटी तृहु गुण की दास के होइे पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥ जन का दरसु बाँछै दिन राती होइि पुनीत धरम राइि जाम ॥१॥ काम क्रोध लोभ मद निंदा साधसंगि मिटिआ अभिमान ॥ अैसे संत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥२॥३९॥५२॥ भैरउ महला ५ ॥ पंच मजमी जो पंचन राखै ॥ मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ चक्र बणाइि करै पाखंड ॥ झुरि झुरि पचै जैसे तृअ रंड ॥१॥ हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ बिनु गुर पूरे मुकति न पाईअै साची दरगहि साकत मूठु ॥१॥ रहाउ ॥ सोई कुचीलु कुदरति नही जानै ॥ लीपिअै थाइि न सुचि हरि मानै ॥ अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥ साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥२॥ माइिआ कारणि करै उपाउ ॥ कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ जिनि कीआ तिसु चीति न आणै ॥ कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥३॥ जिस नो करमु करे करतारु ॥ साधसंगि होइि तिसु बिउहारु ॥ हरि नाम भगति सिउ लागा रंगु ॥ कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥४॥४०॥५३॥ भैरउ महला ५ ॥ निंदक कउ फिटके संसारु ॥ निंदक का झूठा बिउहारु ॥ निंदक का मैला आचारु ॥ दास अपुने कउ राखनहारु ॥१॥ निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥ पारब्रहम परमेसरि

जन राखे निंदक कै सिरि कड़किए कालु ॥१॥ रहाउ ॥ निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥ निंदक झूठु बोलि पछुताने ॥ हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥२॥ हरि का दासु किछु बुरा न मागै ॥ निंदक कउ लागै दुख साँगै ॥ बगुले जिउ रहिआ पंख पसारि ॥ मुख ते बोलिआ ताँ कढिआ बीचारि ॥३॥ अंतरजामी करता सोइ ॥ हरि जनु करै सु निहचलु होइ ॥ हरि का दासु साचा दरबारि ॥ जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥४॥४१॥५४॥ भैरउ महला ५ ॥ दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ सोई मेरा सुआमी करनैहारु ॥ कोटि बार जाई बलिहार ॥१॥ साधू धूरि पुनीत करी ॥ मन के बिकार मिटहि प्रभ सिमरत जनम जनम की मैलु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै गृह महि सगल निधान ॥ जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ सगल मनोरथ पूरनहार ॥ जीअ प्रान भगतन आधार ॥२॥ घट घट अंतरि सगल प्रगास ॥ जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ जा की सेव न बिरथी जाइ ॥ मन तन अंतरि इेकु धिआइ ॥३॥ गुर उपदेसि दइिआ संतोखु ॥ नामु निधानु निरमलु इिहु थोकु ॥ करि किरपा लीजै लड़ि लाइि ॥ चरन कमल नानक नित धिआइि ॥४॥४२॥५५॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ कारजु आइिआ सगला रासि ॥ मन तन अंतरि प्रभू धिआइिआ ॥ गुर पूरे डरु सगल चुकाइिआ ॥१॥ सभ ते वड समरथ गुरदेव ॥ सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस का अमरु न मेटै कोइि ॥ पारब्रहमु परमेसरु अनूपु ॥ सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥२॥ जा कै अंतरि बसै हरि नामु ॥ जो जो पेखै सु ब्रहम गिआनु ॥ बीस बिसुइे जा कै मनि परगासु ॥ तिसु जन कै पारब्रहम का निवासु ॥३॥ तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥ तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ सतिगुर के चरन धोइि धोइि पीवा ॥ गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥४॥४३॥५६॥

राग भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

परतिपाल प्रभ कृपाल कवन गुन गनी ॥ अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ अनिक गुनित धुनित ललित अनिक धार मुनी ॥१॥ अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी ॥२॥१॥५७॥८॥२१॥७॥५७॥९३॥

भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ अंमृत बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥१॥ नानक हउमै रोग बुरे ॥ जह देखाँ तह इेका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥१॥ रहाउ ॥ आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ जिन कउ नदरि भई गुरि मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥२॥ पउणु पाणी बैसंतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुटंब संजोगी ॥३॥ रोगी ब्रहमा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल संसारा ॥ हरि पदु चीनि भइे से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥४॥ रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भरे ॥ हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥५॥ रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इिक इेका ॥६॥ मिठ रसु खाइि सु रोगि भरीजै कंद मूलि सुखु नाही ॥ नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही ॥७॥ तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइिआ ॥ दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइिआ का मुहताजु भइिआ ॥८॥ गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइिआ ॥ नानक हरि जन अनदिनु निरमल

जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥६॥१॥

भैरउ महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ॥ अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ॥ कारणु करता करदा आइआ ॥१॥ गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ॥ हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥१॥ रहाउ ॥ पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ ॥ लै पाटी पाधे कै आइआ ॥ नाम बिना नह पड़उ अचार ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥२॥ पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ ॥ परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि ॥ जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि ॥३॥ प्रहलादि सभि चाटड़े विगारे ॥ हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥ सभ नगरी महि भगति दृड़ाई ॥ दुसट सभा का किछु न वसाई ॥४॥ संडै मरकै कीई पूकार ॥ सभे दैत रहे झख मारि ॥ भगत जना की पति राखै सोई ॥ कीते कै कहिऐ किआ होई ॥५॥ किरत संजोगी दैति राजु चलाइआ ॥ हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ॥ अंधा न बूझै कालु नेड़ै आइआ ॥६॥ प्रहलादु कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥ निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपाला ॥ कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ ॥७॥ पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहाँ तुम्हारा जगदीस गुसाई ॥ जगजीवनु दाता अंति सखाई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥८॥ थंमु उपाड़ि हरि आपु दिखाइआ ॥ अहंकारी दैतु मारि पचाइआ ॥ भगता मनि आनन्दु वजी वधाई ॥ अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥९॥ जंमणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ आवणु जाणा करतै लिखि पाइआ ॥ प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ भगता का बोलु आगै आइआ ॥१०॥ देव कुली लखिमी कउ करहि जैकारु ॥ माता नरसिंघ का रूपु निवारु ॥ लखिमी

भउ करै न साकै जाइि ॥ प्रहलादु जनु चरणी लागा आइि ॥११॥ सतिगुरि नामु निधानु दृड़ाइिआ ॥ राजु मालु झूठी सभ माइिआ ॥ लोभी नर रहे लपटाइि ॥ हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइि ॥१२॥ कहै नानकु सभु को करे कराइिआ ॥ से परवाणु जिनी हरि सिउ चितु लाइिआ ॥ भगता का अंगीकारु करदा आइिआ ॥ करतै अपणा रूपु दिखाइिआ ॥१३॥१॥२॥ भैरउ महला ३ ॥ गुर सेवा ते अंमृत फलु पाइिआ हउमै तृसन बुझाई ॥ हरि का नामु हृदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ॥१॥ हरि जीउ कृपा करहु मेरे पिआरे ॥ अनदिनु हरि गुण दीन जनु माँगै गुर कै सबदि उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥२॥ भगता की पैज रखहि तू आपे इेह तेरी वडिआई ॥ जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ॥३॥ हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ॥ जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥४॥ जगतु उपाइि तुधु धंधै लाइिआ भूंडी कार कमाई ॥ जनमु पदारथु जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ॥५॥ मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ॥ भवजलु पारि न पावहि कब ही डूबि मुइे बिनु गुर सिरि भारा ॥६॥ साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाइे ॥ गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाइे ॥७॥ तूं आपि निरमलु तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥८॥२॥३॥

भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाइे ॥ नाम बिना जनमु बिरथा जाइे ॥१॥ तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥ सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सहज

सुखैना ॥ जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ नाम बिना ध्रिगु जीवणु मूआ ॥२॥ जिसु नामु रिदै सो जीवन मुकता ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ नाम बिना भ्रमि आवै जाई ॥३॥ जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ नाम बिना मनमुख गावारा ॥४॥ जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ नामहीण नाही पति वेसाहु ॥५॥ जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥६॥ जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥७॥ तिनि नामु पाइआ जिसु भइए कृपाल ॥ साधसंगति महि लखे गोपाल ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥८॥१॥४॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि बिसन कीने अवतार ॥ कोटि ब्रहमंड जा के ध्रमसाल ॥ कोटि महेस उपाइ समाइे ॥ कोटि ब्रहमे जगु साजण लाइे ॥१॥ ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि माइिआ जा कै सेवकाइि ॥ कोटि जीअ जा की सिहजाइि ॥ कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ कोटि भगत बसत हरि संगि ॥२॥ कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ कोटि बैकुंठ जा की द्रिसटी माहि ॥ कोटि नाम जा की कीमति नाहि ॥३॥ कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ कोटि सकति सिव आगिआकार ॥ कोटि जीअ देवै आधार ॥४॥ कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ कोटि पवित्र जपत नाम चार ॥ कोटि पूजारी करते पूजा ॥ कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥५॥ कोटि महिमा जा की निरमल ह्मस ॥ कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस ॥ कोटि परलउ एपति निमख माहि ॥ कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि ॥६॥ कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ कोटि धिआनी धरत धिआनु ॥ कोटि तपीसर

तप ही करते ॥ कोटि मुनीसर मोनि महि रहते ॥७॥ अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ जत कत देखउ तेरा वासा ॥ नानक कउ गुरि कीए प्रगासा ॥८॥२॥५॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरि मो कउ कीनो दानु ॥ अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ सहज बिनोद चोज आन्नता ॥ नानक कउ प्रभु मिलिए अचिंता ॥१॥ कहु नानक कीरति हरि साची ॥ बहुरि बहुरि तिसु संगि मनु राची ॥१॥ रहाउ ॥ अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ अचिंत हमारै सबदि उधार ॥ अचिंत हमारै भरे भंडार ॥२॥ अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ अचिंत हमारै लथे विसूरे ॥ अचिंत हमारै बैरी मीता ॥ अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥३॥ अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥ अचिंत हमारी पूरन आसा ॥ अचिंत हम्रा कउ सगल सिधाँतु ॥ अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥४॥ अचिंत हमारे बिनसे बैर ॥ अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ अचिंतो ही प्रभु घटि घटि डीठा ॥५॥ अचिंत मिटिए है सगलो भरमा ॥ अचिंत वसिए मनि सुख बिस्रामा ॥ अचिंत हमारै अनहत वाजै ॥ अचिंत हमारै गोबिंदु गाजै ॥६॥ अचिंत हमारै मनु पतीआना ॥ निहचल धनी अचिंतु पछाना ॥ अचिंतो उपजिए सगल बिबेका ॥ अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥७॥ अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ अचिंत मिलिए प्रभु ठाकुरु इेकु ॥ चिंत अचिंता सगली गई ॥ प्रभ नानक नानक नानक मई ॥८॥३॥६॥

भैरउ बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु मेरे हरि को नाउ ॥ गाँठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥१॥ रहाउ ॥ नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ भगति करउ जनु सरनि तुमारी ॥१॥ नाउ मेरे माइिआ नाउ मेरे पूंजी ॥ तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥२॥ नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई ॥ नाउ मेरे संगि अंति होइि सखाई ॥३॥ माइिआ महि जिसु रखै उदासु ॥ कहि कबीर हउ ता को दासु ॥४॥१॥ नाँगे आवनु नाँगे जाना ॥ कोइि न रहिहै

राजा राना ॥१॥ रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ संपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ आवत संग न जात संगाती ॥ कहा भइए दरि बाँधे हाथी ॥२॥ लम्का गढु सोने का भइआ ॥ मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥३॥ कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥४॥२॥ मैला ब्रहमा मैला इंदु ॥ रवि मैला मैला है चंदु ॥१॥ मैला मलता इहु संसारु ॥ इकु हरि निरमलु जा का अंतु न पारु ॥१॥ रहाउ ॥ मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ मैले निसि बासुर दिन तीस ॥२॥ मैला मोती मैला हीरु ॥ मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥३॥ मैले सिव संकरा महेस ॥ मैले सिध साधिक अरु भेख ॥४॥ मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ मैली काइआ हंस समेति ॥५॥ कहि कबीर ते जन परवान ॥ निरमल ते जो रामहि जान ॥६॥३॥ मनु करि मका किबला करि देही ॥ बोलनहारु परम गुरु इेही ॥१॥ कहु रे मुलाँ बाँग निवाज ॥ इेक मसीति दसै दरवाज ॥१॥ रहाउ ॥ मिसिमिलि तामसु भरमु कदूरी ॥ भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥२॥ हिंदू तुरक का साहिबु इेक ॥ कह करै मुलाँ कह करै सेख ॥३॥ कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥४॥४॥ गंगा कै संगि सलिता बिगरी ॥ सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥१॥ बिगरिए कबीरा राम दुहाई ॥ साचु भइए अन कतहि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ चंदन कै संगि तरवरु बिगरिए ॥ सो तरवरु चंदनु होइ निबरिए ॥२॥ पारस कै संगि ताँबा बिगरिए ॥ सो ताँबा कंचनु होइ निबरिए ॥३॥ संतन संगि कबीरा बिगरिए ॥ सो कबीरु रामै होइ निबरिए ॥४॥५॥ माथे तिलकु हथि माला बानाँ ॥ लोगन रामु खिलउना जानाँ ॥१॥ जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥२॥ सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ अैसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥३॥ लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ कबीर का मरमु राम पहिचानाँ ॥४॥६॥ उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ सुन्न सहज महि बुनत हमारी ॥१॥ हमरा झगरा

रहा न कोऊ ॥ पंडित मुलाँ छाडे दोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥२॥ पंडित मुलाँ जो लिखि दीआ ॥ छाडि चले हम कछू न लीआ ॥३॥ रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥ आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥४॥७॥ निरधन आदरु कोई न देइ ॥ लाख जतन करै एहु चिति न धरेइ ॥१॥ रहाउ ॥ जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ आगे बैठा पीठि फिराइ ॥१॥ जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥२॥ निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥ प्रभ की कला न मेटी जाई ॥३॥ कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ जा के हिरदै नामु न होई ॥४॥८॥ गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥१॥ भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु ॥ मानस जनम का एही लाहु ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥ जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥२॥ अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ आवै अंतु न भजिआ जाई ॥ जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥३॥ सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ तिन ही पाए निरंजन देव ॥ गुर मिलि ता के खुल्हे कपाट ॥ बहुरि न आवै जोनी बाट ॥४॥ इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥ घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥५॥१॥९॥ सिव की पुरी बसै बुधि सारु ॥ तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ ईत ऊत की सोझी परै ॥ कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥१॥ निज पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ राजा राम नामु मोरा ब्रहम गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ मूल दुआरै बंधिआ बंधु ॥ रवि ऊपरि गहि राखिआ चंदु ॥ पछम दुआरै सूरजु तपै ॥ मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥२॥ पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥ तिह सिल ऊपरि खिड़की अउर ॥ खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥३॥२॥१०॥ सो मुलाँ जो मन सिउ लरै ॥ गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥ काल पुरख का मरदै मानु ॥ तिसु मुला कउ

सदा सलामु ॥१॥ है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१॥ रहाउ ॥ काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥ सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥२॥ सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ बाहरि जाता भीतरि आनै ॥ गगन मंडल महि लसकरु करै ॥ सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥३॥ जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ हिंदू राम नामु उचरै ॥ मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥४॥३॥११॥ महला ५ ॥ जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा होवै सेव ॥ जो पाथर की पाँई पाइ ॥ तिस की घाल अजाँई जाइ ॥१॥ ठाकुरु हमरा सद बोलन्ता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरि देउ न जानै अंधु ॥ भ्रम का मोहिआ पावै फंधु ॥ न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ फोकट करम निहफल है सेव ॥२॥ जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ उस ते कहहु कवन फल पावै ॥ जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ ताँ मिरतक का किआ घटि जाई ॥३॥ कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ समझि देखु साकत गावार ॥ दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥४॥४॥१२॥ जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥ काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ भुइअंगम भ्रिंग माइआ महि खापे ॥१॥ माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ जेते जीअ तेते डहकाई ॥१॥ रहाउ ॥ पंखी मृग माइआ महि राते ॥ साकर माखी अधिक संतापे ॥ तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ सिध चउरासीह माइआ महि खेला ॥२॥ छिअ जती माइआ के बंदा ॥ नवै नाथ सूरज अरु चंदा ॥ तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ माइआ महि कालु अरु पंच दूता ॥३॥ सुआन सिआल माइआ महि राता ॥ बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ माँजार गाडर अरु लूबरा ॥ बिरख मूल माइआ महि परा ॥४॥ माइआ अंतरि भीने देव ॥ सागर इंद्रा अरु धरतेव ॥ कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ तब छूटे जब साधू पाइआ ॥५॥५॥१३॥ जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ जब

मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥१॥ ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ हरि की न सिमरहु दुख भंजना ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु सिंघु रहै बन माहि ॥ तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥ फूलि रही सगली बनराइ ॥२॥ जीतो बूडै हारो तिरै ॥ गुर परसादी पारि उतरै ॥ दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ केवल राम रहहु लिव लाइ ॥३॥६॥१४॥ सतरि सैइ सलार है जा के ॥ सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ छपन कोटि जा के खेल खासी ॥१॥ मो गरीब की को गुजरावै ॥ मजलसि दूरि महलु को पावै ॥१॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी है खेल खाना ॥ चउरासी लख फिरै दिवानाँ ॥ बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥२॥ दिल खलहलु जा कै जरद रू बानी ॥ छोडि कतेब करै सैतानी ॥ दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ अपना कीआ पावै सोई ॥३॥ तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ दासु कबीरु तेरी पनह समानाँ ॥ भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥४॥७॥१५॥ सभु कोई चलन कहत है ऊहाँ ॥ ना जानउ बैकुंठु है कहाँ ॥१॥ रहाउ ॥ आप आप का मरमु न जानाँ ॥ बातन ही बैकुंठु बखानाँ ॥१॥ जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ तब लगु नाही चरन निवास ॥२॥ खाई कोटु न परल पगारा ॥ ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥३॥ कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥४॥८॥१६॥ किउ लीजै गढु बंका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥१॥ रहाउ ॥ पाँच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥ जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥१॥ कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुन्नु दरवाजा ॥ क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥२॥ स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीए न जाई ॥३॥ प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥४॥ सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ साधसंगति अरु गुर की कृपा ते

पकरिए गढ को राजा ॥५॥ भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ दासु कमीरु चड़िए गड़् ऊपरि राजु लीए अबिनासी ॥६॥६॥१७॥ गंग गुसाइिनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बाँधि करि खरे कबीर ॥१॥ मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइि ॥ चरन कमल चितु रहिए समाइि ॥ रहाउ ॥ गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला पर बैठे कबीर ॥२॥ कहि कंबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥३॥१०॥१८॥

भैरउ कबीर जीउ असटपदी घरु २ ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

अगम दुगम गड़ि रचिए बास ॥ जा महि जोति करे परगास ॥ बिजुली चमकै होइि अन्नदु ॥ जिह पउड़े प्रभ बाल गोबिंद ॥१॥ इिहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥ जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥१॥ रहाउ ॥ अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥ हउमै गावनि गावहि गीत ॥ अनहद सबद होत झुनकार ॥ जिह पउड़े प्रभ स्री गोपाल ॥२॥ खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ तृअ असथान तीनि तृअ खंडा ॥ अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥३॥ कदली पुहप धूप परगास ॥ रज पंकज महि लीए निवास ॥ दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ जह पउड़े स्री कमला कंत ॥४॥ अरध उरध मुखि लागो कासु ॥ सुन्न मंडल महि करि परगासु ॥ ऊहाँ सूरज नाही चंद ॥ आदि निरंजनु करै अन्नद ॥५॥ सो ब्रहमंडि पिंडि सो जानु ॥ मान सरोवरि करि इिसनानु ॥ सोह्य सो जा कउ है जाप ॥ जा कउ लिपत न होइि पुन्न अरु पाप ॥६॥ अबरन बरन घाम नही छाम ॥ अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ टारी न टरै आवै न जाइि ॥ सुन्न सहज महि रहिए समाइि ॥७॥ मन मधे जानै जे कोइि ॥ जो बोलै सो आपै होइि ॥ जोति मंतृ मनि असथिरु करै ॥ कहि कबीर सो प्रानी तरै ॥८॥१॥ कोटि सूर जा कै परगास ॥ कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ दुरगा कोटि जा कै मरदनु करै ॥ ब्रहमा कोटि बेद उचरै ॥१॥ जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ आन देव सिउ नाही काम ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि चंद्रमे

करहि चराक ॥ सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ धरम कोटि जा कै प्रतिहार ॥२॥ पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ रोमावलि कोटि अठारह भार ॥३॥ कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ कोटिक लखमी करै सीगार ॥ कोटिक पाप पुन्न बहु हिरहि ॥ इंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥४॥ छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खिअत अपार ॥ लट छूटी वरतै बिकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥५॥ कोटि जग जा कै दरबार ॥ गंध्रब कोटि करहि जैकार ॥ बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ तऊ पारब्रहम का अंतु न लहै ॥६॥ बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ रावन सैना जह ते छली ॥ सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ दुरजोधन का मथिआ मानु ॥७॥ कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ देहि अभै पदु माँगउ दान ॥८॥२॥१८॥२०॥

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रे जिहबा करउ सत खंड ॥ जामि न उचरसि स्री गोबिंद ॥१॥ रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥२॥ असंख कोटि अन पूजा करी ॥ इेक न पूजसि नामै हरी ॥३॥ प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ अन्नत रूप तेरे नाराइणा ॥४॥१॥ पर धन पर दारा परहरी ॥ ता कै निकटि बसै नरहरी ॥१॥ जो न भजंते नाराइणा ॥ तिन का मै न करउ दरसना ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कै भीतरि है अंतरा ॥ जैसे पसु तैसे एइि नरा ॥२॥ प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ ना सोहै बतीस लखना ॥३॥२॥ दूधु कटोरै गडवै पानी ॥ कपल गाइि नामै दुहि आनी ॥१॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइि ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइि ॥ नाही त घर को बापु रिसाइि ॥१॥ रहाउ ॥ सोइिन कटोरी अंमृत भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥ इेकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइिनु हसै ॥३॥ दूधु पीआइि भगतु

घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥४॥३॥ मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥ रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥१॥ भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥ तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ रसना राम रसाइनु पीजै ॥२॥ अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥३॥ उसतति निंदा करै नरु कोई ॥ नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥४॥४॥ कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥ कबहू घर घर टूक मगावै ॥ कबहू कूरनु चने बिनावै ॥१॥ जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥ हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहू पाइि पनहीए न पावै ॥२॥ कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥ कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥३॥ भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥४॥५॥ हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥१॥ हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥ छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ लै कमली चलिए पलटाइि ॥ देहुरै पाछै बैठा जाइि ॥२॥ जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ भगत जनाँ कउ देहुरा फिरै ॥३॥६॥

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २   ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ तृखावंत जल सेती काज ॥ जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥ ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥ नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ सहज सुभाइि भइए बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ लोभी नरु धन का हितकारी ॥ कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥२॥ साई प्रीति जि आपे लाइे ॥ गुर परसादी दुबिधा जाइे ॥ कबहु न तूटसि रहिआ समाइि ॥ नामे चितु लाइिआ सचि नाइि ॥३॥ जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ गोबिदु बसै हमारै चीति ॥४॥१॥७॥ घर की नारि

तिआगै अंधा ॥ पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥१॥ पापी का घरु अगने माहि ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि की भगति न देखै जाइ ॥ मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ मूलहु भूला आवै जाइ ॥ अंमृतु डारि लादि बिखु खाइ ॥२॥ जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ कापरु पहिरि करहि संीगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वा के गले जम का है फास ॥३॥ जा के मसतकि लिखिए करमा ॥ सो भजि परि है गुर की सरना ॥ कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥४॥२॥८॥ संडा मरका जाइ पुकारे ॥ पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥ रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥१॥ राम नामा जपिबो करै ॥ हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥२॥ दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ गिरि तर जलु जुआला भै राखिए राजा रामि माइआ फेरी ॥३॥ काढि खड़गु कालु भै कोपिए मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥ पीत पीतांबर तृभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥४॥ हरनाखसु जिनि नखह बिदारिए सुरि नर कीए सनाथा ॥ कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥५॥३॥९॥ सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥१॥ नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ नातरु गरदनि मारउ ठाँइ ॥२॥ बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥३॥ मेरा कीआ कछू न होइ ॥ करि है रामु होइ है सोइ ॥४॥ बादिसाहु चड़्हिए अहंकारि ॥ गज हसती दीनो चमकारि ॥५॥ रुदनु करै नामे की माइ ॥ छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥६॥ न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥७॥ करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की एट ॥८॥ काजी मुलाँ करहि सलामु ॥ इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥९॥ बादिसाह बेनती सुनेहु ॥

नामे सर भरि सोना लेहु ॥१०॥ मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥११॥ पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ नामा गावै गुन गोपाल ॥१२॥ गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥१३॥ सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न आइिए तृभवण धणी ॥१४॥ पाखंतण बाज बजाइिला ॥ गरुड़ चड़्हे गोबिंद आइिला ॥१५॥ अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चड़्हे आइे गोपाल ॥१६॥ कहहि त धरणि इिकोडी करउ ॥ कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥१७॥ कहहि त मुई गऊ देउ जीआइि ॥ सभु कोई देखै पतीआइि ॥१८॥ नामा प्रणवै सेल मसेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥१९॥ दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादिसाह के आगे धरी ॥२०॥ बादिसाहु महल महि जाइि ॥ अउघट की घट लागी आइि ॥२१॥ काजी मुलाँ बिनती फुरमाइि ॥ बखसी ह्निदू मै तेरी गाइि ॥ २२॥ नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इिहु किछु पतीआ मुझै दिखाइि ॥२३॥ इिस पतीआ का इिहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु सुलितान ॥२४॥ नामदेउ सभ रहिआ समाइि ॥ मिलि ह्निदू सभ नामे पहि जाहि ॥२५॥ जउ अब की बार न जीवै गाइि ॥ त नामदेव का पतीआ जाइि ॥२६॥ नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनाँ ले उधरिआ पारि ॥२७॥ सगल कलेस निंदक भइिआ खेदु ॥ नामे नाराइिन नाही भेदु ॥२८॥१॥१०॥ घरु २ ॥ जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥ जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥१॥ सति सति सति सति सति गुरदेव ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥१॥ रहाउ ॥ जउ गुरदेउ त नामु दृड़ावै ॥ जउ गुरदेउ न दह दिस धावै ॥ जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥२॥ जउ गुरदेउ त अंमृत बानी ॥ जउ गुरदेउ त अकथ कहानी ॥ जउ गुरदेउ त अंमृत देह ॥ जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥३॥ जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै ॥ जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ जउ गुरदेउ सदा साबासि ॥४॥ जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी ॥

जउ गुरदेउ बुरा भला इेक ॥ जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥५॥ जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै ॥ जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ जउ गुरदेउ सिहज निकसाई ॥६॥ जउ गुरदेउ त अठसठि नाइिआ ॥ जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइिआ ॥ जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥७॥ जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ जउ गुरदेउ त भउजल तरै ॥ जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥८॥ जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥ नामदेउ गुर की सरणाई ॥९॥१॥२॥११॥

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ जो दीसै सो होइि बिनासा ॥ बरन सहित जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल निहकामु ॥१॥ परचै रामु रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन की दुबिधा खाइि ॥ बिनु दुआरे त्रै लोक समाइि ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइि सु अनभै रहै ॥२॥ फल कारन फूली बनराइि ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइि ॥ गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ गिआनु भइिआ तह करमह नासु ॥३॥ घ्रित कारन दधि मथै सइिआन ॥ जीवत मुकत सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥ नामदेव ॥

आउ कलम्दर केसवा ॥ करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥ चमर पोस का मंदरु तेरा इिह बिधि बने गुपाला ॥१॥ छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इिजारा ॥ भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥२॥ देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ बीबी कउला सउ काइिनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥ भगति करत मेरे ताल छिनाइे किह पहि करउ पुकारा ॥ नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥४॥१॥

राגु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥ परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥१॥ भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥ हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥१॥ रहाउ ॥ करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥२॥ अखी कुदरति कन्नी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥३॥ माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥ नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥४॥१॥ महला १ बसंतु ॥ रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥ किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥१॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥१॥ रहाउ ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥२॥ तेरे सठि संबत सभि तीरथा ॥ तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ अणजाणत नामु वखाणीऐ ॥३॥ नानकु वेचारा किआ कहै ॥ सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ सिरु नानक लोका पाव है ॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥४॥२॥ बसंतु महला १ ॥ सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥ गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ गरुड़ा खाणा दुध सिउ गाडि ॥१॥ रे मन

लेखै कबहू न पाइ ॥ जामि न भीजै साच नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ दस अठ लीखे होवहि पासि ॥ चारे बेद मुखागर पाठि ॥ पुरबी नावै वरनाँ की दाति ॥ वरत नेम करे दिन राति ॥२॥ काजी मुलाँ होवहि सेख ॥ जोगी जंगम भगवे भेख ॥ को गिरही करमा की संधि ॥ बिनु बूझे सभ खड़ीअसि बंधि ॥३॥ जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥ करणी उपरि होवगि सार ॥ हुकमु करहि मूरख गावार ॥ नानक साचे के सिफति भंडार ॥४॥३॥ बसंतु महला ३ तीजा ॥ बसत्र उतारि दिगंबरु होगु ॥ जटाधारि किआ कमावै जोगु ॥ मनु निरमलु नही दसवै दुआर ॥ भ्रमि भ्रमि आवै मूड़ा वारो वार ॥१॥ इेकु धिआवहु मूड़्र मना ॥ पारि उतरि जाहि इक खिनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ सिमृति सासत्र करहि वखिआण ॥ नादी बेदी पड़्हि पुराण ॥ पाखंड दृसटि मनि कपटु कमाहि ॥ तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि ॥२॥ जे को ऐसा संजमी होइ ॥ कृआ विसेख पूजा करेइ ॥ अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ एइ निरंजनु कैसे पाहि ॥३॥ कीता होआ करे किआ होइ ॥ जिस नो आपि चलाइे सोइ ॥ नदरि करे ताँ भरमु चुकाइे ॥ हुकमै बूझै ताँ साचा पाइे ॥४॥ जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ॥ तीरथ भवै दिसंतर लोइ ॥ नानक मिलीऐ सतिगुर संग ॥ तउ भवजल के तूटसि बंध ॥५॥४॥ बसंतु महला १ ॥ सगल भवन तेरी माइिआ मोह ॥ मै अवरु न दीसै सरब तोह ॥ तू सुरि नाथा देवा देव ॥ हरि नामु मिलै गुर चरन सेव ॥१॥ मेरे सुंदर गहिर गंभीर लाल ॥ गुरमुखि राम नाम गुन गाइे तू अपरंपरु सरब पाल ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ बिनु गुर मैल मलीन अंगु ॥ बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ गुर सबदि सलाहे साचु सोइ ॥२॥ जा कउ तू राखहि रखनहार ॥ सतिगुरू मिलावहि करहि सार ॥ बिखु हउमै ममता परहराइि ॥ सभि दूख बिनासे राम राइि ॥३॥ ऊतम गति मिति हरि गुन सरीर ॥ गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ लिव लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥ जन नानक हरि गुरु गुर मिलाउ ॥४॥५॥ बसंतु महला १ ॥ मेरी सखी सहेली सुनहु भाइि ॥ मेरा पिरु रीसालू संगि साइि ॥ एहु अलखु न लखीऐ कहहु काइि ॥

गुरि संगि दिखाइए राम राइ ॥१॥ मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ हरि प्रभ संगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुखी दुहागणि नाहि भेउ ॥ एहु घटि घटि रावै सरब प्रेउ ॥ गुरमुखि थिरु चीनै संगि देउ ॥ गुरि नामु दृड़ाइआ जपु जपेउ ॥२॥ बिनु गुर भगति न भाउ होइ ॥ बिनु गुर संत न संगु देइ ॥ बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥ मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥३॥ गुरि मनु मारिए करि संजोगु ॥ अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥ गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥ जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥४॥६॥ बसंतु महला १ ॥ आपे कुदरति करे साजि ॥ सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥ गुरमति ऊतम संगि साथि ॥ हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥१॥ मत बिसरसि रे मन राम बोलि ॥ अपरंपरु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि तुलाइे अतुलु तोलि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर चरन सरेवहि गुरसिख तोर ॥ गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ गुर सेव न भाई सि चोर चोर ॥२॥ गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ गुरि तुठै पाईऐ हरि महलि ठाउ ॥ परहरि निंदा हरि भगति जागु ॥ हरि भगति सुहावी करमि भागु ॥३॥ गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥ गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ फलु नामु परापति गुरु तुसि देइ ॥ कहु नानक पावहि विरले केइ ॥४॥७॥ बसंतु महला ३ इक तुका ॥ साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥ जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥१॥ तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे माइिआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ तैसे संत जन राम नाम रवत रहै ॥२॥ मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइिआ ॥ तउ सरणागति रहउ पइिआ ॥३॥ कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ गुर प्रसादि को पावै अंमृत नामा ॥४॥८॥

महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

साल ग्राम बिप पूजि मनावहु सुकृतु तुलसी माला ॥ राम नामु जपि बेड़ा बाँधहु दइिआ करहु

दड़िआला ॥१॥ काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥१॥ रहाउ ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥ अंमृतु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥२॥ कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ जिउ गोडहु तिउ तुम् सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥३॥ बगुले ते फुनि ह्मसुला होवै जे तू करहि दड़िआला ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा दड़िआ करहु दड़िआला ॥४॥१॥९॥ बसंतु महला १ ह्मिडोल ॥ साहुरड़ी वथु सभु किछु साझी पेवकड़ै धन वखे ॥ आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥१॥ मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ कढि कसीदा पहिरहि चोली ताँ तुम् जाणहु नारी ॥ जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥२॥ जे तूं पड़िआ पंडितु बीना दुइ अखर दुइ नावा ॥ प्रणवति नानकु इेकु लम्घाइे जे करि सचि समावाँ ॥३॥२॥१०॥ बसंतु ह्मिडोल महला १ ॥ राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ दुइ माई दुइ बापा पड़ीअहि पंडित करहु बीचारो ॥१॥ सुआमी पंडिता तुम् देहु मती ॥ किन बिधि पावउ प्रानपती ॥१॥ रहाउ ॥ भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइिआ ॥ चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइिआ ॥२॥ राम रवंता जाणीऐ इिक माई भोगु करेइि ॥ ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइि ॥३॥ कहिआ सुणहि न खाइिआ मानहि तिना ही सेती वासा ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥४॥३॥११॥ बसंतु ह्मिडोल महला १ ॥ साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुख गवाइे ॥ करि किरपा हरि भगति दृड़ाइे अनदिनु हरि गुण गाइे ॥१॥ मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥ बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी ॥२॥ घटि घटि गुपतु उपाइे वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥ हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने

हरि जलु अंमृत नामु मना ॥३॥ जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए ॥ पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए ॥४॥४॥१२॥

बसंतु महला ३ घरु १ दुतुके ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

माहा रुती महि सद बसंतु ॥ जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ किआ हउ आखा किरम जंतु ॥ तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु ॥१॥ तै साहिब की करहि सेव ॥ परम सुख पावहि आतम देव ॥१॥ रहाउ ॥ करमु होवै ताँ सेवा करै ॥ गुर परसादी जीवत मरै ॥ अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ इन बिधि प्राणी दुतरु तरै ॥२॥ बिखु अंमृतु करतारि उपाए ॥ संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥ आपे करता करे कराए ॥ जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥३॥ नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ अंमृत नामु आपे देइ ॥ बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ अपणा भाणा आपि करेइ ॥४॥१॥ बसंतु महला ३ ॥ राते साचि हरि नामि निहाला ॥ दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥१॥ गुर गोपाल मेरै मनि भाए ॥ रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥१॥ रहाउ ॥ इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ राम बिसारि बहुरि पछुताना ॥ बिछुरत मिलाइ गुर सेव राँगे ॥ हरि नामु दीए मसतकि वडभागे ॥२॥ पउण पाणी की इह देह सरीरा ॥ हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ॥ करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥३॥ चारि नदीआ अगनी तनि चारे ॥ तृसना जलत जले अहंकारे ॥ गुरि राखे वडभागी तारे ॥ जन नानक उरि हरि अंमृतु धारे ॥४॥२॥ बसंतु महला ३ ॥ हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ साचु सहजु कदे न होवै सोगु ॥ मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ॥ मरि मरि जंमहि भी मरि जाहि ॥१॥ से जन जीवे जिन हरि मन माहि ॥ साचु समालहि साचि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ॥ दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ हरि आपे जन लीए लाइ ॥ तिन सदा सुखु है तिलु

न तमाइि ॥२॥ नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ साची दरगह पावै मानु ॥ हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥३॥ जीअ जंत की करे प्रतिपाल ॥ गुर परसादी सद सम्हाल ॥ दरि साचै पति सिउ घरि जाइि ॥ नानक नामि वडाई पाइि ॥४॥३॥ बसंतु महला ३ ॥ अंतरि पूजा मन ते होइि ॥ इेको वेखै अउरु न कोइि ॥ दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइिआ ॥ सतिगुरि मैनो इेकु दिखाइिआ ॥१॥ मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ इिहु मनु मउलिआ गाइि गुण गोबिंद ॥१॥ रहाउ ॥ गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ ताँ प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ आपु छोडि होहि दासत भाइि ॥ तउ जगजीवनु वसै मनि आइि ॥२॥ भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ इिसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ सभु मेरा प्रभु आतम देउ ॥३॥ आपे सतिगुरु मेलि मिलाइे ॥ जगजीवन सिउ आपि चितु लाइे ॥ मनु तनु हरिआ सहजि सुभाइे ॥ नानक नामि रहे लिव लाइे ॥४॥४॥ बसंतु महला ३ ॥ भगति वछलु हरि वसै मनि आइि ॥ गुर किरपा ते सहज सुभाइि ॥ भगति करे विचहु आपु खोइि ॥ तद ही साचि मिलावा होइि ॥१॥ भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥१॥ रहाउ ॥ भगति करे सो जनु निरमलु होइि ॥ गुर सबदी विचहु हउमै खोइि ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइि ॥ सदा साँति सुखि सहजि समाइि ॥२॥ साचि रते तिन सद बसंत ॥ मनु तनु हरिआ रवि गुण गुविंद ॥ बिनु नावै सूका संसारु ॥ अगनि तृसना जलै वारो वार ॥३॥ सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ सदा सुखु सरीरि भाणै चितु लावै ॥ अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइि ॥ नानक नामु वसै मनि आइि ॥४॥५॥ बसंतु महला ३ ॥ माइिआ मोहु सबदि जलाइे ॥ मनु तनु हरिआ सतिगुर भाइे ॥ सफलिए बिरखु हरि कै दुआरि ॥ साची बाणी नाम पिआरि ॥१॥ इे मन हरिआ सहज सुभाइि ॥ सच फलु लागै सतिगुर भाइि ॥१॥ रहाउ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि ॥ छाव घणी फूली बनराइि ॥ गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइि ॥२॥ अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ सतिगुरि

गवाई विचहु जूठि भराँति ॥ परपंच वेखि रहिआ विसमादु ॥ गुरमुखि पाईऐ नाम प्रसादु ॥३॥ आपे करता सभि रस भोग ॥ जो किछु करे सोई परु होग ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥४॥६॥ बसंतु महला ३ ॥ पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ इेको चेतै फिरि जोनि न आवै ॥ सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥ साचि नामि सहजि समाइआ ॥१॥ गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ॥ हरि नामु सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु जन की है साची बाणी ॥ गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ चहु जुग पसरी साची सोइ ॥ नामि रता जनु परगटु होइ ॥२॥ इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥ से जन साचे साचै भाइ ॥ साचु धिआइनि देखि हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥३॥ इेको करता अवरु न कोइ ॥ गुर सबदी मेलावा होइ ॥ जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ नानक सहजे नामि समाइआ ॥४॥७॥ बसंतु महला ३ ॥ भगति करहि जन देखि हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥ हरि सेती सद रहहि लिव लाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥१॥ दासा का दासु विरला कोई होइ ॥ ऊतम पदवी पावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ इेको सेवहु अवरु न कोइ ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ ना एहु मरै न आवै जाइ ॥ तिसु बिनु अवरु सेवी किउ माइ ॥२॥ से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥ आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ॥ गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ मनु निरमलु निरमल सचु सोइ ॥३॥ जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि तू जाणु ॥ साच सबदि प्रभु इेकु सिञाणु ॥ हरि रसु चाखै ताँ सुधि होइ ॥ नानक नामि रते सचु सोइ ॥४॥८॥ बसंतु महला ३ ॥ नामि रते कुलाँ का करहि उधारु ॥ साची बाणी नाम पिआरु ॥ मनमुख भूले काहे आइे ॥ नामहु भूले जनमु गवाइे ॥१॥ जीवत मरै मरि मरणु सवारै ॥ गुर कै सबदि साचु उर धारै ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ मनु निरमलु सद गुणी गहीरा ॥ जंमै मरै न आवै जाइ ॥ गुर परसादी साचि समाइ ॥२॥ साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि

हरि दरि नीसाणै ॥ दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ निज घरि वासा पावै सोइ ॥३॥ आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ ॥ साचा सेवहु साची बाणी ॥ नानक नामे साचि समाणी ॥४॥६॥ बसंतु महला ३ ॥ बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥१॥ हुकमु मन्ने सो जनु परवाणु ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ साचि रते जिन्हा धुरि लिखि पाइआ ॥ हरि का नामु सदा मनि भाइआ ॥ सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥२॥ इकु नामु तारे संसारु ॥ गुर परसादी नाम पिआरु ॥ बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥३॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ सतिगुर सेवा नामु दृड़्हाए ॥ जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥४॥१०॥ बसंतु महला ३ ॥ कृपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ आपे आपि वसै मनि आए ॥ निहचल मति सदा मन धीर ॥ हरि गुण गावै गुणी गहीर ॥१॥ नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ बृथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ बहु भेख करहि मनि साँति न होइ ॥ बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥२॥ घर महि वसतु अगम अपारा ॥ गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ सदा रंगि राते सचि समाहि ॥३॥ आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ आपे भावै लए मिलाइ ॥ तिस ते नेड़ै नाही को दूरि ॥ नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥४॥११॥ बसंतु महला ३ ॥ गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि ॥ जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥१॥ हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ गुर कै सबदि इहु मनु मउलिआ हरि गुणदाता नामु वखाणै ॥१॥ रहाउ ॥ भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ बहु संजमि साँति न पावै कोइ ॥ गुरमति नामु परापति होइ ॥ वडभागी हरि पावै सोइ ॥२॥ कलि महि

राम नामि वडिआई ॥ गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥ बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥३॥ वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ छूटै राम नामि दुखु सारा ॥ हिरदै वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ नानक जाणै सभु उपावणहारा ॥४॥१२॥ बसंतु महला ३ इक तुके ॥ तेरा कीआ किरम जंतु ॥ देहि त जापी आदि मंतु ॥१॥ गुण आखि वीचारी मेरी माइ ॥ हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥ काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥२॥ गुरि किरपा कीन्ही चूका अभिमानु ॥ सहज भाइ पाइआ हरि नामु ॥३॥ ऊतमु ऊचा सबद कामु ॥ नानकु वखाणै साचु नामु ॥४॥१॥१३॥ बसंतु महला ३ ॥ बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥१॥ तुम् साचु धिआवहु मुगध मना ॥ ताँ सुखु पावहु मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ इतु मनि मउलिऐ भइआ अन्नदु ॥ अंमृत फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥२॥ इेको इेकु सभु आखि वखाणै ॥ हुकमु बूझै ताँ इेको जाणै ॥३॥ कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ आखणु वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥४॥२॥१४॥ बसंतु महला ३ ॥ सभि जुग तेरे कीते होइे ॥ सतिगुरु भेटै मति बुधि होइे ॥१॥ हरि जीउ आपे लैहु मिलाइ ॥ गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥ फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥२॥ सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥ राम नामु राखै उर धारे ॥३॥ मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाइे सोइ ॥४॥३॥१५॥ बसंतु महला ३ ॥ तिन् बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥ पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥१॥ इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥१॥ रहाउ ॥ इहु मनु धंधै बाँधा करम कमाइ ॥ माइिआ मूठा सदा बिललाइ ॥२॥ इहु मनु छूटै जाँ सतिगुरु भेटै ॥ जमकाल की फिरि आवै न फेटै ॥३॥ इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ॥ नानक माइिआ मोहु सबदि जलाइ ॥४॥४॥१६॥ बसंतु महला ३ ॥ बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥ इेहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ

॥१॥ इिन बिधि इिहु मनु हरिआ होइि ॥ हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइि ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर बाणी सबदु सुणाइे ॥ इिहु जगु हरिआ सतिगुर भाइे ॥२॥ फल फूल लागे जाँ आपे लाइे ॥ मूलि लगै ताँ सतिगुरु पाइे ॥३॥ आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ नानक पूरै भागि भगति निराली ॥४॥५॥१७॥

बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ॥ गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥१॥ मेरे मन राम नामि चितु लाइि ॥ मनु तनु तेरा हरिआ होवै इिकु हरि नामा फलु पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु अंमृतु पीआइि ॥ विचहु हउमै दुखु उठि गइिआ भाई सुखु वुठा मनि आइि ॥२॥ धुरि आपे जिना नो बखसिएनु भाई सबदे लइिअनु मिलाइि ॥ धूड़ि तिना की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइि ॥३॥ आपि कराइे करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइि ॥ नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइि ॥४॥१॥१८॥१२॥१८॥३०॥

रागु बसंतु महला ४ घरु १ इिक तुके १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥ तिउ घटि घटि रमईआ एति पोति ॥१॥ इेको हरि रविआ स्रब थाइि ॥ गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइि ॥१॥ रहाउ ॥ घटि घटि अंतरि इेको हरि सोइि ॥ गुरि मिलिऐ इिकु प्रगटु होइि ॥२॥ इेको इेकु रहिआ भरपूरि ॥ साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥३॥ इेको इेकु वरतै हरि लोइि ॥ नानक हरि इेको करे सु होइि ॥४॥१॥ बसंतु महला ४ ॥ रैणि दिनसु दुइि सदे पइे ॥ मन हरि सिमरहु अंति सदा रखि लइे ॥१॥ हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ सभु आलसु दूख भंजि प्रभु पाइिआ गुरमति गावहु गुण प्रभ केरे ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख फिरि फिरि हउमै मुइे ॥

कालि दैति संघारे जम पुरि गडे ॥२॥ गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे ॥ जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥३॥ भगत जना कउ हरि किरपा धारी ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥४॥२॥

बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि इेक लुकानी ॥ सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥१॥ माधो साधू जन देहु मिलाइि ॥ देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइि ॥१॥ रहाउ ॥ पंच चोर मिलि लागे नगरीआ राम नाम धनु हिरिआ ॥ गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ ॥२॥ पाखंड भरम उपाव करि थाके रिद अंतरि माइिआ माइिआ ॥ साधू पुरखु पुरखपति पाइिआ अगिआन अंधेरु गवाइिआ ॥३॥ जगन्नाथ जगदीस गुसाई करि किरपा साधु मिलावै ॥ नानक साँति होवै मन अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥४॥१॥३॥ बसंतु महला ४ हिंडोल ॥ तुम् वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरे किरम तुमनछे ॥ हरि दीन दइिआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥१॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि करि कृपछे ॥ जनम जनम के किलविख मलु भरिआ मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्रा जनु जाति अविजाता हरि जपिए पतित पवीछे ॥ हरि कीए सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा हरि प्रभ दिनछे ॥२॥ जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ से धंनि वडे वड पूरे हरि जन जिन् हरि धारिए हरि उरछे ॥३॥ हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि कृपा प्रभ मिलछे ॥ जन नानक गुरु पाइिआ हरि तूठे हम कीइे पतित पवीछे ॥४॥२॥४॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मेरा इिकु खिनु मनूआ रहि न सकै नित हरि हरि नाम रसि गीधे ॥ जिउ बारिकु रसकि परिए थनि माता थनि काढे बिलल बिलीधे ॥१॥ गोबिंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे ॥ वडै भागि गुरु

सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥१॥ रहाउ ॥ जन के सास सास है जेते हरि बिरहि प्रभू हरि बीधे ॥ जिउ जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥२॥ जन जपिए नामु निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अंमृति हरि जलि नीधे ॥३॥ हमरे करम न बिचरहु ठाकुर तुम् पैज रखहु अपनीधे ॥ हरि भावै सुणि बिनउ बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥४॥३॥५॥ बसंतु ह्विडोल महला ४ ॥ मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ ॥ गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिए घरि मंदरि आणि वसाईऐ ॥१॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ ॥ जिउ एडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ ॥२॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ ॥ जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ ॥३॥ मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥४॥४॥६॥ बसंतु ह्विडोल महला ४ ॥ आवण जाणु भइआ दुखु बिखिआ देह मनमुख सुंञी सुंञु ॥ राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ जमि पकरे कालि सलुंञु ॥१॥ गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंञु ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति हरि रसु भुंञु ॥१॥ रहाउ ॥ सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पंञु ॥ हम डुबदे पाथर काढि लेहु प्रभ तुम् दीन दइआल दुख भंञु ॥२॥ हरि उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लम्ञु ॥ हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वंञु ॥३॥ जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लम्ञु ॥ जन नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मंत्रु दीए हरि भंञु ॥४॥५॥७॥१२॥१८॥७॥३७॥

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुके ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥ आजु हमारै महा अन्नद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥ आजु हमारै गृहि बसंत ॥ गुन गाइे प्रभ तुम् बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥ आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥ होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥ मनु तनु मउलिए अति अनूप ॥ सूकै नाही छाव धूप ॥ सगली रूती हरिआ होइि ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥ बिरखु जमिए है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भाँति ॥ तृपति अघाने हरि गुणह गाइि ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइि ॥४॥१॥ बसंतु महला ५ ॥ हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥ जूआरी जूड़े माहि चीतु ॥ अमली जीवै अमलु खाइि ॥ तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइि ॥१॥ अपनै रंगि सभु को रचै ॥ जितु प्रभि लाइिआ तितु तितु लगै ॥१॥ रहाउ ॥ मेघ समै मोर निरतिकार ॥ चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ माता बारिक देखि अन्नद ॥ तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥२॥ सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ रणु देखि सूरे चित उलास ॥ किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥३॥ सरब रंग इिक रंग माहि ॥ सरब सुखा सुख हरि कै नाइि ॥ तिसहि परापति इिहु निधानु ॥ नानक गुरु जिसु करे दानु ॥४॥२॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु बसंतु जिसु प्रभु कृपालु ॥ तिसु बसंतु जिसु गुरु दइिआलु ॥ मंगलु तिस कै जिसु इेकु कामु ॥ तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥१॥ गृहि ता के बसंतु गनी ॥ जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥१॥ रहाउ ॥ प्रीति पारब्रहम मउलि मना ॥ गिआनु कमाईअै पूछि जनाँ ॥ सो तपसी जिसु साधसंगु ॥ सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥२॥ से निरभउ जिन् भउ पइिआ ॥ सो सुखीआ जिसु भ्रमु गइिआ ॥ सो इिकाँती जिसु रिदा थाइि ॥ सोई निहचलु साच ठाइि ॥३॥ इेका खोजै इेक प्रीति ॥ दरसन परसन हीत चीति ॥ हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ नानक दास तिसु जन

कुरबाणु ॥४॥३॥ बसंतु महला ५ ॥ जीअ प्राण तुम् पिंड दीन् ॥ मुगध सुंदर धारि जोति कीन् ॥ सभि जाचिक प्रभ तुम् दइआल ॥ नामु जपत होवत निहाल ॥१॥ मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥१॥ रहाउ ॥ नामु जपत होवत उधार ॥ नामु जपत सुख सहज सार ॥ नामु जपत पति सोभा होइ ॥ नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥२॥ जा कारणि इह दुलभ देह ॥ सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ साधसंगति महि इहु बिस्रामु ॥ सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥३॥ तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥ सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥४॥४॥ बसंतु महला ५ ॥ प्रभ प्रीतम मेरै संगि राइ ॥ जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि ॥१॥ मेरे प्रीतम प्रान अधार मन ॥ जीउ प्रान सभु तेरो धन ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ मुनि जन सेख न लहहि भेव ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥२॥ जा के भगत आनन्द मै ॥ जा के भगत कउ नाही खै ॥ जा के भगत कउ नाही भै ॥ जा के भगत कउ सदा जै ॥३॥ कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥ सुखदाता प्रभु रहिए समाइ ॥ नानकु जाचै इेकु दानु ॥ करि किरपा मोहि देहु नामु ॥४॥५॥ बसंतु महला ५ ॥ मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥ साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ जैसी दासे धीर मीर ॥ तैसे उधारन गुरह पीर ॥१॥ तुम दाते प्रभ देनहार ॥ निमख निमख तिसु नमसकार ॥१॥ रहाउ ॥ जिसहि परापति साधसंगु ॥ तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥ ते बंधन ते भइे मुकति ॥ भगत अराधहि जोग जुगति ॥२॥ नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ रसना गाइे गुण अनेक ॥ तृसना बूझी गुर प्रसादि ॥ मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥३॥ सेवकु लागो चरण सेव ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ सगल उधारण तेरो नामु ॥ नानक पाइिए इहु निधानु ॥४॥६॥ बसंतु महला ५ ॥ तुम बड दाते दे रहे ॥ जीअ प्राण महि रवि रहे ॥ दीने सगले भोजन खान ॥ मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥१॥ हउ कछू

न जानउ तेरी सार ॥ तू करि गति मेरी प्रभ दइिआर ॥१॥ रहाउ ॥ जाप न ताप न करम कीति ॥ आवै नाही कछू रीति ॥ मन महि राखउ आस इेक ॥ नाम तेरे की तरउ टेक ॥२॥ सरब कला प्रभ तुम् प्रबीन ॥ अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ अगम अगम ऊचह ते ऊच ॥ हम थोरे तुम बहुत मूच ॥३॥ जिन तू धिआइिआ से गनी ॥ जिन तू पाइिआ से धनी ॥ जिनि तू सेविआ सुखी से ॥ संत सरणि नानक परे ॥४॥७॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु तू सेवि जिनि तू कीआ ॥ तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ ॥ तिस का चाकरु होहि फिरि डानु न लागै ॥ तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै ॥१॥ इेवड भाग होहि जिसु प्राणी ॥ सो पाइे इिहु पदु निरबाणी ॥१॥ रहाउ ॥ दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ कछू न होई है पूरन अरथा ॥ माणस सेवा खरी दुहेली ॥ साध की सेवा सदा सुहेली ॥२॥ जे लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ साधू संगति गुरहि बताई ॥ ऊहा जपीअै केवल नाम ॥ साधू संगति पारगराम ॥३॥ सगल तत महि ततु गिआनु ॥ सरब धिआन महि इेकु धिआनु ॥ हरि कीरतन महि ऊतम धुना ॥ नानक गुर मिलि गाइि गुना ॥४॥८॥ बसंतु महला ५ ॥ जिसु बोलत मुखु पवितु होइि ॥ जिसु सिमरत निरमल है सोइि ॥ जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥ जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥१॥ राम राम बोलि राम राम ॥ तिआगहु मन के सगल काम ॥१॥ रहाउ ॥ जिस के धारे धरणि अकासु ॥ घटि घटि जिस का है प्रगासु ॥ जिसु सिमरत पतित पुनीत होइि ॥ अंत कालि फिरि फिरि न रोइि ॥२॥ सगल धरम महि ऊतम धरम ॥ करम करतूति कै ऊपरि करम ॥ जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ॥ संत सभा की लगहु सेव ॥३॥ आदि पुरखि जिसु कीआ दानु ॥ तिस कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ तिस की गति मिति कही न जाइि ॥ नानक जन हरि हरि धिआइि ॥४॥९॥ बसंतु महला ५ ॥ मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ गुरि दइिआलि पूरी मेरी आस ॥ किलविख काटे साधसंगि ॥ नामु जपिए हरि नाम रंगि ॥१॥ गुर परसादि बसंतु बना ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥१॥ रहाउ ॥

समरथ सुआमी कारण करण ॥ मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ जीअ जंत तेरे आधारि ॥ करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि ॥२॥ भव खंडन दुख नास देव ॥ सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ धरणि अकासु जा की कला माहि ॥ तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥३॥ अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ अपणे दास कउ नदरि निहालि ॥ करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥४॥१०॥ बसंतु महला ५ ॥ राम रंगि सभ गए पाप ॥ राम जपत कछु नही संताप ॥ गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥१॥ बसंतु हमारै राम रंगु ॥ संत जना सिउ सदा संगु ॥१॥ रहाउ ॥ संत जनी कीआ उपदेसु ॥ जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥ गुर प्रसादि घटि घटि पछानु ॥२॥ हरि कीरतन रस भोग रंगु ॥ मन पाप करत तू सदा संगु ॥ निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥३॥ चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥४॥११॥ बसंतु महला ५ ॥ सचु परमेसरु नित नवा ॥ गुर किरपा ते नित चवा ॥ प्रभ रखवाले माई बाप ॥ जा कै सिमरणि नही संताप ॥१॥ खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ दुसट दूत सभि भ्रमि थके ॥ बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥२॥ किरतु ओना का मिटसि नाहि ॥ ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ जन का रखवाला आपि सोइ ॥ जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥३॥ प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥४॥१२॥ बसंतु महला ५ ॥ गुर चरण सरेवत दुखु गइआ ॥ पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ जपि जीवै नानकु राम नाम ॥१॥ सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ बिनु सतिगुर दीसै बिललाँती साकतु फिरि फिरि आवै

जावै ॥१॥ रहाउ ॥ से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥२॥ साधसंगति प्रभि कीए निवास ॥ हरि जपि जपि होई पूरन आस ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ ॥३॥ असट सिधि नव निधि इेह ॥ करमि परापति जिसु नामु देह ॥ प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास ॥ गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥४॥१३॥

बसंतु महला ५ घरु १ इक तुके ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सगल इछा जपि पुन्नीआ ॥ प्रभि मेले चिरी विछुंनिआ ॥१॥ तुम रवहु गोबिंदै रवण जोगु ॥ जितु रविऐ सुख सहज भोगु ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ अपणा दासु आपि सम्हालिआ ॥२॥ सेज सुहावी रसि बनी ॥ आइ मिले प्रभ सुख धनी ॥३॥ मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ प्रभ नानक चरण पूजारिआ ॥४॥१॥१४॥ बसंतु महला ५ ॥ किलबिख बिनसे गाइ गुना ॥ अनदिन उपजी सहज धुना ॥१॥ मनु मउलिए हरि चरन संगि ॥ करि किरपा साधू जन भेटे नित रातौ हरि नाम रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ लड़ि लाइ उधारे दीन दइआल ॥२॥ इहु मनु होआ साध धूरि ॥ नित देखै सुआमी हजूरि ॥३॥ काम क्रोध तृसना गई ॥ नानक प्रभ किरपा भई ॥४॥२॥१५॥ बसंतु महला ५ ॥ रोग मिटाइे प्रभू आपि ॥ बालक राखे अपने कर थापि ॥१॥ साँति सहज गृहि सद बसंतु ॥ गुर पूरे की सरणी आइे कलिआण रूप जपि हरि हरि मंतु ॥१॥ रहाउ ॥ सोग संताप कटे प्रभि आपि ॥ गुर अपुने कउ नित नित जापि ॥२॥ जो जनु तेरा जपे नाउ ॥ सभि फल पाइे निहचल गुण गाउ ॥३॥ नानक भगता भली रीति ॥ सुखदाता जपदे नीत नीति ॥४॥३॥१६॥ बसंतु महला ५ ॥ हुकमु करि कीन्हे निहाल ॥ अपने सेवक कउ भइआ दइआलु ॥१॥ गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥ अंमृत नामु रिद महि दीआ ॥१॥ रहाउ ॥ करमु धरमु मेरा

कछु न बीचारिए ॥ बाह पकरि भवजलु निसतारिए ॥२॥ प्रभि काटि मैलु निरमल करे ॥ गुर पूरे की सरणी परे ॥३॥ आपि करहि आपि करणैहारे ॥ करि किरपा नानक उधारे ॥४॥४॥१७॥

बसंतु महला ५ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देखु फूल फूल फूले ॥ अहं तिआगि तिआगे ॥ चरन कमल पागे ॥ तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ हरि चेति मन मेरे ॥ रहाउ ॥ सघन बासु कूले ॥ इकि रहे सूकि कठूले ॥ बसंत रुति आई ॥ परफूलता रहे ॥१॥ अब कलू आइिए रे ॥ इकु नामु बोवहु बोवहु ॥ अन रूति नाही नाही ॥ मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥ गुर मिले हरि पाइे ॥ जिसु मसतकि है लेखा ॥ मन रुति नाम रे ॥ गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥२॥१८॥

बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

होइि इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइि ॥ हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइि ॥१॥ इन् बिधि पासा ढालहु बीर ॥ गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ करम धरम तुम् चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम् सारी ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥२॥ उठि इिसनानु करहु परभाते सोइे हरि आराधे ॥ बिखड़े दाउ लम्घावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥३॥ हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइिआ ॥ जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइिआ ॥४॥१॥१९॥

बसंतु महला ५ हिंडोल ॥ तेरी कुदरति तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ॥ जिस नो कृपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ॥१॥ तेरिआ भगता कउ बलिहारा ॥ थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रंग तेरे आपारा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ॥ भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिस नो

तू रंगु धरता ॥२॥ तू वड दाता तू वड दाना अउरु नही को दूजा ॥ तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥३॥ तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥४॥२॥२०॥ बसंतु हिंडोल महला ५ ॥ मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहं मनी ॥१॥ पिता पारब्रहम प्रभ धनी ॥ मोहि निसतारहु निरगुनी ॥१॥ रहाउ ॥ एपति परलउ प्रभ ते होवै इहु बीचारी हरि जनी ॥२॥ नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥३॥ अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीऐ गुर बचनी ॥४॥३॥२१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥ साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥ या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ ॥ इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥ संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥ उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥ जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥१॥ बसंतु महला ९ ॥ पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥ मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जोगी जंगम अरु संनिआस ॥ सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥ जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥ ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥ जन नानक हरि की सरनाइ ॥ दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥३॥२॥ बसंतु महला ९ ॥ माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥ मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥ लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥ जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ तृसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥ जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि की संपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥ बसंतु महला ९ ॥ मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ ॥ इहु जगु धूए का पहार

॥ तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥ धनु दारा संपति ग्रेह ॥ कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥ इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥ बसंतु महला ९ ॥ कहा भूलिए रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरिए नाहिन अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥ सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥ बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥ संगि तेरै हरि बसत नीत ॥ निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥ बार अंत की होइ सहाइ ॥ कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥५॥

बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगु कऊआ नामु नही चीति ॥ नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ जग सिउ तूटी झूठ परीति ॥१॥ कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ नाम बिना कैसे गुन चारु ॥१॥ रहाउ ॥ घरु बालू का घूमन घेरि ॥ बरखसि बाणी बुदबुदा हेरि ॥ मात्र बूंद ते धरि चकु फेरि ॥ सरब जोति नामै की चेरि ॥२॥ सरब उपाइ गुरू सिरि मोरु ॥ भगति करउ पग लागउ तोर ॥ नामि रतो चाहउ तुझ एरु ॥ नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥३॥ पति खोई बिखु अंचलि पाइ ॥ साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ जो किछु कीन्सि प्रभु रजाइ ॥ भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥४॥ कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ पान फूल मीठे रस रोग ॥ खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ प्रभ सरणागति कीन्सि होग ॥५॥ कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ माटी फूली रूपु बिकारु ॥ आसा मनसा बाँधो बारु ॥ नाम बिना सूना घरु बारु ॥६॥ गाछहु पुत्री राज कुआरि ॥ नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ गुर सबदी बिखु तिआस निवारि ॥७॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोहि ॥ गुर कै सबदि पछाना तोहि ॥ नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि ॥ तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥८॥१॥ बसंतु महला १ ॥ मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ अति लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥ नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥१॥ मनु भूलउ समझसि साचि नाइ ॥ गुर सबदु बीचारे सहज भाइ

॥१॥ रहाउ ॥ मनु भूलउ भरमसि भवर तार ॥ बिल बिरथे चाहै बहु बिकार ॥ मैगल जिउ फाससि कामहार ॥ कड़ि बंधनि बाधिए सीस मार ॥२॥ मनु मुगधौ दादरु भगतिहीनु ॥ दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु ॥ ता कै जाति न पाती नाम लीन ॥ सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥३॥ मनु चलै न जाई ठाकि राखु ॥ बिनु हरि रस राते पति न साखु ॥ तू आपे सुरता आपि राखु ॥ धरि धारण देखै जाणै आपि ॥४॥ आपि भुलाइे किसु कहउ जाइि ॥ गुरु मेले बिरथा कहउ माइि ॥ अवगण छोडउ गुण कमाइि ॥ गुर सबदी राता सचि समाइि ॥५॥ सतिगुर मिलिअै मति ऊतम होइि ॥ मनु निरमलु हउमै कढै धोइि ॥ सदा मुकतु बंधि न सकै कोइि ॥ सदा नामु वखाणै अउरु न कोइि ॥६॥ मनु हरि कै भाणै आवै जाइि ॥ सभ महि इेको किछु कहणु न जाइि ॥ सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइि ॥ दूख सूख सभ तिसु रजाइि ॥७॥ तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ गुर सबदु सुणाइे मति अगाहि ॥ तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ मनु नानक मानिआ सचु सलाहि ॥८॥२॥ बसंतु महला १ ॥ दरसन की पिआस जिसु नर होइि ॥ इेकतु राचै परहरि दोइि ॥ दूरि दरदु मथि अंमृतु खाइि ॥ गुरमुखि बूझै इेक समाइि ॥१॥ तेरे दरसन कउ केती बिललाइि ॥ विरला को चीनसि गुर सबदि मिलाइि ॥१॥ रहाउ ॥ बेद वखाणि कहहि इिकु कहीअै ॥ एहु बेअंतु अंतु किनि लहीअै ॥ इेको करता जिनि जगु कीआ ॥ बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥२॥ इेको गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ इेकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ इेको सबदु सचा नीसाणु ॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥३॥ इेको धरमु दृड़ै सचु कोई ॥ गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ अनहदि राता इेक लिव तार ॥ एहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥४॥ इेको तखतु इेको पातिसाहु ॥ सरबी थाई वेपरवाहु ॥ तिस का कीआ तृभवण सारु ॥ एहु अगमु अगोचरु इेकंकारु ॥५॥ इेका मूरति साचा नाउ ॥ तिथै निबड़ै साचु निआउ ॥ साची करणी पति परवाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥६॥ इेका भगति इेको है भाउ ॥ बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥ गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥

हरि रसि राता जनु परवाणु ॥७॥ इत उत देखउ सहजे रावउ ॥ तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥ नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥८॥३॥ बसंतु महला १ ॥ चंचलु चीतु न पावै पारा ॥ आवत जात न लागै बारा ॥ दूखु घणो मरीऐ करतारा ॥ बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥१॥ सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ हरि भगती सचि नामि पतीना ॥१॥ रहाउ ॥ अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥ बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥२॥ रोगु वडो किउ बाँधउ धीरा ॥ रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ मै अवगण मन माहि सरीरा ॥ ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥३॥ गुर का सबदु दारू हरि नाउ ॥ जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ जगु रोगी कह देखि दिखाउ ॥ हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥४॥ घर महि घरु जो देखि दिखावै ॥ गुर महली सो महलि बुलावै ॥ मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ ऐसे हरि के लोग अतीता ॥५॥ हरख सोग ते रहहि निरासा ॥ अंमृतु चाखि हरि नामि निवासा ॥ आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥६॥ गुरि दीआ सचु अंमृतु पीवउ ॥ सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥ अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ तुमरो होइ सु तुझहि समावै ॥७॥ भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ नानक रामु रवै हित चीता ॥८॥४॥ बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ मतु भसम अंधूले गरबि जाहि ॥ इन बिधि नागे जोगु नाहि ॥१॥ मूड़्हे काहे बिसारिए तै राम नाम ॥ अंत कालि तेरै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ गुर पूछि तुम करहु बीचारु ॥ जह देखउ तह सारिगपाणि ॥२॥ किआ हउ आखा जाँ कछू नाहि ॥ जाति पति सभ तेरै नाइ ॥३॥ काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ चलती बार तेरो कछू नाहि ॥४॥ पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ जोग जुगति की इहै पाँइ ॥५॥ हउमै पैखड़ु तेरे मनै माहि ॥ हरि न चेतहि मूड़े मुकति जाहि ॥६॥ मत हरि विसरिऐ जम वसि पाहि ॥ अंत कालि मूड़े चोट खाहि ॥७॥

गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ साच जोगु मनि वसै आइ ॥८॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥९॥ गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ तुम होहु सुजाखे लेहु पछाणि ॥१०॥५॥ बसंतु महला १ ॥ दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥ मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥१॥ मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥ गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥ पसू भए अभिमानु न जाई ॥२॥ लख चउरासीह जंत उपाए ॥ मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥३॥ सगली भूलै नही सबदु अचारु ॥ सो समझै जिसु गुरु करतारु ॥४॥ गुर के चाकर ठाकुर भाणे ॥ बखसि लीए नाही जम काणे ॥५॥ जिन कै हिरदै एको भाइआ ॥ आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥६॥ बेमुहताजु बेअंतु अपारा ॥ सचि पतीजै करणैहारा ॥७॥ नानक भूले गुरु समझावै ॥ एकु दिखावै साचि टिकावै ॥८॥६॥ बसंतु महला १ ॥ आपे भवरा फूल बेलि ॥ आपे संगति मीत मेलि ॥१॥ ऐसी भवरा बासु ले ॥ तरवर फूले बन हरे ॥१॥ रहाउ ॥ आपे कवला कंतु आपि ॥ आपे रावे सबदि थापि ॥२॥ आपे बछरू गऊ खीरु ॥ आपे मंदरु थंमु सरीरु ॥३॥ आपे करणी करणहारु ॥ आपे गुरमुखि करि बीचारु ॥४॥ तू करि करि देखहि करणहारु ॥ जोति जीअ असंख देइ अधारु ॥५॥ तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ तू अकुल निरंजनु परम हीरु ॥६॥ तू आपे करता करण जोगु ॥ निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥७॥ नानक ध्रापे हरि नाम सुआदि ॥ बिनु हरि गुर प्रीतम जनमु बादि ॥८॥७॥

बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी ॥१॥ मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति तुम्हारी ॥१॥ रहाउ ॥ घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी ॥ धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी ॥२॥ ना साबूरु होवै फिरि

मंगै नारदु करे खुआरी ॥ लबु अधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥३॥ पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कुोटवारी ॥ भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥४॥ आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखाँ आई वारी ॥ देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥५॥ कूजा बाँग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ घरि घरि मीआ सभनाँ जीआँ बोली अवर तुमारी ॥६॥ जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥७॥ तीरथ सिंमृति पुन्न दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥८॥१॥८॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काँइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ अनिक उपाव जतन करि थाके बारं बार भरमाई ॥१॥ मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ भजु राम नामु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु जितु राम नामु नही वसिआ ॥ राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ ॥२॥ मै निरखत निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरमुखि चलतु दिखाइआ ॥ बाहरु खोजि मुए सभि साकत हरि गुरमती घरि पाइआ ॥३॥ दीना दीन दइआल भए है जिउ क्रिसनु बिदर घरि आइआ ॥ मिलिए सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगै दालदु भंजि समाइआ ॥४॥ राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ जे सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥५॥ जन की उसतति है राम नामा दह दिसि सोभा पाई ॥ निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥६॥ जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥७॥ आपे जलु अपरंपरु करता आपे मेलि मिलावै ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलाइे जिउ जलु

जलहि समावै ॥८॥१॥६॥

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि इेक बार ॥ बालमीकै होआ साधसंगु ॥ ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥१॥ तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ ले मसतकि लावउ करि कृपा देन ॥१॥ रहाउ ॥ गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजइंद्र धिआइिए हरि कीए मोख ॥ बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥२॥ बधिकु उधारिए खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिदरु उधारिए दासत भाइि ॥ रे मन तू भी हरि धिआइि ॥३॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥४॥ धन्नै सेविआ बाल बुधि ॥ तृलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीए प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु ॥५॥ जैदेव तिआगिए अह्मेव ॥ नाई उधरिए सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहूं जाइि ॥ मन तू भी तरसहि सरणि पाइि ॥६॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीए आपि ॥ से तैं लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिए कोइि ॥ इिह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥ कबीरि धिआइिए इेक रंग ॥ नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ रविदास धिआइे प्रभ अनूप ॥ गुर नानक देव गोविंद रूप ॥८॥१॥

बसंतु महला ५ ॥ अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ हरि सिमरन बिनु नरकि पाहि ॥ भगति बिहूना खंड खंड ॥ बिनु बूझे जमु देत डंड ॥१॥ गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ साच सबद करि सदा प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ संतोखु न आवत कहूं काज ॥ धूंम बादर सभि माइिआ साज ॥ पाप करंतौ नह संगाइि ॥ बिखु का माता आवै जाइि ॥२॥ हउ हउ करत बधे बिकार ॥ मोह लोभ डूबौ संसार ॥ कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥ सुपनै नामु न हरि लीआ ॥३॥ कब ही राजा कब मंगनहारु ॥ दूख सूख बाधौ संसार ॥ मन उधरण का साजु नाहि ॥ पाप बंधन नित पउत जाहि ॥४॥ ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ आपि

बीजि आपे ही खाँहि ॥ जा कै कीन्है होत बिकार ॥ से छोडि चलिआ खिन महि गवार ॥५॥ माइिआ मोहि बहु भरमिआ ॥ किरत रेख करि करमिआ ॥ करणैहारु अलिपतु आपि ॥ नही लेपु प्रभ पुन्न पापि ॥६॥ राखि लेहु गोबिंद दइिआल ॥ तेरी सरणि पूरन कृपाल ॥ तुझ बिनु दूजा नही ठाउ ॥ करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥७॥ तू करता तू करणहारु ॥ तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ करि किरपा लड़ि लेहु लाइि ॥ नानक दास प्रभ की सरणाइि ॥८॥२॥

बसंत की वार महलु ५ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइि कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इिह रुति सुहाई ॥ वणु तृणु तृभवणु मउलिआ अंमृत फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै इेकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइिअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गइे नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइिदा फिरि पाइि न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइिनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥३॥१॥

बसंतु बाणी भगताँ की ॥ कबीर जी घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥१॥ राजा रामु मउलिआ अनत भाइि ॥ जह देखउ तह रहिआ समाइि ॥१॥ रहाउ ॥ दुतीआ मउले चारि बेद ॥ सिंमृति मउली सिउ कतेब ॥२॥ संकरु मउलिए जोग धिआन ॥ कबीर को सुआमी सभ समान ॥३॥१॥ पंडित जन माते पड़्हि पुरान ॥ जोगी माते जोग धिआन ॥ संनिआसी माते अह्मेव ॥ तपसी माते तप कै भेव ॥१॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥१॥ रहाउ ॥ जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥

हणवंतु जागै धरि लम्कूरु ॥ संकरु जागै चरन सेव ॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥२॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ इसु देही के अधिक काम ॥ कहि कबीर भजि राम नाम ॥३॥२॥ जोइ खसमु है जाइआ ॥ पूति बापु खेलाइआ ॥ बिनु स्रवणा खीरु पिलाइआ ॥१॥ देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ सुति मुकलाई अपनी माउ ॥१॥ रहाउ ॥ पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ बदनै बिनु खिर खिर हासता ॥ निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥२॥ बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ पैडे बिनु बाट घनेरी ॥ बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ कहु कबीर समझाई ॥३॥३॥ प्रहलाद पठाए पड़न साल ॥ संगि सखा बहु लीए बाल ॥ मो कउ कहा पड़्हावसि आल जाल ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गोपाल ॥१॥ नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ मेरो अउर पड़्हन सिउ नही कामु ॥१॥ रहाउ ॥ संडै मरकै कहिए जाइ ॥ प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ तू राम कहन की छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिए मानि ॥२॥ मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥ इकु रामु न छोडउ गुरहि गारि ॥ मो कउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥३॥ काढि खड़गु कोपिए रिसाइ ॥ तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥ प्रभ थंभ ते निकसे कै बिसथार ॥ हरनाखसु छेदिए नख बिदार ॥४॥ एइ परम पुरख देवाधि देव ॥ भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ कहि कबीर को लखै न पार ॥ प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥५॥४॥ इसु तन मन मधे मदन चोर ॥ जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ मै अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ को को न बिगूतो मै को आहि ॥१॥ माधउ दारुन दुखु सहिए न जाइ ॥ मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सनक सन्नदन सिव सुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥ कबि जन जोगी जटाधारि ॥ सभ आपन अउसर चले सारि ॥२॥ तू अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ काहि ॥ मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ सुख सागर गुन रउ कबीर ॥३॥५॥ नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ बरध पचीसक संगु काच ॥ नउ बहीआँ दस गोनि आहि ॥ कसनि बहतरि लागी ताहि ॥१॥ मोहि

ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु ॥ रहाउ ॥ सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ करम भावनी संग लीन ॥ तीनि जगाती करत रारि ॥ चलो बनजारा हाथ झारि ॥२॥ पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ दह दिस टाँडो गइए फूटि ॥ कहि कबीर मन सरसी काज ॥ सहज समानो त भरम भाज ॥३॥६॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥ आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥१॥ कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ जहाँ बैसि हउ भोजनु खाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ इंद्री की जूठि उतरसि नाही ब्रहम अगनि के लूठे ॥२॥ अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥ जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ॥३॥ गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥४॥१॥७॥

रामान्नद जी घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥ मेरा चितु न चलै मनु भइए पंगु ॥१॥ रहाउ ॥ इेक दिवस मन भई उमंग ॥ घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥ सो ब्रहमु बताइए गुर मन ही माहि ॥१॥ जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ तू पूरि रहिए है सभ समान ॥ बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ ऊहाँ तउ जाईऐ जउ ईहाँ न होइ ॥२॥ सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥ जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ रामान्नद सुआमी रमत ब्रहम ॥ गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥३॥१॥

बसंतु बाणी नामदेउ जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥ चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥१॥ तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु माँडै ॥ तैसे संत जनाँ राम नामु न छाडैं ॥२॥ गंगा गइआ गोदावरी

संसार के कामा ॥ नाराइणु सुप्रसन्न होइि त सेवकु नामा ॥३॥१॥ लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥ काइिआ डूबै केसवा ॥१॥ संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥ तारि लै बाप बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ तेरा पारु न पाइिआ बीठुला ॥२॥ होहु दइिआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥ पारि उतारे केसवा ॥३॥ नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥४॥ २॥ सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ पीछै तिनका लै करि हाँकती ॥१॥ जैसे पनकत थ्रूटिटि हाँकती ॥ सरि धोवन चाली लाडुली ॥१॥ रहाउ ॥ धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ हरि चरन मेरा मनु राता ॥२॥ भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ अपने भगत पर करि दइिआ ॥३॥३॥

बसंतु बाणी रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ गरबवती का नाही ठाउ ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥१॥ तू काँइि गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे कुरंक नही पाइिए भेदु ॥ तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥ अप तन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नही जमकंकरु करे खुआरु ॥२॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३॥ साधू की जउ लेहि एट ॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ कहि रविदास जो जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥४॥१॥

बसंतु कबीर जीउ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल ॥१॥ इिस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥ अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥१॥ रहाउ ॥ चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ चाकी का चीथरा कहाँ लै जाहि ॥२॥ छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥ मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥३॥ कहि कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥४॥१॥

राग सारग चउपदे महला १ घरु १

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥१॥ रहाउ ॥ पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥१॥ मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥२॥ हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ बिसरी लाज लुोकानी ॥३॥ भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥४॥१॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥ जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥१॥ रहाउ ॥ जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी ॥ दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥१॥ ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥ तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥२॥ कुचिल कुरूपि कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न जानिआ ॥ हरि रस रंगि रसन नही तृपती दुरमति दूख समानिआ ॥३॥ आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥ नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ देखत ही मनु धीरे ॥४॥२॥ सारग महला १ ॥ दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥ सतिगुर बचनि

मेरो मनु मानिआ हरि पाइे प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ इिन बिधि हरि मिलीअै वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥१॥ जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ ह्मिसा लोभु विसारे ॥ सहजि रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे ॥२॥ जारउ अैसी प्रीति कुटंब सनबंधी माइिआ मोह पसारी ॥ जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥३॥ अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥४॥३॥

सारंग महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि के संत जना की हम धूरि ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइिआ आतम रामु रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु संतु मिलै साँति पाईअै किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥१॥ वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाइे धूरि ॥२॥ दुरमति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुधु लागा मोह कूरु ॥ बिनु करमा किउ संगति पाईअै हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥३॥ होहु दइिआल कृपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ नानक संतु मिलै हरि पाईअै जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥४॥१॥ सारंग महला ४ ॥ गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ भवजलु जगतु न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सरब कला गुणकारी ॥१॥ प्रभु अगम अगोचरु रविआ स्रब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ गुर किरपाल भइे तब पाइिआ हिरदै अलखु लखारी ॥२॥ अंतरि हरि नामु सरब धरणीधर साकत कउ दूरि भइिआ अह्मकारी ॥ तृसना जलत न कबहू बूझहि जूअै बाजी हारी ॥३॥ ऊठत बैठत हरि गुन गावहि गुरि किंचत किरपा धारी ॥ नानक जिन

कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥४॥२॥ सारग महला ४ ॥ हरि हरि अंमृत नामु देहु पिआरे ॥ जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ जो जन दीन भइे गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ हिरदै नामु अंमृत रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ गुर परसादि अंमृत रसु चीन्हिआ एिइ पावहि मोख दुआरे ॥२॥ सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु दृड़ता नामु अधारे ॥ तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ मनमुख भ्रमि दूजै भाइि लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥ सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥४॥ सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला कल धारे ॥ नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥५॥३॥ सारग महला ४ ॥ गोबिद की ऐसी कार कमाइि ॥ जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइि ॥१॥ रहाउ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइि ॥ अनदिनु रहसु भइिआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइि ॥१॥ जब गुण गाइि तब ही मनु तृपतै साँति वसै मनि आइि ॥ गुर किरपाल भइे तब पाइिआ हरि चरणी चितु लाइि ॥२॥ मति प्रगास भई हरि धिआइिआ गिआनि तति लिव लाइि ॥ अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइि ॥३॥ हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइि ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइि ॥४॥ जब सुप्रसन्न भइे प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइि ॥ नानक नाम निरंजनु पाइिआ नामु जपत सुखु पाइि ॥५॥४॥ सारग महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥१॥ रहाउ ॥ दीन दइिआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ संत जना मिलि हरि रसु पाइिआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥१॥ हरि कै रंगि रते बैरागी जिन्ह गुरमति नामु पछानी ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइिआ सभ चूकी आवण जानी ॥२॥ नैणी बिरहु देखा प्रभ

सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥३॥ पंच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी ॥४॥५॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन राम नामु पड़ु सारु ॥ राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥१॥ रहाउ ॥ किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥ जिसु बिखिआ कउ तुम् अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥१॥ तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥२॥ संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥३॥ राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥४॥६॥

सारग महला ४ घरु ३ दुपदा   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥१॥ जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥२॥१॥७॥

सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन जगन्नाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥१॥ रहाउ ॥ हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि आपनी भाँति ॥१॥ हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन साधू हरि भगात ॥ ते हरि के

जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सललै सलल मिलाति ॥२॥१॥८॥ सारंग महला ४ ॥ जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा स्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ जितु गृहि गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु गृहि वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा ॥ तिन् जन के सभि पाप गइे सभि दोख गइे सभि रोग गइे कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गइे तिन् जन के हरि मारि कढे पंच चोरा ॥१॥ हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ हरि राम बोलि हरि राम बोलि सभि पाप गवाधू ॥ नित नित जागरणु करहु सदा सदा आन्दु जपि जगदीसुोरा ॥ मन इछे फल पावहु सभै फल पावहु धरमु अरथु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥२॥२॥६॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ सभ दूखन को ह्मता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम गुन गाए ॥१॥ रहाउ ॥ हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थान्नतरि बसता मै हरि देखन को चाए ॥ कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाए ॥१॥ हरि जन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरमुखि हरि मिलिआ ॥ मेरै मनि तनि आन्नद भइे मै देखिआ हरि राए ॥ जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ मै अनदिनो सद सद सदा हरि जपिआ हरि नाए ॥२॥३॥१०॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन निरभउ ॥ सति सति सदा सति ॥ निरवैरु अकाल मूरति ॥ आजूनी संभउ ॥ मेरे मन अनदिनो धिआइि निरंकारु निराहारी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ॥ तिन जन की सेवा थाइि पई जिन् कउ किरपाल होवतु बनवारी ॥१॥ हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥ जिन् का अंगु करै

मेरा सुआमी तिन् की नानक हरि पैज सवारी ॥२॥४॥११॥ सारग महला ४ पड़ताल ॥ जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ सृसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का नामु अंमृतु हरि हरि हरे सो पीऐ जिसु रामु पिआसी ॥ हरि आपि दइआलु दइआ करि मेलै जिसु सतिगुरू सो जनु हरि हरि अंमृत नामु चखासी ॥१॥ जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ जनु नानकु नामु लए ताँ जीवै जिउ चातृकु जलि पीऐ तृपतासी ॥२॥५॥१२॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥१॥ रहाउ ॥ रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ जिसु आपि कृपा करे मेरा राम राम राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥१॥ राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनाँ की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ जन नानक का अंगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥२॥६॥१३॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ अंतरि पिआस चातृक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पाँउ ॥१॥ रहाउ ॥ अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥१॥ निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ दह दिस जाँउ तहाँ तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥२॥ एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईऐ सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥३॥ साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥४॥१॥ सारग महला ५ ॥ हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥१॥ रहाउ ॥ बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ संत सभा की निंदा करते डूबे सभ

अगिआन ॥१॥ करहि सोम पाकु हिरहि पर दरबा अंतरि झूठ गुमान ॥ सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै मान ॥२॥ संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी दंफान ॥ प्रभू भुलाइे ऊझड़ि पाइे निहफल सभि करमान ॥३॥ सो गिआनी सो बैसनौ पड़िआ जिसु करी कृपा भगवान ॥ एनि सतिगुरु सेवि परम पदु पाइिआ उधरिआ सगल बिस्वान ॥४॥ किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ साधसंगति की धूरि इिक माँगउ जन नानक पइिए सरान ॥५॥२॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो नाचनो रहो ॥ लालु रगीला सहजे पाइिए सतिगुर बचनि लहो ॥१॥ रहाउ ॥ कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी पृअ बचन उपहास कहो ॥ जउ सुरिजनु गृह भीतरि आइिए तब मुखु काजि लजो ॥१॥ जिउ कनिको कोठारी चड़िए कबरो होत फिरो ॥ जब ते सुध भइे है बारहि तब ते थान थिरो ॥२॥ जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिए मूरत घरी पलो ॥ बजावनहारो ऊठि सिधारिए तब फिरि बाजु न भइिए ॥३॥ जैसे कुंभ उदक पूरि आनिए तब एहु भिन्न दृसटो ॥ कहु नानक कुंभु जलै महि डारिए अंभै अंभ मिलो ॥४॥३॥ सारग महला ५ ॥ अब पूछे किआ कहा ॥ लैनो नामु अंमृत रसु नीको बावर बिखु सिउ गहि रहा ॥१॥ रहाउ ॥ दुलभ जनमु चिरंकाल पाइिए जातउ कउडी बदलहा ॥ काथूरी को गाहकु आइिए लादिए कालर बिरख जिवहा ॥१॥ आइिए लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥ काच बादरै लालु खोई है फिरि इिहु अउसरु कदि लहा ॥२॥ सगल पराध इेकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरि साँन्हिा ॥३॥ आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ सगले अउगन मेटि धरहा ॥४॥४॥ सारग महला ५ ॥ माई धीरि रही पृअ बहुतु बिरागिए ॥ अनिक भाँति आनूप रंग रे तिन् सिउ रुचै न लागिए ॥१॥ रहाउ ॥ निसि बासुर पृअ पृअ मुखि टेरउ नींद पलक नही जागिए ॥ हार कजर बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिए

॥१॥ पूछउ पूछउ दीन भाँति करि कोऊ कहै पृअ देसाँगिए ॥ हींए दें‍उ सभु मनु तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिए ॥२॥ चरण बंदना अमोल दासरो देंउ साधसंगति अरदागिए ॥ करहु कृपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख दरसु पेखागिए ॥३॥ दृसटि भई तब भीतरि आइिए मेरा मनु अनदिनु सीतलागिए ॥ कहु नानक रसि मंगल गाइे सबदु अनाहदु बाजिए ॥४॥५॥ सारग महला ५ ॥ माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा ॥ बचनु गुरू जो पूरै कहिए मै छीकि गाँठरी बाधा ॥१॥ रहाउ ॥ निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ॥ गिरि बसुधा जल पवन जाइिगो इिकि साध बचन अटलाधा ॥१॥ अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ॥ चारि बिनासी खटहि बिनासी इिकि साध बचन निहचलाधा ॥२॥ राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा ॥ दृसटिमान है सगल बिनासी इिकि साध बचन आगाधा ॥३॥ आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा ॥ पाइिए न जाई कही भाँति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥४॥६॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि बासिबो गुर गोबिंद ॥ जहाँ सिमरनु भइिए है ठाकुर तहाँ नगर सुख आन्नद ॥१॥ रहाउ ॥ जहाँ बीसरै ठाकुरु पिआरो तहाँ दूख सभ आपद ॥ जह गुन गाइि आन्नद मंगल रूप तहाँ सदा सुख संपद ॥१॥ जहा स्रवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा भइिआन उदिआनद ॥ जहाँ कीरतनु साधसंगति रसु तह सघन बास फलाँनद ॥२॥ बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध बृथानद ॥ इेक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥३॥ सरनि सरनि सरनि प्रभ पावउ दीजै साधसंगति किरपानद ॥ नानक पूरि रहिए है सरब मै सगल गुणा बिधि जाँनद ॥४॥७॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि राम भरोसउ पाइे ॥ जो जो सरणि परिए करुणानिधि ते ते भवहि तराइे ॥१॥ रहाउ ॥ सुखि सोइिए अरु सहजि समाइिए सहसा गुरहि गवाइे ॥ जो चाहत सोई हरि कीए मन बाँछत फल पाइे ॥१॥ हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ स्रवनी

कथा सुनाइे ॥ चरणी चलउ मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाइे ॥२॥ देखिए दृसटि सरब मंगल रूप उलटी संत कराइे ॥ पाइिए लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाइे ॥३॥ कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रीझाइे ॥ होत कृपाल दीन दइिआ प्रभ जन नानक दास दसाइे ॥४॥८॥ सारग महला ५ ॥ एुइि सुख का सिउ बरनि सुनावत ॥ अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥ पीए अंमृत नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥१॥ जैसे पवनु बंध करि राखिए बूझ न आवत जावत ॥ जा कउ रिदै प्रगासु भइिए हरि उआ की कही न जाइि कहावत ॥२॥ आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥ अचिंत लालु गृह भीतरि प्रगटिए अगम जैसे परखावत ॥३॥ निरगुण निरंकार अबिनासी अतुलो तुलिए न जावत ॥ कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥४॥९॥ सारग महला ५ ॥ बिखई दिनु रैनि इिव ही गुदारै ॥ गोबिंदु न भजै अह्मबुधि माता जनमु जूअै जिउ हारै ॥१॥ रहाउ ॥ नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निंदा हितकारै ॥ छापरु बाँधि सवारै तृण को दुआरै पावकु जारै ॥१॥ कालर पोट उठावै मूंडहि अंमृतु मन ते डारै ॥ एुढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥२॥ काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइि खाइि मुसकारै ॥ गिरिए जाइि रसातलि परिए छिटी छिटी सिर भारै ॥३॥ निरवैरै संगि वैरु रचाइे पहुचि न सकै गवारै ॥ कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै ॥४॥१०॥ सारग महला ५ ॥ अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि बेदहि ततु पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ परविरति मारगु जेता किछु होईअै तेता लोग पचारा ॥ जउ लउ रिदै नही परगासा तउ लउ अंध अंधारा ॥१॥ जैसे धरती साधै बहु बिधि बिनु बीजै नही जाँमै ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही अभिमानै ॥२॥ नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत

नही जगदीसै ॥३॥ खोजत खोजत इहै बीचारिए सरब सुखा हरि नामा ॥ कहु नानक तिसु भइिए परापति जा कै लेखु मथामा ॥४॥११॥ सारग महला ५ ॥ अनदिनु राम के गुण कहीअै ॥ सगल पदारथ सरब सूख सिधि मन बाँछत फल लहीअै ॥१॥ रहाउ ॥ आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ अनाथह नाथु दीन दुख भंजन पूरि रहिए घट वासी ॥१॥ गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ कलि कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥२॥ कामु क्रोधु झूठु तजि निंदा हरि सिमरनि बंधन तूटे ॥ मोह मगन अहं अंध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥३॥ तू समरथु पारब्रहम सुआमी करि किरपा जनु तेरा ॥ पूरि रहिए सरब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥४॥१२॥ सारग महला ५ ॥ बलिहारी गुरदेव चरन ॥ जा कै संगि पारब्रहमु धिआईअै उपदेसु हमारी गति करन ॥१॥ रहाउ ॥ दूख रोग भै सगल बिनासे जो आवै हरि संत सरन ॥ आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥१॥ जा को मंत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥ हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥२॥ भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन ॥ जा कउ भइिए कृपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥३॥ हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन ॥ गुर प्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥४॥१३॥ सारग महला ५ ॥ गाइिए री मै गुण निधि मंगल गाइिए ॥ भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु रीझाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ संतह चरन मोरलो माथा ॥ हमरे मसतकि संत धरे हाथा ॥१॥ साधह मंत्रु मोरलो मनूआ ॥ ता ते गतु होइे त्रै गुनीआ ॥२॥ भगतह दरसु देखि नैन रंगा ॥ लोभ मोह तूटे भ्रम संगा ॥३॥ कहु नानक सुख सहज अन्नदा ॥ खोल्हि भीति मिले परमान्नदा ॥४॥१४॥

सारग महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ दरसन पिआस पृअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई

॥१॥ रहाउ ॥ चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ जतन करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे संतु मिलाई ॥१॥ जप तप संजम पुन्न सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जाँई ॥ इेक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु संतन कै बलि जाँई ॥२॥ करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥३॥ देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई ॥ प्रभ रंग दइिआल मोहि गृह महि पाइिआ जन नानक तपति बुझाई ॥४॥१॥१५॥ सारग महला ५ ॥ रे मूड़े तू किउ सिमरत अब नाही ॥ नरक घोर महि उरध तपु करता निमख निमख गुण गाँही ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जनम भ्रमतौ ही आइिए मानस जनमु दुलभाही ॥ गरभ जोनि छोडि जउ निकसिए तउ लागो अन ठाँही ॥१॥ करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ कणु नाही तुह गाहण लागे धाइि धाइि दुख पाँही ॥२॥ मिथिआ संगि कूड़ि लपटाइिए उरझि परिए कुसमाँही ॥ धरम राइि जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥३॥ सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइिआ जिसु मसतकि लेखु लिखाँही ॥ कहु नानक तिन् जन बलिहारी जो अलिप रहे मन माँही ॥४॥२॥१६॥ सारग महला ५ ॥ किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई ॥ जा के बिछुरत होत मिरतका गृह महि रहनु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ हंीअ प्रान को दाता जा कै संगि सुहाई ॥ करहु कृपा संतहु मोहि अपुनी प्रभ मंगल गुण गाई ॥१॥ चरन संतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बाँछाइंी ॥ जिह प्रसादि मिलीऐ प्रभ नानक बलि बलि ता कै हउ जाई ॥२॥३॥१७॥ सारग महला ५ ॥ उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पाँई ॥१॥ रहाउ ॥ भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥१॥ जीउ पिंडु तनु धनु साधन का इहु मनु संत रेनाई ॥ संत प्रतापि भरम सभि नासे नानक मिले गुसाई ॥२॥४॥१८॥ सारग महला ५ ॥ मनोरथ

पूरे सतिगुर आपि ॥ सगल पदारथ सिमरनि जा कै आठ पहर मेरे मन जापि ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही तृपतास ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि आगै दरगह होइि खलास ॥१॥ सरनि तुमारी आइिए करते पारब्रहम पूरन अबिनास ॥ करि किरपा तेरे चरन धिआवउ नानक मनि तनि दरस पिआस ॥२॥५॥१६॥

सारग महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन कहा लुभाईऐ आन कउ ॥ ईत ऊत प्रभु सदा सहाई जीअ संगि तेरे काम कउ ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु पृअ प्रीति मनोहर इिहै अघावन पाँन कउ ॥ अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ ॥१॥ बाणी मंत्र महा पुरखन की मनहि उतारन माँन कउ ॥ खोजि लहिए नानक सुख थानाँ हरि नामा बिस्राम कउ ॥२॥१॥२०॥ सारग महला ५ ॥ मन सदा मंगल गोबिंद गाइि ॥ रोग सोग तेरे मिटहि सगल अघ निमख हीऐ हरि नामु धिआइि ॥१॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाइि पाइि ॥ जउ होइि कृपालु दीन दुख भंजन जम ते होवै धरम राइि ॥१॥ इेकस बिनु नाही को दूजा आन न बीए लवै लाइि ॥ मात पिता भाई नानक को सुखदाता हरि प्रान साइि ॥२॥२॥२१॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन सगल उधारे संग के ॥ भइे पुनीत पवित्र मन जनम जनम के दुख हरे ॥१॥ रहाउ ॥ मारगि चले तिन्ही सुखु पाइिआ जिन्ह सिउ गोसटि से तरे ॥ बूडत घोर अंध कूप महि ते साधू संगि पारि परे ॥१॥ जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू संगि मुख जुरे ॥ तिन्ह की धूरि बाँछै नित नानकु प्रभु मेरा किरपा करे ॥२॥३॥२२॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन राम राम राम धिआँइे ॥ इेक पलक सुख साध समागम कोटि बैकुंठह पाँइे ॥१॥ रहाउ ॥ दुलभ देह जपि होत पुनीता जम की त्रास निवारै ॥ महा पतित के पातिक उतरहि हरि नामा उरि धारै ॥१॥ जो जो सुनै राम जसु निरमल ता का जनम मरण दुखु नासा ॥ कहु नानक पाईऐ वडभागंी मन तन होइि बिगासा

॥२॥४॥२३॥

सारग महला ५ दुपदे घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मोहन घरि आवहु करउ जोदड़ीआ ॥ मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ निकटि सुनउ अरु पेखउ नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥ होइ क्रिपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥१॥ इक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥ साधसंगति की भीर जउ पाई तउ नानक हरि संगि मिरीआ ॥२॥१॥२४॥ सारग महला ५ ॥ अब किआ सोचउ सोच बिसारी ॥ करणा सा सोई करि रहिआ देहि नाउ बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ चहु दिस फूलि रही बिखिआ बिखु गुर मंत्रु मूखि गरुड़ारी ॥ हाथ देइ राखिए करि अपुना जिउ जल कमला अलिपारी ॥१॥ हउ नाही किछु मै किआ होसा सभ तुम ही कल धारी ॥ नानक भागि परिए हरि पाछै राखु संत सदकारी ॥२॥२॥२५॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि सरब उपाव बिरकाते ॥ करण कारण समरथ सुआमी हरि इकसु ते मेरी गाते ॥१॥ रहाउ ॥ देखे नाना रूप बहु रंगा अन नाही तुम भाँते ॥ देंहि अधारु सरब कउ ठाकुर जीअ प्रान सुखदाते ॥१॥ भ्रमतौ भ्रमतौ हारि जउ परिए तउ गुर मिलि चरन पराते ॥ कहु नानक मै सरब सुखु पाइआ इहि सूखि बिहानी राते ॥२॥३॥२६॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि लबधिए है हरि टेका ॥ गुर दइआल भए सुखदाई अंधुलै माणिकु देखा ॥१॥ रहाउ ॥ काटे अगिआन तिमर निरमलीआ बुधि बिगास बिबेका ॥ जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर भए इका ॥१॥ जह ते उठिए तह ही आइए सभ ही इकै इका ॥ नानक द्रिसटि आइए स्रब ठाई प्राणपती हरि समका ॥२॥४॥२७॥ सारग महला ५ ॥ मेरा मनु इकै ही प्रिअ माँगै ॥ पेखि आइए सरब थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥१॥ रहाउ ॥ मै नीरे अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ द्रिसटि न करै रुचाँगै ॥ हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभाँगै

॥१॥ गुण निधान मनमोहन लालन सुखदाई सरबाँगै ॥ गुरि नानक प्रभ पाहि पठाइए मिलहु सखा गलि लागै ॥२॥५॥२८॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानाँ ॥ साध कृपाल दइआल भइे है इहु छेदिए दुसटु बिगाना ॥१॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ सगल जोग अरु गिआन धिआन इक निमख न कीमति जानाँ ॥१॥ तुम ही नाइक तुम्हि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ पावउ दानु संत सेवा हरि नानक सद कुरबानाँ ॥ २॥६॥२९॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि चीति आइे पृअ रंगा ॥ बिसरिए धंधु बंधु माइिआ को रजनि सबाई जंगा ॥१॥ रहाउ ॥ हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइिआ सतसंगा ॥ अैसो मिलिए मनोहरु प्रीतमु सुख पाइे मुख मंगा ॥१॥ पृउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ निरभउ भइे नानक भउ मिटिआ हरि पाइिए पाठंगा ॥२॥७॥३०॥ सारग महला ५ ॥ हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ बचन नाद मेरे स्रवनहु पूरे देहा पृअ अंकि समानी ॥१॥ रहाउ ॥ छूटरि ते गुरि कीई सोहागनि हरि पाइिए सुघड़ सुजानी ॥ जिह घर महि बैसनु नही पावत सो थानु मिलिए बासानी ॥१॥ उन् कै बसि आइिए भगति बछलु जिनि राखी आन संतानी ॥ कहु नानक हरि संगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥२॥८॥३१॥ सारग महला ५ ॥ अब मेरो पंचा ते संगु तूटा ॥ दरसनु देखि भइे मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥१॥ रहाउ ॥ बिखम थान बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ बिखम गार्ह करु पहुचै नाही संत सानथ भइे लूटा ॥१॥ बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा ॥ जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि रसु घूटा ॥२॥९॥३२॥ सारग महला ५ ॥ अब मेरो ठाकुर सिउ मनु लीना ॥ प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइिए जिउ जल मीना ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर इिह अरपि सगल दानु कीना ॥ मंत्र दृड़ाइि हरि अउखधु गुरि दीए तउ मिलिए सगल प्रबीना ॥१॥ गृहु तेरा तू

ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु दीना ॥ कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भंडार खजीना ॥२॥१०॥३३॥ सारग महला ५ ॥ मोहन सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमंड उधारहि ॥१॥ रहाउ ॥ करहि अरदासि बहुतु बेन्नती निमख निमख साम्हारहि ॥ होहु कृपाल दीन दुख भंजन हाथ देइ निसतारहि ॥१॥ किआ इे भूपति बपुरे कहीअहि कहु इे किस नो मारहि ॥ राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥२॥११॥३४॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि धनु पाइए हरि नामा ॥ भइे अचिंत तृसन सभ बुझी है इिहु लिखिए लेखु मथामा ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइिए बैरागी फिरि आइिए देह गिरामा ॥ गुरि कृपालि सउदा इिहु जोरिए हथि चरिए लालु अगामा ॥१॥ आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ गोबिद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥२॥१२॥३५॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि मिसट लगे पृअ बोला ॥ गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाइे सद दइिआलु हरि ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ तू ठाकुरु सरब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ माणु ताणु सभु तूहै तूहै इिकु नामु तेरा मै एला ॥१॥ जे तखति बैसालहि तउ दास तुम्हारे घासु बढावहि केतक बोला ॥ जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥२॥१३॥३६॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम कहत गुण सोह्म ॥ इेक निमख एपाइि समावै देखि चरित मन मोह्म ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु सुणिऐ मनि होइि रहसु अति रिदै मान दुख जोह्म ॥ सुखु पाइिए दुखु दूरि पराइिए बणि आई प्रभ तोह्म ॥१॥ किलविख गइे मन निरमल होई है गुरि काढे माइिआ द्रोह्म ॥ कहु नानक मै सो प्रभु पाइिआ करण कारण समरथोह्म ॥२॥१४॥३७॥ सारग महला ५ ॥ नैनहु देखिए चलतु तमासा ॥ सभ हू दूरि सभ हू ते नेरै अगम अगम घट वासा ॥१॥ रहाउ ॥ अभूलु न भूलै लिखिए न चलावै मता न करै पचासा ॥ खिन महि साजि सवारि बिनाहै भगति वछल गुणतासा ॥१॥ अंध कूप महि दीपकु बलिए गुरि रिदै कीए

परगासा ॥ कहु नानक दरसु पेखि सुखु पाइिआ सभ पूरन होई आसा ॥२॥१५॥३८॥ सारग महला ५ ॥ चरनह गोबिंद मारगु सुहावा ॥ आन मारग जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु हावा ॥१॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत भइे दरसु पेखे हसत पुनीत टहलावा ॥ रिदा पुनीत रिदै हरि बसिए मसत पुनीत संत धूरावा ॥१॥ सरब निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि लिखिआ तिनि पावा ॥ जन नानक कउ गुरु पूरा भेटिए सुखि सहजे अनद बिहावा ॥२॥१६॥३९॥ सारग महला ५ ॥ धिआइिए अंति बार नामु सखा ॥ जह मात पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तू रखा ॥१॥ रहाउ ॥ अंध कूप गृह महि तिनि सिमरिए जिसु मसतकि लेखु लिखा ॥ खूले बंधन मुकति गुरि कीनी सभ तूहै तुही दिखा ॥१॥ अंमृत नामु पीआ मनु तृपतिआ आघाइे रसन चखा ॥ कहु नानक सुख सहजु मै पाइिआ गुरि लाही सगल तिखा ॥२॥१७॥४०॥ सारग महला ५ ॥ गुर मिलि अैसे प्रभू धिआइिआ ॥ भइिए कृपालु दइिआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइिआ ॥ निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइिआ ॥१॥ हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइिआ ॥ कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइिआ ॥२॥१८॥४१॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि सबदु लगो गुर मीठा ॥ खुलिए करमु भइिए परगासा घटि घटि हरि हरि डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ पारब्रहम आजोनी संभउ सरब थान घट बीठा ॥ भइिए परापति अंमृत नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥१॥ सतसंगति की रेणु मुखि लागी कीइे सगल तीरथ मजनीठा ॥ कहु नानक रंगि चलूल भइे है हरि रंगु न लहै मजीठा ॥२॥१९॥४२॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि नामु दीए गुरि साथे ॥ निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिए सगल भूख मेरी लाथे ॥१॥ रहाउ ॥ कृपा निधान गुण नाइिक ठाकुर सुख समूह सभ नाथे ॥ इेक आस मोहि तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥१॥ नैण

तृपतासे देखि दरसावा गुरि कर धारे मेरै माथे ॥ कहु नानक मै अतुल सुखु पाइिआ जनम मरण भै लाथे ॥२॥२०॥४३॥ सारग महला ५ ॥ रे मूड़्हे आन काहे कत जाई ॥ संगि मनोहरु अंमृतु है रे भूलि भूलि बिखु खाई ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ सुंदर चतुर अनूप बिधाते तिस सिउ रुच नही राई ॥ मोहनि सिउ बावर मनु मोहिए झूठि ठगउरी पाई ॥१॥ भइिए दइिआलु कृपालु दुख हरता संतन सिउ बनि आई ॥ सगल निधान घरै महि पाइे कहु नानक जोति समाई ॥२॥२१॥४४॥ सारग महला ५ ॥ एअं पृअ प्रीति चीति पहिलरीआ ॥ जो तउ बचनु दीए मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ हम भूलह तुम सदा अभूला हम पतित तुम पतित उधरीआ ॥ हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज संगि संगि बसरीआ ॥१॥ तुम गंभीर धीर उपकारी हम किआ बपुरे जंतरीआ ॥ गुर कृपाल नानक हरि मेलिए तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥२॥२२॥४५॥ सारग महला ५ ॥ मन एिड दिनस धंनि परवानाँ ॥ सफल ते घरी संजोग सुहावे सतिगुर संगि गिआनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ धंनि सुभाग धंनि सोहागा धंनि देत जिनि मानाँ ॥ इिहु तनु तुम्रा सभु गृहु धनु तुमरा हींउ कीए कुरबानाँ ॥१॥ कोटि लाख राज सुख पाइे इिक निमख पेखि दृसटानाँ ॥ जउ कहहु मुखहु सेवक इिह बैसीऐ सुख नानक अंतु न जानाँ ॥२॥२३॥४६॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो सहसा दूखु गइिआ ॥ अउर उपाव सगल तिआगि छोडे सतिगुर सरणि पइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ सरब सिधि कारज सभि सवरे अह्म रोग सगल ही खइिआ ॥ कोटि पराध खिन महि खउ भई है गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥१॥ पंच दास गुरि वसगति कीने मन निहचल निरभइिआ ॥ आइि न जावै न कत ही डोलै थिरु नानक राजइिआ ॥२॥२४॥४७॥ सारग महला ५ ॥ प्रभु मेरो इित उत सदा सहाई ॥ मनमोहनु मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥१॥ रहाउ ॥ खेलि खिलाइि लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥ प्रतिपालै बारिक की निआई जैसे मात पिताई ॥१॥ तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ बिसरि न कबहू

जाई ॥ कहु नानक मिलि संतसंगति ते मगन भइे लिव लाई ॥२॥२५॥४८॥ सारग महला ५ ॥ अपना मीतु सुआमी गाईऐ ॥ आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिस ही सरणी पाईऐ ॥ तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥१॥ इेक एट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति बुधि पाईऐ ॥ गुण निधान नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥२॥२६॥४६॥ सारग महला ५ ॥ एट सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ दृसटि न लिआवउ अवर काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीए प्रभि अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ अंमृत नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ पइिआ गुर पैरै ॥१॥ कवन उपमा कहउ इेक मुख निरगुण के दातेरै ॥ काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥२॥२७॥५०॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ सिमरत दूख बिनासी ॥ भइिए कृपालु जीअ सुखदाता होई सगल खलासी ॥१॥ रहाउ ॥ अवरु न कोऊ सूझै प्रभ बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ जिउ जाणहु तिउ राखहु ठाकुर सभु किछु तुम ही पासी ॥१॥ हाथ देइि राखे प्रभि अपुने सद जीवन अबिनासी ॥ कहु नानक मनि अनदु भइिआ है काटी जम की फासी ॥२॥२८॥५१॥ सारग महला ५ ॥ मेरो मनु जत कत तुझहि सम्हारै ॥ हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै ॥१॥ रहाउ ॥ जब भुखौ तब भोजनु माँगै अघाइे सूख सघारै ॥ तब अरोग जब तुम संगि बसतौ छुटकत होइि रवारै ॥१॥ कवन बसेरो दास दासन को थापिउ थापनहारै ॥ नामु न बिसरै तब जीवनु पाईऐ बिनती नानक इिह सारै ॥२॥२६॥५२॥ सारग महला ५ ॥ मन ते भै भउ दूरि पराइिए ॥ लाल दइिआल गुलाल लाडिले सहजि सहजि गुन गाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ गुर बचनाति कमात कृपा ते बहुरि न कतहू धाइिए ॥ रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु गृहि पाइिए ॥१॥ नाद बिनोद कोड आन्नदा सहजे सहजि समाइिए ॥ करना आपि करावन आपे

कहु नानक आपि आपाइिए ॥२॥३०॥५३॥ सारग महला ५ ॥ अंमृत नामु मनहि आधारो ॥ जिन दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥१॥ रहाउ ॥ बूझी तृसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ आइि न जाइि बसै इिह ठाहर जह आसनु निरंकारो ॥१॥ इेकै परगटु इेकै गुपता इेकै धुंधूकारो ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥२॥३१॥५४॥ सारग महला ५ ॥ बिनु प्रभ रहनु न जाइि घरी ॥ सरब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥१॥ रहाउ ॥ मंगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत अनद घना ॥ वड समरथु सदा सद संगे गुन रसना कवन भना ॥१॥ थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥ कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि संत तुमारे ॥२॥३२॥५५॥ सारग महला ५ ॥ रसना जपती तूही तूही ॥ मात गरभ तुम ही प्रतिपालक मृत मंडल इिक तुही ॥१॥ रहाउ ॥ तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ तुम परवार तुमहि आधारा तुमहि जीअ प्रानदाता ॥१॥ तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥ तुमहि पारजात गुर ते पाइे तउ नानक भइे निहाला ॥२॥३३॥५६॥ सारग महला ५ ॥ जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ जो काहू को चेरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥१॥ रहाउ ॥ अपने पहि दूख अपुने पहि सूखा अपने ही पहि बिरथा ॥ अपुने पहि मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अरथा ॥१॥ किन ही राज जोबनु धन मिलखा किन ही बाप महतारी ॥ सरब थोक नानक गुर पाइे पूरन आस हमारी ॥२॥३४॥५७॥ सारग महला ५ ॥ झूठो माइिआ को मद मानु ॥ ध्रोह मोह दूरि करि बपुरे संगि गोपालहि जानु ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ मिथिआ कापर सुगंध चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥१॥ दीन बंधरो दास दासरो संतह की सारान ॥ माँगनि माँगउ होइि अचिंता मिलु नानक के हरि प्रान ॥२॥३५॥५८॥ सारग महला ५ ॥ अपुनी इितनी कछू न सारी ॥ अनिक काज अनिक धावरता उरझिए आन जंजारी ॥१॥ रहाउ ॥ दिउस चारि के दीसहि

संगी ऊहाँ नाही जह भारी ॥ तिन सिउ राचि माचि हितु लाइए जो कामि नही गावारी ॥१॥ हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि उधारी ॥२॥३६॥५९॥ सारग महला ५ ॥ मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥१॥ रहाउ ॥ खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥१॥ अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु परम गति मोरी ॥ साधसंगति नानकु भइए मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥२॥३७॥६०॥ सारग महला ५ ॥ कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥१॥ रहाउ ॥ ऊही ते हरिए ऊहा ले धरिए जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ देवनहारु बिसारिए अंधुले जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥१॥ साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ कहु नानक समझु रे इआने आजु कालि खुलै तेरी गाँठुली ॥२॥३८॥६१॥ सारग महला ५ ॥ गुर जीउ संगि तुहारै जानिए ॥ कोटि जोध उआ की बात न पुछीऐ ताँ दरगह भी मानिए ॥१॥ रहाउ ॥ कवन मूलु प्रानी का कहीऐ कवन रूपु दृसटानिए ॥ जोति प्रगास भई माटी संगि दुलभ देह बखानिए ॥१॥ तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिए ॥ करु मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिए ॥२॥३९॥६२॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि दीए सेवक कउ नाम ॥ मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥१॥ रहाउ ॥ आपि महा जनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥ आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥१॥ आपे पति राखी सेवक की आपि कीए बंधान ॥ आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥२॥४०॥६३॥ सारग महला ५ ॥ तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥ मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥१॥ रहाउ ॥ तुम ही दीइे अनिक प्रकारा तुम ही दीइे मान ॥ सदा सदा तुम ही पति राखहु अंतरजामी जान ॥१॥

जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आइे परवान ॥ जन का संगु पाईऐ वडभागी नानक संतन कै कुरबान ॥२॥४१॥६४॥ सारग महला ५ ॥ करहु गति दइिआल संतहु मोरी ॥ तुम समरथ कारन करना तूटी तुम ही जोरी ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥ अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥१॥ जो जो संगि मिले साधू कै ते ते पतित पुनीता ॥ कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥२॥४२॥६५॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर बिनती करन जनु आइिए ॥ सरब सूख आन्नद सहज रस सुनत तुहारो नाइिए ॥१॥ रहाउ ॥ कृपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइिए ॥ संतसंगि रंग तुम कीइे अपना आपु दृसटाइिए ॥१॥ नैनहु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइिए ॥ आठ पहर दरसनु संतन का सुखु नानक इिहु पाइिए ॥२॥४३॥६६॥ सारग महला ५ ॥ जा की राम नाम लिव लागी ॥ सजनु सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीऐ बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ रहित बिकार अलप माइिआ ते अह्मबुधि बिखु तिआगी ॥ दरस पिआस आस इेकहि की टेक हीऐं पृअ पागी ॥१॥ अचिंत सोइि जागनु उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइिआ हरि जन ठागी ॥२॥४४॥६७॥ सारग महला ५ ॥ अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ पूकारन कउ जो उदमु करता गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥१॥ रहाउ ॥ निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगह एहु हारै ॥ आदि जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥१॥ निरभउ भइे सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ गुर कै बचनि जपिए नाउ नानक प्रगट भइिए संसारै ॥२॥४५॥६८॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ जिउ जानहु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवाँ परतापु ॥१॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिए सगल संतापु ॥ मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिए सगल संभाखन जापु ॥१॥ तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भइे बिसमाद ॥ अनदु भइिआ नानक

मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥२॥४६॥६६॥ सारग महला ५ ॥ मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥ तिसु गुर कै जाईऐ बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर का नामु जपिए दिनु राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥१॥ गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ सरब फला दीन्हे गुरि पूरै नानक गुरि निसतारिआ ॥२॥४७॥७०॥ सारग महला ५ ॥ सिमरत नामु प्रान गति पावै ॥ मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साधसंगि हितु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि जसु गावै ॥ तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासुदेव रंगु लावै ॥१॥ दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत सोहावै ॥ कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥२॥४८॥७१॥ सारग महला ५ ॥ अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ प्रगट प्रतापु कीए नाम को राखे राखनहारै ॥१॥ रहाउ ॥ निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥ आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥१॥ प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ सभ ते ऊच ठाकुरु नानक का बार बार नमसकारै ॥२॥४९॥७२॥ सारग महला ५ ॥ बिनु हरि है को कहा बतावहु ॥ सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै सूति परोए जंता तिसु प्रभ का जसु गावहु ॥ सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥१॥ सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बाँछत फल पावहु ॥ कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥२॥५०॥७३॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ उतरि गइए मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥१॥ बाह पकरि कढि लीने अपुने गृह अंध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥२॥५१॥७४॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की गति ठाँढी ॥ बेद पुरान सिमृति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥१॥ रहाउ ॥ सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी भइे सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥१॥ जो जो तरिए पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ नानक की बेन्नती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥२॥५२॥७५॥ सारग महला ५ ॥ जिहवे अंमृत गुण हरि गाउ ॥ हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु रतन धनु संचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥१॥ जीअ प्रान मुकति को दाता इेकस सिउ लिव लाउ ॥ कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥२॥५३॥७६॥ सारग महला ५ ॥ होती नही कवन कछु करणी ॥ इहै एट पाई मिलि संतह गोपाल इेक की सरणी ॥१॥ रहाउ ॥ पंच दोख छिद्र इिआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥१॥ अनाथह नाथ दइिआल सुख सागर सरब दोख भै हरणी ॥ मनि बाँछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥२॥५४॥७७॥ सारग महला ५ ॥ फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अंमृत रसु कीरतनु हरि गाईअै अहिनिसि पूरन नाद ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत साँति महा सुखु पाईअै मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साधसंगि पाईअै घरि लै आवहु लादि ॥१॥ सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥२॥५५॥७८॥ सारग महला ५ ॥ आइिए सुनन पड़न कउ बाणी ॥ नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥१॥ रहाउ ॥ समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥१॥ उदमु सकति सिआणप तुम्‍री देहि त नामु वखाणी ॥ सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥२॥५६॥७९॥ सारग महला ५ ॥ धनवंत नाम के वणजारे ॥ साँझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का

सबदु वीचारे ॥१॥ रहाउ ॥ छोडहु कपटु होइि निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥ सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥१॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ कहु नानक सोभा संगि जावहु पारब्रहम कै दुआरे ॥२॥५७॥८०॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटाँ आधारा ॥१॥ कोइि न जाणै तुमरी गति मिति आपहि इेक पसारा ॥ साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा ॥२॥५८॥८१॥ सारग महला ५ ॥ आवै राम सरणि वडभागी ॥ इेकस बिनु किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥१॥ रहाउ ॥ मन बच क्रम आराधै हरि हरि साधसंगि सुखु पाइिआ ॥ अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइिआ ॥१॥ करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम बाणी ॥ साधसंगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी ॥२॥५९॥८२॥ सारग महला ५ ॥ जा ते साधू सरणि गही ॥ साँति सहजु मनि भइिए प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥१॥ रहाउ ॥ होहु कृपाल नामु देहु अपुना बिनती इेह कही ॥ आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइिए लाभु सही ॥१॥ जह ते उपजिए तही समानो साई बसतु अही ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइिए जोती जोति समही ॥२॥६०॥८३॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम को जसु गाउ ॥ आन सुआद बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल बसाइि हिरदै इेक सिउ लिव लाउ ॥ साधसंगति होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ ॥१॥ जीउ प्रान अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ सासि सासि सम्हालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥२॥६१॥८४॥ सारग महला ५ ॥ बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ मुकति पदारथु साधू संगति अंमृतु हरि का नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ ऊतम कथा सुणीजै स्रवणी मइिआ करहु भगवान ॥ आवत जात दोऊ पख पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥१॥

सोधत सोधत ततु बीचारिए भगति सरेसट पूरी ॥ कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी ॥२॥६२॥८५॥ सारग महला ५ ॥ साचे सतिगुरू दातारा ॥ दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा ॥१॥ रहाउ ॥ सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ भगति भावनी पारब्रहम की अबिनासी गुण गाउ ॥१॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अंतु न पारु ॥२॥६३॥८६॥ सारग महला ५ ॥ गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ पूरि रहिए ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥१॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ जनमु पदारथु भइए पुनीता इछा सगल पुजाई ॥१॥ जा कउ कृपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥२॥६४॥८७॥ सारग महला ५ ॥ जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ करहु कृपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा ॥१॥ रहाउ ॥ कहत सुनत किछु साँति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखाँ ॥ प्रभू तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै कालेखा ॥१॥ जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ नानक दरस मगन मनु मोहिए पूरन अरथ बिसेखा ॥२॥६५॥८८॥ सारग महला ५ ॥ सिमरन राम को इकु नाम ॥ कलमल दगध होहि खिन अंतरि कोटि दान इसनान ॥१॥ रहाउ ॥ आन जंजार बृथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ जनम मरन संकट ते छूटै जगदीस भजन सुख धिआन ॥१॥ तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ सिमरि सिमरि नानक प्रभ जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥२॥६६॥८९॥ सारग महला ५ ॥ धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ सोई धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि इेक प्रेम रस पागै ॥१॥ रहाउ ॥ बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूड़ा ॥ सुआरथु तिआगि असारथि रचिए नह सिमरै प्रभु रूड़ा ॥१॥ सोई चतुरु सिआणा पंडितु सो सूरा सो दानाँ ॥ साधसंगि जिनि हरि हरि जपिए नानक सो परवाना ॥२॥६७॥९०॥

सारग महला ५ ॥ हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ बिखै रस भोग अंमृत सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥१॥ रहाउ ॥ संचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ हरि रंग राँग भइे मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥१॥ जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम संगि लीवनि ॥ नानक संत चातृक की निआई हरि बूंद पान सुख थीवनि ॥२॥६८॥९१॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन बेताल ॥ जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ जब जमु आइि संघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥१॥ राखि लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ सुख निधान नानक प्रभु मेरा साधसंगि धन माल ॥२॥६९॥९२॥ सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु ॥ प्रेम भगति गुन गावन गीधे पोहत नह संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ स्रवणी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥१॥ प्रभ दीन दइिआल सुनहु बेन्नती किरपा अपनी धारु ॥ नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक सद बलिहारु ॥२॥७०॥९३॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन मति थोरी ॥ सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥१॥ करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ नानक दास तेरी सरणाई प्रभ बिनु आन न होरी ॥२॥७१॥९४॥ सारग महला ५ ॥ चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ होइि इकत्र मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु हरि भजन जेते काम करीअहि तेते बिरथे जाँहि ॥ पूरन परमान्नद मनि मीठो तिसु बिनु दूसर नाहि ॥१॥ जप तप संजम करम सुख साधन तुलि न कछूऐ लाहि ॥ चरन कमल नानक मनु बेधिए चरनह संगि समाहि ॥२॥७२॥९५॥ सारग महला ५ ॥ मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥ आगै कुसल पाछै खेम

सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गोपाल हरि राइआ ॥ बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥१॥ करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत वसि जा कै ॥ इेका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥२॥७३॥९६॥ सारग महला ५ ॥ जा कै राम को बलु होइ ॥ सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवाँ तिसु सोइ ॥ उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥१॥ गुर परसादी दृसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवाँ संत धोइ ॥२॥७४॥९७॥ सारग महला ५ ॥ जीवतु राम के गुण गाइ ॥ करहु कृपा गोपाल बीठुले बिसरि न कब ही जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ जिउ तू राखहि तिव ही रहणा तुम्रा पैनै खाइ ॥१॥ साधसंगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥२॥७५॥९८॥ सारग महला ५ ॥ मन रे नाम को सुख सार ॥ आन काम बिकार माइिआ सगल दीसहि छार ॥१॥ रहाउ ॥ गृहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ अनिक जोनी भ्रमत हारिए भ्रमत बारं बार ॥१॥ पतित पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ कर जोड़ि नानकु दानु माँगै साधसंगि उधार ॥२॥७६॥९९॥ सारग महला ५ ॥ बिराजित राम को परताप ॥ आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥१॥ रहाउ ॥ तृसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम ध्राप ॥१॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥२॥७७॥१००॥ सारग महला ५ ॥ आतुरु नाम बिनु संसार ॥ तृपति न होवत कूकरी आसा इितु लागो बिखिआ छार ॥१॥ रहाउ ॥ पाइि ठगउरी आपि भुलाइिए जनमत बारो बार ॥ हरि का सिमरनु निमख न सिमरिए जमकंकर करत खुआर ॥१॥ होहु कृपाल दीन दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार

॥ नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन तन को आधार ॥२॥७८॥१०१॥ सारग महला ५ ॥ मैला हरि के नाम बिनु जीउ ॥ तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिखै ठगउरी पीउ ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमतौ बहु भाँती थिति नही कतहू पाई ॥ पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥१॥ राखि लेहु प्रभ संमृथ दाते तुम प्रभ अगम अपार ॥ नानक दास तेरी सरणाई भवजलु उतरिए पार ॥२॥७९॥१०२॥ सारग महला ५ ॥ रमण कउ राम के गुण बाद ॥ साधसंगि धिआईऐ परमेसरु अंमृत जा के सुआद ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत इेकु अचुत अबिनासी बिनसे माइआ माद ॥ सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भइे बिखाद ॥१॥ सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥ पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥२॥८०॥१०३॥ सारग महला ५ ॥ कीने् पाप के बहु कोट ॥ दिनसु रैनी थकत नाही कतहि नाही छोट ॥१॥ रहाउ ॥ महा बजर बिख बिआधी सिरि उठाई पोट ॥ उघरि गईआँ खिनहि भीतरि जमहि ग्रासे झोट ॥१॥ पसु परेत उसट गरधभ अनिक जोनी लेट ॥ भजु साधसंगि गोबिंद नानक कछु न लागै फेट ॥२॥८१॥१०४॥ सारग महला ५ ॥ अंधे खावहि बिसू के गटाक ॥ नैन स्रवन सरीरु सभु हुटिए सासु गइिए तत घाट ॥१॥ रहाउ ॥ अनाथ रञाणि उदरु ले पोखहि माइआ गईआ हाटि ॥ किलबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छाँटि ॥१॥ निंदकु जमदूती आइि संघारिए देवहि मूंड उपरि मटाक ॥ नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥२॥८२॥१०५॥ सारग महला ५ ॥ टूटी निंदक की अध बीच ॥ जन का राखा आपि सुआमी बेमुख कउ आइि पहूची मीच ॥१॥ रहाउ ॥ उस का कहिआ कोइि न सुणई कही न बैसणु पावै ॥ ईहाँ दुखु आगै नरकु भुंचै बहु जोनी भरमावै ॥१॥ प्रगटु भइिआ खंडी ब्रहमंडी कीता अपणा पाइिआ ॥ नानक सरणि निरभउ करते की अनद मंगल गुण गाइिआ ॥२॥८३॥१०६॥ सारग महला ५ ॥ तृसना चलत

बहु परकारि ॥ पूरन होत न कतहु बातहि अंति परती हारि ॥१॥ रहाउ ॥ साँति सूख न सहजु उपजै इहै इसु बिउहारि ॥ आप पर का कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥१॥ संसार सागरु दुखि बिआपिए दास लेवहु तारि ॥ चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥२॥८४॥१०७॥ सारग महला ५ ॥ रे पापी तै कवन की मति लीन ॥ निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिंडु जिनि दीन ॥१॥ रहाउ ॥ खात पीवत सवंत सुखीआ नामु सिमरत खीन ॥ गरभ उदर बिललाट करता तहाँ होवत दीन ॥१॥ महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ गोबिंद बिसरे कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्‌ ॥२॥८५॥१०८॥ सारग महला ५ ॥ माई री चरनह एट गही ॥ दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिए दुरमति जात बही ॥१॥ रहाउ ॥ अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥ जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिए पूरि रहिए स्रब मही ॥१॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन मिलि साधह कीनो सही ॥ सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥२॥८६॥१०६॥ सारग महला ५ ॥ माई री मनु मेरो मतवारो ॥ पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिए खुमारो ॥१॥ रहाउ ॥ निरमल भइे ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ॥ चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिए पुरखु अपारो ॥१॥ करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक भइिए उजारो ॥ नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहाँ तारो ॥२॥८७॥११०॥ सारग महला ५ ॥ माई री आन सिमरि मरि जाँहि ॥ तिआगि गोबिदु जीअन को दाता माइिआ संगि लपटाहि ॥१॥ रहाउ ॥ नामु बिसारि चलहि अन मारगि नरक घोर महि पाहि ॥ अनिक सजाँई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥१॥ से धनवंते से पतिवंते हरि की सरणि समाहि ॥ गुर प्रसादि नानक जगु जीतिए बहुरि न आवहि जाँहि ॥२॥८८॥१११॥ सारग महला ५ ॥ हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ भ्रम बन दहन भइे खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥१॥ रहाउ ॥ काम क्रोध निंदा परहरीआ काढे साधू कै संगि मारि ॥

जनमु पदारथु गुरमुखि जीतिआ बहुरि न जूऐ हारि ॥१॥ आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि ॥ नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥२॥८९॥११२॥ सारग महला ५ ॥ पोथी परमेसर का थानु ॥ साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ जिसहि कृपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥१॥ जा कै रिदै वसै भै भंजनु तिसु जानै सगल जहानु ॥ खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु माँगै दानु ॥२॥९०॥११३॥ सारग महला ५ ॥ वूठा सरब थाई मेहु ॥ अनद मंगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिए नेहु ॥१॥ रहाउ ॥ चारि कुंट दह दिसि जल निधि ऊन थाउ न केहु ॥ कृपा निधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥१॥ सति सति हरि सति सुआमी सति साधसंगेहु ॥ सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥२॥९१॥११४॥ सारग महला ५ ॥ गोबिद जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ साजन मीत सहाई तुम ही तू मेरो परवार ॥१॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारिए मेरै माथै साधसंगि गुण गाइे ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाइे रसकि राम नाम धिआइे ॥१॥ अबिचल नीव धराई सतिगुरि कबहू डोलत नाही ॥ गुर नानक जब भइे दइिआरा सरब सुखा निधि पाँही ॥२॥९२॥११५॥ सारग महला ५ ॥ निबही नाम की सचु खेप ॥ लाभु हरि गुण गाइि निधि धनु बिखै माहि अलेप ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल संतोखे आपना प्रभु धिआइि ॥ रतन जनमु अपार जीतिए बहुड़ि जोनि न पाइि ॥१॥ भइे कृपाल दइिआल गोबिद भइिआ साधू संगु ॥ हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रंगु ॥२॥९३॥११६॥ सारग महला ५ ॥ माई री पेखि रही बिसमाद ॥ अनहद धुनी मेरा मनु मोहिए अचरज ता के स्वाद ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥ साधसंगि गाइे गुन गोबिंद बिनसिए सभु परमाद ॥१॥ डोरी लपटि रही चरनह संगि भ्रम भै सगले खाद ॥ इेकु अधारु नानक जन कीआ बहुरि न

जोनि भ्रमाद ॥२॥९४॥११७॥ सारग महला ५ ॥ माई री माती चरण समूह ॥ इेकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥१॥ रहाउ ॥ तिआगि गोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खूह ॥ दरस पिआस मेरा मनु मोहिए काढी नरक ते धूह ॥१॥ संत प्रसादि मिलिए सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ राम रंगि राते दास नानक मउलिए मनु तनु जूह ॥२॥९५॥११८॥ सारग महला ५ ॥ बिनसे काच के बिउहार ॥ राम भजु मिलि साधसंगति इहै जग महि सार ॥१॥ रहाउ ॥ ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ गुर चरन बोहिथ मिलिए भागी उतरिए संसार ॥१॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिए सरब नाथ अपार ॥ हरि नामु अंमृतु पीउ नानक आन रस सभि खार ॥२॥९६॥११९॥ सारग महला ५ ॥ ता ते करण पलाह करे ॥ महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपते नाराइिण तिन के दोख जरे ॥ सफल देह धंनि एइि जनमे प्रभ कै संगि रले ॥१॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ नानक दास धूरि जन बाँछै उधरहि लागि पले ॥२॥९७॥१२०॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम के जन काँखी ॥ मनि तनि बचनि इेही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥१॥ रहाउ ॥ तू बेअंतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइि न लाखी ॥ चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अंतरि राखी ॥१॥ बेद पुरान सिमृति साधू जन इिह बाणी रसना भाखी ॥ जपि राम नामु नानक निसतरीऐ होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥२॥९८॥१२१॥ सारग महला ५ ॥ माखी राम की तू माखी ॥ जह दुरगंध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखी ॥१॥ रहाउ ॥ कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इिह बिधि देखी आखी ॥ संता बिनु तै कोइि न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी ॥१॥ जीअ जंत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी ॥२॥९९॥१२२॥ सारग महला ५ ॥ माई री काटी जम की फास ॥ हरि हरि जपत सरब सुख पाइे बीचे ग्रसत उदास

॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस ॥ संतसंगि मिलि हरि गुण गाइे बिनसी दुतीआ आस ॥१॥ महा उदिआन अटवी ते काढे मारगु संत कहिए ॥ देखत दरसु पाप सभि नासे हरि नानक रतनु लहिए ॥२॥१००॥१२३॥ सारग महला ५ ॥ माई री अरिए प्रेम की खोरि ॥ दरसन रुचित पिआस मनि सुंदर सकत न कोई तोरि ॥१॥ रहाउ ॥ प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥ ध्रिगु सरीरु असत बिसटा कृम बिनु हरि जानत होर ॥१॥ भइिए कृपाल दीन दुख भंजनु परा पूरबला जोर ॥ नानक सरणि कृपा निधि सागर बिनसिए आन निहोर ॥२॥१०१॥ १२४॥ सारग महला ५ ॥ नीकी राम की धुनि सोइि ॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होइि ॥१॥ रहाउ ॥ चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइि ॥ जनम मरन बिकार अंकुर हरि काटि छाडे खोइि ॥१॥ परा पूरबि जिसहि लिखिआ बिरला पाइे कोइि ॥ रवण गुण गोपाल करते नानका सचु जोइि ॥२॥१०२॥१२५॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की मति सार ॥ हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ चरनारबिंद बसाइि हिरदै बहुरि जनम न मार ॥१॥ करि अनुग्रह राखि लीने इेक नाम अधार ॥ दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबारि ॥२॥१०३॥१२६॥ सारग महला ५ ॥ मानी तूं राम कै दरि मानी ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाइे बिनसी सभ अभिमानी ॥१॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु अपनी करि लीनी गुरमुखि पूर गिआनी ॥ सरब सूख आन्नद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥१॥ निकटि वरतनि सा सदा सुहागनि दह दिस साई जानी ॥ पृअ रंग रंगि रती नाराइिन नानक तिसु कुरबानी ॥२॥१०४॥ १२७॥ सारग महला ५ ॥ तुअ चरन आसरो ईस ॥ तुमहि पछानू साकु तुमहि संगि राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ तू हमरो हम तुमरे कहीअै इित उत तुम ही राखे ॥ तू बेअंतु अपरंपरु सुआमी गुर किरपा कोई लाखै ॥१॥ बिनु बकने बिनु कहन कहावन अंतरजामी जानै ॥ जा कउ मेलि लइे

प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥२॥१०५॥१२८॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि भजि आन करम बिकार ॥ मान मोहु न बुझत तृसना काल ग्रस संसार ॥१॥ रहाउ ॥ खात पीवत हसत सोवत अउध बिती असार ॥ नरक उदरि भ्रमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥१॥ पर द्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार ॥ बिना सतिगुर बूझ नाही तम मोह महाँ अंधार ॥२॥ बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ गोबिंद गुपत होइ रहिए निआरो मातंग मति अहंकार ॥३॥ करि कृपा प्रभ संत राखे चरन कमल अधार ॥ कर जोरि नानकु सरनि आइए गोपाल पुरख अपार ॥४॥१॥१२९॥

सारग महला ५ घरु ६ पड़ताल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ किंकरी बिकार ॥ देखु री बीचार ॥ गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ हरि संगि रंग करती महा केल ॥१॥ रहाउ ॥ सुपन री संसारु ॥ मिथनी बिसथारु ॥ सखी काइ मोहि मोहिली पृअ प्रीति रिदै मेल ॥१॥ सरब री प्रीति पिआरु ॥ प्रभु सदा री दइिआरु ॥ काँईं आन आन रुचीऐ ॥ हरि संगि संगि खचीऐ ॥ जउ साधसंग पाइे ॥ कहु नानक हरि धिआइे ॥ अब रहे जमहि मेल ॥२॥१॥१३०॥ सारग महला ५ ॥ कंचना बहु दत करा ॥ भूमि दानु अरपि धरा ॥ मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ नाही रे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥१॥ रहाउ ॥ चारि बेद जिहव भने ॥ दस असट खसट स्रवन सुने ॥ नही तुलि गोबिद नाम धुने ॥ मन चरन कमल लागे ॥१॥ बरत संधि सोच चार ॥ कृआ कुंटि निराहार ॥ अपरस करत पाकसार ॥ निवली करम बहु बिसथार ॥ धूप दीप करते हरि नाम तुलि न लागे ॥ राम दइिआर सुनि दीन बेनती ॥ देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥२॥२॥१३१॥ सारग महला ५ ॥ राम राम राम

जापि रमत राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ संतन कै चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल भइे कृपाल लबधि अपनी पाई ॥१॥ बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइिआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई ॥ सुआमी सुप्रसन्न भइे जनम मरन दोख गइे संतन कै चरन लागि नानक गुन गाई ॥२॥३॥१३२॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ स्रवन सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ सरन परन साधू आन बानि बिसारे ॥१॥ हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ कहत मुकत सुनत मुकत रहत जनम रहते ॥ राम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥२॥४॥१३३॥ सारग महला ५ ॥ नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥१॥ रहाउ ॥ प्रीति लाइि हरि धिआइि गुन गोबिंद सदा गाइि ॥ हरि जन की रेन बाँछु दैनहार सुआमी ॥१॥ सरब कुसल सुख बिस्राम आनदा आन्नद नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि अंतरजामी ॥ इेक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥ नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ॥२॥५॥१३४॥ सारग महला ५ ॥ गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ पंचा ते इेकु छूटा जउ साधसंगि पग रउ ॥१॥ रहाउ ॥ दृसटउ कछु संगि न जाइि मानु तिआगि मोहा ॥ इेकै हरि प्रीति लाइि मिलि साधसंगि सोहा ॥१॥ पाइिए है गुण निधानु सगल आस पूरी ॥ नानक मनि अन्नद भइे गुरि बिखम गाृ तोरी ॥२॥६॥१३५॥ सारग महला ५ ॥ मनि बिरागैगी ॥ खोजती दरसार ॥१॥ रहाउ ॥ साधू संतन सेवि कै पृउ हीअरै धिआइिए ॥ आन्नद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥१॥ काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥२॥७॥१३६॥ सारग महला ५ ॥ अैसी होइि परी ॥ जानते दइिआर ॥१॥ रहाउ ॥ मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइिए ॥ जाति जनम कुल खोईअै हउ गावउ हरि हरी ॥१॥ लोक कुटंब ते टूटीअै प्रभ किरति किरति करी ॥ गुरि मो कउ उपदेसिआ नानक

सेवि इेक हरी ॥२॥८॥१३७॥ सारग महला ५ ॥ लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ कीट हसति पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥१॥ रहाउ ॥ नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ सुंदर रसाल तू ॥१॥ नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ नानक प्रभ किरपाल तू ॥२॥६॥१३८॥ सारग मः ५ ॥ करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुन्नतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ तीनि भउने लपटाइि रही काच करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥१॥ उधरे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन नामु जा को सिमरि नानक एहे ॥२॥१०॥१३६॥३॥१३॥१५५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सारंग महला ६ ॥ हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ काँ की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥ धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिए अपनाई ॥ तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥ दीन दइिआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥ सारंग महला ६ ॥ कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥ या जग महि कोऊ रहनु न पावै इिकि आवहि इिकि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ काँ को तनु धनु संपति काँ की का सिउ नेहु लगाही ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥ तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥ सारंग महला ६ ॥ कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥ माइिआ मदि बिखिआ रसि रचिए राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ इिहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥ मिथिआ तनु साचो करि मानिए इिह बिधि आपु बंधावै ॥ जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥ सारंग महला ६ ॥ मन करि कबहू न हरि

गुन गाइए ॥ बिखिआसकत रहिए निसि बासुर कीनो अपनो भाइए ॥१॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसु सुनिए नहि काननि पर दारा लपटाइए ॥ पर निंदा कारनि बहु धावत समझिए नह समझाइए ॥१॥ कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइए ॥ कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइए ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ स्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥१॥ गणत सरीरि पीर है हरि बिनु गुर सबदी हरि पाँई ॥ होहु दइआल कृपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहाँ समाई ॥२॥ ऐसी रवत रवहु मन मेरे हरि चरणी चितु लाई ॥ बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥३॥ हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई ॥ बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥४॥ प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ जब की उपजी तब की तैसी रंगुल भई मनि भाई ॥५॥ सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवाँ हरि गुन गाई ॥ गुर कै सबदि रता बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥६॥ सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसाँईं ॥ तह ही मनु जह ही तै राखिआ ऐसी गुरमति पाई ॥७॥ सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥ नानक हरि बिनु घरी न जीवाँ हरि का नामु वडाई ॥८॥१॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ कोटि कलप के दूख बिनासन साचु दृड़ाइ निबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउ रंगी ॥ अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु संगी ॥१॥ चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ हरि रसु चाखि तृखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥२॥ अभरत

सिंचि भइे सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ मन रति नामि रते निहकेवल आदि जुगादि दइिआला ॥३॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥४॥ गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ सबदु बीचारि भरम भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥५॥ मनूआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ इेकस बिनु मै अवरु न जानाँ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥६॥ अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति इेको जानिआ ॥ सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु मानिआ ॥७॥ गुर परसादी अकथउ कथीअै कहउ कहावै सोई ॥ नानक दीन दइिआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥८॥२॥

सारग महला ३ असटपदीआ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥ हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सबदि भउ भंजनु जमकाल निखंजनु हरि सेती लिव लाई ॥ हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥१॥ भगताँ का भोजनु हरि नाम निरंजनु पैन्णु भगति बडाई ॥ निज घरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥२॥ मनमुख बुधि काची मनूआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अंमृत साची बानी ॥३॥ मन के तरंग सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई ॥ सतिगुर मिलि रहीअै सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई ॥४॥ मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ॥ हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥५॥ सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै तृसना मारी ॥ अंतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥६॥ सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे ॥ दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी गुण अवगण न पछाणे ॥७॥ आपे मेलि लइे अकथु कथीअै सचु सबदु सचु बाणी ॥ नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥८॥१॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि का नामु अति

मीठा ॥ जनम जनम के किलविख भउ भंजन गुरमुखि इेको डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइिआ ॥ हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि इेकु बुझाइिआ ॥१॥ प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥ सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ॥२॥ रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रंगु लाई ॥ राम नामु निहकेवलु जाणिआ मनु तृपतिआ साँति आई ॥३॥ पंडित पड़ि पड़ि मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ गुर परसादि निरंजनु पाइिआ साचै सबदि वीचारी ॥४॥ आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइिआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईअै जिनि विचहु आपु गवाइिआ ॥५॥ साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई ॥६॥ इेकस महि सभु जगतो वरतै विरला इेकु पछाणै ॥ सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु इेको जाणै ॥७॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ नानक नामि रते सदा बैरागी इेक सबदि लिव लाई ॥८॥२॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ हरि नदरि करे सोई जनु पाइे गुरमुखि विरलै जाणी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गहिर गंभीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछानिआ ॥ बहु बिधि करम करहि भाइि दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥१॥ हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई ॥२॥ किआ दृड़ाँ किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ होहि दइिआलु कृपा करि हरि जीउ नामो होइि सखाई ॥३॥ सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भावै तिसु नाइि लाइे ॥ गुरू दुआरै सोई बूझै जिस नो आपि बुझाइे ॥४॥ देखि बिसमादु इिहु मनु नही चेते आवा गउणु संसारा ॥ सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाइे मोख दुआरा ॥५॥ जिन् दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सचु संजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई ॥६॥ से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु

अधारा ॥ मनमुख दूजै भरमि भुलाइे ना बूझहि वीचारा ॥७॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ नानक से जन थाइि पइे है जिन की पति पावै लेखै ॥८॥३॥

सारग महला ५ असटपदीआ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुसाइंी परतापु तुहारो डीठा ॥ करन करावन उपाइि समावन सगल छत्रपति बीठा ॥१॥ रहाउ ॥ राणा राउ राज भइे रंका उनि झूठे कहणु कहाइिए ॥ हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइिए ॥१॥ उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ बेसुमार वड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥२॥ पवनि परोइिए सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ नीरु धरणि करि राखे इेकत कोइि न किस ही संगे ॥३॥ घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ जीअ जंत सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥४॥ जो किछु करणा सु आपे करणा मसलति काहू दीन्ी ॥ अनिक जतन करि करह दिखाइे साची साखी चीन्ी ॥५॥ हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तैं दीइे रुड़ाई ॥६॥ मुकति भइे साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ तिन कउ देखि भइे किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥७॥ हम नान्े नीच तुम्े बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥८॥१॥

सारग महला ५ असटपदी घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ पारब्रहम की अचरज सभा ॥१॥ रहाउ ॥ सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥ गुर किरपा ते गुन गाइि अपार ॥ मन भीतरि होवै परगासु ॥ गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥१॥ मिति नाही जा का बिसथारु ॥ सोभा ता की अपर अपार ॥ अनिक रंग जा के गने न जाहि ॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥२॥ अनिक ब्रहमे जा के बेद धुनि करहि ॥ अनिक महेस बैसि

धिआनु धरहि ॥ अनिक पुरख अंसा अवतार ॥ अनिक इंद्र ऊभे दरबार ॥३॥ अनिक पवन पावक अरु नीर ॥ अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ अनिक सूर ससीअर नखिआति ॥ अनिक देवी देवा बहु भाँति ॥४॥ अनिक बसुधा अनिक कामधेन ॥ अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ अनिक अकास अनिक पाताल ॥ अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥५॥ अनिक सासत्र सिमृति पुरान ॥ अनिक जुगति होवत बखिआन ॥ अनिक सरोते सुनहि निधान ॥ सरब जीअ पूरन भगवान ॥६॥ अनिक धरम अनिक कुमेर ॥ अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर ॥ अनिक सेख नवतन नामु लेहि ॥ पारब्रहम का अंतु न तेहि ॥७॥ अनिक पुरीआ अनिक तह खंड ॥ अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ अनिक बना अनिक फल मूल ॥ आपहि सूखम आपहि असथूल ॥८॥ अनिक जुगादि दिनस अरु राति ॥ अनिक परलउ अनिक उतपाति ॥ अनिक जीअ जा के गृह माहि ॥ रमत राम पूरन स्रब ठाँइ ॥९॥ अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥ अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ अनिक धुनित ललित संगीत ॥ अनिक गुपत प्रगटे तह चीत ॥१०॥ सभ ते ऊच भगत जा कै संगि ॥ आठ पहर गुन गावहि रंगि ॥ अनिक अनाहद आनन्द झुनकार ॥ उआ रस का कछु अंतु न पार ॥११॥ सति पुरखु सति असथानु ॥ ऊच ते ऊच निरमल निरबानु ॥ अपुना कीआ जानहि आपि ॥ आपे घटि घटि रहिए बिआपि ॥ कृपा निधान नानक दइआल ॥ जिनि जपिआ नानक ते भइे निहाल ॥१२॥१॥२॥२॥३॥७॥

सारग छंत महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ घटि घटि पूरन है अलिपाता ॥ घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरंग जिउ रचनु कीआ ॥ हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥ हरि रंगी इक रंगी ठाकुरु संतसंगि प्रभु जाता ॥ नानक दरसि लीना जिउ जल मीना सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥१॥ कउन उपमा देउ कवन बडाई ॥ पूरन पूरि रहिए स्रब ठाई ॥ पूरन मनमोहन घट घट सोहन

जब खिंचै तब छाई ॥ किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला आई ॥ अरथु दरबु सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥२॥ पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ हीउ अरापउं देहु सदेसा ॥ देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा कह मोहन परवेसा ॥ अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थान्तर देसा ॥ बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ देखि चरित नानक मनु मोहिए पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा ॥३॥ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ धंनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि वूठा महा अन्नद सहजाइआ ॥ कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥४॥१॥

सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला २ ॥ गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥१॥ महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपीं मालीं रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविऐ न्नगि ॥ न भीजै दातीं कीतै पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥२॥ महला १ ॥ नव छिअ खट का करे बीचारु ॥ निसि दिन उचरै भार अठार ॥ तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥ नाभि वसत ब्रहमै अंतु न जाणिआ ॥ गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥३॥ पउड़ी ॥ आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥ आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ गुर परसादी उबरे जिन भाणा भाइआ ॥ नानक सचु वरतदा

सभ सचि समाइआ ॥१॥ सलोक महला २ ॥ आपि उपाइे नानका आपे रखै वेक ॥ मंदा किस नो आखीऐ जाँ सभना साहिबु इेकु ॥ सभना साहिबु इेकु है वेखै धंधै लाइि ॥ किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ॥ आवहि न्नगे जाहि न्नगे विचे करहि विथार ॥ नानक हुकमु न जाणीऐ अगै काई कार ॥१॥ महला १ ॥ जिनसि थापि जीआँ कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ आपे थापि उथापै आपे इेते वेस करावै ॥ जेते जीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ लेखै बोलणु लेखै चलणु काइितु कीचहि दावे ॥ मूलु मति परवाणा इेहो नानकु आखि सुणाइे ॥ करणी उपरि होइि तपावसु जे को कहै कहाइे ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि चलतु रचाइिएनु गुण परगटी आइिआ ॥ गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइिआ ॥ सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइिआ ॥ जिन कै पोतै पुन्नु है गुरु पुरखु मिलाइिआ ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइिआ ॥२॥ सलोक महला २ ॥ साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥ लिखे उपरि हुकमु होइि लईऐ वसतु सम्ালि ॥ वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइि ॥ केई लाहा लै चले इिकि चले मूलु गवाइि ॥ थोड़ा किनै न मंगिए किसु कहीऐ साबासि ॥ नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाइे रासि ॥१॥ महला १ ॥ जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ जीवि जीवि मुइे मुइे जीवे ॥ केतिआ के बाप केतिआ के बेटे केते गुर चेले हूइे ॥ आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूइे ॥ सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे ॥ मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥२॥ पउड़ी ॥ मनमुखि दूजा भरमु है दूजै लोभाइिआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ो आलाइिआ ॥ पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइिआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि भरमहि भरमाइिआ ॥ मनमुखि जनमु गवाइिआ नानक हरि भाइिआ ॥३॥ सलोक महला २ ॥ जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ नानक अंमृतु इेकु है दूजा अंमृतु नाहि ॥ नानक अंमृतु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥ तिन्ही पीता रंग सिउ

जिन् कउ लिखिआ आदि ॥१॥ महला २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ नानक इकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥ दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ नानक आपि सदीव है पूरा जिसु भंडारु ॥ वडा करि सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु निधानु है सेविऐ सुखु पाई ॥ नामु निरंजनु उचराँ पति सिउ घरि जाँई ॥ गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ मति पंखेरू वसि होइ सतिगुरू धिआइं ॥ नानक आपि दइआलु होइ नामे लिव लाई ॥४॥ सलोक महला २ ॥ तिसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे जाणै जाणु ॥ चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥ जिन्ा चीरी चलणा हथि तिन्ा किछु नाहि ॥ साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥ जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥ घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥१॥ महला २ ॥ सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥ कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्ा मिले भंडार ॥ जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥ नदरि तिन्ा कउ नानका नामु जिन्ा नीसाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ नामु निरंजनु निरमला सुणिऐ सुखु होई ॥ सुणि सुणि मंनि वसाईऐ बूझै जनु कोई ॥ बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ भगता कउ नाम अधारु है नामे सुखु होई ॥ नानक मनि तनि रवि रहिआ गुरमुखि हरि सोई ॥५॥ सलोक महला १ ॥ नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥ इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ वडा आखणु भारा तोलु ॥ होर हउली मती हउले बोल ॥ धरती पाणी परबत भारु ॥ किउ कंडै तोलै सुनिआरु ॥ तोला मासा रतक पाइ ॥ नानक पुछिआ देइ पुजाइ ॥ मूरख अंधिआ अंधी धातु ॥ कहि कहि कहणु कहाइनि आपु ॥१॥ महला १ ॥ आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि ॥ इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अरध उरध दिनु राति ॥ जे किहु होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ सभि कारण करता करे घट अउघट घट

थापि ॥ आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ मनु रहसीऐ नामे साँति आई ॥ नाइ सुणिऐ मनु तृपतीऐ सभ दुख गवाई ॥ नाइ सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे वडिआई ॥ नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ नानक लिव लाई ॥६॥ सलोक महला १ ॥ जूठि न रागीं जूठि न वेदीं ॥ जूठि न चंद सूरज की भेदी ॥ जूठि न अन्नी जूठि न नाई ॥ जूठि न मीहु वर्हिऐ सभ थाई ॥ जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ जूठि न पउणै माहि समाणी ॥ नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ मुहि फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥१॥ महला १ ॥ नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥ सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥ राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥ पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ॥ नाइ सुणिऐ नउ निधि मिलै मन चिंदिआ पावै ॥ नाइ सुणिऐ संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ नाइ सुणिऐ सहजु ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥७॥ सलोक महला १ ॥ दुख विचि जंमणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि ॥ दुखु दुखु अगै आखीऐ पड़्हि पड़्हि करहि पुकार ॥ दुख कीआ पंडा खुल्हीआ सुखु न निकलिए कोइ ॥ दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ चलिआ रोइ ॥ नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ दुख कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारू होइ ॥१॥ महला १ ॥ नानक दुनीआ भसु रंगु भसू हू भसु खेह ॥ भसो भसु कमावणी भी भसु भरीऐ देह ॥ जा जीउ विचहु कढीऐ भसू भरिआ जाइ ॥ अगै लेखै मंगिऐ होर दसूणी पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सुचि संजमो जमु नेड़ि न आवै ॥ नाइ सुणिऐ घटि चानणा आन्हेरु गवावै ॥ नाइ सुणिऐ आपु बुझीऐ लाहा नाउ पावै ॥ नाइ सुणिऐ पाप कटीअहि निरमल सचु पावै ॥ नानक नाइ सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुखि धिआवै ॥८॥ सलोक महला १ ॥ घरि नाराइणु सभा नालि ॥

पूज करे रखै नावालि ॥ कुंगू चन्नणु फुल चड़ाइे ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाइे ॥ माणूआ मंगि मंगि पैनै खाइि ॥ अंधी कंमी अंध सजाइि ॥ भुखिआ देइि न मरदिआ रखै ॥ अंधा झगड़ा अंधी सथै ॥१॥ महला १ ॥ सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ सभे करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ सभे बुधी सुधि सभि सभि तीरथ सभि थान ॥ सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि खुसीआ सभि खान ॥ सभे माणस देव सभि सभे जोग धिआन ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभे जीअ जहान ॥ हुकमि चलाइे आपणै करमी वहै कलाम ॥ नानक सचा सचि नाइि सचु सभा दीबानु ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइि मंनिऐ सुखु ऊपजै नामे गति होई ॥ नाइि मंनिऐ पति पाईऐ हिरदै हरि सोई ॥ नाइि मंनिऐ भवजलु लम्घीऐ फिरि बिघनु न होई ॥ नाइि मंनिऐ पंथु परगटा नामे सभ लोई ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ मन्नीऐ जिन देवै सोई ॥६॥ सलोक मः १ ॥ पुरीआ खंडा सिरि करे इिक पैरि धिआइे ॥ पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुंडी तलै देइि ॥ किसु उपरि एहु टिक टिकै किस नो जोरु करेइि ॥ किस नो कहीऐ नानका किस नो करता देइि ॥ हुकमि रहाइे आपणै मूरखु आपु गणेइि ॥१॥ मः १ ॥ है है आखाँ कोटि कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ आखूं आखाँ सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ ना हउ थकाँ न ठाकीआ इेवड रखहि जोति ॥ नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइि मंनिऐ कुलु उधरै सभु कुटंबु सबाइिआ ॥ नाइि मंनिऐ संगति उधरै जिन रिदै वसाइिआ ॥ नाइि मंनिऐ सुणि उधरे जिन रसन रसाइिआ ॥ नाइि मंनिऐ दुख भुख गई जिन नामि चितु लाइिआ ॥ नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइिआ ॥१०॥ सलोक मः १ ॥ सभे राती सभि दिह सभि थिती सभि वार ॥ सभे रुती माह सभि सभि धरतीं सभि भार ॥ सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभि लोअ लोअ आकार ॥ हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ आखहि थकहि आखि आखि करि सिफतीं वीचार ॥ तृणु न पाइिए बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥१॥ मः १ ॥ अखीं परणै जे फिराँ देखाँ सभु आकारु ॥ पुछा

गिआनी पंडिताँ पुछा बेद बीचार ॥ पुछा देवाँ माणसाँ जोध करहि अवतार ॥ सिध समाधी सभि सुणी जाइि देखाँ दरबारु ॥ अगै सचा सचि नाइि निरभउ भै विणु सारु ॥ होर कची मती कचु पिचु अंधिआ अंधु बीचारु ॥ नानक करमी बंदगी नदरि लम्घाइे पारि ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइि मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइिआ ॥ नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइिआ ॥ नाइि मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइिआ ॥ नाइि मंनिऐ साँति ऊपजै हरि मंनि वसाइिआ ॥ नानक नामु रतन्नु है गुरमुखि हरि धिआइिआ ॥११॥ सलोक मः १ ॥ होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखाँ ॥ तुधु अगै तुधै सालाही मै अंधे नाउ सुजाखा ॥ जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइि सुभाई ॥ नानक बहुता इेहो आखणु सभ तेरी वडिआई ॥१॥ मः १ ॥ जाँ न सिआ किआ चाकरी जाँ जंमे किआ कार ॥ सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ जे चुपै जे मंगिऐ दाति करे दातारु ॥ इिकु दाता सभि मंगते फिरि देखहि आकारु ॥ नानक इेवै जाणीऐ जीवै देवणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइि मंनिऐ सुरति ऊपजै नामे मति होई ॥ नाइि मंनिऐ गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ नाइि मंनिऐ भ्रमु कटीऐ फिरि दुखु न होई ॥ नाइि मंनिऐ सालाहीऐ पापाँ मति धोई ॥ नानक पूरे गुर ते नाउ मन्नीऐ जिन देवै सोई ॥१२॥ सलोक मः १ ॥ सासत्र बेद पुराण पड़्हंता ॥ पूकारंता अजाणंता ॥ जाँ बूझै ताँ सूझै सोई ॥ नानकु आखै कूक न होई ॥१॥ मः १ ॥ जाँ हउ तेरा ताँ सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु परोवहि ॥ आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ नानक सचा सची नाँई सचु पवै धुरि लेखै ॥२॥ पउड़ी ॥ नामु निरंजन अलखु है किउ लखिआ जाई ॥ नामु निरंजन नालि है किउ पाईऐ भाई ॥ नामु निरंजन वरतदा रविआ सभ ठाँई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै देइि दिखाई ॥ नानक नदरी करमु होइि गुर मिलीऐ भाई ॥१३॥ सलोक मः १ ॥ कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ जिन जीवंदिआ पति नही मुइिआ मंदी सोइि

॥ लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥१॥ मः १ ॥ रन्ना होईआ बोधीआ पुरस होइे सईआद ॥ सीलु संजमु सुच भन्नी खाणा खाजु अहाजु ॥ सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥ नानक सचा इेकु है अउरु न सचा भालि ॥२॥ पउड़ी ॥ बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥ खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥ साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥ अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥१४॥ सलोक मः १ ॥ लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा इेक घड़ी महि जाइ ॥ जे सउ वर्हिआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा खाइ ॥ मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ मिठा कउड़ा दोवै रोग ॥ नानक अंति विगुते भोग ॥ झखि झखि झखणा झगड़ा झाख ॥ झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि ॥१॥ मः १ ॥ कापड़ु काठु रंगाइआ राँगि ॥ घर गच कीते बागे बाग ॥ साद सहज करि मनु खेलाइआ ॥ तै सह पासहु कहणु कहाइआ ॥ मिठा करि कै कउड़ा खाइआ ॥ तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ ॥ जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ ॥ तउ कउड़तणु चूकसि माइ ॥ नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ जिस नो प्रापति लिखिआ होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरु धोवाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ु परगटी आइआ ॥ अंदरि होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ कूड़ै लालचि लगिआ फिरि जूनी पाइआ ॥ नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ ॥१५॥ सलोक मः २ ॥ कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुन्नु बीचारु ॥ दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै संसारु ॥ अंमृत बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ॥ गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरतीं करमि धिआई ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै हुकमै अंदरि वेखै ॥ नानक अगहु हउमै तुटै ताँ को लिखीऐ लेखै ॥१॥ मः १ ॥ बेदु पुकारे पुन्नु पापु सुरग नरक का बीउ ॥ जो बीजै सो उगवै खाँदा जाणै जीउ ॥ गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ सचु बीजै सचु उगवै

दरगह पाईऐ थाउ ॥ बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ ॥ नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ निंमु बिरखु बहु संचीऐ अंम्रित रसु पाइआ ॥ बिसीअरु मंत्रु विसाहीऐ बहु दूधु पीआइआ ॥ मनमुखु अभिन्नु न भिजई पथरु नावाइआ ॥ बिखु महि अंम्रितु सिंचीऐ बिखु का फलु पाइआ ॥ नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥१६॥ सलोक मः १ ॥ मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥ इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥ लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥ नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥१॥ मः १ ॥ नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोटु ॥ भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिन अंदरि निंदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ भलके उठि नित पर दरबु हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ नानक पइऐ किरति कमावदे मनमुखि दुखु पाइआ ॥१७॥ सलोक मः ४ ॥ सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का ता सचु पावै कोइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ बुरा न दीसै कोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ मः ४ ॥ सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ नानक सबदि मिले न विछुड़हि जिना सेविआ हरि दातारु ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि हिरदै सांति है नाउ उगवि आइआ ॥ जप तप तीरथ संजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि गुण गाइआ ॥ मेरे हरि जीउ एवै भावदा गुरमुखि तराइआ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु हरि दरि सोहाइआ ॥१८॥ सलोक मः १ ॥ धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥१॥ मः १ ॥ सूरजु चड़ै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ तनु मनु रता भोगि कोई हारै को जिणै ॥ सभु को भरिआ फूकि आखणि कहणि न थंम्हीऐ ॥ नानक वेखै आपि फूक कढाइ ढहि पवै ॥२॥ पउड़ी ॥ सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि

पाइआ ॥ गुर परसादी घटि चानणा आन्हेरु गवाइआ ॥ लोहा पारसि भेटीऐ कंचनु होइ आइआ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु है तिन्ही दरसनु पाइआ ॥१९॥ सलोक मः १ ॥ ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ अकलि इह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पड़्हि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु इहु होरि गलाँ सैतानु ॥१॥ मः २ ॥ जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी जरूरति ॥ होवहि लिंङ झिंङ नह होवहि ऐसी कहीऐ सूरति ॥ जो ओसु इछे सो फलु पाए ताँ नानक कहीऐ मूरति ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु अंम्रित बिरखु है अंम्रित रसि फलिआ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर सबदी मिलिआ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि न गलिआ ॥२०॥ सलोक मः १ ॥ सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥ जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥१॥ महला ३ ॥ नउमी नेमु सचु जे करै ॥ काम क्रोधु त्रिसना उचरै ॥ दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥ दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥२॥ पउड़ी ॥ भूपति राजे रंग राइ संचहि बिखु माइआ ॥ करि करि हेतु वधाइदे पर दरबु चुराइआ ॥ पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति लगाइआ ॥ वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥२१॥ सलोक मः १ ॥ गिआन विहूणा गावै गीत ॥ भुखे मुलाँ घरे मसीति ॥ मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥१॥

मः १ ॥ मनहु जि अंधे कूप कहिआ बिरदु न जाणन्ी ॥ मनि अंधै ऊंधै कवलि दिसन्ि खरे करूप ॥ इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणंति ॥ इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सभ पवितु है धनु संपै माइआ ॥ हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥ गुरमुखाँ नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ नानक भगताँ होरु चिति न आवई हरि नामि समाइआ ॥२२॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ सचै सबदि जिन्ा इेक लिव लागी ॥ गिरह कुटंब महि सहजि समाधी ॥ नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥१॥ मः ४ ॥ गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ सबदै सादु न आइए सचि न लगो भाउ ॥ सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥ जे इक विख अगाहा भरे ताँ दस विखाँ पिछाहा जाइ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ आपु गवाइ सतिगुरू नो मिलै सहजे रहै समाइ ॥ नानक तिन्ा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ गड़्ह मंदर गच गीरीआ किछु साथि न जाई ॥ सोइन साखति पउण वेग ध्रिगु ध्रिगु चतुराई ॥ छतीह अंमृत परकार करहि बहु मैलु वधाई ॥ नानक जो देवै तिसहि न जाणन्ी मनमुखि दुखु पाई ॥२३॥ सलोक मः ३ ॥ पड़्हि पड़्हि पंडित मोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लागा अति भारी ॥ मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउहारी ॥ अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाइे जिन हउमै विचहु मारी ॥ नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥१॥ मः ३ ॥ नाँगे आवणा नाँगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥ जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ गुरमुखि होवै सु भाणा मन्ने सहजे हरि रसु पीजै ॥ नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु

रवीजै ॥२॥ पउड़ी ॥ गड़ि काइआ सीगार बहु भाँति बणाई ॥ रंग परंग कतीफिआ पहिरहि धर माई ॥ लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ नानक नामु न चेतिए अंति लइे छडाई ॥२४॥ सलोक मः ३ ॥ सहजे सुखि सुती सबदि समाइि ॥ आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइि ॥ दुबिधा चूकी सहजि सुभाइि ॥ अंतरि नामु वसिआ मनि आइि ॥ से कंठि लाइे जि भंनि घड़ाइि ॥ नानक जो धुरि मिले से हुणि आणि मिलाइि ॥१॥ मः ३ ॥ जिन्ी नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥ बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥ नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि ॥२॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि नामु मंनि असथिरु जगि सोई ॥ हिरदै हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा निरमलु मलु खोई ॥ नानक जीवदा पुरखु धिआइिआ अमरा पदु होई ॥२५॥ सलोकु मः ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥ नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ सन्ी उपरि चोर ॥१॥ मः ५ ॥ धरति सुहावड़ी आकासु सुह्मदा जपंदिआ हरि नाउ ॥ नानक नाम विहूणिआ तिन् तन खावहि काउ ॥२॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि भाउ करि निज महली वासा ॥ एइि बाहुड़ि जोनि न आवनी फिरि होहि न बिनासा ॥ हरि सेती रंगि रवि रहे सभ सास गिरासा ॥ हरि का रंगु कदे न उतरै गुरमुखि परगासा ॥ एइि किरपा करि कै मेलिअनु नानक हरि पासा ॥२६॥ सलोक मः ३ ॥ जिचरु इिहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अह्मकारु ॥ सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥ सेवा थाइि न पवई तिस की खपि खपि होइि खुआरु ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जो सिरु धरे उतारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लइे सबदु रखै उर धारि ॥१॥ मः ३ ॥ सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ॥ आपे बखसे मेलि लइे आपतु गवावै ॥ मिलिआ कदे न वीछुड़ै जोती जोति मिलावै ॥ नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै ॥२॥ पउड़ी ॥ सभु को लेखे विचि है मनमुखु अह्मकारी ॥ हरि नामु कदे न चेतई जमकालु

सिरि मारी ॥ पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी ॥ मारगु बिखमु डरावणा किउ तरीऐ तारी ॥ नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥२७॥ सलोक मः ३ ॥ विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ इकि गुर परसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि नमसकार ॥ नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥१॥ मः ३ ॥ माइिआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरि नामु ॥ धंधा करतिआ जनमु गइिआ अंदरि दुखु सहामु ॥ नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइिआ जिन् पूरबि लिखिआ करामु ॥२॥ पउड़ी ॥ लेखा पड़ीऐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ पुछि न सकै कोइि हरि दरि सद ढोई ॥ जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई ॥ पूरे गुर ते महलु पाइिआ पति परगटु लोई ॥ नानक अनहद धुनी दरि वजदे मिलिआ हरि सोई ॥२८॥ सलोक मः ३ ॥ गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि पारु ॥१॥ मः ३ ॥ सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइि ॥ गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइि ॥ नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ मंगत जनु जाचै दानु हरि देहु सुभाइि ॥ हरि दरसन की पिआस है दरसनि तृपताइि ॥ खिनु पलु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मराँ माइि ॥ सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइि ॥ सुतिआ आपि उठालि देइि नानक लिव लाइि ॥२९॥ सलोक मः ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणनी एना अंदरि कामु क्रोधु अह्मकारु ॥ थाउ कुथाउ न जाणनी सदा चितवहि बिकार ॥ दरगह लेखा मंगीऐ एथै होहि कूड़िआर ॥ आपे सृसटि उपाईअनु आपि करे बीचारु ॥ नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥१॥ मः ३ ॥ हरि गुरमुखि तिनी अराधिआ जिन् करमि परापति होइि ॥ नानक हउ बलिहारी तिन् कउ जिन् हरि मनि वसिआ सोइि ॥२॥ पउड़ी ॥ आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ नित जीवण कउ चितु गड़् मंडप सवारिआ ॥ वलवंच करि उपाव माइिआ हिरि आणिआ ॥ जमकालु निहाले सास

आव घटै बेतालिआ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥३०॥ सलोक मः ३ ॥
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइिआ मोह सुआइि ॥ दूजै भाइि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै
सजाइि ॥ जिन्हि कीते तिसै न सेवन्ही देदा रिजकु समाइि ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि
आवहि जाइि ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन आइि ॥ अनदिनु नामु धिआइिदे
नानक सचि समाइि ॥१॥ मः ३ ॥ सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥ नानक गुर कै
भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ आसा विचि अति दुखु घणा मनमुखि चितु लाइिआ
॥ गुरमुखि भइे निरास परम सुखु पाइिआ ॥ विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइिआ ॥ एना सोगु
विजोगु न विआपई हरि भाणा भाइिआ ॥ नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि लइे मिलाइिआ ॥३१॥
सलोक मः ३ ॥ पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइि ॥ गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु
न होइि ॥ अन्ने वसि माणकु पइिआ घरि घरि वेचण जाइि ॥ एना परख न आवई अढु न पलै पाइि ॥
जे आपि परख न आवई ताँ पारखीआ थावहु लइिए परखाइि ॥ जे एसु नालि चितु लाइे ताँ वथु लहै
नउ निधि पलै पाइि ॥ घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होइि ॥ सबदु सीतलु मनि
तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइि ॥ वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाइे ॥ नानक बिनु
बूझे किनै न पाइिए फिरि फिरि आवै जाइे ॥१॥ मः ३ ॥ मनि अनदु भइिआ मिलिआ हरि प्रीतमु
सरसे सजण संत पिआरे ॥ जो धुरि मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ अंतरि सबदु
रविआ गुरु पाइिआ सगले दूख निवारे ॥ हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखाँ उर धारे ॥ मनमुखु
तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि सवारे ॥ एना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति
पइे गुर दुआरे ॥ नानक गुरमुखि से सुहेले भइे मुख ऊजल दरबारे ॥२॥ पउड़ी ॥ इिसतरी पुरखै बहु
प्रीति मिलि मोहु वधाइिआ ॥ पुत्र कलत्र नित वेखै विगसै मोहि माइिआ ॥ देसि परदेसि धनु चोराइि

आणि मुहि पाइआ ॥ अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ नानक विणु नावै ध्रिगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥३२॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि अंमृतु नामु है जितु खाधै सभ भुख जाइ ॥ तृसना मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ नानक रस कस सबदु सलाहणा आपे लइे मिलाइ ॥१॥ मः ३ ॥ जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ बिनु सबदै जगि आन्हेरु है सबदे परगटु होइ ॥ पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ॥ बिनु सबदै किनै न पाइिए दुखीइे चले रोइ ॥ नानक नदरी पाईअै करमि परापति होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मंदु पकाइिआ ॥ दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइिआ ॥ किउ रहीअै थिरु जगि को कढहु उपाइिआ ॥ गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइिआ ॥ नानक बखसि मिलाइिअनु हरि नामि समाइिआ ॥३३॥ सलोक मः ३ ॥ माइिआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु अपारु ॥ लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥ नानक आपे मेलि लइे आपे बखसणहारु ॥१॥ मः ४ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीअै जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ मः ४ ॥ सावणु आइिआ झिमझिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ दुख भुख काड़ा सभु चुकाइिसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥ सभ धरति भई हरीआवली अन्नु जंमिआ बोहल लाइ ॥ हरि अचिंतु बुलावै कृपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अंते लइे छडाइ ॥ हरि कीरति भगति अन्नदु है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ जिन्हा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ जन नानकु तृपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥३॥ पउड़ी ॥ गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ ॥ तुसि देवै आपि दइिआलु न छपै छपाईआ ॥ हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिव लाईआ ॥ जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ नानक अपड़ि कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ

॥३४॥ सलोक मः ३ ॥ अमरु वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लइे रजाइ ॥ गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जि सचि रहै लिव लाइ ॥१॥ मः ३ ॥ दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥ बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥ बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ नानक आपि कराइे करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥२॥ पउड़ी मः ५ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु नामु अधारु ॥ गुरि पूरै मेलाइिआ प्रभु देवणहारु ॥ भागु पूरा तिन जागिआ जपिआ निरंकारु ॥ साधू संगति लगिआ तरिआ संसारु ॥ नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥३५॥ सलोक मः ५ ॥ सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥ अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥ लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥१॥ मः ५ ॥ वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥ रिजकु उपाइिएनु अगला ठाँढि पई संसारि ॥ तनु मनु हरिआ होइिआ सिमरत अगम अपार ॥ करि किरपा प्रभ आपणी सचे सिरजणहार ॥ कीता लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥२॥ पउड़ी ॥ वडा आपि अगंमु है वडी वडिआई ॥ गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि साँति आई ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ आपि नाथु सभ नथीअनु सभ हुकमि चलाई ॥ नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई ॥३६॥१॥ सुधु ॥

राग सारंग बाणी भगताँ की ॥ कबीर जी ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ मन दस नाजु टका चारि गाँठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥१॥ रहाउ ॥ बहुतु प्रतापु गाँउ सउ पाइे दुइि लख टका बरात ॥ दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात ॥१॥ ना कोऊ लै आइिए इिहु धनु ना कोऊ लै जातु ॥ रावन हूं ते अधिक छत्रपति खिन महि गइे बिलात

॥२॥ हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ जिन कउ क्रिपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥३॥ मात पिता बनिता सुत संपति अंति न चलत संगात ॥ कहत कबीरु राम भजु बउरे जनमु अकारथ जात ॥४॥१॥ राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ तेरे संतन की हउ चेरी ॥१॥ रहाउ ॥ हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ बसतो होइ होइ सो ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥१॥ जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥२॥ भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥३॥ नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ कहु कबीर साधू को प्रीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥४॥२॥

सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काईं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ काल जाल की सुधि नही लहै ॥ जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ ऐसे कनिक कामनी बाधिए मोह ॥१॥ जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ गला बाँधि दुहि लेइ अहीरु ॥२॥ माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥ सो माइआ लै गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नही मूड़ ॥ धनु धरती तनु होइ गइए धूड़ि ॥३॥ काम क्रोध त्रिसना अति जरै ॥ साधसंगति कबहू नही करै ॥ कहत नामदेउ ता ची आणि ॥ निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥४॥१॥ बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥ ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिए है तो सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥१॥ आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥२॥२॥ दास अनिन्न मेरो निज रूप ॥ दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप ॥१॥ रहाउ ॥ मेरी बाँधी

भगतु छडावै बाँधै भगतु न छूटै मोहि ॥ इेक समै मो कउ गहि बाँधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइि ॥१॥ मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ नामदेव जा के जीअ अैसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥२॥३॥

सारंग ॥ ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥१॥ रहाउ ॥ कामु न बिसरिए क्रोधु न बिसरिए लोभु न छूटिए देवा ॥ पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥१॥ बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ जिहि परलोक जाइि अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥ ह्मिसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइिआ नही पाली ॥ परमान्नद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥६॥

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥

सारंग महला ५ सूरदास ॥ ੴ सितिगुर प्रसादि ॥

हरि के संग बसे हरि लोक ॥ तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिए अनद सहज धुनि झोक ॥१॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखि भइे निरबिखई पाइे है सगले थोक ॥ आन बसतु सिउ काजु न कछूअै सुंदर बदन अलोक ॥१॥ सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इिहु परलोक ॥२॥१॥८॥

सारंग कबीर जीउ ॥ ੴ सितिगुर प्रसादि ॥ हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥१॥ रहाउ ॥ आगे कउ किछु तुलहा बाँधहु किआ भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इिस भाँडे का इितनकु लागै ठनका ॥१॥ सगल धरम पुन्न फल पावहु धूरि बाँछहु सभ जन का ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इिहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥२॥१॥९॥

राग मलार चउपदे महला १ घरु १

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥१॥ प्राणी इको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥१॥ रहाउ ॥ तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि माँगहि लेवहि रहहि नही ॥ तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥२॥ गुरमुखि धिआवहि सि अंमृतु पावहि सेई सूचे होही ॥ अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥३॥ जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥४॥१॥ मलार महला १ ॥ करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ सुणि घन घोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥१॥ बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ अंमृत बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥१॥ रहाउ ॥ सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ ॥ हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥२॥ अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी ॥३॥ आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की एट गही ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥४॥२॥ मलार महला १ ॥ साची सुरति नामि नही तृपते हउमै करत

गवाइिआ ॥ पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइिआ ॥ सबदु चीनि भै कपट न छूटे मनि मुखि माइिआ माइिआ ॥ अजगरि भारि लदे अति भारी मरि जनमे जनमु गवाइिआ ॥१॥ मनि भावै सबदु सुहाइिआ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीन्हे गुरि राखे सचु पाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तीरथि तेजु निवारि न न्हाते हरि का नामु न भाइिआ ॥ रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइिआ ॥ बिसटा कीट भइे उत ही ते उत ही माहि समाइिआ ॥ अधिक सुआद रोग अधिकाई बिनु गुर सहजु न पाइिआ ॥२॥ सेवा सुरति रहसि गुण गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि बलि गुर करतारा ॥ हम नीच होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा ॥ आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥३॥ बैसि सुथानि कहाँ गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूं नाथाँ नाथणहारा ॥ किसु पहि देखि कहउ तू कैसा सभि जाचक तू दातारा ॥ भगतिहीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै उरि धारा ॥४॥३॥ मलार महला १ ॥ जिनि धन पिर का सादु न जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ भई निरासी करम की फासी बिनु गुर भरमि भुलानी ॥१॥ बरसु घना मेरा पिरु घरि आइिआ ॥ बलि जावाँ गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ मुकति भइे गुरि दरसु दिखाइिआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥२॥ हम थारे तृभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ सतिगुरि मिलिऐ निरंजनु पाइिआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥३॥ अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ अकुल निरंजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥४॥ मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥५॥४॥ महला १ मलार ॥ पर दारा पर धनु पर लोभा हउमै बिखै बिकार ॥ दुसट भाउ तजि निंद पराई कामु क्रोधु चंडार ॥१॥ महल महि बैठे अगम अपार ॥ भीतरि अंमृतु सोई जनु पावै जिसु

गुर का सबदु रतनु आचार ॥१॥ रहाउ ॥ दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईऐ सतसंगति गुर पिआर ॥२॥ अहिनिसि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ गुरमुखि सिख सोई जनु पाए जिस नो नदरि करे करतारु ॥३॥ काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखी जोति अपार ॥ नानक गुरमुखि महलि बुलाईऐ हरि मेले मेलणहार ॥४॥५॥

मलार महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पवणै पाणी जाणै जाति ॥ काइआँ अगनि करे निभराँति ॥ जंमहि जीअ जाणै जे थाउ ॥ सुरता पंडितु ता का नाउ ॥१॥ गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ अणडीठा किछु कहणु न जाइ ॥ किआ करि आखि वखाणीऐ माइ ॥१॥ रहाउ ॥ ऊपरि दरि असमानि पइआलि ॥ किउ करि कहीऐ देहु वीचारि ॥ बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥ कोई जाणै कैसा नाउ ॥२॥ कथनी बदनी रहै निभराँति ॥ सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ अहिनिसि अंतरि रहै लिव लाइ ॥ सोई पुरखु जि सचि समाइ ॥३॥ जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥ ता का कहणा कहहु न कोइ ॥ विचि सनातंी सेवकु होइ ॥ नानक पण्हीआ पहिरै सोइ ॥४॥१॥६॥ मलार महला १ ॥ दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख ॥ इकु दुखु सकतवार जमदूत ॥ इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥१॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ दरदु होवै दुखु रहै सरीर ॥ ऐसा दारू लगै न बीर ॥१॥ रहाउ ॥ खसमु विसारि कीए रस भोग ॥ ताँ तनि उठि खलोए रोग ॥ मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥२॥ चंदन का फलु चंदन वासु ॥ माणस का फलु घट महि सासु ॥ सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥ ता कै पाछै कोइ न खाइ ॥३॥ कंचन काइआ निरमल हंसु ॥ जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥ दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥ नानक छूटसि साचै नाइ ॥४॥२॥७॥ मलार महला १ ॥ दुख महुरा मारण हरि नामु ॥ सिला

संतोख पीसणु हथि दानु ॥ नित नित लेहु न छीजै देह ॥ अंत कालि जमु मारै ठेह ॥१॥ ऐसा दारू खाहि गवार ॥ जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ राजु मालु जोबनु सभु छाँव ॥ रथि फिरंदै दीसहि थाव ॥ देह न नाउ न होवै जाति ॥ एथै दिहु ऐथै सभ राति ॥२॥ साद करि समधाँ तृसना घिउ तेलु ॥ कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ होम जग अरु पाठ पुराण ॥ जो तिसु भावै सो परवाण ॥३॥ तपु कागदु तेरा नामु नीसानु ॥ जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ नानक जननी धन्नी माइ ॥४॥३॥८॥ मलार महला १ ॥ बागे कापड़ बोलै बैण ॥ लम्मा नकु काले तेरे नैण ॥ कबहूं साहिबु देखिआ भैण ॥१॥ ऊडाँ ऊडि चड़ाँ असमानि ॥ साहिब संमृथ तेरै ताणि ॥ जलि थलि डूंगरि देखाँ तीर ॥ थान थन्नतरि साहिबु बीर ॥२॥ जिनि तनु साजि दीए नालि खंभ ॥ अति तृसना उडणै की डंझ ॥ नदरि करे ताँ बंधाँ धीर ॥ जिउ वेखाले तिउ वेखाँ बीर ॥३॥ न इहु तनु जाइगा न जाहिगे खंभ ॥ पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरु ॥ सचि समावै एहु सरीरु ॥४॥४॥९॥

मलार महला ३ चउपदे घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ सेवक कउ एहा वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥१॥ आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ ॥ एहा सकति सिवै घरि आवै जीवदिआ मरि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ एह तृगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा ॥२॥ हम दीन मूरख अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुमारी ॥ एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि नामु वखाणी ॥३॥ कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ जिउ जल ऊपरि फेनु

बुद्‌बुदा तैसा इहु संसारा ॥ जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा ॥४॥१॥ मलार महला ३ ॥ जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥ सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥१॥ मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ॥ प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे तिसु बिघनु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है ना हरि भगति न भाइ ॥ गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥ साहिब भावै सो थीऐ पइऐ किरति फिराहि ॥२॥ सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥३॥ मेरा हरि प्रभु अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ ॥ गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥४॥२॥ मलार महला ३ ॥ गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥ गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥ गुर मिलिऐ साँति ऊपजै अनदिनु नामु लइेइ ॥१॥ मेरे मन हरि अंमृत नामु धिआइ ॥ सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किस ही नालि ॥ हउमै वडा रोगु है सिरि मारे जमकालि ॥ गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ॥२॥ सभना करता इेकु तू नित करि देखहि वीचारु ॥ इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भंडार ॥ तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै करी पूकार ॥३॥ हरि हरि नामु अंमृतु है नदरी पाइआ जाइ ॥ अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ ॥४॥३॥ मलार महला ३ ॥ गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ वडी वडिआई होई ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई ॥१॥ मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ तजि कूड़ु कुटंबु हउमै बिखु तृसना चलणु रिदै सम्हालि ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता राम नाम का होरु दाता

कोई नाही ॥ जीअ दानु देइ तृपतासे सचै नामि समाही ॥ अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही ॥२॥ सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी ॥३॥ आवण जाणा बहुड़ि न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ॥ मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मन्नु समाइआ ॥ साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु गवाइआ ॥४॥ इेको इेकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ इेको नामु अंमृतु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ॥ नानक नामु प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥५॥४॥ मलार महला ३ ॥ गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ हउमै मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ जिसहि बुझाइे सोई बूझै जिस नो आपे लइे मिलाइि ॥ अनदिनु बाणी सबदे गाँवै साचि रहै लिव लाइि ॥१॥ मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख पाखंडु कदे न चूकै दूजै भाइि दुखु पाइे ॥ नामु विसारि बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाइे ॥ इिह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताइे ॥ मरि मरि जनमै कदे न बूझै विसटा माहि समाइे ॥२॥ गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ मनु तनु निरमलु निरमल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ इेको पुरखु इेकु प्रभु जाता दूजा अवरु न कोई ॥३॥ आपे करे कराइे प्रभु आपे आपे नदरि करेइि ॥ मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइि ॥ अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइि लखाइि ॥ नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइि ॥४॥५॥ मलार महला ३ दुतुके ॥ सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सु थानु ॥ गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥१॥ जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥ अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥१॥ रहाउ ॥ मन की बिधि सतिगुर ते जाणै

अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु ॥२॥ इहु मनु खेलै हुकम का बाधा इक खिन महि दह दिस फिरि आवै ॥ जाँ आपे नदरि करे हरि प्रभु साचा ताँ इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै ॥३॥ इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू भव सागरु जितु पावहि पारि ॥४॥६॥ मलार महला ३ ॥ जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ इेकसु बिनु मै अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥१॥ मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥ अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ मनु तनु भीजै इेक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ गुर परसादी भ्रमु भउ भागै इेक नामि लिव लाई ॥२॥ गुर बचनी सचु कार कमावै गति मति तब ही पाई ॥ कोटि मधे किसहि बुझाइे तिनि राम नामि लिव लाई ॥३॥ जह जह देखा तह इेको सोई इहि गुरमति बुधि पाई ॥ मनु तनु प्रान धरीं तिसु आगै नानक आपु गवाई ॥४॥७॥ मलार महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइिआ जाई ॥ भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति पाई ॥१॥ मन रे मन सिउ रहउ समाई ॥ गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइि बुझाई ॥ सचु संजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥२॥ आपे सबदु सचु साखी आपे जिन् जोती जोति मिलाई ॥ देही काची पउणु वजाइे गुरमुखि अंमृतु पाई ॥३॥ आपे साजे सभ कारै लाइे सो सचु रहिआ समाई ॥ नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइि वडाई ॥४॥८॥ मलार महला ३ ॥ हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥ गरुड़ु सबदु मुखि पाइिआ हउमै बिखु हरि मारी ॥१॥ मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ इहु भवजलु जगतु न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइिआ मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ तुरीआ गुणु सतसंगति पाईअै नदरी पारि उतारी ॥२॥ चंदन गंध सुगंध है बहु

बासना बहकारि ॥ हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥३॥ कृपा कृपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उर धारि ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥४॥६॥

मलार महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥ कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ इसु मन कउ ममता किथहु लागी ॥१॥ पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥१॥ रहाउ ॥ माइिआ ममता करतै लाई ॥ एहु हुकमु करि सृसटि उपाई ॥ गुर परसादी बूझहु भाई ॥ सदा रहहु हरि की सरणाई ॥२॥ सो पंडितु जो तिहाँ गुणा की पंड उतारै ॥ अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ सतिगुर की एहु दीखिआ लेइ ॥ सतिगुर आगै सीसु धरेइ ॥ सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ सो पंडितु दरगह परवाणु ॥३॥ सभनाँ महि एको एकु वखाणै ॥ जाँ एको वेखै ताँ एको जाणै ॥ जा कउ बखसे मेले सोइ ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥४॥ कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ सोई मुकति जा कउ किरपा होइ ॥ अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ ॥५॥१॥१०॥ मलार महला ३ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ जमकालु मारे नित पति गवाई ॥ सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाई ॥ हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥१॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ॥ अंतरि भगति हरि हरि उरि धारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ दरि साचै दिसै सचिआरु ॥२॥ बहु करम करे सतिगुरु नही पाइआ ॥ बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ॥ हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥३॥ आपे करता अगम अथाहा ॥ गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥

नानक गुरमुखि नामि समाहा ॥४॥२॥११॥ मलार महला ३ ॥ जीवत मुकत गुरमती लागे ॥ हरि की भगति अनदिनु सद जागे ॥ सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥१॥ हउ जीवाँ सदा हरि के गुण गाई ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥ मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ अनदिनु धंधा करत विहाइ ॥ मरि मरि जंमहि मिलै सजाइ ॥२॥ गुरमुखि राम नामि लिव लाई ॥ कूड़ै लालचि ना लपटाई ॥ जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥३॥ कोटि मधे किसहि बुझाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ जो धुरि मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ॥ नानक हरि हरि नामि समाई ॥४॥३॥१२॥ मलार महला ३ ॥ रसना नामु सभु कोई कहै ॥ सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ॥ गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥१॥ मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ लाहा कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै ताँ मिलै सुभाइ ॥२॥ नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ तृसना जलिआ भूख न जाइ ॥ विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ बहु बिधि थाका करम कमाइ ॥३॥ त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ॥ बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ गुरमुखि तुरीआ गुणु उरि धारु ॥४॥ गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ॥ नानक गुरमुखि विरला कोइ ॥५॥४॥१३॥९॥१३॥२२॥

राग मलार महला ४ घरु १ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अनदिनु हरि हरि धिआइए हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ सभ आसा मनसा बंधन तूटे हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ सतिगुरु देखि मेरा मनु बिगसिए जनु

हरि भेटिए बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी गारी ॥ हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥२॥ हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरि धारी ॥ गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥३॥ धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥४॥१॥ मलार महला ४ ॥ गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई ॥१॥ तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई ॥१॥ रहाउ ॥ जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिए महसाई ॥ काँसी कृसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥२॥ जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥३॥ जितनी सृसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लम्घाई ॥४॥२॥ मलार महला ४ ॥ तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि कृपा करै ॥ तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥१॥ जपि मन हरि हरि हरि निसतरै ॥ गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु हरि हरि कृपा करै ॥ हरि जन कउ मिलिआँ सुखु पाईऐ सभ दुरमति मैलु हरै ॥२॥ हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु तृपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥३॥ जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥४॥३॥ मलार महला ४ ॥ जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥ हरि जन कउ हरि दीन् वडाई हरि जनु हरि कारै लावै ॥१॥ सतिगुरु हरि हरि नामु दृड़ावै ॥

हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥१॥ रहाउ ॥ जो गुर कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥२॥ भरमि भूले अगिआनी अंधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥३॥ ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुन्न की फिरि तोटि न आवै ॥४॥ सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अंमृत बचन सुणावै ॥ नानक भाग भले तिसु जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥५॥४॥ मलार महला ४ ॥ जिन् कै हीअरै बसिए मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भाँति ॥ तिन् देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जाँत ॥१॥ गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ तिन् की तृसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खाँति ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भराँति ॥ जिउ जल दुध भिन्न भिन्न काढै चुणि ह्मसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ॥२॥ जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमाँति ॥ तिन कउ किआ कोई देइ खवालै एहि आपि बीजि आपे ही खाँति ॥३॥ हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखाँति ॥ धनु धन्नु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तराँति ॥४॥५॥ मलार महला ४ ॥ अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि लइआ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी संगि साधू पारि पइआ ॥१॥ मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ गुर परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति हरि मेलहु करि मइआ ॥ तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥२॥ जो अनदिनु हिरदै नामु धिआवहि सभु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ एहि आपि तरे सृसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥३॥ तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु

आपे वसि करि लइआ ॥ जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥४॥६॥
मलार महला ४ ॥ गुर परसादी अंमृतु नही पीआ तृसना भूख न जाई ॥ मनमुख मूड़ जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि ध्रिगु जीवणु ध्रिगु खाई ॥१॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥ हरि हरि कृपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ तिन सिधि न बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥२॥ हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ सदा अनन्दि रहै दिनु राती इेक सबदि लिव लाई ॥ नामु पदारथु सहजे पाइआ इहि सतिगुर की वडिआई ॥३॥ सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरणी चितु लाई ॥ अपणी कृपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लम्घाई ॥४॥७॥

मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जन बोलत स्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥१॥ रहाउ ॥ हरि धनु बनजहु हरि धनु संचहु जिसु लागत है नही चोर ॥१॥ चातृक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥२॥ जो बोलत है मृग मीन पंखेरू सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥३॥ नानक जन हरि कीरति गाई छूटि गइए जम का सभ सोर ॥४॥१॥८॥ मलार महला ४ ॥ राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ हरि का पंथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हमारो मीतु सखाई हम हरि सिउ

प्रीति लागी ॥ हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अउरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥१॥ मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमान्नदु बैरागी ॥ हरि देखे जीवत है नानकु इक निमख पलो मुखि लागी ॥२॥२॥६॥६॥१३॥६॥३१॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तूं करहि उपाइे ॥ ता कउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाइे ॥१॥ बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आइे ॥ मोहि दीन कृपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाइे ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन बहु कीइे बहु बिंजन मिसटाइे ॥ करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राइे ॥२॥ दुसट बिदारे साजन रहसे इहि मंदिर घर अपनाइे ॥ जउ गृहि लालु रंगीए आइिआ तउ मै सभि सुख पाइे ॥३॥ संत सभा एट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइे ॥ जन नानक कंतु रंगीला पाइिआ फिरि दूखु न लागै आइे ॥४॥१॥ मलार महला ५ ॥ खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ सारि सम्ालि माता मुखि नीरै तब एहु तृपति अघाई ॥१॥ हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥१॥ रहाउ ॥ चंचल मति बारिक बपुरे की सरप अगनि कर मेलै ॥ माता पिता कंठि लाइि राखै अनद सहजि तब खेलै ॥२॥ जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ नव निधि नामु निधानु गृहि तेरै मनि बाँछै सो लैसी ॥३॥ पिता कृपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि माँगै सो देना ॥ नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि हृदै बसहि नित चरना ॥४॥२॥ मलार महला ५ ॥ सगल बिधी जुरि आहरु करिआ तजिए सगल अंदेसा ॥ कारजु सगल अरंभिए घर का ठाकुर का भारोसा ॥१॥ सुनीअै बाजै बाज सुहावी ॥ भोरु भइिआ मै पृअ मुख पेखे गृहि मंगल सुहलावी ॥१॥ रहाउ ॥ मनूआ लाइि सवारे थानाँ पूछउ संता जाइे ॥ खोजत खोजत मै पाहुन

मिलिए भगति करउ निवि पाइे ॥२॥ जब पृअ आइि बसे गृहि आसनि तब हम मंगलु गाइिआ ॥ मीत साजन मेरे भइे सुहेले प्रभु पूरा गुरू मिलाइिआ ॥३॥ सखी सहेली भइे अन्नदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ कहु नानक वरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥४॥३॥ मलार महला ५ ॥ राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख जठर कउ भरते ॥ कृपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥१॥ हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते ॥ अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥१॥ रहाउ ॥ तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खर ते ॥ कागर नाव लम्घहि कत सागरु बृथा कथत हम तरते ॥२॥ सिव बिरंचि असुर सुर जेते काल अगनि महि जरते ॥ नानक सरनि चरन कमलन की तुम् न डारहु प्रभ करते ॥३॥४॥

रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ मेरे एइि बैरागी तिआगी ॥ हउ इिकु खिनु तिसु बिनु रहि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥१॥ रहाउ ॥ उन कै संगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ सुनि उपदेसु भइे मन निरमल गुन गाइे रंगि राँगी ॥१॥ इिहु मनु देइि कीइे संत मीता कृपाल भइे बडभागी ॥ महा सुखु पाइिआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी ॥२॥१॥५॥ मलार महला ५ ॥ माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि अवगन प्रभु सदा दइिआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ करउ बराबरि जो पृअ संगि रातीं इिह हउमै की ढीठाई ॥१॥ भई निमाणी सरनि इिक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ इेक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥२॥२॥६॥ मलार महला ५ ॥ बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ बरसु पिआरे मनहि सधारे होइि अनदु सदा मनि चाउ ॥१॥ रहाउ ॥ हम तेरी

धर सुआमीआ मेरे तू किउ मनहु बिसारे ॥ इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु भरतारे ॥१॥ बिनउ सुनिए जब ठाकुर मेरै बेगि आइिए किरपा धारे ॥ कहु नानक मेरो बनिए सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥२॥३॥७॥ मलार महला ५ ॥ प्रीतम साचा नामु धिआइि ॥ दूख दरद बिनसै भव सागरु गुर की मूरति रिदै बसाइि ॥१॥ रहाउ ॥ दुसमन हते दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइिआ ॥ राखनहारै हाथ दे राखिए नामु पदारथु पाइिआ ॥१॥ करि किरपा किलविख सभि काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ गुण निधानु नानक मनि वसिआ बाहुड़ि दूख न थीआ ॥२॥४॥८॥ मलार महला ५ ॥ प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥ प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइिआल अनुग्रहु धारे ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥ संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥१॥ बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ नाम अधारु जीवन धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥२॥५॥९॥ मलार महला ५ ॥ अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ राजा रामु रमत सुखु पाइिए बरसु मेघ सुखदाई ॥१॥ रहाउ ॥ इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु नामु नवै निधि पाई ॥ उदौतु भइिए पूरन भावी को भेटे संत सहाई ॥१॥ सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ तरिए संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन धिआई ॥२॥६॥१०॥ मलार महला ५ ॥ घनिहर बरसि सगल जगु छाइिआ ॥ भइे कृपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद मंगल सुख पाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ मिटे कलेस तृसन सभ बूझी पारब्रहमु मनि धिआइिआ ॥ साधसंगि जनम मरन निवारे बहुरि न कतहू धाइिआ ॥१॥ मनु तनु नामि निरंजनि रातउ चरन कमल लिव लाइिआ ॥ अंगीकारु कीए प्रभि अपनै नानक दास सरणाइिआ ॥२॥७॥११॥ मलार महला ५ ॥ बिछुरत किउ जीवे एइि जीवन ॥ चितहि उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥ जिन कउ बिसरै मेरो

रामु पिआरा से मूड़े मरि जाँहीं ॥१॥ मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ नानक रवि रहिए सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥२॥८॥१२॥ मलार महला ५ ॥ हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥ खग तन मीन तन मृग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ देव कुल दैत कुल जख्य किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥१॥ काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ दीन दइआल जपहि करुणा मै नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥१३॥ मलार महला ५ ॥ आजु मै बैसिए हरि हाट ॥ नामु रासि साझी करि जन सिउ जाँउ न जम कै घाट ॥१॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुले कपाट ॥ बेसुमार साहु प्रभु पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥१॥ सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छाँटि ॥ कलि कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥२॥१०॥१४॥ मलार महला ५ ॥ बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥ कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥१॥ रहाउ ॥ इत उत डोलि डोलि स्रमु पाइए तनु धनु होत बिरानो ॥ लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ संगि न जानो ॥१॥ मृग पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ कहु नानक पाहन प्रभ तारहु साधसंगति सुख मानो ॥२॥११॥१५॥ मलार महला ५ ॥ दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ जिस के जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥१॥ रहाउ ॥ अंतरजामी सभ महि वरतै ताँ भउ कैसा भाई ॥ संगि सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाईं ॥१॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि लाई ॥ हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१२॥१६॥ मलार महला ५ ॥ मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ दरस पिआस मेरो मनु मोहिए हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥१॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत मारगु पाइए साधू सेव करीजै ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥१॥ त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो

कीजै ॥२॥१३॥१७॥ मलार मः ५ ॥ प्रभ को भगति बछलु बिरदाइए ॥ निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइए ॥१॥ रहाउ ॥ जै जै कारु कीनो सभ जग महि दइिआ जीअन महि पाइिए ॥ कंठि लाइि अपुनो दासु राखिए ताती वाउ न लाइिए ॥१॥ अंगीकारु कीए मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि सुखाइिए ॥ महा अन्नद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइिए ॥२॥१४॥१८॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ गुरमुखि त्रै गुणीआँ बिसथारु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥१॥ मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईऐ ॥ गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिए सासि गिरासि अपणा खसमु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ साची दरगह पाईऐ मानु ॥२॥ गुरु बोहिथु भवजल तारणहारु ॥ गुरि भेटिऐ न होइि जोनि अउतारु ॥ गुर की सेवा सो जनु पाइे ॥ जा कउ करमि लिखिआ धुरि आइे ॥३॥ गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥ गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ नानक गुरु पारब्रहमु जा की कीम न पाई ॥४॥१॥१९॥ मलार महला ५ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाइे ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइे ॥ अपने सेवक कउ लइे प्रभु लाइि ॥ ता की कीमति कही न जाइि ॥१॥ करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ तुम्हरी कृपा ते तूं चिति आवहि आठ पहर तेरै रंगि राते ॥१॥ रहाउ ॥ गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ जपि जपि जीवहि तेरा नाँउ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही थाउ ॥२॥ दुख सुख करते हुकमु रजाइि ॥ भाणै बखस भाणै देइि सजाइि ॥ दुहाँ सिरिआँ का करता आपि ॥ कुरबाणु जाँई तेरे परताप ॥३॥ तेरी कीमति तूहै जाणहि ॥ तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ सेई भगत जो तुधु

भाणे ॥ नानक तिन कै सद कुरबाणे ॥४॥२॥२०॥ मलार महला ५ ॥ परमेसरु होआ दइआलु ॥ मेघु वरसै अंमृत धार ॥ सगले जीअ जंत तृपतासे ॥ कारज आइे पूरे रासे ॥१॥ सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै एथै निबहै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु भन्ना भै भंजनहार ॥ आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ राखनहार सदा मिहरवान ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबान ॥२॥ कालु गवाइआ करतै आपि ॥ सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ दृसटि धारि राखे सभि जंत ॥ गुण गावहु नित नित भगवंत ॥३॥ इेको करता आपे आप ॥ हरि के भगत जाणहि परताप ॥ नावै की पैज रखदा आइआ ॥ नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥४॥३॥२१॥ मलार महला ५ ॥ गुर सरणाई सगल निधान ॥ साची दरगहि पाईऐ मानु ॥ भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ साधसंगि सद हरि गुण गाइ ॥१॥ मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे फल पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ जनम मरण दूख ते राखै ॥ माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥२॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ सचु संजमु करणी सभु साची ॥ सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥३॥ गुरु पूरा पाईऐ वड भागि ॥ कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥४॥४॥२२॥

रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मनारि पृअ दइआर सिउ रंगु कीआ ॥ कीनो री सगल संीगार ॥ तजिए री सगल बिकार ॥ धावतो असथिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सिउ संगु ॥ बाजे बजहि मृदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥१॥ ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार पृअ अमोघ तैसे ही संगि संत बने ॥ भव उतार नाम भने ॥ रम राम

राम माल ॥ मनि फेरते हरि संगि संगीआ ॥ जन नानक पृउ प्रीतमु थीआ ॥२॥१॥२३॥ मलार महला ५ ॥ मनु घनै भ्रमै बनै ॥ उमकि तरसि चालै ॥ प्रभ मिलबे की चाह ॥१॥ रहाउ ॥ त्रै गुन माई मोहि आई कह्मउ बेदन काहि ॥१॥ आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥ भजु सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥२॥२॥२४॥ मलार महला ५ ॥ पृअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ हाहा हूहू गंध्रब अपसरा अनन्द मंगल रस गावनी नीकी ॥१॥ रहाउ ॥ धुनित ललित गुनग्य अनिक भाँति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥१॥ गिरि तर थल जल भवन भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ साधसंगि रामईआ रसु पाइिए नानक जा कै भावनी नीकी ॥२॥३॥२५॥ मलार महला ५ ॥ गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ दरसु सफलिए दरसु पेखिए गइे किलबिख गइे ॥ मन निरमल उजीआरे ॥१॥ बिसम बिसमै बिसम भई ॥ अघ कोटि हरते नाम लई ॥ गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ प्रभ इेक तूंही इेक तुही ॥ भगत टेक तुहारे ॥ जन नानक सरनि दुआरे ॥२॥४॥२६॥ मलार महला ५ ॥ बरसु सरसु आगिआ ॥ होहि आनन्द सगल भाग ॥१॥ रहाउ ॥ संत संगे मनु परफड़ै मिलि मेघ धर सुहाग ॥१॥ घनघोर प्रीति मोर ॥ चितु चातृक बूंद एर ॥ अैसो हरि संगे मन मोह ॥ तिआगि माइिआ धोह ॥ मिलि संत नानक जागिआ ॥२॥५॥२७॥ मलार महला ५ ॥ गुन गुोपाल गाउ नीत ॥ राम नाम धारि चीत ॥१॥ रहाउ ॥ छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ कै संगि ॥ हरि सिमरि इेक रंगि मिटि जाँहि दोख मीत ॥१॥ पारब्रहम भइे दइिआल ॥ बिनसि गइे बिखै जंजाल ॥ साध जनाँ कै चरन लागि ॥ नानक गावै गोबिंद नीत ॥२॥६॥२८॥ मलार महला ५ ॥ घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ गुन गावत सुख चैन ॥१॥ रहाउ ॥ हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥१॥ पथिक पिआस चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥२॥७॥२९॥

मलार महला ५ ॥ हे गोबिंद हे गोपाल हे दइिआल लाल ॥१॥ रहाउ ॥ प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥१॥ हे सम्रथ अगम पूरन मोहि मइिआ धारि ॥२॥ अंध कूप महा भइिआन नानक पारि उतार ॥३॥८॥३०॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई ॥ सूरु चर्है प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पाँई ॥१॥ पिर भावै प्रेमु सखाई ॥ तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥१॥ रहाउ ॥ सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई ॥ प्रीतम प्रीति बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥२॥ चातृकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥३॥ मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि कमाई ॥ खिनु तिलु रहि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु ताँई ॥४॥ धन वाँढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि सबदु पठाइंी ॥ गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥५॥ प्रिउ प्रिउ करै सभै है जेती गुर भावै प्रिउ पाइंी ॥ प्रिउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥६॥ सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ गुर परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥७॥ अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसाँइंी ॥ गुर परसादि घर ही पिरु पाइिआ तउ नानक तपति बुझाई ॥८॥१॥ मलार महला १ ॥ जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को नाही ॥ अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पाँही ॥१॥ इिसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ बिनसत बार न लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥१॥ रहाउ ॥ जै जगदीस प्रभू रखवारे राखै परखै सोई ॥ जेती है तेती तुझ ही ते तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥२॥ जीअ उपाइि जुगति वसि कीनी आपे गुरमुखि अंजनु ॥ अमरु अनाथ सरब सिरि मोरा काल बिकाल

भरम भै खंजनु ॥३॥ कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रंगनि चिहन चतुराई ॥ नान्ही सी बूंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताईं ॥४॥ नदी उपकंठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ उलटी नदी कहाँ घरु तरवरु सरपनि डसै दूजा मन माँही ॥५॥ गारुड़ गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरमति जारी ॥ मन तन हेंव भइे सचु पाइिआ हरि की भगति निरारी ॥६॥ जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआँ दइिआला ॥ तुम्हरी सरणि परे पति राखहु साचु मिलै गोपाला ॥७॥ बाधी धंधि अंध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि गिआनु समावै ॥८॥ निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ नानक सो प्रभु प्रभू दिखावै बिनु साचे जगु सुपना ॥९॥२॥ मलार महला १ ॥ चातृक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिंग सबदि सुहाई ॥१॥ रैनि बबीहा बोलिए मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ पृअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥२॥ नीद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥३॥ रूखीं बिरखीं ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥४॥ लोचन तार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥५॥ पृअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अंगि न सुहाई ॥६॥ अपने पिआरे बिनु इकु खिनु रहि न सकंउ बिन मिले नींद न पाई ॥७॥ पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥८॥ सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइिआ तृसना सबदि बुझाई ॥९॥ कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥१०॥३॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु २ 　　　 ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥ डूगरु ऊचउ गड़ु पातालि ॥ सागरु सीतलु गुर सबद वीचारि ॥ मारगु मुकता हउमै मारि ॥१॥ मै अंधुले नावै की जोति ॥ नाम अधारि चला गुर कै भै भेति ॥१॥

रहाउ ॥ सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ गुर कै तकीऐ साचै ताणि ॥ नामु सम्हालसि रूड़ी बाणि ॥ थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥२॥ ऊडाँ बैसा इेक लिव तार ॥ गुर कै सबदि नाम आधार ॥ ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥३॥ जितु घरि वसहि तूहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ करण पलाव करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ पल पंकज महि नामु छडाइे जे गुर सबदु सिञापै ॥४॥ इिकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ इिकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ साची बाणी मीठी अंमृत धार ॥ जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥५॥ नामु भै भाइि रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ इिंदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ कालरि बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ सतिगुर बाझहु घोर अंधारा डूबि मुइे बिनु पाणी ॥६॥ जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइि ॥ जो धुरि लिखिआ सु मेटणा न जाइि ॥ हुकमे बाधा कार कमाइि ॥ इेक सबदि राचै सचि समाइि ॥७॥ चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ जाँमणु मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालं ॥८॥१॥४॥ मलार महला १ ॥ मरण मुकति गति सार न जानै ॥ कंठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥१॥ तू कैसे आड़ि फाथी जालि ॥ अलखु न जाचहि रिदै सम्हालि ॥१॥ रहाउ ॥ इेक जीअ कै जीआ खाही ॥ जलि तरती बूडी जल माही ॥२॥ सरब जीअ कीइे प्रतपानी ॥ जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥३॥ जब गलि फास पड़ी अति भारी ॥ ऊडि न साकै पंख पसारी ॥४॥ रसि चूगहि मनमुखि गावारि ॥ फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥५॥ सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ हिरदै साचा सबदु सम्हालु ॥६॥ गुरमति साची सबदु है सारु ॥ हरि का नामु रखै उरि धारि ॥७॥ से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥८॥२॥५॥

मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
करमु होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलिऐ कंचनु होईऐ जाँ हरि की होइ रजाइ ॥१॥ मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर ते गिआनु ऊपजै ताँ इह संसा जाइ ॥ सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ ॥२॥ गुर परसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ मुकति दुआरा सोई पाइे जि विचहु आपु गवाइ ॥३॥ गुर परसादी सिव घरि जंमै विचहु सकति गवाइ ॥ अचरु चरै बिबेक बुधि पाइे पुरखै पुरखु मिलाइ ॥४॥ धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ लाहा हरि सतसंगति पाईऐ करमी पलै पाइ ॥५॥ सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥६॥ हरि नामाँ हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ कृपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु ॥७॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ नानक से जन पूरन होइे जिन हरि भाणा भाइ ॥८॥१॥ मलार महला ३ ॥ बेद बाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमै वारो वार ॥ सतिगुर भेटे मुकति होइ पाइे मोख दुआरु ॥१॥ मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ वडै भागि गुर पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि आपणै भाणै सृसटि उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥२॥ वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ आपे बखसे मेलि लइे करमि परापति होइ ॥३॥ साचा साहिबु माहरो सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अंमृतु वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ हरि कै नाइ सदा

हरीआवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥४॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइए मनि वेखहु को पतीआइ ॥ हरि किरपा ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ ॥ मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु भागा हरि धनु न पाइ ॥५॥ त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि वीचारु ॥ मुकति कदे न होवई नहु पाइनि् मोख दुआरु ॥ बिनु सतिगुर बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥६॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदाँ का अभिआसु ॥ हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥ जमकालु सिरहु न उतरै अंतरि कपट विणासु ॥७॥ हरि नावै नो सभु को परतापदा विणु भागाँ पाइआ न जाइ ॥ नदरि करे गुरु भेटीऐ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ रहाँ समाइ ॥८॥२॥

मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि कृपा करे गुर की कारै लाए ॥ दुखु पल्रि हरि नामु वसाए ॥ साची गति साचै चितु लाए ॥ गुर की बाणी सबदि सुणाए ॥१॥ मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥ गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु लागै सहजि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु पिर कामणि करे संीगारु ॥ दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥ मनमुख का इहु बादि आचारु ॥ बहु करम दृड़ावहि नामु विसारि ॥२॥ गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ॥ सबदे पिरु राखिआ उर धारि ॥ एकु पछाणै हउमै मारि ॥ सोभावंती कहीऐ नारि ॥३॥ बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ मनमुख लोभि दूजै लोभाइआ ॥ ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥४॥ कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ॥ बिनु मन मूए भगति न होइ ॥ गिआन मती कमल परगासु ॥ तितु घटि नामै नामि निवासु ॥५॥ हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ ना मनु भीजै ना सुखु होइ ॥ कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥६॥ से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ सद ही

नामु वेखहि हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥७॥ आपे बखसे देइ पिआरु ॥ हउमै रोगु वडा संसारि ॥ गुर किरपा ते इेहु रोगु जाइि ॥ नानक साचे साचि समाइि ॥८॥१॥३॥५॥८॥

रागु मलार छंत महला ५ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ अपने जन संगि राते ॥ जन संगि राते दिनसु राते इिक निमख मनहु न वीसरै ॥ गोपाल गुण निधि सदा संगे सरब गुण जगदीसरै ॥ मनु मोहि लीना चरन संगे नाम रसि जन माते ॥ नानक प्रीतम कृपाल सदहूं किनै कोटि मधे जाते ॥१॥ प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ महा पतित तुम् तारे ॥ पतित पावन भगति वछल कृपा सिंधु सुआमीआ ॥ संतसंगे भजु निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु सम्ारे ॥२॥ हरि चरन कमल मनु लीना ॥ प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ जल मीन प्रभ जीउ इेक तूहै भिन्न आन न जानीऔ ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीऔ ॥ भजु साधसंगे इेक रंगे कृपाल गोबिद दीना ॥ अनाथ नीच सरणाइि नानक करि मइिआ अपुना कीना ॥३॥ आपस कउ आपु मिलाइिआ ॥ भ्रम भंजन हरि राइिआ ॥ आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निधि पिआरिआ ॥ महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ मिलि संगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइिआ ॥ बिनवंति नानक सरनि तिन की जिन्ी हरि हरि धिआइिआ ॥४॥१॥

वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ३ ॥ गुरि मिलिऔ मनु रहसीऔ जिउ वुठै धरणि सीगारु ॥ सभ दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल ॥ अंदरु रचै सच रंगि जिउ मंजीठै लालु ॥ कमलु विगसै सचु मनि गुर कै सबदि

निहालु ॥ मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दीसै जमकालु ॥ खुधिआ तृसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ इेनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ तुधु भावै संतोखीआँ चूकै आल जंजालु ॥ मूलु रहै गुरु सेविऐ गुर पउड़ी बोहिथु ॥ नानक लगी ततु लै तूं सचा मनि सचु ॥१॥ महला १ ॥ हेको पाधरु हेकु दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥ रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥ अंबरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥ विणु थंम्हा गगनु रहाइि सबदु नीसाणिआ ॥ सूरजु चंदु उपाइि जोति समाणिआ ॥ कीइे राति दिन्नतु चोज विडाणिआ ॥ तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ तुधु सरि अवरु न कोइि कि आखि वखाणिआ ॥ सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥१॥ सलोक मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु एमाहा होइि ॥ नागाँ मिरगाँ मछीआँ रसीआँ घरि धनु होइि ॥१॥ मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु वेछोड़ा होइि ॥ गाई पुता निरधना पंथी चाकरु होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइिआ ॥ बैठा ताड़ी लाइि कवलु छपाइिआ ॥ ब्रहमै वडा कहाइि अंतु न पाइिआ ॥ ना तिसु बापु न माइि किनि तू जाइिआ ॥ ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइिआ ॥ ना तिसु भुख पिआस रजा धाइिआ ॥ गुर महि आपु समोइि सबदु वरताइिआ ॥ सचे ही पतीआइि सचि समाइिआ ॥२॥ सलोक मः १ ॥ वैदु बुलाइिआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बाँह ॥ भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥१॥ मः २ ॥ वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलाँ रोगु पछाणु ॥ अैसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥ जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइि ॥ रोगु गवाइिहि आपणा त नानक वैदु सदाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु देव उपाइिआ ॥ ब्रहमे दिते बेद पूजा लाइिआ ॥ दस अवतारी रामु राजा आइिआ ॥ दैता मारे धाइि हुकमि सबाइिआ ॥ ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न पाइिआ ॥ सची कीमति पाइि तखतु रचाइिआ ॥ दुनीआ धंधै लाइि आपु छपाइिआ

॥ धरमु कराइे करम धुरहु फुरमाइिआ ॥३॥ सलोक मः २ ॥ सावणु आइिआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥ नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन् अवरी लागा नेहु ॥१॥ मः २ ॥ सावणु आइिआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥ नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन् सह नालि पिआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे छिंझ पवाइि मलाखाड़ा रचिआ ॥ लथे भड़थू पाइि गुरमुखि मचिआ ॥ मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ ॥ आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ सभना खसमु इेकु है गुरमुखि जाणीअै ॥ हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीअै ॥ सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीअै ॥ नानक सचा सबदु सलाहि सचु पछाणीअै ॥४॥ सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइिआ अवरि करेंदा वंन ॥ किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु ॥ रंगु रहिआ तिन् कामणी जिन् मनि भउ भाउ होइि ॥ नानक भै भाइि बाहरी तिन तनि सुखु न होइि ॥१॥ मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइिआ वरसै नीरु निपंगु ॥ नानक दुखु लागा तिन् कामणी जिन् कंतै सिउ मनि भंगु ॥२॥ पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाइि इिकु वरतिआ ॥ बेद बाणी वरताइि अंदरि वादु घतिआ ॥ परविरति निरविरति हाठा दोवै विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ मनमुख कचे कूड़िआर तिनी निहचउ दरगह हारिआ ॥ गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिनी मारिआ ॥ सचे अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ से भगत तुधु भावदे सचै नाइि पिआरिआ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा तिना विटहु हउ वारिआ ॥५॥ सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइिआ वरसै लाइि झड़ी ॥ नानक भाणै चलै कंत कै सु माणे सदा रली ॥१॥ मः ३ ॥ किआ उठि उठि देखहु बपुड़ें इिसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ जिनि इेहु मेघु पठाइिआ तिसु राखहु मन माँहि ॥ तिस नो मंनि वसाइिसी जा कउ नदरि करेइि ॥ नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइि ॥२॥ पउड़ी ॥ सो हरि सदा सरेवीअै जिसु करत न लागै वार ॥ आडाणे आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ आपे जगतु उपाइि कै कुदरति करे वीचार ॥ मनमुख अगै लेखा मंगीअै बहुती होवै

मार ॥ गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ एथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीऐ पुकार ॥ एथै सतिगुरु बेली होवै कढि लइे अंती वार ॥ इेना जंता नो होर सेवा नही सतिगुरु सिरि करतार ॥६॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा जिस नो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइि ॥ अपणी किरपा करि कै वससी वणु तृणु हरिआ होइि ॥ गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोइि ॥ बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइि ॥ नानक अंमृतु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइि ॥१॥ मः ३ ॥ कलमलि होई मेदनी अरदासि करे लिव लाइि ॥ सचै सुणिआ कन्नु दे धीरक देवै सहजि सुभाइि ॥ इंद्रै नो फुरमाइिआ वुठा छहबर लाइि ॥ अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइि ॥ नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु संबाहि ॥ जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइि ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु तू सचे लैहि मिलाइि ॥ दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइि ॥ आपे जोड़ि विछोड़िऐ आपे कुदरति देइि दिखाइि ॥ मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइि ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहै लिव लाइि ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइि ॥ से सुखीइे सदा सोहणे जिन्‍ विचहु आपु गवाइि ॥ तिन्‍ सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अंकि समाइि ॥७॥ सलोक मः ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइि ॥ तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइि ॥ गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै ताँ सदा सदा सुखु होइि ॥ सहसा मूलि न होवई सभ चिंता विचहु जाइि ॥ जो किछु होइि सु सहजे होइि कहणा किछू न जाइि ॥ सचा साहिबु मनि वसै ताँ मनि चिंदिआ फलु पाइि ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइिअनु पन्नै पाइि ॥१॥ मः ३ ॥ अंमृतु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ गुरमुखि जिन्‍ी बुझिआ हरि अंमृतु रखिआ उरि धारि ॥ हरि अंमृतु पीवहि सदा रंगि राते हउमै तृसना मारि ॥ अंमृतु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइिआ हरि आतम रामु मुरारि ॥२॥

पउड़ी ॥ अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै समाइ ॥ अपणा आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ हउ बलिहारी गुर आपणे जिनि सची बूझ दिती बुझाइ ॥ जगतु मुसै अंमृतु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ विणु नावै नालि न चलसी जासी जनमु गवाइ ॥ गुरमती जागे तिन्ी घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥८॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा ना बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मंनि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ तिख उतरै चड़ै चवगलि वन्नु ॥१॥ मः ३ ॥ बाबीहा जल महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ जल की सार न जाणही ताँ तूं कूकण पाहि ॥ जल थल चहु दिसि वरसदा खाली को थाउ नाहि ॥ एतै जलि वरसदै तिख मरहि भाग तिना के नाहि ॥ नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि ॥२॥ पउड़ी ॥ नाथ जती सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ ॥ जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ जला बिंबु असरालु तिनै वरताइआ ॥ नीलु अनीलु अगंमु सरजीतु सबाइआ ॥ अगनि उपाई वादु भुख तिहाइआ ॥ दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥९॥ सलोक मः ३ ॥ इहु जलु सभ तै वरसदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ॥ नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का दुखु जाइ ॥१॥ मः ३ ॥ भिन्नी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ जितु वुठै अनु धनु बहुतु ऊपजै जाँ सहु करे रजाइ ॥ जितु खाधै मनु तृपतीऐ जीआँ जुगति समाइ ॥ इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥ गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥ नानक जिन कउ नदरि करे ताँ इहु धनु पलै पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु करे गावारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ सभ महि एकु वरतदा

सिरि सिरि करे बीचारु ॥ गुरमुखि आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहारु ॥१०॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा इेहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ इहु बाबींहा पसू है इस नो बूझणु नाहि ॥ अंमृतु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ नानक गुरमुखि जिन्ह पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥१॥ मः ३ ॥ मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ॥ हरि जीउ अपणी कृपा करे तां वरतै सभ लोइ ॥ वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ माणस कूड़ा गरबु सची तुधु मणी ॥ आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥११॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥१॥ मः ३ ॥ बाबीहा भिंनी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ गुर सबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ खंड पताल असंख मै गणत न होई ॥ तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥१२॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ कूक पुकार न होवई नदरी नदरि निहाल ॥ नानक नामि रते सहजे

मिले सबदि गुरू कै घाल ॥१॥ मः ३ ॥ बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जाँहि मेरे प्रान ॥ तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ नानक गुरमुखि बखसि लइे अंति बेली होइि भगवानु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइि कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ त्रै गुण सरब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ जूऐ जनमु तिनी हारिआ कितु आइे संसारि ॥ सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥ जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ जिसु बखसे सो पाइिसी गुर सबदी वीचारु ॥१३॥ सलोक मः ५ ॥ राति न विहावी साकताँ जिन्हा विसरै नाउ ॥ राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गुण गाँउ ॥१॥ मः ५ ॥ रतन जवेहर माणका हभे मणी मथंनि ॥ नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोह्मनि ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥ अंति खलोआ आइि जि सतिगुर अगै घालिआ ॥ पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ गुर साखी जोति जगाइि दीवा बालिआ ॥ मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥ पसू माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥१४॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइि ॥ मेघु वरसै दइिआ करि गूड़ी छहबर लाइि ॥ बाबीहे कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि आइि ॥ नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनाँ जीआ रिजकु समाइि ॥१॥ मः ३ ॥ चातृक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइि ॥ दूजै भाइि भरंमिआ अंमृत जलु पलै न पाइि ॥ नदरि करे जे आपणी ताँ सतिगुरु मिलै सुभाइि ॥ नानक सतिगुर ते अंमृत जलु पाइिआ सहजे रहिआ समाइि ॥२॥ पउड़ी ॥ इिकि वण खंडि बैसहि जाइि सदु न देवही ॥ इिकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥ इिकि भसम चड़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ इिकि जटा बिकट

बिकराल कुलु घरु खोवही ॥ इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥ इकि अगनि जलावहि अंगु आपु विगोवही ॥ विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥ सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥१५॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा अंमृत वेलै बोलिआ ताँ दरि सुणी पुकार ॥ मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥ नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥१॥ मः ३ ॥ बाबीहा इव तेरी तिखा न उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ नदरी सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु ॥ नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार ॥२॥ पउड़ी ॥ इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ तिन मुखि नाही नामु न तीरथि नाइआ ॥ हथी सिर खोहाइ न भदु कराइआ ॥ कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ ॥ मनि जूठै वेजाति जूठा खाइआ ॥ बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ गुरमुखि एअंकारि सचि समाइआ ॥१६॥ सलोक मः ३ ॥ सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति अपारि ॥१॥ मः ३ ॥ सावणि दझै गुण बाहरी जिसु दूजै भाइ पिआरु ॥ नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगारु खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥ इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥ इकि अन्नु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ तृसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥ करम वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥ लाहा नामु संसारि अंमृतु पीजई ॥ हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥१७॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ गुर सबदी इेकु पछाणिआ इेको सचा सोइ ॥ मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ ॥ अंदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ कलिजुग महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ से वडभागी नानका जिन गुरमुखि परगटु होइ ॥१॥ मः ३ ॥ इंदु वरसै करि दइिआ लोकाँ मनि उपजै चाउ ॥ जिस कै हुकमि इंदु

वरसदा तिस कै सद बलिहारै जाँउ ॥ गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गिआनि धिआनि मैलु चुकाइआ ॥ हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ सबदि मरै मनु मारि धन्नु जणेदी माइआ ॥ दरि सचै सचिआरु सचा आइआ ॥ पुछि न सकै कोइ जाँ खसमै भाइआ ॥ नानक सचु सलाहि लिखिआ पाइआ ॥१८॥ सलोक मः १ ॥ कुलहाँ देंदे बावले लैंदे वडे निलज ॥ चूहा खड न मावई तिकलि बन्नै छज ॥ देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि ॥ नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ फसलि अहाड़ी इेकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ मै महदूदु लिखाइआ खसमै कै दरि जाइ ॥ दुनीआ के दर केतड़े केते आवहि जाँहि ॥ केते मंगहि मंगते केते मंगि मंगि जाहि ॥१॥ मः १ ॥ सउ मणु हसती घिउ गुड़ु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधी फूकि मुई देवानी ॥ खसमि मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी बिललाइ ॥ खसमै भावै एहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ खसमै भावै एहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई ॥ मखीं मिठै मरणा ॥ जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥२॥ पउड़ी ॥ अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥ तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ जिनी सेविआ तिनी सुखु पाइआ गुरमती वीचारु ॥ इकना नो तुधु एवै भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न लगै पिआरु ॥ तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ देहि दानु संतोखीआ

सचा नामु मिलै आधारु ॥१९॥ सलोक मः १ ॥ राती कालु घटै दिनि कालु ॥ छिजै काइआ होइ परालु ॥ वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ भुलिआ चुकि गइआ तप तालु ॥ अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ पिछै रोवहि लिआवहि फेरि ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ मोइआ रोंहि रोंदे मरि जाँहंी ॥ नानक खसमै इेवै भावै ॥ सेई मुइे जिनि चिति न आवै ॥१॥ मः १ ॥ मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ वैरु वादी ॥ वन्नु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीए किहु सी ॥ मनि मुखि गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ नानक सचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥२॥ पउड़ी ॥ अंमृत नामु सदा सुखदाता अंते होइ सखाई ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाइे जिस नो किरपा करे रजाई ॥२०॥ सलोक मः १ ॥ सरमु धरमु दुइि नानका जे धनु पलै पाइि ॥ सो धनु मित्रु न काँढीऐ जितु सिरि चोटाँ खाइि ॥ जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥१॥ मः १ ॥ दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइि त लगहि दुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ रूपी भुख न उतरै जाँ देखाँ ताँ भुख ॥ जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥२॥ मः १ ॥ अंधी कंमी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ चिकड़ि लाइिऐ किआ थीऐ जाँ तुटै पथर बंधु ॥ बंधु तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥ नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥३॥ मः १ ॥ लख मण सुइिना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ जिथै साइिरु लम्घणा अगनि पाणी असगाह ॥ कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ नानक एथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥४॥ पउड़ी ॥ इिकना गलीं जंजीर बंदि रबाणीऐ ॥ बधे छुटहि सचि सचु पछाणीऐ ॥

लिखिआ पलै पाइ सो सचु जाणीऐ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु गइआ जाणीऐ ॥ भउजल तारणहारु सबदि पछाणीऐ ॥ चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ॥ निंदक लाइतबार मिले हड़्वाणीऐ ॥ गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥२१॥ सलोक मः २ ॥ नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥ अंधे का नाउ पारखू इवै करे गुआउ ॥ इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥१॥ मः १ ॥ हरणाँ बाजाँ तै सिकदाराँ एना पड़्आ नाउ ॥ फाँधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिन्ही कमाणा नाउ ॥ पहिलो दे जड़ अंदरि जंमै ता उपरि होवै छाँउ ॥ राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइनि्ह बैठे सुते ॥ चाकर नहदा पाइनि्ह घाउ ॥ रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ जिथै जीआँ होसी सार ॥ नकीं वढीं लाइतबार ॥२॥ पउड़ी ॥ आपि उपाइे मेदनी आपे करदा सार ॥ भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ भै ते सहजु पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ भै ते भैजलु लम्घीऐ गुरमती वीचारु ॥ भै ते निरभउ पाईऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ मनमुख भै की सार न जाणनी तृसना जलते करहि पुकार ॥ नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥२२॥ सलोक मः १ ॥ रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊंघै सउड़ि पलम्घु ॥ भंउकै कोपु खुआरु होइ फकड़ु पिटे अंधु ॥ चुपै चंगा नानका विणु नावै मुहि गंधु ॥१॥ मः १ ॥ राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ एना ठगनि्ह ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि ॥२॥ पउड़ी ॥ पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥ विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ अउघट रुधे राह गलीआँ रोकीआँ ॥ सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआँ ॥ गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥ पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥ हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥२३॥

सलोक मः १ ॥ पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ इकना वडी आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ हुकमी साजे हुकमी ढाहे इेक चसे महि लख ॥ सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ किउ कथीअै किउ आखीअै जापै सचो सचु ॥ करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ अकथ की कथा सुणेइ ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होइि ॥१॥ मः १ ॥ अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ कहाँ ते आइिआ कहाँ इेहु जाणु ॥ जीवत मरत रहै परवाणु ॥ हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ इिहु परसादु गुरू ते जाणै ॥ होंदा फड़ीअगु नानक जाणु ॥ ना हउ ना मै जूनी पाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ पड़्हीअै नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥ बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ अंतु न पारावारु न किन ही पाइिआ ॥ सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइिआ ॥ चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ आइिआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥२४॥ सलोक मः १ ॥ पहिलाँ मासहु निंमिआ मासै अंदरि वासु ॥ जीउ पाइि मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ॥ मासहु बाहरि कढिआ मंमा मासु गिरासु ॥ मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइिआ मासु ॥ मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ सतिगुरि मिलिअै हुकमु बुझीअै ताँ को आवै रासि ॥ आपि छुटे नह छूटीअै नानक बचनि बिणासु ॥१॥ मः १ ॥ मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥ गैंडा मारि होम जग कीइे देवतिआ की बाणे ॥ मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ फड़ु करि लोकाँ नो दि्खलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ नानक अंधे सिउ किआ कहीअै कहै न कहिआ बूझै ॥ अंधा सोइि जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ मात पिता की रकतु निपन्ने मछी मासु न

खाँही ॥ इसत्री पुरखै जाँ निसि मेला एथै मंधु कमाही ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भाँडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पाँडे ॥ बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ जीअ जंत सभि मासहु होइे जीइि लइिआ वासेरा ॥ अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंधु गुरू जिन केरा ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भाँडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पाँडे ॥ मासु पुराणी मासु कतेबीं चहु जुगि मासु कमाणा ॥ जजि काजि वीआहि सुहावै एथै मासु समाणा ॥ इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानाँ ॥ जे एइि दिसहि नरकि जाँदे ताँ उन्ह का दानु न लैणा ॥ देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु इेहु धिङाणा ॥ आपि न बूझै लोक बुझाइे पाँडे खरा सिआणा ॥ पाँडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपन्ना ॥ तोइिअहु अन्नु कमादु कपाहाँ तोइिअहु तृभवणु गन्ना ॥ तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥ इेते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ किआ आखा इिक जीभ तेरा अंतु न किन ही पाइिआ ॥ सचा सबदु वीचारि से तुझ ही माहि समाइिआ ॥ इिकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइिआ ॥ देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइिआ ॥ गुर का सबदु रतन्नु है करि चानणु आपि दिखाइिआ ॥ आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि समाइिआ ॥ आवा गउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइिआ ॥ इिकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइिआ ॥२५॥ सलोक मः १ ॥ नानक माइिआ करम बिरखु फल अंमृत फल विसु ॥ सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥१॥ मः २ ॥ नानक दुनीआ कीआँ वडिआईआँ अगी सेती जालि ॥ इेनी जलीईं नामु विसारिआ इिक न चलीआ नालि ॥२॥ पउड़ी ॥ सिरि सिरि होइि निबेड़ु हुकमि चलाइिआ ॥ तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइिआ ॥ कालु चलाइे बंनि कोइि न रखसी ॥ जरु जरवाणा कंन्हि चड़िआ नचसी ॥ सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥ अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥ फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ करता करे सु होगु कूड़ु निखुटसी ॥२६॥

सलोक मः १ ॥ घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु ॥ तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ ॥ अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ उलटि कमलु अंमृति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥ सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥१॥ मः १ ॥ चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ ॥ एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ पुराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ मन तुआना तू कुदरती आइआ ॥ सग नानक दीबान मसताना नित चड़ै सवाइआ ॥ आतस दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥२॥ पउड़ी नवी मः ५ ॥ सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ पारब्रहमु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥ साधू संगि उधारु भए निकाणिआ ॥ सिमरि सिमरि दातारु सभि रंग माणिआ ॥ परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ ॥ आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥२७॥ सलोक मः १ ॥ धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भांडा धनु मसु ॥ धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥१॥ मः १ ॥ आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥ एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥२॥ पउड़ी ॥ तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति दिखाई ॥ अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ जिसु कृपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ तू करता पुरखु अगंमु है रविआ सभ ठाई ॥ जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥२८॥१॥ सुधु ॥

रागु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥१॥ रहाउ ॥ जाँ चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ जाँ चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥ सु ऐसा राजा स्री नरहरी ॥१॥ जाँ चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डाँवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥ जाँ कै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ पापु पुन्नु जाँ चै डाँगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ ॥ धरम राइ परुली प्रतिहारु ॥ सो ऐसा राजा स्री गोपालु ॥२॥ जाँ चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥ सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ चउर ढूल जाँ चै है पवणु ॥ चेरी सकति जीति ले भवणु ॥ अंड टूक जा चै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण पती ॥३॥ जाँ चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥ नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥ सपत समुंद जाँ चै घड़थली ॥ इते जीअ जाँ चै वरतणी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण धणी ॥४॥ जाँ चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ इते जीअ जाँ चै हहि घरी ॥ सरब बिआपिक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ ताँ ची आणि ॥ सगल भगत जा चै नीसाणि ॥५॥१॥ मलार ॥ मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि ॥ तू न बिसारे रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥ सूदु सूदु करि मारि उठाइए कहा करउ बाप बीठुला ॥१॥ मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला ॥२॥ तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइए अपारला ॥ फेरि दीआ देहुरा नामे

कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥३॥२॥

मलार बाणी भगत रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१॥ रहाउ ॥ सुरसरी सलल कृत बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥१॥ तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥२॥ मेरी जाति कुट बाँढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥३॥१॥ मलार ॥ हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥१॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२॥ जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३॥२॥

मलार ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥१॥ जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥२॥ कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥ जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥३॥१॥३॥

राग कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

मेरा मनु साध जनाँ मिलि हरिआ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि साध जनाँ कउ मिलि संगति पारि उतरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि कृपा करहु प्रभ अपनी हम साध जनाँ पग परिआ ॥ धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ मिलि साधू पतित उधरिआ ॥१॥ मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ जिउं जल तंतु पसारिए बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥२॥ हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ हउमै दुरतु गइआ सभु नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥३॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उर धरिआ ॥ सभु दालदु दूख भंज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥४॥१॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु संत जना पग रेन ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रंगि भेन ॥१॥ रहाउ ॥ हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीइे सुचित चितेन ॥ प्रभि दीन दइिआलि कीए अंगीकृतु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥१॥ हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ हीअरा तेन ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीइे पतित पवेन ॥२॥ हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन मिलिआ

पाथर सेन ॥ जन की महिमा बरनि न साकउ एइि ऊतम हरि हरि केन ॥३॥ तुम् हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ जन नानक कउ दइिआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥४॥२॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम परगास ॥ हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥१॥ रहाउ ॥ हम हरि हिरदै जपिए नामु नरहरि प्रभि कृपा करी किरपास ॥ अनदिनु अनदु भइिआ मनु बिगसिआ उदम भइे मिलन की आस ॥१॥ हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीइे हम ग्रास ॥ किलबिख दहन भइे खिन अंतरि तूटि गइे माइिआ के फास ॥२॥ किआ हम किरम किआ करम कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास ॥३॥ जेती सृसटि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीइे प्रभ पास ॥४॥३॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरै मनि राम नामु जपिए गुर वाक ॥ हरि हरि कृपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइिए सभ झाक ॥१॥ रहाउ ॥ नाना रूप रंग हरि केंरे घटि घटि रामु रविए गुपलाक ॥ हरि के संत मिले हरि प्रगटे उघरि गइे बिखिआ के ताक ॥१॥ संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिए हरि रसिक रसाक ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥२॥ हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥३॥ तुमरे जन तुम् ही प्रभ कीइे हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥४॥४॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ हरि हरि वसतु माइिआ गड़्हि वेड़्ही गुर कै सबदि लीए गड़ु जीति ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ जैसे तरवर की तुछ छाइिआ खिन महि बिनसि जाइि देह भीति ॥१॥ हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइि प्रतीति ॥ परचै रामु रविआ घट अंतरि

असथिरु रामु रविआ रंगि प्रीति ॥२॥ हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआँ मनु रंगि रंगीति ॥ हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥३॥ हम बहु पाप कीइे अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ हरि हरि नामु दीए मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥४॥५॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम जगन्नाथ ॥ घूमन घेर परे बिखु बिखिआ सतिगुर काढि लीइे दे हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम् राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ काम क्रोध बिखिआ लोभि लुभते कासट लोह तरे संगि साथ ॥१॥ तुम् वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढि रहे पाई नही हाथ ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगन्नाथ ॥२॥ अदृसटु अगोचर नामु धिआइे सतसंगति मिलि साधू पाथ ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिए अकथ कथ काथ ॥३॥ हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु जगन्नाथ ॥ जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु कृपा राखहु जन साथ ॥४॥६॥

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन जापहु राम गुपाल ॥ हरि रतन जवेहर लाल ॥ हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ हरि हो हो किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ तुमरे गुन अगम अगोचर इेक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥१॥ हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ जा को भागु तिनि लीए री सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि गुन गावहु जगदीस ॥ इेका जीह कीचै लख बीस ॥ जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ हरि हो हो किरपीस ॥१॥ रहाउ ॥ हरि किरपा करि सुआमी हम लाइि हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ तुमरे

जन रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ हउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥१॥ हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु भावीस ॥ जन नानक अंमृतु पीआ गुरमती धनु धन्नु धनु धन्नु धन्नु गुरू साबीस ॥२॥२॥८॥ कानड़ा महला ४ ॥ भजु रामो मनि राम ॥ जिसु रूप न रेख वडाम ॥ सतसंगति मिलु भजु राम ॥ बड हो हो भाग मथाम ॥१॥ रहाउ ॥ जितु गृहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनन्दु भजु राम राम राम ॥ राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥१॥ सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु तू तू तू राम राम राम ॥ जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥२॥३॥९॥ कानड़ा महला ४ ॥ सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ हरि हो हो लिखे लिलाट ॥१॥ रहाउ ॥ खट करम किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ करि भेख न पाईऐ हरि ब्रहम जोगु हरि पाईऐ सतसंगती उपदेसि गुरू गुर संत जना खोलि खोलि कपाट ॥१॥ तू अपरंपरु सुआमी अति अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक इकै हरि थाट ॥ तू जाणहि सभ बिधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभ घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥२॥४॥१०॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन गोबिद माधो ॥ हरि हरि अगम अगाधो ॥ मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥१॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ संचि बहु चितै बिकार सुखु पाईऐ हरि भजु संत संत संगती मिलि सतिगुरू गुरु साधो ॥ जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन मिलि संगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ॥१॥ जिउ कासट संगि लोहा बहु तरता तिउ पापी संगि तरे साध साध संगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू गुर नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥२॥५॥११॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि जसु गावहु भगवान ॥ जसु गावत पाप लहान ॥ मति गुरमति सुनि जसु कान ॥ हरि हो हो किरपान ॥१॥ रहाउ ॥

तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चिति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि नामु निधान ॥ उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरू भगवान ॥१॥ जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू तू भगवान ॥२॥६॥१२॥

कानड़ा महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गाईऐ गुण गोपाल कृपा निधि ॥ दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ सगल सिधि ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ कोटि पराधी खिन महि तारै ॥१॥ जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ ता कउ दूखु नही तिलु सुपना ॥२॥ जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥३॥ कहु नानक गुरि कीनी मइआ ॥ हलति पलति मुख ऊजल भइआ ॥४॥१॥ कानड़ा महला ५ ॥ आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥१॥ रहाउ ॥ ता कै हिरदै बसिए नामु ॥ जा कउ सुआमी कीनो दानु ॥१॥ ता कै हिरदै आई साँति ॥ ठाकुर भेटे गुर बचनाँति ॥२॥ सरब कला सोई परबीन ॥ नाम मंत्रु जा कउ गुरि दीन ॥३॥ कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ ॥४॥२॥ कानड़ा महला ५ ॥ कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनाँ ॥ अनिक बार करि बंदन संतन ऊहाँ चरन गोबिंद जी के बसना ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक भाँति करि दुआरु न पावउ ॥ होइ कृपालु त हरि हरि धिआवउ ॥१॥ कोटि करम करि देह न सोधा ॥ साधसंगति महि मनु परबोधा ॥२॥ तृसन न बूझी बहु रंग माइआ ॥ नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥३॥ पारब्रहम जब भए दइआल ॥ कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥४॥३॥ कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी माँगु गोबिद ते ॥ टहल संतन की संगु साधू का हरि नामाँ जपि परम गते ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥१॥ सफल होत इह

दुरलभ देही ॥ जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥२॥ अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ जा कै हृदै बसहि गुर पैरा ॥३॥ साधसंगि रंगि प्रभु धिआइआ ॥ कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥४॥४॥ कानड़ा महला ५ ॥ भगति भगतन हूं बनि आई ॥ तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ गावनहारी गावै गीत ॥ ते उधरे बसे जिह चीत ॥१॥ पेखे बिंजन परोसनहारै ॥ जिह भोजनु कीनो ते तृपतारै ॥२॥ अनिक स्वांग काछे भेखधारी ॥ जैसो सा तैसो दृसटारी ॥३॥ कहन कहावन सगल जंजार ॥ नानक दास सचु करणी सार ॥४॥५॥ कानड़ा महला ५ ॥ तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिए ॥१॥ रहाउ ॥ मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ आहिए ॥१॥ सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गंभीर अथाहिए ॥२॥ एति पोति मिलिए भगतन कउ जन सिउ परदा लाहिए ॥३॥ गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिए ॥४॥६॥ कानड़ा महला ५ ॥ संतन पहि आपि उधारन आइए ॥१॥ रहाउ ॥ दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मंत्रु दृड़ाइए ॥१॥ काटे रोग भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाइए ॥२॥ असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइए ॥३॥ संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइए ॥४॥७॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१॥ जो प्रभ कीनो सो भल मानिए इेह सुमति साधू ते पाई ॥२॥ सभ महि रवि रहिआ प्रभु इेकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥३॥८॥ कानड़ा महला ५ ॥ ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी एट तुम्हारी सरना ॥१॥ रहाउ ॥ तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ तुमरो बलु तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥१॥ तुमरी दइआ मइआ सुखु पावउ होहु कृपाल त भउजलु तरना ॥ अभै दानु नामु हरि पाइए सिरु डारिए नानक संत चरना ॥२॥९॥

कानड़ा महला ५ ॥ साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्र सतिगुरू दृड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ नह तृपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ सुखु पाइआ तृसना सभ बुझी है साँति पाई गुन गाइआ ॥१॥ बिनु बूझे पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिए माइआ ॥ साधसंगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥२॥१०॥ कानड़ा महला ५ ॥ हरि के चरन हिरदै गाइ ॥ सीतला सुख साँति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ सगल आस होत पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥१॥ पुन्न दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥ ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥२॥११॥

कानड़ा महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कथीऐ संतसंगि प्रभ गिआनु ॥ पूरन परम जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥१॥ रहाउ ॥ आवत जात रहे स्रम नासे सिमरत साधू संगि ॥ पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रहम कै रंगि ॥१॥ जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ता की दुरमति नास ॥ सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥२॥१॥१२॥ कानड़ा महला ५ ॥ साधसंगति निधि हरि को नाम ॥ संगि सहाई जीअ कै काम ॥१॥ रहाउ ॥ संत रेनु निति मजनु करै ॥ जनम जनम के किलबिख हरै ॥१॥ संत जना की ऊची बानी ॥ सिमरि सिमरि तरे नानक प्रानी ॥२॥२॥१३॥ कानड़ा महला ५ ॥ साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ ईत ऊत कहा लोभावहि एक सिउ मनु लाइ ॥१॥ महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ ॥२॥ सगल तिआगि सरनि आइए नानक लेहु मिलाइ ॥३॥३॥१४॥ कानड़ा महला ५ ॥ पेखि पेखि बिगसाउ साजन प्रभु आपना इकाँत ॥१॥ रहाउ ॥ आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भाँति ॥१॥ सिमरत इक बार

हरि हरि मिटि कोटि कसमल जाँति ॥२॥ गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत साँति ॥३॥ अंमृता रसु पीउ रसना नानक हरि रंगि रात ॥४॥४॥१५॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजना संत आउ मेरै ॥१॥ रहाउ ॥ आनदा गुन गाइ मंगल कसमला मिटि जाहि परेरै ॥१॥ संत चरन धरउ माथै चाँदना गृहि होइ अंधेरै ॥२॥ संत प्रसादि कमलु बिगसै गोबिंद भजउ पेखि नेरै ॥३॥ प्रभ कृपा ते संत पाइे वारि वारि नानक उह बेरै ॥४॥५॥१६॥ कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन गोपाल तेरी ॥ मोह मान धोह भरम राखि लीजै काटि बेरी ॥१॥ रहाउ ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमरि रतनागर ॥१॥ सीतला हरि नामु तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥२॥ दीन दरद निवारि तारन ॥ हरि कृपा निधि पतित उधारन ॥३॥ कोटि जनम दूख करि पाइिए ॥ सुखी नानक गुरि नामु दृड़ाइिए ॥४॥६॥१७॥ कानड़ा महला ५ ॥ धनि उह प्रीति चरन संगि लागी ॥ कोटि जाप ताप सुख पाइे आइि मिले पूरन बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर एट सगली मोहि तिआगी ॥ भोर भरम काटे प्रभ सिमरत गिआन अंजन मिलि सोवत जागी ॥१॥ तू अथाहु अति बडो सुआमी कृपा सिंधु पूरन रतनागी ॥ नानकु जाचकु हरि हरि नामु माँगै मसतकु आनि धरिए प्रभ पागी ॥२॥७॥१८॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुचिल कठोर कपट कामी ॥ जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥१॥ जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इिन बिधे छुटकार ॥ गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि ॥२॥८॥१६॥

कानड़ा महला ५ घरु ४   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइिन नरपति नमसकारै ॥ अैसे गुर कउ बलि बलि जाईअै आपि मुकतु मोहि तारै ॥१॥ रहाउ ॥ कवन कवन कवन गुन कहीअै अंतु नही कछु पारै ॥ लाख लाख लाख कई कोरै को है अैसो

बीचारै ॥१॥ बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥२॥१॥२०॥ कानड़ा महला ५ ॥ न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ ऊच नीच सभ पेखि समानो मुखि बकनो मनि मान ॥१॥ रहाउ ॥ घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भंजन मेरे प्रान ॥ मनहि प्रगासु भइिए भ्रमु नासिए मंत्र दीए गुर कान ॥१॥ करत रहे क्रतग्य करुणा मै अंतरजामी गिआन ॥ आठ पहर नानक जसु गावै माँगन कउ हरि दान ॥२॥२॥२१॥ कानड़ा महला ५ ॥ कहन कहावन कउ कई केतै ॥ अैसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेतै ॥१॥ रहाउ ॥ दुखु नाही सभु सुखु ही है रे इेकै इेकी नेतै ॥ बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥१॥ सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥ कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥२॥३॥२२॥ कानड़ा महला ५ ॥ हीइे को प्रीतमु बिसरि न जाइि ॥ तन मन गलत भइे तिह संगे मोहनी मोहि रही मोरी माइि ॥१॥ रहाउ ॥ जै जै पहि कहउ बृथा हउ अपुनी तेऊ तेऊ गहे रहे अटकाइि ॥ अनिक भाँति की इेकै जाली ता की गंठि नही छोराइि ॥१॥ फिरत फिरत नानक दासु आइिए संतन ही सरनाइि ॥ काटे अगिआन भरम मोह माइिआ लीए कंठि लगाइि ॥२॥४॥२३॥ कानड़ा महला ५ ॥ आनद रंग बिनोद हमारै ॥ नामो गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान अधारै ॥१॥ रहाउ ॥ नामो गिआनु नामु इिसनाना हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ हरि नामो सोभा नामु बडाई भउजलु बिखमु नामु हरि तारै ॥१॥ अगम पदारथ लाल अमोला भइिए परापति गुर चरनारै ॥ कहु नानक प्रभ भइे कृपाला मगन भइे हीअरै दरसारै ॥२॥५॥२४॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजन मीत सुआमी नेरो ॥ पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥१॥ रहाउ ॥ नाम बिना जेतो लपटाइिए कछू नही नाही कछु तेरो ॥ आगै दृसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिए भरम अंधेरो ॥१॥ अटकिए सुत बनिता संग माइिआ देवनहारु दातारु

बिसेरो ॥ कहु नानक इेकै भारोसउ बंधन काटनहारु गुरु मेरो ॥२॥६॥२५॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिखै दलु संतनि तुम्रै गाहिए ॥ तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुम्हारी आहिए ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि मिटाहिए ॥ भइिए प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिए ॥१॥ कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ अथाहिए ॥ कृपा निधान रंग रूप रस नामु नानक लै लाहिए ॥२॥७॥२६॥ कानड़ा महला ५ ॥ बूडत प्रानी हरि जपि धीरै ॥ बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ जत कत पेखउ तुमरी सरना ॥१॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाइिआ ॥ गुर भेटत नानक सुखु पाइिआ ॥२॥८॥२७॥ कानड़ा महला ५ ॥ सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो ॥ चरन संतन कै माथा मेरो ॥१॥ पारब्रहम कउ सिमरहु मनाँ ॥ गुरमुखि नानक हरि जसु सुनाँ ॥२॥९॥२८॥ कानड़ा महला ५ ॥ मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ रसना हरि हरि भोजनि तृपतानी अखीअन कउ संतोखु प्रभ दरसन ॥१॥ रहाउ ॥ करननि पूरि रहिए जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइिआ संत सरसन ॥१॥ सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नही करसन ॥ करु गहि लीइे नानक जन अपने अंध घोर सागर नही मरसन ॥२॥१०॥२९॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुहकत कपट खपट खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ अहं मत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख गरीआ ॥१॥ अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ करुण कृपाल गोपाल दीन बंधु नानक उधरु सरनि परीआ ॥२॥११॥३०॥ कानड़ा महला ५ ॥ जीअ प्रान मान दाता ॥ हरि बिसरते ही हानि ॥१॥ रहाउ ॥ गोबिंद तिआगि आन लागहि अंमृतो डारि भूमि पागहि ॥ बिखै रस सिउ आसकत मूड़े काहे सुख मानि

॥१॥ कामि क्रोधि लोभि बिआपिए जनम ही की खानि ॥ पतित पावन सरनि आइए उधरु नानक जानि ॥२॥१२॥३१॥ कानड़ा महला ५ ॥ अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ खोजत खोजत रतनु पाइए बिसरी सभ चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल रिदै धारि ॥ उतरिआ दुखु मंद ॥१॥ राज धनु परवारु मेरै सरबसो गोबिंद ॥ साधसंगमि लाभु पाइए नानक फिरि न मरंद ॥२॥१३॥३२॥

कानड़ा महला ५ घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ गुर सतिगुर चरनी लागि ॥ हरि पावहु मनु अगाधि ॥ जगु जीतो हो हो गुर किरपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी सा पूजा जि हरि भावासि ॥ माटी की इह पुतरी जोरी किआ इह करम कमासि ॥ प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जंत मिलासि ॥१॥ अवर एट मै कोइ न सूझै इक हरि की एट मै आस ॥ किआ दीनु करे अरदासि ॥ जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ प्रभ चरनन की मनि पिआस ॥ जन नानक दासु कहीअतु है तुम्रा हउ बलि बलि सद बलि जास ॥२॥१॥३३॥

कानड़ा महला ५ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगत उधारन नाम प्रिअ तेरै ॥ नव निधि नामु निधानु हरि केरै ॥ हरि रंग रंग रंग अनूपेरै ॥ काहे रे मन मोहि मगनेरै ॥ नैनहु देखु साध दरसेरै ॥ सो पावै जिसु लिखतु लिलेरै ॥१॥ रहाउ ॥ सेवउ साध संत चरनेरै ॥ बाँछउ धूरि पवित्र करेरै ॥ अठसठि मजनु मैलु कटेरै ॥ सासि सासि धिआवहु मुखु नही मोरै ॥ किछु संगि न चालै लाख करोरै ॥ प्रभ जी को नामु अंति पुकरोरै ॥१॥ मनसा मानि एक निरंकेरै ॥ सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ कवन कहाँ हउ गुन प्रिअ तेरै ॥ बरनि न साकउ एक टुलेरै ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ मिलु नानक देव जगत गुर केरै ॥२॥१॥३४॥

कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥१॥ रहाउ ॥ आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ तरसना ॥१॥ दीन लीन पिआस मीन संतना हरि संतना ॥ हरि संतना की रेन ॥ हीउ अरपि देन ॥ प्रभ भइे है किरपेन ॥ मानु मोहु तिआगि छोडिए तउ नानक हरि जीउ भेटना ॥२॥२॥३५॥ कानड़ा महला ५ ॥ रंगा रंग रंगन के रंगा ॥ कीट हसत पूरन सभ संगा ॥१॥ रहाउ ॥ बरत नेम तीरथ सहित गंगा ॥ जलु हेवत भूख अरु नंगा ॥ पूजाचार करत मेलंगा ॥ चक्र करम तिलक खाटंगा ॥ दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ॥१॥ हठि निग्रहि अति रहत बिटंगा ॥ हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥ काम क्रोध अति तृसन जरंगा ॥ सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥२॥३॥३६॥

कानड़ा महला ५ घरु ७ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ पंच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥१॥ पहिले पै संत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जंतन करि बीचारु ॥ अनिक दास कीरति करहि तुहारी ॥ सोई मिलिए जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिए समाइ ॥ इेक तूही तूही तूही ॥२॥१॥३७॥

कानड़ा महला ५ घरु ८ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तिआगीऐ गुमानु मानु पेखता दइिआल लाल हाँ हाँ मन चरन रेन ॥१॥ रहाउ ॥ हरि संत मंत गुपाल गिआन धिआन ॥१॥ हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइिआल मोहना ॥ कृपाल दइिआ मइिआ धारि ॥ नानकु मागै नामु दानु ॥ तजि मोहु भरमु सगल अभिमानु ॥२॥१॥३८॥ कानड़ा महला ५ ॥ प्रभ कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ

॥१॥ रहाउ ॥ तटन खटन जटन होमन नाही डंडधार सुआउ ॥१॥ जतन भाँतन तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही थाह पाई ठाउ ॥ सोधि सगर सोधना सुखु नानका भजु नाउ ॥२॥२॥३९॥

कानड़ा महला ५ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥१॥ रहाउ ॥ नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥१॥ प्रान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिद सरन ॥ आस पूरन दुख बिनासन गही एट नानक हरि चरन ॥२॥१॥४०॥ कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥ पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ सैसार गार बिकार सागर पतित मोह मान अंध ॥ बिकल माइआ संगि धंध ॥ करु गहे प्रभ आपि काढहु राखि लेहु गोबिंद राइ ॥१॥ अनाथ नाथ सनाथ संतन कोटि पाप बिनास ॥ मनि दरसनै की पिआस ॥ प्रभ पूरन गुनतास ॥ कृपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ॥२॥२॥४१॥ कानड़ा महला ५ ॥ वारि वारउ अनिक डारउ ॥ सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥१॥ रहाउ ॥ कनिक मंदर पाट सेज सखी मोहि नाहि इन सिउ तात ॥१॥ मुकत लाल अनिक भोग बिनु नाम नानक हात ॥ रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात ॥२॥३॥४२॥ कानड़ा महला ५ ॥ अहं तोरो मुखु जोरो ॥ गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ प्रिअ प्रीति पिआरो मोरो ॥१॥ रहाउ ॥ गृहि सेज सुहावी आगनि चैना तोरो री तोरो पंच दूतन सिउ संगु तोरो ॥१॥ आइ न जाइ बसे निज आसनि ऊंध कमल बिगसोरो ॥ छुटकी हउमै सोरो ॥ गाइओ री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥२॥४॥४३॥ कानड़ा मः ५ घरु ६ ॥ ताँ ते जापि मना हरि जापि ॥ जो संत बेद कहत पंथु गाखरो मोह मगन अहं ताप ॥ रहाउ ॥ जो राते माते संगि बपुरी माइआ मोह संताप ॥१॥ नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ बिनसि जाइ

मोह भै भरमा नानक संत प्रताप ॥२॥५॥४४॥

कानड़ा महला ५ घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ मान मोही पंच दोही उरझि निकटि बसिए ताकी सरनि साधूआ दूत संगु निवारि ॥१॥ रहाउ ॥ कोटि जनम जोनि भ्रमिए हारि परिए दुआरि ॥१॥ किरपा गोबिंद भई मिलिए नामु अधारु ॥ दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥२॥१॥४५॥

कानड़ा महला ५ घरु ११ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सहज सुभाइे आपन आइे ॥ कछू न जानौ कछू दिखाइे ॥ प्रभु मिलिए सुख बाले भोले ॥१॥ रहाउ ॥ संजोगि मिलाइे साध संगाइे ॥ कतहू न जाइे घरहि बसाइे ॥ गुन निधानु प्रगटिए इिह चोलै ॥१॥ चरन लुभाइे आन तजाइे ॥ थान थनाइे सरब समाइे ॥ रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥२॥१॥४६॥ कानड़ा महला ५ ॥ गोबिंद ठाकुर मिलन दुराईं ॥ परमिति रूपु अगंम अगोचर रहिए सरब समाई ॥१॥ रहाउ ॥ कहनि भवनि नाही पाइिए पाइिए अनिक उकति चतुराई ॥१॥ जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिए जउ किरपाई ॥ प्रभू दइिआर कृपार कृपा निधि जन नानक संत रेनाई ॥२॥२॥४७॥ कानड़ा महला ५ ॥ माई सिमरत राम राम राम ॥ प्रभ बिना नाही होरु ॥ चितवउ चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥१॥ रहाउ ॥ लाइि प्रीति कीन आपन तूटत नही जोरु ॥ प्रान मनु धनु सरबसुो हरि गुन निधे सुख मोर ॥१॥ ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ संत सरन तरन नानक बिनसिए दुखु घोर ॥२॥३॥४८॥ कानड़ा महला ५ ॥ जन को प्रभु संगे असनेहु ॥ साजनो तू मीतु मेरा गृहि तेरै सभु केहु ॥१॥ रहाउ ॥ मानु माँगउ तानु माँगउ धनु लखमी सुत देह ॥१॥ मुकति जुगति भुगति पूरन परमान्नद परम निधान ॥

भै भाइि भगति निहाल नानक सदा सदा कुरबान ॥२॥४॥४६॥ कानड़ा महला ५ ॥ करत करत चरच चरच चरचरी ॥ जोग धिआन भेख गिआन फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥१॥ रहाउ ॥ अह्म अह्म अहै अवर मूड़ मूड़ मूड़ बवरई ॥ जति जात जात जात सदा सदा सदा सदा काल हई ॥१॥ मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु सुनहु रे मूड़ बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥२॥५॥५०॥१२॥६२॥

कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ भगत जनाँ की खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ अन रस साद गइे सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो ॥१॥ गुरमति हरि हरि मीठा लागा गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥२॥ गुरबाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो ॥ तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥३॥ राम नामु इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही तृपतावैगो ॥४॥ कनिक कनिक पहिरे बहु कंगना कापरु भाँति बनावैगो ॥ नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥५॥ माइिआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिए न जावैगो ॥६॥ भउ बैरागु भइिआ है बोहिथु गुरु खेवटु सबदि तरावैगो ॥ राम नामु हरि भेटीऔ हरि रामै नामि समावैगो ॥७॥ अगिआनि लाइि सवालिआ गुर गिआनै लाइि जगावैगो ॥ नानक भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥८॥१॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो ॥ जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥

कृपा कृपा कृपा करि हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥१॥ जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ जिउ लोहा तरिए संगि कासट लगि सबदि गुरू हरि पावैगो ॥२॥ संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो ॥३॥ भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ खिनु खिनु नामु देइ वडिआई सतिगुर उपदेसि समावैगो ॥४॥ भगत जना कउ सदा निवि रहीऐ जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ जो निंदा दुसट करहि भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥५॥ ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो ॥ जो जो भगतु होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो ॥६॥ जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं लगि धिआवैगो ॥ जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो ॥७॥ जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो ॥ नानक कृपा कृपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥८॥२॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु गुरमति रसि गुन गावैगो ॥ जिहवा इेक होइि लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ सहस फनी जपिए सेखनागै हरि जपतिआ अंतु न पावैगो ॥ तू अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावैगो ॥१॥ जिन तू जपिए तेई जन नीके हरि जपतिअहु कउ सुखु पावैगो ॥ बिदर दासी सुतु छोक छोहरा कृसनु अंकि गलि लावैगो ॥२॥ जल ते एपति भई है कासट कासट अंगि तरावैगो ॥ राम जना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥३॥ हम पाथर लोह लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ जिउ सतसंगति तरिए जुलाहो संत जना मनि भावैगो ॥४॥ खरे खरोइे बैठत ऊठत मारगि पंथि धिआवैगो ॥ सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥५॥ सासनि सासि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥ गुर परसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि

समावैगो ॥६॥ सतिगुरु दाता जीअ जीअन को भागहीन नही भावैगो ॥ फिरि इह वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥७॥ जे को भला लोड़ै भल अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि ठाकुर मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥८॥३॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु हरि रंगि राता गावैगो ॥ भै भै त्रास भइे है निरमल गुरमति लागि लगावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ हरि रंगि राता सद बैरागी हरि निकटि तिना घरि आवैगो ॥ तिन की पंक मिलै ताँ जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो ॥१॥ दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ फिरि उलटिए जनमु होवै गुर बचनी गुरु पुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥२॥ इंद्री दसे दसे फुनि धावत त्रै गुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ सतिगुर परचै वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥३॥ एअंकारि इेको रवि रहिआ सभु इेकस माहि समावैगो ॥ इेको रूपु इेको बहु रंगी सभु इेकतु बचनि चलावैगो ॥४॥ गुरमुखि इेको इेकु पछाता गुरमुखि होइि लखावैगो ॥ गुरमुखि जाइि मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥५॥ जीअ जंत सभ सिसटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ बिनु गुर भेटे को महलु न पावै आइि जाइि दुखु पावैगो ॥६॥ अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम करि किरपा गुरू मिलावैगो ॥ सतिगुर मिलत महा सुखु पाइिआ मति मलीन बिगसावैगो ॥७॥ हरि हरि कृपा करहु जगजीवन मै सरधा नामि लगावैगो ॥ नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो ॥८॥४॥ कानड़ा महला ४ ॥ मन गुरमति चाल चलावैगो ॥ जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु सबदु दृड़ावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ चलतौ चलै चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ सतिगुरु सबदु देइि रिद अंतरि मुखि अंमृतु नामु चुआवैगो ॥१॥ बिसीअर बिसू भरे है पूरन गुरु गरुड़ सबदु मुखि पावैगो ॥ माइिआ भुइिअंग तिसु नेड़ि न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥२॥ सुआनु लोभु नगर महि सबला गुरु खिन महि मारि कढावैगो ॥ सतु संतोखु धरमु आनि राखे

हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥३॥ पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत काढि कढावैगो ॥ त्राहि त्राहि सरनि जन आइे गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥४॥ सुपन्नतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो ॥ लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥५॥ हउमै करै करावै हउमै पाप कोइिले आनि जमावैगो ॥ आइिआ कालु दुखदाई होइे जो बीजे सो खवलावैगो ॥६॥ संतहु राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ खाइि खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न आवैगो ॥७॥ राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥ नानक दइिआ दइिआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥८॥५॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो ॥ लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइि आवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु महा पुरखु है पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥१॥ सतिगुर बचनु बचनु है नीको गुर बचनी अंमृतु पावैगो ॥ जिउ अंबरीकि अमरा पद पाइे सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥२॥ सतिगुर सरनि सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ दइिआल दीन भइे है सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥३॥ सतिगुर सरनि पइे से थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो ॥ जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥४॥ हरि हरि हरि हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि मेलि मिलावैगो ॥५॥ गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥६॥ साकत नर सतिगुरु नही कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइिआ करंगि लगावैगो ॥७॥ राम नामु सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥ नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति राखि समावैगो ॥८॥६॥ छका १ ॥

कानड़ा छंत महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

से उधरे जिन राम धिआइे ॥ जतन माइिआ के कामि न आइे ॥ राम धिआइे सभि फल पाइे धनि धंनि ते बडभागीआ ॥ सतसंगि जागे नामि लागे इेक सिउ लिव लागीआ ॥ तजि मान मोह बिकार साधू लगि तरउ तिन कै पाइे ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाइे ॥१॥ मिलि साधू नित भजह नाराइिण ॥ रसकि रसकि सुआमी गुण गाइिण ॥ गुण गाइि जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागइे ॥ सतसंगि पाईअै हरि धिआईअै बहुड़ि दूखु न लागइे ॥ करि दइिआ दाते पुरख बिधाते संत सेव कमाइिण ॥ बिनवंति नानक जन धूरि बाँछहि हरि दरसि सहजि समाइिण ॥२॥ सगले जंत भजहु गोपालै ॥ जप तप संजम पूरन घालै ॥ नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइिआ ॥ गोबिदु गाईअै नित धिआईअै परवाणु सोई आइिआ ॥ जप ताप संजम हरि हरि निरंजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ बिनवंति नानक करि दइिआ दीजै हरि रतनु बाधउ पालै ॥३॥ मंगलचार चोज आन्नदा ॥ करि किरपा मिले परमान्नदा ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इिछ मन की पुन्नीआ ॥ बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रुन्नीआ ॥ ले कंठि लाइे सुख दिखाइे बिकार बिनसे मंदा ॥ बिनवंति नानक मिले सुआमी पुरख परमान्नदा ॥४॥१॥

कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ राम नामु निधानु हरि गुरमति रखु उर धारि ॥ दासन दासा होइि रहु हउमै बिखिआ मारि ॥ जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥ धनु धनु वडभागी नानका जिन गुरमति हरि रसु सारि ॥१॥ मः ४ ॥ गोविंदु गोविदु गोविदु हरि गोविदु गुणी निधानु ॥ गोविदु

गोविदु गुरमति धिआईऐ ताँ दरगह पाईऐ मानु ॥ गोविदु गोविदु गोविदु जपि मुखु ऊजला परधानु ॥ नानक गुरु गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ नामु ॥२॥ पउड़ी ॥ तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ तू आपे ही रस रसीअड़ा तू आपे ही भोग भोगीआ ॥ तू आपे आपि वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ सतसंगति सतिगुर धन्नु धनो धन्न धन्न धनो जितु मिलि हरि बुलग बुलोगीआ ॥ सभि कहहु मुखहु हरि हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥१॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ नानक अनदिनु गुण उचरै जिन कउ धुरि लिखिआ होइ ॥१॥ मः ४ ॥ हरि आपे आपि दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ हरि आपे आपि वरतदा हरि जेवडु अवरु न कोइ ॥ जो हरि प्रभु भावै सो थीऐ जो हरि प्रभ करे सु होइ ॥ कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभू हरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना ॥ सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ मंग मंगना ॥ सेवकु ठाकुरु सभु तूहै तूहै गुरमती हरि चंग चंगना ॥ सभि कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु पावहि सभ फल फलना ॥२॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ जो इछहि सो फलु पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥१॥ मः ४ ॥ हरि हरि नामु पवितु है नामु जपत दुखु जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ आइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिन दालदु दुखु लहि जाइ ॥ आपणै भाणै किनै न पाइए जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ जनु नानकु दासन दासु है जो सतिगुर लागे पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥

तूं थान थन्नतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ रंग परंग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि भाँति उपावणी ॥ सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ सभि बोलहु राम रमो स्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥३॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि अंमृतु नाम रसु हरि अंमृतु हरि उर धारि ॥ विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिए तिन जूऐ जनमु सभु हारि ॥ गुरि तुठै हरि चेताइआ हरि नामा हरि उर धारि ॥ जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥१॥ मः ४ ॥ हरि कीरति उतमु नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरि हारु ॥ वडभागी जिन हरि धिआइआ तिन सउपिआ हरि भंडारु ॥ बिनु नावै जि करम कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी फिरि पावै छारु ॥ हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै इेकंकारु ॥ जिन गुरमुखि सुणि हरि मंनिआ जन नानक तिन जैकारु ॥२॥ पउड़ी ॥ राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा ॥ सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥ सभि चवहु मुखहु जगन्नाथु जगन्नाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥४॥ सलोक मः ४ ॥ हमरी जिहबा इेक प्रभ हरि के गुण अगम अथाह ॥ हम किउ करि जपह इिआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ हरि देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पगि पाह ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किरम तराह ॥१॥ मः ४ ॥ हरि करहु कृपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ गुर सेवा हरि

हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ गुरि तुठै नामु दृड़ाइआ हम कीड़े सबदि निहालु ॥ जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि तुम् वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ जो धिआवहि हरि अपरंपरु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ तुम जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥५॥ सलोक मः ४ ॥ हमरे हरि जगजीवना हरि जपिए हरि गुर मंत ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवला कंत ॥ हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ हरि माँगहि हरि जन संत ॥ जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥१॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु नामु हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ नित सारि समाले सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥६॥ सलोक मः ४ ॥ सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥१॥ मः ४ ॥ हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥२॥ पउड़ी ॥ पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ आदि जुगादि वेसु हरि इेको मति गुरमति हरि प्रभु भजिआ ॥ हरि

देवहु दानु दइिआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ सभि धन्नु कहहु गुरु सतिगुरू गुरु सतिगुरू जितु मिलि हरि पड़दा कजिआ ॥७॥ सलोकु मः ४ ॥ भगति सरोवरु उछलै सुभर भरे वहानि ॥ जिना सतिगुरु मंनिआ जन नानक वड भाग लहानि ॥१॥ मः ४ ॥ हरि हरि नाम असंख हरि हरि के गुन कथनु न जाहि ॥ हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ हरि हरि जसु जपत जपंत जन इकु तिलु नही कीमति पाइ ॥ जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लड़ि लाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ जिसु बुझाइे आपि बुझाइ देइ सोई जनु दिखा ॥ सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ॥ धनु धन्नु सु रसना धन्नु कर धन्नु सु पाधा सतिगुरू जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥८॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु अंमृतु है हरि जपीऐ सतिगुर भाइ ॥ हरि हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ हरि दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥१॥ मः ४ ॥ हरि हरि नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ सांँति वसी मनि आइ ॥ नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरू जिन कउ धुरि मसतकि लेखिआ ॥ हरि अगमु धिआइिआ गुरमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ गुर बचनि धिआइिआ जिना अगमु हरि ते ठाकुर सेवक रलि इेकिआ ॥ सभि कहहु मुखहु नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥९॥ सलोक मः ४ ॥ राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रमीति ॥ घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु कीए रंगि रीति ॥ हरि निकटि वसै जगजीवना परगासु कीए

गुर मीति ॥ हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुर बचनि जपिए मनि चीति ॥१॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु भागि वसै वडभागि ॥ गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥२॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥ हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभ अकथ कहाणी ॥ किउ पाईऐ किउ देखीऐ मेरा हरि प्रभु सुघड़ु सुजाणी ॥ हरि मेलि दिखाए आपि हरि गुर बचनी नामि समाणी ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे हरि निरबाणी ॥१०॥ सलोक मः ४ ॥ हरि प्रभ रते लोइणा गिआन अंजनु गुरु देइ ॥ मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥१॥ मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि साँति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामु चितवै नामो पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तृसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ इकि मनमुख करि हाराइअनु इकना मेलि गुरू तिना जीता ॥ हरि ऊतमु हरि प्रभ नामु है गुर बचनि सभागै लीता ॥ दुखु दालदु सभो लहि गइआ जाँ नाउ गुरू हरि दीता ॥ सभि सेवहु मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो वसि कीता ॥११॥ सलोक मः ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु वञाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥ मः ४ ॥ मनु तनु तामि सगारवा जाँ देखा हरि नैणे ॥ नानक सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सदु सुणे ॥२॥ पउड़ी ॥ जगन्नाथ जगदीसर करते अपरंपर पुरखु अतोलु ॥ हरि नामु धिआवहु मेरे गुरसिखहु हरि ऊतमु हरि नामु अमोलु ॥ जिन धिआइआ हिरदै दिनसु राति ते मिले नही हरि रोलु ॥ वडभागी संगति मिलै गुर सतिगुर पूरा बोलु ॥ सभि धिआवहु नर नाराइणो नाराइणो जितु चूका जम झगड़ु झगोलु ॥१२॥ सलोक मः ४ ॥ हरि जन हरि हरि चउदिआ सरु संधिआ गावार ॥ नानक हरि जन हरि लिव उबरे जिन संधिआ

तिसु फिरि मार ॥१॥ मः ४ ॥ अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥ जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥२॥ पउड़ी ॥ जलि थलि महीअलि पूरनो अपरंपरु सोई ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ मात पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ सगल जपहु गोपाल गुन परगटु सभ लोई ॥१३॥ सलोक मः ४ ॥ गुरमुखि मिले सि सजणा हरि प्रभ पाइआ रंगु ॥ जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि दरगहि वंञु ॥१॥ मः ४ ॥ हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ सभि तुधै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ हरि दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ अन्नु जंमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ जनु नानकु मंगै दानु प्रभ हरि नामु अधारे ॥२॥ पउड़ी ॥ इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुख सागरु ॥ हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ फाटै जम कागरु ॥ जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ सभि पवहु सरनि सतिगुरू की बिनसै दुख दागरु ॥१४॥ सलोक मः ४ ॥ हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥ जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥१॥ मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥ जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥ आवणु जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ आपि तरहि संगी तराहि सभ कुटंबु तरावै ॥ जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै ॥१५॥१॥ सुधु ॥

रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥ जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥१॥ रहाउ ॥ बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ बंधन मुकता जातु न दीसै ॥१॥ पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥२॥१॥

राग कलिआन महला ४

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ हम बारिक प्रतिपारे तुमरे तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥१॥ गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥ तू अमिति अतोलु अपरंपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥२॥ उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ तुम्ह जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥३॥ जन कउ क्रिपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥४॥१॥ कलिआनु महला ४ ॥ हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥१॥ हरि जन हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ जिउ किरत संजोगि चलिए नर निंदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥२॥ जन के तुम्ह हरि राखे सुआमी तुम्ह जुगि जुगि जन रखिआ ॥ कहा भइआ दैति करी बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥३॥ जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि कालै मुखि ग्रसिआ ॥ हरि जन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पइआ ॥४॥२॥ कलिआन महला ४ ॥

मेरे मन जपु जपि जगन्नाथे ॥ गुर उपदेसि हरि नामु धिआइए सभि किलबिख दुख लाथे ॥१॥ रहाउ ॥ रसना इेक जसु गाइि न साकै बहु कीजै बहु रसुनथे ॥ बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥१॥ हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ तुम बड दाते जीअ जीअन के तुम जानहु हम बिरथे ॥२॥ कोई मारगु पंथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥३॥ हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक के प्रभ समरथे ॥४॥३॥ कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनथई ॥ धरमु अरथु सभु कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई ॥१॥ रहाउ ॥ सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग मथई ॥ जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआइथिई ॥१॥ हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ गुरि धारि कृपा हरि जलि नावाइे सभ किलबिख पाप गथई ॥२॥ जन कै रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ जह अंती अउसरु आइि बनतु है तह राखै नामु साथई ॥३॥ जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभ हरि जपिए जगन्नथई ॥ जन नानक के प्रभ राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडथई ॥४॥४॥ कलिआन महला ४ ॥ हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै ॥ अउरु कोई निंद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआ इिकु तिलु नही मानै ॥१॥ रहाउ ॥ अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो सभ ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी आइि पवै हरि जानै ॥१॥ जा कउ राखि लेइि मेरा सुआमी ता कउ सुमति देइि पै कानै ॥ ता कउ कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥२॥ हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा इिक निमख पछानै ॥ ता ते जन कउ अनदु भइिआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥३॥ तुम हरि दाते समरथ सुआमी इिकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि दीजै सद बसहि

रिदै मोहि हरि चरानै ॥४॥५॥ कलिआन महला ४ ॥ प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥१॥ जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥२॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥३॥ हरि आपे होइ कृपालु आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥४॥६॥ छका १ ॥

कलिआनु भोपाली महला ४ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पारब्रहमु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥१॥ रहाउ ॥ दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ ते निरभउ जिन स्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे ॥१॥ जगदीसुर चरन सरन जो आइे ते जन भव निधि पारि परे ॥ भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि कृपा करे ॥२॥१॥७॥

रागु कलिआनु महला ५ घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हमारै इेह किरपा कीजै ॥ अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥१॥ रहाउ ॥ आन जला सिउ काजु न कछूअै हरि बूंद चातृक कउ दीजै ॥१॥ बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसनु नानकु जीजै ॥२॥१॥ कलिआन महला ५ ॥ जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ सरब धार सरब के नाइक सुख समूह के दाते ॥१॥ रहाउ ॥ केती केती माँगनि मागै भावनीआ सो पाईअै ॥१॥ सफल सफल सफल दरसु रे परसि परसि गुन गाईअै ॥ नानक तत तत सिउ मिलीअै हीरै हीरु बिधाईअै ॥२॥२॥

कलिआन महला ५ ॥ मेरे लालन की सोभा ॥ सद नवतन मन रंगी सोभा ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा भगति दानु जसु मंगी ॥१॥ जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ कहु नानक संतन बलिहारै जो प्रभ के सद संगी ॥२॥३॥

कलिआन महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ नैन बैन स्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥१॥ रहाउ ॥ इत उत दह दिसि रविए मेर तिनहि समानि ॥१॥ जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति परधान ॥ साधसंगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम गिआन ॥२॥१॥४॥ कलिआन महला ५ ॥ गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ कथत सुनत मुनि जना मिलि संत मंडली ॥१॥ रहाउ ॥ गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली ॥१॥ जोग जुगति गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ एति पोति मिलि जोति नानक कछू दुखु न डंडली ॥२॥२॥५॥ कलिआनु महला ५ ॥ कउनु बिधि ता की कहा करउ ॥ धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे जरउ ॥१॥ रहाउ ॥ बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥१॥ काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि मधे मुकति कहउ ॥ कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ ॥२॥३॥६॥ कलिआन महला ५ ॥ प्रानपति दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ गरभ जोनि कलि काल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥१॥ रहाउ ॥ नाम धारी सरनि तेरी ॥ प्रभ दइआल टेक मेरी ॥१॥ अनाथ दीन आसवंत ॥ नामु सुआमी मनहि मंत ॥२॥ तुझ बिना प्रभ किछू न जानू ॥ सरब जुग महि तुम पछानू ॥३॥ हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ गोबिंद नानक आसरो ॥४॥४॥७॥ कलिआन महला ५ ॥ मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ गुर पूरे सुप्रसंन भए सदा सूख कलिआन ॥१॥ रहाउ ॥ सरब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ मिलि साधसंगति प्रभू सिमरे नाठिआ दुख काल ॥१॥ करि किरपा प्रभ मेरिआ करउ दिनु रैनि

सेव ॥ नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥२॥५॥८॥ कलिआनु महला ५ ॥ प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ॥ करि किरपा पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ हरि बिनु आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ सरब घटा के दाते सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥१॥ सुरति मति चतुराई सोभा रूपु रंगु धनु माणु ॥ सरब सूख आन्नद नानक जपि राम नामु कलिआणु ॥२॥६॥९॥ कलिआनु महला ५ ॥ हरि चरन सरन कलिआन करन ॥ प्रभ नामु पतित पावनो ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपि निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥१॥ मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥ प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥२॥७॥१०॥

कलिआन महला ४ असटपदीआ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ हरि हरि नामु अंमृतु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥ राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥१॥ नउ दरवाज नवे दर फीके रसु अंमृतु दसवे चुईजै ॥ कृपा कृपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै ॥२॥ काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै ॥ रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥३॥ सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ कृपा कृपा करि दीन हम सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै ॥४॥ लालनु लालु लालु है रंगनु मनु रंगन कउ गुर दीजै ॥ राम राम राम रंगि राते रस रसिक गटक नित पीजै ॥५॥ बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै ॥६॥ साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥ धावतु धाइ धावहि प्रीति माइिआ लख कोसन कउ बिथि दीजै ॥७॥ हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥

राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक कृपा करीजै ॥८॥१॥ कलिआन महला ४ ॥ राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥ हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ सुरग मुकति बैकुंठ सभि बाँछहि निति आसा आस करीजै ॥ हरि दरसन के जन मुकति न माँगहि मिलि दरसन तृपति मनु धीजै ॥१॥ माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै ॥२॥ चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥ काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥३॥ आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥ महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥४॥ साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ परस निपरसु भइे साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥५॥ साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥६॥ सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥ अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥७॥ मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥ नानक मेलि मिलाइे गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥८॥२॥ कलिआनु महला ४ ॥ रामा रम रामो रामु रवीजै ॥ साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ कृपा कृपा करि साधु मिलावहु जगु थंमन कउ थंमु दीजै ॥१॥ बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि चरन तल दीजै ॥२॥ गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति भरीजै ॥ मैनदंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि रसु पीजै ॥३॥ राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख मिलीजै ॥ गुन राम नाम बिसथीरन कीइे हरि सगल भवन जसु दीजै ॥४॥ साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु देखे रहि न सकीजै ॥ जिउ जल मीन जलं जल प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि

मरीजै ॥५॥ महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ तिना तिसना जलत जलत नही बूझहि डंडु धरम राइ का दीजै ॥६॥ सभि तीरथ बरत जग्य पुन्न कीइे हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ अतुला तोलु राम नामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥७॥ तव गुन ब्रहम ब्रहम तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ तू जल निधि मीन हम तेरे करि किरपा संगि रखीजै ॥८॥३॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा रम रामो पूज करीजै ॥ मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति गिआनु दृड़ीजै ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहम नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ आतम देउ देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥१॥ बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ गुर परसादि पदारथु पाइिआ सतिगुर कउ इिहु मनु दीजै ॥२॥ निरमोलकु अति हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥३॥ संगति संत संगि लगि ऊचे जिउ पीप पलास खाइि लीजै ॥ सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥४॥ निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ धरमु फुलु फलु गुरि गिआनु दृड़ाइिआ बहकार बासु जगि दीजै ॥५॥ इेक जोति इेको मनि वसिआ सभ ब्रहम दृसटि इिकु कीजै ॥ आतम रामु सभ इेकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥६॥ नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि नाक वढीजै ॥ साकत नर अह्मकारी कहीअहि बिनु नावै ध्रिगु जीवीजै ॥७॥ जब लगु सासु सासु मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥ नानक कृपा कृपा करि धारहु मै साधू चरन पखीजै ॥८॥४॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥ किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर किरपा कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन कउ दानु दीजै ॥ त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आइे मो कउ गुरमति नामु दृड़ीजै ॥१॥ काम करोधु नगर महि सबला नित उठि उठि जूझु करीजै ॥ अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥२॥ अंतरि अगनि सबल

अति बिखिआ हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ तनि मनि साँति होइ अधिकाई रोगु काटै सूखि सवीजै ॥३॥ जिउ सूरजु किरणि रविआ सरब ठाई सभ घटि घटि रामु रवीजै ॥ साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥४॥ जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ चकवी देखि सूरीजै ॥ निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अंमृतु पीजै ॥५॥ साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥६॥ साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ॥ परउपकार बोलहि बहु गुणीआ मुखि संत भगत हरि दीजै ॥७॥ तू अगम दइआल दइआ पति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ सरब जीअ जगजीवनु इको नानक प्रतिपाल करीजै ॥८॥५॥ कलिआनु महला ४ ॥ रामा हम दासन दास करीजै ॥ जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ संकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥१॥ तजि लाज अहंकारु सभु तजीऐ मिलि साधू संगि रहीजै ॥ धरम राइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥२॥ भरमि सूके बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै ॥ ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥३॥ राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥४॥ संतहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु ताँ सतिगुर सरनि पवीजै ॥५॥ जे वड भागु होइ अति नीका ताँ गुरमति नामु दृड़ीजै ॥ सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीऐ सहजे हरि रसु पीजै ॥६॥ माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीजै ॥ अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै ॥७॥ नानक राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु दृड़ाइ राम नामै रलै मिलीजै ॥८॥६॥ छका १ ॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु परभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥

नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ नाइ तेरै नाउ मन्ने सभ कोइ ॥ विणु नावै पति कबहु न होइ ॥१॥ अवर सिआणप सगली पाजु ॥ जै बखसे तै पूरा काजु ॥१॥ रहाउ ॥ नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ नाइ तेरै माणु महत परवाणु ॥ तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥२॥ नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ नाउ तेरा अंमृतु बिखु उठि जाइ ॥ नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ बिनु नावै बाधी जम पुरि जाइ ॥३॥ नारी बेरी घर दर देस ॥ मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ जाँ सदे ताँ ढिल न पाइ ॥ नानक कूड़ु कूड़ो होइ जाइ ॥४॥१॥ प्रभाती महला १ ॥ तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥१॥ इहु संसारु सगल बिकारु ॥ तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ पाताल पुरीआ इेक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ तेरे लाल कीमति

ता पवै जाँ सिरै होवहि होरि ॥२॥ दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि दूख ॥ जितु मुखि तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥३॥ नानक मूरखु इेकु तू अवरु भला सैसारु ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥४॥२॥ प्रभाती महला १ ॥ जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे संकरि छोडी माइिआ ॥ जै कारणि सिध भइे उदासी देवी मरमु न पाइिआ ॥१॥ बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीअै तरीअै साचा होई ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि बिंब पवणै की बाणी तीनि नाम के दासा ॥ ते तसकर जो नामु न लेवहि वासहि कोट पंचासा ॥२॥ जे को इेक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥ इेते गुण इेतीआ चंगिआईआ देइि न पछोतावै ॥३॥ तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ जे को जीउ कहै एना कउ जम की तलब न होई ॥४॥३॥ प्रभाती महला १ ॥ जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ सतिगुरि मिले निरंजनु पाइिआ तेरै नामि है निवासा ॥१॥ अउधू सहजे ततु बीचारि ॥ जा ते फिरि न आवहु सैसारि ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै करमु नाही धरमु नाही नाही सुचि माला ॥ सिव जोति कन्नहु बुधि पाई सतिगुरू रखवाला ॥२॥ जा कै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥ गति अवगति की चिंत नाही सतिगुरू फुरमाई ॥३॥ जा कै आस नाही निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ तंत कउ परम तंतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥४॥४॥ प्रभाती महला १ ॥ ता का कहिआ दरि परवाणु ॥ बिखु अंमृतु दुइि सम करि जाणु ॥१॥ किआ कहीअै सरबे रहिआ समाइि ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइि ॥१॥ रहाउ ॥ प्रगटी जोति चूका अभिमानु ॥ सतिगुरि दीआ अंमृत नामु ॥२॥ कलि महि आइिआ सो जनु जाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥३॥ कहणा सुनणा अकथ घरि जाइि ॥ कथनी बदनी नानक जलि जाइि ॥४॥५॥ प्रभाती महला १ ॥ अंमृतु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ संगि गहे ॥ गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सो खोजि लहै ॥१॥ गुर समानि तीरथु नही कोइि ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइि

॥१॥ रहाउ ॥ गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥२॥ रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥ जा की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥३॥ गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥ गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥४॥६॥ प्रभाती महला १ ॥ गुर परसादी विदिआ वीचारै पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अंमृतु नामु ॥१॥ करता तू मेरा जजमानु ॥ इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥१॥ रहाउ ॥ पंच तसकर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ दिसटि बिकारी दुरमति भागी ऐसा ब्रहम गिआनु ॥२॥ जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ दूधु करमु संतोखु घीउ करि ऐसा माँगउ दानु ॥३॥ खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीऐ ॥ सिफति सरम का कपड़ा माँगउ हरि गुण नानक रवतु रहै ॥४॥७॥ प्रभाती महला १ ॥ आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ जिस ते होआ सोई परु जाणै जाँ उस ही माहि समाइ ॥१॥ तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥ तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥२॥ सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ मनि वीचारि देखु ब्रहम गिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥३॥ जिस की आसा तिस ही सउपि कै इहु रहिआ निरबाणु ॥ जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥४॥८॥ प्रभाती महला १ ॥ दिसटि बिकारी बंधनि बाँधै हउ तिस कै बलि जाई ॥ पाप पुन्न की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥१॥ बोलहु सचु नामु करतार ॥ फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥१॥ रहाउ ॥ ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ जिनी जाणु सुजाणिआ जगि ते पूरे परवाणु ॥२॥ ता कउ समझावण जाईऐ जे को भूला होई ॥

आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥३॥ नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥
प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥४॥९॥ प्रभाती महला १ ॥ मनु माइआ
मनु धाइआ मनु पंखी आकासि ॥ तसकर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ जा तू राखहि
राखि लैहि साबतु होवै रासि ॥१॥ ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ गुरमति देहि लगउ पगि तेरै
॥१॥ रहाउ ॥ मनु जोगी मनु भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ मनु दाता मनु मंगता मन सिरि गुरु
करतारु ॥ पंच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रहमु वीचारु ॥२॥ घटि घटि इेकु वखाणीऐ कहउ न
देखिआ जाइ ॥ खोटो पूठो रालीऐ बिनु नावै पति जाइ ॥ जा तू मेलहि ता मिलि रहाँ जाँ तेरी होइ
रजाइ ॥३॥ जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥४॥१०॥ प्रभाती महला १ ॥ जागतु बिगसै मूठो
अंधा ॥ गलि फाही सिरि मारे धंधा ॥ आसा आवै मनसा जाइ ॥ उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥१॥
जागसि जीवण जागणहारा ॥ सुख सागर अंमृत भंडारा ॥१॥ रहाउ ॥ कहिए न बूझै अंधु न सूझै
भोंडी कार कमाई ॥ आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई ॥२॥ दिनु दिनु आवै तिलु
तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ बिनु गुर बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी राई ॥३॥ अहिनिसि
जीआ देखि समालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ करमहीणु सचु भीखिआ माँगै नानक मिलै वडाई
॥४॥११॥ प्रभाती महला १ ॥ मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥
भूल चूक तेरै दरबारि ॥ नाम बिना कैसे आचार ॥१॥ ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ निंदकु निंदै मुझै
पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ जिसु निंदहि सोई बिधि जाणै ॥ गुर कै सबदे दरि नीसाणै ॥ कारण नामु
अंतरगति जाणै ॥ जिस नो नदरि करे सोई बिधि जाणै ॥२॥ मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ ऊतमु
आखि न ऊचा होइ ॥ मनमुखु खूलि महा बिखु खाइ ॥ गुरमुखि होइ सु राचै नाइ ॥३॥ अंधौ बोलौ

मुगधु गवारु ॥ हीणौ नीचु बुरौ बुरिआरु ॥ नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ इहु धनु सारु होरु बिखिआ छारु ॥४॥ उसतति निंदा सबदु वीचारु ॥ जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ तू बखसहि जाति पति होइ ॥ नानकु कहै कहावै सोइ ॥५॥१२॥ प्रभाती महला १ ॥ खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ बकि बकि वादु चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥१॥ बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥१॥ रहाउ ॥ बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥२॥ जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥३॥ जगु खोटौ सचु निरमलौ गुर सबदीं वीचारि ॥ ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥४॥ अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनन्द सरूप ॥ नानकु जल कौ मीनु सै थे भावै राखहु प्रीति ॥५॥१३॥ प्रभाती महला १ ॥ गीत नाद हरख चतुराई ॥ रहस रंग फुरमाइसि काई ॥ पैन्णु खाणा चीति न पाई ॥ साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥१॥ किआ जानाँ किआ करै करावै ॥ नाम बिना तनि किछु न सुखावै ॥१॥ रहाउ ॥ जोग बिनोद स्वाद आन्नदा ॥ मति सत भाइ भगति गोबिंदा ॥ कीरति करम कार निज संदा ॥ अंतरि रवतौ राज रविंदा ॥२॥ पृउ पृउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ दीना नाथु पीउ बनवारी ॥ अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ तृपति तरंग ततु बीचारी ॥३॥ अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ भगति करी कराइहि मोर ॥ अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ किसु सेवी दूजा नही होरु ॥४॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ ऐसा अंमृतु अंतरि डीठा ॥ जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ नानक ध्रापिए तनि सुखु होइ ॥५॥१४॥ प्रभाती महला १ ॥ अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ अवरु न राँगनहारा ॥ अहिनिसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥१॥ मेरा प्रभु राँगि घणौ अति रूड़ौ ॥ दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगूड़ौ ॥१॥ रहाउ ॥ ऊपरि कूपु गगन पनिहारी अंमृतु पीवणहारा ॥ जिस की

रचना सो बिधि जाणै गुरमुखि गिआनु वीचारा ॥२॥ पसरी किरणि रसि कमल बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ ॥ कालु बिधुंसि मनसा मनि मारी गुर प्रसादि प्रभु पाइआ ॥३॥ अति रसि रंगि चलूलै राती दूजा रंगु न कोई ॥ नानक रसनि रसाइे राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥४॥१५॥ प्रभाती महला १ ॥ बारह महि रावल खपि जावहि चहु छिअ महि संनिआसी ॥ जोगी कापड़ीआ सिरखूथे बिनु सबदै गलि फासी ॥१॥ सबदि रते पूरे बैरागी ॥ अउहठि हसत महि भीखिआ जाची इेक भाइि लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमण वादु पड़हि करि किरिआ करणी करम कराइे ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुड़ि दुखु पाइे ॥२॥ सबदि मिले से सूचाचारी साची दरगह माने ॥ अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥३॥ सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ॥ नानक सतिगुर मिलै मिलाइिआ दूख पराछत काल नसे ॥४॥१६॥ प्रभाती महला १ ॥ संता की रेणु साध जन संगति हरि कीरति तरु तारी ॥ कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखि रिदै मुरारी ॥१॥ जलि जाउ जीवनु नाम बिना ॥ हरि जपि जापु जपउ जपमाली गुरमुखि आवै सादु मना ॥१॥ रहाउ ॥ गुर उपदेस साचु सुखु जा कउ किआ तिसु उपमा कहीऔ ॥ लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखि लहीऔ ॥२॥ चीनै गिआनु धिआनु धनु साचौ इेक सबदि लिव लावै ॥ निरालम्बु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताड़ी लावै ॥३॥ साइिर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥ बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहजि समावै ॥४॥ सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥ नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥५॥१७॥

रागु प्रभाती महला ३ चउपदे ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ नामि रते सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई

॥१॥ हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥ गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥ सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥२॥ सुखु सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥ अखुट भंडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥३॥ आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥४॥१॥ प्रभाती महला ३ ॥ निरगुणीआरे कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ॥ तू बिअंतु तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥१॥ हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥ तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहाँ सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरि नामो देहि वडिआई ॥ पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥२॥ तेरै भाणै भगति जे तुधु भावै आपे बखसि मिलाई ॥ तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि तृसना अगनि बुझाई ॥३॥ जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ॥ नानक नावै जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥४॥२॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि सालाहिआ जिन्ना तिन सलाहि हरि जाता ॥ विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥१॥ हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ तुधु जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अंमृतु सारु ॥ सदा मीठा कदे न फीका गुर सबदी वीचारु ॥२॥ जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिसु विटहु बलि जाई ॥ सबदि सलाही सदा सुखदाता विचहु आपु गवाई ॥३॥ सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो इछै सो फलु पाइे ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर सबदी सचु पाइे ॥४॥३॥ प्रभाती महला ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन तू राखन जोगु ॥ तुधु जेवडु मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु ॥१॥ हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु मेरे सुआमी इेह तेरी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन की

करहि प्रतिपाल ॥ आपि कृपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥२॥ तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना एह घटै न जाइ ॥ जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै एहु जंमै तै मरि जाइ ॥३॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि ॥४॥४॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ॥ गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥१॥ मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मूलु पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ सभना महि इेको सचु वरतै विरला बूझै कोई ॥२॥ गुरमती मनु निरमलु होआ अंमृतु ततु वखानै ॥ हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही मनु मानै ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जितु आतम रामु पछानै ॥३॥ मानस जनमि सतिगुरू न सेविआ बिरथा जनमु गवाइिआ ॥ नदरि करे ताँ सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइिआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि धिआइिआ ॥४॥५॥ प्रभाती महला ३ ॥ आपे भाँति बणाइे बहु रंगी सिसटि उपाइि प्रभि खेलु कीआ ॥ करि करि वेखै करे कराइे सरब जीआ नो रिजकु दीआ ॥१॥ कली काल महि रविआ रामु ॥ घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु इेको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइिआ ॥२॥ इंद्री पंच पंचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि हरि गुण गावै ॥३॥ गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउ संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥४॥ इेको सबदु इेको प्रभु वरतै सभ इेकसु ते उतपति चलै ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाइे गुरमुखि हरि हरि जाइि रलै ॥५॥६॥ प्रभाती महला ३ ॥ मेरे मन गुरु अपणा

सालाहि ॥ पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु भोजनु हरि देइ ॥ कोटि मधे कोई विरला लेइ ॥ जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥१॥ गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ दुखु अन्हेरा अंदरहु जाइ ॥ आपे साचा लए मिलाइ ॥२॥ गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ ऐथै ओथै इहु अधारु ॥ आपे देवै सिरजनहारु ॥३॥ सचा मनाए अपणा भाणा ॥ सोई भगतु सुघड़ु सोजाणा ॥ नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥४॥७॥१७॥७॥२४॥

प्रभाती महला ४ बिभास ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ अंमृतु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान ॥१॥ हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ हरि ऊतमु रिद अंतरि भाइओ गुरि मंतु दीओ हरि कान ॥१॥ रहाउ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मो कउ करहु उपदेसु हरि दान ॥२॥ सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान ॥ वडै भागि सतसंगति पाई गुरु सतिगुरु परसि भगवान ॥३॥ गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥४॥१॥ प्रभाती महला ४ ॥ उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि सम्हालहि हरि गाल ॥ हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥१॥ मेरा मनु साधू धूरि रवाल ॥ हरि हरि नामु दृड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥१॥ रहाउ ॥ साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥ खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥२॥ सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल ॥ हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥३॥ हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर करि किरपा प्रतिपाल ॥ बिखु भउजल डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥४॥२॥ प्रभाती महला ४ ॥ इकु

खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाइे रसक रसीक ॥ गावत सुनत दोऊ भइे मुकते जिना गुरमुखि खिनु हरि पीक ॥१॥ मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइिआ हरि हरि नामु पीआ रसु झीक ॥१॥ रहाउ ॥ जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ हरि जन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा ससि कीक ॥२॥ जिन हरि हिरदै नामु न वसिए तिन सभि कारज फीक ॥ जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक ॥३॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइि सभ वरतै सभ महि ईक ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी गुर बचन धिआइिए घरी मीक ॥४॥३॥ प्रभाती महला ४ ॥ अगम दइिआल कृपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु हम कहे ॥ पतित पावन हरि नामु धिआइिए सभि किलबिख पाप लहे ॥१॥ जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ दीन दइिआलु दुख भंजनु गाइिए गुरमति नामु पदारथु लहे ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ नगरि नगरि हरि बसिए मति गुरमति हरि हरि सहे ॥ सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिए घरि मंदरि हरि प्रभु लहे ॥२॥ जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड़ मुहे ॥ जिउ मृग नाभि बसै बासु बसना भ्रमि भ्रमिए झार गहे ॥३॥ तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिए हरि राम नामि रवि रहे ॥४॥४॥ प्रभाती महला ४ ॥ मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिए हरि प्रभु वडफा ॥ सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ कृपफा ॥१॥ मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ हरि हरि दानु दीए गुरि पूरै हरि नामा मनि तनि बसफा ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ नगरि वसिए घरि मंदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ हलति पलति जन भइे सुहेले मुख ऊजल गुरमुखि तरफा ॥२॥ अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उर धारिए गुरि निमखफा ॥ कोटि कोटि के दोख सभ जन के हरि दूरि कीइे इिक पलफा ॥३॥ तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिए जन ते मुखफा ॥ हरि हरि आपु धरिए हरि जन

महि जन नानकु हरि प्रभु इकफा ॥४॥५॥ प्रभाती महला ४ ॥ गुर सतिगुरि नामु दृड़ाइए हरि हरि हम मुइे जीवे हरि जपिभा ॥ धनु धन्नु गुरू गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइि कढिभा ॥१॥ जपि मन राम नामु अरधाँभा ॥ उपजंपि उपाइि न पाईअै कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभा ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु रसु राम रसाइिणु रसु पीआ गुरमति रसभा ॥ लोह मनूर कंचनु मिलि संगति हरि उर धारिए गुरि हरिभा ॥२॥ हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिभा ॥ तिन पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूंभर भरभा ॥३॥ तुमरे गुन तुम ही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनभा ॥ जिउ जानहु तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनभा ॥४॥६॥ छका १ ॥

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन हरि हरि नामु निधान ॥ हरि दरगह पावहि मान ॥ जिनि जपिआ ते पारि परान ॥१॥ रहाउ ॥ सुनि मन हरि हरि नामु करि धिआनु ॥ सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥१॥ जपि मन परमेसुरु परधानु ॥ खिन खोवै पाप कोटान ॥ मिलु नानक हरि भगवान ॥२॥१॥७॥

प्रभाती महला ५ बिभास ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ पंच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ सिहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ॥१॥ मन सतिगुरु सेवि होइि परम गते ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा ताँ तू पावहि प्रानपते ॥१॥ रहाउ ॥ कापड़ भोग रस अनिक भुंचाइे ॥ मात पिता कुटंब सगल बनाइे ॥ रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ सो हरि सेवहु नीता नीत ॥२॥ तहा सखाई जह कोइि न होवै ॥ कोटि अप्राध इिक खिन महि धोवै ॥ दाति करै नही पछुोतावै ॥ इेका बखस फिरि

बहुरि न बुलावै ॥३॥ किरत संजोगी पाइिआ भालि ॥ साधसंगति महि बसे गुपाल ॥ गुर मिलि आइे तुमरै दुआर ॥ जन नानक दरसनु देहु मुरारि ॥४॥१॥ प्रभाती महला ५ ॥ प्रभ की सेवा जन की सोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥ नामु तेरा जन कै भंडारि ॥ गुन गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥१॥ तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥ काटि जेवरी जन लीइे छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो जनु राता प्रभ कै रंगि ॥ तिनि सुखु पाइिआ प्रभ कै संगि ॥ जिसु रसु आइिआ सोई जानै ॥ पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥२॥ सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइि ॥ जा कै हृदै वसिआ प्रभु सोइि ॥ सोई निहचलु आवै न जाइि ॥ अनदिनु प्रभ के हरि गुण गाइि ॥३॥ ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ जा कै मनि पूरनु निरंकारु ॥ करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ नानकु उधरै जन की सेवा ॥४॥२॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुन गावत मनि होइि अनन्द ॥ आठ पहर सिमरउ भगवंत ॥ जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ तिसु गुर की हम चरनी पाहि ॥१॥ सुमति देवहु संत पिआरे ॥ सिमरउ नामु मोहि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा ॥ सगल तिआगि नामि हरि गीधा ॥ तिसु गुर कै सदा बलि जाईऐ ॥ हरि सिमरनु जिसु गुर ते पाईऐ ॥२॥ बूडत प्रानी जिनि गुरहि तराइिआ ॥ जिसु प्रसादि मोहै नही माइिआ ॥ हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ तिसु गुर ऊपरि सदा हउ वारिआ ॥३॥ महा मुगध ते कीआ गिआनी ॥ गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ पारब्रहम नानक गुरदेव ॥ वडै भागि पाईऐ हरि सेव ॥४॥३॥ प्रभाती महला ५ ॥ सगले दूख मिटे सुख दीइे अपना नामु जपाइिआ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइे सगला दुरतु मिटाइिआ ॥१॥ हम बारिक सरनि प्रभ दइिआल ॥ अवगण काटि कीइे प्रभि अपुने राखि लीइे मेरै गुर गोपालि ॥१॥ रहाउ ॥ ताप पाप बिनसे खिन भीतरि भइे कृपाल गुसाई ॥ सासि सासि पारब्रहमु अराधी अपुने सतिगुर कै बलि जाई ॥२॥ अगम अगोचरु बिअंतु सुआमी ता का अंतु न पाईऐ ॥ लाहा खाटि होईऐ

धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ ॥३॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रहमु गुरु पाइआ ॥४॥४॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि नासे ॥ सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ प्रभ की दरगह सोभावंते ॥ सेवक सेवि सदा सोह्मते ॥१॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अंधेरा मन ते जाई ॥१॥ रहाउ ॥ जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ कोटि जनम के गइे कलेस ॥ जो तिसु भावै सो भल होस ॥२॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलि जाई ॥ जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥ जिसु मिलते राम लिव लागी ॥३॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ आठ पहर अपुनी लिव लाइि ॥ जनु नानकु प्रभ की सरनाइि ॥४॥५॥ प्रभाती महला ५ ॥ करि किरपा अपुने प्रभि कीइे ॥ हरि का नामु जपन कउ दीइे ॥ आठ पहर गुन गाइि गुबिंद ॥ भै बिनसे उतरी सभ चिंद ॥१॥ उबरे सतिगुर चरनी लागि ॥ जो गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥१॥ रहाउ ॥ मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ कलि कलेस किछु बिघनु न होई ॥ सदा सदा प्रभु जीअ कै संगि ॥ उतरी मैलु नाम कै रंगि ॥२॥ चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥ बिनसे काम क्रोध अह्मकार ॥ प्रभ मिलन का मारगु जानाँ ॥ भाइि भगति हरि सिउ मनु मानाँ ॥३॥ सुणि सजण संत मीत सुहेले ॥ नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥६॥ प्रभाती महला ५ ॥ से धनवंत सेई सचु साहा ॥ हरि की दरगह नामु विसाहा ॥१॥ हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीति ॥१॥ रहाउ ॥ पाइिआ लाभु वजी वाधाई ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाई ॥२॥ सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ गुर परसादी हरि रंगु माणु ॥३॥ बिनसे काम क्रोध अह्मकार ॥ नानक गुरमुखि उतरहि पारि ॥४॥७॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥

गुर का सबदु सदा सद अटला ॥ गुर की बाणी जिसु मनि वसै ॥ दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥१॥ हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ मुकतो साधू धूरी नावै ॥१॥ रहाउ ॥ गुर परसादी उतरे पारि ॥ भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ निरभै साध परे हरि सरना ॥२॥ अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥३॥ संत साजन सिख भइे सुहेले ॥ गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥४॥८॥ प्रभाती महला ५ ॥ सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ अनद मंगल कलिआण सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥१॥ नित उठि गावहु प्रभ की बाणी ॥ आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥२॥ घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ संगि सहाई जह हउ जाई ॥३॥ दुइि कर जोड़ि करी अरदासि ॥ सदा जपे नानकु गुणतासु ॥४॥६॥ प्रभाती महला ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु सुघड़ सुजाणु ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥१॥ रहाउ ॥ किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ नामु अराधन होआ जोगु ॥ साधसंगि होआ परगासु ॥ चरन कमल मन माहि निवासु ॥१॥ जिनि कीआ तिनि लीआ राखि ॥ प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ पूरन करम ता के आचार ॥२॥ गुण गावै नित नित नित नवे ॥ लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ ईहाँ ऊहाँ चरण पूजारे ॥ मुखु ऊजलु साचे दरबारे ॥३॥ जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ॥ कोटि मधे को विरला दासु ॥ जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ नानक उधरसि तिसु जन की धूरि ॥४॥१०॥ प्रभाती महला ५ ॥ कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ जिसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत बाणी सुणत निहाल ॥ बिनसि गइे बिखिआ जंजाल ॥१॥ साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ हरि प्रभु अपुना आइिआ चीति ॥२॥ नामु जपत होआ

परगासु ॥ गुर सबदे कीना रिदै निवासु ॥३॥ गुर समरथ सदा दइिआल ॥ हरि जपि जपि नानक भइे निहाल ॥४॥११॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइिआ ॥ दीन दइिआल भइे किरपाला अपणा नामु आपि जपाइिआ ॥१॥ रहाउ ॥ संतसंगति मिलि भइिआ प्रगास ॥ हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥१॥ सरब कलिआण सूख मनि वूठे ॥ हरि गुण गाइे गुर नानक तूठे ॥२॥१२॥

प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अवरु न दूजा ठाउ ॥ नाही बिनु हरि नाउ ॥ सरब सिधि कलिआन ॥ पूरन होहि सगल काम ॥१॥ हरि को नामु जपीअै नीत ॥ काम क्रोध अहंकारु बिनसै लगै इेकै प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥ सतिगुरु भेटै जमु न तेटै जिसु धुरि होवै संजोगु ॥२॥ रैनि दिनसु धिआइि हरि हरि तजहु मन के भरम ॥ साधसंगति हरि मिलै जिसहि पूरन करम ॥३॥ जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ मात पिता मीत भाई जन नानक हरि हरि जापि ॥४॥१॥१३॥

प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रम राम राम राम जाप ॥ कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइि अहं ताप ॥१॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि संत चरन लागि मनु पवितु जाहि पाप ॥१॥ नानकु बारिकु कछू न जानै राखन कउ प्रभु माई बाप ॥२॥१॥१४॥ प्रभाती महला ५ ॥ चरन कमल सरनि टेक ॥ ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही इेक ॥१॥ रहाउ ॥ प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥१॥ नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभू मेक ॥ संत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक ॥२॥२॥१५॥

प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥ झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥ सतिगुरि राखे नामु दृड़ाइआ ॥१॥ ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ संचि राजे अहंकारी ॥ माइआ साथि न चलै पिआरी ॥ माइआ ममता है बहु रंगी ॥ बिनु नावै को साथि न संगी ॥२॥ जिउ मनु देखहि पर मनु तैसा ॥ जैसी मनसा तैसी दसा ॥ जैसा करमु तैसी लिव लावै ॥ सतिगुरु पूछि सहज घरु पावै ॥३॥ रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥ अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥ सचै नामि रहै लिव लाइ ॥४॥ सचै सबदि सचु कमावै ॥ सची बाणी हरि गुण गावै ॥ निज घरि वासु अमर पदु पावै ॥ ता दरि साचै सोभा पावै ॥५॥ गुर सेवा बिनु भगति न होई ॥ अनेक जतन करै जे कोई ॥ हउमै मेरा सबदे खोई ॥ निरमल नामु वसै मनि सोई ॥६॥ इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥ बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ सबदे नामु रखै उरि धारि ॥ सबदे गति मति मोख दुआरु ॥७॥ अवरु नाही करि देखणहारो ॥ साचा आपि अनूपु अपारो ॥ राम नाम ऊतम गति होई ॥ नानक खोजि लहै जनु कोई ॥८॥१॥ प्रभाती महला १ ॥ माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ सुत कंचन सिउ हेतु वधाइआ ॥ सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥१॥ ऐसा जापु जपउ जपमाली ॥ दुख सुख परहरि भगति निराली ॥१॥ रहाउ ॥ गुण निधान तेरा अंतु न पाइआ ॥ साच सबदि तुझ माहि समाइआ ॥ आवा गउणु तुधु आपि रचाइआ ॥ सेई भगत जिन सचि चितु लाइआ ॥२॥ गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ बिनु सतिगुर भेटे कोइ न जाणी ॥ सगल सरोवर जोति समाणी ॥ आनद रूप विटहु कुरबाणी ॥३॥ भाउ भगति गुरमती पाइ ॥ हउमै विचहु सबदि जलाइ ॥

धावतु राखै ठाकि रहाइे ॥ सचा नामु मंनि वसाइे ॥४॥ बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ गुरमति मानिआ इेक लिव लागी ॥ देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ सो बूझै होवै वडभागी ॥५॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाइे ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लाइे ॥ इेको जाणै अवरु न कोइि ॥ सुखदाता सेवे निरमलु होइि ॥६॥ सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥ जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ जीवन मुकतु जा सबदु सुणाइे ॥ सची रहत सचा सुखु पाइे ॥७॥ सुखदाता दुखु मेटणहारा ॥ अवरु न सूझसि बीजी कारा ॥ तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥८॥२॥ प्रभाती महला १ ॥ निवली करम भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुंभ करै ॥ बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला बूडि मरै ॥ अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥१॥ खटु करम नामु निरंजनु सोई ॥ तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥१॥ रहाउ ॥ माइिआ धंधा धावणी दुरमति कार बिकार ॥ मूरखु आपु गणाइिदा बूझि न सकै कार ॥ मनसा माइिआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ मजनु झूठा चंडाल का फोकट चार सींगार ॥२॥ झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ दुसटी सभा विगुचीऐ बिखु वाती जीवण बादि ॥३॥ इे भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ आवहि जाँहि मरहि मरि जाई ॥४॥ इेहु सरीरु है त्रै गुण धातु ॥ इिस नो विआपै सोग संतापु ॥ सो सेवहु जिसु माई न बापु ॥ विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥५॥ जह जह देखा तह तह सोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ हिरदै सचु इेह करणी सारु ॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥६॥ दुबिधा चूकै ताँ सबदु पछाणु ॥ घरि बाहरि इेको करि जाणु ॥ इेहा मति सबदु है सारु ॥ विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥७॥ करणी कीरति गुरमति सारु ॥ संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ नानक नदरी नदरि पछाणु ॥८॥३॥

प्रभाती महला १ दखणी ॥ गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ ॥ सहस सरीर चिहन भग हूऐ ता मनि पछोताइआ ॥१॥ कोई जाणि न भूलै भाई ॥ सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ तिनि हरी चंदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ अउगणु जाणै त पुन्न करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥२॥ करउ अढाई धरती माँगी बावन रूपि बहानै ॥ किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै ॥३॥ राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पड़्हाइआ ॥ तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥४॥ गणत न गणीं हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ जो किछु वरतै तुधै सलाहीं सभ तेरी वडिआई ॥५॥ गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई ॥६॥ आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ ॥ हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥७॥ भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥ नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥८॥४॥ प्रभाती महला १ ॥ आखणा सुनणा नामु अधारु ॥ धंधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ जिउ मनमुखि दूजै पति खोई ॥ बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥१॥ सुणि मन अंधे मूरख गवार ॥ आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥१॥ रहाउ ॥ इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ धुरि हुकमु लिखिआ ताँ कहीऐ कासु ॥ गुरमुखि विरला चीन्है कोई ॥ नाम बिहूना मुकति न होई ॥२॥ भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी ॥ बिनु गुर बूझे जम की फासी ॥ इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभि पइआलि ॥ गुरमुखि छूटै नामु सम्हालि ॥३॥ आपे सदे ढिल न होइ ॥ सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ आपे करै करावै सोइ ॥४॥ झगड़ु चुकावै हरि गुण गावै ॥ पूरा सतिगुरु सहजि समावै ॥ इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ सचु करणी करि कार कमावै ॥५॥ अंतरि जूठा किउ सुचि होइ ॥ सबदी धोवै विरला कोइ ॥ गुरमुखि कोई सचु कमावै ॥ आवणु जाणा ठाकि रहावै

॥६॥ भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥ हरि जन संगति पावै पारु ॥ सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ गुर का सबदु करणी है सारु ॥७॥ हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ काम क्रोध अगनी महि भूंजा ॥ हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥ प्रणवति नानकु अवरु न दूजा ॥८॥५॥ प्रभाती महला १ ॥ राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥ गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥१॥ इेको रवि रहिआ सभ ठाई ॥ अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥ मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि ॥ जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि ॥२॥ सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥३॥ करम धरम प्रभि मेरै कीइे ॥ नामु वडाई सिरि करमाँ कीइे ॥४॥ सतिगुर कै वसि चारि पदारथ ॥ तीनि समाइे इेक कृतारथ ॥५॥ सतिगुरि दीइे मुकति धिआनाँ ॥ हरि पदु चीन्हि भइे परधाना ॥६॥ मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ प्रभु निवाजे किनि कीमति पाई ॥७॥ कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ नाम बिना गति किनै न पाई ॥८॥६॥ प्रभाती महला १ ॥ इिकि धुरि बखसि लइे गुरि पूरै सची बणत बणाई ॥ हरि रंग राते सदा रंगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥१॥ झूठी दुरमति की चतुराई ॥ बिनसत बार न लागै काई ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ सुख दुख दाता गुरमुखि जाता मेलि लइे सरणाई ॥२॥ मनमुख ते अभ भगति न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ इिहु मनूआ खिनु ऊभि पइिआली जब लगि सबद न जाने ॥३॥ भूख पिआसा जगु भइिआ तिपति नही बिनु सतिगुर पाइे ॥ सहजै सहजु मिलै सुखु पाईअै दरगह पैधा जाइे ॥४॥ दरगह दाना बीना इिकु आपे निरमल गुर की बाणी ॥ आपे सुरता सचु वीचारसि आपे बूझै पदु निरबाणी ॥५॥ जलु तरंग अगनी पवनै फुनि त्रै मिलि जगतु उपाइिआ ॥ अैसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी ठाकि रहाइिआ ॥६॥ अैसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइिआ ॥ जाति वरन ते भइे अतीता ममता लोभु चुकाइिआ ॥७॥ नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइिआ ॥ नानकु तिन के चरन पखालै

जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥८॥७॥

प्रभाती महला ३ बिभास ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि ॥१॥ मन मेरे सबदि रपै रंगु होइ ॥ सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि मंदरु इहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥२॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ धुरि लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥४॥ हरि मंदरु इहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥५॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै देह जाति न जाइ ॥ साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥६॥ हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ गुर परसादी चीन्हिआ हरि राखिआ उरि धारि ॥७॥ गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥ पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥८॥ हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ तिसु विचि सउदा इकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥९॥ हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥१०॥ हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥११॥१॥ प्रभाती महला ३ ॥ भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर काढहि मारि ॥१॥ मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई करम कमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ हरि नामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ ॥२॥ गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥ ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि

॥३॥ हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ मनमुख दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥४॥ ध्रिगु खाणा ध्रिगु पैन्णा जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जंमहि होहि खुआरु ॥५॥ जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलि जाउ ॥ तिन की संगति मिलि रहाँ सचे सचि समाउ ॥६॥ पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ॥ सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै सबदि जलाइ ॥७॥ हरि सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सु होगु ॥८॥२॥७॥२॥९॥

बिभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ चूगहि चोग अनन्द सिउ जुगता ॥ उरझि परिए मन मीठ मोहारा ॥ गुन गाहक मेरे प्रान अधारा ॥१॥ इेकु हमारा अंतरजामी ॥ धर इेका मै टिक इेकसु की सिरि साहा वड पुरखु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ छल नागनि सिउ मेरी टूटनि होई ॥ गुरि कहिआ इिह झूठी धोही ॥ मुखि मीठी खाई कउराइ ॥ अंमृत नामि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ लोभ मोह सिउ गई विखोटि ॥ गुरि कृपालि मोहि कीनी छोटि ॥ इिह ठगवारी बहुतु घर गाले ॥ हम गुरि राखि लीइे किरपाले ॥३॥ काम क्रोध सिउ ठाटु न बनिआ ॥ गुर उपदेसु मोहि कानी सुनिआ ॥ जह देखउ तह महा चंडाल ॥ राखि लीइे अपुनै गुरि गोपाल ॥४॥ दस नारी मै करी दुहागनि ॥ गुरि कहिआ इेह रसहि बिखागनि ॥ इिन सनबंधी रसातलि जाइ ॥ हम गुरि राखे हरि लिव लाइ ॥५॥ अह्मेव सिउ मसलति छोडी ॥ गुरि कहिआ इिहु मूरखु होडी ॥ इिहु नीघरु घरु कही न पाइे ॥ हम गुरि राखि लीइे लिव लाइे ॥६॥ इिन लोगन सिउ हम भइे बैराई ॥ इेक गृह महि दुइि न खटाँई ॥ आइे प्रभ पहि अंचरि लागि ॥ करहु तपावसु प्रभ सरबागि ॥७॥ प्रभ हसि बोले कीइे निआँइें ॥ सगल दूत मेरी सेवा लाइे ॥ तूं ठाकुरु इिहु गृहु सभु तेरा ॥ कहु नानक गुरि कीआ निबेरा ॥८॥१॥ प्रभाती महला ५ ॥

मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥ पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥ अंतर की मलु कब ही न जाए ॥१॥ इतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ ॥ भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ पाप करहि पंचाँ के बसि रे ॥ तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥ बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥ जम पुरि बाँधि खरे कालम्क ॥२॥ घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ वरमी मारी सापु न मूआ ॥ प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥३॥ पूंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ अपदा का मारिआ गृह ते नसता ॥ देसु छोडि परदेसहि धाइआ ॥ पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥४॥ कान फराइ हिराए टूका ॥ घरि घरि माँगै तृपतावन ते चूका ॥ बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥ वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥५॥ बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥ अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥ अन्न ते रहता दुखु देही सहता ॥ हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥६॥ बिनु सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥ पूछहु सगल बेद सिंमृते ॥ मनमुख करम करै अजाई ॥ जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥७॥ जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥ गुर का बचनु तिनि बाधिए पाला ॥ कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥ नानकु तिन कै संगि तराइआ ॥८॥ जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ आपि तरै सभु कुटंबु तराईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि काटे ॥ धरम राइ के कागर फाटे ॥ साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ ॥ पारब्रहमु रिद माहि समाइआ ॥१॥ राम रमत हरि हरि सुखु पाइआ ॥ तेरे दास चरन सरनाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ चूका गउणु मिटिआ अंधिआरु ॥ गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ हरि प्रेम भगति मनु तनु सद राता ॥ प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥२॥ घटि घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ बैर बिरोध छेदे भै भरमाँ ॥ प्रभि पुंनि आतमै कीने धरमा ॥३॥ महा तरंग ते काँढै लागा ॥ जनम जनम का टूटा गाँढा ॥ जपु तपु संजमु नामु सम्मालिआ ॥ अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥४॥ मंगल सूख

कलिआण तिथाईं ॥ जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ प्रभ सुप्रसन्न भइे गोपाल ॥ जनम जनम के मिटे बिताल ॥५॥ होम जग उरध तप पूजा ॥ कोटि तीरथ इिसनानु करीजा ॥ चरन कमल निमख रिदै धारे ॥ गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥६॥ ऊचे ते ऊचा प्रभ थानु ॥ हरि जन लावहि सहजि धिआनु ॥ दास दासन की बाँछउ धूरि ॥ सरब कला प्रीतम भरपूरि ॥७॥ मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ मीत साजन भरवासा तेरा ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ जपि जीवै नानकु गुणतास ॥८॥३॥२॥७॥१२॥

बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मरन जीवन की संका नासी ॥ आपन रंगि सहज परगासी ॥१॥ प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ राम रतनु पाइिआ करत बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ जह अन्नदु दुखु दूरि पइिआना ॥ मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥२॥ जो किछु होआ सु तेरा भाणा ॥ जो इिव बूझै सु सहजि समाणा ॥३॥ कहतु कबीरु किलबिख गइे खीणा ॥ मनु भइिआ जगजीवन लीणा ॥४॥१॥ प्रभाती ॥ अलहु इेकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥ ह्रिदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥१॥ अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि मिहरामति साई ॥१॥ रहाउ ॥ दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥ दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु इेही ठउर मुकामा ॥२॥ ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ गिआरह मास पास कै राखे इेकै माहि निधाना ॥३॥ कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरु नाँइें ॥ दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जाँइें ॥४॥ इेते अउरत मरदा साजे इे सभ रूप तुम्हारे ॥ कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥५॥ कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु इेक की सरना ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥६॥२॥ प्रभाती ॥ अवलि अलह नूरु उपाइिआ कुदरति के सभ बंदे ॥ इेक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे

॥१॥ लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिए स्रब ठाँई ॥१॥ रहाउ ॥ माटी इेक अनेक भाँति करि साजी साजनहारै ॥ ना कछु पोच माटी के भाँडे ना कछु पोच कुंभारै ॥२॥ सभ महि सचा इेको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ हुकमु पछानै सु इेको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥३॥ अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥ कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥४॥३॥ प्रभाती ॥ बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥ जउ सभ महि इेकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥१॥ मुलाँ कहहु निआउ खुदाई ॥ तेरे मन का भरमु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥ जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥२॥ किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ ॥३॥ तूं नापाकु पाकु नही सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥४॥४॥ प्रभाती ॥ सुन्न संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥ सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥१॥ लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥१॥ रहाउ ॥ ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥२॥ पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥ कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥३॥५॥

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की   ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥ अंतरजामी रामु रवाँई मै डरु कैसे चहीऐ ॥१॥ बेधीअले गोपाल गोसाई ॥ मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥२॥ गुर कै सबदि इेहु मनु राता

दुबिधा सहजि समाणी ॥ सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥३॥ जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥ नामा कहै जगजीवनु पाइिआ हिरदै अलख बिडाणी ॥४॥१॥ प्रभाती ॥ आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥ सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥१॥ गोबिदु गाजै सबदु बाजै ॥ आनद रूपी मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥ सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइिला ॥२॥ तुम् चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइिला ॥ तू दइिआलु रतनु लालु नामा साचि समाइिला ॥३॥२॥ प्रभाती ॥ अकुल पुरख इकु चलितु उपाइिआ ॥ घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइिआ ॥१॥ जीअ की जोति न जानै कोई ॥ तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ प्रगासिआ माटी कुंभेउ ॥ आप ही करता बीठुलु देउ ॥२॥ जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ जो किछु कीआ सु आपै आपै ॥३॥ प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ अमरु होइि सद आकुल रहै ॥४॥३॥

प्रभाती भगत बेणी जी की ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ रिद अंतरि कर तल काती ॥ ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥१॥ कलि भगवत बंद चिराँमं ॥ क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥१॥ रहाउ ॥ नितप्रति इसनानु सरीरं ॥ दुइि धोती करम मुखि खीरं ॥ रिदै छुरी संधिआनी ॥ पर दरबु हिरन की बानी ॥२॥ सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥ निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥ पग नाचसि चितु अकरमं ॥ इे लम्पट नाच अधरमं ॥३॥ मृग आसणु तुलसी माला ॥ कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥ रे लम्पट कृसनु अभाखं ॥४॥ जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥ कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥५॥१॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु जैजावंती महला ९ ॥

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥ माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥ जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥ बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥ नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥ छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥१॥ जैजावंती महला ९ ॥ रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥ कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥ बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥ रहाउ ॥ सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥ अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥१॥ बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥ नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥ जैजावंती महला ९ ॥ रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥ बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ ॥ मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥ दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥१॥ नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥ सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥२॥३॥ जैजावंती महला ९ ॥ बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥ निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ कालु तउ पहूचिओ

आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाउ ॥ असथिरु जो मानिए देह सो तउ तेरउ होइि है खेह ॥ किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥ राम भगति हीइे आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ नानक जन इिह बखानि जग महि बिराजु रे ॥२॥४॥

ੴ सिति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
सलोक सहसकृती महला १ ॥

पड़ि पुस्तक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलक लिलाटं ॥ दुइि धोती बसत्र कपाटं ॥ जो जानसि ब्रहमं करमं ॥ सभ फोकट निसचै करमं ॥ कहु नानक निसचौ ध्यिावै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥१॥ निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारस्य गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥ ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा कृतह ॥ सरब सबदं त इेक सबदं जे को जानसि भेउ ॥ नानक ता को दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥ इेक कृस्नं त सरब देवा देव देवा त आतमह ॥ आतमं स्री बास्वदेवस्य जे कोई जानसि भेव ॥ नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥४॥

सलोक सहसकृती महला ५

ੴ सिति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

कतंच माता कतंच पिता कतंच बनिता बिनोद सुतह ॥ कतंच भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुटंब्यते ॥ कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं करोति ॥ रहंत संग भगवान सिमरण नानक लबध्यं

अचुत तनह ॥१॥ ध्रिगंत मात पिता सनेह्य ध्रिग सनेह्य भ्रात बाँधवह ॥ ध्रिग स्नेह्य बनिता बिलास सुतह ॥ ध्रिग स्नेह्य गृहारथ कह ॥ साधसंग स्नेह सत्यिं सुखयं बसंति नानकह ॥२॥ मिथ्यंत देह्य खीणंत बलनं ॥ बरधंति जरूआ हित्यंत माइिआ ॥ अत्यंत आसा आथित्य भवनं ॥ गन्नत स्वासा भैयान धरमं ॥ पतंति मोह कूप दुरलभ्य देह्य तत आस्रयं नानक ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद गोपाल कृपा ॥३॥ काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रकत चरमणह ॥ नवंत दुआरं भीत रहितं बाइि रूपं असथंभनह ॥ गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जान्नति असथिरं ॥ दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे जपंति ॥४॥ सुभंत तुयं अचुत गुणग्यं पूरनं बहुलो कृपाला ॥ गंभीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ भ्रितिआ प्रिअं बिस्राम चरणं ॥ अनाथ नाथे नानक सरणं ॥५॥ मृगी पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥ अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ॥६॥ बहु जतन करता बलवंत कारी सेवंत सूरा चतुर दिसह ॥ बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदाँचह ॥ होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक कीटी सास अकरखते ॥७॥ सबदं रतं हितं मइिआ कीरतं कली करम कृतुआ ॥ मिटंति तत्रागत भरम मोह्य ॥ भगवान रमणं सरबत्र थान्यिं ॥ दृसट तुयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ हरि हरि हरि हरे नानक प्रिअं जापु जपना ॥८॥ घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर नख्यत्र गगनं ॥ घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ घटंत ललना सुत भ्रात हीतं ॥ घटंत कनिक मानिक माइिआ स्वरूपं ॥ नह घटंत केवल गोपाल अचुत ॥ असथिरं नानक साध जन ॥९॥ नह बिलम्ब धरमं बिलम्ब पापं ॥ दृड़ंत नामं तजंत लोभं ॥ सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लख्यिण ॥ नानक जिह सुप्रसन्न माधवह ॥१०॥ मिरत मोह्य अलप बुध्यं रचंति बनिता बिनोद साह्य ॥ जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥ बचित्र मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइिआ ब्यापितं ॥ हे अचुत सरणि संत नानक भो भगवानइे नमह ॥११॥ जनमं त मरणं हरखं त सोगं भोगं त रोगं ॥ ऊचं त नीचं

नाना सु मूचं ॥ राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥ गोबिंद भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥१२॥ किरपंत हरीअं मति ततु गिआनं ॥ बिगसीध्यि बुधा कुसल थानं ॥ बस्यिंत रिखिअं तिआगि मानं ॥ सीतलम्त रिदयं दृड़ु संत गिआनं ॥ रह्मत जनमं हरि दरस लीणा ॥ बाजंत नानक सबद बीणाँ ॥१३॥ कह्मत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ दृड़ंत सुबिदिआ हरि हरि कृपाला ॥ नाम दानु जाचंत नानक दैनहार गुर गोपाला ॥१४॥ नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु लोक कह ॥ नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइिआ सनबंधनह ॥ दइिआल इेक भगवान पुरखह नानक सरब जीअ प्रतिपालकह ॥१५॥ अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ अनित्य हेतं अह्म बंधं भरम माइिआ मलनं बिकारं ॥ फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ हे गोबिंद करत मइिआ नानक पतित उधारण साध संगमह ॥१६॥ गिरंत गिरि पतित पातालं जलम्त देदीप्य बैस्वाँतरह ॥ बह्मति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह चिंता जनमं त मरणह ॥ अनिक साधनं न सिध्यते नानक असथंभं असथंभं असथंभं सबद साध स्वजनह ॥१७॥ घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥१८॥ अंधकार सिमरत प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ रिद बसंति भै भीत दूतह करम करत महा निरमलह ॥ जनम मरण रह्मत स्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥१९॥ पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ निरधन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ पारब्रहम पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥२०॥ अधरं धरं धारणह निरधनं धन नाम नरहरह ॥ अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह ॥ सरब भूत दयाल अचुत दीन बाँधव दामोदरह ॥ सरबग्य पूरन पुरख भगवानह भगति वछल

करुणा मयह ॥ घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ जाचंति नानक कृपाल प्रसादं नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइिणह ॥२१॥ नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोतमं ॥ तव प्रसादि सिमरते नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरं ॥२२॥ भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम छादन देवंत दानं ॥ सृजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ वरतंति सुख आन्नद प्रसादह ॥ सिमरंत नानक हरि हरि हरे ॥ अनित्य रचना निरमोह ते ॥२३॥ दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥२४॥ बृथा अनुग्रह्य गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह ॥ आरोग्यं महा रोग्यं बिसिमृते करुणा मयह ॥२५॥ रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥ अंमृत नामु नाराइिण नानक पीवतं संत न तृप्यते ॥२६॥ सहण सील संतं सम मित्रस्य दुरजनह ॥ नानक भोजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइि उपतिसटते ॥२७॥ तिरसकार नह भवंति नह भवंति मान भंगनह ॥ सोभा हीन नह भवंति नह पोह्यति संसार दुखनह ॥ गोबिंद नाम जपंति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥२८॥ सैना साध समूह सूर अजितं सन्नाह्य तनि निंम्रताह ॥ आवधह गुण गोबिंद रमणं एट गुर सबद कर चरमणह ॥ आरूड़ते अस्व रथ नागह बुझंते प्रभ मारगह ॥ बिचरते निरभयं सत्रु सैना धायंते गोपाल कीरतनह ॥ जितते बिस्व संसारह नानक वस्यं करोति पंच तसकरह ॥२९॥ मृग तृसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ ततह कुटंब मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥३०॥ नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणग्य नाम कीरतनह ॥ नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ भाग उदिम लबध्यं माइिआ नानक साधसंगि खल पंडितह ॥३१॥ कंठ रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ जीह भणि जो उतम सलोक उधरणं नैन न्नदनी ॥३२॥ गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥ कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥३३॥ चरणारबिंद भजनं रिदयं नाम धारणह ॥

कीरतनं साधसंगेण नानक नह दृसटंति जमदूतनह ॥३४॥ नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं स्वरग राजनह ॥ नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अंबरह ॥ नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बाँधव नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥ नच दुरलभं बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ दुरलभं इेक भगवान नामह नानक लबध्यिं साधसंगि कृपा प्रभं ॥३५॥ जत कतह ततह दृसटं स्वरग मरत पयाल लोकह ॥ सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३६॥ बिखया भयंति अंमृतं द्रुसटाँ सखा स्वजनह ॥ दुखं भयंति सुख्यं भै भीतं त निरभयह ॥ थान बिहून बिस्राम नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरह ॥३७॥ सरब सील ममं सीलं सरब पावन मम पावनह ॥ सरब करतब ममं करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३८॥ नह सीतलं चंद्र देवह नह सीतलं बावन चंदनह ॥ नह सीतलं सीत रुतेण नानक सीतलं साध स्वजनह ॥३९॥ मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्यिागि सगल रेणुकह ॥ खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥४०॥ अजा भोगंत कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ तत्र गते संसारह नानक सोग हरखं बिआपते ॥४१॥ छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं किलबिख मलं ॥ भरम मोह्य मान अपमानं मदं माया बिआपितं ॥ मृत्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ निरमलं साध संगह जपंति नानक गोपाल नामं ॥ रमंति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥४२॥ तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥ करण कारण समरथह दानु देत प्रभु पूरनह ॥ निरास आस करणं सगल अरथ आलयह ॥ गुण निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥४३॥ दुरगम सथान सुगमं महा दूख सरब सूखणह ॥ दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ असथितं सोग हरखं भै खीणं त निरभवह ॥

भै अटवीअं महा नगर बासं धरम लख्यण प्रभ मइिआ ॥ साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक हरि हरि दयाल चरणं ॥४४॥ हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥४५॥ हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ चित हरणं त्रै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ तव भै बिमुंचित साध संगम एट नानक नाराइणह ॥४६॥ हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥ अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति ॥४७॥ हे लोभा लम्पट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भाँति बहु डोलते ॥ नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ अकरणं करोति अखाद्यि खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्याप्ति नानक हरि नरहरह ॥४८॥ हे जनम मरण मूलं अह्मकारं पापातमा ॥ मित्रं तजंति सत्रं दृड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ आवंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ भ्रम भयान उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ बैद्यं पारब्रहम परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥४९॥ हे प्राण नाथ गोबिंदह कृपा निधान जगद गुरो ॥ हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ हे सरणि जोग दयालह दीना नाथ मया करो ॥ सरीर स्वसथ खीण समइे सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥५०॥ चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥५१॥ सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥५२॥ जेन कला धारिए आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ जेन कला

ससि सूर नख्यत्र जोत्यिं सासं सरीर धारणं ॥ जेन कला मात गरभ प्रतिपालं नह छेदंत जठर रोगणह ॥ तेन कला असथंभं सरोवरं नानक नह छिजंति तरंग तोयणह ॥५३॥ गुसाँई गरिष्ट रूपेण सिमरणं सरबत्र जीवणह ॥ लबध्यं संत संगेण नानक स्रछ मारग हरि भगतणह ॥५४॥ मसकं भगन्नत सैलं करदमं तरंत पपीलकह ॥ सागरं लम्घंति पिंगं तम परगास अंधकह ॥ साध संगेणि सिमरंति गोबिंद सरणि नानक हरि हरि हरे ॥५५॥ तिलक हीणं जथा बिप्रा अमर हीणं जथा राजनह ॥ आवध हीणं जथा सूरा नानक धरम हीणं तथा बैस्नवह ॥५६॥ न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं ॥ अश्चरज रूपं रह्मत जनमं ॥ नेत नेत कथंति बेदा ॥ ऊच मूच अपार गोबिंदह ॥ बसंति साध रिदयं अचुत बुझंति नानक बडभागीअह ॥५७॥ उदिआन बसनं संसारं सनबंधी स्वान सिआल खरह ॥ बिखम सथान मन मोह मदिरं महाँ असाध पंच तसकरह ॥ हीत मोह भै भरम भ्रमणं अह्म फाँस तीख्यण कठिनह ॥ पावक तोअ असाध घोरं अगम तीर नह लम्घनह ॥ भजु साधसंगि गोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण कृपा ॥५८॥ कृपा करंत गोबिंद गोपालह सगल्यं रोग खंडणह ॥ साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पूरन परमेसुरह ॥५६॥ सिआमलं मधुर मानुख्यं रिदयं भूमि वैरणह ॥ निवंति होवंति मिथिआ चेतनं संत स्रजनह ॥६०॥ अचेत मूड़ा न जाणंत घटंत सासा नित प्रते ॥ छिजंत महा सुंदरी काँइिआ काल कंनिआ ग्रासते ॥ रचंति पुरखह कुटंब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ भ्रमंति भ्रमंति बहु जनम हारिए सरणि नानक करुणा मयह ॥६१॥ हे जिहबे हे रसगे मधुर पृअ तुयं ॥ सत हतं परम बादं अवरत इेथह सुध अछरणह ॥ गोबिंद दामोदर माधवे ॥६२॥ गरबंति नारी मदोन मतं ॥ बलवंत बलात कारणह ॥ चरन कमल नह भजंत तृण समानि ध्रिगु जनमनह ॥ हे पपीलका ग्रसटे गोबिंद सिमरण तुयं धने ॥ नानक अनिक बार नमो नमह ॥६३॥ तृणं त मेरं सहकं त हरीअं ॥ बूडं त तरीअं ऊणं त भरीअं ॥ अंधकार कोटि सूर उजारं ॥ बिनवंति नानक हरि गुर दयारं ॥६४॥

ब्रहमणह संगि उधरणं ब्रहम करम जि पूरणह ॥ आतम रतं संसार गह्म ते नर नानक निहफलह ॥६५॥ पर दरब हिरणं बहु विघन करणं उचरणं सरब जीअ कह ॥ लउ लई तृसना अतिपति मन माइे करम करत सि सूकरह ॥६६॥ मते समेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ अनेक पातिक हरणं नानक साध संगम न संसयह ॥६७॥४॥

महला ५ गाथा ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देह्म मलीणं ॥ मजा रुधिर दुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥१॥ परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥२॥ जाणो सति होवंतो मरणो दृसटेण मिथिआ ॥ कीरति साथि चलम्थो भणंति नानक साध संगेण ॥३॥ माया चित भरमेण इसिट मित्रेखु बाँधवह ॥ लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥४॥ मैलागर संगेण निंमु बिरख सि चंदनह ॥ निकटि बसंतो बाँसो नानक अह्म बुधि न बोहते ॥५॥ गाथा गुंफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥६॥ बचन साध सुख पंथा लह्मथा बड करमणह ॥ रह्मता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥७॥ पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीअं पेड संपता ॥ नाम बिहूण बिखमता नानक बह्मति जोनि बासरो रैणी ॥८॥ भावनी साध संगेण लभंतं बड भागणह ॥ हरि नाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥९॥ गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥ संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥१०॥ सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥११॥ सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यं बड भागणह ॥१२॥ हरि लबधो मित्र सुमितो ॥ बिदारण कदे न चितो ॥ जा का असथलु तोलु अमितो ॥ सुोई नानक सखा जीअ संगि कितो ॥१३॥ अपजसं मिटंत सत पुत्रह ॥ सिमरतब्य रिदै

गुर मंत्रणह ॥ प्रीतम भगवान अचुत ॥ नानक संसार सागर तारणह ॥१४॥ मरणं बिसरणं गोबिंदह ॥ जीवणं हरि नाम ध्यावणह ॥ लभणं साध संगेण ॥ नानक हरि पूरबि लिखणह ॥१५॥ दसन बिहून भुयंगं मंत्रं गारुड़ी निवारं ॥ ब्याधि उपाड़ण संतं ॥ नानक लबध करमणह ॥१६॥ जथ कथ रमणं सरणं सरबत्र जीअणह ॥ तथ लगणं प्रेम नानक ॥ परसादं गुर दरसनह ॥१७॥ चरणारबिंद मन बिध्यं ॥ सिध्यं सरब कुसलणह ॥ गाथा गावंति नानक भब्यं परा पूरबणह ॥१८॥ सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥ संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥१९॥ बेद पुराण सासत्र बीचारं ॥ एकंकार नाम उर धारं ॥ कुलह समूह सगल उधारं ॥ बडभागी नानक को तारं ॥२०॥ सिमरणं गोबिंद नामं उधरणं कुल समूहणह ॥ लबधिअं साध संगेण नानक वडभागी भेटंति दरसनह ॥२१॥ सरब दोख परंतिआगी सरब धरम दृड़ंतणः ॥ लबधेणि साध संगेणि नानक मसतकि लिख्यणः ॥२२॥ होयो है होवंतो हरण भरण संपूरणः ॥ साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणं ॥२३॥ सुखेण बैण रतनं रचनं कसुंभ रंगणः ॥ रोग सोग बिएगं नानक सुखु न सुपनह ॥२४॥

फुनहे महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हाथि कलम्म अगंम मसतकि लेखावती ॥ उरझि रहिए सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ संत सभा महि बैसि कि कीरति मै कहाँ ॥ अरपी सभु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥ आस पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥ हरिहाँ मसतकि होवै भागु त साजनु पाईऐ ॥२॥ सखी काजल हार तंबोल सभै किछु साजिआ ॥ सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ ॥ जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ ॥ हरिहाँ कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ ॥३॥ जिसु घरि वसिआ कंतु सा वडभागणे ॥ तिसु बणिआ हभु सीगारु साई सोहागणे ॥ हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ ॥ हरिहाँ जा घरि आइआ कंतु त सभु किछु

पाईआ ॥४॥ आसा इिती आस कि आस पुराईऐ ॥ सतिगुर भइे दइिआल त पूरा पाईऐ ॥ मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइिआ ॥ हरिहाँ सतिगुर भइे दइिआल त मनु ठहराइिआ ॥५॥ कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइिआ ॥ दुतरु इिहु संसारु सतिगुरू तराइिआ ॥ मिटिआ आवा गउणु जाँ पूरा पाइिआ ॥ हरिहाँ अंमृतु हरि का नामु सतिगुर ते पाइिआ ॥६॥ मेरै हाथि पदमु आगनि सुख बासना ॥ सखी मोरै कंठि रतन्नु पेखि दुखु नासना ॥ बासउ संगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥ हरिहाँ रिधि सिधि नव निधि बसहि जिसु सदा करि ॥७॥ पर तृअ रावणि जाहि सेई ता लाजीअहि ॥ नितप्रति हिरहि पर दरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ हरि गुण रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ हरिहाँ सुनते भइे पुनीत पारब्रहमु बीचारई ॥८॥ ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ दह दिस चमकै बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥ हरिहाँ जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥९॥ डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ बधोहु पुरखि बिधातै ताँ तू सोहिआ ॥ वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ हरिहाँ नानक कसमल जाहि नाइिऐ रामदास सर ॥१०॥ चातृक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ जिसु संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ बनु बनु फिरत उदास बूंद जल कारणे ॥ हरिहाँ तिउ हरि जनु माँगै नामु नानक बलिहारणे ॥११॥ मित का चितु अनूपु मरंमु न जानीऐ ॥ गाहक गुनी अपार सु ततु पछानीऐ ॥ चितहि चितु समाइि त होवै रंगु घना ॥ हरिहाँ चंचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥१२॥ सुपनै ऊभी भई गहिए की न अंचला ॥ सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥ खोजउ ता के चरण कहहु कत पाईऐ ॥ हरिहाँ सोई जतन्नु बताइि सखी पृउ पाईऐ ॥१३॥ नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥ करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ हरिहाँ जब बिसरै गोबिद राइि दिनो दिनु घटीऐ ॥१४॥ पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ ॥ अंग संग उरझाइि

बिसरते सुंफिआ ॥ है कोऊ अैसा मीतु जि तोरै बिखम गाँठि ॥ नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ साँठि ॥१५॥ धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ कारणे ॥ पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ तीखण बाण चलाइ नामु प्रभ ध्याईअै ॥ हरिहाँ महाँ बिखादी घात पूरन गुरु पाईअै ॥१६॥ सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥ खावहु भुंचहु सभि गुरमुखि छुटई ॥ अंमृतु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ नानक सदा अराधि कदे न जाँहि मरि ॥१७॥ जिथै जाइ भगतु सु थानु सुहावणा ॥ सगले होइ सुख हरि नामु धिआवणा ॥ जीअ करनि जैकारु निंदक मुइे पचि ॥ साजन मनि आन्नदु नानक नामु जपि ॥१८॥ पावन पतित पुनीत कतह नही सेवीअै ॥ झूठै रंगि खुआरु कहाँ लगु खेवीअै ॥ हरिचंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ हरिहाँ हउ बलिहारी तिन्न जि दरगहि जानिआ ॥१९॥ कीने करम अनेक गवार बिकार घन ॥ महा दुरगंधत वासु सठ का छारु तन ॥ फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ हरिहाँ हरिचंदउरी पेखि काहे सचु मानई ॥२०॥ जिस की पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ बैदक अनिक उपाव कहाँ लउ भाखई ॥ इेको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ हरिहाँ बिनु नावै तनु छारु बृथा सभु जावई ॥२१॥ अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥ मिलि मिलि खावहि संत सगल कउ दीजई ॥ जिसै परापति होइ तिसै ही पावणे ॥ हरिहाँ हउ बलिहारी तिन्न् जि हरि रंगु रावणे ॥२२॥ वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥ अउखद आइे रासि विचि आपि खलोइिआ ॥ जो जो एना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥ हरिहाँ दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥२३॥

चउबोले महला ५   ੧ਓ सितिगुर प्रसादि ॥

संमन जउ इिस प्रेम की दम क्यिहु होती साट ॥ रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥१॥ प्रीति प्रेम तनु खचि रहिआ बीचु न राई होत ॥ चरन कमल मनु बेधिए बूझनु सुरति संजोग ॥२॥

सागर मेर उदिआन बन नव खंड बसुधा भरम ॥ मूसन प्रेम पिरंम कै गनउ इेक करि करम ॥३॥ मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरु छाइि ॥ बीधे बाँधे कमल महि भवर रहे लपटाइि ॥४॥ जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥५॥ मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ प्रेम पिरंम न बेधिए उरझिए मिथ बिउहार ॥६॥ घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइिआल ॥७॥ जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ नानक बिरही ब्रहम के आन न कतहू जाहि ॥८॥ लख घाटीं ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल ॥ नीच कीच निमृत घनी करनी कमल जमाल ॥९॥ कमल नैन अंजन सिआम चंद्र बदन चित चार ॥ मूसन मगन मरंम सिउ खंड खंड करि हार ॥१०॥ मगनु भइिए प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग ॥ प्रगटि भइिए सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥११॥

सलोक भगत कबीर जीउ के ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥१॥ कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ बलिहारी इिस जाति कउ जिह जपिए सिरजनहारु ॥२॥ कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ सरब सूख को नाइिको राम नाम रसु पीउ ॥३॥ कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ दीसहि दाधे कान जिउ जिन् मनि नाही नाउ ॥४॥ कबीर ऐसा इेकु आधु जो जीवत मिरतकु होइि ॥ निरभै होइि कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइि ॥५॥ कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइिआ अन्नदु ॥ मोहि मिलिए प्रभु आपना संगी भजहि गोबिंदु ॥६॥ कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइि ॥ जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइि ॥७॥ कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥८॥ कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइि ॥ भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइि ॥९॥ कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥

लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत ॥१०॥ कबीर चंदन का बिरवा भला बेड़्हिए ढाक पलास ॥ एइि भी चंदनु होइि रहे बसे जु चंदन पासि ॥११॥ कबीर बाँसु बडाई बूडिआ इिउ मत डूबहु कोइि ॥ चंदन कै निकटे बसै बाँसु सुगंधु न होइि ॥१२॥ कबीर दीनु गवाइिआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥ पाइि कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥१३॥ कबीर जह जह हउ फिरिए कउतक ठाए ठाइि ॥ इिक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भाँइि ॥१४॥ कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥१५॥ कबीर संत मूए किआ रोईऐ जो अपुने गृहि जाइि ॥ रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइि ॥१६॥ कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ कोने बैठे खाईऐ परगट होइि निदानि ॥१७॥ कबीर माइिआ डोलनी पवनु झकोलनहारु ॥ संतहु माखनु खाइिआ छाछि पीऐ संसारु ॥१८॥ कबीर माइिआ डोलनी पवनु वहै हिव धार ॥ जिनि बिलोइिआ तिनि खाइिआ अवर बिलोवनहार ॥१९॥ कबीर माइिआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ॥ एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥२०॥ कबीर सूखु न एंह जुगि करहि जु बहुतै मीत ॥ जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत ॥२१॥ कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनन्दु ॥ मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानन्दु ॥२२॥ राम पदारथु पाइि कै कबीरा गाँठि न खोल्ह ॥ नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥२३॥ कबीर ता सिउ प्रीति करि जा को ठाकुरु रामु ॥ पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥२४॥ कबीर प्रीति इिक सिउ कीए आन दुबिधा जाइि ॥ भावै लाँबे केस करु भावै घररि मुडाइि ॥२५॥ कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥ हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥२६॥ कबीर इिहु तनु जाइिगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ नाँगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥२७॥ कबीर इिहु तनु जाइिगा कवनै मारगि लाइि ॥ कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइि ॥२८॥ कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइि ॥

ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइि ॥२९॥ कबीर मानस जनमु दुलम्भु है होइि न बारै बार ॥ जिउ बन फल पाके भुइि गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥३०॥ कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु ॥ राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु ॥३१॥ कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिए न होइि ॥ करम करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइि ॥३२॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइि ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइि ॥३३॥ कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ एकस हरि के नाम बिनु बाधे जम पुरि जाँहि ॥३४॥ कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार ॥ हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥३५॥ कबीर हाड जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु ॥ इहु जगु जरता देखि कै भइिए कबीरु उदासु ॥३६॥ कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥ हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥३७॥ कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु ॥ आजु कालि् भुइि लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥३८॥ कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइि ॥ अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइि ॥३९॥ कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥ आजु कालि् तजि जाहुगे जिउ काँचुरी भुयंग ॥४०॥ कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिगे छूटि ॥४१॥ कबीर ऐसा कोई न जनमिए अपनै घरि लावै आगि ॥ पाँचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥४२॥ को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइि ॥ साझा करै कबीर सिउ हरि संगि बनजु करेइि ॥४३॥ कबीर इहि चेतावनी मत सहसा रहि जाइि ॥ पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुड़ु लै खाहि ॥४४॥ कबीर मै जानिए पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ भगति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु ॥४५॥ कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु ॥ राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥४६॥ कबीर परदेसी कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि ॥ खिंथा जलि कोइला भई तागे आँच न लाग ॥४७॥ कबीर खिंथा जलि कोइला भई खापरु फूट मफूट ॥ जोगी

बपुड़ा खेलिए आसनि रही बिभूति ॥४८॥ कबीर थोरै जलि माछुली झीवरि मेलिए जालु ॥ इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥४९॥ कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ ॥५०॥ कबीर निगुसांएं बहि गए थांघी नाही कोइ ॥ दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ ॥५१॥ कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥ एह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥५२॥ कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु ॥५३॥ कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥ बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥५४॥ कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥ पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥५५॥ कबीर हरदी पीअरी चूंनां ऊजल भाइ ॥ राम सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥५६॥ कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ बलिहारी इह प्रीति कउ जिह जाति बरनु कुलु जाइ ॥५७॥ कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहिए निकसो किउ कै जाइ ॥५८॥ कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥५९॥ कबीर ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घरु नही गाउ ॥ मत हरि पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥६०॥ कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ त हरि कै दुआर ॥ मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥६१॥ कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥ किआ जानउ किछु हरि कीआ भइए कबीरु कबीरु ॥६२॥ कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु ॥ ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥६३॥ कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिए नाउ ॥ चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥६४॥ कबीर महिदी करि घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥६५॥ कबीर जिह दरि आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु ऐसा होइ ॥६६॥ कबीर डूबा था

पै उबरिए गुन की लहरि झबकि ॥ जब देखिए बेड़ा जरजरा तब उतरि परिए हउ फरकि ॥६७॥ कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ॥६८॥ कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ इेकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥६९॥ कबीर रामु न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ काइआ हाँडी काठ की ना एह चढ़ै बहोरि ॥७०॥ कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥७१॥ कबीर रस को गाँडो चूसीऐ गुन कउ मरीऐ रोइ ॥ अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥७२॥ कबीर गागरि जल भरी आजु कालि जैहै फूटि ॥ गुरु जु न चेतहि आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥७३॥ कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥७४॥ कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥७५॥ कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥ राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥७६॥ कबीर पारस चंदनै तिन् है इेक सुगंध ॥ तिह मिलि तेऊ ऊतम भइे लोह काठ निरगंध ॥७७॥ कबीर जम का ठेंगा बुरा है एहु नही सहिआ जाइ ॥ इेकु जु साधू मोहि मिलिओ तिन्हि लीआ अंचलि लाइ ॥७८॥ कबीर बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि ॥७९॥ कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ नदी नाव संजोग जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥८०॥ कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ ॥८१॥ कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि सरब जंजाल ॥८२॥ कबीर ऐसा को नही मंदरु देइ जराइ ॥ पाँचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥८३॥ कबीर ऐसा को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि ॥८४॥ कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर मसान ॥ लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु

निदान ॥८५॥ कबीर मनु पंखी भइिए उडि उडि दह दिस जाइि ॥ जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइि ॥८६॥ कबीर जा कउ खोजते पाइिए सोई ठउरु ॥ सोई फिरि कै तू भइिआ जा कउ कहता अउरु ॥८७॥ कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥ उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥८८॥ कबीर भार पराई सिरि चरै चलिए चाहै बाट ॥ अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥८९॥ कबीर बन की दाधी लाकरी ठाढी करै पुकार ॥ मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥९०॥ कबीर इेक मरंते दुइि मूइे दोइि मरंतह चारि ॥ चारि मरंतह छह मूइे चारि पुरख दुइि नारि ॥९१॥ कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूं न पाइिआ ठउरु ॥ जिनि हरि का नामु न चेतिए कहा भुलाने अउर ॥९२॥ कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥ साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइि बिनाहु ॥९३॥ कबीर जग महि चेतिए जानि कै जग महि रहिए समाइि ॥ जिन हरि का नामु न चेतिए बादहि जनमें आइि ॥९४॥ कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास ॥ नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥९५॥ कबीर सिख साखा बहुते कीइे केसो कीए न मीतु ॥ चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिए चीतु ॥९६॥ कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइि ॥ जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइि ॥९७॥ कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥९८॥ कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ ॥ होनहारु सो होइिहै साकत संगि न जाउ ॥९९॥ कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ साकत कारी काँबरी धोइे होइि न सेतु ॥१००॥ कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाइे काँइि ॥ जो किछु कीआ सो मन कीआ मूंडा मूंडु अजाँइि ॥१०१॥ कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइि त जाउ ॥ चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि समाउ ॥१०२॥ कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गईं सभ तार ॥ जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार ॥१०३॥ कबीर माइि मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइि ॥

आप डुबे चहु बेद महि चेले दीइे बहाइि ॥१०४॥ कबीर जेते पाप कीइे राखे तलै दुराइि ॥ परगट भइे निदान सभ जब पूछे धरम राइि ॥१०५॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिए बहुतु कुटंबु ॥ धंधा करता रहि गइिआ भाई रहिआ न बंधु ॥१०६॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइि ॥ सरपनि होइि कै अउतरै जाइे अपुने खाइि ॥१०७॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ गदही होइि कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥१०८॥ कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥१०९॥ कबीर सोुई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥ देही किस की बापुरी पवित्रु होइिगो ग्रामु ॥११०॥ कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥१११॥ कबीर है गइि बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ इिआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥११२॥ कबीर सभु जगु हउ फिरिए माँदलु कंध चढाइि ॥ कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइि ॥११३॥ मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिए आइि ॥ जोति बिना जगदीस की जगतु उलम्घे जाइि ॥११४॥ बूडा बंसु कबीर का उपजिए पूतु कमालु ॥ हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥११५॥ कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइि ॥ पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइि सु होइि ॥११६॥ कबीर जगु बाधिए जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥११७॥ कबीर हंसु उडिए तनु गाडिए सोझाई सैनाह ॥ अजहू जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥११८॥ कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥११९॥ कबीर सुरग नरक ते मै रहिए सतिगुर के परसादि ॥ चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥१२०॥ कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥१२१॥ कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइि ॥ हरि जैसा तैसा उही

रहउ हरखि गुन गाइि ॥१२२॥ कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे ॥ जैसे बचरहि कूंज मन माइिआ ममता रे ॥१२३॥ कबीर अंबर घनहरु छाइिआ बरखि भरे सर ताल ॥ चातृक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥१२४॥ कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइि मिलै परभाति ॥ जो नर बिछुरे राम सिउ ना दिन मिले न राति ॥१२५॥ कबीर रैनाइिर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि ॥ देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर ॥१२६॥ कबीर सूता किआ करहि जागु रोइि भै दुख ॥ जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख ॥१२७॥ कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥ इिक दिन सोवनु होइिगो लाँबे गोड पसारि ॥१२८॥ कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥ जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥१२९॥ कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ ॥ पेखत ही पुन्नीत होइि भेटत जपीऐ नाउ ॥१३०॥ कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥ बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥१३१॥ कबीरा रामु न चेतिए जरा पहूंचिए आइि ॥ लागी मंदिर दुआर ते अब किआ काढिआ जाइि ॥१३२॥ कबीर कारनु सो भइिए जो कीनो करतारि ॥ तिसु बिनु दूसरु को नही इेकै सिरजनहारु ॥१३३॥ कबीर फल लागे फलनि पाकनि लागे आँब ॥ जाइि पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही काँब ॥१३४॥ कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मनहठि तीरथ जाहि ॥ देखा देखी स्वाँगु धरि भूले भटका खाहि ॥१३५॥ कबीर पाहनु परमेसुरु कीआ पूजै सभु संसारु ॥ इिस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥१३६॥ कबीर कागद की एबरी मसु के करम कपाट ॥ पाहन बोरी पिरथमी पंडित पाड़ी बाट ॥१३७॥ कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइि ताल ॥ पाछै कछू न होइिगा जउ सिर परि आवै कालु ॥१३८॥ कबीर अैसा जंतु इिकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ दीसै चंचलु बहु गुना मति हीना नापाक ॥१३९॥ कबीर मेरी बुधि कउ जमु न करै तिसकार ॥ जिनि इिहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥१४०॥ कबीरु कसतूरी भइिआ

भवर भइे सभ दास ॥ जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास ॥१४१॥ कबीर गहगचि परिए कुटंब कै काँठै रहि गइिए रामु ॥ आइि परे धरम राइि के बीचहि धूमा धाम ॥१४२॥ कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥ उहु साकतु बपुरा मरि गइिआ कोइि न लैहै नाउ ॥१४३॥ कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख करोरि ॥ चलती बार न कछु मिलिए लई लंगोटी तोरि ॥१४४॥ कबीर बैसनो हूआ त किआ भइिआ माला मेलीं चारि ॥ बाहरि कंचनु बारहा भीतरि भरी भंगार ॥१४५॥ कबीर रोड़ा होइि रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ अैसा कोई दासु होइि ताहि मिलै भगवानु ॥१४६॥ कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइिआ पंथी कउ दुखु देइि ॥ अैसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥१४७॥ कबीर खेह हूई तउ किआ भइिआ जउ उडि लागै अंग ॥ हरि जनु अैसा चाहीअै जिउ पानी सरबंग ॥१४८॥ कबीर पानी हूआ त किआ भइिआ सीरा ताता होइि ॥ हरि जनु अैसा चाहीअै जैसा हरि ही होइि ॥१४९॥ ऊच भवन कनकामनी सिखरि धजा फहराइि ॥ ता ते भली मधूकरी संतसंगि गुन गाइि ॥१५०॥ कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइि ॥ राम सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भाँइि ॥१५१॥ कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुन्न के घाट ॥ तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट ॥१५२॥ कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै एड़ि ॥ हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि ॥१५३॥ कबीरा इेकु अचंभउ देखिए हीरा हाट बिकाइि ॥ बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइि ॥१५४॥ कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥१५५॥ कबीर माइिआ तजी त किआ भइिआ जउ मानु तजिआ नही जाइि ॥ मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइि ॥१५६॥ कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ इेकु ॥ लागत ही भुइि मिलि गइिआ परिआ कलेजे छेकु ॥१५७॥ कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ अंधे इेक न लागई जिउ बाँसु बजाईअै फूक ॥१५८॥ कबीर

है गै बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ तासु पटंतर न पुजै हरि जन की पनिहारि ॥१५९॥ कबीर नृप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ एह माँग सवारै बिखै कउ एह सिमरै हरि नामु ॥१६०॥ कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥१६१॥ कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै माँडै हाट ॥ जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥१६२॥ कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ अमरा पुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥१६३॥ कबीर सेवा कउ दुइ भले इकु संतु इकु रामु ॥ रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥१६४॥ कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिए कबीर ॥१६५॥ कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥१६६॥ कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥ पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥१६७॥ कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु ॥१६८॥ कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥१६९॥ कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥ भाग बडे तै पाइए तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥१७०॥ कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ इे दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिए कबीरु ॥१७१॥ कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि ॥१७२॥ कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥१७३॥ कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ मलिआगरु भुयंगम बेढिए त सीतलता न तजंत ॥१७४॥ कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥१७५॥ कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥१७६॥ कबीर भली भई जो भउ

परिआ दिसा गईं सभ भूलि ॥ एरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिए ढलि कूलि ॥१७७॥ कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बाँधी देह ॥ दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥१७८॥ कबीर सूरज चाँद कै उदै भई सभ देह ॥ गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥१७९॥ जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥ कहिए कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥१८०॥ कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥ हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ ॥१८१॥ कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर ॥ लागी चोट मरंम की रहिए कबीरा ठउर ॥१८२॥ कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ चोट सहारै सबद की तासु गुरू मै दास ॥१८३॥ कबीर मुलाँ मुनारे किआ चढहि साँई न बहरा होइ ॥ जा कारनि तूं बाँग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥१८४॥ सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहाँ खुदाइ ॥१८५॥ कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाइ ॥ दिल महि साँई परगटै बुझै बलन्ती नाँइ ॥१८६॥ कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ दफतरि लेखा माँगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥१८७॥ कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंमृतु लोनु ॥ हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥१८८॥ कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥ हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥१८९॥ कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचारु ॥ सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ॥१९०॥ कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ एकु अनेकहि मिलि गइआ एक समाना एक ॥१९१॥ कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन माहि ॥१९२॥ कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥ पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥१९३॥ कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥१९४॥ कबीर निरमल बूंद अकास की परि गई भूमि

बिकार ॥ बिनु संगति इउ माँनई होइि गई भठ छार ॥१९५॥ कबीर निरमल बूंद अकास की लीनी भूमि मिलाइि ॥ अनिक सिआने पचि गड़े ना निरवारी जाइि ॥१९६॥ कबीर हज काबे हउ जाइि था आगै मिलिआ खुदाइि ॥ साँई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइि ॥१९७॥ कबीर हज काबै होइि होइि गइिआ केती बार कबीर ॥ साँई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥१९८॥ कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु ॥ दफतरु दई जब काढि है होइिगा कउनु हवालु ॥१९९॥ कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइि जबाबु खुदाइि ॥ दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइि ॥२००॥ कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइि ॥ उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइि ॥२०१॥ कबीर धरती अरु आकास महि दुइि तूं बरी अबध ॥ खट दरसन संसे परे अरु चउरासीह सिध ॥२०२॥ कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥ तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥२०३॥ कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥ जब आपा पर का मिटि गइिआ जत देखउ तत तू ॥२०४॥ कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ मनोरथु कोइि न पूरिए चाले ऊठि निरास ॥२०५॥ कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥ इित उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥२०६॥ कबीर घाणी पीड़ते सतिगुर लीडे छडाइि ॥ परा पूरबली भावनी परगटु होई आइि ॥२०७॥ कबीर टालै टोलै दिनु गइिआ बिआजु बढंतउ जाइि ॥ ना हरि भजिए न खतु फटिए कालु पहूंचो आइि ॥२०८॥ महला ५ ॥ कबीर कूकरु भउकना करंग पिछै उठि धाइि ॥ करमी सतिगुरु पाइिआ जिनि हउ लीआ छडाइि ॥२०९॥ महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥२१०॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइि ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धरम राइि ॥२११॥ नामा माइिआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ काहे छीपहु छाइिलै राम न लावहु चीतु ॥२१२॥ नामा कहै

तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥ हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥२१३॥ महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥२१४॥ कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ किछू न आइए हाथ ॥ पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥२१५॥ कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ काहे की कुसलात हाथि दीपु कूइे परै ॥२१६॥ कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥ ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥२१७॥ कबीर कोठे मंडप हेतु करि काहे मरहु सवारि ॥ कारजु साढे तीनि हथ घनी त पउने चारि ॥२१८॥ कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे चितवे होइ ॥ अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ ॥२१९॥ मः ३ ॥ चिंता भि आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥२२०॥ मः ५ ॥ कबीर रामु न चेतिए फिरिआ लालच माहि ॥ पाप करंता मरि गइआ अउध पुनी खिन माहि ॥२२१॥ कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु ॥ साबतु रखहि त राम भजु नाहि त बिनठी बात ॥२२२॥ कबीर केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार ॥ राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥२२३॥ कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु मय मंतु ॥ अंकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला संतु ॥२२४॥ कबीर राम रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि ॥२२५॥ कबीर राम नामु जानिए नही पालिए कटकु कुटंबु ॥ धंधे ही महि मरि गइए बाहरि भई न बंब ॥२२६॥ कबीर आखी केरे माटुके पलु पलु गई बिहाइ ॥ मनु जंजालु न छोडई जम दीआ दमामा आइ ॥२२७॥ कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु ॥ छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु ॥२२८॥ कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलन्त ॥ सीतल छाइआ गहिर फल पंखी केल करंत ॥२२९॥ कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥ पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलन्त ॥२३०॥ कबीर साधू

संगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ॥ मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट ॥२३१॥ कबीर इेक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥ भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥२३२॥ कबीर भाँग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खाँहि ॥ तीरथ बरत नेम कीइे ते सभै रसातलि जाँहि ॥२३३॥ नीचे लोइिन करि रहउ ले साजन घट माहि ॥ सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि ॥२३४॥ आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ ॥ नीचे लोइिन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥२३५॥ सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ जीउ पीउ बूझउ नही घट महि जीउ कि पीउ ॥२३६॥ कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥ अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥२३७॥ हरि है खाँडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइि ॥ कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइि कै खाइि ॥२३८॥ कबीर जउ तुहि साध पिरंम की सीसु काटि करि गोइि ॥ खेलत खेलत हाल करि जो किछु होइि त होइि ॥२३९॥ कबीर जउ तुहि साध पिरंम की पाके सेती खेलु ॥ काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥२४०॥ ढूंढत डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥ कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवंतु ॥२४१॥ हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥ ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥२४२॥ कबीर जउ गृहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ बैरागी बंधनु करै ता को बडो अभागु ॥२४३॥

सलोक सेख फरीद के ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लइे लिखाइि ॥ मलकु जि कन्नी सुणीदा मुहु देखाले आइि ॥ जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइि ॥ साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइि ॥ जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइि ॥ आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइि ॥ वालहु निकी पुरसलात कन्नी न सुणी आइि ॥ फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइि ॥१॥ फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलाँ दुनीआँ भति ॥

बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥२॥ किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥ साँईं मेरै चंगा कीता नाही त हंभ भी दझाँ आहि ॥३॥ फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े संमलि बुकु भरी ॥ जे जाणा सहु न्नढड़ा ताँ थोड़ा माणु करी ॥४॥ जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि ॥ तै जेवड़ु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥५॥ फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥ आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवाँ करि देखु ॥६॥ फरीदा जो तै मारनि मुकीआँ तिन्हा न मारे घुंमि ॥ आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥७॥ फरीदा जाँ तउ खटण वेल ताँ तू रता दुनी सिउ ॥ मरग सवाई नीहि जाँ भरिआ ताँ लदिआ ॥८॥ देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥ अगहु नेड़ा आइिआ पिछा रहिआ दूरि ॥९॥ देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥ साँई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥१०॥ फरीदा अखी देखि पतीणीआँ सुणि सुणि रीणे कन्न ॥ साख पकंदी आईआ होर करेंदी वन्न ॥११॥ फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइि ॥ करि साँई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइि ॥१२॥ मः ३ ॥ फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥ आपणा लाइिआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइि ॥ इेहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइि ॥१३॥ फरीदा जिन्ह लोइिण जगु मोहिआ से लोइिण मै डिठु ॥ कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइि बहिठु ॥१४॥ फरीदा कूकेदिआ चाँगेदिआ मती देदिआ नित ॥ जो सैतानि वंञाइिआ से कित फेरहि चित ॥१५॥ फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ जे साँई लोड़हि सभु ॥ इिकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥ ताँ साई दै दरि वाड़ीअहि ॥१६॥ फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइि ॥ जीवदिआ पैरा तलै मुइिआ उपरि होइि ॥१७॥ फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥ किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥१८॥ फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥१९॥ फरीदा इिनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविएम्हि ॥ अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहाँ थीएमि ॥२०॥ फरीदा राती वडीआँ

धुखि धुखि उठनि पास ॥ धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥२१॥ फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइड़िआँ ॥ हेड़ा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥२२॥ फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआँ किकरि बीजै जटु ॥ हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥२३॥ फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ चला त भिजै कंबली रहाँ त तुटै नेहु ॥२४॥ भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥ जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥२५॥ फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥ गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥२६॥ फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिए माँझा दुधु ॥ सभे वसतू मिठीआँ रब न पुजनि तुधु ॥२७॥ फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥ जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥२८॥ रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥ फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥२९॥ अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥ जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥३०॥ साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥ पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥३१॥ साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥३२॥ नाती धोती संबही सुती आइ नचिंदु ॥ फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ॥३३॥ जोबन जाँदे ना डराँ जे सह प्रीति न जाइ ॥ फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥ फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥ एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥३५॥ बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥ फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥३६॥ फरीदा ए विसु गंदला धरीआँ खंडु लिवाड़ि ॥ इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥३७॥ फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥ लेखा रबु मंगेसीआ तू आँहो केर्हे कंमि ॥३८॥ फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु ॥ एहु निदोसाँ मारीऐ हम दोसाँ दा किआ हालु ॥३९॥ घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ॥ सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ ॥४०॥

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ॥ जे सउ वरिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥४१॥ फरीदा बारि पराइऐ बैसणा साँई मुझै न देहि ॥ जे तू इेवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥४२॥ कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥ फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥४३॥ फरीदा इिकना आटा अगला इिकना नाही लोणु ॥ अगै गइे सिंञापसनि चोटाँ खासी कउणु ॥४४॥ पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥ जाइि सुते जीराण महि थीइे अतीमा गड ॥४५॥ फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गइे ॥ कूड़ा सउदा करि गइे गोरी आइि पइे ॥४६॥ फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥ वारी आपो आपणी चले मसाइिक सेख ॥४७॥ फरीदा दुहु दीवी बलमदिआ मलकु बहिठा आइि ॥ गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइिआ बुझाइि ॥४८॥ फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥ कमादै अरु कागदै कुन्ने कोइिलिआह ॥ मंदे अमल करेदिआ इेह सजाइि तिनाह ॥४९॥ फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥ बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥५०॥ फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइि ॥ जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइि ॥५१॥ मः ३ ॥ इिहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तन्नु न होइि ॥ जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइि ॥ भै पइिऐ तनु खीणु होइि लोभु रतु विचहु जाइि ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइि तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइि ॥ नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइि ॥५२॥ फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥५३॥ फरीदा न्नढी कंतु न राविए वडी थी मुईआसु ॥ धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥५४॥ फरीदा सिरु पलिआ दाड़ी पली मुछाँ भी पलीआँ ॥ रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआँ ॥५५॥ फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ जो दिह लधे गाणवे गइे विलाड़ि विलाड़ि ॥५६॥ फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ इेतु न लाइे चितु ॥ मिटी पई अतोलवी कोइि न होसी मितु ॥५७॥ फरीदा मंडप

मालु न लाहि मरग सताणी चिति धरि ॥ साई जाहि सम्हालि जिथै ही तउ वंञणा ॥५८॥ फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥ मतु सरमिंदा थीवही साँई दै दरबारि ॥५९॥ फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भराँदि ॥ दरवेसाँ नो लोड़ीऐ रुखाँ दी जीराँदि ॥६०॥ फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥ गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥६१॥ तती तोइि न पलवै जे जलि टुबी देइि ॥ फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइि ॥६२॥ जाँ कुआरी ता चाउ वीवाही ताँ मामले ॥ फरीदा इेहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥६३॥ कलर केरी छपड़ी आइि उलथे ह्मझ ॥ चिंजू बोड़न्हि ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥६४॥ ह्मसु उडरि कोध्रै पइिआ लोकु विडारणि जाइि ॥ गहिला लोकु न जाणदा ह्मसु न कोध्रा खाइि ॥६५॥ चलि चलि गईआँ पंखीआँ जिन्ही वसाइे तल ॥ फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥६६॥ फरीदा इिट सिराणे भुइि सवणु कीड़ा लड़िए मासि ॥ केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइिआ पासि ॥६७॥ फरीदा भन्नी घड़ी सवन्नवी टुटी नागर लजु ॥ अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥६८॥ फरीदा भन्नी घड़ी सवन्नवी टूटी नागर लजु ॥ जो सजण भुइि भारु थे से किउ आवहि अजु ॥६९॥ फरीदा बे निवाजा कुतिआ इेह न भली रीति ॥ कबही चलि न आइिआ पंजे वखत मसीति ॥७०॥ उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ जो सिरु साँई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥७१॥ जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै काँइि ॥ कुन्ने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइि ॥७२॥ फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिएहि ॥ तै पासहु एइि लदि गइे तूं अजै न पतीणोहि ॥७३॥ फरीदा मनु मैदानु करि टोइे टिबे लाहि ॥ अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥७४॥ महला ५ ॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥ मंदा किस नो आखीऐ जाँ तिसु बिनु कोई नाहि ॥७५॥ फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ पवनि न इिती मामले सहाँ न इिती दुख ॥७६॥ चबण चलण रतन्न से सुणीअर बहि गइे ॥ हेड़े मुती धाह से जानी चलि गइे ॥७७॥ फरीदा

बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥ देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥७८॥ फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥ नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥७९॥ फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥ जिन्हा नैण नींद्रावले तिन्हा मिलणु कुआउ ॥८०॥ फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ ऊचे चड़ि कै देखिआ ताँ घरि घरि एहा अगि ॥८१॥ महला ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥ जो जन पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥८२॥ महला ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवन्नड़ी देह ॥ विरले केई पाईअनि जिन्हा पिआरे नेह ॥८३॥ कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥८४॥ फरीदा डुखा सेती दिहु गइआ सूलाँ सेती राति ॥ खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥८५॥ लम्मी लम्मी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥ बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥८६॥ फरीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूंढेदी न लहाँ ॥ धुखाँ जिउ माँलीह कारणि तिन्हा मा पिरी ॥८७॥ फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ कन्नी बुजे दे रहाँ किती वगै पउणु ॥८८॥ फरीदा रब खजूरी पकीआँ माखिअ नई वह्नि ॥ जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥८९॥ फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआँ खूंडहि काग ॥ अजै सु रबु न बाहुड़िए देखु बंदे के भाग ॥९०॥ कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥ ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥ कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥ जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥९२॥ फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ सरपर मैथै आवणा मरणहु न डरिआहु ॥९३॥ एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥ फरीदा लोकाँ आपो आपणी मै आपणी पई ॥९४॥ आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥९५॥ कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बन्नै धीरु ॥ फरीदा कचै भाँडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥९६॥ फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ

तलि ॥ गोराँ से निमाणीआ बहसनि रूहाँ मलि ॥ आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥९७॥ फरीदा मउतै दा बन्ना डेवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥ अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥ अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह एगाहा ॥९८॥ फरीदा दरीआवै कन्नै बगुला बैठा केल करे ॥ केल करेदे ह्मझ नो अचिंते बाज पए ॥ बाज पए तिसु रब दे केलाँ विसरीआँ ॥ जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआँ ॥९९॥ साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥ आइए बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥ मलकल मउत जाँ आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥ तिन्हा पिआरिआ भाईआँ अगै दिता बंन्हि ॥ वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥ फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥१००॥ फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिन्हा वासु ॥ ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु ॥१०१॥ फरीदा रुति फिरी वणु कंबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥ चारे कुंडा ढूंढीआँ रहणु किथाऊ नाहि ॥१०२॥ फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कंबलड़ी पहिरेउ ॥ जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥१०३॥ मः ३ ॥ काइि पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहिरेइि ॥ नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइि ॥१०४॥ मः ५ ॥ फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥ खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥१०५॥ फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिएनु नाउ ॥ ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥१०६॥ फरीदा पिछल राति न जागिएहि जीवदड़ो मुइएहि ॥ जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिएहि ॥१०७॥ मः ५ ॥ फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥ अलह सेती रतिआ एहु सचावाँ साजु ॥१०८॥ मः ५ ॥ फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु ॥ अलह भावै सो भला ताँ लभी दरबारु ॥१०९॥ मः ५ ॥ फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥११०॥ मः ५ ॥ फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कंमि

॥ मिसल फकीराँ गाखड़ी सु पाईऐ पूर करंमि ॥१११॥ पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥ जो जागंनि् लहंनि से साई कन्नो दाति ॥११२॥ दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इकि जागंदे ना लहनि् इकना् सुतिआ देइ उठालि ॥११३॥ ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥ जिना् नाउ सुहागणी तिना् झाक न होर ॥११४॥ सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥११५॥ सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेनि् ॥ होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥११६॥ सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिड़ु करहि ॥ वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥११७॥ फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीति ॥ इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी रीति ॥११८॥ तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंनि् ॥ पैरी थकाँ सिरि जुलाँ जे मूं पिरी मिलंनि् ॥११९॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी निहालि ॥१२०॥ हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥१२१॥ हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥१२२॥ मै जाणिआ वड हंसु है ताँ मै कीता संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥१२३॥ किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥ जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥१२४॥ सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ॥ इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥१२५॥ कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥ कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥१२६॥ निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ ए त्रै भैणे वेस करि ताँ वसि आवी कंतु ॥१२७॥ मति होदी होइ इआणा ॥ ताण होदे होइ निताणा ॥ अणहोदे आपु वंडाए ॥ को ऐसा भगतु सदाए ॥१२८॥ इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥१२९॥ सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचाँगवा ॥ जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥१३०॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ॥

आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ सरब रहिए भरपूरि सगल घट रहिए बिआपे ॥ ब्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी गति सरब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ अबिनासी अबिगत आपे आपि उतपति ॥ इेकै तूही इेकै अन नाही तुम भति ॥ हरि अंतु नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है स्रब प्रान को अधारु ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि इेक जीह किआ बखानै ॥ हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥१॥ अंमृत प्रवाह सरि अतुल भंडार भरि परै ही ते परै अपर अपार परि ॥ आपुनो भावनु करि मंतृ न दूसरो धरि एपति परलौ इेकै निमख तु घरि ॥ आन नाही समसरि उजीआरो निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीइे हरि हरि ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि इेक जीह किआ बखानै ॥ हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥२॥ सगल भवन धारे इेक थें कीइे बिसथारे पूरि रहिए स्रब महि आपि है निरारे ॥ हरि गुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि थारे सगल को दाता इेकै अलख मुरारे ॥

आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि इेक जीह किआ बखानै ॥ हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥३॥ सरब गुण निधानं कीमति न ग्यानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ मनु धनु तेरो प्रानं इेकै सूति है जहानं कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला है प्रभ सरब को धानं ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि इेक जीह किआ बखानै ॥ हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥४॥ निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ हरखवंत आन्नत रूप निरमल बिगासी ॥ गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ जा कउ होंहि कृपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ धंनि धंनि ते धंनि जन जिह कृपालु हरि हरि भयउ ॥ हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिए ॥५॥ सति सति हरि सति सति सते सति भणीअै ॥ दूसर आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीअै ॥ अंमृतु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाइे ॥ जेह रसन चाखिए तेह जन तृपति अघाइे ॥ जिह ठाकुरु सुप्रसन्नु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ हरि गुरु नानकु जिन् परसिए तिन् सभ कुल कीए उधारु ॥६॥ सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिए ॥ सचै तखति निवासु सचु तपावसु करिए ॥ सचि सिरज्यिउ संसारु आपि आभुलु न भुलउ ॥ रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ जिह कृपालु होयउ गोबिंदु सरब सुख तिनहू पाइे ॥ हरि गुरु नानकु जिन् परसिए ते बहुड़ि फिरि जोनि न आइे ॥७॥ कवनु जोगु कउनु ग्यानु ध्यानु कवन बिधि उस्तति करीअै ॥ सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीअै ॥ ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाइे ॥ अगहु गहिए नही जाइि पूरि स्रब रहिए समाइे ॥ जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइि जन लगे भगते ॥ हरि गुरु नानकु जिन् परसिए ते इित उत सदा मुकते ॥८॥ प्रभ दातउ दातार परि्उ जाचकु इकु सरना ॥ मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥ बिनति करउ अरदासि

सुनहु जे ठाकुर भावै ॥ देहु दरसु मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै ॥ बलिए चरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धरम ॥ प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रहम ॥६॥

सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काची देह मोह फुनि बाँधी सठ कठोर कुचील कुगिआनी ॥ धावत भ्रमत रहनु नही पावत पारब्रहम की गति नही जानी ॥ जोबन रूप माइआ मद माता बिचरत बिकल बडौ अभिमानी ॥ पर धन पर अपवाद नारि निंदा यह मीठी जीअ माहि हितानी ॥ बलबंच छपि करत उपावा पेखत सुनत प्रभ अंतरजामी ॥ सील धरम दया सुच नास्ति आइए सरनि जीअ के दानी ॥ कारण करण समरथ सिरीधर राखि लेहु नानक के सुआमी ॥१॥ कीरति करन सरन मनमोहन जोहन पाप बिदारन कउ ॥ हरि तारन तरन समरथ सभै बिधि कुलह समूह उधारन सउ ॥ चित चेति अचेत जानि सतसंगति भरम अंधेर मोहिए कत धंउ ॥ मूरत घरी चसा पलु सिमरन राम नामु रसना संगि लउ ॥ होछउ काजु अलप सुख बंधन कोटि जन्नम कहा दुख भंउ ॥ सिख्या संत नामु भजु नानक राम रंगि आतम सिउ रंउ ॥२॥ रंचक रेत खेत तनि निरमित दुरलभ देह सवारि धरी ॥ खान पान सोधे सुख भुंचत संकट काटि बिपति हरी ॥ मात पिता भाई अरु बंधप बूझन की सभ सूझ परी ॥ बरधमान होवत दिन प्रति नित आवत निकटि बिखंम जरी ॥ रे गुन हीन दीन माइआ कृम सिमरि सुआमी इक घरी ॥ करु गहि लेहु कृपाल कृपा निधि नानक काटि भरंम भरी ॥३॥ रे मन मूस बिला महि गरबत करतब करत महाँ मुघनाँ ॥ संपत दोल झोल संगि झूलत माइआ मगन भ्रमत घुघना ॥ सुत बनिता साजन सुख बंधप ता सिउ मोहु बढिए सु घना ॥ बोइए बीजु अहं मम अंकुरु बीतत अउध करत अघनाँ ॥ मिरतु मंजार पसारि मुखु निरखत भुंचत भुगति भूख भुखना ॥ सिमरि गुपाल दइआल सतसंगति नानक

जगु जानत सुपना ॥४॥ देह न गेह न नेह न नीता माइिआ मत कहा लउ गारहु ॥ छत्र न पत्र न चउर न चावर बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ रथ न अस्व न गज सिंघासन छिन महि तिआगत नाँग सिधारहु ॥ सूर न बीर न मीर न खानम संगि न कोऊ द्रिसटि निहारहु ॥ कोट न एट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ मित्र न पुत्र कलत्र साजन सख उलटत जात बिरख की छाँरहु ॥ दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ स्रीपति नाथ सरणि नानक जन हे भगवंत क्रिपा करि तारहु ॥५॥ प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥ साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ करम धरम संजम सुच नेमा चंचल संगि सगल बिधि हारी ॥ पसु पंखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिए अति भारी ॥ खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिए दीना नाथ प्रानपति सारी ॥ खान पान मीठ रस भोजन अंत की बार होत कत खारी ॥ नानक संत चरन संगि उधरे होरि माइिआ मगन चले सभि डारी ॥६॥ ब्रहमादिक सिव छंद मुनीसुर रसकि रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ इंद्र मुनिंद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ सिध मनुख्य देव अरु दानव इकु तिलु ता को मरमु न पावत ॥ प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ तिसहि तिआगि आन कउ जाचहि मुख दंत रसन सगल घसि जावत ॥ रे मन मूड़ सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥७॥ माइिआ रंग बिरंग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिए है ॥ एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त्र क्रिमि उदरु भरिए है ॥ दह दिस धाइ महा बिखिआ कउ पर धन छीनि अगिआन हरिए है ॥ जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिए जमदूतन डन्नु मिरतु मरिए है ॥ अनिक जोनि संकट नरक भुंचत सासन दूख गरति गरिए है ॥ प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिए है ॥८॥ गुण समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ अउखध मंत्र तंत्र पर दुख हर

सरब रोग खंडण गुणकारी ॥ काम क्रोध मद मतसर तृसना बिनसि जाहि हरि नामु उचारी ॥ इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ साजन मीत सखा हरि बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ एट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥६॥ आवध कटिए न जात प्रेम रस चरन कमल संगि ॥ दावनि बंधिए न जात बिधे मन दरस मगि ॥ पावक जरिए न जात रहिए जन धूरि लगि ॥ नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पंथि पगि ॥ नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥१॥१०॥ उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ भसम लगाइि तीरथ बहु भ्रमते सूखम देह बंधहि बहु जटूआ ॥ बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइि सूत के हटूआ ॥ पूजा चक्र करत सोमपाका अनिक भाँति थाटहि करि थटूआ ॥२॥११॥२०॥

सवईइे महले पहिले के १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु धिआइि बरदाता ॥ संत सहारु सदा बिखिआता ॥ तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥१॥ गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ गावहि गंभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिए ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिए ॥२॥ गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥ गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ गावै गुण धोमु अटल मंडलवै भगति भाइि रसु जाणिए ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिए ॥३॥ गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरंपर अवतार वरो ॥ गावै जमदगनि परसरामेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिए ॥ उधौ अक्रूरु बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिए ॥ कबि कल सुजसु गावउ

गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिए ॥४॥ गावहि गुण बरन चारि खट दरसन ब्रहमादिक सिमरंथि गुना ॥ गावै गुण सेसु सहस जिहबा रस आदि अंति लिव लागि धुना ॥ गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरंतरि जाणिए ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिए ॥५॥ राजु जोगु माणिए बसिए निरवैरु रिदंतरि ॥ स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिए निरंतरि ॥ गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥ पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिए ॥ हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिए ॥६॥ सतजुगि तै माणिए छलिए बलि बावन भाइए ॥ त्रेतै तै माणिए रामु रघुवंसु कहाइए ॥ दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीए ॥ उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीए ॥ कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइए ॥ स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइए ॥७॥ गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥ नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥ भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥ जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइए ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइए ॥८॥ गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥ महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जंगम ॥ गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि बेद ब्याकरण बीचारिअ ॥ ब्रहमा गुण उचरै जिनि हुकमि सभ स्रिसटि सवारीअ ॥ ब्रहमंड खंड पूरन ब्रहमु गुण निरगुण सम जाणिए ॥ जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिए ॥९॥ गुण गावहि नव नाथ धंनि गुरु साचि समाइए ॥ माँधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइए ॥ गुण गावै बलि राउ सपत पातालि बसंतौ ॥ भरथरि गुण उचरै सदा गुर संगि रह्मतौ ॥ दूरबा परूरउ अंगरै गुर नानक जसु गाइए ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइए ॥१०॥

सवईडे महले दूजे के २ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई पुरखु धन्नु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ सतिगुरू धन्नु नानकु मसतकि तुम धरिए जिनि हथो ॥ त धरिए मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ मारिए कंटकु कालु गरजि धावतु लीए बरजि पंच भूत इेक घरि राखि ले समजि ॥ जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥१॥ जा की द्रिसटि अंम्रित धार कालुख खनि उतार तिमर अग्यान जाहि दरस दुआर ॥ एडि जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर भव उतारि कीडे निरभार ॥ सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि निंमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥२॥ तै तउ द्रिड़िए नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥ तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम बीचार ॥ कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा त्रिबिधि तेरै इेक लिव तार ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥३॥ तै ता हदरथि पाइिए मान सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ हरि हरि दरस समान आतमा वंतगिआन जाणीअ अकल गति गुर परवान ॥ जा की द्रिसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरि सील सनाहु सकति बिदारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥४॥ द्रिसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ सबद सूर बलवंत काम अरु क्रोध बिनासन ॥ लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ आतम रत संग्रहण कहण अंम्रित कल ढालण ॥ सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ गुरु जगत

फिरणसीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥५॥ सदा अकल लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ द्रुम सपूर जिउ निवै खवै कसु बिमल बीचारह ॥ इहै ततु जाणिए सरब गति अलखु बिडाणी ॥ सहज भाइ संचिए किरणि अंम्रित कल बाणी ॥ गुर गमि प्रमाणु तै पाइए सतु संतोखु ग्राहजि लयौ ॥ हरि परसिए कलु समुलवै जन दरसनु लहणे भयौ ॥६॥ मनि बिसासु पाइए गहरि गहु हदरथि दीए ॥ गरल नासु तनि नठयो अमिउ अंतरगति पीए ॥ रिदि बिगासु जागिए अलखि कल धरी जुगंतरि ॥ सतिगुरु सहज समाधि रविए सामानि निरंतरि ॥ उदारउ चित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन ॥ सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु जंपउ लहणे रसन ॥७॥ नामु अवखधु नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ रंगि रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै ॥ नाम परसु जिनि पाइए सतु प्रगटिए रवि लोइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै अठसठि मजनु होइ ॥८॥ सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु भाउ सचु सदा सचु भाखंतु सोहै ॥ सचु पाइए गुर सबदि सचु नामु संगती बोहै ॥ जिसु सचु संजमु वरतु सचु कबि जन कल वखाणु ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै सचु जनमु परवाणु ॥९॥ अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥ गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥१०॥

सवईए महले तीजे के ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई पुरखु सिवरि साचा जा का इकु नामु अछलु संसारे ॥ जिनि भगत भवजल तारे सिमरहु सोई नामु परधानु ॥ तितु नामि रसिकु नानकु लहणा थपिए जेन स्रब सिधी ॥ कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्रीया ॥ कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ उतरि

दखिणहि पुबि अरु पश्चमि जै जै कारु जपंथि नरा ॥ हरि नामु रसनि गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पश्चमि धरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥१॥ सिमरहि सोई नामु जख्य अरु किन्नर साधिक सिध समाधि हरा ॥ सिमरहि नख्यत्र अवर ध्रू मंडल नारदादि प्रहलादि वरा ॥ ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥२॥ सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ चवरासीह सिध बुध जितु राते अंबरीक भवजलु तरिआ ॥ उधउ अक्रूरु तिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥३॥ तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपीसुर मनि वसिआ ॥ सोई नामु सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अंमृत रसिआ ॥ तितु नामि गुरू गंभीर गरूअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥४॥ नाम किति संसारि किरणि रवि सुरतर साखह ॥ उतरि दखिणि पुबि देसि पश्चमि जसु भाखह ॥ जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरि रिदै निवासै ॥ सुरि नर गण गंधरब छिअ दरसन आसासै ॥ भलउ प्रसिधु तेजो तनौ कल्य जोड़ि कर ध्याइअए ॥ सोई नामु भगत भवजल हरणु गुर अमरदास तै पाइए ॥५॥ नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ जह नामु समाधिए हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ नामु सिरोमणि सरब मै भगत रहे लिव धारि ॥ सोई नामु पदारथु अमर गुर तुसि दीए करतारि ॥६॥ सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥ जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ सतिगुरू सेवि सुखु पाइए अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥७॥ नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिष्ट बाणी ॥ धनि सतिगुरु सेविए जिसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ कुल संबूह समुधरे पायउ नाम

निवासु ॥ सकयथु जनमु कल्युचरै गुरु परस्यिउ अमर प्रगासु ॥८॥ बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥ रिधि बसै बाँवाँगि जु तीनि लोकाँतर मोहै ॥ रिदै बसै अकहीउ सोइि रस तिन ही जातउ ॥ मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इितु रंगि रातउ ॥ मसतकि नीसाणु सचउ करमु कल्य जोड़ि कर ध्याइिअउ ॥ परसिअउ गुरू सतिगुर तिलकु सरब इिछ तिनि पाइिअउ ॥९॥ चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय ॥ हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय ॥ जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥ नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥ सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत पित ॥ सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥१॥१०॥ ति नर दुख नह भुख ति नर निधन नहु कहीअहि ॥ ति नर सोकु नहु हुऐ ति नर से अंतु न लहीअहि ॥ ति नर सेव नहु करहि ति नर सय सहस समपहि ॥ ति नर दुलीचै बहहि ति नर उथपि बिथपहि ॥ सुख लहहि ति नर संसार महि अभै पटु रिप मधि तिह ॥ सकयथ ति नर जालपु भणै गुर अमरदासु सुप्रसन्नु जिह ॥२॥११॥ तै पढिअउ इिकु मनि धरिअउ इिकु करि इिकु पछाणिए ॥ नयणि बयणि मुहि इिकु इिकु दुहु ठाँइि न जाणिए ॥ सुपनि इिकु परतखि इिकु इिकस महि लीणउ ॥ तीस इिकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ ॥ इिकहु जि लाखु लखहु अलखु है इिकु इिकु करि वरनिअउ ॥ गुर अमरदास जालपु भणै तू इिकु लोड़हि इिकु मंनिअउ ॥३॥१२॥ जि मति गही जैदेवि जि मति नामै संमाणी ॥ जि मति तृलोचन चिति भगत कंबीरहि जाणी ॥ रुकमाँगद करतूति रामु जंपहु नित भाई ॥ अंमरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति पाई ॥ तै लोभु क्रोधु तृसना तजी सु मति जल्य जाणी जुगति ॥ गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥४॥१३॥ गुरु अमरदासु परसीऐ पुहमि पातिक बिनासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ सिध साधिक आसासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ पउ मुकिहि ॥ गुरु

अमरदासु परसीऐ अभउ लभै गउ चुकिहि ॥ इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंतृ मानवहि लहि ॥ जालपा पदारथ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥५॥१४॥ सचु नामु करतारु सु दृड़ु नानकि संग्रहिअउ ॥ ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ तितु कुलि गुर अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ जो गुण अलख अगंम तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥१॥१५॥ आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ जिह सिखह संग्रहिए ततु हरि चरण मिलायउ ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्‍यिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥२॥१६॥ जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ सरणि परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्‍यिउ गुण करतारै उचरै ॥ गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥३॥१७॥ चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥४॥१८॥ भिखे के ॥ गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥ काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥ गुरु मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥१॥१९॥ रहिए संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ बरसु एकु हउ

फिरिए किनै नहु परचउ लायउ ॥ कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥ हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन् के गुण हउ किआ कहउ ॥ गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥२॥२०॥ पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥ ध्रंम धनखु कर गहिए भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥ भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिए ॥ काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिए ॥ भलउ भूहालु तेजो तना नृपति नाथु नानक बरि ॥ गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥१॥२१॥ घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गन्नत न आवै ॥ रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥ रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जुो गावै ॥ भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥१॥२२॥

सवईए महले चउथे के ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु निरंजनु धिआवउ ॥ गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ गुन गावत मनि होइ बिगासा ॥ सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पायउ ॥ अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ तिसु भेटे दारिद्रु न चंपै ॥ कल्य सहारु तासु गुण जंपै ॥ जंपउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नामु जा कउ फुरिआ ॥ इनि सतगुरु सेवि सबद रसु पाया नामु निरंजन उरि धरिआ ॥ हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥१॥ छुटत परवाह अमिअ अमरा पद अंमृत सरोवर सद भरिआ ॥ ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिनहु सेवा करीआ ॥ तिन भउ निवारि अनभै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥२॥ सतगुर मति गूड़्ह बिमल सतसंगति आतमु रंगि चलूलु भया ॥ जाग्या मनु कवलु सहजि परकास्या अभै निरंजनु

घरहि लहा ॥ सतगुरि दयालि हरि नामु दृड़ाया तिसु प्रसादि वसि पंच करे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥३॥ अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥ सतगुर परसादि परम पदु पाया भगति भाइ भंडार भरे ॥ मेटिआ जनमाँतु मरण भउ भागा चितु लागा संतोख सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥४॥ अभर भरे पायउ अपारु रिद अंतरि धारिए ॥ दुख भंजनु आतम प्रबोधु मनि ततु बीचारिए ॥ सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ सतगुर कै परसादि सहज सेती रंगु माणइ ॥ नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइए ॥ गुर रामदास कल्युचरै तैं अटल अमर पदु पाइए ॥५॥ संतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ मिलत साँति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥ सुख सागरु पाइअउ दिंतु हरि मगि न हुटै ॥ संजमु सतु संतोखु सील सन्नाहु मफुटै ॥ सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूरु बजाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥६॥ जगु जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि इेकु धिआयउ ॥ धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु दृड़ायउ ॥ नव निधि नामु निधानु रिधि सिधि ता की दासी ॥ सहज सरोवरु मिलिए पुरखु भेटिए अबिनासी ॥ आदि ले भगत जितु लगि तरे सो गुरि नामु दृड़ाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥७॥ प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटइ ॥ सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटइ ॥ मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ आजोनी संभविअउ जगतु गुर बचनि तरायउ ॥ अबिगत अगोचरु अपरपरु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु पाइअउ ॥८॥ जगत उधारणु नव निधानु भगतह भव तारणु ॥ अंमृत बूंद हरि नामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ सहज तरोवर फलिए गिआन अंमृत फल लागे ॥ गुर प्रसादि पाईअहि धंनि ते जन बडभागे ॥ ते मुकते भइे सतिगुर सबदि मनि गुर परचा पाइअउ ॥ गुर रामदास

कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥९॥ सेज सधा सहजु छावाणु संतोखु सराइचउ सदा सील सन्नाहु सोहै ॥ गुर सबदि समाचरिए नामु टेक संगादि बोहै ॥ अजोनीउ भल्यु अमलु सतिगुर संगि निवासु ॥ गुर रामदास कल्युचरै तुअ सहज सरोवरि बासु ॥१०॥ गुरु जिन् कउ सुप्रसन्नु नामु हरि रिदै निवासै ॥ जिन् कउ गुरु सुप्रसन्नु दुरतु दूरंतरि नासै ॥ गुरु जिन् कउ सुप्रसन्नु मानु अभिमानु निवारै ॥ जिन् कउ गुरु सुप्रसन्नु सबदि लगि भवजलु तारै ॥ परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु जगि ॥ स्री गुरू सरणि भजु कल्य कबि भुगति मुकति सभ गुरू लगि ॥११॥ सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे ॥ अनभउ नेजा नामु टेक जितु भगत अघाणे ॥ गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥ इहु राज जोग गुर रामदास तुम् हू रसु जाणे ॥१२॥ जनकु सोहि जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ सतु संतोखु समाचरे अभरा सरु भरिआ ॥ अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देहि सु पावै ॥ इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै ॥१३॥ सतिगुर नामु इेक लिव मनि जपै दृड़ु तिन् जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥ तारण तरण खिन मात्र जा कउ दृष्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥ जीअन सभन दाता अगम ग्यान बिख्याता अहिनिसि ध्यान धावै पलक न सोवै जीउ ॥ जा कउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो निधानु पावै गुरमुखि ग्यानि दुरमति मैलु धोवै जीउ ॥ सतिगुर नामु इेक लिव मनि जपै दृड़ु तिन जन दुख पाप कहु कत होवै जीउ ॥१॥ धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ जा की सेवा सिध साध मुनि जन सुरि नर जाचहि सबद सारु इेक लिव लाई है ॥ फुनि जानै को तेरा अपारु निरभउ निरंकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई है ॥ भरम भूले संसार छुटहु जूनी संघार जम को न डंड काल गुरमति ध्याई है ॥ मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिसि जपु धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥२॥ हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ कवन उपमा देउ कवन सेवा सरेउ इेक मुख रसना रसहु जुग जोरि कर ॥ फुनि मन बच

क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरि रिद धर ॥ नल्य कवि पारस परस कच कंचना हुइ चंदना सुबासु जासु सिमरत अन तर ॥ जा के देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥३॥ राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ प्रथमे नानक चंदु जगत भयो आन्नदु तारनि मनुख्य जन कीअउ प्रगास ॥ गुर अंगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पंच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ गुर अमरु गुरू स्री सति कलिजुगि राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ सभ बिधि मान्यिउ मनु तब ही भयउ प्रसन्नु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥४॥ रड ॥ जिसहि धारि्उ धरति अरु विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि कीअउ ॥ ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरूअ फल फुल दीअउ ॥ सुरि नर सपत समुद्र किअ धारिए तृभवण जासु ॥ सोई इेकु नामु हरि नामु सति पाइिए गुर अमर प्रगासु ॥१॥५॥ कचहु कंचनु भइिअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिए ॥ बिखु ते अंमृतु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥ लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥ पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइिअ ॥ सतिगुरू चरन जिन् परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइिअ ॥२॥६॥ जामि गुरू होइि वलि धनहि किआ गारवु दिजइि ॥ जामि गुरू होइि वलि लख बाहे किआ किजइि ॥ जामि गुरू होइि वलि गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ जामि गुरू होइि वलि सबदु साखी सु सचह घरि ॥ जो गुरू गुरू अहिनिसि जपै दासु भटु बेनति कहै ॥ जो गुरू नामु रिद महि धरै सो जनम मरण दुह थे रहै ॥३॥७॥ गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ गुरु करु सचु बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ गुरु करु सबद सपुन्न अघन कटहि सभ तेरे ॥ गुरु नयणि बयणि गुरु गुरु करहु गुरू सति कवि नल्य कहि ॥ जिनि गुरू न देखिअउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ॥४॥८॥ गुरू गुरू गुरु करु मन

मेरे ॥ तारण तरण सम्रथु कलिजुगि सुनत समाधि सबद जिसु केरे ॥ फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरउ जो धरत धिआनु बसत तिह नेरे ॥ पूरउ पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥५॥९॥ गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ हुती जु पिआस पिऊस पिवन्न की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥ पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दह्म दिसि धायउ ॥ गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ ॥ गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥६॥१०॥ समरथ गुरू सिरि हथु धर्‌उ ॥ गुरि कीनी कृपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरन्न अघन्न हर्‌उ ॥ निसि बासुर इेक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डर्‌उ ॥ भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु कर्‌उ ॥ रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धर्‌उ ॥७॥११॥ अब राखहु दास भाट की लाज ॥ जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥ फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पढ़त पूरे तिह काज ॥ स्री सतिगुर सुप्रसन्न कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥८॥१२॥ झोलना ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ सबदु हरि हरि जपै नामु नव निधि अपै रसनि अहिनिसि रसै सति करि जानीअहु ॥ फुनि प्रेम रंग पाईऐ गुरमुखहि धिआईऐ अन्न मारग तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ बचन गुर रिदि धरहु पंच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ जउ त सभ सुख इत उत तुम बंछवहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥१॥१३॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपि सति करि ॥ अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिसि करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु संत गुरसिख तरहु नाम सच रंग सरि ॥ सदा निरवैरु निरंकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सबद रसि करत दृड़ु भगति हरि ॥ मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुरु गुरू

गुरु गुरू जपु सति करि ॥२॥१४॥ गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ उदधि गुरु गहिर गंभीर बेअंतु हरि नाम नग हीर मणि मिलत लिव लाईऐ ॥ फुनि गुरू परमल सरस करत कंचनु परस मैलु दुरमति हिरत सबदि गुरु ध्याईऐ ॥ अंमृत परवाह छुटकंत सद द्वारि जिसु ग्यान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ ॥ नामु निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥३॥१५॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मन्न रे ॥ जा की सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कन्न रे ॥ फुनि तरहि ते संत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिए प्रहलादु गुर मिलत मुनि जन्न रे ॥ तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लगि तजहु रस अन्न रे ॥ दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मन्न रे ॥४॥१६॥२६॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥ करी कृपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥ स्री प्रहलाद भगत उधरीअं ॥ हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ साधिक सिध सगल सरणाई ॥ गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥ गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥ लहणै पंथु धरम का कीआ ॥ अमरदास भले कउ दीआ ॥ तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥ हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअं ॥ बंदहि जो चरण सरणि सुखु पावहि परमान्नद गुरमुखि कहीअं ॥ परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥१॥ जिह अंमृत बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाए ॥ आन्नदु नित मंगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते ॥ जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ग्यानि रते ॥ रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि

मुनि बंछहि जा की सरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥२॥ संसारु अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरू मुखि पाया ॥ जगि जनम मरणु भगा इह आई हीऐ परतीति ॥ परतीति हीऐ आई जिन जन कै तिन् कउ पदवी उच भई ॥ तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम क्रोध की बृथा गई ॥ अवलोक्या ब्रहमु भरमु सभु छुटक्या दिब्य दृष्टि कारण करणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥३॥ परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया जसु जन कै ॥ इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इस्नानु ॥ इस्नानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ कंचनु तनु होइि परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥ जगजीवनु जगन्नाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥४॥ जिनहु बात निश्चल धूअ जानी तेई जीव काल ते बचा ॥ तिन् तरिए समुद्रु रुद्रु खिन इक महि जलहर बिंब जुगति जगु रचा ॥ कुंडलनी सुरझी सतसंगति परमान्नद गुरू मुखि मचा ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रंम सेवीऐ सचा ॥५॥ वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बंम्यु ग्यानु ध्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥१॥६॥ राम नाम परम धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ सुथर चित भगत हित भेखु धरिए हरनाखसु हरिए नख बिदारि जीउ ॥ संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीए छदम अपरंपर पारब्रहम लखै कउनु ताहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥२॥७॥ पीत बसन कुंद दसन पृअ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥

बेवजीर बडे धीर धरम अंग अलख अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिए साहन कै साहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥३॥८॥ सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरु गुबिंद जीउ ॥ बलिहि छलन सबल मलन भग्ति फलन कान्ह कुअर निहकलम्क बजी डंक चड़्ह्रू दल रविंद जीउ ॥ राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद जीउ ॥ जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिए जिनि गिंद जीउ ॥ नामु सारु हीड़े धारु तजु बिकारु मन गयंद सतिगुरू सतिगुरू सतिगुर गुबिंद जीउ ॥४॥६॥ सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मंत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि परम गति जीउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जण जण सिउ छाडु धोहु हउमै का फंधु काटु साधसंगि रति जीउ ॥ देह गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन कमल सदा सेउ दृड़ता करु मति जीउ ॥ नामु सारु हीड़े धारु तजु बिकारु मन गयंद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥५॥१०॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥ ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥ चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥१॥११॥ वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ आपे हसै आपि ही चितवै आपे चंदु सूरु परगासा ॥ आपे जलु आपे थलु थम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा ॥ आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥२॥१२॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रह्या अंमृत ते मीठे जा के बचना ॥ मानहि

ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ गुर प्रसादि पाईऐ परमारथु सतसंगति सेती मनु खचना ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहगुरू तेरी सभ रचना ॥३॥१३॥४२॥ अगमु अन्नतु अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ सिव बिरंचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ निरंकारु निरवैरु अवरु नही दूसर कोई ॥ भंजन गड्डण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ नाना प्रकार जिनि जगु कीए जनु मथुरा रसना रसै ॥ स्री सति नामु करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥१॥ गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति सम्हारन कउ ॥ फुनि ध्रंम धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग निवारन कउ ॥ मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ हरि नामु बोहिथु बडौ कलि मै भव सागर पारि उतारन कउ ॥२॥ संतत ही सतसंगति संग सुरंग रते जसु गावत है ॥ ध्रम पंथु धरिए धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत है ॥ मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इछत ही फल पावत है ॥ रवि के सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरन्न गुरू चितु लावत है ॥३॥ निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥ गहिर गंभीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ संत मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिए दुख कागरु ॥ कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥४॥ जा कउ मुनि ध्यानु धरै फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ बेद बाणी सहित बिरंचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात कबिलास कंउ ॥ जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट भेख कीइे फिरत उदास कउ ॥ सु तिनि सतिगुरि सुख भाइ कृपा धारी जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥५॥ नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे ॥ देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ सेवक सिख सदा अति लुभित अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ बिद्यमान गुरि आपि थप्यउ थिरु साचउ तखतु गुरू रामदासै

॥६॥ तारउ संसारु माया मद मोहित अंमृत नामु दीअउ समरथु ॥ फुनि कीरतिवंत सदा सुख संपति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥ दानि बडौ अतिवंतु महाबलि सेवकि दासि कहिए इहु तथु ॥ ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिए गुरि हथु ॥७॥४६॥ तीनि भवन भरपूरि रहिए सोई ॥ अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ अबिनासी अचलु अजोनी संभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥१॥ सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ अंगदि अन्नत मूरति निज धारी अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥२॥ नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥ अंबरीकु जयदेव तृलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥ तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥३॥ मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥ बाचा करि सिमरंत तुझै तिन् दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥ करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥४॥ जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥५॥५४॥ जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइए सेवा करत न छोडिए पासु ॥ ता ते गउहरु

ग्यान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अंध्यार को नासु ॥ कवि कीरत जो संत चरन मुड़ि लागहि तिन्ह काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ जिव अंगदु अंगि संगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥१॥ जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ ता ते संगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर प्रगट सुबासु ॥ ध्रू प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लैत उपज्यो जु प्रगासु ॥ जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई संत सहारु गुरू रामदासु ॥२॥ नानकि नामु निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ ता ते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई ॥ गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ सोढी सृष्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥३॥ हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अंमृतु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ इकु उतम पंथु सुनिए गुर संगति तिह मिलन्त जम त्रास मिटाई ॥ इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥४॥५८॥ मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़उ ॥ क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़उ ॥ जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मन्नै ॥ भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सुप्रसन्नै ॥ सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥ गुर रामदास सचु सल्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥१॥ तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ आदि जुगादि अनादि कला धारी तृहु लोअह ॥ अगम निगम उधरण जरा जंमिहि आरोअह ॥ गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥ अघ अंतक बदै न सल्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥२॥६०॥

सवईए महले पंजवे के ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरं सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ सतिगुर चरण कवल

रिदि धारं ॥ गुर अरजुन गुण सहजि बिचारं ॥ गुर रामदास घरि कीअउ प्रगासा ॥ सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिए ॥ कल्य जोड़ि कर सुजसु वखाणिए ॥ भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ सबदु गुरू परकासिए हरि रसन बसायउ ॥ गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥१॥ बडभागी उनमानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु दृड़्हायउ ॥ अगमु अगोचरु पारब्रहमु सतिगुरि दरसायउ ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥२॥ जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥ गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥ गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपरंपरु बीणा ॥३॥ खेलु गूड़्हउ कीअउ हरि राइ संतोखि समाचर्‍िए बिमल बुधि सतिगुरि समाणउ ॥ आजोनी संभविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ गुरि नानकि अंगदु वर्‍उ गुरि अंगदि अमर निधानु ॥ गुरि रामदास अरजुनु वर्‍उ पारसु परसु प्रमाणु ॥४॥ सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी संभउ ॥ भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अन्नभउ ॥ अगह गहणु भ्रमु भ्राँति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥ आसंभउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥ नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ ॥ धनु धन्नु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ ॥५॥ जै जै कारु जासु जग अंदरि मंदरि भागु जुगति सिव रहता ॥ गुरु पूरा पायउ बड भागी लिव लागी मेदनि भरु सहता ॥ भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्य सहारु तोहि जसु बकता ॥ कुलि सोढी गुर रामदास तनु धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥६॥ ध्रंम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ सबद सारु हरि सम उदारु अह्मेव निवारणु ॥ महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥ सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नव निधि न निखुटै ॥ गुर रामदास तनु सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै राज जोग रसु

जाणिअउ ॥७॥ भै निरभउ माणिअउ लाख महि अलखु लखायउ ॥ अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुरि परचायउ ॥ गुर परचै परवाणु राज महि जोगु कमायउ ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ गुर गम प्रमाणि अजरु जरिए सरि संतोख समाइियउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइियउ ॥८॥ अमिउ रसना बदनि बर दाति अलख अपार गुर सूर सबदि हउमै निवार्‍उ ॥ पंचाहरु निदलिअउ सुन्न सहजि निज घरि सहार्‍उ ॥ हरि नामि लागि जग उधर्‍उ सतिगुरु रिदै बसाइिअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै जनकह कलसु दीपाइिअउ ॥९॥ सोरठे ॥ गुरु अरजुनु पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नही ॥ नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥१॥ भवजलु साइिरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ तुअ सतिगुर सं हेतु नामि लागि जगु उधर्‍उ ॥२॥ जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइिअउ ॥ अब नाहि अवर सरि कामु बारंतरि पूरी पड़ी ॥३॥१२॥ जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥ ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अंमृत बयण ॥ मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥१॥ सति रूपु सति नामु सतु संतोखु धरिए उरि ॥ आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥ पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥ भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइि चितु सनमुख रहहु ॥ कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल सृष्टि लगि बितरहु ॥२॥ तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥ परम अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥ अपर परंपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ मथुरा को प्रभु स्रब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइि रहिए मिलि

राम सिउ ॥३॥ अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ फुनि बेद बिरंचि बिचारि रहिए हरि जापु न छाड्यिउ इक घरी ॥ मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति सृष्टि निहालु करी ॥ रामदासि गुरू जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥४॥ जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन् अंमृत नामु पीअउ ॥ इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥ परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥५॥ जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥ ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ जप्यउ जिन् अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥६॥ कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिए भरि ॥ भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥७॥१६॥ अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रहमा मुखि गावै ॥ अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अंमृतु मुखि लीअउ ॥ गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ हरिबंस जगति जसु संचर्‍उ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥१॥ देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥ असुर गए ते भागि पाप तिन् भीतरि कंपहि ॥ काटे सु पाप तिन् नरहु के गुरु रामदासु जिन् पाइयउ ॥ छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥२॥२१॥९॥११॥१०॥१०॥२२॥६०॥१४३॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सलोक वाराँ ते वधीक ॥ महला १ ॥

उतंगी पैएहरी गहिरी गंभीरी ॥ ससुड़ि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ थणी ॥ गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीइे धउलहरी ॥ से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थणी ॥१॥ सुणि मुंधे हरणाखीइे गूड़ा वैणु अपारु ॥ पहिला वसतु सिञाणि कै ताँ कीचै वापारु ॥ दोही दिचै दुरजना मित्राँ कूं जैकारु ॥ जितु दोही सजण मिलनि लहु मुंधे वीचारु ॥ तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ तिस सउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु ॥ नानक जिन्ही इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥२॥ जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़न्न् कल ॥ ताहू खरे सुजाण वंञा इेन्ही कपरी ॥३॥ झड़ झखड़ एहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ सतिगुर सिउ आलाइि बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥४॥ नानक दुनीआ कैसी होई ॥ सालकु मितु न रहिए कोई ॥ भाई बंधी हेतु चुकाइिआ ॥ दुनीआ कारणि दीनु गवाइिआ ॥५॥ है है करि कै एहि करेनि ॥ गल्हा पिटनि सिरु खोहेनि ॥ नाउ लैनि अरु करनि समाइि ॥ नानक तिन बलिहारै जाइि ॥६॥ रे मन डीगि न डोलीऐ सीधै मारगि धाउ ॥ पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ सहसै जीअरा परि रहिए मा कउ अवरु न ढंगु ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ हरि प्रीतम सिउ संगु ॥७॥ बाघु मरै मनु मारीऐ जिसु सतिगुर दीखिआ होइि ॥ आपु पछाणै हरि

मिलै बहुड़ि न मरणा होइि ॥ कीचड़ि हाथु न बूडई इेका नदरि निहालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥८॥ अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधि जलु नाहि ॥ जनमि मरै भरमाईअै जे लख करम कमाहि ॥ जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइि ॥ नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइि ॥९॥ कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइि ॥ मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधी आइि ॥ सरवरु ह्मसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ॥ साकत सिउ अैसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ॥ संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ निरमलु न्हावणु नानका गुरु तीरथु दरीआउ ॥१०॥ जनमे का फलु किआ गणी जाँ हरि भगति न भाउ ॥ पैधा खाधा बादि है जाँ मनि दूजा भाउ ॥ वेखणु सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥११॥ हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ॥१२॥ नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ जिस नो लाइे तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥ पिरम पैकामु न निकलै लाइिआ तिनि सुजाणि ॥१३॥ भाँडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥ धातू पंजि रलाइि कूड़ा पाजिआ ॥ भाँडा आणगु रासि जाँ तिसु भावसी ॥ परम जोति जागाइि वाजा वावसी ॥१४॥ मनहु जि अंधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥ इिकि कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इिकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति ॥ इिकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लह्मति ॥ नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥१५॥ सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥ जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥ सील संतोख का रखै धरमु ॥ बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥ सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥१६॥ खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ पुन्न दान का करै सरीरु ॥ खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ सो खत्री दरगह परवाणु ॥ लबु लोभु जे कूड़ु कमावै ॥ अपणा कीता आपे पावै ॥१७॥ तनु न तपाइि तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी

किआ फेड़िआ अंदरि पिरी समालि ॥१८॥ सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥ नानक ते सोहागणी जिना गुरमुखि परगटु होइ ॥१९॥ जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥२०॥ नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥२१॥ गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ अंध वरतावा भाउ दूजा ॥२२॥ गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ सच बिनु साखी मूलो न बाकी ॥२३॥ माणू घलै उठी चलै ॥ सादु नाही इवेही गलै ॥२४॥ रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥ सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूए सरापि ॥ नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥२५॥ मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥ भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥२६॥ लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥२७॥ महला ३ ॥ लाहौर सहरु अंम्रित सरु सिफती दा घरु ॥२८॥ महला १ ॥ उदोसाहै किआ नीसानी तोटि न आवै अन्नी ॥ उदोसीअ घरे ही वुठी कुड़िईं रन्नी धंमी ॥ सती रन्नी घरे सिआपा रोवनि कूड़ी कंमी ॥ जो लेवै सो देवै नाही खटे दंम सहमी ॥२९॥ पबर तूं हरीआवला कवला कंचन वंनि ॥ कै दोखड़ै सड़िओहि काली होईआ देहुरी नानक मै तनि भंगु ॥ जाणा पाणी ना लहाँ जै सेती मेरा संगु ॥ जितु डिठै तनु परफुड़ै चड़ै चवगणि वंनु ॥३०॥ रजि न कोई जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥ गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥ सरफै सरफै सदा सदा इवै गई विहाइ ॥ नानक किस नो आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥३१॥ दोसु न देअहु राइ नो मति चलै जाँ बुढा होवै ॥ गलाँ करे घणेरीआ ताँ अन्ने पवणा खाती टोवै ॥३२॥ पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे माँहि समाँही ॥३३॥

सलोक महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अभिआगत इेह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥१॥ अभै निरंजन परम पदु ता का भीखकु होइि ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाइे कोइि ॥२॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥३॥ ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥ फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥ पाहि इेते जाहि वीसरि नानका इिकु नामु ॥ सभ बुधी जालीअहि इिकु रहै ततु गिआनु ॥४॥ माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइि ॥ नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइि ॥५॥ जिनी नामु विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ धंधा माइिआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ जिन्हा वेलि न तूंबड़ी माइिआ ठगे ठगि ॥ मनमुखि बंन्हि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ आपि भुलाइे भुलीअै आपे मेलि मिलाइि ॥ नानक गुरमुखि छुटीअै जे चलै सतिगुर भाइि ॥६॥ सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ नानक सचा इेकु दरु बीभा परहरि आहि ॥७॥ नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइि ॥ जह देखा तह इेकु है गुरमुखि परगटु होइि ॥८॥ दूख विसारणु सबदु है जे मंनि वसाइे कोइि ॥ गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइि ॥९॥ नानक हउ हउ करते खपि मुइे खूहणि लख असंख ॥ सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलम्ख ॥१०॥ जिना सतिगुरु इिक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइि ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै माइिआ की भुख जाइि ॥ से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइि ॥ नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥११॥ जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइि ॥ बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइि ॥ तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइि ॥ मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइि ॥ भै भगती

भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा पूरि मिलाइ ॥ हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरि गुण गाइ ॥ धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ ॥१२॥ सतिगुरू न सेविए सबदु न रखिए उर धारि ॥ धिगु तिना का जीविआ कितु आइे संसारि ॥ गुरमती भउ मनि पवै ताँ हरि रसि लगै पिआरि ॥ नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥१३॥ माइिआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि न होइ ॥ काम क्रोधि मनु हिरि लइिआ मनमुख अंधा लोइ ॥ गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ ॥ नाम रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ नामहीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥१४॥ गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ॥ नामु पदारथु पाइिआ अतुट भरे भंडार ॥ हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ॥ नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥१५॥ गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंमृत नामु सुख वासु ॥ नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम प्रगासु ॥१६॥ काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलि आइे पाइ ॥ इिकि उपजहि इिकि बिनसि जाँहि हुकमे आवै जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछू न जाइ ॥१७॥ जिन कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ सतिगुरि मिले उलटी भई मरि जीविआ सहजि सुभाइ ॥ नानक भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥१८॥ मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ कीता करतिआ बिरथा गइिआ इिकु तिलु थाइ न पाई ॥ पुन्न दानु जो बीजदे सभ धरम राइ कै जाई ॥ बिनु सतिगुरू जमकालु न छोडई दूजै भाइ खुआई ॥ जोबनु जाँदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाइे नाउ वसै मनि आई ॥ नानक से वडे वडभागी जि गुरमुखि नामि समाई ॥१९॥ मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै

दुख रोइ ॥ आतमा रामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥ नानक बिनु नावै मैलिआ मुइे जनमु पदारथु खोइ ॥२०॥ मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥ बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ एना आपणी अंदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥ गिआनीआ अंदरि गुर सबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥ गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥२१॥ माइिआ भुइिअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइि ॥ बिखु का मारणु हरि नामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाइि ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइि ॥ मिलि सतिगुर निरमलु होइिआ बिखु हउमै गइिआ बिलाइि ॥ गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइि ॥ जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइि ॥२२॥ सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइि ॥ निरवैरै नालि वैरु रचाइिदा अपणै घरि लूकी लाइि ॥ अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइि ॥ कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइि ॥ बिखु माइिआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइि ॥ बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइि ॥ हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइि ॥ हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइि ॥ जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइि ॥२३॥ नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जम पुरि जाँहि ॥ नानक बिनु नावै सुखु नही आइि गइे पछुताहि ॥२४॥ चिंता धावत रहि गइे ताँ मनि भइिआ अन्नदु ॥ गुर प्रसादी बुझीऐ सा धन सुती निचिंद ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविंदु ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइिआ परमान्नदु ॥२५॥ सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लैनि हरि नामु रखहि उर धारि ॥ ऐथै एथै मन्नीअनि हरि नामि लगे वापारि ॥ गुरमुखि सबदि सिञापदे तितु साचै दरबारि ॥ सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ॥ जमकालु नेड़ि न

आवई आपि बखसे करतारि ॥ नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥२६॥ जन की टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ वडभागी नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥२७॥ लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंती वार ॥ बिनु हरि साँति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥ तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥२८॥ असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥ हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ हरि जीउ लेखै वार न आवई तूं बखसि मिलावणहारु ॥ गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्‍ जैकारु ॥२९॥ विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ॥ गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंनि् ॥ नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहंनि् ॥३०॥ मनमुख नामु न चेतिए धिगु जीवणु धिगु वासु ॥ जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिए गुणतासु ॥ इहु मनु सबदि न भेदिए किउ होवै घर वासु ॥ मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु ॥ हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥३१॥ सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥३२॥ हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ कोई ॥ गुर की पउड़ी जाइ चड़ै करमि परापति होई ॥ अंतरि आइ वसै गुर सबदु

वीचारै कोइ ॥ नानक सबदि मरै मनु मानीऐ साचे साची सोइ ॥३३॥ माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ मेरा मेरा करदे पचि मुए हउमै करत विहाइ ॥ मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ॥ गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभु देखिआ ब्रहमु सुभाइ ॥ नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजलि पारि लम्घाइ ॥३४॥ बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरि नामु देइ आधारु ॥ गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरि धारि ॥ तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥३५॥ बिनु सबदै जगतु बरलिआ कहणा कछू न जाइ ॥ हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणत बणाइ ॥३६॥ होम जग सभि तीरथा पड़्हि पंडित थके पुराण ॥ बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥ सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥३७॥ माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ वड भागु होवै सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ हरि नामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥३८॥ बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥३९॥ लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥ अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ मुह काले तिन्ह लोभीआँ जासनि जनमु गवाइ ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरि गुन गाइ ॥४०॥ धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥ चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ खेति सरीरि जो बीजीऐ

सो अंति खलोआ आइि ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइि ॥४१॥ मन आवण जाणु न सुझई ना सुझै दरबारु ॥ माइिआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु ॥ तब नरु सुता जागिआ सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ गुरमुखाँ कराँ उपरि हरि चेतिआ से पाइिनि मोख दुआरु ॥ नानक आपि एहि उधरे सभ कुटंब तरे परवार ॥४२॥ सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥ हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै ॥ बिनु सबदै मुआ है सभु कोइि ॥ मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइि ॥ हरि नामु न चेतहि अंति दुखु रोइि ॥ नानक करता करे सु होइि ॥४३॥ गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥ एइि सदा अन्नदि बिबेक रहहि दुखि सुखि इेक समानि ॥ तिना नदरी इिको आइिआ सभु आतम रामु पछानु ॥४४॥ मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही ॥ विचि हउमै करम कमावदे सभ धरम राइि कै जाँही ॥ गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइि ॥ एना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइि ॥ मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइि ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइि ॥४५॥ बुरा करे सु केहा सिझै ॥ आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ मनमुखि कमला रगड़ै लुझै ॥ गुरमुखि होइि तिसु सभ किछु सुझै ॥ नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥४६॥ जिना सतिगुरु पुरखु न सेविए सबदि न कीतो वीचारु ॥ एइि माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ एना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ मनमुख मुइे विकार महि मरि जंमहि वारो वार ॥ जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥४७॥ हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ गुरमती हरि पाइिआ माइिआ मोह परजालि ॥ हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइिआ नालि ॥४८॥ मनमुख दह दिसि फिरि रहे

अति तिसना लोभ विकार ॥ माइिआ मोहु न चुकई मरि जंमहि वारो वार ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइिआ अति तिसना तजि विकार ॥ जनम मरन का दुखु गइिआ जन नानक सबदु बीचारि ॥४६॥ हरि हरि नामु धिआइि मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥५०॥ धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जाँ सतिगुर की कार कमाइि ॥ तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लइे हुकमि फिराउ ॥ जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ इेवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ सदा सचे के गुण गावाँ भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ पैनणु गुण चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइि ॥ तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइि ॥ सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै ताँ पाइि ॥ इिकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइि फिराइि ॥ संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ नानक हुकमु तिना मनाइिसी भाई जिना धुरे कमाइिआ नाउ ॥ तिन् विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥५१॥ से दाड़ीआँ सचीआ जि गुर चरनी लगंनि् ॥ अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंनि् ॥ नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंनि् ॥५२॥ मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर माँहि समाँहि ॥ सची रासी सचु धनु उतम पदवी पाँहि ॥ सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि ॥ नानक विणु सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जाँहि ॥५३॥ बाबीहा पृउ पृउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ गुर मिले सीतल जलु पाइिआ सभि दूख निवारणहारु ॥ तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ नानक गुरमुखि साँति होइि नामु रखहु उरि धारि ॥५४॥ बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ लिव लाइि ॥ बोलिआ तेरा थाइि पवै गुरमुखि होइि अलाइि ॥ सबदु चीनि तिख उतरै मंनि लै

रजाइि ॥ चारे कुंडा झोकि वरसदा बूंद पवै सहजि सुभाइि ॥ जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइि ॥ नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइि ॥५५॥ बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइि ॥ सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइि ॥ आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइि ॥ झिमि झिमि अंमृतु वरसदा तिसना भुख सभ जाइि ॥ कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइि ॥ नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइि ॥५६॥ धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइि ॥ इंदु वरसै दइिआ करि गूड़्ही छहबर लाइि ॥ बाबीहे तनि मनि सुखु होइि जाँ ततु बूंद मुहि पाइि ॥ अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइि ॥ अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइि ॥ आपे सचा बखसि लइे करि किरपा करै रजाइि ॥ हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइि ॥ भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिव लाइि ॥ नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लइे छडाइि ॥५७॥ बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊडि चड़्हहि आकासि ॥ सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ नानक घटि घटि इेको वरतदा सबदि करे परगास ॥५८॥ नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि समाइि ॥ हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइि ॥५९॥ सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइि ॥ नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइि ॥६०॥ नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइि ॥ हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइि ॥६१॥ वडड़ै झालि झलुंभलै नावड़ा लईऐ किसु ॥ नाउ लईऐ परमेसरै भंन्नण घड़ण समरथु ॥६२॥ हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ जिनि जगतु उपाइि हरि रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ आपु छोडहि ताँ सहु मिलै सचा इेहु वीचारु ॥ हउमै फिका बोलणा बुझि न सका कार ॥ वणु तृणु तृभवणु तुझै धिआइिदा अनदिनु सदा विहाण ॥ बिनु सतिगुर किनै

न पाइआ करि करि थके वीचार ॥ नदरि करहि जे आपणी ताँ आपे लैहि सवारि ॥ नानक गुरमुखि जिन्ी धिआइआ आइे से परवाणु ॥६३॥ जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ नानक घरि बैठिआ जोगु पाईअै सतिगुर कै उपदेसि ॥६४॥ चारे कुंडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोख दुआर ॥६५॥ नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चल चित ॥ मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइि चितु ॥ जंमण मरण का मूलु कटीअै ताँ सुखु होवी मित ॥६६॥ भुलिआँ आपि समझाइिसी जा कउ नदरि करे ॥ नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥६७॥

सलोक महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

वडभागीआ सोहागणी जिन्ा गुरमुखि मिलिआ हरि राइि ॥ अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइि ॥१॥ वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइि ॥ जितु मिलिअै तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइि ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सति पुरखु है जिस नो समतु सभ कोइि ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइि ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रहमु वीचारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरू है जि सचु दृड़ाइे सोइि ॥ नानक सतिगुर वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइि ॥२॥ हरि प्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनन्दु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानन्दु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥३॥ मूं पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ हउ ढूढेदी तिन सजण सचि सवारिआ ॥ सतिगुरु मैडा मितु है जे मिलै त इहु मनु वारिआ ॥ देंदा मूं पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥ नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥४॥ हउ खड़ी निहाली पंधु मतु मूं सजणु आवइे ॥ को आणि मिलावै अजु मै पिरु

मेलि मिलावड़े ॥ हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खन्नीऐ जो मै पिरी दिखावड़े ॥ नानक हरि होइ दइआलु ताँ गुरु पूरा मेलावड़े ॥५॥ अंतरि जोरु हउमै तनि माइआ कूड़ी आवै जाइ ॥ सतिगुर का फुरमाइआ मंनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जो इछै सो फलु पाइ ॥ जिनी सतिगुरु मंनिआँ हउ तिन के लागउ पाइ ॥ नानकु ता का दासु है जि अनदिनु रहै लिव लाइ ॥६॥ जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ तृपतीऐ ॥ नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥७॥ जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर बाहरे ॥ जाँ सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भी हरे ॥८॥ जिना गुरमुखि अंदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ राती अतै डेहु नानक प्रेमि समाइआ ॥९॥ गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥ अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥१०॥ सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ कबहू न होवै भंगु नानक हरि गुण गाईऐ ॥११॥ जिन्हा अंदरि सचा नेहु किउ जीवन्हि पिरी विहूणिआ ॥ गुरमुखि मेले आपि नानक चिरी विछुंनिआ ॥१२॥ जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥ नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु हरि ॥१३॥ गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ जि गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥ गुरमुखि नानक पावै पारु ॥१४॥ जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जि आपि बखसे करतारि ॥ नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जि मेले सिरजणहारि ॥१५॥ गुर पीराँ की चाकरी महाँ करड़ी सुख सारु ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाइे हेत पिआरु ॥ सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥१६॥ मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है माइआ मोहु वधाइ ॥ दरगहि लेखा मंगीऐ

कोई अंति न सकी छडाइ ॥ बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥१७॥ गुरमुखि हुकमु मन्ने सह केरा हुकमे ही सुखु पाइे ॥ हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाइे ॥ हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाइे ॥ सदा सुहागणि जि हुकमै बुझै सतिगुरु सेवै लिव लाइे ॥ नानक कृपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लइे मिलाइे ॥१८॥ मनमुखि हुकमु न बुझे बपुड़ी नित हउमै करम कमाइ ॥ वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि बेधे जिउ हसती छारु उडाइे ॥ जिनि उपाइे तिसै न चेतहि बिनु चेते किउ सुखु पाइे ॥ नानक परपंचु कीआ धुरि करतै पूरबि लिखिआ कमाइे ॥१६॥ गुरमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ अंतरि सतिगुरु गुरू सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ मन्नीऐ सतिगुर परम बीचारी जितु मिलिऐ तिसना भुख सभ जाइ ॥ हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ ॥२०॥ जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ अंतरि बाहरि हउ फिराँ भी हिरदै रखा समालि ॥२१॥ जिना इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भइे लिव लाइ ॥ गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥२२॥ मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥२३॥ सभना रागाँ विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ॥ रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते सोझी पाइ ॥ सभु किछु

तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥२४॥ सतिगुर विचि अंमृत नामु है अंमृतु कहै कहाइ ॥ गुरमती नामु निरमलो निरमल नामु धिआइ ॥ अंमृत बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सतिगुरु तिन कउ मेलिएनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥२५॥ अंदरि तिसना अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ मोहु कुटंबु सभु कूड़ु है कूड़ि रहिआ लपटाइ ॥ अनदिनु चिंता चिंतवै चिंता बधा जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै करम कमाइ ॥ गुर सरणाई उबरै नानक लइे छडाइ ॥२६॥ सतिगुर पुरखु हरि धिआइदा सतसंगति सतिगुर भाइ ॥ सतसंगति सतिगुर सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ इेहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु बोहिथु नामि तराइ ॥ गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लम्घाइ ॥ गुरसिखाँ की हरि धूड़ि देहि हम पापी भी गति पाँहि ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभ लिखिआ गुर नानक मिलिआ आइ ॥ जमकंकर मारि बिदारिअनु हरि दरगह लइे छडाइ ॥ गुरसिखा नो साबासि है हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥२७॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ जिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाइ करि चानणु मगु देखाइआ ॥ हउमै मारि इेक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नाउ लइे ताँ जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२८॥ मन अंतरि हउमै रोगु भ्रमि भूले हउमै साकत दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजणा ॥२९॥ गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुर सतिगुरि नामु दिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जन नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गुल गोले ॥३०॥

सलोक महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रते सेई जि मुखु न मोड़ंनि् जिनी सिञाता साई ॥ झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिना कारि न आई ॥१॥ धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले ॥ धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहाँ नानक तै सह नाले ॥२॥ गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि बैरागु ॥ जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इहु रागु ॥३॥ जाँ मूं इकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितड़े ॥ बामणु बिरथा गइए जन्मु जिनि कीतो सो विसरे ॥४॥ सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥ नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ ॥५॥ जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥ अंदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥ इेका टेक अगंम मनि तनि प्रभु धारई ॥ लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥ नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥६॥ करे सु चंगा मानि दुयी गणत लाहि ॥ अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥ जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥ सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ नानक सुख अनद भए प्रभ की मंनि रजाइ ॥७॥ गुरु पूरा जिन सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥८॥ पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ ॥ नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ ॥९॥ नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥ नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥१०॥ खुभड़ी कुथाइ मिठी गलणि कुमंत्रीआ ॥ नानक सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥११॥ सुतड़े सुखी सवंनि् जो रते सह आपणै ॥ प्रेम विछोहा धणी सउ अठे पहर लवंनि् ॥१२॥ सुतड़े असंख माइआ झूठी कारणे ॥ नानक से जागंनि् जि रसना नामु उचारणे ॥१३॥ मृग तिसना पेखि भुलणे वुठे नगर गंध्रब ॥ जिनी सचु अराधिआ नानक मनि तनि फब ॥१४॥ पतित उधारण

पारब्रहमु संम्रथ पुरखु अपारु ॥ जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥१५॥ दूजी छोडि कुवाटड़ी इकस सउ चितु लाइ ॥ दूजै भावंी नानका वहणि लुड़ंदड़ी जाइ ॥१६॥ तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥ सचु वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥१७॥ पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि ॥ नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंध्यार ॥१८॥ माइिआ मनहु न वीसरै माँगै दंमाँ दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥१९॥ तिचरु मूलि न थुड़ंीदो जिचरु आपि कृपालु ॥ सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ॥२०॥ खंभ विकाँदड़े जे लहाँ घिन्ना सावी तोलि ॥ तंनि जड़ाँई आपणै लहाँ सु सजणु टोलि ॥२१॥ सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहाँ दै साहु ॥ जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनाँ दा वेसाहु ॥२२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ९ ॥ गुन गोबिंद गाइिए नही जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥ बिखिअन सिउ काहे रचिए निमख न होहि उदासु ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥ तरनापो इउ ही गइिए लीए जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥ बिरधि भइिए सूझै नही कालु पहूचिए आनि ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥ धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥ तनु धनु जिह तो कउ दीए ताँ सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥ तनु धनु संपै सुख दीए अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइि ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति

होइ ॥९॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥ पाँच तत को तनु रचिए जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिए नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥ घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिए पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥ उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥ हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीए भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥ जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइए उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इहि मन साची मानु ॥१९॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥ जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥ निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥ प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ जो प्रानी निसि

दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥ मनु माइआ मै फधि रहिए बिसरिए गोबिंद नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥ प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥ सुख मै बहु संगी भइे दुख मै संगि न कोइि ॥ कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइि ॥३२॥ जनम जनम भरमत फिरिए मिटिए न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥ जतन बहुतु मै करि रहिए मिटिए न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिए राखि लेहु भगवान ॥३४॥ बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥ करणो हुतो सु ना कीए परिए लोभ कै फंध ॥ नानक समिए रमि गइिए अब किउ रोवत अंध ॥३६॥ मनु माइिआ मै रमि रहिए निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिए ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ जतन बहुत सुख के कीइे दुख को कीए न कोइि ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइि ॥३९॥ जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ इिन मै कछु तेरो नही नानक कहिए बखानि ॥४१॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिए नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥ इेक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥ सुआमी को गृहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इिह बिधि हरि भजउ इिक मनि हुइि इिक चिति ॥४५॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इिसनानु ॥४६॥ सिरु कंपिए पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इिह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन

॥४७॥ निज करि देखिए जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥ जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥ रामु गइिए रावनु गइिए जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥ चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइि ॥ इिहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइि ॥५१॥ जो उपजिए सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ नानक हरि गुन गाइि ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिए बंधन परे कछू न होत उपाइि ॥ कहु नानक अब एट हरि गज जिउ होहु सहाइि ॥५३॥ बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइि ॥ नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइि ॥५४॥ संग सखा सभि तजि गइे कोऊ न निबहिए साथि ॥ कहु नानक इिह बिपति मै टेक इेक रघुनाथ ॥५५॥ नामु रहिए साधू रहिए रहिए गुरु गोबिंदु ॥ कहु नानक इिह जगत मै किन जपिए गुर मंतु ॥५६॥ राम नामु उर मै गहिए जा कै सम नही कोइि ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइि ॥५७॥१॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईए सतु संतोखु वीचारो ॥ अंमृत नामु ठाकुर का पइिए जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइि उधारो ॥ इेह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥ सलोक महला ५ ॥ तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइिएई ॥ तरसु पइिआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि

राग माला ॥ राग इेक संगि पंच बरंगन ॥ संगि अलापहि आठउ न्नदन ॥ प्रथम राग भैरउ वै

करही ॥ पंच रागनी संगि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुंनिआकी गावहि बंगली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ इे भैरउ की पाचउ नारी ॥ पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बंगालम मधु माधव गावहि ॥१॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भाँति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइिन पात्र ॥१॥ दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोंडकरी अरु देवगंधारी ॥ गंधारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी इे पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक संगि लाई ॥ मारू मसतअंग मेवारा ॥ प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाइे ॥ असट मालकउसक संगि लाइे ॥१॥ पुनि आइिअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइिन तार मिलावही ॥१॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसंती संदूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥ संगि लाई पाँचउ आरजा ॥ सुरमानन्द भासकर आइे ॥ चंद्रबिंब मंगलन सुहाइे ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥१॥ कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ कामोदी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥१॥ कालम्का कुंतल अउ रामा ॥ कमलकुसम चंपक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के जाना ॥१॥ सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ सिरीराग सिउ पाँचउ थापी ॥१॥ सालू सारग सागरा अउर गोंड गंभीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुंभ हमीर ॥१॥ खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पाँचउ चीनी ॥१॥ बैराधर गजधर केदारा ॥ जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥१॥ खसट राग उनि गाइे संगि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागन्न के अठारह दस बीस ॥१॥१॥